

5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200

॥শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা॥

# ॥যথার্থ গীতা ॥

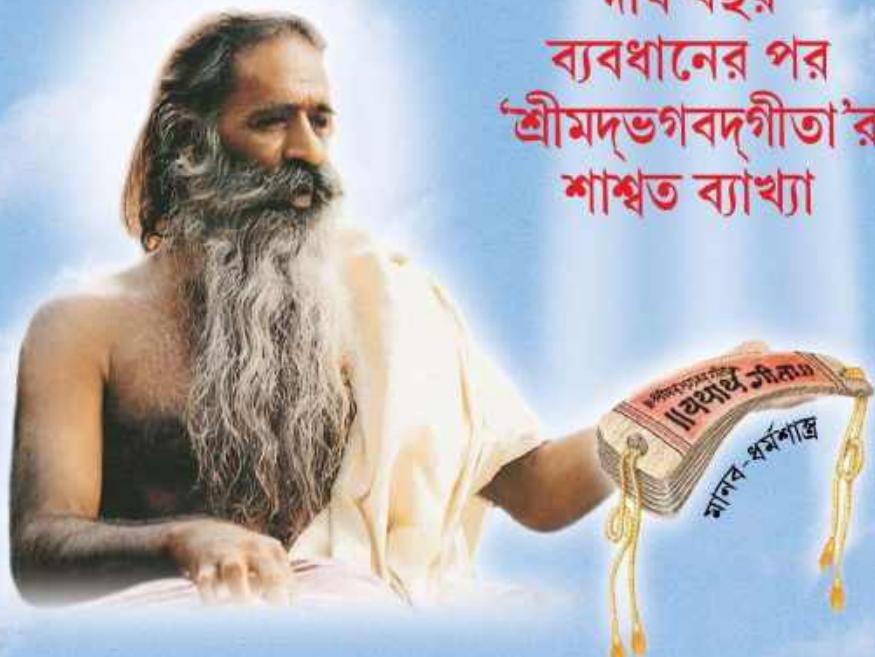
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200

॥শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা॥

॥যথার্থ গীতা ॥

শ্বামী অড়গড়ানন্দ

দীর্ঘ বছর  
ব্যবধানের পর  
'শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা'র  
শাস্তি ব্যাখ্যা



## লেখকের প্রতি.....

‘যথার্থ গীতা’র লেখক মহাপুরুষ, যিনি বিশ্ববিদ্যালয়ের উপাধিগুলির সঙ্গে সংযুক্ত না হওয়া সত্ত্বেও সদ্গুরূর কৃপার ফলস্বরূপ ঈশ্বরীয় আদেশ দ্বারা সঞ্চালিত। লেখনী সাধন-ভজনে ব্যবধানের সৃষ্টি করে বলে তিনি মনে করতেন; কিন্তু গীতা এই ভাষ্যে নির্দেশনাই নিমিত্তরূপে কাজ করেছে। ভগবান তাঁকে অনুভবে বলেছিলেন যে, গীতার ভাষ্য লেখা বাদে তাঁর সব ইচ্ছা শান্ত হয়ে গেছে। স্বামীজী ভজন করে এই ইচ্ছা নাশ করার চেষ্টা করেছিলেন, কিন্তু ভগবানের আদেশে মূর্ত স্বরূপ - ‘যথার্থ গীতা’। ভাষ্যে যেখানেই কৃতি হতো, ভগবান ঠিককরে দিতেন। স্বামীজীর স্বান্তঃ সুখায় এই কৃতি সর্বান্তঃ সুখায় হোক, শুভকামনার সঙ্গে।

-প্রকাশকের তরফ থেকে

।। ওঁ নমঃ সদ্গুরুদেবায় ।।

# শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা যথার্থ গীতা

ব্যাখ্যাকার—

পরমপূজ্য শ্রী পরমহংসজী মহারাজের কৃপা প্রসাদ

স্বামী শ্রী অড়গড়ানন্দজী

শ্রী পরমহংস আশ্রম শক্তিষগড়

গ্রাম—পোস্ট—শক্তিষগড়, জেলা—মির্জাপুর

উত্তর প্রদেশ, ভারত, ফোন—(০৫৪৪৩) ২৩৮০৪০

বঙ্গানুবাদক

শ্রী দেবানন্দজী (শক্তিষগড়)

সুমিতা কুমারী (ধানবাদ)

প্রকাশক —

**Shri Paramhans Swami Adgadanand Ji Ashram Trust**

5, New Apollo Estate, Mogra Lane, Opp. Nagardas Road, Andheri (East), Mumbai – 400069 India  
Telephone : (022) 2825300 • Email : [contact@yatharthgeeta.com](mailto:contact@yatharthgeeta.com) • Website : [www.yatharthgeeta.com](http://www.yatharthgeeta.com)



শ্রীকৃষ্ণ যে কালে গীতার উপদেশ দিয়েছিলেন, সেই  
সময় তাঁর মনোগত ভাব কি ছিল ? মনোগত সমস্তভাব  
ভাষায় প্রকাশ করা যায় না। কিছু প্রকাশ হয়, কিছু ভাব-  
ভঙ্গিমা দ্বারা ব্যক্ত হয় ও বাকী পর্যাপ্ত ক্রিয়াত্মক। কোন  
পথিক সে পথে চলেই তা জানতে পারেন। শ্রীকৃষ্ণ যে স্তরে  
ছিলেন, ক্রমশঃ চলে সেই অবস্থা প্রাপ্ত মহাপুরুষই জানেন  
যে, গীতার উপদেশ কি বলে ! তিনি শুধু গীতার পঞ্চতণ্ডিলই  
পুনরাবৃত্তি করেন না, পরন্তৰ সেগুলির ভাবও ব্যক্ত করেন,  
কারণ যে দৃশ্য শ্রীকৃষ্ণের সমক্ষে ছিল, সেই দৃশ্যই বর্তমান  
মহাপুরুষের সমক্ষেও, সেইজন্য তিনি দেখছেন, দেখিয়ে  
দেবেন ; আপনার অন্তরে জাগ্রতও করে দেবেন, সেই পথে  
পরিচালনাও করবেন।

‘পূজ্য শ্রী পরমহংসজী মহারাজ’ও সেই স্তরেরই  
মহাপুরুষ ছিলেন, তাঁর বাণী ও অন্তঃপ্রেরণা থেকে  
গীতাশাস্ত্রের যে অর্থবোধ হয়েছে, তারই সঙ্কলন ‘যথার্থ  
গীতা’।

স্বামী অড়গড়ানন্দ

# हमारे प्रकाशन

पुस्तकें	भाषाएँ
यथार्थ गीता	❖ भारतीय भाषायें हिन्दी, मराठी, पंजाबी, गुजराती, उर्दू, संस्कृत, उड़िया, बंगला, तमिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, आसामी, सिन्धी। ❖ विदेशी भाषायें अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, नेपाली, स्पेनीश, फारसी, नार्वेजीयन, चायनीज, डच, इटालियन, रूसी।
शंका समाधान	हिन्दी, मराठी, गुजराती, अंग्रेजी, नेपाली।
जीवनादर्श एवं आत्मानुभूति	हिन्दी, मराठी, गुजराती, अंग्रेजी।
अंग क्यों फड़कते हैं? क्या कहते हैं?	हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, जर्मन।
अनछुए प्रश्न	हिन्दी, मराठी, गुजराती।
एकलव्य का अंगूठा	हिन्दी, मराठी, गुजराती।
भजन किसका करें?	हिन्दी, मराठी, गुजराती, जर्मन, अंग्रेजी।
योगशास्त्रीय प्राणायाम	हिन्दी, मराठी, गुजराती।
षोडशोपचार पूजन-पद्धति	हिन्दी, मराठी, गुजराती।
योगदर्शन-प्रत्यक्षानुभूत व्याख्या	हिन्दी, गुजराती, संस्कृत।
ग्लोरिस् ऑफ योगा	अंग्रेजी।
प्रश्न समाज के- उत्तर गीता से	हिन्दी।
बारहमासी	हिन्दी।
अहिंसा का स्वरूप	हिन्दी, मराठी।
आँडियो कैसेट्स	
यथार्थ गीता	हिन्दी, गुजराती, मराठी, अंग्रेजी।
अमृतवाणी	हिन्दी।
(श्री स्वामीजी के मुखारविन्द से निःसृत अमृतवाणियों का संकलन वाल्यूम १ से ५५ तक।)	
गुरुवंदना (आरती)	
आँडियो सिडिज् (MP3)	
यथार्थ गीता	हिन्दी, गुजराती, मराठी, अंग्रेजी, जर्मन, बंगला।
अमृतवाणी	हिन्दी।

## © सर्वाधिकार-लेखक

उपरोक्त पुस्तकों का कोई भी अंश प्रकाशन, रिकार्डिंग, प्रतिलिपि प्रकाशन तथा संशोधन बिना लेखक की अनुमति के वर्जित है।

অনন্ত শ্রী বিভূষিত  
যোগিরাজ যুগ পিতামহ  
পরমপূজ্য শ্রীস্বামী পরমানন্দ জী  
শ্রী পরমহংস আশ্রম, অনুসুইয়া (চিত্রকুট)  
এবং  
পরম পবিত্র চরণযুগলে  
সাদর সমর্পিত  
—অন্তশ্পেরণ।

ॐ

ॐ

## গুরু-বন্দনা

।। ওঁ শ্রী সদ্গুরদেব ভগবানের জয় ।।

জয় সদ্গুরদেবং, পরমানন্দং, অমর শরীরং অবিকারী।

নির্ণল নির্মলং, ধরি স্তুলং কাটন শুলং ভবভারী ।।

সূরত নিজ সোহং, কলিমল খোহং, জনমন মোহন ছবিভারী।

অমরাপুরবাসী, সবসুখরাশি, সদা একরস নির্বিকারী ।।

অনুভব গন্তীরা, মতি কে ধীরা, অলখ ফকীরা, অবতারী।

যোগী অবৈষ্টা, ত্রিকাল দ্রষ্টা, কেবল পদ আনন্দকারী ।।

চিত্রকৃটাহি আয়ো, অবৈত লখায়ো, অনুসুইয়া আসনমারী।

শ্রী পরমহংস স্বামী, অন্তর্যামী, হঁয় বড়নামী সংসারী ।।

হংসন হিতকারী, জগ পণ্ডধারী, গর্বপ্রভারী উপকারী।

সংপন্থ চলায়ো, ভরম মিটায়ো, রূপ লখায়ো করতারী ।।

ইহ শিষ্য হ্যায় তেরো, করত নিহোরো, মোপর হেরো প্রণধারী।

জয়সদ্গুর ..... ভবভারী ।।

।। ওঁ ।।

ॐ

ॐ

“आत्मने प्रोक्षार्थं जगत् हिताय वा”

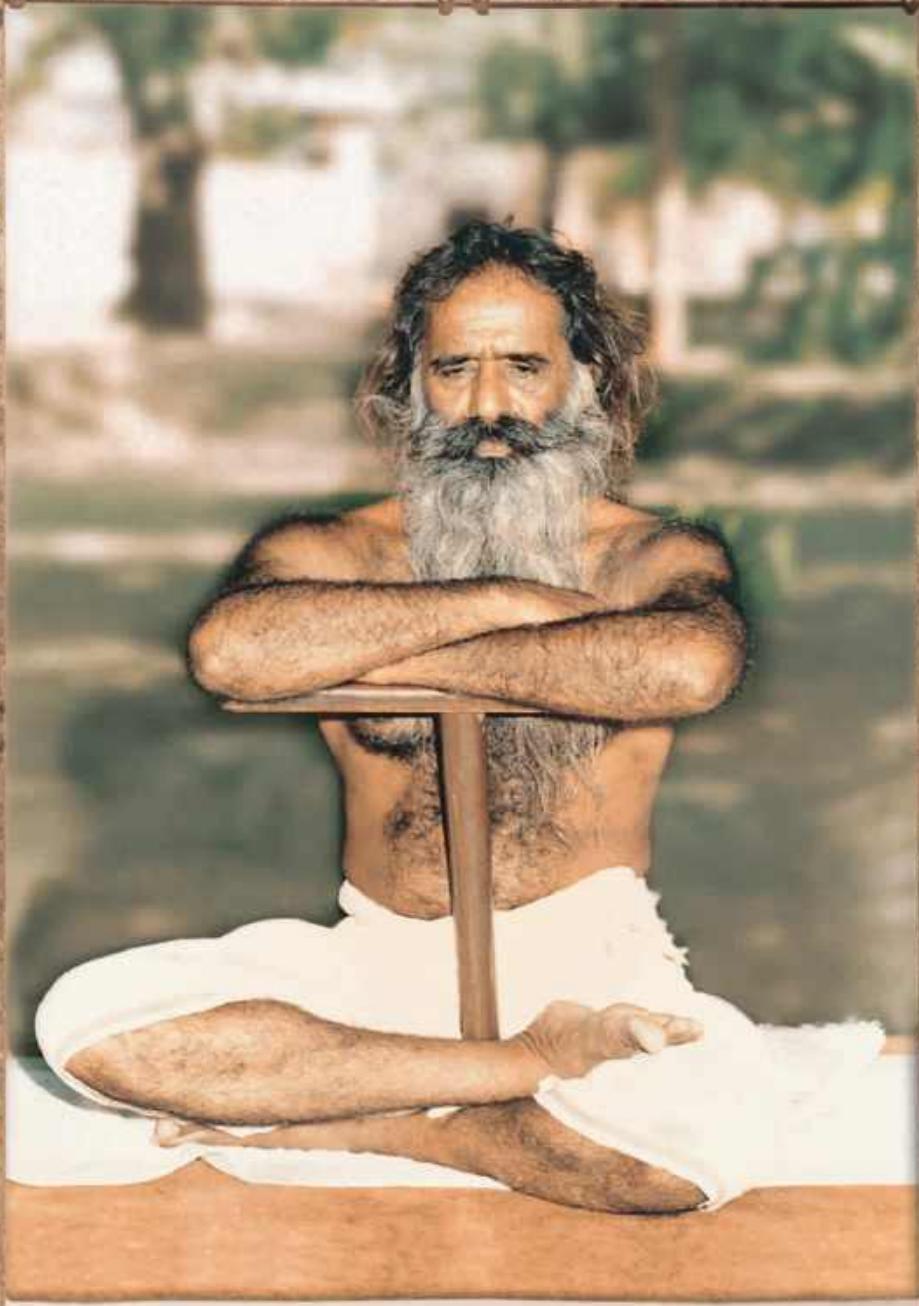


শ্রী শ্রী ১০০৮ শ্রী স্বামী পরমানন্দজী মহারাজ (পরমহংসজী)

জন্ম : শুভ সংবৎ বিক্রম ১৯৬৯ (১৯১১ শ্রীষ্টাব্দ)

মহাপ্রয়াণ : জ্যেষ্ঠ শুক্লা সপ্তমী, সংবৎ ২০২৬, তারিখ ২৩/০৫/১৯৬৯

পরমহংস আশ্রম, অনুসুইয়া (চিত্রকূট)



শ্রী স্বামী অড়গড়ানন্দজী  
(পরমহংস মহারাজের কৃপাপ্রসাদ)

श्री हरि की गीता  
वीतराग परमहंसों का आधार  
आदिशास्त्र गीता - संत मत

१०-२-२००७- तृतीय विश्वहिन्दू सम्मेलन दिनांक १०-११-१२-१३ फरवरी २००७ के अवसर पर अर्धकुम्भ २००७ प्रयाग भारत में प्रवासी एवं अप्रवासी भारतीयों के विश्व सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर विश्व हिन्दु परिषद ने ग्यारहवी धर्मसंसद में पारीत गीता हमारा धर्मशास्त्र है प्रस्ताव के परिक्षेत्र में गीता को सदैव से विद्यामान भारत का गुरुग्रन्थ कहते हुए यथार्थ गीता को इसका शाश्वत भाष्य उद्घोषित किया तथा इसके अन्तर्राष्ट्रीय मानव धर्मशास्त्र की उपयोगिता खबरे वाला शास्त्र कहा।

**उद्घोषित हिन्दू परिषद**  
(अशोक सिंहल)

अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष - विश्व हिन्दू परिषद

टेल. : २४५२११३

मो. : ९४९५२८५६५६

॥ श्री काशीविद्वत्परिषद् गीता ॥

३०

सर्वत्रव्यतीत-शाश्वतविद्वत्परिषद् - विश्वहिन्दू-प्रभामहोपाध्यायाविद्विष्णविभूषण  
परिषद्सप्तरात-प्रात-समाप्तीव श्री निष्ठव्यापाशालिमिश्रप्रतिष्ठिता  
वाराणसेमर्मिश्रप्रदीपविद्वत्परिषद्-ज्ञातिविभूषण-

**श्री काशीविद्वत्परिषद्**

पत्राचार कार्यालय :  
डी. १७/५८, दशाश्वेषध,  
वाराणसी, उत्तर प्रदेश,  
भारत

दिनांक १.३.२०१४

१-३-२००५- भारत की सर्वोच्च श्री काशी विद्वत्परिषद ने दिनांक १-३-२००५ को “श्रीमद् भगवद् गीता” को आदि मनुस्मृति तथा वेदों को इसी का विस्तार मानते हुए विश्वमानव का धर्मशास्त्र और यथार्थ गीता को परिभाषा के रूप में स्वीकार किया और यह उद्घोषित किया कि धर्म और धर्मशास्त्र अपरिवर्तनशील होने से आदिकाल से धर्मशास्त्र “श्रीमद् भगवद् गीता” ही रही है।

गणेशदत्त शास्त्री  
मंत्री  
श्री काशीविद्वत्परिषद्  
भारत

श्री काशीविद्वत्परिषद्

आचार्य केदारनाथ त्रिपाठी दशनरत्नम वाचस्पति  
अध्यक्ष

श्री काशीविद्वत्परिषद्  
भारत



**विश्व धर्म संसद्**  
**WORLD RELIGIOUS PARLIAMENT**

३-१-२००१- विश्वधर्म संसद में विश्व मानव धर्मशास्त्र “श्रीमद् भगवद् गीता” के बाष्य यथार्थ गीता पर परम पूज्य परमहंस स्वामी श्री अडगडानन्द जी महाराज जी को प्रयाग के परमावान पर्व महाकुम्भ के अवसर पर विश्वगुरु की उपाधि से विभूषित किया।

२-४-१९९८- मानवमात्र का धर्मशास्त्र “श्रीमद् भगवद् गीता” की विशुद्ध व्याख्या यथार्थ गीता के लिए धर्मसंसद द्वारा हारिद्वार में महाकुम्भ के अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन में परमपूज्य स्वामी श्री अडगडानन्द जी महाराज को भारत गौरव के सम्मान से विभूषित किया गया।

१-४-१९९८- बीसवीं शताब्दी के अन्तिम महाकुम्भ के अवसर पर हरिद्वार के समस्त शंकराचार्यों महामण्डलेश्वरो ब्राह्मण महासभा और ४४ देशों के धर्मशील विद्वानों की उपस्थिति में विश्व धर्म संसद द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन में पूज्य स्वामी जी को “श्रीमद् भगवद् गीता” धर्मशास्त्र (भाष्य यथार्थ गीता) के द्वारा विश्व के विकास में अद्वितीय योगदान हेतु “विश्वगौरव” सम्मान प्रदान किया गया।

२६-१-२००१

Chairman

Presentation Committee

or

Presiding Authority

महाकुम्भ

मेला



Acharya Prabhakar Mishra

Chairman (Indian Region)

World Religious Parliament

## माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद का ऐतिहासिक निर्णय

माननीय उच्चन्यायालय इलाहाबाद ने रिट याचिका संख्या ५६४४७ सन २००३ श्यामलरंजन मुखर्जी वनाम निर्मलरंजन मुखर्जी एवं अन्य के प्रकरण में अपने निर्णय दिनांक ३० अगस्त २००७ को “श्रीमद् भगवद् गीता” को समस्त विश्व का धर्मशास्त्र मानते हुए राष्ट्रीय धर्मशास्त्र की मान्यता देने की संस्तुति की है। अपने निर्णय के प्रस्तर ११५ से १२३ में माननीय न्यायालय ने विभिन्न गीता भाष्यों पर विचार करते हुए यथार्थ गीता को इसके सम्यक एवं युगानुकूल भाष्य के रूप में मान्य करते हुए धर्म, कर्म, यज्ञ, योग आदि को परिभाषा के आधार पर इसे जाति पाति मजहब सम्प्रदाय देश व काल से परे मानवमात्र का धर्मशास्त्र माना जिसके माध्यम से लौकिक व पारलौकिक दोनों समृद्धि का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

**नोट - उपरोक्त निर्णय माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद की बेवसाईट पर उपलब्ध है।**

### Extract from Historical Judgment of Hon'ble High Court, Allahabad

Hon'ble Mr. Justice S.N. Srivastava, (in his judgment dated 30.8.2007 passed in writ petition No. 56447 of 2003 Shyamal Ranjan Mukherjee Vs. Nirmal Ranjan Mukherjee & others) has been pleased to hold that:

“Shrimadbhagwad Gita is a Dharmshastra not only for Hindu but for all human beings. Message of Gita is relevant for all Religions of the world and is not limited for any particular Religion”.

“Yatharth Geeta” by Swami Adgadanandji Maharaj, a great saint of India, is Dharm and Dharmshastra for all, irrespective of their caste, creed, race, religion, Dharm & community and is for all times and space.

N.B.: - The aforesaid decision is available on the Website:

<http://www.allahabadhighcourt.in>

## গীতা প্রতিটি মানুষেরই ধর্মশাস্ত্র। - মহর্ষি বেদব্যাস

শ্রীকৃষ্ণকালীন মহর্ষি বেদব্যাসের পূর্বে কোন শাস্ত্র লিপিবদ্ধ ছিল না। শ্রুতজ্ঞানের এই পরম্পরার ভঙ্গ করে তিনি চার বেদ, ব্রহ্মসূত্র, মহাভারত, ভাগবত এবং গীতার মত গ্রন্থগুলিতে পূর্বসংক্ষিত তোতিক এবং আধ্যাত্মিক জ্ঞানরাশিকে সংকলিত করে শেষে নির্ণয় করলেন যে, ‘সর্বেপনিষদ্দো গাবো দোঁখা গোপালনন্দনঃ।’ সমস্ত বেদের প্রাণ, উপনিষদ্গুলিরও সার হল গীতা, যা গোপাল শ্রীকৃষ্ণ দোহন করে, অশাস্ত্র জীবকে পরমাত্মার দর্শন এবং সাধনের স্থিতি, শাশ্ত্রত শাস্ত্রের স্থিতিপর্যন্ত পৌঁছিয়ে দেন। সেই মহাপুরুষ নিজের গ্রন্থগুলির মধ্যে গীতাকে শাস্ত্রের পরিভাষা দিয়ে স্ফূর্তি করছেন এবং বলেছেন,

গীতা সুগীতা কর্তব্যা কিমন্ত্যে: শাস্ত্রবিস্তরেঃ।

যা স্বয়ং পদ্মনাভস্য মুখপদ্মাদ্বিনি:সৃতা।।

(ম. ভা., ভীমপূর্ব, অ. ৪৩/১)

গীতা উত্তমরন্দপে মনন করে হাদয়ে ধারণ করার যোগ্য, যা পদ্মনাভ ভগবানের শ্রীমুখ নি:স্তুত বাণী, তাহলে অন্যশাস্ত্র সংগ্রহের কি প্রয়োজন?

গীতার সারাংশ নিম্নপ্রদত্ত শ্লোকটিতে স্পষ্ট হয়—

একং শাস্ত্রং দেবকীপুত্র গীতম্,

একো দেবো দেবকীপুত্র এব।

একো মন্ত্রস্য নামানি যানি,

কর্মাপ্যেকং তস্য দেবস্য সেবা।।

(গীতা মাহাত্ম্য)

অর্থাৎ একমাত্র শাস্ত্র গীতারই দেবকীপুত্র ভগবান শ্রীমুখে গায়ন করেছেন। প্রাপ্ত করার যোগ্য দেব একজন। সেই গায়নতে যে সত্য সম্বন্ধে বলেছেন, তা হল আত্মা। আত্মা ব্যতীত কিছুই শাশ্বত নয়। সেই গায়নতে মহাযোগেশ্বর কি জপ করতে বলেছেন? ওঁ। অর্জুন! ওঁ অক্ষয় পরমাত্মার নাম। ওঁ জপ কর ও ধ্যান আমার স্বরূপের কর। ধর্ম একটাই, গীতায় বর্ণিত পরমদেব একমাত্র পরমাত্মার সেবা। তাঁকে শ্রদ্ধাপূর্বক নিজের হাদয়ে ধারণ কর। অতএব শুরু থেকেই গীতা আপনার শাস্ত্র। ভগবান শ্রীকৃষ্ণের হাজার হাজার বছর পরে পরবর্তী যে মহাপুরুষগণ একমাত্র ঈশ্বরকে সত্য বলেছেন, তাঁরা গীতারই সংবাদবাহক। ঈশ্বরের কাছ থেকেই লৌকিক ও পারলৌকিক সমস্ত সুখের কামনা, ঈশ্বরকে ভয় পাওয়া, অন্য কাউকে ঈশ্বর না ভাবা—এ পর্যন্ত তো প্রত্যেক মহাপুরুষ বলেছেন; কিন্তু ঈশ্বরীয় সাধনা, ঈশ্বরের কাছে নিয়ে যায়, এটা কেবল গীতাশাস্ত্রেই ক্রমবদ্ধভাবে সুরক্ষিত। গীতাশাস্ত্র অধ্যয়নে সুখ-শান্তি তো লাভ হয়ই, তার সঙ্গে এই শাস্ত্র অক্ষয় অনাময় পরমপদও প্রদান করে। প্রাপ্তির জন্য অধ্যয়ন করুন গীতার গৌরবপ্রাপ্ত টীকা ‘ঘথার্থ গীতা’।

যদ্যপি বিশ্বে সর্বত্র গীতা সমাদৃত, তথাপি এই শাস্ত্র কোন ধর্ম অথবা সম্প্রদায়-বিশ্বের সাহিত্য হতে পারেনি; কারণ প্রত্যেক সম্প্রদায় কোন না কোন কুরীতিতে জড়িত। ভারতবর্ষে প্রকাশিত গীতাশাস্ত্র বিশ্বের মনীয়ীদের কাঞ্জিত গ্রন্থ। গীতাশাস্ত্র আধ্যাত্মিক দেশ ভারতবর্ষের আধ্যাত্মিক গচ্ছিত গ্রন্থ। অতএব এই শাস্ত্রকে রাষ্ট্রীয় শাস্ত্রের সম্মান দিয়ে উঁচু-নীচু, ভেদভাব এবং কলহ-পরম্পরায় পীড়িত বিশ্বের সকল মানুষকে শান্তি প্রদান করার চেষ্টা করুন।

## ধর্ম-সিদ্ধান্ত - এক

### ১. সকলেই প্রভুর পুত্র-

মগ্নেবাংশো জীবলোকে জীবভূতঃ সনাতনঃ।

মনঃ বর্ষানীজ্ঞিয়াণি প্রকৃতিশানি কর্ষতি ॥১৫/৭॥

সকল মানব ঈশ্বরের সন্তান।

### ২. মানব দেহের সার্থকতা-

অনিত্যমসুখং লোকমিমৎ প্রাপ্য ভজস্ব মাম্ ॥৯/৩৩॥

সুখরহিত, ক্ষণভঙ্গুর কিন্তু দুর্লভ মনুষ্য দেহলাভ করেছ আমার ভজন কর অর্থাৎ<sup>১</sup>  
ভজনের অধিকার মনুষ্য মাত্রের।

### ৩. মানুষের জাতি কেবল দুটি-

দ্বৌ ভূতসঙ্গো লোকেহশ্চিন্দেব আসুর এব চ।

দৈবো বিস্তরশঃ প্রোক্ত আসুরং পার্থ মে শণু ॥১৬/৬॥

দেবস্বভাব ও অসুরস্বভাব এই দুই প্রকার মানুষ সৃষ্টি হয়েছে। যাঁর হৃদয়ে দৈবী  
সম্পদ কার্য করে তিনি দেবতা ও যার হৃদয়ে আসুরী সম্পদ কার্য করে সে  
অসুর। তৃতীয় কোন জাতি সৃষ্টিতে নেই।

### ৪. প্রত্যেক কামনা ঈশ্বর থেকে সুলভ-

ত্রৈবিদ্যা মাঃ সোমপাঃ পুতপাপা

যজ্ঞেরিষ্ঠা স্বগতিং প্রার্থয়ন্তে।

তে পুণ্যমাসাদ্য সুরেন্দ্রলোক-

মশান্তি দিব্যানিবি দেবভোগান् ॥৯/২০॥

আমাকে ভজনা করে লোকে স্বর্গপর্যন্ত কামনা করে, আমি তাদের দিয়েও থাকি।

অর্থাৎ সবকিছু একমাত্র পরমাত্মা থেকে সুলভ।

## ৫. ভগবানের শরণদ্বারা পাপনাশ—

অপি চেদসি পাপেভ্যঃ সর্বেভ্যঃ পাপকৃত্তমঃ।

সর্বৎ জ্ঞানপ্লবেনৈব বৃজিনং সন্তরিষ্যসি ॥৪/৩৬॥

সকল পাপী থেকেও আধিক পাপিষ্ঠ জ্ঞানরূপ নৌকাদ্বারা নিঃসন্দেহে উত্তীর্ণ হবে।

## ৬. জ্ঞান—

অধ্যাত্মজ্ঞাননিত্যত্বং তত্ত্বজ্ঞানার্থদর্শনম্।

এতজ্ঞানমিতি প্রোক্তমজ্ঞানং যদতোহন্যথা ॥১৩/১১॥

আত্মার আধিপত্যে আচরণ, তত্ত্বের অর্থরূপ পরমাত্মার (আমার) প্রত্যক্ষ দর্শন জ্ঞান ও এর বিপরীত সমস্তই অজ্ঞান। অতএব ঈশ্বরের প্রত্যক্ষ অনুভূতিই জ্ঞান।

## ৭. ভজনের অধিকার সকলেরই—

অপি চেৎসুদুরাচারো ভজতে মামনন্যভাক্ত।

সাধুরেব স মন্তব্যঃ সম্যুক্তবসিতো হি সঃ ॥ ৯/৩০ ॥

ক্ষিপ্রৎ ভবতি ধর্মাত্মা শশ্বচ্ছাস্তিং নিগচ্ছতি।

কৌন্তেয় প্রতিজানীহি ন মে ভক্তঃ প্রণশ্যতি ॥৯/৩১॥

অত্যন্ত দুরাচারীও আমার ভজন করে শীঘ্রই ধর্মাত্মা হয়ে যায় ও সদা বিরাজমান শাশ্বত শাস্তিলাভ করে। অতএব ধর্মাত্মা তিনি, যিনি একমাত্র পরমাত্মার প্রতি সমর্পিত।

## ৮. ভগবৎপথে বীজের নাশ নেই—

নেহাভিক্রমনাশোহস্তি প্রত্যবায়ো ন বিদ্যতে।

স্বল্পমপ্যস্য ধর্মস্য ত্রায়তে মহতো ভয়াৎ ॥২/৪০॥

এই আত্মদর্শন দ্রিয়ার অল্পমাত্র আচরণও জন্মমৃত্যুর মহাভয় থেকে উদ্বার করে।

## ৯. ঈশ্বরের নিবাস—

ঈশ্বরঃ সর্বভূতানাং হন্দেশেহর্জুন তিষ্ঠতি।  
আময়নস্রব্ধভূতানি যন্ত্রারাচানি মায়য়া ॥১৮/৬১॥

ঈশ্বর সকল ভূতপ্রাণীর হন্দয়ে বাস করেন।

তমের শরণং গচ্ছ সর্বভাবেন ভারত।

তৎপ্রসাদাঃপরাঃ শান্তিঃ স্থানং প্রাঙ্গ্যসি শাশ্বতম্ ॥১৮/৬২॥

সর্বতোভাবে সেই একমাত্র পরমাত্মার শরণাগত হও। যাঁর কৃপাতে তুমি  
পরমশান্তি, শাশ্বত পরমধাম লাভ করবে।

## ১০. যজ্ঞ—

সবগীন্দ্রিয়কর্মণি প্রাণকর্মণি চাপরে।

আত্মসংযমযোগাশ্রী জুহুতি জ্ঞানদীপিতে ॥৪/২৭॥

সকল ইন্দ্রিয়ের কর্ম, মনের চেষ্টা জ্ঞানদ্বারা প্রকাশিত আত্মাতে সংযমরূপ  
যোগায়িতে আহুতি দেন।

অপানে জুহুতি প্রাণং প্রাণেহপানং তথাপরে।

প্রাণাপানগতীরুদ্ধা প্রাণায়ামপরায়ণাঃ ॥৪/২৯॥

বহু যোগী অপানবায়ুতে প্রাণবায়ুর আহুতি দেন এবং কোন কোন যোগী  
প্রাণবায়ুতে অপানবায়ু আহুতি দেন। অবস্থা উন্নত হওয়ার পর অপর প্রাণ এবং  
অপানবায়ুর গতিরোধ করে প্রাণায়াম পরায়ণ হয়ে যান। এই প্রকার যোগসাধনার  
বিধি-বিশেষের নাম যজ্ঞ। সেই যজ্ঞের অনুষ্ঠান কর্ম।

## ১১. যজ্ঞ করবার অধিকার—

যজ্ঞশিষ্টামৃতভূজো যান্তি ব্রহ্ম সনাতনম्।

নায়ং লোকোহস্ত্যযজ্ঞস্য কুতোহন্যঃ কুরুসত্তম ॥৪/৩১॥

যজ্ঞহীন ব্যক্তি দ্বিতীয়বার মনুষ্যদেহ লাভ করে না অর্থাৎ যজ্ঞ করবার অধিকার  
তাদের সকলেরই, যারা মনুষ্যদেহ লাভ করেছে।

## ১২. ঈশ্বর দর্শন সন্তুষ্টি—

ভক্ত্যা হৃনন্দয়া শক্য অহমেবংবিধোহর্জুন।

জ্ঞাতুং দ্রষ্টুং চ তত্ত্বেন প্রবেষ্টুং চ পরস্তপ ॥১১/৫৪॥

অনন্য ভক্তিদ্বারা আমি প্রত্যক্ষ করতে, জানতে এবং প্রবেশের জন্য সুলভ।

আশ্চর্যবৎপশ্যতি কশ্চিদেন-

মাশ্চর্যবদ্ধতি তথৈব চান্যঃ।

আশ্চর্যবচৈচনমন্যঃ শৃণেতি

শ্রুত্বাপ্যেনং বেদ ন চৈব কশ্চিঃ ॥ ২/২৯॥

এই আবিনাশী আত্মাকে কোন বিরল ব্যক্তিই আশ্চর্যের মত দেখেন অর্থাৎ এটাই প্রত্যক্ষ দর্শন।

## ১৩. আত্মাই সত্য ও সনাতন—

অচেছদ্যোহয়মদাহোহয়মক্রেদ্যোহশোষ্য এব চ।

নিত্যঃ সর্বগতঃ স্থাগুরচলোহয়ঃ সনাতনঃ ॥২/২৪॥

এই আত্মা সর্বব্যাপক, অচল স্থির এবং সনাতন। আত্মাই সত্য।

## ১৪. বিধাতা ও তাঁর সৃষ্টি নশ্বর—

আব্রহাম্বনাল্লোকাঃ পুনরাবর্তিনোহর্জুন।

মামুপেত্য তু কৌন্তেয় পুনর্জন্ম ন বিদ্যতে ॥ ৮/১৬॥

ব্রহ্মা ও তাঁর নির্মিত সৃষ্টি, দেবতা ও দানব দুঃখের কারণ, ক্ষণভঙ্গুর ও নশ্বর।

## ১৫. দেবপূজা—

কামেষ্টেষ্টের্হতজ্ঞানাঃ প্রপদ্যস্তেহন্যদেবতাঃ।

তৎ তৎ নিয়মমাস্তায় প্রকৃত্যা নিয়তাঃ স্বয়া ॥ ৭/২০॥

কামনাদ্বারা যাদের বুদ্ধি অভিভূত, এরূপ মৃত্যগণই পরমাত্মা ভিন্ন অন্যান্য দেবতার পূজা করে।

যেহেত্যন্যদেবতা ভক্তা যজন্তে শ্রদ্ধায়াবিতাঃ।

তেহপি মামেব কৌন্তেয় যজন্ত্যবিধিপূর্বকম্ ॥ ৯/২৩ ॥

দেবতাদিগের পূজারী আমারই পূজা করে; কিন্তু তা অবিধিপূর্বক সম্পাদিত হয়, তা-ই নষ্ট হয়ে যায়।

শাস্ত্রবিধির ত্যাগ-

অর্জুন! শাস্ত্রবিধি ত্যাগ করে সাত্ত্বিক শ্রদ্ধাযুক্ত পুরুষগণ দেবতার, রাজসিক পুরুষ যক্ষ-রাক্ষসের এবং তামসিক পুরুষ ভূত-প্রেতের পূজা করে; কিন্তু-

কর্ষয়ন্তঃ শরীরস্থং ভূতগ্রামমচেতসঃ।

মাং চৈবান্তঃ শরীরস্থং তারিদ্যাসুরনিশ্চয়ান् ॥ ১৭/৬ ॥

তারা দেহরূপে স্থিত ভূতসমুদায়কে এবং অন্ত্যামী রূপে স্থিত আমাকে (পরমাত্মাকে) কৃশ করে। এদের তুমি অসুর জানবে অর্থাৎ দেবতাগণের পূজকগণও অসুরবৃত্তির অন্তর্গত।

## ১৬. অধ্যম-

তানহং দ্বিষতঃ ক্রুরান্সংসারেযু নরাধমান্।

ক্ষিপাম্যজন্মশুভানাসুরীবে যোনিযু ॥ ১৬/১৯ ॥

যারা শাস্ত্রবিধি ত্যাগ করে কল্পিত বিধিদ্বারা যজন অর্থাৎ যজ্ঞ করে, তারা ক্রুরকর্মা, পাপাচারী এবং মনুষ্য মধ্যে অধম। অন্য কেউ অধম নয়।

## ১৭. নির্ধারিত বিধি কি?

ওমিত্যেকাক্ষরং ব্রহ্ম ব্যাহরন্মামনুস্মরন্।

যঃ প্রযাতি ত্যজন্তেহং স যাতি পরমাং গতিম্ ॥ ৮/১৩ ॥

ওঁ যা অক্ষয় ব্রহ্মের পরিচায়ক, এর জপ ও একমাত্র পরমাত্মাকে (আমাকে) স্মরণ, তত্ত্বদর্শী মহাপুরুষের সংরক্ষণে ধ্যান।

## ১৮. শাস্ত্র—

ইতি গুহ্যতমং শাস্ত্রমিদমুক্তং ময়ানঘ ।

এতদ্বুদ্ধা বুদ্ধিমানস্যাংকৃতকৃত্যশ্চ ভারত ॥ ১৫/২০॥

এইরূপ অতি গোপনীয় শাস্ত্র আমার দ্বারা বলা হল। একথা স্পষ্ট হল যে, শাস্ত্র গীতা।

তস্মাচ্ছাস্ত্রং প্রমাণং তে কার্যকার্যব্যবস্থিতো ।

জ্ঞান্তা শাস্ত্রবিধানোক্তং কর্ম কর্তৃমিহার্সি ॥ ১৬/২৪॥

কর্তব্য-অকর্তব্যের নির্ধারণে শাস্ত্রই প্রমাণ। অতএব গীতার নির্ধারিত বিধিদ্বারা আচরণ করুন।

## ১৯. ধর্ম—

সর্বধর্মান্পরিত্যজ্য মামেকং শরণং ব্ৰজ ॥ ১৮/৬৬॥

সকল ধর্মের অনুষ্ঠান পরিত্যাগ করে একমাত্র আমার শরণাগত হও অর্থাৎ একমাত্র ঈশ্বরের প্রতি পূর্ণ সমর্পণই ধর্মের মূলতত্ত্ব, সেই প্রভুকে লাভ করার নির্ধারিত বিধির আচরণই ধর্মাচরণ। (অধ্যায় ২, শ্লোক ৪০)

এবং যে আচরণ করে, সে অত্যন্ত পাপী হলেও শীঘ্ৰই ধর্মজ্ঞা হয়ে যায়। (অধ্যায় ৯, শ্লোক ৩০)

## ২০. ধর্ম কোথেকে লাভ করবেন ?—

ৰুক্ষাণো হি প্রতিষ্ঠাহমযৃতস্যাব্যয়স্য চ ।

শাশ্঵তস্য চ ধর্মস্য সুখস্যেকান্তিকস্য চ ॥ ১৮/২৭॥

সেই অবিনাশী ব্ৰহ্মেৰ, অমৃতেৰ, শাশ্বত ধর্মেৰ এবং অখণ্ড একৱেষ আনন্দেৰ আমিই আশ্রয় অর্থাৎ পৱনাত্মাস্থিত সদ্গুৰুই এই সকলেৰ আশ্রয়।

নোট : বিশ্বেৰ সমস্ত ধর্মেৰ সত্যধাৰা গীতারই প্ৰসাৱণ।

# প্রাচীনকাল থেকে অদ্যাবধিপর্যন্ত মনীষীগণ দ্বারা প্রদত্ত কাল-ক্রমানুসারে সন্দেশ

শ্রী পরমহংস আশ্রম জগতানন্দ, গ্রাম-পোতা বরৈলী, কছবা, জেলা-মিজাপুর (উত্তরপ্রদেশ)  
নিজের নিবাস অবধিতে স্বামী অঞ্জগড়ানন্দজী প্রবেশ দ্বারের নিকট এই তালিকাটি গঙ্গা  
দশহরার (১৯৯৩) পৰিত্র পর্বে বোর্ডে অঙ্কিত করিয়েছিলেন।

৫

## ।। বিশ্বগুরুত ভারত ।।

### \* সৃষ্টির আদিশাস্ত্র-

‘ইমং বিবস্ততে যোগম্’ (গীতা ৪/১)– ভগবান শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, এই  
অবিনাশী যোগ আমি কল্পের আরন্তে সূর্যকে বলেছিলাম। সূর্য নিজপুত্র মনুকে  
বলেছিলেন, যাঁর অনুসারে একমাত্র পরমাত্মাই সত্য, পরমতত্ত্ব; তিনি প্রতিটি  
রেণুতে ব্যাপ্ত। যোগ-সাধনা দ্বারা সেই পরমাত্মা দর্শন, স্পর্শ এবং প্রবেশের  
জন্য সুলভ। ভগবান দ্বারা উপদিষ্ট সেই আদিজ্ঞান বৈদিক খ্যায়িগণ থেকে শুরু  
করে অদ্যাবধি অক্ষুণ্নরূপে প্রবাহিত।

### \* বৈদিক খ্যায় (অনাদিকাল-নারায়ণ সূক্ত)

প্রতিটি অণু পরমাণুতে ব্যাপ্ত ব্রহ্মাই সত্য। তাঁকে না জানা পর্যন্ত মুক্তিলাভের  
আর অন্য কোন উপায় নেই।

### \* ভগবান শ্রীরাম (ত্রেতা- লক্ষ লক্ষ বছর পূর্বে-রামায়ণ)

একমাত্র পরমাত্মার ভজন না করে যে কল্যাণকামনা করে সে মৃত।

### \* যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ (৫২০০ বছর পূর্বে-গীতা)

পরমাত্মাই সত্য। চিন্তনের পূর্তিকালে সেই সনাতন ব্রহ্মের প্রাপ্তি সম্ভব।  
দেবী-দেবতাগণের পূজা মুঢ়বুদ্ধির পরিচয়।

- \* **মহাআমা মুসা (৩০০০ বছর পূর্বে-ইহুদী ধর্ম)**  
তুমি ঈশ্বরের প্রতি যথার্থ শ্রদ্ধা আরোপ না করে তাঁর মূর্তি গড়েছ-সেই জন্য তিনি অসন্তুষ্ট। প্রার্থনা কর।
- \* **মহাআমা জরথুত্র (২৭০০ বছর পূর্বে-পারসী ধর্ম)**  
অহরমজ্দার (ঈশ্বরের) উপাসনা করে হৃদয়স্থিত বিকারগুলির নাশ কর, এই বিকারগুলিই দুঃখের কারণ।
- \* **ভগবান মহাবীর (২৬০০ বছর পূর্বে-জৈন ধর্ম)**  
আত্মাই সত্য। কঠোর তপস্যাদ্বারা তাঁকে এই জন্মেই জানা সন্তুষ।
- \* **গৌতম বুদ্ধ (২৫০০ বছর পূর্বে-মহাপরিনิবান সুত্ত)**  
আমি সেই অবিনাশী পদলাভ করেছি, যা পূর্ব মনীষীগণ লাভ করেছেন। এটাই মোক্ষ।
- \* **যীশু খ্রিস্ট (২০০০ বছর পূর্বে-খ্রিস্টান ধর্ম)**  
ঈশ্বরকে প্রার্থনা দ্বারা লাভ করা যেতে পারে। আমার অর্থাৎ সদ্গুরুর সাম্বিধে যাও, তাহলে ঈশ্বরের পুত্র নামে অভিহিত হবে।
- \* **হজরত মহম্মদ সলল্লাহু (১৪০০ বছর পূর্বে-ইসলাম ধর্ম)**  
'লা ইলাহ ইল্লাহ মুহম্মদুর রসূলল্লাহ'-প্রতিটি অণু-পরমাণুতে খোদা (ঈশ্বর) পরিব্যাপ্ত, একমাত্র তিনিই পূজনীয়। মহম্মদ আল্লার সংবাদবাহক।
- \* **আদি শঙ্করাচার্য (১২০০ বছর পূর্বে)**  
জগৎ মিথ্যা, সত্য কেবল হরি ও তাঁর নাম।
- \* **সন্ত কবীর (৬০০ বছর পূর্বে)**  
'রাম নাম অতি দুর্লভ, অওরন তে নহিঁ কাম। আদি মধ্য অওর অন্তহঁ, রামহঁ তে সংগ্রাম।' রামের সঙ্গে সংঘর্ষ কর, তিনিই কল্যাণ করেন।

\* **গুরুত নানক (৫০০ বছর পূর্বে)**

“এক ওঁকার সতগুর প্রসাদী।” একমাত্র ওঁকারই সত্য; কিন্তু সেটা সদ্গুরূর  
কৃপাসাপেক্ষ।

\* **স্বামী দয়ানন্দ সরস্বতী (২০০ বছর পূর্বে)**

অজর, অমর, অবিনাশী একমাত্র পরমাত্মার উপাসনা কর। সেই ঈশ্বরের মুখ্য  
নাম ওঁ।

\* **স্বামী শ্রী পরমানন্দজী (১৯১১-৬৯ খ্রীঃ)**

ভগবান যখন দয়া করেন, তখন শক্তি মিত্র হয়ে যায়, বিপত্তি সম্পত্তি হয়ে যায়।  
ভগবান সর্বত্র থেকে দেখেন।

।।৩।।

# অনুক্রমণিকা

বিষয়	পঠা সংখ্যা
প্রাক্তন	ক-ণ
প্রথম অধ্যায় (সংশয়-বিষাদ যোগ)	১
দ্বিতীয় অধ্যায় (কর্মজিজ্ঞাসা)	২৫
তৃতীয় অধ্যায় (শক্রবিনাশ প্রেরণা)	৬৫
চতুর্থ অধ্যায় (যজ্ঞকর্ম স্পষ্টীকরণ)	৯১
পঞ্চম অধ্যায় (যজ্ঞভোক্তা মহাপুরুষস্থ মহেশ্বর).....	১২৩
ষষ্ঠ অধ্যায় (অভ্যাস যোগ)	১৩৭
সপ্তম অধ্যায় (সমগ্র বোধ)	১৫৭
অষ্টম অধ্যায় (অক্ষর ব্রহ্মযোগ)	১৭১
নবম অধ্যায় (রাজবিদ্যা জাগৃতি)	১৮৯
দশম অধ্যায় (বিভূতি বর্ণন)	২০৯
একাদশ অধ্যায় (বিশ্বরূপ দর্শন যোগ)	২২৭
দ্বাদশ অধ্যায় (ভক্তিযোগ)	২৫৩
ত্রয়োদশ অধ্যায় (ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞ বিভাগ যোগ) .....	২৬২
চতুর্দশ অধ্যায় (গুণত্বয় বিভাগ যোগ)	২৭৫
পঞ্চদশ অধ্যায় (পুরুষোত্তম যোগ)	২৮৫
ষষ্ঠদশ অধ্যায় (দৈবাসুর সম্পদ বিভাগ যোগ) .....	২৯৭
সপ্তদশ অধ্যায় (ওঁ তৎসৎ ও শ্রদ্ধাত্বয় বিভাগ যোগ) .....	৩০৭
অষ্টাদশ অধ্যায় (সন্ধ্যাস যোগ)	৩১৯
উপসংহার	৩৫১

## প্রাক্তন

বস্তুতঃ গীতাশাস্ত্রের উপর টীকা (ভাষ্য, ব্যাখ্যা) লেখার এখন আর কোন প্রয়োজন বলে মনে হয় না, তার কারণ এর উপর শতাধিক টীকা লেখা হয়ে গেছে, সে সকলের মধ্যে পঞ্চাশের উপর কেবল সংস্কৃত ভাষাতেই লিখিত। গীতার বিষয়-বস্তু নিয়ে আনুমানিক পঞ্চাশ মত থাকা সত্ত্বেও সকলেরই আধারশিলা একমাত্র এই গীতা। যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ কেবল একটি বিষয়, সেই ঈশ্বর-জ্ঞান তত্ত্ব, আত্মজ্ঞান তত্ত্ব সম্বন্ধেই গীতায় উল্লেখ করেছেন, তবে এইরূপ মতভেদ কেন? বস্তুতঃ বস্তু সর্বদা এক নিশ্চিত ভাবকেই ব্যক্ত করেন; কিন্তু শ্রোতা দশজন হলে তাঁরা তাঁদের ভিন্নভিন্ন ধারণা-শক্তির জন্য দশ প্রকারের ভাবার্থ গ্রহণ করে থাকেন। ব্যক্তির বুদ্ধির উপর তামসিক, রাজসিক অথবা সাত্ত্বিক গুণের যতটা প্রভাব থাকে, তিনি সেই স্তর থেকেই বিষয়-বস্তু গ্রহণ করতে পারেন। এর বেশী তিনি গ্রহণ করতে পারেন না। অতএব মতভেদ হওয়াটা স্বাভাবিক।

বিভিন্ন মতবাদের জন্য অথবা কখনও কখনও একটা সিদ্ধান্তকেই ভিন্নভিন্ন কালে ও ভিন্নভিন্ন ভাষাতে ব্যক্ত করা হয়েছে, যার জন্য সাধারণ মানুষ সংশয়ে পড়ে যায়। বহু টীকার মধ্যে সেই সত্যধারাও প্রবাহিত, কিন্তু শুন্দি অর্থযুক্ত একখানি টীকা যদি সহস্র টীকার মধ্যে রাখা থাকে, তবে, চেনা দুঃসাধ্য হবে যে, যথার্থ কোনটি? বর্তমানে গীতার অনেক টীকা বাজারে উপলব্ধ এবং প্রত্যেক টীকাকার স্ব স্ব অভিমতদ্বারা সত্যের উদ্ঘোষ করে চলেছেন; কিন্তু একথা সত্য যে, গীতার বাস্তবিক অর্থ থেকে তারা প্রায় সকলেই বঙ্গদূরে আছেন। নিঃসন্দেহে কিছু মহাপুরূষ সত্যের স্পর্শ করেছেন, কিন্তু যে কোন কারণে হোক তাঁরা সেটি সমাজের সমক্ষে প্রস্তুত করতে পারেন নি।

ভগবান শ্রীকৃষ্ণের আশয় হৃদয়ঙ্গম করতে না পারার একমাত্র কারণ তিনি ছিলেন মহাযোগসিদ্ধ পুরুষ। তিনি যে স্তরের বক্তব্য দিয়েছেন ক্রমশঃ চলে সেই স্তরে পৌঁছলেই বলা যেতে পারে যে শ্রীকৃষ্ণ যখন গীতার উপদেশ দিয়েছিলেন,

তখন তাঁর মনোগতভাব কি ছিল ? অন্তঃস্থিত সমস্তভাব ভাষায় সম্পূর্ণরূপে ব্যক্ত করা দুঃসাধ্য। তার কিছু অংশ ভাষায় ব্যক্ত হয়, কিছু ভাব-ভঙ্গিমা দ্বারা ও অবশেষ ক্রিয়াত্মক-সাধনা পথের পথিকই সেই নিশ্চিত ক্রিয়াত্মক পদ্ধতিদ্বারা অগ্রসর হওয়ার পর বিষয়-বস্তুর বাস্তবিকতা অনুভব করতে পারেন। যে স্তরে মোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ পৌঁছেছিলেন, নির্দিষ্ট ক্রিয়াত্মক পদ্ধতির সাহায্যে অগ্রসর হতে হতে সেই পূর্ণ অবস্থা বা স্থিতিপ্রাপ্ত মহাপুরুষই জানতে পারেন যে, আধ্যাত্মিক শাস্ত্র এই গীতা বাস্তবিকে কি বলছে ? উক্ত স্থিতিপ্রাপ্ত, মোগযুক্ত মহাপুরুষ কেবল গীতার পঙ্ক্তিসমূহই পুনরাবৃত্তিকরেন না, বরং তার আভ্যন্তরিক অর্থও বলে দেন; কারণ যে দৃশ্য শ্রীকৃষ্ণের সমক্ষে ছিল, বর্তমানের সেই স্তরের মহাপুরুষের সমক্ষেও সেই দৃশ্যই বিদ্যমান, তাই যা তিনি সম্যক দেখছেন, অনুগামীদেরও দেখিয়ে দেবেন এবং হৃদয়াভ্যন্তরে সেই ভাব জাগিয়েও দেবেন ও সুনির্দিষ্ট মঙ্গলময় পথে পরিচালনও করবেন।

‘পূজ্য শ্রী পরমহংসজী মহারাজ’ও উক্ত স্তরের মহাপুরুষ ছিলেন। তাঁর বাণী ও অন্তঃপ্রেরণা দ্বারা গীতার যে শাশ্বত ভাবার্থ প্রাপ্ত হয়েছে, তাই সকলন এই ‘যথার্থ গীতা’। এর মধ্যে স্বীয় কোন অভিমত নেই। এই গীতার সম্পূর্ণ বিষয় ক্রিয়াত্মক। সাধনে প্রবৃত্ত প্রত্যেক পথিককে সেই নিশ্চিত পরিধি অতিক্রম করতে হয়। যতক্ষণ সেই সুনিশ্চিত পথ থেকে সাধক দূরে, ততক্ষণ একথা সত্য এবং স্পষ্ট যে, সে ব্যক্তি সাধনে প্রবৃত্ত নয়, বরং কোন না কোন প্রকার ব্যর্থ ঢোল অবশ্যই পিটিয়ে চলেছে। অতএব কোন মহাপুরুষের আশ্রয় নিন। শ্রীকৃষ্ণ অন্য কোন সত্য বলেননি, বরং বলেছেন, ‘খ্যাতিভির্বন্ধু গীতম্’। খ্যিগণ বন্ধবার যে কথা বলেছেন, সেই কথাই শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন। তিনি একথা কখনও বলেননি যে, “সনাতন-শাশ্বত-সত্য জ্ঞানসম্বন্ধে কেবল আমিই জানি বা আমই বলব।” বরং বলেছেন, “তত্ত্বদর্শী মহাপুরুষের শরণাগত হও এবং নিষ্পত্তি সেবা-যত্নদ্বারা সেই জ্ঞানলাভ কর।” শ্রীকৃষ্ণ কেবল মহাপুরুষগণ দ্বারা ঘোষিত শাশ্বত সত্যই উদ্ঘাটিত করেছেন।

মূল গীতা সুবোধ্য সংস্কৃতে লিপিবদ্ধ। শুধু এতে নিহিত যথার্থকেই গ্রহণ করেন, তবুও অতি সহজেই আপনাদের সকলের বোধগম্য হবে; কিন্তু আপনারা যেমন আছে ঠিক তেমনিই অর্থ গ্রহণ করেন না। উদাহরণার্থ, শ্রীকৃষ্ণ স্পষ্ট বলেছেন—

‘যজ্ঞের প্রক্রিয়াই কর্ম।’ তবুও আপনারা বলেন কৃষি করা কর্ম। যজ্ঞের অর্থ আগে স্পষ্টই বলেছেন যে— এই যজ্ঞে বহু যোগী প্রাণকে অপানে ও আরও অন্য-অন্য যোগী অপানকে প্রাণে আহতি দেন, আবার অন্যান্য যোগীগণ প্রাণ-অপান দু-ই রক্ষ করে প্রাণযাম পরায়ণ হয়ে যান, আবার অন্য বহু যোগীগণ ইন্দ্রিয়ের সকল প্রবৃত্তি সংযমাপ্তিতে আহতি দেন। এই প্রকার নিঃশ্঵াস-প্রশ্বাসের (প্রাণ-অপানের) চিন্তনকে যজ্ঞ বলে। মনসাহিত ইন্দ্রিয়সমূহের সংযমই যজ্ঞ। শাস্ত্রকার এইভাবে যজ্ঞ শব্দের অর্থস্পষ্ট বলেছেন, তা সত্ত্বেও আপনারা বলেন, “বিষ্ণুর নিমিত্তে স্বাহা বলা, অপ্তিতে যব, তিল ও ঘৃতের আহতি দেওয়াই যজ্ঞ।” শ্রীকৃষ্ণ এইরূপ একটা শব্দও কোথাও বলেন নি।

তবে কেন আপনারা বুঝতে পারেন না ? সূক্ষ্মাতিসূক্ষ্ম ভাবে বিচার করার পরেও শুধু বাক্য-বিন্যাসই আপনাদের সম্ভল হয়, ও আপনারা নিজেদের যথার্থ জ্ঞান থেকে শুণাই পান কেন ? বস্তুতঃ জন্ম নেওয়ার পর বড় হয়ে মানুষ পৈতৃক সম্পত্তির অর্থাৎ ঘর, দোকান, জমি-জায়গা, পদ-প্রতিষ্ঠা, গরু-মহিষ, যন্ত্র-উপকরণ ইত্যাদির অধিকারী হয়। ঠিক এইভাবে কিছু কুরীতি, পরম্পরা, পূজা-পদ্ধতিও পৈতৃক সম্পত্তির সঙ্গে পেয়ে থাকে। তেওঁশি কোটি দেবী-দেবতা তো বহু পূর্বেই গোনা হয়েছিল, সমস্ত বিশ্বে এদের অগণিত রূপ নাম। শিশু যেমন যেমন বড় হয়, তেমন তেমন মাতা-পিতা, ভাই-বোন, পাড়া-প্রতিবেশীদের এই দেবী-দেবতারই পূজা করতে দেখে। পরিবারে প্রচলিত নানান পূজা-পদ্ধতির গভীর প্রভাব তার মস্তিষ্কে পড়ে। পরিবারে দেবী-পূজার প্রাধান্য থাকলে ‘দেবী-দেবী’ করেই তার জীবন কাটে, আর যদি ভূত-পূজার প্রাধান্য দেখে, তাহলে ‘ভূত-ভূত’ করে তার জীবন কাটে। কেউ শিব, কেউ কৃষ্ণ, কেউ আর কিছু ধরেই থাকে, তাদের কিছুতেই ছাড়তে পারে না।

এরূপ ভ্রান্ত মানুষের হাতে যদি গীতার মত কল্যাণকারক গ্রন্থ পড়েও যায়, তবুও তা তার বোধগম্য হবে না। পৈতৃক সম্পত্তি সে কদাচিং ছাড়তেও পারে; কিন্তু এই সকল গোঁড়ারী ও ধর্মের বিভিন্ন আচার-ব্যবহার কিছুতেই ছাড়তে পারে না। পৈতৃক সম্পত্তি ছেড়ে আপনি শত-সহস্র কিলোমিটার দূরে চলে যেতে পারেন; কিন্তু মন ও মস্তিষ্কে অক্ষিত এই গোঁড়া বিচারধারা গুলি সেখানেও সঙ্গেই থাকে।

আপনি আপনার মন ও মস্তিষ্ককে তো আলাদা করে রাখতে পারেন না, অতএব আপনি যথার্থ শাস্ত্রকেও সেই গোঁড়া রীতি-নীতি, মান্যতা ও পূজা-পদ্ধতির অনুরূপই দেখতে চাইবেন। আপনার বিচার-বুদ্ধির অনুরূপ হলে আপনি স্বীকার করবেন, না হলে সে সমস্ত আপনার কাছে মিথ্যা প্রতীত হবে। এই সকল কারণে গীতার রহস্য আপনি বুঝতে পারেন না, রহস্য রহস্য রূপেই থেকে যায়। একে বাস্তবিক পরখ করেন মহাপুরুষ অথবা সদগুরু, তিনিই বলতে পারেন গীতাশাস্ত্র শ্রীকৃষ্ণ কি বলেছেন? জনসাধারণের পক্ষে এই বিষয় বুদ্ধির অতীত। এরজন্য সহজ উপায় হল, কোন মহাপুরুষের সামিধ্যে গিয়ে বিষয় বস্তুর তত্ত্ব সম্যক্রূপে অবগত হওয়া ও এই কথাই যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ গীতায় বার বার উল্লেখ করেছেন।

গীতাশাস্ত্র কোন বিশিষ্ট ব্যক্তি, জাতি, মত, পন্থ, দেশকাল বা কোন গোঁড়া সম্প্রদায়ের জন্য নয়। গীতা সার্বলৌকিক, সার্বকালিক ধর্মগ্রন্থ। গীতাগ্রন্থ প্রত্যেক দেশ, প্রত্যেক জাতি এবং প্রত্যেক স্তরের স্ত্রী-পুরুষের জন্য, সকলের জন্য। মানুষ মাত্রের জন্য। কেবল কারও মুখে শুনে অথবা কারও প্রেরণা অথবা প্রভাবে মানুষকে এমন কোন নির্ণয় নেওয়া উচিত নয়, যার প্রভাব তার নিজের অস্তিত্বের উপর প্রত্যক্ষভাবে পড়ে। পূর্বাগ্রহমুক্ত সত্যাঞ্জীবীর জন্য এই আর্যগ্রন্থ আলোক-স্তম্ভ। হিন্দু বর্গের কথন হল—‘বেদই প্রমাণ।’ বেদের অর্থ হল জ্ঞান অর্থাৎ পরমাত্মা বোধ। সেই পরমাত্মা না সংস্কৃত ভাষাতে আছে ও না সংহিতায়। পুস্তক তো কেবল তাঁর সঙ্কেত করে। বস্তুতঃ পরমাত্মা হাদয়ে জাগ্রত হয়।

বিশ্বামিত্র ভগবদ্ভিত্তিনে মঞ্চ ছিলেন। তাঁর ভক্তিতে প্রসন্ন হয়ে ব্ৰহ্মা তাঁর কাছে এসে বলেছিলেন—“আজ থেকে তুমি খুবি।” বিশ্বামিত্র এতে সন্তুষ্ট হন নি, পূর্ববৎ ধ্যানমঞ্চই ছিলেন। কিছু কাল পরে দেবতাগণের সঙ্গে ব্ৰহ্মা পুনৱায় এসে বলেছিলেন—“আজ থেকে তুমি রাজুৰি।” কিন্তু এই বরেও তিনি সন্তুষ্ট হন নি। ধ্যানস্থ ছিলেন। ব্ৰহ্মা দৈবী সম্পদ নিয়ে (দেবতাগণের সঙ্গে) পুনৱায় উপস্থিত হয়ে বলেছিলেন—“আজ থেকে তুমি মহুৰ্বি।” বিশ্বামিত্র বলেছিলেন—“না না, আমাকে জিতেন্দ্ৰিয় ব্ৰহ্মার্থি বলুন।” ব্ৰহ্মা বলেছিলেন—“এখনও তুমি জিতেন্দ্ৰিয় হওনি।” বিশ্বামিত্র পুনৱায় ধ্যানস্থ হয়েছিলেন। তপপ্রভাবে তাঁর মস্তিষ্ক থেকে প্রচণ্ড তপাঞ্চ নিঃসৃত হচ্ছিল। দেবতাদের অনুনয় কৰাতে তিনি আবার এসে বিশ্বামিত্রকে

বলেছিলেন—“এখন থেকে তুমি ব্রহ্মার্থি।” তখন বিশ্বামিত্র বলেছিলেন—“যদি আমি ব্রহ্মার্থি, তবে বেদ আমাকে বরণ করুক।” বেদ বিশ্বামিত্রের হাদয়ে উদ্ভূত হয়েছিল অর্থাৎ তিনি পূর্ণজ্ঞানী হয়েছিলেন। যে তত্ত্ব জানা ছিল না, তার সম্যক জ্ঞান হয়েছিল। বস্তুতঃ বেদ কোন গ্রন্থ নয়, এই জ্ঞানকে বেদ বলে। বিশ্বামিত্র যেখানে থাকতেন, বেদও সেখানে তাঁর সঙ্গে থাকত।

সেই একই কথা শ্রীকৃষ্ণও বলেছেন যে, “সংসার এক অবিনাশী অশ্঵থ বৃক্ষ। উর্ধ্বে পরমাত্মা যার মূল, নিম্নে প্রকৃতিপর্যন্ত এর শাখা-প্রশাখা বিস্তৃত। যিনি প্রকৃতিকে বিনষ্ট করে পরমাত্মাকে লাভ করেন; তিনিই বেদবিঃ। অর্জুন! আমিও বেদবিঃ।” অতএব প্রকৃতির প্রসার ও বিনাশের সঙ্গে পরমাত্মার অনুভূতিকেই বেদ বলে। হৈ অনুভূতি সিদ্ধরপ্দত্ত। সেইজন্য বেদকে অপৌরঃষেয় বলা হয়। মহাপুরুষগণ অপৌরঃষেয় হন। তাঁদের মাধ্যমে পরমাত্মাই কথা বলেন। তাঁরা পরমাত্মার আদেশ-নির্দেশ প্রসারক (ট্রান্সমিটার) হয়ে যান। কেবল শব্দজ্ঞান দ্বারা তাঁদের বাণীর মধ্যে নিহিত যথার্থকে পরিখ করা যেতে পারে না। তাঁকে তাঁরাই অনুভব করতে পারেন, যাঁরা সেই নিশ্চিত ক্রিয়াত্মক পথে চলে সেই অপৌরঃষেয় স্থিতিলাভ করেন, যাঁর পৌরুষ (অহং) পরমাত্মায় বিলীন হয়ে যায়।

বস্তুতঃ বেদ অপৌরঃষেয়; কিন্তু এর বক্তা শ’ দেড়শ মহাপুরুষই ছিলেন। তাঁদের বাণীর সংকলনকেই বেদ বলা হয়। কিন্তু যখন কোন শাস্ত্র লিপিবদ্ধ করা হয়, তখন তৎকালীন সমাজ-ব্যবস্থাও তার নিয়ম-কানুনও সেটিতে লিপিবদ্ধ করা হয়। মহাপুরুষের নামে জনসাধারণ সেই সকল নিয়ম-পালন করতে থাকে, কিন্তু ধর্মের সঙ্গে সে সবের কোন সম্পর্ক নেই। আজকের যুগে মন্ত্রীদের আগে-পিছনে ঘোরে যারা তারাও অধিকারীদের দিয়ে নিজেদের কিছু কিছু কাজ করিয়ে নেয়। যদিও মন্ত্রীরা এই ধরণের নেতাদের চেনে না পর্যন্ত। এই ভাবে সামাজিক ব্যবস্থাকারেরা মহাপুরুষদের নামে নিজেদের সুখসুবিধার রাস্তাও গ্রহে লিপিবদ্ধ করেন। এই সকল ব্যবস্থার সামাজিক উপযোগিতা তৎসামাজিক, বেদের সম্বন্ধেও এই নিয়ম প্রযোজ্য। চিরস্তন সত্য উপনিষদেই সংগৃহিত। এই সকল উপনিষদের সারাংশই হল যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের বাণী ‘গীতা’। সারাংশতঃ “গীতা অপৌরঃষেয় বেদ-রসাগ্র থেকে সমুদ্ভূত উপনিষদ-সুধার সার-সর্বস্ব।”

এইরূপ যে মহাপুরুষ যিনি একবার পরমতত্ত্বাত্ত করেন, তিনিই ধর্মগ্রন্থস্বরূপ। তাঁর বাণীর সঙ্গলে বিশ্বের যে কোন স্থানেই থাকনা কেন, তা শাস্ত্র নামে অভিহিত হবে। কিছু ধর্মবিলম্বী ব্যক্তিদের বক্তব্য এই যে— “কোরানে যা আছে, তা-ই সত্য। পুনরায় কোরান রচনা অসম্ভব।”, “বীশুখৃষ্টকে বিশ্বাস না করলে স্বর্গপ্রাপ্তি অসম্ভব, কারণ তিনি ঈশ্বরের একমাত্র পুত্র ছিলেন।”, “পুনরায় এই স্তরের মহাপুরুষের আবিভাব হওয়া অসম্ভব।”—এই সকল উক্তি গোঁড়ামীর পরিচায়ক। যদি একবার সেই শাশ্বত-সনাতন-সত্য তত্ত্বের সহিত কারণ সাক্ষাত্কার হয় তবে পুনরায় তদ্দপ উৎকৃষ্ট এবং কল্যাণকর বিচার-ব্যবস্থা সম্ভব।

‘গীতা’ একমাত্র সার্বভৌম ধর্মগ্রন্থ। ধর্মের নামে প্রচলিত বিশ্বের সমস্ত ধর্মগ্রন্থের মধ্যে গীতার স্থান অদ্বিতীয়। গীতা কেবল ধর্মশাস্ত্রই নয়, বরং অন্যান্য যাবতীয় ধর্মগ্রন্থের মধ্যে নিহিত সত্যের মানদণ্ড গীতা। গ্রন্থটির সিদ্ধান্ত ও মর্মকথা এতই মৌলিক যে, অন্য যে কোন ধর্মগ্রন্থে অনুস্যুত সত্য সহজে অনাবৃত হয়ে ওঠে, পরম্পর বিরোধী বিচারসমূহের সমাধান হয়ে যায়। অন্যান্য প্রতিটি ধর্মগ্রন্থে সংসারে সসম্মানে বেঁচে থাকার কলা-কৌশল ও কর্মকাণ্ডের বাহ্য্য দেখা যায়। জীবনের স্তর সুন্দর, উন্নত ও আকর্ষক করবার জন্য সেগুলি সম্পাদন করা অথবা না করার রূচিকর ও ভয়ঙ্কর কাহিনীতে পূর্ণ সকল ধর্ম গ্রন্থই। কর্মকাণ্ডের এই পরম্পরাকেই জনসাধারণ ধর্ম বলে মেনে নিয়েছে। জীবন-নির্বাহের কলা-কৌশলের জন্য নির্মিত পূজা-পদ্ধতির মধ্যে দেশকাল ও পরিস্থিতি অনুসারে পরিবর্তন হওয়া স্বাভাবিক। ধর্মের নামে সমাজে মতভেদ ও কলহের এটাই একমাত্র কারণ। ‘গীতা’ এই সমস্ত ক্ষণস্থায়ী ব্যবস্থাগুলির উদ্বৰ্ধে আত্মিক পূর্ণতায় প্রতিষ্ঠিত করার ত্রিয়াত্মক অনুশীলন মাত্র, এর একটি শ্লোকও ভৌতিক জীবন-যাপনজন্য নয়। এর প্রতিটি শ্লোক আপনাকে আস্তরিক যুদ্ধ ‘আরাধনা’র প্রবৃত্ত হওয়ার জন্য আহ্বান করেছে। অন্যান্য ধর্মগ্রন্থের মত গীতা আপনাদের স্বর্গ অথবা নরকপ্রাপ্তির দ্বন্দ্বে ভ্রান্ত না করে, বরং সেই সনাতন অমরত্বের উপলব্ধি করায়, যারপর আর জন্ম-মৃত্যুর বন্ধন থাকে না।

প্রত্যেক মহাপুরুষ নিজস্ব শৈলী ও কিছু কিছু বিশিষ্ট শব্দের প্রয়োগ করেন। যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ গীতাশাস্ত্রে ‘কর্ম’, ‘যজ্ঞ’, ‘বর্ণ’, ‘বর্ণসক্র’, ‘যুদ্ধ’, ‘ক্ষেত্র’, ‘জ্ঞান’

ইত্যাদি শব্দের উপর বার বার জোর দিয়েছেন। এই সকল শব্দের বিশিষ্ট অর্থও বিভিন্ন জায়গায় উল্লেখ করেছেন। পুনরাবৃত্তিতেও ভাষার শৈলী ও সৌন্দর্য নষ্ট হয়নি। ভাষাস্তরের সময় উক্ত শব্দাবলীর যথার্থ অর্থ প্রয়োগের দিকে বিশেষ লক্ষ্য রাখা হয়েছে এবং আবশ্যক স্থানে উচিত ব্যাখ্যাও করা হয়েছে। নিম্নলিখিত প্রশ্ন গীতার বৈশিষ্ট্য যা অতি আকর্ষক, যার বাস্তবিক অর্থ আধুনিক সমাজ ভুলে যেতে বসেছে। ‘যথার্থ গীতা’য় এর বাস্তবিক অর্থ ও ব্যাখ্যা করা হয়েছে। উদাহরণার্থ—

১. শ্রীকৃষ্ণ— এক যোগেশ্বর ছিলেন।
২. সত্য— আত্মাই একমাত্র সত্য।
৩. সনাতন— আত্মাই সনাতন, পরমাত্মাই সনাতন।
৪. সনাতন ধর্ম— পরমাত্মার সহিত মিলনের একমাত্র প্রক্রিয়া।
৫. যুদ্ধ—দৈবী ও আসুরী গুণসমূহের সংঘবই যুদ্ধ। দৈবী ও আসুরী অস্তঃ করণের দুটি প্রবৃত্তিকে বলে এবং এই দুটি শাস্ত হওয়াই পরিণাম।
৬. যুদ্ধস্থান— মানবদেহ এবং মনসহিত ইন্দ্রিয়সমূহই যুদ্ধস্থল।
৭. জ্ঞান— পরমাত্মার প্রত্যক্ষ অনুভূতিই জ্ঞান।
৮. যোগ— সংসারের সংযোগ-বিয়োগরহিত অব্যক্ত ঋক্ষের সহিত আত্মার মিলনের নামই যোগ।
৯. জ্ঞানযোগ— আরাধনাই কর্ম। নিজের উপর নির্ভর হয়ে কর্মে প্রবৃত্ত হওয়াই জ্ঞানযোগ।
১০. নিষ্কাম কর্মযোগ— ইষ্টের উপর নির্ভর করে, সমর্পণের সহিত কর্মে প্রবৃত্ত হওয়া নিষ্কাম কর্মযোগ।
১১. শ্রীকৃষ্ণ কোন সত্যের বিষয়ে বলেছেন ?- তত্ত্বদর্শীগণ যা সম্যক্ অনুভব করেছেন ও অস্তদৃষ্টি দিয়ে যা দেখেছেন ও এরপরেও দেখবেন, সেই শাশ্বত সত্য সম্পন্নেই শ্রীকৃষ্ণ গীতায় উল্লেখ করেছেন।
১২. যজ্ঞ— সাধনার বিধি-বিশেষকে ‘যজ্ঞ’ বলে।

( জ )

যথার্থ গীতা : শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা

১৩. কর্ম- যজ্ঞকে কার্যরূপ দেওয়া কর্ম।
১৪. বর্ণ- আরাধনার সেই একমাত্র বিধি, যাকে কর্ম বলে। সেই কর্মকে চারটি শ্রেণীতে বিভাগ করা হয়েছে, সেই চারটিই বর্ণ। সাধনা-পথে একজন সাধকেরই উচ্চ-নীচ স্তর হল সেই বর্ণ। জাতি-বিশেষ নয়, যা বর্তমান সমাজে প্রচলিত।
১৫. বর্ণসঙ্কর- পরমাত্ম-পথ থেকে বিচ্যুত হওয়া, সাধনায় ভ্রম উৎপন্ন হওয়াই বর্ণসঙ্কর।
১৬. মানুষের শ্রেণী- অন্তর্করণের স্বভাবানুসারে মানুষের শ্রেণী দুটি- প্রথমটি দেবতার ও অন্যটি অসুরের। মানুষের জাতি দুটি, যা স্বভাবদ্বারা নির্ধারিত। এই স্বভাবের আবার ক্ষয়-বৃদ্ধিও হয়।
১৭. দেবতা- হৃদয়-ক্ষেত্রে পরমদেবের দেবত্ব অর্জন যাদের সাহায্যে করা হয়, সেই গুণসমূহই দেবতা। বাহ্য দেবতার পূজা মুচ্ছার পরিচয়।
১৮. অবতার- অবতারের আবির্ভাব পুরুষের হৃদয়ে হয়, বাইরে নয়।
১৯. বিরাট দর্শন- যোগীর হৃদয়ে ঈশ্বরপ্রদত্ত অনুভূতি। ভগবান সাধকের হৃদয়ে দৃষ্টি হয়ে দাঁড়ালে তবেই দেখা যাবে।
২০. পূজনীয় দেব (ইষ্ট)- একমাত্র পরাংপর ঋক্ষাই ‘পূজনীয় দেব’। হৃদয়-দেশই হল তাঁকে খুঁজবার স্থান। অব্যক্ত স্বরাপে স্থিত, প্রাণিযুক্ত মহাপুরূষই পরাংপর পরবর্ত্ত প্রাপ্তির একমাত্র শ্রোত।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের স্বরূপ বোঝার জন্য তৃতীয় অধ্যায়পর্যন্ত অধ্যয়ন আবশ্যিক। ত্রয়োদশ অধ্যায়পর্যন্ত অধ্যয়ন করলে স্পষ্ট বুঝতে পারবেন যে শ্রীকৃষ্ণ যোগী ছিলেন। দ্বিতীয় অধ্যায় থেকেই সত্য স্পষ্ট হবে। সনাতন এবং সত্য একে অন্যের পরিপ্রক যা দ্বিতীয় অধ্যায় থেকেই স্পষ্ট বুঝতে পারবেন; কিন্তু তবুও এই বিষয় পূর্তিপর্যন্ত যাবে। চতুর্থ অধ্যায় শেষ হতে হতে যুদ্ধ শব্দের অর্থ স্পষ্ট হতে শুরু হবে, একাদশ অধ্যায়পর্যন্ত সংশয় নির্মূল হবে; তবুও এই বিষয়ে পূর্ণ জ্ঞানের জন্য যোড়শ অধ্যায়পর্যন্ত অধ্যয়ন করতে হবে। যুদ্ধস্থান বোঝার জন্য ত্রয়োদশ অধ্যায় বার বার অধ্যয়ন করুন।

জ্ঞানের অর্থ চতুর্থ অধ্যায় থেকে স্পষ্ট হবে এবং ত্রয়োদশ অধ্যায়ে স্পষ্ট জানা যাবে যে প্রত্যক্ষ দর্শনকেই জ্ঞান বলে। ‘যোগ’ শব্দের অর্থ ষষ্ঠ অধ্যায়পর্যন্ত অধ্যয়ন করলে বোঝা যাবে, যদিও অষ্টাদশ অধ্যায়পর্যন্ত যোগের বিভিন্ন অঙ্গের পরিভাষা দেওয়া হয়েছে। ‘জ্ঞানযোগ’ তৃতীয় অধ্যায় থেকে ষষ্ঠ অধ্যায়পর্যন্ত স্পষ্ট হয়ে যাবে। ‘নিষ্কাম কর্মযোগ’ দ্বিতীয় অধ্যায় থেকে শুরু করে পূর্তিপর্যন্ত চর্চা করা হয়েছে। তৃতীয় অধ্যায় থেকে চতুর্থ অধ্যায়পর্যন্ত অধ্যয়ন করলে, ‘যজ্ঞ’ স্পষ্ট বুঝতে পারবেন।

কর্মের নামোল্লেখ অধ্যায় ২/৩৯ শ্লোকে প্রথমবার করা হয়েছে। এই শ্লোক থেকে চতুর্থ অধ্যায়পর্যন্ত অধ্যয়ন করলে স্পষ্ট হয়ে যাবে যে, কর্মের অর্থ আরাধনা অথবা ভজন কেন? ঘোড়শ অধ্যায় ও সপ্তদশ অধ্যায়ে সত্য বিচার দৃঢ় হবে। তৃতীয় অধ্যায়ে ‘বর্ণসক্র’ ও চতুর্থ অধ্যায়ে ‘অবতার’ স্পষ্ট হবে। বর্ণ-ব্যবস্থা বোঝার জন্য অষ্টাদশ অধ্যায়ের অধ্যয়ন আবশ্যিক, তৃতীয় ও চতুর্থ অধ্যায়েও যথেষ্ট সঙ্কেত দেওয়া হয়েছে। মানুষের মধ্যে দেবাসুর জাতির পরিচয় ঘোড়শ অধ্যায়ে পাবেন। ‘বিরাট দর্শন’ দশম অধ্যায় ও একাদশ অধ্যায়পর্যন্ত স্পষ্ট হয়ে গেছে। সপ্তম, নবম ও পঞ্চদশ অধ্যায়েও এবিষয়ে যথেষ্ট চর্চা করা হয়েছে। সপ্তম, নবম ও সপ্তদশ অধ্যায়ে বাহ্য দেবতার অস্তিত্বহীনতার স্পষ্ট ব্যাখ্যা করা হয়েছে। হৃদয়-দেশই পরমাত্মার পূজাস্থলী যার জন্য ধ্যান ও নিঃশ্঵াস-প্রশ্বাসের (প্রাণ-অপানের) সহিত ইষ্ট-চিত্তন ইত্যাদি ক্রিয়া, যেটা নির্জনে বসে (মন্দিরে-মূর্তির সম্মুখে নয়) অভ্যাস করা হয়, সেটা তৃতীয়, চতুর্থ, ষষ্ঠ ও অষ্টাদশ অধ্যায়ে স্পষ্ট হয়েছে। আর বেশী বিচার-বিবেচনারই বাকি প্রয়োজন, যদি কেবল ষষ্ঠ অধ্যায়পর্যন্তই অধ্যয়ন করেন, তবুও যথার্থ গীতার মূল আশয় আপনাদের বোধগম্য নিশ্চয়ই হবে।

গীতা জীবিকা-সংগ্রামের সাধন নয়, এতে জীবন-সংগ্রামে শাশ্বত বিজয় লাভের ক্রিয়াত্মক প্রশিক্ষণ দেওয়া হয়েছে, সেইজন্য গীতাশাস্ত্র যুদ্ধগ্রন্থ, যার সাহায্যে বাস্তবিক বিজয়লাভ করা সম্ভব। গীতোক্ত যুদ্ধ কামান, ঢাল-তরবারি, তীর-ধনুক, গদা, লাঙ্গল-কোদাল ও কাস্তে-হাতুড়ি ইত্যাদি নিয়ে যে সাংসারিক যুদ্ধ করা হয়, তা নয়, এই সাংসারিক যুদ্ধে শাশ্বত বিজয়লাভ হয় না। এটা শুধু সৎ এবং অসৎ প্রবৃত্তি সমূহের সংঘর্ষ। পুরাকালে এই সকলের রূপকাত্তক বর্ণনার পরম্পরা ছিল।

(ট)

যথার্থ গীতা : শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা

বেদে ইন্দ্র ও বৃত্ত, বিদ্যা ও অবিদ্যা, পুরাণে দেবাসুর সংগ্রাম, মহাকাব্যে রাম-রাবণ  
ও কৌরব-পাণ্ডবের সংঘর্ষকেই গীতায় ধর্মক্ষেত্র-কুরুক্ষেত্র, দৈবী সম্পদ-আসুরী  
সম্পদ, সজাতীয়-বিজাতীয়, সদ্গুণ ও দুর্গণ সমূহের সংঘর্ষ বলা হয়েছে।

এই সংঘর্ষ যেখানে হয়েছিল সেই স্থান কোথায় ? গীতার ধর্মক্ষেত্র-কুরুক্ষেত্র  
ভারতের কোন ভূখণ্ড নয়, স্বয়ং গীতাকারের বাণীতে - “ইদং শরীরং কৌন্তেয়  
ক্ষেত্রামিত্যভিধীয়তে ।” - কৌন্তেয় ! এই দেহটাই ক্ষেত্র, এর মধ্যে ভাল-মন্দ কর্মদণ্ড  
যে বীজবপন করা হয়, তা সংস্কাররূপে অক্ষুরিত হতে থাকে । দশটি ইন্দ্রিয়, মন,  
বুদ্ধি, চিন্ত, অহংকার, পাঁচটি বিকার এবং সত্ত্ব, রজঃ, তমঃ এই তিনটি গুণের বিকার  
হল-এই ক্ষেত্রের বিস্তার । প্রকৃতিজাত এই ত্রিগুণদ্বারা অভিভূত হয়ে মানুষ কর্ম  
করে । মানুষ ক্ষণমাত্রও কর্ম না করে থাকতে পারে না । “পুনরপি জননম্ পুনরপি  
মরণম্ পুনরপি জননী জর্ঠরে শয়নম্ ।” জন্ম-জন্মান্তর ধরে এই ক্রিয়াই তো চলেছে ।  
এটাই কুরুক্ষেত্র । সদ্গুরূপ শরণাগত হয়ে সাধক যখন সাধনার সঠিক পথে চলে  
পরমধর্ম পরমাত্মার দিকে অগ্রসর হয়, তখন এই ক্ষেত্রেই ধর্মক্ষেত্রে পরিণত হয় ।  
তাই এই দেহটাই ক্ষেত্র ।

এই শরীরের অস্তরালে অস্তঃকরণের দুটি পুরাতন প্রবৃত্তি বিদ্যমান, সে দুটি  
হল- দৈবী সম্পদ ও আসুরী সম্পদ । দৈবী সম্পদে আছে পুণ্যরূপ পাণু এবং  
কর্তব্যরূপ কুণ্ঠী । পুণ্য জাগ্রত হবার আগে মানুষ কর্তব্য ভেবে যা কিছু করে, নিজের  
বুদ্ধি অনুসারে সে কর্তব্যই করে; কিন্তু তার দ্বারা কর্তব্য-পালন হয় না-কারণ পুণ্য  
ছাড়া কর্তব্য কি, তা বোঝা সহজ নয় । কুণ্ঠী পাণুর সঙ্গে সম্বন্ধ হওয়ার পূর্বে যাকে  
অর্জন করেছিল, সে ছিল ‘কর্ণ’ । আজীবন সে কুণ্ঠীর পুত্রদের সঙ্গে যুদ্ধই করেছিল ।  
পাণ্ডবদের দুর্ধর্ষ শক্র যদি কেউ ছিল, তবে সে ছিল ‘কর্ণ’ । বিজাতীয় কর্মই ‘কর্ণ’,  
আবার এটা বন্ধনের কারণ, যার থেকে পরম্পরাগত গোঁড়ামীর চিত্রণ হয়-  
পূজা-পদ্ধতি মন্ত্রিক থেকে মুছে ফেলা যায় না । পুণ্য জাগ্রত হলে ধর্মরূপ যুধিষ্ঠির,  
অনুরাগরূপ অর্জুন, ভাবরূপ ভীম, নিয়মরূপ নকুল, সৎসন্দরূপ সহদেব,  
সান্ত্বিকতারূপ সাত্যকি, কায়াতে সামর্থ্যরূপ কাশিরাজ, কর্তব্যদ্বারা জগতে বিজয়রূপ  
কুণ্ঠীভোজ ইত্যাদি ইষ্টেন্মুখ মানসিক প্রবৃত্তিসমূহের উৎকর্ষ হয় । যারা গণনায় সাত  
অক্ষেত্রে অক্ষ দৃষ্টিকোণ দিয়ে যার গঠন হয়, তাকেই

বলে দৈবী সম্পদ। পরমধর্ম পরমাত্মাপর্যন্ত পোঁছিয়ে দেয় এই সাতটি সোপান, ‘সাতটি ভূমিকা’, কোন অন্য গণনা নয়। বস্তুতঃ এই প্রবৃত্তিসমূহ অনন্ত।

অন্যদিকে আছে কুরুক্ষেত্র, যাতে দশটি ইন্দ্রিয় ও একটী মন মিলিত হয়ে সেনার সংখ্যা দাঁড়িয়েছে এগারো অক্ষেটিহিনী। মন ও ইন্দ্রিয়গম্য দৃষ্টিকোণ দিয়ে যার গঠন হয়, তাকে বলে আসুরী সম্পদ। তার মধ্যে আছে অজ্ঞানরূপ ধৃতরাষ্ট্র, যে সব সত্য জেনেও অন্ধ। তার সহচারিণী গান্ধারী—ইন্দ্রিয়ের আধারযুক্ত প্রবৃত্তি। তার সঙ্গে আছে মোহরূপ ‘দুর্যোধন’, দুর্বুদ্ধিরূপ দুশ্শাসন, বিজাতীয় কর্মরূপ কর্ণ, অমরূপ ভীম্ব, দৈতের আচরণরূপ দ্রোণাচার্য, আসক্তিরূপ অশ্বথামা, বিকল্পরূপ বিকর্ণ, অপূর্ণ সাধনে কৃপার আচরণরূপ কৃপাচার্য, ও এদের মাঝে জীবরূপ ‘বিদুর’ আছে, অজ্ঞানের মধ্যে থাকা সত্ত্বেও তার দৃষ্টি পাণ্ডবদের উপরই ছিল, পুণ্য থেকে প্রবাহিত প্রবৃত্তির উপর ছিল, কারণ আত্মা পরমাত্মারই শুন্দ অংশ। এই প্রকার আসুরিক সম্পদও অনন্ত। ক্ষেত্রে একটাই এই দেহটা; এর মধ্যে যুদ্ধে ইচ্ছুক প্রবৃত্তি দুটি—একটি প্রকৃতিতে বিশ্বাস এনে দেয়, যার ফলে নীচ-অধম যোনিতে জন্ম হয় ও অন্যটি পরমপুরুষ পরমাত্মাতে বিশ্বাস ও প্রবেশ দেয়। তত্ত্বদর্শী মহাপুরুষের সংরক্ষণে সাধনা করলে ক্রমশঃ দৈবী সম্পদের উৎকর্ষ ও আসুরিক সম্পদের সর্বথা শমন হয়। মনে যখন কোন বিকার থাকে না তখন মন নিরুদ্ধ হয় শেষে এই নিরুদ্ধ মনেরও সম্পূর্ণ রূপে বিলয় হয়। এই অবস্থায় দৈবী সম্পদেরও আর কোন প্রয়োজন থাকে না। বিশ্বরূপ দর্শনের সময় অর্জুন দেখলেন যে কৌরব পক্ষের পরে পাণ্ডব পক্ষের যোদ্ধাও যোগেশ্বরের মুখ-গহ্নে সমাহিত হচ্ছে। পূর্তিকালে অর্থাৎ সাধনার অন্তিম স্তরে দৈবী সম্পদও বিলয় হয় এবং সনাতন-শাশ্঵ত-সত্য পরিগাম দৃষ্টিগোচর হয়। এর পরেও যদি মহাপুরুষগণ আচরণ করেন, তবে তা কেবল অনুগামীদের পথ-প্রদর্শনের জন্যই করেন।

জনহিতের জন্য মহাপুরুষগণ সুক্ষ্ম মনোভাব বর্ণনা স্তুলরূপে করেছেন। গীতাগ্রহ যদ্যপি ছন্দবদ্ধ এবং ব্যাকরণসম্মত তথাপি এর সকল পাত্র প্রতীকাত্মক, অমূর্ত যোগ্যতার মূর্তরূপ মাত্র। গীতার শুরুতেই ত্রিশ-চল্লিশজন পাত্রের নাম উল্লেখ করা হয়েছে, যাদের মধ্যে অর্দেক সজাতীয়, বাকী অর্দেক বিজাতীয়। কিছু পাণ্ডব পক্ষের ছিল, কিছু কৌরব পক্ষের ছিল। বিশ্বরূপ দর্শনের সময় এদের মধ্যে চার-চয়

( ড )

## যথার্থ গীতা : শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা

জনের নামই পুনরায় উল্লেখ করা হয়েছে, অন্যথা সম্পূর্ণ গীতায় এই নামগুলির আর কোথাও উল্লেখ নেই। অর্জুন একমাত্র পাত্র, যিনি শুরু থেকে শেষপর্যন্ত যোগেশ্বরের সমক্ষে ছিলেন। সেই অর্জুনও কেবল যোগ্যতার প্রতীক, ব্যক্তি-বিশেষ নয়। গীতার শুরুতে অর্জুন সনাতন কুলধর্মের রক্ষার জন্য ব্যাকুল ছিলেন, কিন্তু যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ এটাকে অঙ্গান বলেছেন এবং নির্দেশ দিয়েছেন—“আত্মাই সনাতন ও এই শরীর বিনাশলীল, সেইজন্য যুদ্ধ কর!” এই আদেশে একথা স্পষ্ট হচ্ছে না যে, অর্জুন কেবল কৌরব পক্ষের যোদ্ধাদেরই বধ করবেন, পাণবপক্ষেও তো দেহধারীই ছিল। দুই পক্ষেই আত্মীয় স্বজন ছিল। সংস্কারের উপর আধারিত দেহ কি তরবারিদ্বারা খণ্ড-বিখণ্ড করে সমাপ্ত করা সম্ভব? শরীর যখন বিনাশশীল, যার অস্তিত্বই নেই, তবে অর্জুন কে? শ্রীকৃষ্ণ কার রক্ষার জন্য দাঁড়িয়েছিলেন? তিনি কি কোন শরীরধারীর রক্ষার জন্য দাঁড়িয়ে ছিলেন? শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন—“যে শরীরের জন্য পরিশ্রম করে, সে পাপিষ্ঠ মৃত্য ব্যক্তি বৃথাই জীবন ধারণ করে।” যদি শ্রীকৃষ্ণ শরীরধারীর রক্ষার জন্য দাঁড়িয়ে ছিলেন, তবে তো তিনিও মৃত্য ব্যক্তি, ব্যর্থই জীবন ধারণ করেছেন। বস্তুতঃ অনুরাগই অর্জুন।

অনুরাগীর জন্য মহাপুরুষ সর্বদাই দাঁড়িয়ে থাকেন। অর্জুন শিয় ছিলেন ও শ্রীকৃষ্ণ সদ্গুরু ছিলেন। বিনয়াবন্ত হয়ে তিনি বলেছিলেন যে, ধর্মপথে মুক্তিচিন্তা আমি আপনাকে জিজ্ঞাসা করছি, যা শ্রেয় (পরম কল্যাণকর) আমাকে সেই উপদেশ দিন। অর্জুন শ্রেয় চেয়েছিলেন, প্রেয় (ভৌতিক পদার্থ) নয়। তা-ই বলেছিলেন—“শুধু বলবেনই না অর্থাৎ কেবল উপদেশই দেবেন না, সেই পথে পরিচালনাও করুন এবং নিজের তত্ত্বাবধানেও রাখুন। আমি আপনার শিয়, আপনার শরণাগত।” এইরূপ গীতায় স্থানে-স্থানে উল্লেখ করা হয়েছে যে, অর্জুন আর্ত অধিকারী ও যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ সদ্গুরু। অনুরাগীর সঙ্গে সদ্গুরুর সর্বাদ থাকেন, তার পথ-প্রদর্শন করেন।

ভাবুকতাবশতঃ যখন কোন ব্যক্তি ‘পুজ্য মহারাজজী’র সাম্রাজ্যে থাকার জন্য আগ্রহ প্রকাশ করত, তখন তিনি বলতেন—“যাও, যেখানেই থাক কিছু আসে যায় না, মন থেকে আমার কাছে আস-যাওয়া করবে। প্রাতঃ, সন্ধ্যা রাম, শিব অথবা ওঁ কোন দুই আড়াই অক্ষরের নামজপ করবে ও হৃদয়ে আমার স্বরূপের ধ্যান করবে।

এক মিনিটও যদি স্বরূপ ধরে রাখতে সক্ষম হও, তবে যাকে ভজন বলে তা আমি তোমায় দেব। এর থেকেও বেশী সময় ধ্যানে স্বরূপ ধরে রাখতে পারলে, হৃদয়ে সারথী হয়ে সর্বদা তোমার সঙ্গে থাকব।” এইরূপ যখন মহাপুরুষের স্বরূপ ধ্যান যোগে স্থির হয়, তখন মহাপুরুষ আপনার হাত-পা-নাক-কান ইত্যাদির মত অতি কাছে বাস করেন। আপনি সহস্র কিলোমিটার দূরে থাকুন না কেন, তাঁকে সর্বদাই কাছে পাবেন। মনে কোন বিচার উদয় হওয়ার পূর্বেই তিনি পথ-প্রদর্শন করতে আরম্ভ করবেন। অনুরাগীর হৃদয়-দেশে মহাপুরুষ সর্বদাই একাঞ্চা হয়ে জাগ্রত থাকেন। অর্জুন অনুরাগের প্রতীক।

গীতার একাদশ অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের ঐশ্বর্য দেখবার পর অর্জুন নিজের ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ঙ্গটিগুলির জন্য ক্ষমাযাচনা করেছিলেন। শ্রীকৃষ্ণ ক্ষমা করেছিলেন এবং পুনরায় ভক্তের ইচ্ছানুরূপ সৌম্যরূপ ধারণ করে বলেছিলেন—“অর্জুন! আমার এই স্বরূপ এর পূর্বে কেউ দেখেনি ও ভবিষ্যতেও কেউ দেখবে না।” তবে তো গীতা আমাদের জন্য ব্যর্থ, কারণ উক্ত বিলক্ষণ রূপ দেখার যোগ্যতা একমাত্র অর্জুনের মধ্যেই ছিল। কিন্তু ঠিক সেই সময়ে সংজ্ঞাও সেই বিশ্বরূপ দেখেছিলেন। এর পূর্বেও তিনি বলেছেন—“বহু যোগী জ্ঞানরূপ তপস্যা দ্বারা পরিত্র হয়ে আমার সাক্ষাৎ স্বরূপ লাভ করেছেন।” তাহলে তিনি বলতে কি চাইছেন? বস্তুতঃ অনুরাগী ‘অর্জুন’ যা আপনার হৃদয়ের ভাব-বিশেষ। অনুরাগবিহীন পুরুষ না কখনও সেই দিব্য স্বরূপ দর্শন করেছে, না ভবিষ্যতে কখনও করবে। ‘মিলহিঁ ন রঘুপতি বিনু অনুরাগা। কিয়ে জোগ তপ গ্যান বিরাগা।।।’ অতএব অর্জুন প্রতীক মাত্র। যদি প্রতীকরণে আপনি না মানতে পারেন, তবে গীতাপাঠ ব্যর্থ, গীতা আপনার জন্য নয়, তবে সেই দর্শনের যোগ্যতাও কেবল অর্জুনের মধ্যেই ছিল।

অবশ্যে যোগেশ্বর স্বয়ং নির্ণয় করে বলেছেন—“অর্জুন! অনন্যভক্তি ও শ্রদ্ধাদ্বারা আমি এই প্রকার দেখার (যেমন তুমি দেখলে), তত্ত্বসহিত স্পষ্ট জানার ও প্রবেশ করার জন্যও সুলভ।” অনন্য ভক্তি অনুরাগেরই আরেকটি রূপ এবং এটাই অর্জুনেরও স্বরূপ। অর্জুন পথিকের প্রতীক। এইরূপ গীতার সকল পাত্র প্রতীকাত্মক, যথাস্থানে সক্ষেত দেওয়া হয়েছে।

( ৬ )

যথার্থ গীতা : শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা

হতে পারে, হয়তো ছিলেন কোন ঐতিহাসিক কৃষ্ণ ও অর্জুন, বিশ্বযুদ্ধ হয়ে থাকলে থাকতেও পারে, কিন্তু গীতাশাস্ত্রে ভেটিক যুদ্ধের চিত্রণ নেই। সেই ঐতিহাসিক যুদ্ধের সমক্ষে দাঁড়িয়ে ভয়ভীত হয়েছিলেন কেবল অর্জুন, সেনা নয়। সেনা তো যুদ্ধোন্মাদে মন্ত্র, কেবল আদেশের প্রতীক্ষায় দাঁড়িয়ে ছিল।

যুদ্ধার্থ অর্জুনের মনকে প্রস্তুত করার জন্যই কি যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ সব্যসাচী অর্জুনকে গীতার উপদেশ দিয়েছিলেন? বস্তুতঃ সাধন লিপিবদ্ধ করা যায় না। সবটা পড়ে নেওয়ার পরেও এই পথে চলা বাকী থাকে। সেই প্রেরণাই প্রদান করবে এই ‘যথার্থ গীতা’।

শ্রী গুরু পূর্ণিমা

২৪ জুলাই, ১৯৮৩ খঃ।

সদ্গুরু কৃপাশ্রয়ী, জগদ্বন্ধু

স্বামী অড়গড়ানন্দ

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মনে নমঃ ।।

## যথাৰ্থ গীতা (শ্ৰীমদ্ভগবদ্গীতা)

।। অথ প্ৰথমোহধ্যাযঃ ।।

ধৃতৱাস্ত্র উবাচ

ধৰ্মক্ষেত্ৰে কুৱক্ষেত্ৰে সমবেতা যুযুৎসবঃ।

মামকাঃ পাণুবাষ্পেব কিমকুৰ্বত সংজ্ঞয় ।। ১।।

ধৃতৱাস্ত্র জিজ্ঞাসা কৰলেন— “হে সংজ্ঞয়! ধৰ্মক্ষেত্ৰে, কুৱক্ষেত্ৰে যুদ্ধার্থে সমবেত হয়ে আমাৰ এবং পাণুপুত্ৰগণ কি কৰল?”

অজ্ঞানৱপ ধৃতৱাস্ত্র এবং সংযমৱপ সংজ্ঞয়। অজ্ঞান মনেৰ অস্তৱালে থাকে। অজ্ঞানাবৃত মন ধৃতৱাস্ত্র জন্মান্ব; কিন্তু সংযমৱপ সংজ্ঞয়েৰ মাধ্যমে তিনি দেখেন ও শোনেন। ধৃতৱাস্ত্র জানেন যে পৰমাত্মাই একমাত্ৰ সত্য, পুনশ্চ যতক্ষণ এৱ থেকে উৎপন্ন মোহৱপ দুর্যোধন জীবিত থাকে, ততক্ষণ এৱ দৃষ্টি সৰ্বদা কৌৰবগণেৰ উপরেই থাকে অৰ্থাৎ বিকাৱেৰ উপরেই থাকে।

শ্ৰীৰ একটি ক্ষেত্ৰ। যখন হৃদয়-দেশে দৈৰী সম্পত্তিৰ বাহল্য ঘটে, তখন এই শ্ৰীৰ ধৰ্মক্ষেত্ৰে পৱিণত হয় এবং যখন এতে আসুৱিক সম্পত্তিৰ বাহল্য ঘটে, তখন এই শ্ৰীৰ কুৱক্ষেত্ৰে পৱিণত হয়। ‘কুৱ’ অৰ্থাৎ কৱ— এই শব্দ আদেশাত্মক। শ্ৰীকৃষ্ণ বলেছেন— “প্ৰকৃতিজাত তিনটি গুণেৰ বশীভূত হয়েই মানুষ কৰ্ম কৱে।” সে ক্ষণমাত্ৰও কৰ্ম না কৱে থাকতে পাৱে না, গুণব্রয় তাকে দিয়ে কৱিয়ে নেয়। ঘুমস্ত অবস্থাতেও কৰ্ম বন্ধ হয় না, সেটিও সুস্থ দেহেৰ আবশ্যক খোৱাক মাত্ৰ। এই

তিনগুণ মানুষকে দেবতা থেকে শুরু করে কীটপর্যন্ত দেহের বন্ধনেই আবদ্ধ করে। যতক্ষণ প্রকৃতি ও প্রকৃতিজাত গুণ জীবিত, ততক্ষণ ‘কুর’ সক্রিয় থাকবে। অতএব জন্ম-মৃত্যুময় এই ক্ষেত্র, বিকারযুক্ত এই ক্ষেত্রেই ‘কুরক্ষেত্র’ এবং পরমধর্ম পরমাঞ্চাতে প্রবেশ পদান করতে পারে যে পুণ্যময় প্রবৃত্তিসমূহ, সেই পুণ্যময় প্রবৃত্তি সমূহের (পাণ্ডবের) ক্ষেত্রেই ‘ধর্মক্ষেত্র’।

পুরাতত্ত্ববিদ् পাঞ্জাবে, কাশী-প্রয়াগের মধ্যে এবং অন্যান্য বহু স্থানের কুরক্ষেত্রের নির্দিষ্ট স্থান অনুসন্ধান কার্যে রত আছেন; কিন্তু গীতাকার স্বয়ং বলেছেন, যে ক্ষেত্রে এই যুদ্ধ হয়েছিল সেই ক্ষেত্রটি কোথায়। ‘ইদং শরীরং কৌন্তেয় ক্ষেত্রমিত্যভিযীতে।’ (অ. ১৩/১) – “অর্জুন! এই দেহই ক্ষেত্র এবং যিনি একে জানেন এবং আয়ত্তের অধীনে আনতে পারেন তিনিই ক্ষেত্রজ্ঞ।” এরপর তিনি ক্ষেত্রের বিস্তার সম্বন্ধে বললেন, যাতে দশটি ইন্দ্রিয়, মন, বুদ্ধি, অহঙ্কার পাঁচটি বিকার ও তিনটি গুণের বর্ণনা আছে। এই দেহই ক্ষেত্র, এক মল্লভূমি। এর মধ্যে যুদ্ধাভিলাষী প্রবৃত্তি দুটি – ‘দৈবী সম্পদ’ ও ‘আসুরী সম্পদ’, ‘পাণ্ডুর সন্তানগণ’ ও ‘ধৃতরাষ্ট্রের সন্তানগণ’, সজাতীয় ও বিজাতীয় প্রবৃত্তিসমূহ।

তত্ত্বদর্শী মহাপুরুষের শরণাগত হলে এই দুই প্রবৃত্তির মধ্যে সংঘর্ষের সূত্রপাত হয়, একেই ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞের সংঘর্ষ ও প্রকৃত যুদ্ধ বলা হয়। ইতিহাসের পাতা বিশ্বযুদ্ধের কাহিনীতে পরিপূর্ণ; কিন্তু সেই সব যুদ্ধে যাঁরা বিজয়ী হয়েছেন, তাঁরা কেউই শাশ্বত বিজয়ী হননি, এর মধ্যে প্রতিহিংসা ছিল। প্রকৃতিকে শাস্ত করে প্রকৃতির উর্ধ্বের সন্তার দিগ্দৰ্শন করা এবং তাতে প্রবেশ করাই প্রকৃত বিজয়। এই হ'ল শাশ্বত বিজয় যার পশ্চাতে পরাজয় নেই। একেই বলে মুক্তি, যার পর জন্ম-মৃত্যুর বন্ধন নেই।

এইভাবে অঙ্গানে আবৃত্ত প্রত্যেক মন সংযমের দ্বারা জানতে পারে যে ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞের যুদ্ধের পরিণাম কি হয়? যার যেমন সংযমবৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়, তেমনি তাঁর দৃষ্টি খুলতে থাকে।

### সংঘ উবাচ

দন্ত্বা তু পাণ্ডবানীকং বৃতৎ দুর্যোধনসন্তো।

আচার্যমুপসঙ্গম্য রাজা বচনমৰীঁ ॥১॥

সেই সময় রাজা দুর্যোধন বৃহরচনাযুক্ত পাণবগণের সেনাকে দেখে দ্রোগাচার্যের কাছে গিয়ে এই কথা বললেন—

দ্বৈতের আচরণই ‘দ্রোগাচার্য’। যখন অনুভব হয় যে পরমাত্মা থেকে আমরা পৃথক् (একেই বলে বৈতোধ) তখনই তাঁকে লাভ করার জন্য ব্যাকুলতা জেগে ওঠে, তখনই আমরা গুরুর খোঁজে বেরিয়ে পড়ি। দুই প্রবৃত্তির মধ্যে একেই প্রাথমিক গুরু বলা যেতে পারে, যদিও পরে সদ্গুরু যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণই হবেন, যিনি যোগের পূর্ণস্থিতি প্রাপ্ত মহাপুরুষ।

রাজা দুর্যোধন আচার্যের কাছে যান। মোহরূপ দুর্যোধন। মোহট সকল ব্যাধির মূল ও রাজা। দুর্যোধন—দুর অর্থাৎ দৃষ্টিত, যো ধন অর্থাৎ সেই ধন। আত্মিক সম্পত্তি ইঙ্গির সম্পত্তি। তাতে যে আবিলতা সৃষ্টি করে, তা মোহ। এই মোহ প্রকৃতির দিকে আকৃষ্ট করে ও প্রকৃত জ্ঞানের জন্য প্রেরণাও প্রদান করে। মোহ আছে বলেই জ্ঞানের প্রশংসণ আছে, অন্যথা সকলই পূর্ণ।

অতএব বৃহরচনাযুক্ত পাণবগণের সেনাকে দেখে অর্থাৎ পুণ্যজাত সজাতীয় বৃত্তিসমূহকে সংগঠিত দেখে মোহরূপ দুর্যোধন প্রথম গুরু দ্রোণের কাছে গিয়ে বললেন—

পঁশ্যেতাং পাণুপুত্রাণামাচার্য মহতীং চমুম্।

বৃঢ়াং দ্রুপদপুত্রেণ তব শিষ্যেণ থীমতা ॥ ৩॥

হে আচার্য! আপনার বুদ্ধিমান শিষ্য দ্রুপদপুত্র ধৃষ্টদ্যুম্নদ্বারা ব্যুহাকার রচিত পাণুপুত্রগণের এই বিপুল সৈন্যসমাবেশ দর্শন করুন।

শাশ্বত অচল পদে আস্থা রাখতে পারে যে দৃঢ় মন তাকে বলে ‘ধৃষ্টদ্যুম্ন’। একেই বলে পুণ্যময় প্রবৃত্তিসমূহের নায়ক। ‘সাধন কঠিন ন মন কর টেকা’—সাধন কঠিন নয়, মন দৃঢ় হওয়া কঠিন।

এখন দেখুন সেনার বিস্তার—

অত্র শূরা মহেষ্মাসা ভীমার্জুনসমা যুধি।

যুযুধানো বিরাটশ্চ দ্রুপদশ্চ মহারথঃ ॥ ৪॥

এই সেনার মধ্যে ‘মহেষ্মাসা’— মহান् ঈশ্বর তত্ত্বে অবস্থিতি প্রদান করতে সক্ষম, ভাবরূপ ‘ভীম’ এবং অনুরাগরূপ ‘অর্জুন’ এদের সমকক্ষ অনেক শূরবীর, যেমন— সাত্ত্বিকতারূপ ‘সাত্যকি’, ‘বিরাট়’— সর্বত্র ঈশ্বরীয় ভাবপ্রবাহের ধারণা, মহারথী রাজা দ্রুগন্দ অর্থাৎ আচল স্থিতি এবং—

ধৃষ্টকেতুশেচকিতানঃ কাশিরাজশ্চ বীর্যবান্ঃ।

পুরজিৎকুন্তিভোজশ্চ শৈব্যশ্চ নরপুসবঃ ॥ ৫ ॥

‘ধৃষ্টকেতুঃ’—দৃঢ় কর্তব্য, ‘চেকিতানঃ’— মন যেখানেই যাক বলপূর্বক সেখান থেকে আকর্ষণ করে ইষ্টে স্থির করা, ‘কাশিরাজঃ’—কায়ারূপ কাশীতেই সেই সাম্রাজ্য, ‘পুরজিৎ’—স্থূল, সূক্ষ্ম ও কারণ শরীরকে জয় করতে সাহায্য করে যে, সেই পুরজিৎ, ‘কুন্তিভোজঃ’—কর্তব্যের দ্বারা জগতের উপর জয়লাভ, নরের মধ্যে শ্রেষ্ঠ ‘শৈব’ অর্থাৎ সত্য ব্যবহার—

যুধামন্ত্যশ্চ বিক্রান্ত উত্তমোজাশ্চ বীর্যবান্ঃ।

সৌভদ্রো দ্রৌপদেয়োশ্চ সর্ব এব মহারথাঃ ॥ ৬ ॥

এবং পরাক্রমশালী ‘যুধামন্ত্যঃ’—যুদ্ধের অনুরূপ মনের বোধ, ‘উত্তমোজাঃ’— শুভকামনায় মগ্ন, সুভদ্রাপুত্র অভিমন্ত্য—শুভ আধারলাভ হলে মন ভয়মুক্ত হয়ে যায়— এরূপ শুভ আধারপ্রাপ্ত অভয় মন, ধ্যানরূপ দ্রোপদীর পঞ্চপুত্র—বাণসল্য, লাবণ্য, সহাদয়তা, সৌম্যতা, স্থিরতা এরা সকলেই এক-একজন মহারথী। সাধন পথে সম্পূর্ণ যোগ্যতার সঙ্গে চলার শক্তি এরাই জোগায়।

এইভাবে রাজা দুর্যোধন পাণ্ডবপক্ষের ১৫-২০টি নামের উল্লেখ করলেন, যেগুলি দৈবী সম্পদের গুরুত্বপূর্ণ অঙ্গ। বিজাতীয় প্রবৃত্তির রাজা হওয়া সত্ত্বেও মোহাই সজাতীয় প্রবৃত্তি সমূহকে অনুভব করতে বাধ্য করে।

দুর্যোধন নিজের পক্ষের সংক্ষিপ্ত বর্ণনা করলেন। এই যুদ্ধ পার্থিব যুদ্ধ হলে, স্বসৈন্যদলের সংখ্যা বাড়িয়ে বলতেন। বিকারের সংখ্যা কম প্রদর্শিত করলেন যেহেতু এই বিকারগুলিকেই জয় করতে হবে, এরা বিনাশশীল। কেবল পাঁচ-সাতটি বিকার সম্পর্কেই বলা হয়েছে, যাদের অন্তরালে বহিমুখী প্রবৃত্তিসমূহ বিদ্যমান। যেমন—

অস্মাকং তু বিশিষ্টা যে তান্নিবোধ দিজোত্তম।  
নায়কা মম সৈন্যস্য সংজ্ঞার্থং তান্ত্রবীমি তে ॥ ৭ ॥

হে দিজোত্তম ! আমাদের পক্ষে যে সকল বিশিষ্ট যোদ্ধা ও সেনাপতি আছেন তাঁদেরকে অবগত হউন । আপনার অবগতির জন্য তাঁদের নাম বলছি—

বাহু যুদ্ধে সেনাপতির জন্য ‘দিজোত্তম’ সম্মোধন অপ্রাসঙ্গিক । বস্তুতঃ গীতাশাস্ত্রে অঙ্গকরণের দুটি প্রবৃত্তির সংঘর্ষের বর্ণনা করা হয়েছে । যেখানে দ্বৈত-এর আচরণই হ'ল ‘দ্রোণ’ । যতক্ষণ আমরা লেশমাত্রও আরাধ্য থেকে পৃথক्, ততক্ষণ প্রকৃতি বিদ্যমান, দ্বৈত বিদ্যমান । এই ‘দ্বি’-কে জয় করার প্রেরণা প্রথম গুরু দ্রোণাচার্যের কাছে পাওয়া যায় । অপূর্ণ শিক্ষাকে সম্পূর্ণভাবে জানার প্রেরণা প্রদান করে । এটা পূজাস্থান নয়, এখানে শৌর্যসূচক সম্মোধন হওয়া উচিত ।

বিজাতীয় প্রবৃত্তির কে কে নায়ক ?—

ত্বরান् ভীষ্মশ্চ কর্ণশ্চ কৃপশ্চ সমিতিঙ্গ্রহঃ ।

অশ্বথামা বিকর্ণশ্চ সৌমদত্তিঙ্গ্রহেব চ ॥ ৮ ॥

একজন স্বয়ং আপনি (দ্বৈতের আচরণরূপ দ্রোণাচার্য), অমরনপ পিতামহ ‘ভীষ্ম’ও আছেন । এই বিকারসমূহ ভ্রম থেকে উৎপন্ন হয় । শেষপর্যন্ত জীবিত থাকে, তাই পিতামহ । সম্পূর্ণ সেনার মৃত্যুর পরেও জীবিত ছিলেন । শরশ্যায় অট্টেন্য অবস্থাতে ছিলেন, তবুও জীবিত ছিলেন । একেই বলে অমরনপ ‘ভীষ্ম’ । ভ্রম শেষপর্যন্ত বেঁচে থাকে । এইরূপ বিজাতীয় কর্মরূপ ‘কর্ণ’ ও সংগ্রাম বিজয়ী ‘কৃপাচার্য’ । সাধনাবস্থায় সাধক অন্যের প্রতি যে কৃপার আচরণ করেন সেই কৃপাকেই ‘কৃপাচার্য’ বলে । ভগবান কৃপাধাম ও ঈশ্বরপ্রাপ্তির পর মহাপুরুষের স্঵রূপও তদ্বপ । কিন্তু সাধনাবস্থায় যতক্ষণ সাধক ও পরমাত্মা পৃথক্, বিজাতীয় প্রবৃত্তিগুলি সক্রিয় ও মোহাচ্ছাদিত—এইরূপ পরিস্থিতিতে সাধক যদি কৃপার আচরণ করেন, তবে তিনি নষ্ট-ভ্রষ্ট হয়ে যান । সীতা দয়া করেছিলেন, তার পরিবর্তে তাঁকে কিছুকাল লক্ষায় প্রায়শিক্ত করতে হয়েছিল । বিশ্বামিত্র দয়া করেছিলেন, তাই পতিত হয়েছিলেন । যোগসূত্রকার মহার্ষি পতঞ্জলি ও এই কথাই বলেছেন—“তে সমাধাবৃপ্মসর্গা ব্যুখানে সিদ্ধয়ঃ ।” (যোগগু ৩/৩৭) অর্থাৎ ব্যুখানকালে সিদ্ধি (যোগলক্ষ শক্তি) প্রকট হয় । প্রকৃত পক্ষে সেগুলি সিদ্ধাই পরান্ত কৈবল্য প্রাপ্তির পথে এই সিদ্ধাই তত বড়ই বাধা, যতটা কাম, ক্রেত্ব, লোভ, মোহ প্রভৃতি । গোস্বামী তুলসীদাসেরও সেই একই নির্ণয়—

ছোরত প্রষ্ঠি জানি খগরায়। বিঘ্ন অনেক করই তব মায়া।।

রিদ্ধি সিদ্ধি প্রেরই বহু ভাই। বুদ্ধিহিঁ লোভ দিখাবহিঁ আই।।

(রামচরিতমানস, ৭/১১৭/৬-৭)

মায়া অনেক বিঘ্নসৃষ্টি করে, শক্তি প্রদান করে, এমনকি সিদ্ধে পরিণত করে। এইরূপ সিদ্ধসাধক যদি পাস দিয়ে শুধু হেঁটে যান, তাহলে মরণাপন্ন রোগীও বেঁচে ওঠে। সেই রোগী যদিও সুস্থ হয়ে ওঠে, কিন্তু সাধক যদি সেটা নিজের অবদান বলে মনে করেন তাহলে তিনি নিশ্চয়ই নষ্ট-ভ্রষ্ট হয়ে যাবেন। একজন রোগীর স্থানে হাজার হাজার রোগী তাঁকে ঘিরে ধররে, ভজন-চিন্তনের ক্রম অবরুদ্ধ হয়ে যাবে এবং পথভ্রান্ত হতে হতে প্রকৃতির বাহ্য্য হবে। যদি লক্ষ্য দুরে ও সাধক কৃপা করেন তবে কৃপার একেলার ব্যবহারই ‘সমিতিঞ্জয়ঃ’- সমস্ত সেনা-বাহিনীকে জয় করবে। এই কারণে যতক্ষণ সাধক পূর্ণতা লাভ না করছেন, ততক্ষণ এই সব থেকে সাবধান থাকা দরকার। ‘দয়া বিনু সন্ত কসাই, দয়া করী তো আফত আই।’ অর্থাৎ দয়া না করলে সাধু কসাইয়ের সমতুল্য, আর দয়া প্রদর্শিত করলেও অধঃপতনের সম্ভাবনা। কিন্তু অপূর্ণ অবস্থায় এই হল বিজাতীয় প্রবৃত্তির দুর্ঘট যোদ্ধা।

এইরূপ আসন্তিরূপ অশ্বখামা। জগৎ-এর যে কোন বস্তুর প্রতি আকর্ষণকেই আসন্তি বলে। দ্বৈত-এর আচরণই দ্রোগাচার্য। এই দ্বৈতই আসন্তির জন্মদাতা। শন্ত্রধারণ অবস্থাতে আচার্য দ্রোগকে বধ করা সম্ভব ছিল না। তিনি অজেয় ছিলেন। ভগবান শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন—কৌরবপক্ষের একটি হাতির নাম অশ্বখামা, ভীম সেই হাতিটিকে বধ করে “অশ্বখামা মারা গিয়েছে” এইরূপ ঘোষণা করুন। এই অপ্রিয় ঘটনার কথা শুনে আচার্য মর্মাহত হয়ে শিথিল হয়ে যাবেন, সেটাই তাঁকে বধ করার উপযুক্ত সময়। ভীম হাতিটিকে বধ করে প্রচার করেছিলেন, “অশ্বখামা মারা গিয়েছে।” আচার্য দ্রোগ ভেবেছিলেন যে তাঁর পুত্র অশ্বখামা মারা গিয়েছে, তিনি শোকে মুহ্যমান হয়ে পড়েছিলেন, ধনুক হাত থেকে পড়ে গিয়েছিল, তিনি হতাশ, নিশ্চেষ্ট হয়ে যুদ্ধভূমিতে বসে পড়েছিলেন, সঙ্গে সঙ্গে তাঁকে বধ করা হয়েছিল। পুত্রের প্রতি অত্যধিক আসন্তি তাঁর মৃত্যুর কারণ হয়ে দাঁড়িয়েছিল। অশ্বখামা দীর্ঘজীবী ছিলেন। নিবৃত্তির শেষ মুহূর্তপর্যন্ত বাধা দেয় তাই একে অমর বলা হয়েছে।

বিকল্পরূপ বিকর্ণ। সাধনার উন্নত অবস্থাতে মনে কিছু অসাধারণ কল্পনার উদয় হয়। মনে সকল-বিকল্প জাগে যে, স্বরাপলাভের পর ভগবানের তরফ থেকে কিরূপ সিদ্ধাই, অনৌকিক শক্তি প্রদান করা হবে। সাধক ঈশ্বর চিন্তনের পরিবর্তে ঈশ্বরের-ঐশ্বর্যের চিন্তা করতে শুরু করেন। সাধককে একাগ্র হয়ে কর্ম করে যাওয়া উচিত। ফললাভের কামনা করা উচিত নয় কিন্তু যখন তিনি (সিদ্ধাই) যোগলক্ষ শক্তির কামনা করতে শুরু করেন তখন এইরূপ মনোভাব অর্থাৎ বিকল্পকেই বিকর্ণ বলে। এই কল্পনাগুলি অসাধারণ কিন্তু সাধনাতে ভয়ঙ্করভাবে বাধা দেয়।

অমোঃপাদক শ্বাসই ভূরিশ্ববা। সাধনার স্তর উন্নত হলে পরে সকলেই সাধকের প্রশংসা করতে শুরু করেন যে, ইনি মহাত্মা, সিদ্ধপূরুষ, দিব্যগুণের অধিকারী, তাঁর সমক্ষে লোকপালও বিনীত হয়ে যান। এইরূপ ব্যবহার, প্রশংসা দ্বারা সাধক যখন আনন্দের আতিশয়ে পথহারা হন তখন এইরূপ শ্বাসকেই ভূরিশ্ববা বলা হয়। পৃজ্য গুরুদেব বলতেন-“সমাজ যদি পুষ্পবৃষ্টি করে, প্রশংসা করে, বিশ্ববন্দ্য জগদ্গুরু বলে তোমার তাতে কিছু লাভ হবে না, শুধু কানাকাটি করতে থাকবে, কিন্তু যদি ভগবান তোমাকে সাধুর আখ্যা দেন, তবে সর্বস্ব লাভ করবে, সমাজ বলুক অথবা না বলুক, তুমি সর্বস্ব লাভ করবে।” এইরূপ প্রশংসাতে অভিভূত হওয়াকেই অমোঃপাদক শ্বাস অর্থাৎ ভূরিশ্ববা বলে। অত্যধিক প্রশংসার ফলে সাধনার হ্রাস হয়। অতএব অমোঃপাদক শ্বাসই ভূরিশ্ববা। সংযমের স্তর উন্নত হলে পরে যে (বিকৃতি) বিকারগুলি বাধা দেয়, এগুলি তাদেরই নাম। এগুলি বহিমুখী প্রবৃত্তির অঙ্গ।

অন্যে চ বহবঃ শুরা মদর্থে ত্যক্তজীবিতাঃ।

নানাশন্ত্রপ্রহরণাঃ সর্বে যুদ্ধবিশারদাঃ ॥ ৯ ॥

আমার জন্য প্রাণদান করতে কৃতসকল অনেক শূরবীর অস্ত্রে-শাস্ত্রে সজ্জিত হয়েছেন। সকলেই আমার জন্য প্রাণদান করতে সকলবন্ধু; কিন্তু এদের কোন নির্দিষ্ট সংখ্যা পরিগণিত হয়নি। এখন কোন কোন সেনা কি কি ভাবদ্বারা সুরক্ষিত? তা বলছেন—

অপর্যাপ্তং তদস্মাকং বলং ভীমাভিরক্ষিতম্।

পর্যাপ্তং ত্বিদমেতেষাং বলং ভীমাভিরক্ষিতম্ ॥ ১০ ॥

ভীমদ্বারা রক্ষিত আমাদের সেনা সর্বপ্রকারে অজেয়; কিন্তু ভীমদ্বারা রক্ষিত পাণুবগণের সেনা জয় করা সহজ। পর্যাপ্ত ও অপর্যাপ্তের মত সংশ্লিষ্ট শব্দের প্রয়োগ দুর্যোধনের আশঙ্কাই ব্যক্ত করছে। অতএব দেখতে হবে যে ভীম কোন সন্তা, যার উপর সম্পূর্ণ কৌরব নির্ভরশীল এবং ভীম কোন সন্তা যার উপর (দৈবী সম্পদ) সম্পূর্ণ পাণুব নির্ভরশীল। দুর্যোধন এবার নিজের সু-ব্যবস্থার জন্য নির্দেশ দিলেন—

অয়নেযু চ সর্বেযু যথাভাগমবস্থিতাঃ।

ভীমেবাভিরক্ষন্ত ভবন্তঃ সর্ব এব হি ॥ ১১ ॥

এক্ষণে আপনারা সকলেই বৃহস্মুহের প্রবেশদ্বারে স্ব স্ব স্থানে অবস্থিত হয়ে পিতামহ ভীমকেই সকলদিক্ থেকে রক্ষা করুন। যদি ভীম জীবিত থাকেন, তাহলে আমরা অজেয়, সেই জন্য আপনারা সকলে পাণুবের সঙ্গে যুদ্ধ না করে কেবল ভীমকেই রক্ষা করুন।

কেমন যোদ্ধা ছিলেন ভীম, যিনি স্বয়ং নিজের রক্ষা করতে অক্ষম, কৌরব সেনাকে তাঁর রক্ষার ব্যবস্থা করতে হচ্ছিল? এটা কোন বাহ্য যোদ্ধা নয়, ভ্রাতুষ ভীম। যতক্ষণ ভ্রম বিদ্যমান, ততক্ষণ বিজাতীয় প্রবৃত্তিগুলি (কৌরব) অজেয়। ‘অজেয়’ শব্দের অর্থ এই নয় যে, অজেয়কে জয় করা যায় না। অজেয়ের অর্থ হল দুর্জয়, একে জয় করা কষ্টসাধ্য। ‘মহা অজয় সংসার রিপু, জীতি সকই সো বীর।’ (রামচরিতমানস, ৬/৮০ ক)

যখন ভ্রম মিটে যায়, তখন অবিদ্যা অস্তিত্ববিহীন হয়ে পড়ে। মোহ ইত্যাদি যা কিছু আংশিক পরিমাণে টিকে থাকে, তাও শীঘ্রই শেষ হয়। ভীমের ছিল ইচ্ছামৃত্যু। ইচ্ছাই ভ্রম। ইচ্ছার সমাপ্তি ও ভ্রম দূর হওয়া একই ব্যাপার। একথাই সন্ত কবীর সরলভাবে বলেছেন—

ইচ্ছা কায়া ইচ্ছা মায়া, ইচ্ছা জগ উপজায়া।

কহ কবীর জে ইচ্ছা বিবর্জিত, তাকা পার ন পায়া ॥

যেখানে ভ্রম নেই, তা অপার ও অব্যক্ত। এই দেহের জন্মের কারণ ইচ্ছা। ইচ্ছাই মায়া এবং ইচ্ছাই এই জগতের উৎপত্তির কারণ। [‘সোহকাময়ত’ তদৈক্ষেত্র বহস্য্যাং প্রজায়েয় ইতি।’ (ছান্দোগ্যো ৬/২/৩)]। কবীর বলেছেন যে, যিনি সর্বপ্রকার

কামনারহিত, ‘তিনকা পার ন পায়া’- তিনি অপার, অনন্ত, অসীম তত্ত্ব উপলব্ধি করেন। [‘যোহকামো নিষ্কাম আগুণ্কাম আত্মকামো ন তস্য প্রাণা উৎক্রামন্তি ব্ৰহ্মেৰ সন্ত ব্ৰজাপ্যেতি।’ (বৃহদারণ্যকোপনিষদ, ৪/৪/৬)] যিনি কামনারহিত, আত্মাতে স্থির আত্মস্বরূপ, তাঁৰ কখনও পতন হয় না। তিনি ব্ৰহ্মে সঙ্গ একীভূত হন। সাধনেৰ আৱশ্যকন ইচ্ছাগুলি অনন্ত হয়, এই অনন্ত ইচ্ছার শেষ হতে হতে অবশেষে পৰমাত্ম-প্ৰাপ্তিৰ ইচ্ছা শেষ থাকে। যখন এই ইচ্ছাও পূৰ্ণ হয়, তখন ইচ্ছার বিলুপ্তি ঘটে। যদি এৱ থেকে শ্ৰেষ্ঠ কোন বস্তুৰ অস্তিত্ব থাকত, তাহলে তা লাভ কৱাৰ ইচ্ছা অবশ্যই জেগে উঠতো। যখন এৱ চেয়ে শ্ৰেষ্ঠ কিছু নেই, তখন ইচ্ছাও সমূলে বিনষ্ট হয়। এই ইচ্ছার বিলুপ্তিৰ সঙ্গে সঙ্গে ভ্ৰমও নাশ হয়, একেই ভৌমেৰ ইচ্ছামৃতু বলে। এইভাৱে ভীমদ্বাৰা রক্ষিত আমাদেৱ সেনা সৰ্বপ্রকাৱে অজেয়। যতক্ষণ ভ্ৰম দূৰ না হয়, ততক্ষণ অবিদ্যা সত্ত্বিয় থাকে। ভ্ৰম দূৰ হলে, অবিদ্যা ক্ৰিয়াহীন হয়ে যায়।

ভীমদ্বাৰা রক্ষিত এদেৱ সেনাকে জয় কৱা সহজ। ভাবৱৰণপ ভীম। ‘ভাবে বিদ্যতে দেৱঃ’-ভাব-এ সেই ক্ষমতা আছে যা অবিদিত পৰমাত্মাকেও প্ৰত্যক্ষ কৱতে সাহায্য কৱে। ‘ভাব বস্য ভগবান, সুখ নিৰ্ধান কৱণা ভবন।’ (রামচৱিতমানস, ৭/৯২ খ) শ্ৰীকৃষ্ণ একেই শ্ৰদ্ধা বলেছেন। ভাব-এৱ সাহায্যে ভগবানকেও বশ কৱা সন্তুষ্ট। এৱ দ্বাৱাই পুণ্যময় প্ৰবৃত্তিসমূহেৰ বিকাশ হয়। এই ভাব পুণ্যেৰ সংৰক্ষক ও এত বলবান্যে পৰমদেৱ পৰমাত্মাকেও গোচৱে এনে দেয়, অন্যদিকে অতি কোমলও, আজকেৱ ভাব কাল অভাব এ বদলাতে দেৱী লাগে না। আজ আপনি বলেছেন যে, মহারাজজী খুব ভালো। কাল হয়তো বলবেন— না, আমি দেখেছি, মহারাজজী ক্ষীৰ খান।

ঘাস পাত যে খাত হ্যাঁঁ, তিনহি সতাবৈ কাম।

দুধ মলাই খাত যে, তিনকী জানে রাম।।।

অৰ্থাৎ তৃণভোজীদেৱও কাম তাড়না দেয়, যাঁৰা দুধ-মালাই খান, ঈশ্বৰ তাদেৱই শৰণ দেন।

ইষ্টেৱ আচৱণে লেশমাত্ৰও ক্ৰটিবোধ হলে ভাব টলে ওঠে, পুণ্যময় প্ৰবৃত্তিসমূহ বিচলিত হয়, ইষ্টেৱ সঙ্গে যে সম্বন্ধ তা ছিন্ন হয়, তাই ভীমদ্বাৰা রক্ষিত আদেৱ সেনা জয় কৱা সহজ। মহৰ্ষি পতঞ্জলিৱ সেই একই নিৰ্ণয়—“স তু দীৰ্ঘকাল

নৈরন্তর্যসংকারাসেবিতো দৃঢ়ভূমিঃ।” (যোগসূত্র, ১/১৪)। অর্থাৎ দীর্ঘকালপর্যন্ত নিরাস্তর শ্রদ্ধা-ভক্তিপূর্বক করে গোলেই সাধন দৃঢ় হয়।

তস্য সংজ্ঞনয়ন হর্ষং কুরুবৃন্দঃ পিতামহঃ।

সিংহনাদং বিনদ্যোচ্চেঃ শঙ্খং দশ্মৌ প্রতাপবান् ॥ ১২॥

এই প্রকার সকলেই নিজের বলাবল নির্ণয় করে শঙ্খধ্বনি করলেন। এই শঙ্খধ্বনি হ'ল পাত্রের প্রকারমের ঘোষণা, যুদ্ধ জয়ের পর কোন পাত্র আপনাকে কি দেবে? কৌরব পক্ষে বৃন্দ প্রতাপবান পিতামহ ভীম দুর্যোধনের হাদয়ে হর্ষ উৎপন্ন করে উচ্চস্বরে সিংহনাদের সমান ভয়প্রদ শঙ্খ বাজালেন। সিংহ প্রকৃতির ভয়াবহ দিকের প্রতীক। ঘোর জঙ্গলের নিরবস্থানে নির্জনে সিংহের গর্জন যদি কানে আসে, তাহলে দেহের লোম খাড়া হয়ে যাবে, ভয়ে হাদয় কাঁপতে শুরু করবে, যদিও সিংহ থেকে আপনি বহুদূরে। ভয় প্রকৃতিজাত, পরমাত্মায় তার স্থান নেই, কারণ পরমাত্মা অভয় সত্ত্ব। ভূমরপ ভীম বিজয়ী হলে প্রকৃতির যে ভয়ারণ্যের মধ্যে আপনি আছেন, তার থেকেও ভয়ক্ষর ভয়ের আবরণে আপনাকে ঢেকে ফেলবে। ভয়ের আরও একটি স্তর বৃদ্ধি পাবে, ভয়ের আবরণ আরও ঘন হয়ে উঠবে। ভূম এছাড়া আর কিছু দিতে পারে না। অতএব প্রকৃতি থেকে নিবৃত্তিই গন্তব্যে যাওয়ার পথ। সংসারে প্রবৃত্তি ভবাটী, ঘোর অন্ধকারময়। এর বেশী কোন ঘোষণা কৌরবদের নেই। কৌরব পক্ষ থেকে কয়েকটি বাদ্য একসঙ্গে বেজে উঠল; কিন্তু সেগুলিও ভয় প্রদান করা ছাড়া আর কিছু দিতে পারল না। প্রত্যেক বিকার কিছু না কিছু ভয়ই প্রদান করে। সেই জন্য তাঁরাও ঘোষণা করলেন—

ততঃ শঙ্খাশ্চ ভের্ষশ পণবানকগোমুখাঃ।

সহসৈবাভ্যহন্যন্ত স শব্দস্মুলোহভবৎ ॥ ১৩॥

তদন্তর অনেক শঙ্খ, ভেরী, ঢেল এবং নরশিঙ্গাদি রণবাদ্য যন্ত্র একসঙ্গে বেজে উঠল, সেগুলির শব্দও অত্যন্ত ভয়ক্ষর পরিস্থিতির সৃষ্টি করল। ভয়সঞ্চার করার অতিরিক্ত কৌরবদের কোন ঘোষণা নেই। বহিমুখী বিজাতীয় প্রবৃত্তি সফল হলে মোহরূপ বন্ধন আরও ঘন করে দেয়।

এর পর পুণ্যময় প্রবৃত্তিসমূহের দিক থেকে ঘোষণা করা হল। যার মধ্যে প্রথম ঘোষণাটি যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের—

ততঃ শ্বেতেহৈর্যুক্তে মহতি স্যন্দনে স্থিতো ।

মাধবঃ পাণ্ডবক্ষেচব দিব্যৌ শঙ্খৌ প্রদঘতুঃ ॥ ১৪ ॥

অতপর শ্বেতাশ্মযুক্ত (যাতে বিন্দুমাত্র কালিমা বা দোষ ছিল না, শ্বেতবর্ণ সান্ত্বিক ও নির্মলতার প্রতীক) ‘মহতি স্যন্দনে’—উত্তমরথে উপবিষ্ট যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ এবং অর্জুনও অলৌকিক শঙ্খ বাজালেন। অলৌকিকের অর্থ, লোকাতীত। মৃত্যুলোক, দেবলোক, ব্রহ্মলোক, জন্ম-মৃত্যুর ভয় যতদূরপর্যন্ত সেই সমস্ত লোকের আতীত পারলৌকিক, পারমার্থিক স্থিতি প্রদান করার ঘোষণা যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ করলেন। সোনা-রূপে অথবা কাঠের রথ ছিল না, সেই রথ অলৌকিক ছিল, শঙ্খ অলৌকিক ছিল, অতএব ঘোষণাও অলৌকিক ছিল। একমাত্র ব্রহ্ম সমস্ত লোকের উর্ধ্বে স্থিত। সরাসরি ব্রহ্মসঙ্গে সম্পর্ক স্থাপন করাবার ঘোষণা করলেন। কিরণপে তিনি এই স্থিতি প্রদান করবেন?—

পাথঃজন্যং হাযীকেশো দেবদত্তং ধনঞ্জয়ঃ ।

গৌড়ুং দখৌ মহাশঙ্খং ভীমকর্ম বৃকোদরঃ ॥ ১৫ ॥

‘হাযীকেশঃ’- যিনি হৃদয়ের সর্বস্বের জ্ঞাতা, সেই শ্রীকৃষ্ণ ‘পাথঃজন্য’ শঙ্খ বাজালেন। পাঁচটি জ্ঞানেন্দ্রিয়কে পঞ্চ তন্মাত্রার (শব্দ, স্পর্শ, রূপ, রস, গন্ধ) রসে জড়িয়ে স্বজন অর্থাৎ ভক্তের শ্রেণীতে দাঁড় করাবার ঘোষণা করলেন। ভয়ক্ষরভাবে ভাস্ত ইন্দ্রিয়সমূহকে সংযত করে সেবকের শ্রেণীতে দাঁড় করানো, হৃদয়ের প্রেরক সদ্গুরুর কৃপা। শ্রীকৃষ্ণ যোগেশ্বর সদ্গুরু ছিলেন। ‘শিয়স্তেহহম্’- ভগবন! আমি আপনার শিষ্য। বাহ্য বিষয়-বস্তুকে ত্যাগ করে ধ্যানে ইষ্টের অতিরিক্ত অন্য কিছু দেখা, শোনা ও স্পর্শ না করা সদ্গুরুর অনুভব সঞ্চারণের উপর নির্ভর করে।

‘দেবদত্তং ধনঞ্জয়ঃ’- দৈবী সম্পত্তিকে অধীনে করে যে অনুরাগ, সেই অনুরাগই অর্জুন। ইষ্টের অনুরূপ শন্দা— যাতে বিরহ, বৈরাগ্য ও অক্ষণ্পাত হয়, ‘গদ্গদ গিরা নয়ন বহ নীরা।’— রোমাঞ্চ হয়, ইষ্ট ছাড়া অন্য কোন বিষয়-বস্তুর লেশমাত্রও সম্পর্ক হয় না, তখন এই অবস্থাকে ‘অনুরাগ’ বলা হয়। এতদূর সফল হ’বার, পরেই দৈবী সম্পদের উপর প্রভুত্ব লাভ করা সম্ভব হয়, যা পরমদেব পরমাত্মাতে একীভূত হতে সাহায্য করে। এর আরেক নাম ধনঞ্জয়। এক ধন পার্থির সম্পত্তি, যা দিয়ে শরীর নির্বাহের ব্যবস্থা করা হয়, আত্মার সঙ্গে এর কোন সম্পর্ক

নেই। এছাড়া স্থির আত্মিক সম্পত্তি নিজ সম্পত্তি। বৃহদারণ্যকোপনিষদে যাঞ্জবল্ক্য মেত্রেয়ীকে এই উপদেশ দিলেন যে—ধনসম্পন্ন পৃথিবীর স্বামীত্ব দ্বারাও অমৃতত্ত্বের প্রাপ্তি সম্ভব নয়। এর উপায় হল আত্মিক সম্পত্তি।

যোরকর্মা ভীম ‘পৌত্র’ অর্থাৎ প্রীতি নামক মহাশঙ্খ বাজালেন। ভাবের উদ্গম ও নিবাসস্থান হৃদয়, তাই এর এক নাম ‘বৃক্ষেদর’। আপনাদের ভাব, সেহে ছোটদের প্রতি স্বভাবতই থাকে; কিন্তু সেই সেহে উৎপন্ন হয় আপনাদের হৃদয়ে, যা গিয়ে মূর্ত হয় ছোটদের প্রতি। এই ভাব অগাধ এবং মহাবলশালী, তিনি প্রীতি নামক শঙ্খ বাজালেন। এই প্রীতি ভাব-এর মধ্যেই নিহিত, তাই ভীম ‘পৌত্র’ (প্রীতি) নামক মহাশঙ্খ বাজালেন। ভাব অত্যন্ত শক্তিশালী; কিন্তু প্রীতির মাধ্যমে তা সঞ্চার হয়।

হরি ব্যাপক সর্বত্র সমান। প্রেম তে প্রকট হোইঁ মৈঁ জানা।।

(রামচরিতমানস, ১/১৮৪/৫)

অর্থাৎ দৈশ্বর সর্বত্র সমান রূপেই বিদ্যমান; কিন্তু তাকে প্রকট করতে হ'লে চাই হৃদয়ে প্রেম।

অনন্তবিজয়ং রাজা কুস্তীপুত্রো যুধিষ্ঠিরঃ।

নকুলঃ সহদেবক্ষ সুঘোষমণিপুষ্পকৌ ॥ ১৬।।

কুস্তীপুত্র রাজা যুধিষ্ঠির ‘অনন্ত বিজয়’ নামক শঙ্খ বাজালেন। কর্তৃব্যরূপ কুস্তী ও ধর্মরূপ যুধিষ্ঠির। ধর্মে স্থির থাকলেই ‘অনন্ত বিজয়ম্’—অনন্ত পরমাত্মাতে স্থিতি লাভ হবে। যুদ্ধে স্থিরঃ সঃ যুধিষ্ঠিরঃ। প্রকৃতি পুরুষ ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞের সংঘর্ষে স্থির থাকেন, অত্যন্ত দুঃখেও বিচলিত হন না, তবেই একদিন যিনি অনন্ত যাঁর অস্ত নেই, সেই পরমতত্ত্ব পরমাত্মাকে লাভ করতে সক্ষম হন।

নিয়মরূপ নকুল ‘সুঘোষ’ নামক শঙ্খ বাজালেন। যেমন যেমন নিয়ম কঠোর হবে, তেমন তেমন অশুভ লক্ষণগুলি বিলয় হয়ে যাবে ও শুভ পরিস্থিতির উদয় হবে। সৎসঙ্গরূপ সহদেব ‘মণিপুষ্পক’ নামক শঙ্খ বাজালেন। মনীয়ীগণ প্রত্যেক শাসকে বহুমূল্য মণির নাম দিয়েছেন। ‘হীরা জৈসী শ্বাঁসা, বাতোঁ মেঁ বীতী জায়’। বাহ্য সৎসঙ্গ সৎপুরুষের বাণী শ্রবণকে বলে, যা এক প্রকার সৎসঙ্গ; কিন্তু যথার্থ সৎসঙ্গ হয় আন্তরিক। শ্রীকৃষ্ণের মতে আত্মাই সত্য ও সনাতন। চিন্ত যখন স্থির হয়ে আত্মার সঙ্গত করে, তখনই হয় প্রকৃত সৎসঙ্গ। এই সৎসঙ্গ চিন্তন, ধ্যান ও সমাধির

অভ্যাস দ্বারা সম্পন্ন হয়। যেমন যেমন সত্যের সান্নিধ্যে স্মৃতি স্থির হবে, তেমন তেমন এক একটি শ্বাসের উপর নিয়ন্ত্রণ হতে থাকবে, ইন্দ্রিয়গুলির সঙ্গে মনও নিরংদৃ হয়ে আসবে। এইপ্রকার যখন সম্পূর্ণরূপে নিরংদৃ হবে, তখন বস্তুলাভ হবে। বাদ্য যন্ত্রের মত আঘাত ধ্বনির সঙ্গে চিন্তের ধ্বনি মিলিয়ে সঙ্গত করাটি যথার্থ সৎসন্দে।

বাহ্য মণি কঠোর হয়, কিন্তু শ্বাসরূপ মণি পুষ্প থেকেও কোমল হয়। পুষ্প তো বিকশিত হওয়ার পর অথবা বৃষ্টচ্যুত হলে শুকিয়ে যায়, কিন্তু আপনি এর পরের শ্বাসপর্যাপ্ত জীবিত থাকার গ্যারান্টি দিতে পারেন না। কিন্তু সৎসন্দে সফল হলে প্রত্যেক শ্বাসের উপর নিয়ন্ত্রণ রেখে লক্ষ্যপ্রাপ্তি সম্ভব। এর বেশী পাণ্ডবদের কোন ঘোষণা নেই; কিন্তু প্রত্যেক সাধন নির্মলতার পথে কিছু না কিছু দূরত্ব অতিক্রম করায়। অতপর বললেন—

কাশ্যক্ষ পরমেষ্বাসঃ শিখণ্ডী চ মহারথঃ।

ধৃষ্টদ্যুম্নো বিরাটক্ষ সাত্যকিশ্চাপরাজিতঃ ॥১৭॥

কায়ারূপ কাশী। পুরুষ যখন চারিদিক থেকে মন ও ইন্দ্রিয়সমূহকে সংযত করে কায়াতেই কেন্দ্রিত করেন তখন ‘পরমেষ্বাসঃ’—পরম ঈশ্বে বাস করার অধিকারী হন। পরম ঈশ্বরতত্ত্বে অবস্থান দিতে সক্ষম কায়াকেই কাশী বলে। কায়াতেই পরম ঈশ্বরের নিবাস। পরমেষ্বাসের অর্থ শ্রেষ্ঠ ধনুধরী নয় বরং পরম + ঈশ + বাস হয়।

শিখা-সুত্রের ত্যাগই ‘শিখণ্ডী’। সাধনা পথের কিছু ভ্রান্ত ব্যক্তিরা আজকাল মুণ্ডিত মন্ত্রকে, সুত্রের নামে গলার উপবীত খুলে রাখে, অগ্নিত্যাগ করে এবং একেই সন্ধ্যাস বলে। এই ধারণা সম্পূর্ণ ভুল। বস্তুতঃ শিখা লক্ষ্যের প্রতীক, যেখানে আপনাকে পৌঁছাতে হবে এবং সূত্র সংস্কারের প্রতীক। যতক্ষণ পরমাত্মার প্রাপ্তির না হয়, ততক্ষণ সংস্কারের সূত্রপাত হতেই থাকে, ততক্ষণ ত্যাগ কোথায়? কি প্রকার সন্ধ্যাস? এখনও তো তিনি পথিক। যখন প্রাপ্য বস্তুর প্রাপ্তি হয়, পূর্বের সমস্ত সংস্কারের সূত্র ছিন হয়, এইরূপ অবস্থাতে সম্পূর্ণরূপে অম মিটে যায়। সেইজন্য শিখণ্ডীটি অমরূপ ভৌমের বিনাশ করে। শিখণ্ডী চিন্তন-পথের বিশিষ্ট যোগ্যতারূপ মহারথীকে বলে।

‘ধৃষ্টদ্যুম্নঃ’—দৃঢ় ও আচল মন এবং ‘বিরাটঃ’—সর্বত্র বিরাট ঈশ্বরের প্রসার দেখার ক্ষমতা ইত্যাদি হ'ল দৈবী সম্পদের প্রমুখ গুণ। সাত্যিকতাই ‘সাত্যকি’। সত্যের

চিন্তনের প্রবৃত্তি অর্থাৎ যদি সাহিত্যিকতা বিদ্যমান, তাহলে আর পতনের সম্ভাবনা থাকে না, এই সংঘর্ষে পরাজয় হতে দেয় না।

দ্রুপদো দ্রোপদেয়াশ্চ সর্বশঃ পৃথিবীপতে।

সৌভদ্রশ্চ মহাবাহুঃ শঙ্খান্দধুঃ পৃথক্ পৃথক্ ॥ ১৮ ॥

আচল পদে প্রতিষ্ঠাদাতা দ্রুপদ এবং ধ্যানরূপ দ্রোপদীর পঞ্চপুত্র সহাদয়তা, বাংসল্য, লাবণ্য, সৌম্যতা ও স্থিরতা এরা সাধন পথের শ্রেষ্ঠ সহায়ক মহারথী এবং দীর্ঘবাহুত্ব অভিমন্যু এঁরা সকলেই পৃথক্ পৃথক্ শঙ্খ বাজালেন। বাহু কার্যক্ষেত্রের প্রতীক। মন যখন ভয়মুক্ত হয়, তখন তার শক্তি বহু দূরপর্যন্ত প্রসার লাভ করে।

হে রাজন! এঁরা সকলেই পৃথক্ পৃথক্ শঙ্খ বাজালেন। কিছু কিছু দূরত্ব সকলেই অতিক্রম করান, এদের পালন আবশ্যক, তাই এদের নাম উল্লেখ করা হয়েছে। এছাড়া কিছু দূরত্ব, যেটুকু বাকী থাকে, তা মন এবং বুদ্ধির অতীত। ভগবান স্বয়ং অস্তঃকরণে জাগ্রত হয়ে তা অতিক্রম করান। দৃষ্টিন্দৃপে আত্মা থেকে দাঁড়িয়ে যান এবং সম্মুখে স্বয়ং দণ্ডয়মান হয়ে নিজের পরিচয় দেন।

স ঘোষো ধার্তরাষ্ট্রাণাং হৃদয়ানি ব্যদারয়ৎ।

নভশ্চ পৃথিবীং চৈব তুমুলো ব্যনুনাদয়ন् ॥ ১৯ ॥

সেই তুমুল শঙ্খধনি আকাশ ও পৃথিবী প্রতিধ্বনিত করে ধৃতরাষ্ট্র পুত্রগণের হৃদয় বিদীর্ণ করল। সেনা পাণ্ডব পক্ষেও ছিল, কিন্তু হৃদয় বিদীর্ণ হল কেবল ধৃতরাষ্ট্রপুত্রগণের। বস্তুতঃ পাথঃজন্য, দৈবী শক্তির উপর আধিপত্য, অনস্তকে জয়, অশুভ শাস্তি ও শুভের আবির্ভাব নিরস্তর হতে থাকলে এই কুরুক্ষেত্রে, আসুরী সম্পদ, বহিমুখী প্রবৃত্তিগুলির হৃদয় বিদীর্ণ হয়ে যাবে, তাদের বল ক্রমশঃ ক্ষীণ হতে থাকবে। পূর্ণ সফলতা লাভ হলে মোহময়ী প্রবৃত্তিগুলি সম্পূর্ণরূপে শাস্ত হয়ে যায়।

অথ ব্যবস্থিতান্দন্ত্বা ধার্তরাষ্ট্রান্ক কপিধ্ববজঃ।

প্রবৃত্তে শন্ত্রসম্পাতে ধনুরদ্যম্য পাণ্ডবঃ ॥ ২০ ॥

হৃষীকেশং তদা বাক্যমিদমাহ মহীপতে।

অর্জুন উবাচ

সেনঘোরঃভয়োর্মধ্যে রথঃ স্থাপয় মেহচুত ॥ ২১ ॥

সংযমরূপ সঞ্জয় অঙ্গনাবৃত মনকে বোঝালেন, যে, হে রাজন्! অতপর ‘কপিধ্বজৎ’—বৈরাগ্যরূপ হনুমান, বৈরাগ্যই যার ধ্বজ (ধ্বজকে রাষ্ট্রের প্রতীক বলা হয়। কারও কারও মতে পতাকা চঞ্চল ছিল, তাই কপিধ্বজ বলা হয়েছে; কিন্তু তা নয়, এখানে কপি সাধারণ বানর নয়, স্বয়ং হনুমানই ছিলেন, যিনি মান-অপমানের হনন করেছিলেন—‘সম মান নিরাদর আদরহৈ’। (মানস, ৭/১৩/৮) প্রকৃতির বিষয় বস্তু থেকে আসন্তির ত্যাগই ‘বৈরাগ্য’। অতএব বৈরাগ্যই যার ধ্বজ), সেই অর্জুন ব্যবস্থিত রূপে ধৃতরাষ্ট্রের পুত্রগণকে দাঁড়িয়ে থাকতে দেখে শন্ত চালনার মুহূর্তে ধনুক তুলে ‘হষীকেশম্’—যিনি হৃদয়ের সর্বস্বের জ্ঞাতা সেই যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণকে এই কথা বললেন—হে অচ্যুত! (যিনি কখনও চুত হন না) আমার রথ উভয় সেনার মধ্যে স্থাপন করুন। এখানে সারথীকে আদেশ দেওয়া নয়, ইষ্টের (সদগুরুন) প্রতি অনুরোধ করা হয়েছে। কেন স্থাপন করবেন?—

যাবদেতান্নীক্ষেহহং যোদ্ধুকামানবস্থিতান্।

কৈর্ম্যা সহ যোদ্ধব্যমশ্চিন্ম রণসমুদ্যমে ॥ ২২॥

যতক্ষণ আমি যুদ্ধার্থে অবস্থিত এঁদের উত্তমরূপে নিরীক্ষণ না করি যে, এই যুদ্ধোদ্যমে আমাকে কে কে সঙ্গে যুদ্ধ করার উচিত অর্থাৎ এই যুদ্ধ ব্যবসায়ে কার কার সঙ্গে আমাকে যুদ্ধ করতে হবে।

যোৎস্যমানানবেক্ষেহহং য এতেহত্র সমাগতাঃ।

ধার্তরাষ্ট্রস্য দুর্বুদ্ধের্যুদ্ধে প্রিয়চিকীর্ষবঃ ॥ ২৩॥

দুরুদ্ধি দুর্যোধনের হিতকামী যে সকল রাজাগণ যুদ্ধ করার জন্য এখানে উপস্থিত হয়েছেন, তাঁদেরকে আমি দেখতে চাই, সেইজন্য রথ স্থাপন করুন। মোহরূপ দুর্যোধন। মোহমুক্ত প্রবৃত্তিসমূহের হিতাকাঙ্ক্ষী যে সকল রাজাগণ যুদ্ধ করবার জন্য এখানে উপস্থিত হয়েছেন, তাঁদেরকে আমি দেখে নিই।

সঞ্জয় উবাচ

এবমুক্তো হষীকেশো গুডাকেশেন ভারত।

সেনয়োরূপভয়োর্মধ্যে স্থাপয়িত্বা রথোত্তমম্ ॥ ২৪॥

ভীষ্মদ্রোগপ্রমুখতঃ সর্বেষাং চ মহীক্ষিতাম্।

উবাচ পার্থ পশ্যেতান् সমবেতান् কুরুনিতি ॥ ২৫॥

সঙ্গে বললেন— নিদ্রাজয়ী অর্জুনের এইরূপ বলার পর ভগবান শ্রীকৃষ্ণ যিনি হৃদয়ের জ্ঞাতা তিনি উভয় সেনার মধ্যে ভীষ্ম, দ্রোণ ও ‘মহীক্ষিতাম’— দেহরূপ পৃথিবীকে অধিকার করেছেন যে রাজাগণ, সেই সকল রাজাগণের মধ্যে উত্তমরথ স্থাপন করে বললেন— “হে পার্থ! সমবেত কৌরবগণকে অবলোকন কর।” এখানে উত্তম রথের অর্থ সোনা, রূপের নির্মিত রথ নয়। সংসারে উত্তমের পরিভাষা নস্বর বস্ত্র অনুকূলতা-প্রতিকূলতার উরপ দেওয়া হয়; কিন্তু এই পরিভাষা পূর্ণ নয়। যা আমাদের আত্মা অর্থাৎ স্বরূপের সঙ্গে সর্বদা সহযোগিতা করে, তাই একমাত্র উত্তম, যারপর ‘অনুত্তম’ অর্থাৎ মলিনতা বলে কিছু থাকে না।

ত্রাপশ্যৈ স্থিতান् পার্থঃ পিতৃনথপিতামহান्।

আচার্যান্মাতুলান্ব্রাতুন্পুত্রান্পৌত্রান্সখীংস্তথা ॥ ২৬॥

শ্বশুরান্সুহৃদদৈচেব সেনয়োরূপভয়োরপি ॥

অতপর সুনিশ্চিত লক্ষ্যযুক্ত, পার্থিব দেহকে যিনি রথস্বরূপ বিবেচনা করেছেন, সেই পার্থ উভয় পক্ষের সেনাদলের মধ্যে পিতৃব্যগণকে, পিতামহগণকে, আচার্যগণকে, মাতুলগণকে, ভাতাগণকে, পুত্রগণকে, পৌত্রগণকে, মিত্রগণকে, শশুরগণকে ও সুহৃদগণকে অবস্থিত দেখলেন। উভয় সেনাদলের মধ্যে অর্জুন কেবল নিজের পরিবার, মামার পরিবার, শ্বশুরের পরিবার, সুহৃদ ও গুরজনদের দেখতে পেলেন। মহাভারতকালের গণনানুসারে আঠারো অক্ষোহিনী আনুমানিক চল্লিশ লক্ষ্যের সমকক্ষ হবে, কিন্তু প্রচলিত গণনানুসারে আঠারো অক্ষোহিনী আনুমানিক সাড়ে ছয় আরব সংখ্যায় হবে, যা আজকের বিশ্বের জনসংখ্যার সমকক্ষ। আজ সমগ্র বিশ্বে মাত্র ততই জনসমূহের জন্য বিশ্বস্তরে আবাস, খাদ্য ও জনসংখ্যার সমস্যা সমুপস্থিত। এই বিশাল জনসমূহ অর্জুনের তিন-চারটি আত্মীয়ের পরিবারই মাত্র ছিল। এতবিশাল পরিবার কি কারও হয়? কখনই না। এ সকলই হৃদয়-দেশের ছবি।

তান্সমীক্ষ্য স কৌন্তেয়ঃ সর্বান্বন্ধুনবস্থিতান् ॥ ২৭॥

কৃপয়া পরয়াবিষ্টো বিষীদঘিনিদমৰ্বীৎ।

কুস্তিপুত্র অর্জুন সেই বন্ধুগণকে যুদ্ধক্ষেত্রে অবস্থিত দেখে অত্যন্ত করণপূর্ণ হয়ে শোক করতে লাগলেন, কারণ দেখলেন এরা সকলেই তাঁর নিজের আত্মীয় স্বজন, অতএব বললেন—

### অর্জুন উবাচ

দ্রষ্টেমং স্বজনং কৃষ্ণ যুযুৎসুং সমুপস্থিতম্ ॥ ২৮ ॥

সীদন্তি মম গাত্রাণি মুখং চ পরিশুষ্যতি ।

বেপথুশ শরীরে মে রোমহর্ষশ জায়তে ॥ ২৯ ॥

হে কৃষ্ণ ! আত্মীয় স্বজনকে যুদ্ধার্থ উপস্থিত দেখে আমার অঙ্গ-প্রত্যঙ্গা অবসন্ন ও মুখ শুক্ষ হচ্ছে । আমার শরীর কম্পিত ও রোমাঞ্চিত হচ্ছে । কেবল এতটাই নয়—

গাণ্ডীবং স্বৎসতে হস্তান্তক চৈব পরিদিহ্যতে ।

ন চ শক্রোম্যবস্থাতুং ভ্রমতীব চ মে মনঃ ॥ ৩০ ॥

হাত থেকে গাণ্ডীব খসে পড়ছে এবং চর্ম যেন দন্ধ হচ্ছে । তিনি সন্তপ্ত হয়ে উঠেছেন যে, এই যুদ্ধ কি ধরনের, যার মধ্যে শুধু স্বজনই দাঁড়িয়ে ? অর্জুনের ভ্রম হয়েছিল । তিনি বললেন—এখন আমি দাঁড়াতেও অসমর্থ, এখন এর বেশী দেখার সামর্থ্য নেই ।

নিমিত্তানি চ পশ্যামি বিপরীতানি কেশব ।

ন চ শ্রেয়োহনুপশ্যামি হত্তা স্বজনমাহবে ॥ ৩১ ॥

হে কেশব ! এই যুদ্ধের লক্ষণও বিপরীত দেখছি । যুদ্ধে আত্মীয়দের বধ করলে মঙ্গল হবে, এও দেখি না । কুলকে বধ করলে কল্যাণ কিরণে সন্তুষ্ট ন হবে ?

ন কাঙ্ক্ষে বিজয়ং কৃষ্ণ ন চ রাজ্যং সুখানি চ ।

কিং নো রাজ্যেন গোবিন্দ কিং ভোগৈজীবিতেন বা ॥ ৩২ ॥

সম্পূর্ণ পরিবার যুদ্ধে উপস্থিত হয়েছেন । এঁদের যুদ্ধে বধ করে বিজয়, বিজয়ের দ্বারা প্রাপ্ত রাজ্য ও রাজ্যসুখ অর্জুন চান না । তিনি বললেন— হে কৃষ্ণ ! আমি বিজয় চাই না, রাজ্য এবং সুখভোগও কামনা করি না । হে গোবিন্দ ! আমাদের রাজ্য কি

প্রয়োজন, আর সুখভোগ বা জীবন ধারণেই কি প্রয়োজন? কেন? এর উত্তরে  
বললেন—

যেষামর্থে কাঞ্জিতং নো রাজং ভোগাঃ সুখানি চ।

ত ইমেহবস্তিতা যুদ্ধে প্রাগাঞ্চ্যত্বা ধনানি চ ॥ ৩৩ ॥

যাঁদের জন্য রাজ্য, ভোগ ও সুখাদি আমার অভিলিষ্ঠিত, সেই স্বজনগণই  
প্রাণের আশা ত্যাগ করে যুদ্ধে উপস্থিত হয়েছেন। আমার রাজ্য অভিলিষ্ঠিত ছিল  
তো পরিবার নিয়ে, ভোগ-সুখ ও ধনাদির পিপাসা ছিল তো স্বজন ও পরিবারকে  
নিয়ে ভোগ করার ছিল; কিন্তু যখন তারা সকলেই প্রাণের আশা ত্যাগ করে যুদ্ধে  
উপস্থিত হয়েছেন, তো আমার সুখ, ভোগ বা রাজ্যের প্রয়োজন নেই। এ সকলই  
এদের জন্য প্রিয় ছিল। এদের থেকে পৃথক্ হয়ে এ সকলের আমার আর প্রয়োজন  
নেই। যতক্ষণ পরিবার থাকে ততক্ষণ এই কামনাগুলিও থাকে। কুঁড়েঘরে বাস  
করে যে ব্যক্তি, সেও নিজের পরিবার, বন্ধু ও আত্মীয়দের বধ করে বিশ্বের সাম্রাজ্য  
স্থাকার করবে না। অর্জুনের বক্তব্য এই যে ভোগ, যুদ্ধে জয়লাভ আমি চেয়েছিলাম;  
কিন্তু যাদের জন্য চেয়েছিলাম, যখন তারাই থাকবে না, তখন আর আমার ভোগের  
কি প্রয়োজন? এই যুদ্ধে আমি কাকে বধ করব?—

আচার্যাঃ পিতরঃ পুত্রাঞ্চলৈব চ পিতামহাঃ।

মাতুলাঃ শ্শুরাঃ পৌত্রাঃ শ্যালাঃ সম্বন্ধিনস্তথা ॥ ৩৪ ॥

এই যুদ্ধে আচার্যগণ, পিতৃব্যগণ, পুত্রগণ, পিতামহগণ, মাতুলগণ, শ্শুরগণ,  
পৌত্রগণ, শ্যালকগণ ও স্বজনগণই উপস্থিত হয়েছেন।

এতাম হন্তুমিচ্ছামি ঘ্রাতোহপি মধুসূদন।

অপি ত্রেলোক্যরাজ্যস্য হেতোঃ কিং নু মহীকৃতে ॥ ৩৫ ॥

হে মধুসূদন! এঁরা আমাকে বধ করলেও, ত্রেলোক্য রাজ্যের জন্যও আমি  
এঁদের বধ করতে চাই না; পৃথিবী মাত্র রাজ্যের জন্য কি কথা?

আঠারো অঙ্কোহিনী সেনার মধ্যে অর্জুন কেবল নিজের পরিবারকেই দেখতে  
পেয়েছিলেন, এত অধিক স্বজন বাস্তবে কারা? বস্তুতঃ অনুরাগই অর্জুন। ভজনের  
শুরুতে প্রত্যেক অনুরাগীর সমক্ষে এই সমস্যাই দেখা দেয়। সকলেই চায় ভজন

করে, পরম সত্যকে লাভ করতে, কিন্তু প্রত্যক্ষদর্শী সদগুরুর সংরক্ষণে অনুরাগী সাধক যখন ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞের সংঘর্ষ অনুভব করেন, তাঁকে কার কার সঙ্গে যুদ্ধ করতে হবে বুঝাতে পারেন, তখনই হতাশ হয়ে পড়েন। তিনি চান তাঁর পিতার পরিবার, শ্বশুরের পরিবার, মামার পরিবার, সুহৃদ, বন্ধু ও গুরুজন সঙ্গে থাকুন, সকলেই সুখী থাকুন এবং এঁদের সকলকে ব্যবস্থিত করে তিনি পরমাত্মা-স্বরূপ লাভও করে নেবেন। কিন্তু যখন জানতে পারেন, আরাধনার পথে অগ্রসর হতে হলে পরিবার ত্যাগ করতে হবে, এই সম্বন্ধগুলির মোহ থেকে মুক্ত হতে হবে, তখন তিনি অধীর হয়ে ওঠেন।

পূজ্য মহারাজজী বলতেন- “মৃত্যু হওয়া ও সাধু হওয়া একই ব্যাপার। সাধুর জন্য এই পৃথিবীতে কেউ জীবিত থাকলেও; গৃহ সমন্বয় কেউই থাকবে না। যদি থাকে, তাহলে সমস্ত বিদ্যমান, মোহ শেষ হয়েছে কোথায়? পূর্ণ ত্যাগ অর্থাৎ সমন্বের অস্তিত্ব বিলীন হবার পরেই সাধক জয়লাভ করেন। এই সম্বন্ধগুলির প্রসারই জগৎ, অন্যথা জগতে আমার বলে কি আছে?” ‘তুলসীদাস কহ চিদবিলাস জগ, বুঝত  
বুঝত বুঝো।’ (বিনয়পত্রিকা, ১২৪) অর্থাৎ মনের প্রসারই এই জগৎ। যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণও মনের প্রসারকেই জগৎ বলে সম্মোধন করেছেন। যিনি এর প্রভাব রোধ করতে সক্ষম হয়েছেন, তিনি চরাচর বিশ্ব জয় করেছেন। ‘ইহৈব তৈর্জিতঃ সর্গো  
যৈষাং সাম্যে স্থিতঃ মনঃ।’ (গীতা, ৫/১৯)

এমন কথা নয় যে কেবল অর্জনই অধীর ছিলেন, সকলের হাদয়েই অনুরাগ আছে। প্রত্যেক অনুরাগীই ব্যাকুল হন। আত্মীয় স্বজনের স্মৃতি তাঁকে ব্যাকুল করে। সাধনারস্তে প্রত্যেক সাধক চিন্তা করেন যে ভজন করে কিছু লাভ হলে, এদের সঙ্গে তা ভোগ করা যাবে, সকলেই সুখী হবে; কিন্তু যখন এরা সঙ্গে থাকবে না, তখন সুখের আর কি প্রয়োজন? অর্জনের দৃষ্টি রাজ্য-সুখপর্যাপ্তই সীমাবদ্ধ ছিল। তিনি ত্রিলোকের সাম্রাজ্যকেই সুখের পরাকার্ষা ভেবেছিলেন। এর বেশী কোন সত্য আছে, একথা অর্জুন এখনও জানেন না।

**নিঃত্য ধার্তরাষ্ট্রান্নঃ কা প্রীতিঃ স্যাজ্জনার্দন।**

**পাপমেবাশ্রয়েনশ্মান্ হত্ত্বেতানাততায়িনঃ ॥ ৩৬॥**

হে জনার্দন! ধৃতরাষ্ট্রের পুত্রগণকে বধ করলে আমাদের কি সুখ হবে? যেখানে ধৃতরাষ্ট্র অর্থাৎ ধৃষ্টতার রাষ্ট্র, তার থেকে উৎপন্ন মোহরূপ দুর্যোধনাদিকে বধ করলে

আমাদের কি আনন্দ হবে ? এই সকল আততায়ীকে বধ করলে আমাদেরকে পাপই আশ্রয় করবে । জীবন-যাপনের তুচ্ছ লাভের জন্য যে অনীতির সাহায্য নেয়, তাকে আততায়ী বলে; কিন্তু যে আঘোষণার পথে অবরোধ সৃষ্টি করে, সে আরও বড় আততায়ী । আত্মদর্শনে বাধক কাম, ক্রোধ, লোভ, মোহ ইত্যাদিই আততায়ী ।

তস্মান্নার্হাঃ বযং হস্তং ধার্তরাষ্ট্রান् স্ববান্ধবান্।  
স্বজনং হি কথং হত্তা সুখিনঃ স্যাম মাধব ॥ ৩৭ ॥

অতএব হে মাধব ! স্বীয় বান্ধব ধৃতরাষ্ট্রের পুত্রগণকে আমাদের বধ করা উচিত নয় । স্ব-বান্ধব কিরণপে ? তারা সকলেই তো শক্র ছিল । বস্তুতঃ শরীরের আঘাত অঙ্গানজনিত । ইনি মামা, শশুরবাড়ি, স্বজন সমুদায় এসকলই অঙ্গান । যখন এই দেহটাই নশ্বর, তখন এর কুটুম্বিতাই কি করে শাশ্বত হবে ? যতক্ষণ মোহ, ততক্ষণই আমার সুহৃদ, আমার পরিবার, আমার জগৎ । মোহ নেই তো কিছুই নেই । সেই জন্য অর্জুন শক্রদেরও স্বজনরূপেই দেখতে পেয়েছিলেন । তিনি বলছেন যে নিজ কুটুম্বকে বধ করে আমরা কিরণপে সুধী হব ? যদি অঙ্গান ও মোহ না থাকে তবে কুটুম্বেরও কোন অস্তিত্ব নেই । এই অঙ্গানই আবার জ্ঞানেরও প্রেরক । ভর্তুহরি, তুলসীদাস ইত্যাদি অনেক মহাপুরুষগণ বৈরাগ্যের প্রেরণা তাঁদের স্তীর কাছ থেকে পেয়েছিলেন । কেউ বা বিমাতার ব্যবহারে ব্যথা পেয়ে বৈরাগ্যের পথে এগিয়ে গেছেন দেখা গেছে ।

যদ্যপ্যেতে ন পশ্যন্তি লোভোপহতচেতসঃ ।  
কুলক্ষয়কৃতং দোষং মিত্রদ্বোহে চ পাতকম্ ॥ ৩৮ ॥

যদিও এরা লোভে অভিভূত হয়ে কুলনাশজনিত দোষ ও মিত্রদ্বোহে যে পাপ হয়, তা দেখছে না, এ দোষ তাদের, তাসত্ত্বেও—

কথং ন জ্ঞেয়মস্যাভিঃ পাপাদস্যান্বিবর্তিতুম্।  
কুলক্ষয়কৃতং দোষং প্রপশ্যত্তির্জনার্দন ॥ ৩৯ ॥

হে জনার্দন ! কুলনাশজনিত দোষ উপলব্ধি করেও আমরা এই পাপ থেকে নিয়ন্ত হব না কেন ? কেবল আমিই পাপ করছি এমন কথা নয়, আপনিও ভুল করছেন— শ্রীকৃষ্ণের উপরও দোষারোপ করলেন । এখনও তিনি নিজেকে বুদ্ধিতে শ্রীকৃষ্ণের চেয়ে কম মনে করছেন না । প্রত্যেক নতুন সাধক সদ্গুরুর শরণাগত

হবার পরে এই ধরণের তর্ক করেন এবং নিজে যে কম জানেন তা ভাবেন না। একথাই অর্জুনও বলছেন যে এরা না বুঝুক, কিন্তু আমরা তো বুদ্ধিমান। কুলনাশজনিত দোষের উপর আমাদের অবশ্যই বিচার করা উচিত। কুলনাশে কি কি দোষ হয়?—

কুলক্ষয়ে প্রণশ্যন্তি কুলধর্মঃ সনাতনাঃ।  
ধর্মে নষ্টে কুলং কৃত্ত্বমধর্মোহভিভবত্যত ॥ ৪০ ॥

কুলনাশে সনাতন কুলধর্ম নষ্ট হয়। অর্জুন কুলধর্ম, কুলাচারকেই সনাতন ধর্ম বলে মনে করেছিলেন। ধর্ম নষ্ট হলে সম্পূর্ণ কুলকে পাপ দাবিয়ে দেয়।

অধমাভিভবাত্কৃষ্ণ প্রদুষ্যন্তি কুলস্ত্রিযঃ।  
শ্রীযু দুষ্টাসু বাষ্ণের্য জায়তে বর্ণসঙ্করঃ ॥ ৪১ ॥

হে কৃষ্ণ! পাপের বৃদ্ধি হলে কুলস্ত্রীগণ কল্যাণিত হয়। হে বাষ্ণের্য! স্ত্রীগণ কল্যাণিত হলে বর্ণসঙ্কর উৎপন্ন হয়। অর্জুনের দৃষ্টিকোণে কুলস্ত্রীগণ কল্যাণিত হলে বর্ণসঙ্কর দেখা দেয়, কিন্তু শ্রীকৃষ্ণ এই সিদ্ধান্তের খণ্ডন করে আরও বলছেন—“আমি অথবা স্বরূপস্থিত মহাপুরুষ যদি আরাধনা ক্রমে ভ্রম উৎপন্ন করেন, তাহলে বর্ণসঙ্কর দেখা দেয়। বর্ণসঙ্করের দোষের উপর অর্জুন আলোকপাত করছেন—

সঙ্করো নরকায়েব কুলঘানাং কুলস্য চ।  
পতন্তি পিতরো হ্যেষাং লুপ্তপিণ্ডোদকক্রিযঃ ॥ ৪২ ॥

বর্ণসঙ্কর হলে কুলনাশকগণ এবং কুল নরকে পতিত হয়। যাদের পিণ্ডক্রিয়া লুপ্ত হয়েছে, তাদের পিতৃপুরুষগণও পতিত হন। বর্তমান নষ্ট হয়, পিতৃপুরুষগণ স্থানিত হন ও উত্তর পুরুষদেরও পতন হবে। কেবল এই নয়—

দোষেরেতেঃ কুলঘানাং বর্ণসঙ্করকারকেঃ।  
উৎসাদ্যন্তে জাতিধর্মঃ কুলধর্মার্শ শাশ্বতাঃ ॥ ৪৩ ॥

এই সকল বর্ণসঙ্করকারক দোষের দ্বারা কুল এবং কুলঘাতকগণের সনাতন কুলধর্ম ও জাতিধর্ম নষ্ট হয়। অর্জুন মনে করতেন যে, কুলধর্ম সনাতন, কুলধর্মই শাশ্বত; কিন্তু শ্রীকৃষ্ণ একথা খণ্ডন করে, দ্বিতীয় অধ্যায়ে বললেন—“আম্মাই সনাতন, শ্বাশত ধর্ম।” বাস্তবিক সনাতন ধর্মকে জানার আগে মানুষ ধর্মের নামে কোন না কোন চিরাগত কুরীতি মেনে চলে। তেমনিই অর্জুনও যা জানতেন, শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে তা কুপ্রথা।

উৎসন্নকুলধর্মাণাং মনুষ্যাণাং জনার্দন ।

নরকেহনিয়তং বাসো ভবতীত্যনুশুক্রম ॥ ৪৪ ॥

হে জনার্দন ! যাদের কুলধর্ম নষ্ট হয়েছে, তাদের অনন্তকাল নরকে বাস করতে হয়, এইরূপ আমি শুনেছি । কেবল কুলধর্মই নষ্ট হয় না, বরং শাশ্঵ত সনাতন ধর্মও নষ্ট হয়ে যায় । যাদের ধর্ম নষ্ট হয়, তাদের অনন্তকালপর্যন্ত নরকে বাস করতে হয়, এটা আমি শুনেছি । দেখিনি, কেবল শুনেছি ।

অহো বত মহৎপাপং কর্তৃৎ ব্যবসিতা বয়ম্ ।

যদ্রাজ্যসুখলোভেন হস্তং স্বজনমুদ্যতাঃ ॥ ৪৫ ॥

হায় ! দুঃখের বিষয় যে আমরা বুদ্ধিমান হয়েও মহাপাপ করতে প্রবৃত্ত হয়েছি ।  
রাজসুখের লোভে নিজকুলকে হত্যা করতে উদ্যত হয়েছি ।

এখনও পর্যন্ত অর্জুন নিজেকে কম জ্ঞাতা বলে মনে করছেন না । শুরুতে প্রত্যেক সাধক এইরূপ বলেন । মহাত্মা বুদ্ধও বলেছেন যে— মানুষ আংশিক অবগত হলে, নিজেকে মহাজ্ঞানী বলে মনে করেন, ও যখন অর্ধেকের বেশী অবগত হন তখন নিজেকে মহামুর্খ বলে মনে করেন । তেমনিই অর্জুনও নিজেকে জ্ঞানীই ভাবছেন । তিনি শ্রীকৃষ্ণকেই বোঝাচ্ছেন যে, এই পাপ থেকে পরমকল্যাণ হবে এমন কথাও নয়, কেবল রাজ্যসুখের লোভে পড়ে আমরা কুলনাশ করতে উদ্যত হয়েছি, খুব ভুল করছি । কেবল আমিই ভুল করছি এমন কথা নয়, আপনিও ভুল করছেন । শ্রীকৃষ্ণের উপরও দোষারোপ করলেন । অবশেষে অর্জুন নির্ণয় করলেন—

যদি মামপ্রতীকারমশন্ত্রং শস্ত্রপাণয়ঃ ।

ধৰ্ত্তরাষ্ট্রা রণে হন্ত্যন্তে ক্ষেমতরং ভবেৎ ॥ ৪৬ ॥

প্রতিকাররহিত ও নিরস্ত্র আমাকে যদি শস্ত্রধারী ধৃতরাষ্ট্রপুত্রগণ যুদ্ধে বধও করেন, তাতে আমার জন্য অতি কল্যাণকর হবে । ইতিহাস তো বলবে যে অর্জুন জ্ঞানী ছিলেন, তাই আত্মবলি দিয়ে যুদ্ধ হতে দেননি । সন্তান-সন্ততির সুখের জন্য, কুলের জন্য লোকে প্রাণের আশ্রতি পর্যন্ত দেয় । বিদেশে গিয়ে বৈভবপূর্ণ প্রাসাদে থাকলেও অঙ্গদিনের মধ্যেই নিজের কুঁড়েঘরের কথা মনে পড়ে । মোহ এত প্রবল হয় । তাই অর্জুন বললেন যে, শস্ত্রধারী ধৃতরাষ্ট্রপুত্রগণ প্রতিকারে অনিচ্ছুক আমাকে যদি যুদ্ধে বধও করেন, তবু তা আমার জন্য অতি কল্যাণকর হবে, পরিবার তো সুখী থাকবে ।

## সংজ্ঞয় উবাচ

এবমুক্তাজুনঃ সঙ্গে রথোপস্থ উপাবিশৎ।

বিসৃজ্য সশরং চাপং শোকসংবিঘ্মানসঃ॥ ৪৭॥

সংজ্ঞয় বললেন—রণভূমিতে শোক-সন্তপ্ত অর্জুন এইরূপ বলে ধনুর্বাণ ত্যাগ করে রথের পশ্চাদভাগে বসে পড়লেন অর্থাৎ ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞের সংঘর্ষ থেকে সরে দাঁড়ালেন।

**নিষ্কর্ষ :**

গীতাশাস্ত্রে ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞের যুদ্ধের বর্ণনা করা হয়েছে। ঈশ্বরীয় বিভূতিসম্পন্ন ভগবৎ স্বরূপের সম্যক্ দর্শন করবার গায়ন হ'ল এই গীতাশাস্ত্র। যে ক্ষেত্রে এই গায়ন সম্পাদন করা হয়, সেই যুদ্ধক্ষেত্র এই ‘শরীর’। যার অন্তরালে দুটি প্রবৃত্তি বিরাজমান—‘ধর্মক্ষেত্র ও কুরক্ষেত্র’। যুদ্ধে প্রবৃত্ত সেনাসমূহের স্বরূপ ও তাদের শক্তির আধার বর্ণিত হয়েছে, শঙ্খধনির মাধ্যমে এদের পরাত্ম নির্ধারিত করা হয়েছে। তদন্তর যে সেনার সঙ্গে যুদ্ধ করার ছিল, তাদের নিরীক্ষণ করা হল। এদের গণনা আঠারো অক্ষোহিনী অর্থাৎ প্রায় সাড়ে ছয় আরব বলা হয়, কিন্তু এরা অনন্ত। এই প্রকৃতির দৃষ্টিকোণ দুটি—একটি ইষ্টেন্মুখী প্রবৃত্তি—‘দৈবী সম্পদ’, দ্বিতীয়টি বহিমুখী প্রবৃত্তি—‘আসুরী সম্পদ’। দুটিই প্রকৃতি। একটি ইষ্টের দিকে উন্মুখ করে, পরমধর্ম পরমাত্মার দিকে নিয়ে যায়, অন্যটি প্রকৃতিতে বিশ্বাস করায়। প্রথমে দৈবী সম্পদের বৃদ্ধি করে, আসুরী প্রবৃত্তিগুলিকে নিঃশেষ করা হয়, তারপর শাশ্বত সনাতন পররশ্মোর দিগন্দর্শন ও তাঁতে স্থিতি লাভের পর দৈবী প্রবৃত্তিগুলির প্রয়োজনীয়তাও ফুরিয়ে যায় এবং যুদ্ধের পরিণাম দৃষ্টিগোচর হয়।

সৈন্য নিরীক্ষণের সময় অর্জুন কেবল নিজের পরিবারকেই দেখতে পেয়েছিলেন। যাঁদের বধ করার কথা ছিল, তাঁরা স্বজনই ছিলেন। জীবের যতদূর পর্যন্ত সম্বন্ধ থাকে, জগতের বিস্তারও তারজন্য ততদূর পর্যন্তই। অনুরাগের আরভিক অবস্থায় পারিবারিক মোহই বাধা দেয়। সাধক যখন দেখেন পরিবারের মধ্যে সম্বন্ধ থেকে তাঁর এতদূর বিচ্ছেদ হবে, যেন তা কখনও ছিল না, তখন তিনি ব্যাকুল হন। স্বজনাসক্তি ত্যাগ করার পথে যতরকমের অকল্যাণই দেখতে পান তিনি কুপ্রথার মাধ্যমে নিজেকে বাঁচাবার চেষ্টা করেন, ঠিক যেমন অর্জুন করেছিলেন। তিনি

বলেছিলেন—“কুলধর্মই সনাতন ধর্ম। এই যুদ্ধ হলে সনাতন ধর্ম লোপ পাবে। কুলস্ত্রীগণ ভষ্টা হবে এবং বর্ণসঙ্কর উৎপন্ন হবে। তাদের জন্ম কুল ও কুলনাশকদের অনন্তকালপর্যন্ত নরকে বাস করার জন্যই হয়ে থাকে।” অর্জুন নিজবুদ্ধি অনুসারে সনাতন ধর্মের রক্ষার জন্য ব্যাকুল ছিলেন। তিনি শ্রীকৃষ্ণকে অনুরোধ করলেন যে আমরা বুদ্ধিমান হয়ে এই মহাপাপ কেন করব? অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণও পাপ করতে যাচ্ছেন। অবশ্যে পাপ থেকে বাঁচবার জন্য “আমি যুদ্ধ করব না”—এই কথা বলে অর্জুন ধনুর্বাণ ত্যাগ করে হতাশ হয়ে রथের পশ্চাদভাগে বসে পড়লেন; ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞের সংঘর্ষ থেকে সরে দাঁড়ালেন।

টাকাকারগণ বর্তমান অধ্যায়ের নামকরণ ‘অর্জুন বিষাদযোগ’ করেছেন। অর্জুন অনুরাগের প্রতীক। সনাতন ধর্মের জন্য ব্যাকুল অনুরাগীর বিষাদ যোগই কারণ হয়। এই বিষাদ মনুর হয়েছিল—‘হৃদয় বহুত দুঃখ লাগ, জনম গয়ড় হরি ভগতি বিনু।’ (রাম. ১/১৪২) সংশয়ে পড়েই মানুষ বিষাদ করে। অর্জুনের সন্দেহ হয়েছিল যে, বর্ণসঙ্কর উৎপন্ন হবে, যারা নরকে নিয়ে যাবে। সনাতন ধর্মলোপ পাবে এই বিষাদও তাঁর হয়েছিল। অতএব ‘সংশয়-বিষাদ যোগ’ এর সামান্য নামকরণ বর্তমান অধ্যায়ের জন্য উপযুক্ত বলে মনে হয়। অতঃ—

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসুপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়ঃ যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণার্জুন সংবাদে ‘সংশয়বিষাদযোগো’ নাম প্রথমোহধ্যায়ঃ ॥ ১ ॥

এই প্রকার শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারপী উপনিষদ্ এবং ব্রহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ এবং অর্জুনের সংবাদে ‘সংশয়-বিষাদ যোগ’ নামক প্রথম অধ্যায় পূর্ণ হল।

ইতি শ্রীমৎ পরমহংসপরমানন্দস্য শিষ্যস্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ ‘যথার্থ গীতা’ ভাষ্যে ‘সংশয়বিষাদযোগো’ নাম প্রথমোহধ্যায়ঃ ॥ ১ ॥

এই প্রকার শ্রীমৎ পরমহংস পরমানন্দজীর শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত ‘শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা’র ভাষ্য ‘যথার্থ গীতা’তে ‘সংশয়-বিষাদ যোগ’ নামক প্রথম অধ্যায় সমাপ্ত হল।

॥ হরিঃ ওঁ তৎসৎ ॥

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মনে নমঃ ।।

## ।। অথ দ্বিতীয়োহধ্যাযঃ ।।

প্রথম অধ্যায় গীতার প্রবেশিকা মাত্র, সাধনারস্তে পথিকের যেগুলি সমস্যা বলে বোধ হয় তাতে সেগুলির বিবরণ দেওয়া হয়েছে। সম্পূর্ণ কৌরব-পাণ্ডব যুদ্ধের জন্য প্রস্তুত ছিলেন; কিন্তু এখানে সংশয়ের পাত্র কেবল অর্জুন। অনুরাগই অর্জুন। ইষ্টের প্রতি অনুরাগই পথিককে ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞের সংবর্ষের জন্য প্রেরণা প্রদান করে। অনুরাগ আরম্ভিক স্তর। পুজ্য মহারাজজী বলতেন—“সদগৃহস্থ আশ্রমে থেকেও যদি অনুরাগায় থানি বোধ, অশ্রংগাত হয়, কঠ অবরুদ্ধ হয়ে আসে, তবে জানবে যে এই স্থান থেকেই ভজনা আরম্ভ হল।” অনুরাগের মধ্যেই সবকিছু এসে যায়। এরই মধ্যে সকল ধর্ম, নিয়ম, সংসঙ্গ, ভাব সবকিছু বিদ্যমান।

অনুরাগের প্রথম পর্বে পারিবারিক মোহ বাধক হয়। প্রথমে সকলেই চান যে আমিও পরমসত্য লাভ করি, কিন্তু এই পথে এগিয়ে যাওয়ার পর বুঝতে পারেন যে এই মধুর পারিবারিক সম্বন্ধ উচ্ছেদ করতে হবে, তখন হতাশ হয়ে পড়েন। সমাজে প্রচলিত যা কিছু ধর্ম-কর্ম বলে মেনে চলতেন, তাতেই সন্তুষ্ট হন। নিজের মোহের পুষ্টির জন্য তিনি প্রচলিত কুরীতির প্রমাণও প্রস্তুত করেন, যেমন অর্জুন বললেন যে কুলধর্ম সনাতন, যুদ্ধে সনাতন ধর্ম লোপ পাবে, কুলক্ষয় হবে, স্বেচ্ছাচার বৃদ্ধি পাবে। এই বক্তব্য অর্জুনের ছিল না, বরং সদগৃহস্থ সান্নিধ্যে আসার পূর্বে যে কুরীতি মেনে চলতেন শুধু তাই ছিল।

এইসব কুপথায় জড়িত মানুষ পৃথক পৃথক ধর্ম, বিভিন্ন সম্প্রদায়, ছেট-বড় দল এবং অসংখ্য জাতির সৃষ্টি করেছে। কেউ নাক চেপে ধরে, কেউ বা কানের লতি চিরে নেয়। আবার কাউকে ছুঁলে জাত যায়, কোথাও রুটি-জলে ধর্ম নষ্ট হয়। তবে কি অস্পৃশ্য অথবা স্পর্শকারীর দোষ? কখনই না, দোষ আমাদের সমাজের অমদাতাদের। ধর্মের নামে আমরা কুরীতির শিকার হয়েছি, কাজেই দোষ আমাদের।

মহাত্মা বুদ্ধের সময় কেশ-কস্তুর নামে এক সম্প্রদায় ছিল। সেই সম্প্রদায়ের লোকেরা কেশ বড় করে কস্তুরের মত প্রয়োগ করাকেই পূর্ণতার মানদণ্ড বলে মনে করত। কেউ গোরতিক (গাভীর মত পশুবৎ জীবনযাপন করত) ছিল, কেউ কুকুরব্রতিক (কুকুরের মত খাওয়া-দাওয়া, থাকা) ছিল। ব্রহ্মবিদ্যার সঙ্গে এই সকলের কোন সম্বন্ধ নেই। এই সম্প্রদায় এবং সমাজে প্রচলিত কুপ্রথা পূর্বেও ছিল, আজও আছে। ঠিক এই প্রকার শ্রীকৃষ্ণের সময়ও বিভিন্ন সম্প্রদায় এবং কুরীতি প্রচলিত ছিল। যার মধ্যে দু একটি কুরীতির শিকার অর্জুনও হয়েছিলেন। তিনি চারটি তর্ক প্রস্তুত করলেন—(১) এই যুদ্ধে সনাতন ধর্ম নষ্ট হবে, (২) বর্ণসংক্র উৎপন্ন হবে, (৩) পিণ্ডোদক ক্রিয়া লোপ পাবে এবং (৪) আমরা কুলক্ষয়ে যে মহাপাপ হয়, সেই পাপ করবার জন্য উদ্যত হয়েছি। এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন—

### সংজ্ঞয় উবাচ

তৎ তথা কৃপযাবিষ্টমশ্রীপূর্ণাকুলেক্ষণম্।

বিষীদন্তমিদং বাক্যমুবাচ মধুসূদনঃ ॥ ১ ॥

করণাব্যাপ্ত, অশ্রীপূর্ণ ব্যাকুল নেত্রযুক্ত অর্জুনকে ভগবান মধুসূদন (মদ-বিনাশক ভগবান) এই কথা বললেন—

### শ্রীভগবানুবাচ

কুতস্ত্বা কশ্মালমিদং বিষমে সমুপস্থিতম্।

অনার্জুষ্টমস্বর্গ্যমকীর্তিকরমর্জুন ॥ ২ ॥

অর্জুন ! এই বিষমস্থলে তোমার এই অজ্ঞান কেখেকে এল ? বিষমস্থল অর্থাৎ সৃষ্টিতে যার সমতার স্থান কোন নেই, পারলোকিক যার লক্ষ্য, সেই নির্বিবাদ স্থলে কোন কারণে তোমার অজ্ঞান উৎপন্ন হল ? এই অজ্ঞান কেন ? অর্জুন তো সনাতন ধর্মের রক্ষার জন্যই এখানে দৃঢ়প্রতিজ্ঞ। সনাতন ধর্মের রক্ষার জন্য প্রাণপণে তৎপর হওয়া কি অজ্ঞান ? শ্রীকৃষ্ণ বললেন—হ্যাঁ, এটা অজ্ঞান। তাঁনা হলে অতীতে কোন না কোন শ্রেষ্ঠ মনীষী অবশ্যই এর আচরণ করতেন। তাই এই কর্ম স্বর্গও দিতে পারে না, কীর্তিও বৃদ্ধি করতে অসমর্থ। যিনি সৎপথে চলেন, তিনিই আর্য। গীতা

আর্য-সংহিতা পরিবারের জন্য নষ্ট হওয়া যদি অজ্ঞানতা না হত, তবে মহাপুরুষগণ অবশ্যই সেই পথে অনুগমন করতেন। যদি কুলধর্মই সত্য হত, তাহলে স্বর্গ ও কল্যাণের শ্রেণীভাগ অবশ্যই হত। এটা কীর্তিদায়কও নয়। মীরা ভজন করতে শুরু করলেন তখন ‘লোগ কহে মীরা ভই বাওরী, সাস কহে কুলনাশী রে।’ কিন্তু যে পরিবার কুল ও মর্যাদার রক্ষার জন্য মীরার শাশুড়ী বিলাপ করছিলেন, আজ সেই কুলবতী শাশুড়ীকে কেউ জানে না, মীরাকে বিশ্ব জানে। ঠিক তেমনিই যারা পরিবারের জন্য ব্যতিব্যস্ত, তাদেরও কীর্তি কতদিনের জন্য স্থায়ী? যেখানে কীর্তি নেই, কল্যাণ নেই এবং শ্রেষ্ঠ পুরুষগণ যার আচরণ করেননি, তবেই একথা প্রমাণিত হল যে তা অজ্ঞান। অতএব—

ক্লৈব্যং মা স্ম গমঃ পার্থ নৈতত্ত্বযুপপদ্যতে।

ক্ষুদ্রং হাদয়দৌর্বল্যং ত্যঙ্গেত্তিষ্ঠ পরস্তপ।। ৩।।

হে অর্জুন! ক্লৈবভাব আশ্রয় করো না। তাহলে কি অর্জুন নপুংসক ছিলেন? আপনি কি পুরুষ? যে পৌরুষইন সেই নপুংসক। সকলেই নিজ নিজ বুদ্ধি অনুসারে পুরুষার্থ করে। কৃষক রাত-দিন মাথার ঘাম পায়ে ফেলে খেত-এ পুরুষার্থ করে। কেউ ব্যবসা বাণিজ্যকে পুরুষার্থ বলে মনে করে, কেউ পদের অপব্যবহার করে পুরুষার্থী হয়। সারাজীবন পুরুষার্থ করেও অবশ্যে শুধু হাতে যেতে হয়। তাহলে এই কথা স্পষ্ট হল যে এই কার্যগুলি পুরুষার্থ নয়। শুন্দ পুরুষার্থ ‘আত্মদর্শন’। গাগী যাওবন্ধ্যকে বলেছিলেন—

নপুংসক পুমান् জ্ঞেয়ো যো ন বেতি হাদি স্থিতম্।

পুরুষং স্বপ্রকাশং তস্মানন্দাত্মানমব্যয়ম।। (আত্মপুরাণ)

‘সেই ব্যক্তি পুরুষ হয়েও নপুংসক, যে হাদয়স্ত আত্মাকে জানে না। সেই আত্মাই পুরুষস্বরূপ, স্বয়ংপ্রকাশ, উন্নত আনন্দময় এবং অব্যক্ত। সেই আত্মাকে জানার প্রয়াসই পৌরুষ।’ তাই হে অর্জুন! তুমি ক্লৈবভাব আশ্রয় করো না। এইরূপ ভাব তোমার শোভা পায় না। হে পরস্তপ! হাদয়ের এই তুচ্ছ দুর্বলতা ত্যাগ করে যুদ্ধের জন্য প্রস্তুত হও। আসক্তি ত্যাগ কর। এটা হাদয়ের দুর্বলতা। তখন অর্জুন তৃতীয় প্রশ্ন করলেন—

## অর্জুন উবাচ

কথং ভীষমহং সঙ্গে দ্রোণং চ মধুসূদন।

ইযুভিঃ প্রতি যোৎস্যামি পূজার্হবরিসূদন॥ ৪॥

অহঙ্কার শমনকারী মধুসূদন ! আমি রণভূমিতে পিতামহ ভীষ্ম ও আচার্য দ্রোণের সঙ্গে বাণের দ্বারা কিরণপে যুদ্ধ করব ? কারণ হে অরিসূদন ! এঁরা দুইজনেই পূজনীয় ।

দৈতহ দ্রোণ । প্রভু ভিন্ন, আমি ভিন্ন—দ্বৈতের এই বোধই প্রাপ্তির প্রেরণার আরম্ভিক স্রোত । এটাই দ্রোণাচার্যের গুরুত্ব । অমই ভীষ্ম । যতক্ষণ ভ্রম বিদ্যমান, ততক্ষণ সন্তান, পরিবার, আত্মীয় সকলেই নিজের বলে মনে হয় । ভ্রমের জন্যই নিজের বলে বোধ হয় । আত্মা এঁদেরই পূজ্য বলে মনে করে, এঁদের সঙ্গে থাকে যে ইনি পিতা, ইনি ঠাকুরদা, কুলগুরু ইত্যাদি । সাধনা যখন সম্পূর্ণ হয়, তখন ‘গুরু’ ন চেলা পুরুষ অকেলা’ ।

ন বন্ধুর্ন মিত্রং গুরুর্নেব শিষ্যঃ।

চিদানন্দরূপং শিবোহহং শিবোহহম্॥। (আত্মষটক, ৫)

যখন চিত্ত পরম আনন্দে বিলীন হয়, তখন গুরু জ্ঞানাদাতা থাকেন না ও শিষ্যও গ্রহণকর্ত্তারপে থাকে না । এটাই পরমস্থিতি । গুরুর গুরুত্ব লাভ করার পর গুরু শিষ্য একাকার হয়ে যান । শ্রীকৃষ্ণ বললেন—‘অর্জুন ! তুমি আমাতে নিবাস করবে ।’ এখানে যেরূপ শ্রীকৃষ্ণের, পরে সেইরূপই লাভ করবেন অর্জুন এবং ঠিক তেমনিই স্থিতিপ্রাপ্ত মহাপুরুষগণ হন । এরূপ অবস্থাতে গুরুর গুরুত্ব বিলীন হয়ে যায়, ও সেই গুরুত্ব শিষ্যের হাদয়ে সম্ভগ্র হয় । অর্জুন গুরুপদের দোহাই দিয়ে এই সংবর্ষ এড়িয়ে যেতে চাইছেন । তিনি বলছেন—

গুরুনহস্তা হি মহানুভাবান्

শ্রেয়ো ভোক্তুং বৈক্ষ্যমপীহ লোকে।

হস্তার্থকামাংস্ত গুরুনিহেব

ভুঞ্জীয় ভোগান् রূধিরপ্রদিঙ্কান्॥ ৫॥

এই মহানুভব গুরুজনদের বধ না করে ইহজগতে ভিক্ষান্ন গ্রহণ করলেও আমার কল্যাণ হবে বলে মনে করি। এখানে ভিক্ষার অর্থ ভরণ-পোষণের জন্য ভিক্ষা করা নয়; বরং সৎপুরুষের যথাসাধ্য সেবা করে, তাঁর কাছ থেকে কল্যাণের প্রার্থনা করাই ভিক্ষা। ‘অন্নং ব্ৰহ্মেতি ব্যজানাত্ম।’ (তৈত্রীয় উপ. ২/১) অন্নই একমাত্র পরমাত্মা, যা গ্রহণ করে আত্মা সর্বদার জন্য তৃপ্ত হয়ে যায়, আর কখনও অতৃপ্ত হয় না। আমরা মহাপুরুষের সেবা ও যাচনাদ্বারা ধীরে ধীরে ব্ৰহ্মপীযুষ পান করতে চাই, কিন্তু এই পরিবার যাতে ত্যাগ করতে না হয়, এখানে এই ছিল অর্জুনের ভিক্ষান্নের কামনা। সংসারের অধিকাংশ লোকে এই রকমই করে। তারা চায় যে, পারিবারিক স্নেহসমৰ্পণ অটুট থাকুক ও মুক্তির পথে ধীরে প্রশস্ত হতে থাক। সাধনা পথের পথিক যিনি, যাঁর সংস্কার এদের চেয়ে উন্নত, যাঁর মধ্যে সংঘর্ষ করার ক্ষমতা আছে, স্বভাবে ক্ষত্ৰিয়ত্ব বিৱাজিত, তাঁর জন্য এই ভিক্ষান্নের বিধান নেই। নিজের ক্ষমতা অনুসারে কিছু না করে, যাচনা করাই ভিক্ষা। গৌতম বুদ্ধ তাঁর মঞ্চিম নিকায়ের ধন্মদ্বায়াদ সূত্র (১/১/৩) এতে এই ভিক্ষান্নকে আমিষ দায়াদ বলে হেয় করেছেন। যদিও জীবন্যাপন তাঁরা ভিক্ষুর মতই করতেন।

এই গুরুজনদের বধ করে কি লাভ হবে? এই লোকে রূধিরাক্ত অর্থ ও কামনার জন্য যে ভোগ, সেই ভোগের বাসনাই পূরণ হবে। অর্জুন ভোবেছিলেন ভজন করলে ভৌতিক সুখের মাত্রা বৃদ্ধি পাবে। এরূপ কঠিন সংঘর্ষ করার পরও শরীরের পোষক অর্থ ও কামনার যে সমস্ত বস্তু-সামগ্ৰী সেগুলিই তো ভোগ করার জন্য লাভ হবে। পুনৰায় তিনি তর্কের অবতারণা করলেন—

ন চৈতদ্বিদ্যঃ কতৰং গৱীয়ো

যদা জয়েম যদি বা নো জয়েয়ুঃ।

যানেব হত্তা ন জিজীবিষাম-

স্তেহবস্তিতাঃ প্রমুখে ধার্তরাষ্ট্রাঃ। ৬।।

এও নিশ্চিত নয় যে সেই ভোগলাভ হবেই। এও জানি না যে আমার পক্ষে কোনটি শ্ৰেয়স্কৰ; কাৰণ এপৰ্যন্ত আমি যা কিছু বলেছি সে সমস্ত অজ্ঞান বলে প্ৰমাণিত হয়েছে। এও জানি না যে আমরা জয়লাভ কৰিব অথবা তাৰা কৰিবে? তাদের বধ করে আমি বেঁচে থাকতে চাই না, সেই ধৃতৰাষ্ট্ৰপুত্ৰগণ আমার সম্মুখে

দণ্ডয়মান। অজ্ঞানরূপ ধৃতরাষ্ট্র থেকে উৎপন্ন মোহ ইত্যাদি স্বজন সমুদায় ধ্বংসই যখন হয়ে যাবে, তখন আমি বৈচেই বা কি করব? অর্জুন পুনরায় ভেবে দেখলেন যে, যা কিছু তিনি বলছেন হতে পারে তাও অজ্ঞান, তাই তিনি প্রার্থনা করলেন—

**কার্পণ্যদোষোপহতস্বভাবঃ**

**পৃচ্ছামি ত্বাং ধর্মসম্মুচ্চেতাঃ।**

**যচ্ছ্রয়ঃ স্যান্নিষিতং ক্রাহি তমে**

**শিষ্যস্তেহহং শাধি মাং ত্বাং প্রপন্নম্॥ ৭।।**

কাপুরূষতা দোষে স্বভাব অভিভূত হয়েছে ও ধর্মবিষয়ে আমার চিন্ত বিমৃঢ় হয়েছে। আমি আপনার কাছে প্রার্থনা করছি, আমার পক্ষে যা কল্যাণকর তা নিশ্চয়পূর্বক বলুন। কারণ আমি আপনার শিষ্য, আপনার শরণাগত, আমার মঙ্গল করুন। শুধু শিক্ষা নয়, পথভাস্ত হলে রক্ষা করুন। “লাদ দে লদায় দে, অওর লদানেওয়ালা সাথ চলে—কখনও বোঝা পড়ে গেলে, তা ওঠাবে কে।” অর্জুনের সমর্পণ এই ধরণের ছিল।

এখানে অর্জুন পূর্ণ সমর্পণ করে দিলেন। এপর্যন্ত তিনি নিজেকে শ্রীকৃষ্ণের স্তরেরই মনে করেছিলেন, কিছু কিছু বিদ্যাতে নিজেকে শ্রেষ্ঠই ভেবেছিলেন। এখানে তিনি নিজের নিয়ন্ত্রণের দায়িত্ব শ্রীকৃষ্ণের হাতেই তুলে দিলেন। সদ্গুরু সাধনের শেষ অবস্থা পর্যন্ত হৃদয়ে স্থিত থেকে সাধকের সঙ্গে সঙ্গে চলেন। যদি তিনি সঙ্গে না থাকেন, তবে সাধকের পক্ষে সাফল্য লাভ করা অসম্ভব। পিতা-মাতা যেমন কন্যার বিবাহ না হওয়া পর্যন্ত তাকে সংযমের শিক্ষা দিয়ে তার সংরক্ষণ করেন, তদ্বপ সদ্গুরু নিজের শিষ্যকে অস্তরাত্মা থেকে সারথী হয়ে, প্রকৃতির কবল থেকে মুক্ত করে দেন। এখানে অর্জুন নিবেদন করলেন যে ভগবন্ত! আর একটা কথা—

**ন হি প্রপশ্য্যামি মমাপনুদ্যাদ-**

**যচ্ছাকমুচ্ছাষণমিত্রিয়াগাম।**

**অবাপ্য ভূমাবসপ্তম্যন্দঃ**

**রাজ্যং সুরাগামপি চাধিপত্যম্॥ ৮।।**

পৃথিবীতে নিষ্কটক ধনধান্যসম্পদ রাজ্য এবং দেবতাগণের অধিপতি ইন্দ্রপদ লাভ হলেও আমার ইন্দ্রিয়বর্গের সন্তাপক শোক নিবারণ করতে পারে এমন কোনও উপায় দেখছি না। যখন শোক বিদ্যমান, তখন এই সমস্ত সম্পদ নিয়ে আমি কি করব? যদি এই মাত্র লাভ হবে, তবে ক্ষমা করুন। অর্জুন চিন্তা করলেন যে এর থেকে বেশী বলবেনই বা কি?

### সঞ্জয় উবাচ

এবমুক্তা হষ্টীকেশং গুভাকেশঃ পরস্তপ।

ন যোৎস্য ইতি গোবিন্দমুক্তা তৃষ্ণীং বভুব হ।। ৯।।

সঞ্জয় বললেন— হে রাজন्! মোহনিদ্রাজয়ী অর্জুন হাদয়ের সর্বজ্ঞ শ্রীকৃষ্ণকে এইরূপ বলবার পর ‘আমি যুদ্ধ করব না’ বলে নীরব হলেন। এপর্যন্ত অর্জুনের দৃষ্টি পৌরাণিকই ছিল, যাতে কর্মকাণ্ড সমাপনের পর ভোগোপলক্ষির বিধান বিদ্যমান, যেখানে স্বর্গকেই সবকিছু বলে স্থীকার করা হয়েছে—যার উপর শ্রীকৃষ্ণ আলোকপাত করবেন যে, এ বিচারধারাও ভুল।

তমুবাচ হষ্টীকেশঃ প্রহসন্নিব ভারত।

সেনমোরুভয়োর্মধ্যে বিষীদন্তমিদং বচঃ।। ১০।।

তদন্তর হে রাজন্! অস্ত্যামী যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ উভয় সেনাদলের মধ্যে শোকাতুর অর্জুনকে হেসে এই কথা বললেন—

### শ্রীভগবানুবাচ

অশোচ্যানন্দশোচস্ত্রং প্রজ্জবাদাংশ্চ ভাষমে।

গতাসুনগতাসুংশ্চ নানুশোচন্তি পশ্চিতাঃ।। ১১।।

অর্জুন! যাদের জন্য শোক করা উচিত নয় তাদের জন্য তুমি শোক করছ, এবং পশ্চিতের মত কথা বলছ; কিন্তু বুদ্ধিসম্পন্ন পশ্চিতগণ মৃত বা জীবিত কা'রও জন্য শোক করেন না, কারণ তাদেরও একদিন মৃত্যু হবে। তুমি কেবল পশ্চিতদের মত কথাই বল, বস্তুতঃ জাতা নও, কেননা—

ন ত্বেবাহং জাতু নাসং ন ত্বং নেমে জনাধিপাঃ।

ন চৈব ন ভবিষ্যামঃ সর্বে বয়মতঃ পরম।। ১২।।

একথাও নয় যে আমি অর্থাৎ সদ্গুরু কোনও কালে ছিলাম না এমন নয়, তুমি অর্থাৎ অনুরাগী অধিকারী কখনও ছিলে না তাও নয়, বা ‘জ্ঞানাধিপাঃ’— এই রাজাগণ অর্থাৎ রাজসিক বৃত্তিতে যে অহংকার পাওয়া যায়, তা ছিল না, এবং একথাও নয় যে ভবিষ্যতে আমরা কেউ থাকব না। সদ্গুরু সর্বদাই থাকেন ও অনুরাগীও সর্বদা থাকে। এখানে যোগেশ্বর যোগের অনন্ততার উপর আলোকপাত করে ভবিষ্যতেও এর বিদ্যমানতার উপর জোর দিলেন। মরণধর্মাদের জন্য শোক না করার কারণ দেখিয়ে আরও বললেন—

দেহিনোহস্মিন্যথা দেহে কৌমারং যৌবনং জরাঃ।

তথা দেহান্তরপ্রাপ্তির্ধীরস্তত্ব ন মুহ্যতি। ১৩॥

যেমন জীবাত্মার এই দেহে কৌমার, যৌবন ও বৃদ্ধাবস্থা ক্রমে উপস্থিত হয়, তেমনি দেহান্তর প্রাপ্তিতে ধীর পুরুষ মুঞ্চ হন না। কখনও আপনি বালক ছিলেন, ক্রমে যুবক হলেন; কিন্তু এর জন্য আপনার মৃত্যু তো হয়নি? আবার একদিন বৃদ্ধ হলেন। পুরুষ একটাই, তেমনি নতুন দেহ প্রাপ্তিতে কোন বাধা নেই। দেহের এই পরিবর্তন ততক্ষণ চলে, যতক্ষণ এই পরিবর্তনের অতীত কোন বস্তুলাভ না হয়।

মাত্রাস্পর্শাস্ত্ব কৌন্তেয় শীতোষ্ণসুখদুঃখদাঃ।

আগমাপায়িনোহনিত্যাস্তাংস্তিতিক্ষস্ব ভারত। ১৪॥

হে কৃষ্ণপুত্র! সুখ-দুঃখ, শীত-উষ্ণ ইন্দ্রিয়ের সঙ্গে বিষয়ের সংযোগ হেতু অনুভূত হয়, তাই ক্ষণভঙ্গুর ও অনিত্য। অতএব হে ভরতবংশীয় অর্জুন! তুমি এদের ত্যাগ কর।

অর্জুন ইন্দ্রিয় ও বিষয়ের সংযোগজনিত সুখের স্মরণ করেই ব্যাকুল হচ্ছিলেন। কুলধর্ম, কুলগুরুর পূজ্যতা ইত্যাদি ইন্দ্রিয়সমূহের সঙ্গে সম্পর্কযুক্ত ও এর অন্তর্গত। এসমস্তই ক্ষণিক, মিথ্যা ও নাশবান্ত। বিষয়ের সংযোগ সর্বদা পাওয়া যায় না ও ইন্দ্রিয়ের ক্ষমতাও সর্বদা একরকম থাকে না। অতএব অর্জুন! তুমি এদের পরিত্যাগ কর ও অপ্রতিকারপূর্বক সহ্য কর। কেন? সেই যুদ্ধ স্থল কি হিমালয়ের ঠাণ্ডা প্রদেশে ছিল, যার জন্য অর্জুনকে ঠাণ্ডা সহ্য করতে হবে? অথবা মরণভূমির গ্রীষ্মপ্রধান অঞ্চল ছিল, যার জন্য গরম সহ্য করতে হবে? কুরুক্ষেত্রকে লোকে

সমশীতোষ্ণ অঞ্চল বলে। মাত্র আঁঠারো দিন যুদ্ধ হয়েছিল, এরই মধ্যে শীত-গ্রীষ্ম পার হয়ে গিয়েছিল? বস্তুতঃ শীত-গ্রীষ্ম, সুখ-দুঃখ ও মান-অপমান সহ্য করা একজন যোগীর উপর নির্ভর করে। এটা হৃদয়-ক্ষেত্রের যুদ্ধের বর্ণনা, বহিংগতের যুদ্ধের সম্বন্ধে গীতা বলেনি। গীতাশাস্ত্রে ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞের সংঘর্ষের বর্ণনা করা হয়েছে, যাতে আসুরী প্রবৃত্তিগুলিকে শাস্ত করে পরমাত্মায় স্থিতি প্রদান করে দৈবী সম্পদও শাস্ত হয়ে যায়। যখন কোন বিকার থাকে না, তখন সজাতীয় প্রবৃত্তিসমূহ কার উপর আক্রমণ করবে? অতএব স্থিতি লাভের সঙ্গে তারাও শাস্ত হয়ে যায়, এর পূর্বে নয়। গীতাতে অন্তর্দেশের যুদ্ধের বর্ণনা করা হয়েছে। এই ত্যাগে কি লাভ? এই প্রসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ বললেন—

যৎ হি ন ব্যথয়স্ত্যেতে পুরুষং পুরুষর্ভত ।

সমদুঃখসুখং ধীরং সোহৃতত্ত্বায় কল্পাতে ॥ ১৫ ॥

কারণ, হে পুরুষশ্রেষ্ঠ! সুখ-দুঃখে অবিচলিত সেই ধীর পুরুষকে ইন্দ্রিয়সমূহ ও বিষয়গুলির সংযোগ ব্যথিত করতে পারে না, তিনিই মৃত্যুর অতীত অমৃত-তত্ত্বলাভের প্রকৃত অধিকারী। এখানে শ্রীকৃষ্ণ একটি উপলক্ষ ‘অমৃত’-এর নাম উল্লেখ করলেন। অর্জুন ভেবেছিলেন যুদ্ধের পরিণামে স্বর্গ অথবা পৃথিবী লাভ হবে; কিন্তু শ্রীকৃষ্ণ বললেন—না স্বর্গলাভ হবে না পৃথিবী, বরং অমৃতলাভ হবে। অমৃত কি?—

নাসতো বিদ্যতে ভাবো নাভাবো বিদ্যতে সতঃ ।

উভয়োরপি দৃষ্টেহস্তস্তনয়োস্তত্ত্বদশিভিঃ ॥ ১৬ ॥

হে অর্জুন! অসৎ বস্তুর অস্তিত্ব নেই, সেইজন্য ধরে রাখা যেতে পারে না এবং সত্যের তিনিকালে অভাব নেই, তা নষ্ট করা যেতে পারে না। অর্জুন জিজ্ঞাসা করলেন— আপনি ভগবান তাই কি একথা বলছেন? শ্রীকৃষ্ণ বললেন—আমি তো বলছিই, উভয়ের পার্থক্য আমার সাথে সাথে অন্যান্য তত্ত্বদর্শীগণও জানেন। যে সত্য তত্ত্বদর্শীগণ জেনেছেন, সেই সত্যই শ্রীকৃষ্ণও পুনরাবৃত্তি করলেন। শ্রীকৃষ্ণ তত্ত্বদর্শী মহাপুরুষ ছিলেন। পরমতত্ত্ব পরমাত্মার প্রত্যক্ষ দর্শন যিনি করেন এবং তাঁতে স্থিতিলাভ করেন, তাঁকেই তত্ত্বদর্শী বলে। সৎ ও অসৎ কাকে বলে? এ বিষয়ে বলা হয়েছে—

অবিনাশি তু তদ্বিদি যেন সবমিদং ততম্।

বিনাশমব্যয়স্যাস্য ন কশিঃকর্তৃমহতি ॥ ১৭ ॥

যিনি এই সমগ্র জগৎ পরিব্যাপ্ত করে আছেন, তিনিই অবিনাশী। এই ‘অব্যয়স্য’-অবিনাশীর বিনাশ করতে কেউই সমর্থ হয় না; কিন্তু এই অবিনাশী অমৃতের নাম কি? তিনি কে?—

অন্তবন্ত ইমে দেহা নিত্যস্যোক্তাঃ শরীরিগঃ।

অনাশিনোহপ্রমেয়স্য তস্মাদুধ্যম্ব ভারত ॥ ১৮ ॥

অবিনাশী, অপ্রমেয় ও নিত্যস্বরূপ আত্মার এই সকল দেহ নশ্বর বলে উক্ত হয়েছে। অতএব হে ভরতবংশীয় অর্জুন! তুমি যুদ্ধ কর। আত্মাই অমৃত। আত্মাই অবিনাশী, যার তিনিকালে বিনাশ নেই। আত্মাই সৎ। দেহ নাশবান, তাই তা অসৎ; ত্রিকালে যার অস্তিত্ব নেই।

‘দেহ নশ্বর তাই তুমি যুদ্ধ কর’—এই আদেশে একথা স্পষ্ট হয় না যে, অর্জুন কেবল কৌরবদেরই নিহত করবেন। পাণ্ডব পক্ষেও তো দেহের উপস্থিতিই ছিল, পাণ্ডবগণের দেহ কি অবিনাশী ছিল? যদি দেহ নাশবান, তবে শ্রীকৃষ্ণ কার রক্ষার জন্য দাঁড়িয়ে ছিলেন? তবে কি অর্জুন কোন দেহধারী ছিলেন? দেহ যা অসৎ, যার কোন অস্তিত্ব নাই, যাকে ধরে রাখা যায় না, শ্রীকৃষ্ণ কি সেই দেহকে বাঁচিয়ে রাখার জন্য রক্ষাকর্তা হয়েছিলেন? যদি এমনই হয়েছিল, তাহলে তিনিও অবিবেকী ও মৃত, কারণ এরপর তিনি নিজেই বলেছেন যে, যারা কেবল আহারের জন্যই জীবন ধারণ, পরিশ্রম করে (৩/১৩) তারা অবিবেকী ও মৃত। এইরপ পাপী পুরুষের বেঁচে থাকাটাই ব্যর্থ। তাহলে অর্জুন কে ছিলেন?

বন্ততঃ অনুরাগই অর্জুন। অনুরাগীর জন্য ইষ্ট সবদ্বা সারথী হয়ে সঙ্গে থাকেন। বন্ধুর মত পথ দেখান। আপনি দেহ নন। দেহটা আবরণ মাত্র, বাসস্থান। অনুরাগপূর্ণ আত্মাই এতে বাস করেন। ভৌতিক যুদ্ধে, হত্যাকাণ্ডে শরীরান্ত হয় না। এই দেহ ত্যাগ করলে আত্মা অন্য দেহ ধারণ করে নেবে। এই বিষয়ে শ্রীকৃষ্ণ পুর্বেই বলেছেন যে, যেভাবে বাল্যকাল থেকে যুবা বা বৃদ্ধাবস্থা আসে, ঠিক সেইভাবেই দেহান্তর ঘটে। শরীর বধ করলে জীবাত্মা নতুন বন্ত পরিবর্তন করে নেবে।

দেহ সংস্কারের উপর আশ্রিত ও সংস্কার মনের উপর আধারিত। ‘মন এবং মনুষ্যাণাং কারণং বন্ধমোক্ষয়োঃ।’ (পঞ্চদশী, ৫/৬০) এই মনকে শান্ত রাখা, অচল স্থির অবস্থান করা এবং অস্তিম সংস্কারের বিলয় হওয়া একই ত্রিয়া। সংস্কারের শর নিঃশেষ হওয়াই শরীরের অস্ত বা শেষ। এর বিলয়ের জন্য আপনাকে আরাধনা করতে হবে, যাকে শ্রীকৃষ্ণ কর্ম অথবা নিষ্ঠাম কর্মযোগের নাম দিয়েছেন। শ্রীকৃষ্ণ স্থানে স্থানে অর্জুনকে যুদ্ধের জন্য প্রেরণা দিয়েছেন; কিন্তু এর একটা শ্লোকও জাগতিক যুদ্ধ অথবা হত্যাকাণ্ডের সমর্থন করে না। এই যুদ্ধ সজাতীয়-বিজাতীয় প্রবৃত্তিগুলির যুদ্ধ, যা অস্তর্দেশে ঘটে থাকে।

য এনং বেত্তি হস্তারং যষ্টেনং মন্যতে হতম্।

উভো তো ন বিজানীতো নাযং হস্তি ন হন্যতে॥ ১৯॥

যিনি এই আত্মাকে হস্তা বলে মনে করেন এবং যিনি এই আত্মাকে মৃত বলে মনে করেন, তাঁরা উভয়েই আত্মাকে জানেন না; কারণ এই আত্মা কাউকে হত্যা করেন না এবং কারও দ্বারা নিহতও হন না। পুনরায় এই বিষয়ের উপর জোর দিলেন—

ন জায়তে শ্রিয়তে বা কদাচি-

নাযং ভৃত্বা ভবিতা বা ন ভূয়ৎ।

অজো নিত্যঃ শাশ্বতোহযং পুরাণো

ন হন্যতে হন্যমানে শরীরে॥ ২০॥

এই আত্মা কোন কালে জাত বা মৃত হন না; কারণ বস্ত্র পরিবর্তন করে নেন। আত্মা হয়ে অন্য কিছুতে পরিবর্তনও হয় না; কারণ এই আত্মা অজন্মা, নিত্য, শাশ্বত এবং পুরাতন। দেহনাশ হলেও আত্মার বিনাশ হয় না। আত্মাই সত্য ও আত্মাই পুরাতন। আত্মাই শাশ্বত ও আত্মাই সনাতন। আপনি কে? সনাতন ধর্মের উপাসক। সনাতন কে? আত্মা। আপনি আত্মার উপাসক। আত্মা, পরতাত্মা, ব্রহ্ম একে অন্যের পর্যায়। আপনি কে? শাশ্বত ধর্মের উপাসক। শাশ্বত কে? আত্মা। অর্থাৎ আমি ও আপনি আত্মার উপাসক। যদি আপনি আত্মিক পথটি না ধরেছেন, তাহলে আপনার কাছে শাশ্বত সনাতন নামের কোন বস্ত্র নেই। যদি আপনি সেই পথে চলবার জন্য

ব্যাকুল, তবে আপনি প্রত্যাশী অবশ্যই; কিন্তু সনাতনধর্মী নন। আপনি সনাতন ধর্মের নামে কোন কুরীতির শিকার হয়েছেন।

দেশ-বিদেশে মানুষ মাত্রেরই আত্মা এক সমান। সেই জন্য বিশে কোথাও কোন ব্যক্তি যদি আত্মাতে স্থিত হওয়ার ক্রিয়া জানেন ও সেই পথে চলবার জন্য প্রয়ত্নশীল, তাহলে তিনি সনাতনধর্মী; তাতে তিনি নিজেকে হিন্দু, মুসলমান, ইহুদী যা কিছুই বলুন না কেন।

**বেদাবিনাশিনং নিত্যং য এনমজমব্যয়ম্।**

**কথং স পুরুষঃ পার্থ কং ঘাতয়তি হষ্টি কম্ ॥ ২১ ॥**

পার্থিব দেহকে রথ করে ব্রহ্মরূপ লক্ষ্যতে অব্যর্থ লক্ষ্যভেদী পৃথাপুত্র অর্জুন ! যে পুরুষ এই আত্মাকে নাশরহিত, নিত্য, অজন্মা ও অব্যক্ত বলে জানেন, সেই পুরুষ কি প্রকারে কার হত্যা করেন এবং কারও হত্যা করান ? অবিনাশীর বিনাশ অসম্ভব। অজন্মা জন্ম গ্রহণ করেন না। অতএব দেহের জন্য শোক করা উচিত নয়। একথা উদাহরণের মাধ্যমে স্পষ্ট করলেন—

**বাসাংসি জীগানি যথা বিহায়**

**নবানি গৃহ্ণাতি নরোহপরাণি।**

**তথা শরীরাণি বিহায় জীর্ণ-**

**ন্যন্যানি সংযাতি নবানি দেহী ॥ ২২ ॥**

মানুষ যেমন ‘জীগানি বাসাংসি’-জীর্ণ-শীর্ণ পুরোনো বস্ত্রগুলি ত্যাগ করে অন্য নতুন বস্ত্র গ্রহণ করে, সেইরূপ জীবাত্মা পুরোনো শরীর ত্যাগ করে অন্য নতুন শরীর গ্রহণ করে। জীর্ণ হওয়ার পরই যদি নতুন শরীর ধারণ করা হয়ে থাকে, তাহলে শিশু কেন মরে ? এই শরীরের আরও বিকাশ হওয়া উচিত। বস্তুতঃ শরীর সংস্কারের উপর আধারিত। যখন সংস্কার জীর্ণ হয়, তখনই আমরা দেহত্যাগ করি, যদি সংস্কার দুদিনের, তাহলে দ্বিতীয় দিনই শরীর জীর্ণ হয়ে যাবে। এরপর মানুষ একটা শ্বাসও বেশী নিতে পারে না। সংস্কারই শরীর। আত্মা সংস্কার অনুযায়ী নতুন শরীর ধারণ করে থাকে—‘অথ খলু ক্রতুময়ঃ পুরুষঃ। যথা ইহৈব তথৈব প্রেত্য ভবতি। কৃতং লোকং পুরুষোহভিজায়তে।’ (ছান্দোগ্যোপনিষদ, ৩/১৪) অর্থাৎ এই পুরুষ অবশ্যই সংকল্পময়। এই লোকে পুরুষ যেমন নিশ্চয়যুক্ত হয়, মৃত্যুর পর তেমনিই তার অবস্থা

হয়ে থাকে। নিজের সংকল্পের দ্বারা তৈরী শরীরে পুরুষের সৃষ্টি হয়। এইরূপ মৃত্যু দেহের পরিবর্তন মাত্র, আত্মা মরে না। পুনরায় এর অজরতা-অমরতার উপর জোর দিলেন—

নৈনং ছিদ্রস্তি শস্ত্রাণি নৈনং দহতি পাবকঃ ।

ন চৈনং ক্লেদ্যস্ত্রাপো ন শোষয়তি মারুতৎ ॥ ২৩ ॥

অর্জুন! এই আত্মাকে কোন শস্ত্র ছেদন করতে পারে না, অগ্নি দহন করতে পারে না, জল একে আদ্র করতে পারে না এবং বায়ু একে শুষ্ক করতে পারে না।

অচ্ছেদ্যোহয়মদাহ্যোহয়মক্লেদ্যোহশোষ্য এব চ ।

নিত্যঃ সর্বগতঃ স্থাণুরচলোহয়ং সনাতনঃ ॥ ২৪ ॥

এই আত্মা অচ্ছেদ্য—একে ছেদন করা যেতে পারে না। এই আত্মা অদাহ্য—একে দহন করা যেতে পারে না। অক্লেদ্য—একে আদ্র করা যেতে পারে না। আকাশ একে নিজের মধ্যে সমাহিত করতে পারে না। নিঃসন্দেহে এই আত্মা অশোষ্য, সর্বব্যাপক, অচল, স্থির এবং সনাতন।

অর্জুন বলেছিলেন যে, কুলধর্ম সনাতন, এই যুদ্ধে সনাতন ধর্মলোপ পাবে। কিন্তু শ্রীকৃষ্ণ একে অজ্ঞান বললেন এবং আত্মাকে সনাতন বললেন। আপনি কে? সনাতন ধর্মের অনুযায়ী। সনাতন কে? আত্মা। যদি আপনি আত্মাকে উপলক্ষ্মি করবার বিধি-বিশেষ সম্বন্ধে অবগত নন, তাহলে সনাতন ধর্ম কি তা আপনি জানেন না। এর কুপরিগাম সাম্প্রদায়িকতার গাণ্ডিতে বদ্ধ ধর্মভীরু লোকেদের ভোগ করতে হয়। মধ্যযুগে ভারতবর্ষের বাইরে থেকে মুসলমানেরা এসেছিল মাত্র বারো হাজার, বর্তমানে তাদের সংখ্যা আঠাশ কোটি। বারো হাজার থেকে লক্ষাধিক হত, তার বেশী হলে কোটির কাছাকাছি হত আর কত হত? এরা আজ আঠাশ কোটির থেকেও বেশী হতে চলেছে। সকলেই হিন্দু, আপনার নিজের ভাই সবাই, যারা ছুতমার্গ অবলম্বন করার জন্য নষ্ট হয়ে গেছে। তারা নষ্ট হয়নি, তাদের সনাতন, অপরিবর্তনশীল ধর্ম নষ্ট হয়ে গেছে।

যখন ম্যাটার (Matter) ক্ষেত্রের কোন বস্তু এই সনাতনকে স্পর্শ করতে পারে না, তখন ছোঁয়া-খাওয়ায় এই সনাতন ধর্ম কিভাবে নষ্ট হবে? এটা ধর্ম নয়,

কুরীতির পরিস্থিতি ছিল। যার ফলে ভারতে সাম্প্রদায়িক মনোমালিন্যের বৃদ্ধি হয়েছে, দেশ বিভাজন হয়েছে ও রাষ্ট্রীয় একতা আজও একটি সমস্যার বিষয় হয়ে দাঁড়িয়ে আছে।

এই সকল কুরীতির কাহিনীতে ইতিহাস পরিপূর্ণ। হামীরপুর জেলাতে ৫০-৬০টি পরিবার কুলীন ক্ষত্রিয় ছিল। আজ তারা সকলেই মুসলমান। না তাদের উপর গোলা-বারবুরের হামলা হয়েছিল, না তরবারির। তাহলে কি হয়েছিল? একরাতে ১-২ জন মৌলবী সেই গ্রামের একমাত্র কুয়োর কাছেই লুকিয়ে ছিল, কারণ, কর্মকাণ্ডে বিশ্বাসী ব্রাহ্মণ সর্বপ্রথম এখানেই স্নান করতে আসবেন। যেই তিনি এসেছিলেন, অমনি তাঁকে সেই মৌলবীরা ধরে তাঁর মুখবন্ধ করে দিয়েছিল। তাঁর সামনেই তারা কুয়ো থেকে জল তুলে কিছুটা জল পানকরে বাকী উচিষ্ট জলটুকুর সঙ্গে এক টুকরো রংটিও তাতে ফেলে দিয়েছিল। পণ্ডিতমশাই নিরপ্পায় হয়ে তাদের দেখতেই থেকে গিয়েছিলেন, তারপরে তারা পণ্ডিতমশাইকে সঙ্গে নিয়ে চলে গিয়েছিল এবং তাঁকে নিজেদের ঘরে বন্ধ করে দিয়েছিল।

পরের দিন তারা হাতজোড় করে পণ্ডিত মশাইকে ভোজনের জন্য নিবেদন করাতে তিনি রেগে বলেছিলেন- “তোমরা যবন আর আমি ব্রাহ্মণ, আমি কি করে এই ভোজন গ্রহণ করব?” মৌলবীরা তখন বলেছিল যে- “মহারাজ! আপনার মত বিচারবান লোকদের আমাদের বড়ই দরকার, ক্ষমা করবেন।” এর পর পণ্ডিতমশাইকে তারা ছেড়ে দিয়েছিল।

পণ্ডিতমশাই নিজের গ্রামে ফিরে দেখেছিলেন যে লোকে কুয়োর জল আগেকার মতই ব্যবহার করে চলেছে, তিনি তা দেখে অনশন আরম্ভ করে দিয়েছিলেন। কিছু লোকে কারণ জিজ্ঞাসা করাতে বলেছিলেন—যবনরা এই কুয়োর পাড়ে চড়েছিল, আমার সামনেই তারা এর জল উচিষ্ট করেছে এর মধ্যে রংটিও ফেলেছে, একথা শুনে গ্রামের লোকেরা স্তুতি হয়ে গিয়েছিল, তারা জিজ্ঞাসা করেছিল, “এখন কি হবে?” পণ্ডিতমশাই বলেছিলেন—“কি আর হবে? ধর্ম তো নষ্টই হয়ে গেছে।”

সেই সময় সেই গ্রামের লোকেরা অশিক্ষিত ছিল। স্ত্রী ও শুদ্ধের কাছ থেকে পড়ার অধিকার বহু আগেই কেড়ে নেওয়া হয়েছিল। বৈশ্য ধন উপার্জনকেই নিজেদের ধর্ম বলে মনে করত। ক্ষত্রিয় চারণগণের প্রশংস্তি গানেই মগ্নাছিল—অন্নদাতার তরবারি

চমকালে, আকাশে বিদ্যুৎ খেলে যেত ও দিল্লীর সিংহাসন টলে উঠত। সন্মান এমনিতেই ছিল তাহলে তারা পড়বে কেন? ধর্মের তাদের কি প্রয়োজন? ধর্ম কেবল ব্রাহ্মণদেরই একচেটিয়া বস্ত্র হয়ে রয়ে গিয়েছিল। তাঁরাই ধর্মসূত্রের রচয়িতা, তাঁরাই এর ব্যাখ্যাকার ও তাঁরাই এর সত্য-মিথ্যার নির্ণয়ক ছিলেন। প্রাচীনকালে স্ত্রী, শুদ্র, বৈশ্য, ক্ষত্রিয় ও ব্রাহ্মণ সকলেরই বেদ পড়বার অধিকার ছিল। প্রত্যেক বর্গের খ্যিগণ বৈদিক মন্ত্রের রচনা করেছিলেন, শাস্ত্রার্থ নির্ণয়ে অংশগ্রহণ করেছিলেন। প্রাচীন রাজাগণ ধর্মের নামে যারা আড়ম্বরের বিস্তার করত, তাদের দণ্ড দিয়েছেন, আবার ধর্মপরায়ণদের আদরও দিয়েছেন।

কিন্তু মধ্যযুগে ভারতবর্ষে সনাতন ধর্মের যথার্থ জ্ঞান না থাকার জন্য উক্ত গ্রামের সমস্ত লোকেরা ভেড়ার মত কোনঠাসা হয়ে গিয়েছিল, যে ধর্ম নষ্ট হয়ে গেছে। কিছু লোক এধরণের অপ্রিয় কথা শুনে আঘাত্যা করে নিয়েছিল কিন্তু কতদুর সকলেই প্রাণত্যাগ করত? অটুট শ্রদ্ধা থাকা সত্ত্বেও বাধ্য হয়ে অন্য সমাধান খুঁজতে হয়েছিল। আজও তারা বাঁশ পুঁতে, পেষণদণ্ড (মুণ্ডর) রেখে হিন্দুদের মতই বিবাহ করে; পরে একজন মৌলিকী এসে নিকাহ পড়িয়ে চলে যায়। তারা সকলেই শুন্দ হিন্দু, কিন্তু এখন সকলেই তারা মুসলমান হয়ে গেছে।

হয়েছিল কি? জল পান করেছিল, না জেনে মুসলমানদের ছোঁয়া খেয়ে ছিল। সেই জন্য ধর্ম নষ্ট হয়ে গেল। ধর্ম না হয়ে লজ্জাবতী লতা হয়ে গেল। লজ্জাবতী লতা এক ধরণের ছোট চারা গাছকে বলে, যার পাতা স্পর্শমাত্র সঙ্কুচিত হয়ে যায়। আবার হাত সরালেই বিকশিত হয়; কিন্তু ধর্ম এমন লোপ পেল যে, এর আর বিকাশ হল না। একেবারে শেষ হয়ে গেছে, তাদের কৃষ্ণ, রাম ও পরমাত্মা মরে গেছে। যাঁরা শাশ্বত, তাঁরা নেই। বাস্তবে সেটি শাশ্বতের নামে কোন কুরীতি ছিল, যা লোকে ধর্ম বলে মেনে নিয়েছিল।

ধর্মের শরণে আমরা যাই কেন? কারণ আমরা মরণধর্ম ও ধর্ম কোন প্রামাণ্য বস্তু, যার শরণাগত হলে আমরাতা লাভ করা যায়। আমরা তো হত্যা করলে মারা যায় আর ধর্ম কি শুধু স্পর্শে এবং আহার প্রহণে নষ্ট হয়ে যায়, তাহলে ধর্ম আমাদের রক্ষা কি করে করবে? ধর্ম তো আপনার রক্ষা করে, আপনার চেয়ে শক্তিশালী। আপনি তরবারির আঘাতে মরবেন আর ধর্ম? তা ছোঁয়াতেই নষ্ট হয়ে গেছে। আপনার ধর্ম কেমন? কুরীতি সকল নষ্ট হয়, সনাতন নয়।

সনাতন যথার্থ হয়, যাকে শন্ত দিয়ে ছেদন করা যেতে পারে না। অশ্বি দাহ করতে পারে না জল আর্দ্র করতে পারে না। খাদ্য-পানীয় দূরে থাক প্রকৃতিজাত কোন বস্তু একে স্পর্শ করতে পারে না, তাহলে সেই সনাতন কি করে নষ্ট হতে পারে?

এই ধরণের কিছু কুরীতি অর্জুনের কালেও ছিল। অর্জুনও তার শিকার হয়েছিলেন। তিনি বিলাপ করে কাতরতার সঙ্গে প্রার্থনার ভঙ্গিতে বললেন যে, কুলধর্মই সনাতন। যুদ্ধ হলে সনাতন ধর্ম নষ্ট হবে। কুলধর্ম নষ্ট হবে এবং কুলধর্ম নষ্ট হলে আমরা অনন্তকাল ধরে নরকে বাস করব। কিন্তু শ্রীকৃষ্ণ বললেন—“এই অজ্ঞানতা তোমার মধ্যে কোথেকে উৎপন্ন হল?” তাহলে প্রমাণিত হল যে, সেসব কুরীতি ছিল, তবেই তো শ্রীকৃষ্ণ তার নিরাকরণ করলেন এবং বললেন আঝাই সনাতন। যদি আপনি আঘিক পথ সন্দেহে অবগত নন, তবে আপনি এখনও সনাতন ধর্মে প্রবেশ করতে পারেননি।

যখন এই সনাতন-শাশ্বত আত্মা সকলের অন্তরে পরিব্যাপ্ত, তখন কেমন করে খোঁজ করা হবে? এই প্রসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ বললেন—

অব্যক্তোহয়মচিষ্ঠোহয়মবিকার্যোহয়মুচ্যতে।

তস্মাদেবং বিদিত্বেন নানুশোচিতুমর্হসি॥ ২৫॥

এই আত্মা অব্যক্ত অর্থাৎ ইন্দ্রিয়ের অগোচর। ইন্দ্রিয়গুলির সাহায্যে একে উপলব্ধি করা যায় না। যতক্ষণ পর্যন্ত ইন্দ্রিয় ও বিষয়ের সংযোগ ঘটে, ততক্ষণ পর্যন্ত এই আত্মা আছে ঠিকই কিন্তু তাকে জানা যায় না। আত্মা অচিন্ত্য। যতক্ষণ চিন্ত ও চিন্তের তরঙ্গ বিদ্যমান, ততক্ষণ সেই শাশ্বত আছে অবশ্যই; কিন্তু আমাদের দর্শন, উপভোগ এবং প্রবেশের জন্য নয়। অতএব চিন্তের নিরোধ আবশ্যিক।

শ্রীকৃষ্ণ পূর্বেই বলেছেন যে অসৎ বস্তুর অস্তিত্ব নেই এবং সতের তিনিকালে অভাব নেই। সৎ আত্মা। আত্মাই অপরিবর্তনশীল, শাশ্বত, সনাতন ও অব্যক্ত। তত্ত্বদর্শীগণ আত্মাকে এই সকল বিশেষ গুণধর্মের্যুক্ত দেখেছেন। দশটি ভাষার বিশারদও দেখেননি ও কোন সমৃদ্ধশালী ব্যক্তিও দেখেননি; বরং তত্ত্বদর্শীগণ দেখেছেন। শ্রীকৃষ্ণ আরও বললেন—তত্ত্ব হচ্ছেন পরমাত্মা। মনের নিরোধকালে সাধক তাঁর দর্শন করেন এবং তাঁতে স্থিতি লাভ করার অধিকারী হন। প্রাপ্তিকালে

ভগবানকে পাওয়া যায় এবং সাধক পরক্ষণেই নিজের আত্মাকে ঈশ্বরীয় গুণধর্মে  
বিভূষিত দেখেন। তিনি দেখেন আত্মাই সত্য, সনাতন ও পরিপূর্ণ। এই আত্মা অচিন্ত্য।  
এই বিকাররহিত অর্থাৎ অপরিবর্তনশীল। সেইজন্য অর্জুন! আত্মার এই সনাতন  
স্বরূপ অবগত হও এবং শোক পরিত্যাগ কর। এবার শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনের বিচারগুলির  
মধ্যে যে বিরোধাভাস তা দেখালেন—যেটা খুব সামান্য তর্ক।

অথ চৈনং নিত্যজাতং নিত্যং বা মন্যসে মৃতম্।

তথাপি ত্বং মহাবাহো নৈবং শোচিতুমহসি॥ ২৬॥

যদি তুমি এই আত্মাকে নিত্যজাত এবং সদা নশ্বর বলে মনে কর, তবুও  
তোমার শোক করা উচিত নয়; কারণ—

জাতস্য হি ঞ্চবো মৃত্যুঞ্জ্বরং জন্ম মৃতস্য চ।

তস্মাদপরিহার্যেহর্থে ন ত্বং শোচিতুমহসি॥ ২৭॥

এরূপ হলেও জাত ব্যক্তির মৃত্যু নিশ্চিত এবং মৃত ব্যক্তির পুনর্জন্ম অবশ্যত্বাবী  
একথা প্রমাণিত। সেই জন্য এই অপরিহার্য বিষয়ে তোমার শোক করা উচিত নয়।  
যার কোন চিকিৎসা নেই, তার জন্য শোক করা এক অন্য দুঃখকে আমন্ত্রণ করা  
মাত্র।

অব্যক্তাদীনি ভূতানি ব্যক্তমধ্যানি ভারত।

অব্যক্তনিধনান্যেব তত্র কা পরিদেবনা॥ ২৮॥

অর্জুন! সকল প্রাণী জন্মের পূর্বে দেহহীন এবং মৃত্যুর পরেও দেহহীন  
অবস্থাতে থাকে, কেবল জন্ম-মৃত্যুর মধ্যেকার সময়ে এই দেহধারণাটা আমরা দেখে  
থাকি, জন্মের পূর্বে এবং মৃত্যুর পশ্চাতে কিছুই দেখা যায় না। অতএব এই পরিবর্তনের  
জন্য চিন্তা করা ব্যর্থ। এই আত্মাকে কে দেখতে সক্ষম? এই প্রসঙ্গে বললেন—

আশ্চর্যবৎপশ্যতি কশ্চিদেন-

মাশ্চর্যবদ্ধতি তথেব চান্যঃ।

আশ্চর্যবচ্চেনমন্যঃ শৃণোতি

শ্রত্বাপ্যেনং বেদ ন চৈব কশ্চিঃ॥ ২৯॥

পুর্বে শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন যে, এই আত্মাকে তত্ত্বদর্শীগণ দেখেছেন; এখন তত্ত্বদর্শনের দুর্ভিতার উপর আলোকপাত করলেন যে, কোন বিরল মহাপুরুষই এই আত্মাকে আশ্চর্যের মত দেখেন। শোনেন না, প্রত্যক্ষ দেখেন এবং সেইরূপ অন্য কোন মহাপুরুষ সবিস্ময়ে এই তত্ত্ব বর্ণনা করেন। যিনি দেখেছেন তিনিই যথার্থ বলতে পারেন। অন্য কোন বিরল সাধক এই আত্মাকে আশ্চর্যরূপে শ্রবণ করেন, সকলে শোনেনও না, কারণ অধিকারী বিশেষে এইভাব বোধগম্য হয়। হে অর্জুন! কেউ কেউ শুনেও এই আত্মাকে জানতে পারে না; কারণ সাধন সম্পূর্ণ হয় না। আপনি হাজার জ্ঞানের কথা শুনুন, সুস্মাতিসুস্ম বিচার করে বুঝে নিন, আগ্রহী হয়েও থাকুন; কিন্তু মোহ বড়ই প্রবল, অল্লসময়ের মধ্যেই আপনি সাংসারিক ব্যবস্থাতে লিপ্ত হয়ে যাবেন।

অবশেষে শ্রীকৃষ্ণ নির্ণয় করলেন—

দেহী নিত্যমবধ্যোহয়ং দেহে সর্বস্য ভারত।

তস্মাংসৰ্বাণি ভূতানি ন ত্বং শোচিতুমহসি॥ ৩০॥

অর্জুন! প্রাণীগণের দেহে অবস্থিত আত্মা সদা অবধ্য, অকাট্য। সেইজন্য কোন প্রাণীর দেহনাশে তোমার শোক করা উচিত নয়।

‘আত্মাই সনাতন’—এই তত্ত্ব প্রতিপাদন করে, এর প্রভুতার সঙ্গে বর্ণনা করে এই প্রশ্ন এখানেই সম্পূর্ণ করলেন। এখন প্রশ্ন ওঠে যে, এর প্রাপ্তির উপায় কি? সম্পূর্ণ গীতাতে এর জন্য দুটি পথ বলা হয়েছে প্রথম—‘নিষ্কাম কর্মযোগ’, দ্বিতীয়—‘জ্ঞানযোগ’ এই দুই মার্গকে অবলম্বন করে যে কর্ম করা হয় তা একই। সেই কর্মের অনিবার্যতার উপর জোর দিয়ে যোগেশ্বর এবার জ্ঞানযোগের বিষয়ে বললেন—

স্বধর্মপি চাবেক্ষ্য ন বিকল্পিতুমহসি।

ধর্ম্যাদি যুদ্ধাচ্ছ্রয়োহন্যৎক্ষত্রিয়স্য ন বিদ্যতে॥ ৩১॥

হে অর্জুন! স্বধর্ম লক্ষ্য করেও তোমার ভীত হওয়া উচিত নয়, কারণ ধর্মসঙ্গত যুদ্ধ অপেক্ষা কল্যাণকর ক্ষত্রিয়ের জন্য আর কিছুই নেই। এই যাবৎ ‘আত্মা শাশ্঵ত’, ‘আত্মা সনাতন’, ‘এটাই একমাত্র ধর্ম’ বলা হয়েছে। এখন এই স্বধর্ম কি? ধর্ম একমাত্র আত্মা, তাহলে ধর্মাচরণ কি? কারণ আত্মা অচল স্থির। বস্তুতঃ এই আত্মপথে প্রবৃত্ত হবার ক্ষমতা প্রত্যেক ব্যক্তির পৃথক্ পৃথক্। স্বভাবজাত এই ক্ষমতাকেই স্বধর্ম বলা হয়েছে।

এই একমাত্র সনাতন আত্মিক পথের পথিক সাধকদের মহাপুরুষগণ তাদের স্বভাবজাত ক্ষমতানুযায়ী চারটি শ্রেণীতে ভাগ করেছেন—শুদ্ধ, বৈশ্য, ক্ষত্রিয় এবং ব্রাহ্মণ। সাধনার প্রারম্ভিক অবস্থাতে প্রত্যেক সাধক শুদ্ধ অর্থাৎ অঙ্গজ হয়। ঘন্টার পর ঘন্টা ভজনে বসেও সাধক ১০ মিনিটের জন্য একাগ্রচিন্তিত হতে পারে না, প্রকৃতির মায়াজাল কেটে উঠতে পারে না। এই অবস্থায় কেবল মহাপুরুষের সেবাদ্বারা স্বভাবে সদ্গুণের সংগ্রহ হয়, অতএব তখন সাধকের স্থিতি বৈশ্য শ্রেণীর হয়। আত্মিক সম্পত্তিই স্থির সম্পত্তি। সাধক ধীরে ধীরে-এর সংগ্রহ ও গোপালন অর্থাৎ ইন্দ্রিয়সমূহের সুরক্ষা করতে সমর্থ হয়। কাম, ক্রোধ ইত্যাদি থেকে ইন্দ্রিয়ের হিংসা হয় এবং বিবেক-বৈরাগ্যের মাধ্যমে এদের সুরক্ষা হয়; কিন্তু প্রকৃতিকে নির্বিজ করবার ক্ষমতা তার মধ্যে এখনও আসে না। ক্রমশঃঃ উন্নতি করতে করতে সাধকের অস্তরে ত্রিগুণকে খণ্ডন করবার ক্ষমতা এসে যায়। এই স্তর থেকেই সাধক প্রকৃতি ও তার বিকার সমূহকে বিনষ্ট করার ক্ষমতা লাভ করেন। এইজন্য যুদ্ধ এখান থেকেই শুরু হয়। ক্রমশঃঃ সাধক সাধনা সম্পূর্ণ করে ব্রাহ্মণত্বে পরিবর্তিত হন। তখন মনকে শাস্ত রাখা, ইন্দ্রিয় দমন, চিন্তনের নিরবচ্ছিন্ন ধারা, সরলতা, অনুভব, জ্ঞান ইত্যাদি লক্ষণ সাধকের মধ্যে স্বাভাবিকভাবে দেখা যায়। এদের অনুষ্ঠান করে পথ অতিক্রমণ করে ক্রমশঃঃ তিনি ব্রাহ্মত্ব লাভ করেন। যেখানে গৌঁছে তিনি ব্রাহ্মণও থাকেন না।

বিদেহ রাজা জনকের সভায় চাক্রায়ণ, উষস্তি, কহোল, আরংণি, উদ্দালক এবং গার্গীর প্রশ্নের সমাধান করে মহর্ষি যাজ্ঞবল্ক্ষ্য বলেছিলেন—“যিনি আত্মাদশী এবং নিজের পূর্ণতা দেখেছেন তিনিই ব্রাহ্মণ। এই আত্মাই লোক-পরলোক ও সমস্ত প্রাণীগণকে অস্তর থেকে নিয়ন্ত্রিত করে চলেছে। সূর্য, চন্দ্ৰ, পৃথিবী, জল, বায়ু, অগ্নি, তারাগণ, অস্তরিক্ষ, আকাশ এবং প্রতিক্ষণ এই আত্মার দ্বারাই অনুশাসিত। এই আত্মা অস্ত্রযামী অমৃত। আত্মা অক্ষর, এছাড়া বাকী সবই বিনাশশীল। যে ব্যক্তি এই জগতে এই ‘অক্ষর’কে না জেনে হোম করে, তপস্যা করে, হাজার হাজার বছরপর্যন্ত যজ্ঞ করে, তার এই সকল কর্ম নিষ্ফল হয়ে যায়। যদি কোন ব্যক্তি এই অক্ষরকে না জেনে প্রাণত্যাগ করে, তবে সে দয়ার পাত্র ও যিনি এই অক্ষরকে জেনে মৃত্যু বরণ করেন, তিনিই ব্রাহ্মণ। (বৃহদারণ্যকোপনিষদ, ৩/৪-৫-৭-৮)।

অর্জুন ক্ষত্রিয় শ্রেণীর সাধক ছিলেন। শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে ক্ষত্রিয় শ্রেণীর সাধকের জন্য যুদ্ধ অপেক্ষা কল্যাণকর আর কোন পথই নেই। প্রশ্ন ওঠে যে, ক্ষত্রিয়

কে ? প্রায়ই লোকে এর অর্থ সমাজে জন্ম থেকে উৎপন্ন ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য, শুদ্র জাতি থেকে বোঝে। এদেরই চারটি বর্ণ বলে মেনে নেওয়া হয়েছে। কিন্তু না, শাস্ত্রকার স্বয়ং বলেছেন ক্ষত্রিয় কে ? বর্ণ কি ? এখানে তিনি কেবল ক্ষত্রিয়ের নাম নিয়েছেন ও এরপরে ১৮ অধ্যায়পর্যন্ত এই প্রশ্নের সমাধান প্রস্তুত করেছেন যে, বস্তুতঃ এই বর্ণ কি ? ও কি ভাবে বর্ণের পরিবর্তন হয় ?

**শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন—‘চাতুর্বর্ণং ময়াসৃষ্টম্’** (গীতা, ৪/১৩)— চার বর্ণের সৃষ্টি আমি করেছি। তবে কি মানুষকে আর একজন মানুষ থেকে পৃথক্ক করেছেন ? শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন—না, ‘গুণকর্ম বিভাগশঃ ।’-গুণের মাধ্যমে কর্মকে চারভাগে বিভক্ত করেছি। এখন দেখতে হবে যে, সেই কর্ম কি, যাকে ভাগ করা হয়েছে ? গুণ পরিবর্তনশীল। সাধনার উচিত আচরণদ্বারাই তামসিক থেকে রাজসিক এবং রাজসিক থেকে সাত্ত্বিক গুণে উত্তরণ হয়। অবশেষে ব্রাহ্মণ স্বভাব হয়ে যায়। সেই সময় সাধকের মধ্যে ব্রহ্মাত্ম লাভের সমস্ত যোগ্যতা বিদ্যমান থাকে। বর্ণসম্বন্ধী প্রশ্ন এখান থেকে আরও করে আঠারো অধ্যায়ে গিয়ে পূর্ণ হয়েছে।

**শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে—‘শ্রেয়ান্স্বধর্মো বিগুণঃ পরধর্মাত্মস্বনৃষ্টিতাৎ।’** (গীতা, ১৮/৪৭) স্বভাবজাত এই ধর্মে প্রবৃত্ত হবার ক্ষমতা যে স্তরেরই হোক না কেন তা গুণহীন শুদ্র শ্রেণীরও যদি হয়, তাহলেও পরমকল্যাণ করে; কারণ আপনি ক্রমশঃ সেখান থেকেই উত্থান করবেন। সাধক নিজের থেকে উচ্চস্তরের ব্যক্তির নকল করে নষ্ট হয়ে যায়। অর্জুন ক্ষত্রিয় শ্রেণীর সাধক ছিলেন। সেই জন্য শ্রীকৃষ্ণ বললেন—অর্জুন ! স্বভাব থেকে উৎপন্ন এই যুদ্ধে প্রবৃত্ত হবার নিজের ক্ষমতা লক্ষ্য করেও তোমার ভীত হওয়া উচিত নয়। এর থেকে শ্রেষ্ঠ অন্য কোন কল্যাণকর কার্য ক্ষত্রিয়ের জন্য নেই। এরই উপর আলোকপাত করে পুনরায় যোগেশ্বর বললেন—

**যদৃচ্ছয়া চোপপন্নং স্বর্গদ্বারমপাবৃতম্।**

**সুখিনঃ ক্ষত্রিয়ঃ পার্থ লভত্তে যুদ্ধমীদৃশম্ ॥ ৩২ ॥**

পার্থিব দেহকে রথ বানিয়ে অব্যর্থ লক্ষ্যভেদী অর্জুন ! অনায়াসপ্রাপ্ত, উন্মুক্ত স্বর্গদ্বার সদৃশ এই প্রকার যুদ্ধ ভাগ্যবান् ক্ষত্রিয়গণই লাভ করেন। ক্ষত্রিয় শ্রেণীর সাধকের মধ্যে ত্রিগুণের প্রভাব থেকে মুক্ত হওয়ার ক্ষমতা থাকে। তাঁরজন্য স্বর্গদ্বার খোলা থাকে; কেননা দৈবী সম্পদ সম্পূর্ণভাবে অর্জিত সেই সাধকের মধ্যে স্বরে বিচরণ করবার ক্ষমতা চলে আসে। একেই বলে উন্মুক্ত স্বর্গের দ্বার। ক্ষেত্র-ক্ষেত্রাঙ্গের

এই যুদ্ধ ভাগ্যবান ক্ষত্রিয়গণই লাভ করে থাকেন; কারণ তাদের মধ্যেই এই সংঘর্ষে প্রবৃত্ত হওয়ার ক্ষমতা থাকে।

সংসারে যুদ্ধ হয়েই থাকে। কখনও কখনও বিশ্বের রাষ্ট্রগুলি একত্রিত হয়ে যুদ্ধ করে, প্রত্যেক জাতি যুদ্ধ করে; কিন্তু শাশ্বত বিজয় বিজিত ব্যক্তিও লাভ করতে পারে না। এসব পরম্পর বিরোধী মনোভাবের সংঘর্ষ মাত্র। যে যাকে যতটা দমন করে, কালান্তরে তাকেও ততটাই দমিত হতে হয়। এই বিজয় কি ধরণের, যাতে ইন্দ্রিয়সমূহকে নিষ্ঠেজ করবার শোক থাকছেই, শেষে এই দেহও নষ্ট হয়ে যায়? ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞের সংঘর্ষই বাস্তবিক সংঘর্ষ, এতে একবার জয়লাভ করলে সর্বদার জন্য প্রকৃতির নিরোধ ও পরমপূরুষ পরমাত্মার প্রাপ্তি হয়। এই বিজয় এমন, যারপর পরাজয় নেই।

অথ চেত্তুমিমৎ ধর্ম্যৎ সংগ্রামৎ ন করিষ্যসি।

ততঃ স্বধর্মংকীর্তিং চ হিত্তা পাপমবান্ন্যসি॥ ৩৩॥

আর যদি তুমি এই ‘ধর্ম্যুক্ত সংগ্রাম’ অর্থাৎ শাশ্বত সনাতন পরমধর্ম পরমাত্মায় স্থিতি লাভ করবার জন্য ধর্ম্যুক্ত না কর, তাহলে ‘স্বধর্ম’ অর্থাৎ স্বভাবজাত সংঘর্ষ করবার ক্ষমতা, ক্রিয়াতে প্রবৃত্ত হওয়ার ক্ষমতা হারিয়ে পাপ অর্থাৎ গমনাগমন ও অপকীর্তি প্রাপ্ত হবে। অপকীর্তির উপর আলোকপাত করলেন—

অকীর্তিং চাপি ভূতানি কথয়িষ্যতি তেহব্যযাম।

সন্তাবিতস্য চাকীর্ত্তিরণাদতিরিচ্যতে॥ ৩৪॥

সবলেই বহুকাল ধরে তোমার অখ্যাতি ঘোষণা করবে। যে মহাত্মাগণ পদচূড়ত হয়েছেন আজও তাদের নাম যেমন—বিশ্বামিত্র, পরাশর, নিমি, শৃঙ্গী ইত্যাদির নাম উল্লেখ করা হয়। বহু সাধক নিজধর্মের বিচার করেন, চিন্তা করেন যে লোকে আমাকে কি বলবে? এই ধরণের ভাবও সাধনায় সহায়ক হয়। এইরূপ চিন্তা সাধনাতে প্রবৃত্ত থাকার প্রেরণা দেয়। কিছু দূরপর্যন্ত এইরূপ ভাব সঙ্গ দেয়। সম্মানিত ব্যক্তির পক্ষে অপকীর্তি মৃত্যু থেকেও বেশী দুঃখদায়ক।

ভয়াদ্রণাদুপরতৎ মৎস্যস্তে স্বাং মহারথাঃ।

যেষাং চ তৎ বহুমতো ভূত্বা যাস্যসি লাঘবম্॥ ৩৫॥

তুমি যাঁদের দৃষ্টিতে সন্মানিত ছিলে সেই মহারথীগণ মনে করবেন যে, তুমি ভয় পেয়ে যুদ্ধ থেকে নিবৃত্ত হয়েছ। মহারথী কে? যিনি এই পথে কঠোর পরিশ্রম করে অগ্রসর হন, তিনিই মহারথী। এই প্রকার ততটাই পরিশ্রম করে অবিদ্যার দিকে আকৃষ্ট করে যে কাম, ক্রোধ, লোভ, মোহ ইত্যাদি রিপুগ্নলিও মহারথী। যাঁরা তোমাকে সম্মান করতেন যে, এই সাধক প্রশংসনীয়, তুমি তাঁদের দৃষ্টিতে ছোট হয়ে যাবে। এতটাই নয়, বরং—

অবাচ্যবাদাংশ্চ বহুবিদ্যুষ্টি তবাহিতাঃ।

নিন্দন্তস্তব সামর্থ্যং ততো দুঃখতরং নু কিম্।। ৩৬।।

শক্রগণ তোমার পরাক্রমের নিন্দা করে বহু অকথ্য বচন বলবে। একটা কোন দোষ দেখতে পেলেই তো চারিদিক থেকে অজস্র নিন্দা ও নানান দোষারোপ হতে থাকে। অকথ্য কথাও বলে থাকে। এর থেকে বেশী দুঃখ আর কি হতে পারে? অতএব—

হতো বা প্রাঙ্গ্যসি স্বর্গং জিজ্ঞা বা ভোক্ষ্যসে মহীম্।

তস্মাদ্বৃত্তি কৌন্তেয় যুদ্ধায় কৃতনিশ্চয়ঃ।। ৩৭।।

এই যুদ্ধে নিহত হলে তুমি স্বর্গলাভ করবে; অর্থাৎ শ্঵রে বিচরণ করবার ক্ষমতা লাভ করবে। স্বাসের বাইরে প্রকৃতিতে বিচরণ করবার ধারা নিরবন্ধ হয়ে যাবে। যে দৈবীসম্পদগুলি, পরমদেব পরমাত্মাকে লাভ করতে সাহায্য করে, সেগুলি হাদয়ে সম্পূর্ণভাবে প্রবাহিত থাকবে অথবা এই সংঘর্ষে জয়লাভ করলে মহামহিম স্থিতি লাভ করবে। অতএব অর্জুন! যুদ্ধের জন্য দৃঢ়সঞ্চল করে উঠিত হও।

প্রায়ই লোকে এই শ্লোকের অর্থ এই মনে করে যে, এই যুদ্ধে মৃত্যু হলে স্বর্গে যাবে ও জয়লাভ করলে পৃথিবীর ভোগ উপভোগ করবে; কিন্তু আপনার স্মরণ হবে যে, অর্জুন বলেছিলেন—“ভগবন! শুধু পৃথিবীর নয়, বরং ব্রৈলোক্যের সাম্রাজ্য এবং দেবতাদের অধিপতির পদ অর্থাৎ ইন্দ্রপদ লাভ হলেও আমি সেই উপায় দেখছি না, যা আমার ইন্দ্রিয়সমূহের বিষাদ দূর করতে পারে। যদি এই সবই লাভ হবে, তবে হে গোবিন্দ! আমি যুদ্ধ করব না।” যদি এর পরেও শ্রীকৃষ্ণ বলতেন যে, অর্জুন! তুমি যুদ্ধ কর। জয়লাভ করলে পৃথিবীর ভোগ উপভোগ করবে, পরাজয় হলে স্বর্গে বাস করবে। তাহলে শ্রীকৃষ্ণ দিচ্ছেনই বা কি? অর্জুন এর থেকে শ্রেষ্ঠ যে সত্য, শ্রেয়-র (পরম কল্যাণের) কামনাবিশিষ্ট শিষ্য ছিলেন, যা সদ্গুরুদেব শ্রীকৃষ্ণ

বলেছিলেন যে, ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞের এই সংঘর্ষে শরীরের সময় যদি পূর্ণ হয়ে যায় ও লক্ষ্যে পৌঁছান বাকী থাকে, তাহলে স্বর্গলাভ করবে অর্থাৎ স্বরে বিচরণ করবার ক্ষমতা লাভ করবে। দৈবী সম্পদ হৃদয়ে পরিপূর্ণ হয়ে উঠবে এবং দেহের অস্তিত্ব থাকতে থাকতে সংঘর্ষে সফলতা লাভ হলে ‘মহীম’-সব থেকে মহান् ব্রহ্মের মহিমা উপভোগ করবে, অর্থাৎ মহামহীম স্থিতি লাভ করবে। জয়লাভ করলে সর্বস্ব, কারণ মহামহীম লাভ করবে ও পরাজয় হলে দেবত- দুইদিক থেকেই লাভবান् হবে। লাভেও লাভ ও লোকসানেও লাভ। পুনরায় এই বিষয়ের উপর জোর দিলেন—

সুখদুঃখে সমে কৃত্বা লাভালাভো জয়াজয়ো ।

ততো যুদ্ধায় যুজ্যস্ব নৈবং পাপমবাঙ্গ্যসি ॥ ৩৮ ॥

এই প্রকার সুখ-দুঃখ, লাভ-লোকসান, জয়-পরাজয় তুল্য জ্ঞান করে তুমি যুদ্ধের জন্য প্রস্তুত হও। যুদ্ধ করলে প্রত্যবায় তোমার হবে না। অর্থাৎ সুখে সর্বস্ব ও দুঃখেও দেবত লাভ। লাভে মহিমময় স্থিতি অর্থাৎ সর্বস্ব লাভ ও লোকসানে দেবত লাভ। জয়লাভ করলে মহামহীম স্থিতি ও পরাজয় হলে দৈবী সম্পদের উপর অধিকার। এই প্রকার নিজের লাভ-লোকসানের বিচার করে তুমি যুদ্ধের জন্য প্রস্তুত হও। যুদ্ধ করলেই এই দুই অবস্থা লাভ হয়। যুদ্ধ করলে পাপ অর্থাৎ আসা-যাওয়া করতে হবে না। অতএব তুমি যুদ্ধের জন্য প্রস্তুত হও।

এষা তেহভিহিতা সাঙ্গে বুদ্ধির্যোগে ত্রিমাং শৃণু ।

বুদ্ধ্যা যুক্তো যয়া পার্থ কর্মবন্ধং প্রহাস্যসি ॥ ৩৯ ॥

হে পার্থ! এই বুদ্ধির কথা তোমার জন্য জ্ঞানযোগের বিষয়ে বলা হয়েছে। কোন্ বুদ্ধির কথা? এই যে, যুদ্ধ কর। জ্ঞানযোগে এই আছে যে, নিজের সামর্থ্য অনুসারে লাভ-লোকসানের ভালভাবে বিচার ক'রে যুদ্ধ কর। জয়লাভ ক'রলে মহামহীম স্থিতি ও পরাজয় হ'লে দেবত লাভ হবে। জয়লাভে সর্বস্ব ও পরাজয়ে দেবত লাভ। দুদিকেই লাভ। যুদ্ধ না করলে সকলেই ভয় পেয়ে যুদ্ধ থেকে নিবৃত্ত হয়েছি বলে মনে করবে, অপকীর্তি হবে। এইরূপ নিজের ক্ষমতা বুঝে, স্বয়ং বিচার করে যুদ্ধে অগ্রসর হওয়া জ্ঞানযোগ।

অধিকাংশ লোকেদের মধ্যে এই ভুল ধারণা দেখা যায় যে, জ্ঞানমার্গে কর্ম (যুদ্ধ) করতে হয় না। তারা বলে যে, জ্ঞানমার্গে কর্ম করবার প্রয়োজন নেই। ‘আমি

শুন্দ’, ‘বুন্দ’, ‘চৈতন্য’, ‘অহং ব্ৰহ্মাস্মি’, গুণের দ্বারাই শুণ প্ৰভাবিত, এৱপ মনে কৰে হাত শুটিয়ে বসে যায়। যোগেশ্বৰ শ্ৰীকৃষ্ণেৰ অনুসারে এটা জ্ঞানযোগ নয়। জ্ঞানযোগেও সেই কৰ্ম কৰতে হয়, যে কৰ্ম নিষ্কাম কৰ্মযোগে কৰা হয়। উভয়েৰ মধ্যে পার্থক্য কেবল বুদ্ধিৰ অৰ্থাৎ দৃষ্টিকোণৰ। জ্ঞানমার্গী নিজেৰ স্থিতি বুঝে, নিজেৰ উপৰ নিৰ্ভৰ ক'ৰে কৰ্ম কৰেন। ইষ্টেৱ আশ্রিত হ'য়ে নিষ্কাম কৰ্মযোগীও সেই কৰ্মই কৰেন। উভয় মার্গেই কৰ্ম কৰতে হয়, কৰ্মেও কোনৱৰ্দ্ধ ভেদ নেই, কেবল কৰ্ম কৰবাৰ দৃষ্টিকোণ দুটি।

অৰ্জুন ! এই বুদ্ধিকেই এখন তুমি নিষ্কাম কৰ্মযোগেৰ বিষয়ে শোন, যাৰ সঙ্গে যুক্ত হয়ে তুমি কৰ্ম-বন্ধনেৰ উন্নতিৰূপে নাশ ক'ৰবে। এখানে প্ৰথমবাৰ শ্ৰীকৃষ্ণ কৰ্মেৰ নাম নিয়েছেন; কিন্তু কৰ্ম কি তা বললেন না। এখন কৰ্মেৰ বিশেষত্বেৰ উপৰ আলোকপাত কৰছেন—

নেহাভিক্রমনাশোহষ্টি প্ৰত্যবায়ো ন বিদ্যতে।

স্বল্পমপ্যস্য ধৰ্মস্য ত্ৰায়তে মহতো ভয়াৎ।। ৪০।।

এই নিষ্কাম কৰ্মযোগে আৱলম্বেৰ অৰ্থাৎ বীজেৰ নাশ হয় না। সীমিত ফলৱৰ্দ্ধন দোষও হয় না, সেই জন্য এই নিষ্কাম কৰ্মেৰ, এই কৰ্মদ্বাৰা সম্পাদিত ধৰ্মেৰ অতি অল্পও সাধন জন্ম-মৃত্যুৱৰ্দ্ধন মহাভয় থেকে উদ্বার কৰে। আপনি এই কৰ্ম বুঝে এই পথে দুপা কেবল চলুন (যা সদগৃহস্থ আশ্রমে থেকেই চলা যেতে পাৱে, সাধক তো চলেনই) শুধু বীজ বপন কৰে দিন, তাহলেও সেই বীজেৰ কখনও নাশ হবে না। প্ৰকৃতিৰ সে ক্ষমতা নেই, এমন কোন অন্ত্র নেই, যা এই সত্যকে মুছে ফেলতে পাৱে। প্ৰকৃতি কেবল আবৱণ চড়াতে পাৱে, কিছু বেশী সময় লাগতে পাৱে; কিন্তু সাধনেৰ আৱলম্বন নষ্ট ক'ৰতে সক্ষম নয়।

আগামী অধ্যায়ে শ্ৰীকৃষ্ণ বললেন যে, সকল পাপীৰ থেকেও বেশী পাপী হোক না কেন, জ্ঞানৱৰ্দ্ধন নৌকাদ্বাৰা নিঃসন্দেহে পার হয়ে যাবে। সেই কথাই এখানে বলছেন— অৰ্জুন ! নিষ্কাম কৰ্মযোগেৰ শুধু বীজারোপণ কৰে দিলেও তাৰ নাশ হয় না। বিপৰীত ফলৱৰ্দ্ধন দোষও এতে হয় না যে, আপনাকে স্বৰ্গ, খন্দি ও সিদ্ধিপৰ্যন্ত পৌঁছিয়ে ছেড়ে দেবে। আপনি এই সাধন ছেড়ে দিলেও, এই সাধন আপনাকে উদ্বার কৰেই ছাড়বে। এই নিষ্কাম কৰ্মযোগেৰ অল্পও সাধন জন্ম-মৃত্যুৰ মহাভয়

থেকে উদ্বার করে। 'অনেকজন্মসংসিদ্ধস্তো যাতি পরাং গতিম্।' (৬/৪৫) অর্থাৎ কর্মের এই বীজারোপণ বহু জন্মের পর সেখানেই পৌঁছিয়ে দেবে, যেখানে পরমধাম, পরমগতি হবে। এই প্রসঙ্গে আরও বললেন—

ব্যবসায়াত্মিকা বুদ্ধিরেকেহ কুরুণন্দন।

বহুশাখা হ্যন্তাশ্চ বুদ্ধযোহ্যবসায়িনামৃ॥ ৪১॥

হে অর্জুন ! এই নিষ্কাম কর্মযোগে ক্রিয়াত্মক বুদ্ধি একটাই। ক্রিয়া ও পরিণামও একটাই। আত্মিক সম্পত্তিই স্থায়ী সম্পত্তি। প্রকৃতির দ্বন্দ্বের মধ্যে থেকে এই সম্পত্তি ধীরে ধীরে অর্জন করাই ব্যবসা। এই ব্যবসা ও নিশ্চয়াত্মক ক্রিয়াও একটাই অথবা তাহলে যাঁরা বহু ক্রিয়ার বিস্তার করেছেন, তাঁরা কি ভজন করেন না ? শ্রীকৃষ্ণ বললেন-না তারা ভজন করে না। সেই সকল ব্যক্তিগণের বুদ্ধি বহুশাখাবিশিষ্ট হয় এবং সেইজন্যই অনন্ত ক্রিয়ার বিস্তার করে নেয়।

যামিমাং পুষ্পিতাং বাচৎ প্রবদ্ধস্ত্যবিপশ্চিতঃ।

বেদবাদরতাঃ পার্থ নান্যদস্তীতি বাদিনঃ॥ ৪২॥

কামাত্মানঃ স্বর্গপরা জন্মকর্মফলপ্রদাম্।

ক্রিয়াবিশেষবহুলাং ভোগেশ্চর্যগতিং প্রতি॥ ৪৩॥

পার্থ ! সেই পুরুষগণ 'কামাত্মানঃ'- কামনাযুক্ত, 'বেদবাদরতাঃ'- বেদবাক্যে অনুরক্ত, 'স্বর্গপরাঃ'- স্বর্গকেই চরমলক্ষ্য বলে মনে করেন যে, এর থেকে উত্তম আর কিছু নেই— তাঁরা এইরূপ বিশ্বাস করেন— এই সকল অবিবেকীগণ জন্ম-মৃত্যুরূপ ফলপ্রদানকারী, ভোগ এবং ঐশ্বর্য লাভের জন্য বহু ক্রিয়ার বিস্তার করে থাকেন। আপাতমধুর বাণীদ্বারা ব্যক্তও করেন। অর্থাৎ অবিবেকীগণের বুদ্ধি অনন্ত ভেদযুক্ত হয়। তাঁরা ফলপ্রদানকারী বাক্যেই অনুরক্ত থাকেন, বেদ বাক্যকেই প্রমাণ বলে মনে করেন, স্বর্গ অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ আর কিছু নেই, এইরূপ বিশ্বাস করেন। তাঁদের বুদ্ধি অনন্ত ভেদযুক্ত হওয়ার ফলে অনন্ত ক্রিয়ার রচনা করে নেন। তাঁরা পরমতত্ত্ব পরমাত্মারই নাম করেন, কিন্তু তার অন্তরালে অনন্ত ক্রিয়ার বিস্তার করে নেন। তাহলে কি অনন্ত ক্রিয়াগুলি কর্ম নয় ? শ্রীকৃষ্ণ বললেন-না, এই অনন্ত ক্রিয়াগুলি কর্ম নয়। তাহলে সেই একটিমাত্র নিশ্চিত ক্রিয়া কি ? শ্রীকৃষ্ণ এখনও পর্যন্ত তা বলছেন না। এখন এতটাই বলছেন যে, অবিবেকীগণের বুদ্ধি অনন্তশাখাযুক্ত হওয়ার

ফলে তাঁরা অনস্ত ক্রিয়ার বিস্তার করে নেন। তাঁরা কেবল যে বিস্তার করেন তা নয়, বরং আলক্ষ্মীরিক শৈলীতে সেসব ব্যক্তি করেন। তার প্রভাব কি হয় ?—

**ভোগেশ্বরপ্রসঙ্গানাং তয়াপহৃতচেতসাম্।**

**ব্যবসায়াঞ্চিকা বুদ্ধিঃ সমাধৌ ন বিধীয়তে॥ ৪৪॥**

তাঁদের বাণীর প্রভাব যাদের যাদের চিন্তের উপর পড়ে, অর্জুন ! তাঁদের বুদ্ধি নাশ হয়। কিছু লাভ করতে পারেন না। সেই বাণী বিমুক্ত চিন্ত এবং ভোগ ঐশ্বর্যে আসন্ত সেই পুরুষগণের অস্তংকরণে ক্রিয়াস্থাক বুদ্ধি থাকে না। ইষ্টে সমাধিস্থ হওয়ার নিশ্চয়াস্থাক ক্রিয়া তাঁদের মধ্যে থাকে না।

এই ধরণের অবিবেকীগণের বাণী শোনেন কারা ? ভোগ ও ঐশ্বর্যে আসন্ত ব্যক্তিই শোনেন, অধিকারী শোনেন না। এরপ ব্যক্তিদের মধ্যে সম ও আদিতত্ত্বে প্রবেশের নিশ্চয়াস্থাক ক্রিয়াসংযুক্ত বুদ্ধি হয় না।

প্রশ্ন ওঠে যে, ‘বেদবাদরতাঃ’- যাঁরা বেদবাক্যে অনুরন্ত তাঁরাও কি ভুল করেন ? এই প্রসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ বললেন—

**ত্রৈগুণ্যবিষয়া বেদা নিষ্ঠেগুণ্যো ভবার্জুন।**

**নির্দৰ্শন্ত্বো নিত্যসত্ত্বস্থো নির্যোগক্ষেম আত্মবান॥ ৪৫॥**

অর্জুন ! ‘ত্রৈগুণ্যবিষয়া বেদা’—বেদ ত্রিগুণপর্যন্ত প্রকাশ করে থাকে। এর বেশী কিছু জানে না। সেইজন্য ‘নিষ্ঠেগুণ্যো ভবার্জুন !’- অর্জুন ! তুমি এই তিনগুণ অতিক্রম করে উপরে ওঠ অর্থাৎ বেদের কার্যক্ষেত্র পার কর। কিরূপে ? এই প্রসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ বলছেন, ‘নির্দৰ্শন্ত্বঃ’- সুখ-দুঃখাদি দ্বন্দ্রহিত, নিত্য সত্যবস্তুতে স্থিত হও এবং যোগক্ষেমের আকাঙ্খারহিত আত্মপরায়ণ হও। এইভাবে উর্ধ্বে ওঠ। প্রশ্ন ওঠে যে, কেবল আমিই উঠবো অথবা আরও কেউ বেদের উর্ধ্বে উঠেছেন ? শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, যিনি বেদের উর্ধ্বে স্থিত তিনি ব্রহ্মকে জানেন এবং যিনি ব্রহ্মকে জানেন তিনিই বিপ্র।

**যাবানর্থ উদপানে সর্বতঃ সম্প্লুতোদকে।**

**তাবান্সর্বেষ বেদেষু ব্রাহ্মণস্য বিজানতঃ॥ ৪৬॥**

পরিপূর্ণ জলাশয় প্রাপ্ত হলে মানুষের ক্ষুদ্র জলাশয়ের যতটুকু প্রয়োজন হয়, যে ব্রাহ্মণ উত্তম প্রকারে ব্রহ্মকে জানেন, তাঁরও বেদের তত্ত্বকুই প্রয়োজন হয়। তাৎপর্য এই যে, যিনি বেদের উর্ধ্বে স্থিত তিনি ব্রহ্মকে জানেন, তিনিই ব্রাহ্মণ। অর্থাৎ তুমি বেদের উর্ধ্বে ওঠ, ব্রাহ্মণ হও।

অর্জুন ক্ষত্রিয় ছিলেন, শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, ব্রাহ্মণ হও। ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় ইত্যাদি বর্ণ স্বভাবজাত ক্ষমতাগুলির নাম। এটা কর্মপ্রধান। জন্ম থেকে নির্ধারিত কোন প্রথা নয়। যিনি গঙ্গার নিকটে অবস্থান করেন, তাঁর ক্ষুদ্র জলাশয়ের কি প্রয়োজন? কেউ তাতে শৌচক্রিয়া করে, কেউ পশুদের স্নান করায়। এর বেশী তার প্রয়োজন নেই। এই প্রকার ব্রহ্মজ্ঞান বিশিষ্ট ব্রাহ্মণের, সেই বিপ্র মহাপুরুষের বেদের ততটাই প্রয়োজন থেকে যায়। প্রয়োজন থাকে অবশ্যই; কারণ অনুগামীদের জন্য তার উপযোগিতা আছে, সেখান থেকেই চর্চা আরম্ভ হবে। অতপর যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ কর্ম করবার সময় যে যে সাবধানতা অবলম্বনের প্রয়োজন, তার প্রতিপাদন করলেন—

কর্মণ্যেবাধিকারস্তে মা ফলেষু কদাচন।

মা কর্মফলহেতুর্ভূর্ম তে সঙ্গোহস্তুকর্মণি॥ ৪৭॥

কেবল কর্মে তোমার অধিকার আছে, ফলে নেই। এইরূপ চিন্তা কর যে ফলই নেই। ফলে যেন কখনও তোমার আসন্তি না হয়, আবার কর্মে অশ্রদ্ধাও যেন না হয়।

এখন পর্যন্ত যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ উনচলিষ্ঠতম শ্লোকে প্রথমবার কর্মের নাম নিয়েছেন। কিন্তু বললেন না কর্ম কি এবং সেই কর্মের অনুষ্ঠান কিভাবে করা হবে? সেই কর্মের বিশেষছের উপর আলোকপাত করলেন যে—

(১) অর্জুন! এই কর্ম করে তুমি কর্মবন্ধন থেকে মুক্ত হয়ে যাবে।

(২) অর্জুন! এতে আরম্ভের অর্থাৎ বীজের নাশ হয় না। একবার এই কর্ম আরম্ভ করে দিলে, প্রকৃতির সে ক্ষমতা নেই যে একে নষ্ট করতে পারে।

(৩) অর্জুন! এতে সীমিতফলরূপ দোষও হয় না যে স্঵র্গ, খন্দি ও সিদ্ধিতে ভুলিয়ে পথভ্রান্ত করে দেবে।

(৪) এই কর্মের অল্পও অনুষ্ঠান জন্ম-মৃত্যুর ভয় থেকে উদ্ধার করে।

কিন্তু এখনও স্পষ্ট করলেন না যে, সেই কর্মটা কি এবং কিরণপে সেই কর্ম সম্পন্ন করা হবে? বর্তমান অধ্যায়ের ৪১তম শ্লোকে তিনি বলেছেন—

(৫) অর্জুন! এতে নিশ্চাত্তক বুদ্ধি একটা। ক্রিয়াও একটাই। তাহলে যাঁরা অনন্ত ক্রিয়ার আচরণ করেন, তাঁরা ভজন করেন না? শ্রীকৃষ্ণ বললেন—না, তাঁরা ভজন করেন না। এর কারণ দেখিয়ে বললেন যে—অবিবেকীগণের বুদ্ধি অনন্তশাখাযুক্ত হয় সেইজন্য তাঁরা অনন্ত ক্রিয়ার বিস্তার করে নেন। তাঁরা সুশোভন বাণী দ্বারা এই ক্রিয়াসমূহকে ব্যক্ত করেন। এবং তাঁদের বাণীর প্রভাব যাঁদের চিন্তের উপর পড়ে, তাঁদের বুদ্ধিও নাশ হয়। অতএব নিশ্চয়াত্তক ক্রিয়া একটাই। কিন্তু একথা বললেন না যে, সেই ক্রিয়া কি?

প্রস্তুত শ্লোকে তিনি বলেছেন—অর্জুন! কর্মে তোমার অধিকার আছে ফলে নেই। ফলের বাসনা কখনও যেন না হয় এবং কর্মেও অশ্রদ্ধা যেন না হয় অর্থাৎ নিরস্তর করবার জন্য মগ্ন হয়ে কর, কিন্তু বললেন না কর্ম কি? প্রায়ই এই শ্লোকের উদাহরণ দিয়ে লোকে বলে যে, যা কিছুই কর না কেন, ফলের কামনা ত্যাগ করে কর, তাহলেই নিষ্কাম কর্মযোগ হবে। এখানে শ্রীকৃষ্ণ কর্ম কি? তা না বলে কেবল কর্মের বিশেষত্বের উপর আলোকপাত করলেন যে, সেই কর্ম কি কি প্রদান করে এবং কর্ম করবার সময় কি কি সাবধানতা অবলম্বন করা হয়? প্রশ্নাটি যেমনের তেমনি রয়ে গেল, যা শ্রীকৃষ্ণ তৃতীয় ও চতুর্থ অধ্যায়ে স্পষ্ট করবেন।

পুনরায় এই বিষয়ের উপর জোর দিলেন—

যোগস্থঃ কুরু কর্মাণি সঙ্গঃ ত্যজ্ঞা ধনঞ্জয়।

সিদ্ধসিদ্ধ্যোঃ সমোভূতা সমত্বঃ যোগ উচ্যতে॥ ৪৮॥

ধনঞ্জয়! আসক্তি ও সঙ্গদোষ ত্যাগ করে, সিদ্ধি ও অসিদ্ধিতে নির্বিকার যোগে স্থিত হয়ে কর্ম কর। কি কর্ম? নিষ্কাম কর্ম কর। 'সমত্বঃ যোগ উচ্যতে'- এই সমত্ব ভাবকেই যোগ বলা হয়। যার মধ্যে বৈষম্য নেই, এইরূপ ভাবকেই সমত্ব বলে। ধ্বনি-সিদ্ধিই বৈষম্য উৎপন্ন করে, আসক্তি আমাদের জন্য বিষম অবস্থার সৃষ্টি করে, ফলের ইচ্ছা বৈষম্যের সৃষ্টি করে সেইজন্য ফলের আকাঙ্ক্ষা যেন না থাকে পুনশ্চ কর্মেও যেন অশ্রদ্ধা না হয়। দৃশ্য-শ্রব্য সকল বস্তুর আসক্তি ত্যাগ করে, প্রাপ্তি ও অপ্রাপ্তির বিষয়ে চিন্তন না করে যোগে স্থিত থেকে শুধু কর্ম কর। যোগ থেকে চিন্ত সরে যেন না যায়।

যোগ হল পরাকার্ষার এক স্থিতি-বিশেষ এবং এর শুরুর কোন এক অবস্থাও হয়। শুরুতেও আমাদের দৃষ্টি লক্ষ্যের উপরই থাকা উচিত। অতএব যোগের উপরই দৃষ্টি নিবন্ধ করে কর্মের অনুষ্ঠান করা উচিত। সমত্বাব অর্থাৎ সিদ্ধি ও অসিদ্ধিতে সমান ভাবকেই যোগ বলে। যাঁকে সিদ্ধি এবং অসিদ্ধি বিচলিত করতে পারে না, যাঁর মধ্যে বৈষম্যের সৃষ্টি হয় না, এইরূপ ভাবের জন্য একে সমত্ব যোগ বলা হয়। এই সমতা ইষ্ট প্রদান করে থাকেন, সেইজন্য একে সমত্বযোগ বলে। সম্পূর্ণ কামনার ত্যাগের জন্য একে নিষ্কাম কর্মযোগও বলে। কর্ম করতে হবে, সেইজন্য একে কর্মযোগ বলে। পরমাত্মার সঙ্গে মিলন করায় তাই এর নাম যোগ অর্থাৎ মিল। এখানে বৌদ্ধিক স্তরে খেয়াল রাখতে হয় যে, সিদ্ধি ও অসিদ্ধিতে যেন সমত্বাব থাকে, আসত্তি উৎপন্ন না হয়, ফলের বাসনাও উদয় না হয়, সেইজন্য এই নিষ্কাম কর্মযোগকে বুদ্ধিযোগও বলা হয়।

দূরেণ হ্যবরং কর্ম বুদ্ধিযোগাদ্বন্দ্বঘ্যঃ।

বুদ্ধৌ শরণমন্তিচ্ছ কৃপণাঃ ফলহেতবঃ ॥ ৪৯ ॥

ধনঞ্জয়! ‘অবরং কর্ম’- নিকৃষ্ট কর্ম, সকাম কর্ম বুদ্ধিযোগ অপেক্ষা নিতান্ত তুচ্ছ। যারা ফলের কামনা করে, তারা কৃপণ। তারা আত্মার সঙ্গে উদার ব্যবহার করে না, অতএব সমত্ব বুদ্ধিযোগের আশ্রয় গ্রহণ কর। মনে যে কামনা আছে তা যদি পূরণও হয়, তাহলেও তা ভোগ করবার জন্য দেহ ধারণ করতে হবে। যদি গমনাগমন বাকী থাকল, তাহলে কিরাপ কল্যাণ? সাধককে মোক্ষের ইচ্ছাও করা উচিত নয়, কারণ বাসনামুক্ত হওয়াকেই মোক্ষ বলে। ফলের চিন্তন করলে সাধকের সময় ব্যর্থই নষ্ট হয় এবং ফললাভ হলে ফলেতেই জড়িয়ে পড়েন। তাঁর সাধনা শেষ হয়ে যায়। এর পর সাধক ভজন করবেন কেন? সেখান থেকেই তিনি পথ হারিয়ে ফেলেন। সেইজন্য সমত্ববুদ্ধির দ্বারা যোগের আচরণ কর।

জ্ঞানমার্গকেও শ্রীকৃষ্ণ বুদ্ধিযোগ বলেছিলেন যে, “অর্জুন! এই বুদ্ধি তোমার জন্য জ্ঞানযোগের বিষয়ে বলা হয়েছে” এবং এখানে নিষ্কাম কর্মযোগকেও বুদ্ধিযোগ বলা হল। বস্তুতঃ উভয়ের মধ্যে পার্থক্য বুদ্ধির ও দৃষ্টিকোণেরই। তাতে লাভ-লোকসানের হিসাব করে, বিবেচনা করে চলতে হয়। এতেও বৌদ্ধিক স্তরে সমত্ব স্থিতি বজায় রাখতে হয়। সেইজন্য একে সমত্ব বুদ্ধিযোগ বলে। তাই হে ধনঞ্জয়! তুমি সমত্ব বুদ্ধিযোগের আশ্রয় গ্রহণ কর, কারণ ফলাকাঙ্ক্ষী অত্যন্ত কৃপণ।

বুদ্ধিযুক্তো জহাতীহ উভে সুকৃতদুষ্কৃতে।  
তস্মাদ্যোগায় যুজ্যস্ব যোগঃ কর্মসু কৌশলম্॥ ৫০॥

সমস্ত বুদ্ধিযুক্ত পুরুষ পুণ্য-পাপ উভয়কে ইহলোকেই ত্যাগ করেন অর্থাৎ পাপ-পুণ্যে লিপ্ত হন না, সেইজন্য সমস্তবুদ্ধিরূপ যোগের অনুষ্ঠান কর। 'যোগঃ কর্মসু কৌশলম'- সমস্ত বুদ্ধির সংযোগে আচরণে কুশলতাই যোগ।

সংসারে কর্ম করবার প্রচলিত দৃষ্টিকোণ দুটি। লোকে কর্ম করে, তাই তারা ফলও পেতে চায় অথবা ফললাভ না হলে কর্ম করতেই চায় না; কিন্তু যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ এই কর্মকে বন্ধনের কারণ বলেছেন। 'আরাধনা'কেই একমাত্র কর্ম বলেছেন। বর্তমান অধ্যায়ে তিনি কর্মের নাম মাত্র নিলেন। তৃতীয় অধ্যায়ের নবম শ্লোকে তার পরিভাষা দিয়েছেন ও চতুর্থ অধ্যায়ে কর্মের স্বরূপের বিস্তারিত ব্যাখ্যা করেছেন। প্রস্তুত শ্লোকে শ্রীকৃষ্ণ সাংসারিক পরম্পরার থেকে সরে কর্ম করবার কৌশল সম্বন্ধে বলেছেন যে, কর্ম কর, শ্রদ্ধাপূর্বক কর; কিন্তু ফলের অধিকার স্বেচ্ছায় ত্যাগ কর। ফল যাবে কোথায়? একেই কর্ম করবার কুশলতা বলে। নিষ্কাম সাধকের সমগ্র শক্তি এই প্রকার কর্মে নিযুক্ত থাকে। আরাধনার জন্যই এই দেহ ধারণ। তবু এই জিজ্ঞাসা স্বাভাবিক যে, তবে কি সর্বদাই কর্ম করে যেতে হবে অথবা এর পরিণামও দেখা যাবে? পরবর্তী শ্লোকটি দেখুন—

**কর্মজং বুদ্ধিযুক্তা হি ফলং ত্যক্তা মনীষিণঃ।**

**জন্মবন্ধবিনির্মুক্তাঃ পদং গচ্ছত্যনাময়ম্॥ ৫১॥**

বুদ্ধিযোগযুক্ত জ্ঞানীগণ কর্মজাত ফলত্যাগ করে জন্ম-মৃত্যুরূপ বন্ধন থেকে মুক্ত হন। তাঁরা নির্দোষ অমৃতময় পরমপদ লাভ করেন।

এখানে তিনি ধরণের বুদ্ধির চিত্রণ করা হয়েছে। (শ্লোক ৩১) সাংখ্য বুদ্ধিতে ফল দুটি স্বর্গ এবং শ্রেণি। (শ্লোক ৫১) কর্মযোগে প্রবৃত্ত বুদ্ধির ফল একটাই—জন্ম-মৃত্যু থেকে মুক্তি, নির্মল অবিনাশী পদলাভ। দুটিই হল যোগক্রিয়া। এর অতিরিক্ত যে বুদ্ধি সোটি অবিবেকজন্য, অনন্ত শাখাযুক্ত, যার ফল হ'ল কর্মভোগের জন্য বারম্বার জন্ম-মৃত্যু।

অর্জুনের দৃষ্টি ত্রিলোকের সাম্রাজ্য এবং দেবগণের অধিপতি পদপর্যন্ত সীমিত ছিল। এতটা লাভের জন্যও তিনি যুদ্ধে প্রবৃত্ত হচ্ছিলেন না। এখানে শ্রীকৃষ্ণ তাঁর

প্রতি নতুন তথ্য উদ্ঘাটিত করলেন যে, আসক্রিশুণ্য কর্মদ্বারা অনাময় পদলাভ হয়। নিষ্কাম কর্মযোগ পরমপদ লাভে সাহায্য করে, যেখানে মৃত্যুর প্রবেশ নেই। এই কর্মে কখন প্রবৃত্তি হবে?—

যদা তে মোহকলিলং বুদ্ধিব্যতিরিষ্যতি।

তদা গন্তাসি নির্বেদং শ্রোতব্যস্য শ্রুতস্য চ ॥ ৫২ ॥

যখন তোমার (প্রত্যেক সাধকের) বুদ্ধি মোহরূপ কর্দম অতিক্রম করবে, লেশমাত্রও মোহ থাকবে না অর্থাৎ পুত্র, ধন, প্রতিষ্ঠা এগুলির সঙ্গে যে সম্বন্ধ, তা ছিন হয়ে যাবে, তখন যা শ্রবণযোগ্য তা তুমি শুনতে পাবে এবং শোনার ফলস্বরূপ বৈরাগ্য উৎপন্ন হবে অর্থাৎ তা আচরণ করতে সমর্থ হবে। এখন যা শ্রবণযোগ্য, তা তুমি শোননি, তাই আচরণের প্রশ্নই ওঠে না। এই যোগ্যতার উপর পুনরায় আলোকপাত করলেন—

শ্রতিবিপ্রতিপন্না তে যদা স্থাস্যতি নিশ্চলা ।

সমাধাবচলা বুদ্ধিস্তদা যোগমবান্ধ্যসি ॥ ৫৩ ॥

নানা বেদবাক্য শ্রবণে বিক্ষিপ্ত তোমার বুদ্ধি যখন পরমাত্মস্বরূপে সমাধিস্থ হয়ে আচল, স্থির হবে, তখন তুমি সমস্তযোগ লাভ করবে। পূর্ণ সমস্তিত্ব লাভ করবে, যাকে ‘অনাময় পরমপদ’ বলে। এই হল যোগের পরাকার্ষা এবং অপ্রাপ্তের প্রাপ্তি। বেদ থেকে শিক্ষা অর্জন করা হয়, কিন্তু শ্রীকৃষ্ণ বলছেন, ‘শ্রতিবিপ্রতিপন্না’- শ্রতিগুলির নানা সিদ্ধান্ত শ্রবণে বুদ্ধি বিচলিত হয়। লোকে নানা সিদ্ধান্ত শ্রবণ করে থাকে, কিন্তু যা শ্রবণযোগ্য তার থেকে তফাতেই থাকে।

যখন এই বিচলিত বুদ্ধি সমাধিতে স্থির হবে, তখন তুমি যোগের পরাকার্ষা অমৃত পদলাভ করবে। একথা শোনার পর অর্জুনের উৎকর্ষ স্বাভাবিক ছিল যে, সেই মহাপুরুষগণ কেমন হন, যাঁরা অনাময় পরমপদে স্থিত, সমাধিতে যাঁদের বুদ্ধি স্থির? তিনি প্রশ্ন করলেন—

অর্জুন উবাচ

স্থিতপ্রভ্রস্য কা ভাষা সমাধিস্থস্য কেশব।

স্থিতধীঃ কিং প্রভাষেত কিমাসীত ব্রজেত কিম ॥ ৫৪ ॥

“সমাধীয়তে চিন্তঃ যশ্চিন্স আত্মা এব সমাধিঃ” অর্থাৎ যাতে চিন্তের সমাধান করা হয়, সেই আত্মাই হল সমাধি। যিনি অনন্দি তত্ত্বের সমতুল্য অবস্থা লাভ করে থাকেন, তাঁকেই সমাধিস্থ বলে। অর্জুন জিজ্ঞাসা করলেন-হে কেশব! সমাধিতে স্থিত, স্থিরবুদ্ধিসম্পন্ন মহাপুরুষের লক্ষণ কি? স্থিতপ্রজ্ঞ পুরুষ কিভাবে কথা বলেন? কিরণপে অবস্থান করেন? কিরণপেই বা তিনি বিচরণ করেন? অর্জুন চারটি প্রশ্ন করলেন। ভগবান् শ্রীকৃষ্ণ স্থিতপ্রজ্ঞের লক্ষণ ব্যক্ত করে বললেন-

### শ্রীভগবানুবাচ

প্রজহাতি যদা কামান্ সর্বান্ পার্থ মনোগতান্।  
আত্মন্যেবাত্মনা তৃষ্ণঃ স্থিতপ্রজ্ঞস্তদোচ্যতে॥ ৫৫॥

পার্থ! যখন মানুষ সমস্ত মনোগত বাসনা সম্পূর্ণরূপে পরিত্যাগ করেন, তখন তিনি আত্মাদ্বারাই আত্মাতে সন্তুষ্ট হন ও তাঁকে তখন স্থিরবুদ্ধিযুক্ত বলা হয়। কামনাগুলি ত্যাগ করলেই আত্মার দিগ্দর্শন হয়। এইরূপ আত্মারাম, আত্মতৃপ্তি মহাপুরুষকেই স্থিতপ্রজ্ঞ বলা হয়।

দুঃখেৰনুদ্বিগ্নমনাঃ সুখেযু বিগতস্পৃহঃ।

বীতরাগভয়ক্রোধঃ স্থিতথীমুনিগ্রন্থতে॥ ৫৬॥

দৈহিক, দৈবিক এবং ভৌতিক দুঃখে যাঁর মন উদ্বেগহীন, সুখে নিঃস্পৃহ, যাঁর আসক্তি, ভয় এবং ক্রোধনাশ হয়েছে, মননশীলতার চরমসীমায় যিনি পৌঁছেছেন, তাঁকেই স্থিতপ্রজ্ঞ বলা হয়।

যঃ সর্বত্রানভিস্মেহস্তত্ত্বপ্রাপ্য শুভাশুভম্।

নাভিনন্দতি ন দ্বেষ্টি তস্য প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা॥ ৫৭॥

যে পুরুষ সর্বত্র স্নেহবর্জিত, শুভাশুভ প্রাপ্তিতে যিনি আনন্দিত বা দুঃখিত হন না, তাঁর বুদ্ধি স্থির হয়েছে। শুভ পরমাত্মা-স্঵রূপ-এ সংযোগ করে এবং অশুভ প্রকৃতিতে অলুক করে রাখে। কিন্তু স্থিতপ্রজ্ঞ পুরুষ অনুকূল পরিস্থিতিতে আনন্দিত হন না এবং প্রতিকূল পরিস্থিতিতে দুঃখিত হন না; কারণ প্রাপ্তযোগ্য বস্তু তাঁর থেকে ভিন্ন নেই এবং সেই বিকারগুলিও নেই, যেগুলি পতিত করে দেয় অর্থাৎ তখন তাঁর সাধনার প্রয়োজন থাকে না। এরূপ ব্যক্তিকে স্থিতপ্রজ্ঞ বলা হয়।

যদা সংহরতে চায়ৎ কুর্মেহসনামীৰ সৰ্বশঃ।

ইন্দ্ৰিয়াণীলিয়াৰ্থেভ্যস্তস্য প্ৰজা প্ৰতিষ্ঠিতা। ৫৮।।

যেমন কচ্ছপ নিজ অঙ্গসমূহ সঙ্কুচিত করে, সেইরূপ এই পুৱৰ্য যখন চারদিক থেকে নিজ ইন্দ্ৰিয়সমূহকে প্ৰত্যাহার কৰেন, তখন তাৰ বুদ্ধি স্থিৰ হয়। বিপদেৱ সম্মুখীন হলেই কচ্ছপ যেমন নিজেৰ মাথা-পা সঙ্কুচিত কৰে, সেইরূপ যে পুৱৰ্য বিষয়ে বিচৰণশীল ইন্দ্ৰিয়গুলিকে বলপূৰ্বক বিষয় থেকে আকৰ্ষণ কৰে হাদয়-দেশে নিৱৰ্ণন কৰেন, সেইকালে সেই পুৱৰ্যৰেৱ বুদ্ধি স্থিৰ হয়; কিন্তু এটা একটা দৃষ্টান্ত মাত্ৰ। বিপদ দূৰ হলেই কচ্ছপ নিজ অঙ্গসমূহ পুনৰায় প্ৰসাৱিত কৰে, স্থিতপ্ৰজ্ঞ মহাপুৱৰ্যও কি সেই প্ৰকাৱ বিষয়ে রস নিতে আৱস্থা কৰেন? এই প্ৰসঙ্গে বলছেন—

বিষয়া বিনিৰ্বৰ্তন্তে নিৱাহারস্য দেহিনঃ।

ৱসবৰ্জৎ রসোহপ্যস্য পৱং দৃষ্ট্বা নিৰ্বৰ্ততে।। ৫৯।।

ইন্দ্ৰিয় দ্বাৰা যে পুৱৰ্যগণ বিষয়ভোগ গ্ৰহণ কৰেন না, তাৰা বিষয় থেকে নিবৃত্ত হন, কাৱণ তাৰা গ্ৰহণ কৰেন না; কিন্তু তাৰে আসক্তি দূৰ হয় না। আসক্তি রয়ে যায়। সম্পূৰ্ণৱৰ্ণপে ইন্দ্ৰিয়সমূহকে বিষয় থেকে আকৰ্ষণ কৰেন যে নিষ্কামকৰ্মীগণ তাৰে আসক্তি ‘পৱং দৃষ্ট্বা’— পৱমতত্ত্ব পৱমাঞ্চার সাক্ষাৎকাৱ হলে নিবৃত্ত হয়।

মহাপুৱৰ্য কচ্ছপেৰ মত নিজেৰ ইন্দ্ৰিয়সমূহকে বিষয়ে লিপ্ত কৰেন না। ইন্দ্ৰিয়সমূহ বিষয় থেকে নিবৃত্ত হলে সংস্কাৰ লুপ্ত হয়ে যায়। এদেৱ আজ্ঞাপ্ৰকাশ ঘটে না। নিষ্কাম কৰ্মযোগেৱ আচৰণ কৱে পৱমাঞ্চার প্ৰত্যক্ষ দৰ্শনেৰ সঙ্গে সঙ্গে সেই পুৱৰ্যৰেৱ বিষয়াসক্তি দূৰ হয়। চিন্তন পথে প্ৰায়ই হঠকাৱিতা দেখা যায়। দৃঢ় থেকে ইন্দ্ৰিয়গুলিকে বিষয় থেকে আকৰ্ষণ কৱে নিবৃত্ত হয়ে যান, কিন্তু মনে আসক্তি ও বিষয়-চিন্তন লেগেই থাকে। এই আসক্তি ‘পৱং দৃষ্ট্বা’—পৱমাঞ্চার সাক্ষাৎকাৱ হলেই দূৰ হয়, তাৰ আগে নয়।

পূজ্য মহারাজজী এই সম্বন্ধে নিজেৰ জীবনেৰ একটি ঘটনা বলতেন। গৃহত্যাগেৱ পূৰ্বে তাৰ প্ৰতি তিনিবাৰ আকাশবাণী হয়েছিল। আমি জিজ্ঞাসা কৱেছিলাম— “মহারাজজী! আপনাব প্ৰতি আকাশবাণী কেন হয়েছিল? আমাদেৱ প্ৰতি তো হয়নি।” তখন মহারাজজী বলেছিলেন— “হো! ই শক্তা মোহঁকে ভই রহী।” অৰ্থাৎ এই সন্দেহ আমাৱও হয়েছিল। তখন অনুভব হল যে, আমি গত সাত জন্ম

থেকে সাধু। চার জন্ম কেবল সাধুর বেশে তিলক কেটে, ভস্ম মেঝে, কোথাও কমঙ্গলু নিয়ে বিচরণ করেছি। যোগক্রিয়ার জ্ঞান ছিল না। কিন্তু গত তিনজন্ম ধরে যেমন হওয়া উচিত, তেমনি সাধু ছিলাম। আমার অস্তরে যোগক্রিয়া জাগ্রত ছিল। পূর্ব জন্মেই নিবৃত্তি হয়ে এসেছিল, কিন্তু দুটি ইচ্ছা বাকী ছিল, স্ত্রী ও গাঁজা। অস্তর্মনে ইচ্ছা ছিল, কিন্তু বাইরে থেকে আমি শরীরকে দৃঢ় রেখেছিলাম। মনে বাসনা ছিল, তাই জন্ম নিতে হয়েছে। জন্মের পর অল্প সময়ের মধ্যেই ভগবান্ সবকিছু দেখিয়ে-শুনিয়ে নিবৃত্তি প্রদান করেছেন। দুই-তিন তুঁড়ি দিয়েই সাধু বানিয়ে দিয়েছেন।

এই কথাই শ্রীকৃষ্ণ বললেন যে, ইন্দ্রিয়ের সাহায্যে যিনি বিষয় গ্রহণ করেন না, সেই পুরুষেরও বিষয় থেকে নিবৃত্তি হয়, কিন্তু সাধনা করে পরমপুরূষ পরমাত্মার সাক্ষাৎকার হলে বিষয়গুলির আসক্তি ও চলে যায়। অতএব সাক্ষাৎকার যতক্ষণ না হয়, ততক্ষণ কর্ম করা উচিত।

উর কছু প্রথম বাসনা রহী। প্রভুপদ প্রীতি সরিত সো বহী॥

(রামচরিতমানস, ৫/৪৮/৬)

ইন্দ্রিয়গুলিকে বিষয় থেকে নিবৃত্তি করা অত্যন্ত কঠিন। এর উপর আলোকপাত করলেন—

যততো হ্যপি কৌন্তেয় পুরুষস্য বিপশ্চিতঃ।

ইন্দ্রিয়াণি প্রমাথীনি হরন্তি প্রসভং মনঃ॥ ৬০॥

কৌন্তেয়! প্রথমনশীল ইন্দ্রিয়সমূহ যত্নশীল মেধাবী পুরুষের মনকে বলপূর্বক হরণ করে, বিচলিত করে দেয়। সেইজন্য—

তানি সবাণি সংযম্য যুক্ত আসীৎ মৎপরঃ।

বশে হি যস্যেন্দ্রিয়াণি তস্য প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা॥ ৬১॥

সেই ইন্দ্রিয়গুলিকে সম্পূর্ণরূপে সংযত করে, যোগযুক্ত এবং সমর্পণের সঙ্গে আমার আশ্রয়ে এস; কারণ যাঁর ইন্দ্রিয়সকল বশীভূত হয়েছে তাঁরই বুদ্ধি স্থির হয়। এখানে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ সাধনের নিষেধাত্মক অবয়বগুলির সঙ্গে তার বিধেয়াত্মক দিকের উপর জোর দিলেন। কেবল সংযম ও নিষেধারা ইন্দ্রিয়গুলি বশীভূত হয়

না। সমর্পণের সঙ্গে ইষ্ট-চিন্তন অনিবার্য। ইষ্ট-চিন্তনের অভাবে বিষয়-চিন্তন হবে, যার কুপরিণাম শ্রীকৃষ্ণের শব্দেই দেখুন—

ধ্যায়তো বিষয়ান্ পুংসঃ সঙ্গেষুপজায়তে।

সঙ্গাংসংগ্রায়তে কামঃ কামাং ক্রোধোহভিজায়তে॥ ৬২॥

বিষয়সমূহ চিন্তন করতে করতে মানুষের সেই সকলে আসত্তি জন্মে, আসত্তি থেকে কামনা জাগে, কামনা-পূর্তিতে বাধা পেলে ক্রোধ উৎপন্ন হয়। ক্রোধ থেকে কি হয়?—

ক্রোধাদ্ভবতি সম্মোহঃ সম্মোহাংস্মৃতিবিভ্রমঃ।

স্মৃতিভূক্ত বুদ্ধিনাশো বুদ্ধিনাশাংপ্রণশ্যতি॥ ৬৩॥

ক্রোধ থেকে মৃচ্ছাব অর্থাৎ অবিবেক উৎপন্ন হয়। নিত্য-অনিত্য বস্তুর জ্ঞান থাকে না। অবিবেক থেকে স্মৃতি বিভ্রম হয়। (যেমন অর্জুনের হয়েছিল—‘অমতীব চ মে মনঃ’ গীতা সমাপনের সময় তিনি বলেছেন—‘নষ্টো মোহঃ স্মৃতির্লক্ষ্মা’ (১৮/৭৩)। কি করা উচিত, কি করা উচিত নয়, তার নির্ণয় করা যায় না), স্মৃতিভ্রম হলে যোগপরায়ণ বুদ্ধি বিনষ্ট হয় এবং বুদ্ধি বিনষ্ট হলে এই পূরুষ নিজ শ্রেয়-সাধন পথ থেকে বিচ্যুত হয়।

এখানে শ্রীকৃষ্ণ জোর দিলেন যে, বিষয়ের চিন্তন করা উচিত নয়। সাধকের নাম, রূপ, লীলা ও ধার্মেই কোথাও না কোথাও মনকে নিযুক্ত রাখা উচিত। ভজনে অলসসতা করলে মন বিষয়াভিমুখ হবে। বিষয়ের চিন্তন থেকে আসত্তি জন্মে, আসত্তি থেকে সেই বিষয়ের কামনা সাধকের অস্তর্মনে জাগে। কামনা পূর্তিতে ব্যবধান উৎপন্ন হলে ক্রোধ, ক্রোধ থেকে অবিবেক, অবিবেক থেকে স্মৃতি-বিভ্রম এবং স্মৃতি-বিভ্রম থেকে বুদ্ধি বিনষ্ট হয়। নিষ্কাম কর্মযোগকে বুদ্ধিযোগ বলা হয়। কারণ বুদ্ধিস্তরে এর বিচার করা উচিত যে, কামনাগুলি যেন না জাগে, ফল নেই। কামনা জাগলে এই বুদ্ধিযোগ নষ্ট হয়ে যায়। ‘সাধন করিয় বিচারহীন মন শুন্দ হোয় নহীঁ তৈসে।’ (বিনয়পত্রিকা, পদসংখ্যা ১১৫/৩) অতএব বিচার আবশ্যিক। বিচারশূণ্য পূরুষ শ্রেয়-সাধন থেকে পতিত হয়। সাধন-ক্রম ভঙ্গ হয়, সর্বথা নষ্ট হয় না। যেখানে অবরুদ্ধ হয়েছিল, ভোগের পর সাধন সেইখান থেকেই পুনরায় আরম্ভ হয়।

বিষয়াভিমুখ সাধকের এই গতি হয়। স্বাধীনচেতা সাধক কোন্ গতিলাভ করেন? একে আধার করে শ্রীকৃষ্ণ বললেন—

রাগদেষবিষ্যতৈক্ষণ্ঠ বিষয়ানিন্দ্রিয়েশ্চরন्।

আত্মবশ্যেবিধেয়াত্মা প্রসাদমধিগচ্ছতি ॥ ৬৪ ॥

আত্ম-বিধিপ্রাপ্ত প্রত্যক্ষদর্শী মহাপুরুষ রাগ-দেষ মুক্ত হয়ে স্ববশীভূত ইন্দ্রিয়সমূহ দ্বারা ‘বিষয়ান্ চরন্’- বিষয়সমূহে বিচরণ করেও ‘প্রসাদমধিগচ্ছতি’- অন্তঃকরণের নির্মলতা লাভ করেন। তিনি নিজের ভাবদৃষ্টিতে অবস্থান করেন। মহাপুরুষের জন্য বিধি-নিষেধ থাকে না। তাঁরজন্য অশুভ বলে কিছু থাকে না, যার থেকে তিনি নিজেকে বাঁচিয়ে চলবেন এবং শুভ বলেও কিছু থাকে না, যা তিনি কামনা করবেন।

প্রসাদে সর্বদুঃখানাং হানিরস্যোপজায়তে ।

প্রসন্নচেতসো হ্যাশু বুদ্ধিঃ পর্যবর্তিষ্ঠতে ॥ ৬৫ ॥

ভগবানের পূর্ণ কৃপাপ্রসাদ ‘ভগবত্তা’র সঙ্গে সংযুক্ত হলে সেই পুরুষের সর্বদুঃখের অভাব হয়, ‘দুঃখালয়ং অশাশ্঵তম্’ (গীতা, ৮/১৫) সংসারের অভাব হয় এবং সেই প্রসন্নচিন্তিত পুরুষের বুদ্ধি শীঘ্রই উত্তমরূপে স্থির হয়। কিন্তু যিনি যোগযুক্ত নন, তাঁর অবস্থার কথা বলবার প্রসঙ্গে—

নাস্তি বুদ্ধিরযুক্তস্য ন চাযুক্তস্য ভাবনা ।

ন চাভাবয়তঃ শাস্তিরশাস্ত্বস্য কুতঙ্গ সুখম্ ॥ ৬৬ ॥

যোগ-সাধনাশূণ্য পুরুষের অন্তঃকরণে সকাম বুদ্ধি থাকে। এই অযুক্ত ব্যক্তির অন্তঃকরণে ভাবও হয় না। ভাববিহীন পুরুষের শাস্তি কোথায়? এইরূপ অশাস্ত পুরুষের সুখ কোথায়? যোগ-ক্রিয়ার আচরণ করবার পর কিছু অনুভব হলেই ভাব জন্মায়। ‘জানে বিনু ন হোই পরতীতি’ (মানস, ৭/৮৮- খ/৭) ভাবনা হলে শাস্তি হয় না এবং অশাস্ত পুরুষের সুখ অর্থাৎ শাশ্বত, সনাতনের প্রাপ্তি হয় না।

ইন্দ্রিয়াণাং হি চরতাং যন্মানোহনুবিধীয়তে ।

তদস্য হরতি প্রজ্ঞাং বাযুর্নার্বমিবান্তসি ॥ ৬৭ ॥

বায়ু যেমন জলস্থিত নৌকাকে বলপূর্বক গন্তব্য স্থান থেকে দূরে নিয়ে যায়, সেইরূপ বিষয়সমূহে বিচরণশীল ইন্দ্রিয়গুলির মধ্যে, যে ইন্দ্রিয়টিকে মন অনুসরণ করে, সেই একটিমাত্র ইন্দ্রিয়ই ঐ অযুক্ত পুরুষের বুদ্ধি হ্রণ করে। অতএব যোগের আচরণ অনিবার্য। ক্রিয়াত্মক আচরণের উপর শৈক্ষণ পুনরায় জোর দিলেন—

তস্মাদস্য মহাবাহো নিগৃহীতানি সর্বশঃ।

ইন্দ্রিয়াণীন্দ্রিয়ার্থেভ্যস্তস্য প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা ॥ ৬৮ ॥

হে মহাবাহো! সেইজন্য যে পুরুষের ইন্দ্রিয়সমূহ বিষয় থেকে সর্বপ্রকারে নিখৃত হয়েছে, তাঁর বুদ্ধিই স্থির হয়। ‘বাঞ্ছ’ কার্যক্ষেত্রের প্রতীক। ভগবানকে ‘মহাবাঞ্ছ’ এবং ‘আজানুবাঞ্ছ’ বলা হয়। তিনি হাত-পা ব্যতীত সর্বত্র কার্য করেন। তাতে যিনি স্থিতি লাভ করেন অথবা যিনি সেই ভগবত্তার দিকে অগ্রসর, তিনিও মহাবাঞ্ছ। শৈক্ষণ ও অর্জুন উভয়েই মহাবাঞ্ছ।

যা নিশা সর্বভূতানাং তস্যাং জাগর্তি সংযমী।

যস্যাং জাগ্রতি ভূতানি সা নিশা পশ্যতো মুনেৎ ॥ ৬৯ ॥

সর্বভূতের পক্ষে পরমাত্মা রাত্রিস্বরূপ; কারণ তিনি দৃশ্যমান নন, বিচারের অধীন নন, তাই রাত্রি স্বরূপ। সেই রাত্রিতে, পরমাত্মাতে স্থিত সংযমী পুরুষ উন্নমরণে দেখেন, বিচরণ করেন, জাগ্রত থাকেন; কারণ সেখানে তাঁর প্রবেশ আছে। যোগী ইন্দ্রিয়সমূহের সংযমের দ্বারা তাঁতে স্থিতি লাভ করেন। যে বিনাশশীল সাংসারিক সুখ-ভোগের জন্য ভূতগণ দিন-রাত পরিশ্রম করে, যোগীর পক্ষে তা রাত্রিস্বরূপ।

রমা বিলাসু রাম অনুরাগী। তজত বমন জিমি জন বড়ভাগী ॥।

(রামচরিতমানস, ২/৩২৩/৮)

যিনি যোগী পরমার্থ পথে নিরন্তর সজাগ এবং ভৌতিক ইচ্ছা থেকে সর্বথা মুক্ত, তিনিই ইষ্টে প্রবেশ লাভ করেন। তিনি এই সংসারেই থাকেন; কিন্তু তাঁর উপর সংসারের কোন প্রভাব পড়ে না। মহাপুরুষ কিভাবে অবস্থান করেন, এখানে তারই বর্ণনা করা হয়েছে—

আপূর্যমাণমচলপ্রতিষ্ঠৎঃ

সমুদ্রমাপঃ প্রবিশন্তি যদ্বৎ।

## তত্ত্বকামা যৎ প্রবিশন্তি সর্বে

স শান্তিমাপ্নোতি ন কামকামী ॥৭০॥

যেমন পরিপূর্ণ অচল প্রতিষ্ঠিত সমুদ্রে নদীগুলি প্রচণ্ড বেগে প্রবেশ করে, তাতে লীন হয়ে আঘাতারা হয়ে যায়, সেইরূপ পরমাত্মাতে স্থিত স্থিতপ্রজ্ঞ পুরুষের মনে ভোগগুলি কোন বিকার উৎপন্ন না করে তাঁর মধ্যে বিলীন হয়ে যায়। এরপে পুরুষ পরমশান্তি লাভ করেন। কিন্তু যিনি বিষয় কামনা করেন, তাঁর পক্ষে শান্তি লাভ অসম্ভব।

ভয়ঙ্কর বেগে প্রবাহিত নদীগুলির শ্রোত ফসল নষ্ট করে, প্রাণীদের হত্যা করে, নগর প্লাবন, হাহাকারের সৃষ্টি করে প্রচণ্ডবেগে সমুদ্রে মিলিত হয়; কিন্তু সমুদ্রে বিক্ষেপের সৃষ্টি করতে পারে না, বরং তাতেই সমাহিত হয়। সেইরূপ স্থিতপ্রজ্ঞ মহাপুরুষের প্রতি বিষয়তোগ ততটা বেগেই আসে কিন্তু সমাহিত হয়ে যায়। ঐ মহাপুরুষের অন্তরে শুভ অথবা অশুভ কোন সংস্কার উৎপন্ন করতে পারে না। যোগীর কর্ম ‘অশুল্ক’ ও ‘অকৃষ্ণ’ হয়। কেননা যে চিত্তে সংস্কার উৎপন্ন হত, তা নিরংদ্বন্দ্ব এবং বিলীন হয়ে গেছে। এর সঙ্গেই ভগবত্তার স্থিতিলাভ হয়েছে। এখন সংস্কার জন্মাবে কোথায়? এই একটি শ্লোকেই শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনের কয়েকটাই জিজ্ঞাসার সমাধান করে দিলেন। তাঁর জিজ্ঞাসা ছিল যে, স্থিতপ্রজ্ঞ মহাপুরুষের লক্ষণ কি? কিভাবে কথা বলেন, অবস্থান করেন, বিচরণ করেন? শ্রীকৃষ্ণ একটা বাক্যেই উত্তর দিলেন যে, তিনি সমুদ্বিবৎ হন। তাঁরজন্য বিধি-নিয়েধ হয় না যে, এইভাবে বস, চল। তিনিই পরমশান্তি লাভ করেন, কারণ তিনি সংযমী। ভোগাকাঙ্ক্ষী শান্তি পান না। এর উপর জোর দিয়ে বলা হয়েছে—

বিহায় কামান্যঃ সর্বান् পুমাংশ্চরতি নিঃস্পৃহঃ।

নির্মমো নিরহঙ্কারঃ স শান্তিমধিগচ্ছতি ॥৭১॥

যে পুরুষ সমস্ত কামনা ত্যাগ করে ‘নির্মমঃ’-আমি ও আমার এই ভাব এবং অহঙ্কাররহিত এবং স্পৃহাশূণ্য হয়ে পর্যটন করেন, তিনি পরমশান্তি লাভ করেন, যারপর কিছু পাওয়া বাকী থাকে না।

এষা ব্রাহ্মী স্থিতিঃ পার্থ নৈনাং প্রাপ্য বিমুহ্যতি।

স্থিত্বাস্যামন্তকালেহপি ব্ৰহ্মনির্বাণমৃচ্ছতি ॥৭২॥

হে পার্থ ! উপর্যুক্ত অবস্থাই ব্রহ্মপ্রাপ্ত পুরুষের স্থিতি । সমুদ্রবৎ সেই মহাপুরুষে বিষয়সমূহ নদীগুলির মতো বিলীন হয়ে যায় । তিনি পূর্ণ সংয়মী এবং প্রত্যক্ষতঃ পরমাত্মাদর্শী হন । কেবল ‘অহং ব্রহ্মাস্মি’ পড়ে নিলে বা কর্তস্ত করে নিলেই এই স্থিতি লাভ হয় না । সাধন করলে তবেই লাভ হয় । এরপ মহাপুরুষ ব্রহ্মনিষ্ঠাতে স্থিত থেকে অস্তিম সময়েও ব্রহ্মানন্দ লাভ করেন ।

### নিষ্কর্ষ –

প্রায়ই লোকে বলে যে, দ্বিতীয় অধ্যায়েই গীতাশাস্ত্র পূর্ণ হয়, কিন্তু যদি কেবল কর্মের নামমাত্র নিলেই কর্ম পূর্ণ হয়ে যেত, তাহলে এখানেই গীতার সমাপন ভাবা হত । বর্তমান অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন যে— অর্জুন ! নিষ্কাম কর্মযোগের বিষয়ে শোন, যা জেনে তুমি সংসার-বন্ধন থেকে মুক্ত হয়ে যাবে । কর্ম করাতে তোমার অধিকার আছে, কর্মফলে নেই, আবার সেই কর্ম করবার সময় তোমার অশ্রদ্ধাও যেন উৎপন্ন না হয়, নিরস্তর করবার জন্য তৎপর হও । এর পরিণামস্বরূপ তুমি ‘পরং দৃষ্ট্বা’ (২/৫৯) — পরমপুরুষের দর্শন করে স্থিতপ্রজ্ঞ হবে, পরমশাস্ত্র লাভ করবে । কিন্তু একথা বললেন না কর্ম কি ?

এটি ‘সাংখ্যযোগ’ নামক অধ্যায় নয় । এই নাম টীকাকারের দেওয়া, শাস্ত্রকার দেননি । তাঁরা নিজের বুদ্ধি অনুসারে গ্রহণ করেন, তাতে আশচর্য কি ?

বর্তমান অধ্যায়ে কর্মের গৌরব, করবার সময় সাবধানতার অবলম্বন এবং স্থিতপ্রজ্ঞের লক্ষণ প্রভৃতি বর্ণনা করে শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনের মনে কর্মের প্রতি উৎকর্ষ জাগিয়েছিলেন । তাঁর মনে জিজ্ঞাসা উৎপন্ন করেছিলেন । আত্মা শাশ্঵ত, সনাতন, তাঁকে প্রত্যক্ষ করে তত্ত্বদর্শী হও । এর প্রাপ্তির পথ দুটি—জ্ঞানযোগ ও নিষ্কাম কর্মযোগ ।

নিজের সামর্থ্য অনুযায়ী, স্বয়ং লাভ-লোকসানের নির্ণয় করে কর্মে প্রবৃত্ত হওয়া জ্ঞানমার্গ এবং ইষ্টের উপর নির্ভর করে আত্মসমর্পণের মধ্য দিয়ে সেই কর্মেই প্রবৃত্ত হওয়াকে নিষ্কাম কর্মমার্গ অথবা ভক্তিমার্গ বলে । গোস্বামী তুলসীদাসজী উভয়ের বর্ণনা এইভাবে করেছেন—

মোরে প্রৌঢ় তনয় সম গ্যানী । বালক সুত সম দাস অমানী ॥

জনহি মোর বল নিজ বল তাহী । দুর্ছ কহঁ কাম ক্রোধ রিপু আহী ॥

আমার ভজনাকারী দুই প্রকারের—একটি জ্ঞানমার্গী, অন্যটি ভক্তিমার্গী। নিষ্কাম কর্মমার্গী অথবা ভক্তিমার্গী শরণাগত হয়ে, আমার আশ্রয় নিয়ে চলেন, জ্ঞানযোগী নিজের শক্তি সামর্থ্য অনুসারে, নিজের লাভ-লোকসান বিচার করে নিজের উপর নির্ভর করে চলেন, যদিও উভয়েরই শক্তি এক। জ্ঞানমার্গীকে কাম-ক্রোধাদি শক্তিদের দমন করতে হয় এবং নিষ্কাম কর্মযোগীকেও এদের সঙ্গেই যুদ্ধ করতে হয়। উভয়েই কামনা-ত্যাগ করেন এবং উভয় মাগেই যে কর্ম করা হয় তা’এক। “এই কর্মের পরিণাম পরমশাস্ত্র লাভ করবে।” কিন্তু কর্ম কি? বলা হয়নি। এখন আপনার মনেও এই জিজ্ঞাসার উদয় হয়েছে নিশ্চয় যে, কর্ম কি? অর্জুনের মনেও কর্মের প্রতি জিজ্ঞাসা উৎপন্ন হয়েছে। তৃতীয় অধ্যায়ের আরম্ভেই তিনি কর্মবিষয়ক প্রশ্ন করেছেন। অতএব—

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্ৰহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণার্জুন সংবাদে ‘কর্মজিজ্ঞাসা’ নাম দ্বিতীয়োহথ্যায়ঃ ॥২॥

এই প্রকার শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারূপী উপনিষদ্ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা ও যোগশাস্ত্র বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনের সংবাদে ‘কর্মজিজ্ঞাসা’ নামক দ্বিতীয় অধ্যায় পূর্ণ হ'ল।

ইতি শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে  
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়াঃ ‘যথার্থগীতা’ ভাষ্যে ‘কর্মজিজ্ঞাসা’ নাম দ্বিতীয়োহথ্যায়ঃ ॥২॥

এই প্রকার শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দজীর শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত ‘শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা’র ভাষ্য ‘যথার্থ গীতা’তে ‘কর্মজিজ্ঞাসা’ নামক দ্বিতীয় অধ্যায় সমাপ্ত হ'ল।

॥ হরিঃ ওঁ তৎসৎ ॥

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মানে নমঃ ।।

## ।। অথ তৃতীয়োহথ্যাযঃ ।।

দ্বিতীয় অধ্যায়ে ভগবান শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, এই বুদ্ধি তোমার জন্য জ্ঞানমার্গের বিষয়ে বলা হয়েছে। সেই বুদ্ধি কি? এই যে যুদ্ধ কর। এই যুদ্ধে বিজয়ী হলে মহামহিম স্থিতি এবং পরাজয় হলে দেবত্বলাভ হবে। জয়লাভ করলে সর্বস্ব এবং পরাভু হলে দেবত্ব, কিছু লাভ হবেই। অতএব এই দৃষ্টিতে লাভ-লোকসান দুটিতেই কিছু না কিছু লাভ হবে। কিষ্ণন্নাত্র ক্ষতি নেই। পুনরায় বললেন— এখন তুমি নিষ্কাম কর্মযোগের বিষয়ে শোন, যে বুদ্ধির সঙ্গে যুক্ত হয়ে তুমি কর্মবন্ধন থেকে সম্পূর্ণরূপে মুক্ত হয়ে যাবে। পুনরায় এই কর্মের বিশেষত্বের উপর আলোকপাত করলেন। কর্ম করবার সময় সাবধান হতে বললেন এবং ফলের আকাঙ্ক্ষা ত্যাগ করতে বললেন। কামনাশূন্য হয়ে কর্মে প্রবৃত্ত হতে বললেন, বললেন কর্ম করবার সময় অশুদ্ধাও যেন না হয়, তাহলেই তুমি কর্মবন্ধন থেকে মুক্ত হবে। মুক্ত হবে ঠিকই কিন্তু সে বিষয়ে তোমার অবস্থান সম্বন্ধে তোমার অবহিত থাকার কথা নয়।

অতএব অর্জুনের নিষ্কাম কর্মযোগ অপেক্ষা জ্ঞানমার্গই সহজ বলে বোধ হ'ল। তিনি জিজ্ঞাসা করলেন— তে জনার্দন! নিষ্কাম কর্মযোগ অপেক্ষা জ্ঞানমার্গই যদি আপনার বিচারে শ্রেষ্ঠ, তবে কেন আমাকে এই ভয়ঙ্কর কর্মে নিযুক্ত করছেন? এই জিজ্ঞাসা স্বাভাবিক ছিল। মনে করুন আপনার সম্মুখে দুটি পথ আছে, দুটিই একই স্থানে নিয়ে যায়। এখন আপনি যদি যেতে চান, তাহলে নিশ্চয় জিজ্ঞাসা করবেন উভয়ের মধ্যে সুগম কোনটি? যদি না করেন তাহলে আপনি পথিক নন। ঠিক এইভাবে অর্জুনও জিজ্ঞাসা করলেন—

অর্জুন উবাচ

জ্যায়সী চেৎকর্মণস্তে মতা বুদ্ধির্জনার্দন।

তৎ কিং কর্মণি ঘোরে মাঃ নিয়োজয়সি কেশব॥১॥

জনগণের প্রতি দয়ালু, জনার্দন ! যদি নিষ্কাম কর্মযোগ অপেক্ষা জ্ঞানযোগ শ্রেষ্ঠ বলে আপনার অভিমত, তাহলে হে কেশ ! আমাকে ভয়কর কর্মযোগে কেন নিযুক্ত করছেন ?

নিষ্কাম কর্মযোগ অর্জুনের ভয়কর বলে মনে হ'ল ; কারণ এতে কর্মেই তোমার অধিকার আছে, ফলে নয় । কর্ম করবার সময় অশ্রদ্ধাও যেন না হয় এবং নিরস্তর সমর্পণের মধ্য দিয়ে যোগে দৃষ্টি নিবন্ধ করে কর্মে প্রবৃত্ত হও । জ্ঞানমার্গে পরাজয় হলে দেবত্ব, জয়লাভ করলে মহামহিমস্থিতি লাভ হবে । লাভ-লোকসান স্বয়ং নির্ণয় করে এগিয়ে যেতে হবে । অর্জুনের নিষ্কাম কর্মযোগ অপেক্ষা জ্ঞানযোগ সহজ বলে বোধ হ'ল । সেইজন্য তিনি নিবেদন করলেন —

ব্যামিশ্রেণে বাক্যেন বুদ্ধিৎ মোহয়সীব মে ।

তদেকং বদ নিশ্চিত্য যেন শ্রেয়োহহমাপ্যাম্ ॥১২॥

আপনি এই মিশ্রিত বাক্যের দ্বারা আমার বুদ্ধি যেন মুক্ত করছেন । আপনি আমার বুদ্ধির মোহ দূর করবার জন্য প্রবৃত্ত হয়েছেন । অতএব উভয়ের একটি আমাকে নিশ্চয় করে বলুন, যার দ্বারা আমি ‘শ্রেয়’- পরমকল্যাণ, মোক্ষলাভ করতে পারি । এই প্রসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ বললেন—

### শ্রীভগবানুবাচ

লোকেহস্মিন্দিবিধা নিষ্ঠা পুরা প্রোক্তা ময়ানন্দ ।

জ্ঞানমোগেন সাঞ্চ্যানাং কর্মযোগেন যোগিনাম্ ॥১৩॥

হে নিষ্পাপ অর্জুন ! এই লোকে সত্যানুসন্ধানের দুটি ধারার কথা পূর্বে আমার দ্বারা বলা হয়েছে । পূর্বের অর্থ সত্যবুঝ অথবা ব্রেতাযুগ নয়, বরং যা দ্বিতীয় অধ্যায়েই বলে এসেছি । জ্ঞানীগণের জন্য জ্ঞানমার্গ ও যোগীগণের জন্য নিষ্কাম কর্মযোগ বলা হয়েছে । উভয় মার্গ অনুসারেই কর্ম করতে হবে । কর্ম অনিবার্য ।

ন কর্মণামনারস্তামৈক্ষম্যং পুরুষোহশ্বতে ।

ন চ সম্যসনাদেব সিদ্ধিং সমধিগচ্ছতি ॥১৪॥

অর্জুন ! কর্ম আরম্ভ না করে কেউ নৈক্ষেক্য লাভ করতে পারে না এবং যে ক্রিয়া আরম্ভ করা হয়েছে, তা পরিত্যাগ করলেই ভগবৎ প্রাপ্তিরূপ পরমসিদ্ধি লাভ

হয় না। এখন তোমার জ্ঞানমার্গ ভাল লাগে অথবা নিষ্কাম কর্মমার্গ, উভয় মাগেই কর্ম করতে হবে।

প্রায়ই এই ক্ষেত্রে, ভগবৎপথে লোকে সহজপথ এবং সুরক্ষা খুঁজতে আরস্ত করে। “কর্মনুষ্ঠান না করেই, নিষ্কামী হওয়া যায়”- যেন এই ধরণের ভুল না হয়, সেই জন্য শ্রীকৃষ্ণ জোর দিলেন যে, কর্ম আরস্ত না করে কেউ নৈষ্কর্ম্য লাভ করতে পারে না। শুভাশুভ কর্মের শেষ যেখানে, পরম নৈষ্কর্ম্যের সেই স্থিতি কর্ম করেই লাভ করা যায়। সেইরূপ বহু লোকে বলে যে, “আমরা জ্ঞানমার্গী, জ্ঞানমার্গে কর্ম নেই।”- এরূপ বললেই কর্মত্যাগী জ্ঞানী হয় না। যে ক্রিয়া আরস্ত হয়েছে, তা ত্যাগ করলেই কেউ ভগবৎসাক্ষাৎকাররূপ পরমসিদ্ধি লাভ করে না। কারণ-

ন হি কশিচক্ষণমপি জাতু তিষ্ঠত্যকর্মকৃৎ।

কার্যতে হ্যবশঃ কর্ম সর্বঃ প্রকৃতিজৈগুণ্ডেঃ। ।৫।।

কর্ম না করে কোন পুরুষ ক্ষণমাত্রও থাকতে পারে না, কারণ সকলেই প্রকৃতিজাত গুণব্রহ্মাদ্বারা মোহমুক্ত হয়ে কর্ম করে। প্রকৃতি ও প্রকৃতিজাত গুণ যতক্ষণ পর্যন্ত সক্রিয়, ততক্ষণ পর্যন্ত কোন পুরুষ কর্ম না করে থাকতে পারে না।

চতুর্থ অধ্যায়ের ৩৩ ও ৩৭ তম শ্লোকে শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন—সকলকর্ম জ্ঞানে শেষ হয়। জ্ঞানাত্মি সমস্ত কর্ম ভস্মসাং করে। এখানে বলছেন কর্ম না করে কেউ থাকতে পারে না। তিনি কি বলতে চাইছেন? তাঁর বলবার অর্থ হল যে, যজ্ঞ করতে করতে ত্রিগুণাতীত হলে মনের বিলয় এবং সাক্ষাৎকারের সঙ্গে যজ্ঞের পরিণাম লাভ হলে কর্ম শেষ হয়ে যায়। সেই নিধারিত ক্রিয়া পূর্ণ হওয়ার আগে কর্ম সম্পূর্ণ হয় না, প্রকৃতির হাত থেকে রেহাই পাওয়া যায় না।

কর্মেন্দ্রিয়াণি সংযম্য য আস্তে মনসা স্মরণ।

ইন্দ্রিয়াথান্ত্বমূচ্ছাত্মা মিথ্যাচারঃ স উচ্যতে। ।৬।।

তা’ সত্ত্বেও কিছু মৃচ্যক্তি কর্মেন্দ্রিয়গুলি বলপূর্বক রংধ করে মনে মনে ইন্দ্রিয়ের ভোগসমূহ স্মরণ করে, তাদের মিথ্যাচারী, দাস্তিক বলে। জ্ঞানী বলে না। এ কথা প্রমাণিত যে, কৃষ্ণকালেও এই ধরণের সংস্কার ছিল। লোকে যা’ করণীয় তা ত্যাগ করে ইন্দ্রিয়গুলি বলপূর্বক রংধ করে বলে বেড়াত যে আমি জ্ঞানী, আমি পূর্ণ।

কিন্তু শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, তারা সকলেই ধূর্ত। জ্ঞানমার্গ ভাল লাগুক অথবা নিষ্কাম কর্মযোগ, উভয় মাগেই কর্ম করতে হবে।

**যস্ত্বিদ্বিয়াণি মনসা নিয়ম্যারভতেহজুন।**

**কর্মেন্দ্বিয়েঃ কর্মযোগমসক্তঃ স বিশিষ্যতে ॥৭॥**

অর্জুন ! যিনি মন থেকে ইন্দ্রিয়সমূহ সংযত করেন, যখন মনেও বাসনার স্ফুরণ হয় না, সর্বদা অনাসক্ত হয়ে কর্মেন্দ্বিয় দ্বারা কর্মযোগের আচরণ করেন, তিনি শ্রেষ্ঠ। একথা বোঝা গেল যে, কর্মের আচরণ করতে হবে; কিন্তু প্রশ্ন যে কোন্ কর্ম করব ? এই প্রসঙ্গে—

**নিয়তং কুরু কর্ম ত্বং কর্ম জ্যায়ো হ্যকর্মণঃ।**

**শরীরযাত্রাপি চ তে ন প্রসিদ্ধেদকর্মণঃ ॥৮॥**

অর্জুন ! তুমি নির্ধারিত কর্ম কর। অর্থাৎ কর্মের সংখ্যা অনেক, তার মধ্যে নির্দিষ্ট যে কর্মটি, সেই নিয়ত কর্ম কর। কর্ম না করা অপেক্ষা কর্ম করাই শ্রেষ্ঠ। কারণ কর্ম করে, অল্প দূরত্বে অতিক্রম করে থাকলে, যেমন পূর্বে বলেছেন যে, জন্ম-মৃত্যুর মহাভয় থেকে উদ্ধার করে, সেইজন্য শ্রেষ্ঠ। কর্ম না করলে তোমার দেহ-যাত্রাও নির্বাহ হবে না। দেহ-যাত্রার অর্থ লোকে বলে—‘শরীর-নির্বাহ’। কিরণপ শরীর-নির্বাহ ? আপনি কি দেহ ? এই পুরুষ জন্ম-জন্মাস্তর, যুগ-যুগাস্তর ধরে দেহ-যাত্রাই তো করে আসছে। বস্ত্র জীর্ণ হলেই, অন্য বস্ত্র ধারণ করে। সেইরূপ কীট-পতঙ্গ থেকে শুরু করে মানুষপর্যন্ত, ব্রহ্মা থেকে শুরু করে গোটা জগৎ পরিবর্তনশীল। উত্তম-অধম বিভিন্ন যৌনিতে এই জীব নিরস্তর দেহ-যাত্রাই করে চলেছে। কর্মই এই দেহ-যাত্রা সম্পূর্ণ করে। মনে করুন একটা মাত্র জন্ম নিতে হয়েছে, তবু যাত্রা তো সম্পূর্ণ হয়নি, এখনও সে পথিক। যাত্রা সম্পূর্ণ তখনই হবে, যখন গন্তব্য এসে যাবে। পরমাত্মাতে স্থিতি লাভ করবার পর আত্মাকে শরীরে অনুপ্রবেশ করে আর যাত্রা করতে হয় না। অর্থাৎ শরীর-ত্যাগ এবং শরীর-ধারণ এই পর্যায়ে শেষ হয়। অতএব কর্ম পূর্ণতা প্রদান করে, এই পুরুষকে কর্ম সম্পূর্ণ হওয়ার পর আর দেহের যাত্রা করতে হয় না। ‘মোক্ষ্যসেহশুভাত’ (৪/১৬)- অর্জুন ! এই কর্ম করে তুমি সংসার-বন্ধন স্বরূপ ‘অশুভ’ থেকে মুক্ত হয়ে যাবে। কর্ম সংসার-বন্ধনথেকে মুক্ত করে দেয়। এখন প্রশ্ন সেই নির্ধারিত কর্ম কি ? এই প্রসঙ্গে বলেছেন—

যজ্ঞার্থাত্কর্মগোহন্যত্র লোকোহয়ং কর্মবন্ধনঃ।

তদথৎং কর্ম কৌণ্ডেয় মুক্তসঙ্গঃ সমাচর।।১।।

অর্জুন ! যজ্ঞের অনুষ্ঠানই কর্ম । যে ক্রিয়াদ্বারা যজ্ঞ পূর্ণ হয়, সেই ক্রিয়া কর্ম । প্রমাণিত হল যে কর্ম একটি নির্ধারিত প্রক্রিয়া । এছাড়া অন্য কর্ম কি কর্ম নয় ? শ্রীকৃষ্ণ বললেন— না, সে সব কর্ম নয় । ‘অন্যত্র লোকোহয়ং কর্মবন্ধনঃ’- এই যজ্ঞের অনুষ্ঠান ছাড়া জগতে যা কিছু করা হয়, যাতে সারা জগৎ রাত-দিন ব্যস্ত, সে সমস্ত এই লোকেরই বন্ধন, কর্ম নয় । কর্ম ‘মোক্ষসেহশুভাত্’- অশুভ অর্থাৎ সংসার-বন্ধন থেকে মুক্তি প্রদান করে । একমাত্র কর্ম হল—যজ্ঞের প্রক্রিয়া । অতএব অর্জুন ! সেই যজ্ঞ সম্পূর্ণ করার জন্য সঙ্গদোষ থেকে পৃথক্ অবস্থান করে, উত্তমরূপে কর্মের আচরণ কর । সঙ্গদোষ থেকে পৃথক্ না হলে এই কর্ম সম্পূর্ণ হয় না ।

এখন স্পষ্ট হল যে, ‘যজ্ঞের অনুষ্ঠানকেই কর্ম’ বলে; কিন্তু এখানে পুনরায় এক নৃতন প্রশ্নের উদয় হল যে, সেই যজ্ঞ কি, যার অনুষ্ঠান করা হবে ? সেইজন্য প্রথমে যজ্ঞ কি তা’ না বলে শ্রীকৃষ্ণ বললেন যে যজ্ঞের উৎপত্তি হ'ল কোথাকে ? যজ্ঞ থেকে আমরা কি ফললাভ করি ? তার বিশেষত্ব বললেন এবং চতুর্থ অধ্যায়ে স্পষ্ট করেছেন যে যজ্ঞ কি, যার অনুষ্ঠান করলে কর্মের আরম্ভ হবে । যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের বাণীর নিপুণতাতে স্পষ্ট হয় যে, যে বিষয়ের বর্ণনা করবেন, প্রথমে তিনি তার বিশেষত্বের বর্ণনা করলেন, যাতে শ্রদ্ধা জাগে । তার পর তিনি তাতে যে সতর্কতা অবলম্বন করা হয় তার উপর আলোকপাত করলেন এবং অবশ্যে মুখ্য সিদ্ধান্ত প্রতিপাদন করলেন ।

এখানে স্মারণ রাখা আবশ্যক শ্রীকৃষ্ণ কর্মের অন্যান্য অঙ্গের উপর আলোকপাত করেছেন যে, কর্ম হল নির্ধারিত ক্রিয়া ব্যতীত অন্য কর্ম, কর্ম নয় ।

দ্বিতীয় অধ্যায়ে প্রথমবার কর্মের নাম উল্লেখ করেছেন, তার বিশেষত্বের উপর জোর দিলেন, তাতে যে সতর্কতা অবলম্বন করা হয়, তার উপর আলোকপাত করলেন; কিন্তু কর্ম কি ? বললেন না । এখানে বর্তমান অধ্যায়ে বললেন যে, কেউ কর্ম না করে থাকতে পারে না । প্রকৃতির প্রভাবে মানুষ কর্ম করে । এছাড়া যারা ইন্দ্রিয়গুলিকে বলপূর্বক অবরুদ্ধ করে মন থেকে বিষয়-চিন্তন করে, তারা ছলগ্রাহী । সেইজন্য অর্জুন ! মনের দ্বারা ইন্দ্রিয়সমূহ সংযত করে তুমি কর্ম কর । কিন্তু কোন্-

কর্ম করা হবে, সে প্রশ়িটি যেমনের তেমনি রাইল। যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন—  
অর্জুন ! তুমি নিধারিত কর্ম কর।

এখন প্রশ্ন যে, সেই নিধারিত কর্ম কি, যার অনুষ্ঠান করতে বলছেন ? তিনি  
বলছেন যজ্ঞের অনুষ্ঠান করাই কর্ম। এখন প্রশ্ন ওঠে যে যজ্ঞ কি ? এখানে যজ্ঞের  
উৎপত্তি এবং বিশেষ পর্যন্ত বলবেন। চতুর্থ অধ্যায়ে যজ্ঞের সম্বন্ধে সুস্পষ্ট ধারণা  
হবে, যার অনুষ্ঠানই কর্ম।

গীতাশাস্ত্র বোঝার চাবিকাঠি হ'ল, কর্মের এই পরিভাষা। যজ্ঞ ছাড়া সবকিছু  
করে সংসারী লোকেরা। কেউ চাষ করে, কেউ ব্যবসা। কেউ উচ্চপদে প্রতিষ্ঠিত,  
কেউ সেবক। কেউ বা নিজেকে বুদ্ধিজীবী বলে, কেউ বলে শ্রমিক। কেউ  
সমাজসেবাকে, কেউ দেশসেবাকে কর্ম বলে মনে করে। এই কর্মগুলির মধ্যে কিছু  
কর্মকে সকাম এবং কিছু কর্মকে নিষ্কাম কর্ম বলে লোকে এর ভূমিকাও তৈরী করে  
নিয়েছে। কিন্তু শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে, সেসব কর্ম নয়। ‘অন্যত্র লোকোহয়ঃ  
কর্মবন্ধবঃ’—যজ্ঞের অনুষ্ঠান ছাড়া যা কিছু করা হয়, সেসব কর্ম এই লোকেরই বন্ধন,  
মোক্ষ প্রদানকারী কর্ম নয়। বস্তুতঃ যজ্ঞের অনুষ্ঠান কর্ম। এখন যজ্ঞ কি, তা না বলে  
আগে যজ্ঞ এলো কোথেকে ? তা বলছেন—

সহ্যজ্ঞাঃ প্রজাঃ সৃষ্টা পুরোবাচ প্রজাপতিঃ।

অনেন প্রসবিষ্যধবমেষ বোহস্ত্রিষ্টকামধুক ॥১০॥

প্রজাপতি ব্রহ্মা কঙ্গারভে যজ্ঞের সহিত প্রজাসৃষ্টি করে বলেছিলেন যে, এই  
যজ্ঞদ্বারা তোমরা বৃদ্ধি প্রাপ্ত হও। এই যজ্ঞ তোমাদের ‘ইষ্টকামধুক’- যাতে অনিষ্ট  
না হয়, অবিনাশী ইষ্ট-সম্বন্ধী কামনা পূর্ণ করবক।

যজ্ঞসহিত প্রজাদের কে সৃষ্টি করেছিলেন ? প্রজাপতি ব্রহ্মা। ব্রহ্মা কে ? তিনি  
কি চতুর্মুখ এবং অষ্টচক্ষুবিশিষ্ট কোন দেবতা, যেমন প্রচলিত আছে ? না, শ্রীকৃষ্ণের  
অনুসারে দেবতা নামের কোন আলাদা সত্তা নেই। তাহলে প্রজাপতি কে ? বস্তুতঃ  
যিনি প্রজার মূল উদ্গম, পরমাত্মাতে স্থিতি লাভ করেছেন, সেই মহাপুরুষই প্রজাপতি।  
বুদ্ধিই ‘ব্রহ্মা’। ‘অহংকার সিব বুদ্ধি অজ, মন সমি চিত্ত মহান।’ (রামচরিতমানস,  
৬/১৫ ক) সেই সময় বুদ্ধি যন্ত্রমাত্র হয়। এইরূপ মহাপুরুষের মাধ্যমে পরমাত্মাই  
কথা বলেন।

ভজনের বাস্তবিক ক্রিয়া আরম্ভ হ'লে, বুদ্ধির ক্রমবিকাশ হয়। শুরুতে সেই বুদ্ধি ব্রহ্মাবিদ্যার সঙ্গে সংযুক্ত হওয়ার জন্য তাকে 'ব্রহ্মাবিদ' বলা হয়। ক্রমশঃ সমস্ত বিকার শান্ত হলে, ব্রহ্মাবিদ্যাতে শ্রেষ্ঠতা-লাভ করলে তাকে 'ব্রহ্মবিদ্ব' বলা হয়। ধীরে ধীরে বিকাশ আরও সূক্ষ্ম হলে বুদ্ধির আরও বিকাশ হয়, তখন তাকে 'ব্রহ্মবিদ্বরীয়ান' বলে। সেই অবস্থা-লাভ হলে ব্রহ্মাবিদ্বেত্তা পুরুষ অন্যকেও উত্থান মার্গে নিয়ে যাওয়ার যোগ্যতা অর্জন করেন। বুদ্ধির পরাকার্ষা হ'ল 'ব্রহ্মবিদ্বরিষ্ট' অর্থাৎ ব্রহ্মাবিদ-এর সেই অবস্থা, যাতে ইষ্ট ও তপ্তোত। এইরূপ স্থিতিলাভ করেছেন যিনি, তিনি প্রজার মূল উদ্গম পরমাত্মায় স্থিত থাকেন। এরূপ মহাপুরুষের বুদ্ধি যত্নমাত্র। তাঁদেরই প্রজাপতি বলা হয়। তাঁরা প্রকৃতির দ্বন্দ্বের বিশ্লেষণ করে আরাধনা ক্রিয়ার রচনা করেন। যজ্ঞের অনুরূপ সংস্কার প্রদান করাই প্রজাসৃষ্টি। এর পূর্বে সমাজ অচৈতন্য এবং অব্যবস্থিত অবস্থাতে থাকে। যজ্ঞের অনুরূপ এদের গড়ে তোলাই হ'ল সৃষ্টি অর্থাৎ সুসজ্জিত করা।

এইরূপ মহাপুরুষ সৃষ্টির আরম্ভে যজ্ঞসহিত প্রজার সৃষ্টি করেছেন। কল্প রোগমুক্ত করে। বৈদ্য কল্প প্রদান করেন, আবার কেউ কায়াকল্প করে। এটা ক্ষণিক শরীরের কল্প। যথার্থ কল্প তখনই হয়, যখন ভবরোগ থেকে মুক্তিলাভ হয়। আরাধনার আরম্ভ, এই কল্পের প্রারম্ভিক অবস্থা। আরাধনা সম্পূর্ণ হলেই, কল্প সম্পূর্ণ হবে।

সেইরূপ পরমাত্মস্বরূপে স্থিত মহাপুরুষগণ ভজনের আরম্ভে যজ্ঞসহিত সংস্কার সুসংগঠিত করে বললেন যে, এই যজ্ঞদ্বারা তোমরা সমৃদ্ধ হও। কিরণপ সমৃদ্ধি? সেই সমৃদ্ধি কি কাঁচা ঘর-বাড়ী পাকা করা, বেশী উপার্জন করা? বলছেন— না, যজ্ঞ 'ইষ্টকামধূক'- ইষ্ট-সম্বন্ধী কামনা পূর্ণ করবে। ইষ্ট একমাত্র পরমাত্মা। সেই পরমাত্মা সম্বন্ধী কামনা পূর্ণ করে এই যজ্ঞ। এখানে প্রশ্ন স্বাভাবিক যে, যজ্ঞ সরাসরি পরমাত্মার প্রাপ্তি করাবে অথবা ক্রমে চলার পর?—

দেবান্ত ভাবয়তানেন তে দেবা ভাবযন্ত বঃ।

পরম্পরাং ভাবযন্তঃ শ্রেযঃ পরমবাপ্স্যথ ॥১১॥

এই যজ্ঞদ্বারা দেবতাগণের উন্নতি কর অর্থাৎ দৈবী সম্পদের বৃদ্ধি কর। সেই দেবতাগণও তোমাদের উন্নত করবেন। এইরূপ পরম্পরের উন্নতিদ্বারা পরমশ্রেয়, যারপর কিছু লাভ করা বাকী থাকবে না, এইরূপ পরমকল্প্যাণ লাভ করবে। যেমন যেমন আমরা যজ্ঞের অনুষ্ঠান করব (পরে যজ্ঞের অর্থ আরাধনার বিধি হবে) তেমন

তেমন হৃদয়ে দৈবী সম্পদ অর্জন হতে থাকবে। পরমদেব একমাত্র পরমাত্মা। সেই পরমদেব-এ স্থিতি লাভ করতে সাহায্য করে যে সম্পদ অস্তিকরণে যে সজাতীয় প্রবৃত্তি বিদ্যমান, সেই সজাতীয় প্রবৃত্তিসমূহই দৈবী সম্পদ। এদের সাহায্যেই পরমদেব-এর প্রাপ্তি হয়, সেইজন্য দৈবী সম্পদ বলা হয়। বাহ্য জগতের দেবতা-পাথর-জল নয়, যেমন লোকে কঞ্চনা করে। যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের বাণীতে তাদের অস্তিত্ব নেই। আরও বলছেন—

ইষ্টান্ ভোগান্ হি বো দেবা দাস্যন্তে যজ্ঞভাবিতাঃ ।

তৈর্দভানপ্রদায়েভ্যো যো ভুঁঞ্জে স্তেন এব সং ॥১২॥

যজ্ঞদ্বারা সংবর্ধিত দেবতাগণ (দৈবী সম্পদ) আপনাকে ইষ্টান্ ভোগান্ হি দাস্যন্তে'- ইষ্ট অর্থাৎ আরাধ্য-সম্বন্ধী ভোগ প্রদান করবেন, অন্য কিছু নয়। 'তৈঃ দভ্না'- তিনিই একমাত্র দাতা। ইষ্টলাভের অন্য কোন বিকল্প নেই। এই দৈবী গুণসমূহকে সংবর্ধন না করে, যিনি এই স্থিতি ভোগ করেন, তিনি নিশ্চয়ই চোর। যখন লাভ হয় নি, তখন তিনি কি উপভোগ করবেন? কিন্তু বলেন অবশ্যই, আমি পূর্ণ, তত্ত্বদর্শী। এইরূপ মিথ্যাবাদী এই পথ থেকে মুখ লুকিয়ে বেড়ায়। তারা চোর, প্রাপ্তকর্ত্তা নয়। কিন্তু যাঁরা লাভ করেছেন, তাঁরা কি পেয়েছেন?—

যজ্ঞশিষ্টাশিনঃ সন্তো মুচ্যন্তে সর্বকিঞ্চিত্বৈঃ ।

ভুঁঞ্জতে তে ত্বং পাপা যে পচন্ত্যাত্মকারণাঃ ॥১৩॥

যে সাধুপুরুষগণ যজ্ঞবশেষ অন্ন গ্রহণ করেন, তাঁরা সকল পাপ থেকে মুক্ত হন। দৈবী সম্পদের বৃদ্ধি করতে করতে পরিণামে প্রাপ্তিকালই পূর্তিকাল। যজ্ঞ সম্পূর্ণ হয় যখন, তখন অবশিষ্ট যিনি থাকেন, তিনি হলেন ব্রহ্ম, সেই ব্রহ্মই আবার অন্ন। একেই শ্রীকৃষ্ণ অন্যভাবে বললেন যে- 'যজ্ঞশিষ্টামৃতভুজো যান্তি ব্রহ্ম সনাতনম'- যজ্ঞ যার সৃষ্টি করে, সেই অশন যিনি গ্রহণ করেন, তিনি ব্রহ্মে লীন হন। এখানে তিনি বলছেন যে, যজ্ঞবশেষ অশন (ব্রহ্ম-পীযুষ) যিনি পান করেন, তিনি সকল পাপ থেকে মুক্ত হন। সাধু ব্যক্তি মুক্ত হন; কিন্তু পাপী যারা, তারা মোহজাত দেহের পোষণের জন্যই অন্নপাক করে, পাপান্ন গ্রহণ করে। তারা ভজন করে আরাধনা বুঝে অগ্রসরও হয়, কিন্তু পরিবর্তে কিছু কামনা করে যে, 'আত্মকারণাঃ'- দেহের

এবং এই দেহের সম্পন্নদের কিছু লাভ হোক। তারা নিশ্চয় লাভ করবে; কিন্তু তা ভোগ করবার পর নিজেকে তারা সেখানেই দেখতে পাবে, যেখান থেকে ভজনা আরম্ভ করেছিল। এর থেকে বেশী ক্ষতি কি হতে পারে? যখন এই দেহটাই নশ্বর, তখন এর সুখ-ভোগ কতদিন? তারা আরাধনা করে, কিন্তু পরিবর্তে পাপ গ্রহণ করে। ‘পলটি সুধা তে সঠ বিষ লেহী।’ তা নষ্ট হবে না ঠিক কিন্তু এগিয়েও যাবে না। সেইজন্য শ্রীকৃষ্ণ নিষ্কাম হয়ে কর্ম (ভজন) করবার উপর জোর দিলেন। এখন পর্যন্ত শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, যজ্ঞ পরমশ্রেয় প্রদান করে এবং মহাপুরুষই তার রচনা করেন। কিন্তু মহাপুরুষ প্রজা রচনার জন্য কেন প্রবৃত্ত হন? এ সম্বন্ধে বলা হয়েছে—

অগ্নান্তবন্তি ভূতানি পর্জন্যাদন্তসন্তবৎ।

যজ্ঞান্তবতি পর্জন্যে যজ্ঞঃ কর্মসমুদ্ভবৎ। ১৪।।

কর্ম ব্রক্ষেত্ববৎ বিদ্বি ব্রক্ষাক্ষরসমুদ্ভবম্।

তস্মাঽস্মৰ্গতং ব্রহ্ম নিত্যং যজ্ঞে প্রতিষ্ঠিতম্। ১৫।।

অন্ন থেকে সমস্ত প্রাণী উৎপন্ন হয়। “অন্ন ব্রক্ষেতি ব্যজানাত” (তৈ. উপ. ২/১)- পরমাত্মাই অন্ন। সেই ব্রক্ষ-পীযুষকেই উদ্দেশ্য করে প্রাণীগণ যজ্ঞের দিকে অগ্সম হয়। বৃষ্টি থেকে অন্নের উৎপত্তি হয়। মেঘ থেকে যে বৃষ্টি হয় তা নয়, বরং কৃপাবৃষ্টি। পূর্বসংগ্রহ যজ্ঞ কর্মেরই কৃপারূপে বর্ণণ হবে। আজকের আরাধনা কাল কৃপারূপে লাভ হবে। সেইজন্য যজ্ঞদ্বারা বৃষ্টি হয়। স্বাহা উচ্চারণ এবং তিল-ব্যবের আছতি মাত্র দিলেই যদি বর্ষা হত, তাহলে বিশ্বের অধিকাংশ মরুভূমি অনুর্বর কেন রয়েছে? উর্বর হয়ে থাকত। এখানে যজ্ঞের পরিণাম কৃপাবৃষ্টি। এই যজ্ঞের অনুষ্ঠান কর্মদ্বারা হয়, কর্ম করে গেলেই একদিন যজ্ঞ সম্পূর্ণ হয়।

সেই কর্ম বেদ থেকে উৎপন্ন জানবে। বেদ হ'ল ব্রহ্মাণ্ডিত মহাপুরুষের বাণী। যে তত্ত্ব অবিদিত, তার প্রত্যক্ষ অনুভূতির নাম বেদ, কিছু শ্লোক-সংগ্রহ নয়। বেদ অবিনাশী পরমাত্মা থেকে উৎপন্ন হয়েছে জানবে। বলেছেন মহাত্মাগণ, কিন্তু তাঁরা এবং পরমাত্মা তিনি নন। তাঁদের মাধ্যমে অবিনাশী পরমাত্মাই কথা বলেন, সেইজন্য বেদকে অপৌরুষেয় বলা হয়। মহাপুরুষগণ বেদ গেলেন কোথেকে? অবিনাশী পরমাত্মা থেকে বেদের জন্ম হয়েছে। সেই মহাপুরুষগণ এবং তিনি অভিন্ন, তাঁরা যন্ত্রমাত্র, সেইজন্য তাঁদের মাধ্যমে পরমাত্মাই কথা বলেন। কারণ যজ্ঞের অনুষ্ঠান

করে যখন মন নিরংকু হয়, তখনই পরমাত্মাকে জানা যায়। সেইজন্য সর্বব্যাপী পরম অক্ষর পরমাত্মা সর্বদা যজ্ঞেই প্রতিষ্ঠিত। যজ্ঞের অনুষ্ঠানই তাঁকে লাভ করবার একমাত্র উপায়। এরই উপর জোর দিলেন—

এবং প্রবর্তিতং চক্ৰং নানুবৰ্তযতীহ যঃ।

অঘায়ুরিন্দ্ৰিয়ারামো মোঘং পার্থ স জীবতি॥১৬॥

হে পার্থ! যে ব্যক্তি ইহলোকে মনুষ্যদেহ লাভ করে এই সাধন চক্রের অনুসারে অনুষ্ঠান করে না অর্থাৎ দৈবী সম্পদের উৎকর্ষ, দেবতাগণের বৃদ্ধি এবং পরম্পর বৃদ্ধিদ্বারা অক্ষয়ধামলাভ- এই ক্রম অনুসারে যে কর্মে প্রবৃত্ত হয় না, ইন্দ্ৰিয়গুলির সুখাকাঙ্ক্ষী সেই ‘পাপী ব্যক্তি’ বৃথা জীবন ধারণ করে।

বন্ধুগণ! যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ দ্বিতীয় অধ্যায়ে শুধু কর্মের নাম নিয়েছেন এবং বর্তমান অধ্যায়ে বলছেন যে, নিয়ত কর্মের আচরণ কর। যজ্ঞের প্রক্ৰিয়াই কৰ্ম। এছাড়া যা কিছু করা হয়, তা এই লোকেরই বন্ধন। এই কারণে সঙ্গদোষ থেকে পৃথক অবস্থান করে যজ্ঞের পূর্তির জন্য কর্মের আচরণ কর। তিনি যজ্ঞের বিশেষত্বের উপর আলোকপাত করলেন এবং বললেন— যজ্ঞের উৎপত্তি হয়েছে ব্ৰহ্মা থেকে। প্রজা অন্নকে উদ্দেশ্য করে যজ্ঞে প্রবৃত্ত হয়। যজ্ঞ কৰ্ম থেকে এবং কৰ্ম অপৌরুষেয় বেদ থেকে উৎপন্ন হয়েছে। বেদমন্ত্রগুলির দ্রষ্টা মহাপুরুষগণ ছিলেন। তাঁদের পুরুষ তিরোহিত হয়ে গিয়েছিল। প্রাণ্তির পর শেষে অবিনাশী পরমাত্মাই শুধু থাকেন, সেইজন্য বেদ পরমাত্মা থেকে উৎপন্ন। সর্বব্যাপী পরমাত্মা সর্বদা যজ্ঞে প্রতিষ্ঠিত। এই সাধন-চক্র অনুসারে যে আচরণ করে না, সেই পাপী ব্যক্তি ইন্দ্ৰিয়সমূহের সুখাকাঙ্ক্ষী, ব্যৰ্থই জীবন ধারণ করে অর্থাৎ যজ্ঞ এমন বিধি, যাতে ইন্দ্ৰিয়গুলির বিশ্রাম নেই, বৰং অক্ষয় সুখ বিদ্যমান। ইন্দ্ৰিয়গুলিকে সংযম করে এর আচরণ করবার বিধান। ইন্দ্ৰিয়সমূহের সুখ-আকাঙ্ক্ষী যারা, তারা পাপী। এখনও শ্রীকৃষ্ণ বলছেন না, যজ্ঞ কি? কিন্তু এই যজ্ঞ কি সারাজীবন করে যেতে হবে অথবা কখনও সম্পূর্ণও হবে? এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর বলছেন-

যন্ত্রাত্মৱিত্রেব স্যাদাত্মতপ্ত মানবঃ।

আত্মন্যেব চ সন্তুষ্টস্য কাৰ্যং ন বিদ্যতে॥১৭॥

কিন্তু যে ব্যক্তি আত্মাতেই রত, আত্মাতেই তৃপ্তি এবং আত্মাতেই সম্পৃষ্ট তাঁর জন্য কোন কর্তব্য বাকী থাকে না। এই হল লক্ষ্য। যখন অব্যক্ত, সনাতন, অবিনাশী আত্মতত্ত্ব লাভ হয়ে যায়, তখন আর কার অনুসন্ধান করা হবে? এরূপ পুরুষের কর্মের, আরাধনার প্রয়োজন হয় না। আত্মা ও পরমাত্মা একে অন্যের পর্যায়ভুক্ত। এর পুনরায় বর্ণনা করলেন-

নৈব তস্য কৃতেনার্থো নাকৃতেনেহ কশ্চন।

ন চাস্য সর্বভূতেষু কশ্চিদর্থব্যপাত্রয়ঃ ॥১৮॥

এই সংসারে সেই পুরুষের কর্ম করেও কোন লাভ নেই এবং কর্ম না করলেও কোন লোকসান নেই; কিন্তু আত্মতত্ত্ব লাভ হওয়ার পূর্বে এর প্রয়োজন ছিল। তাঁর সমগ্র প্রাণীজগতের সঙ্গে কোন স্বার্থ-সম্বন্ধ থাকে না। আত্মাই শাশ্঵ত, সনাতন, অব্যক্ত, অপরিবর্তনশীল ও অক্ষয়। যখন আত্মলাভ হয়ে গেছে ও তাতেই সম্পৃষ্ট, তাতেই তৃপ্তি, তাতেই ওতপ্রোত এবং স্থিত আছেন, যখন এর থেকে শ্রেষ্ঠ কোন সত্তা নেই, তখন কার খোঁজ করা হবে? কি লাভ হবে? সেই পুরুষের কর্ম ত্যাগ করলেও কোন ক্ষতি নেই, কারণ বিকারের চিহ্ন যে চিন্তে পড়ে, সেই চিন্তাই বিলুপ্ত হয়ে গেছে। তাঁর সকলভূতে, বাহ্য জগতে এবং আন্তরিক সঙ্কলের স্তরে কোন উদ্দেশ্য থাকে না। সবথেকে বড় উদ্দেশ্য ছিল পরমাত্মাকে লাভ করা, যখন তাঁকে লাভ করেছেন, তখন অন্য কারুকে তাঁর কি প্রয়োজন?

তস্মাদসম্ভুঃ সততং কার্যং কর্ম সমাচর।

অসঙ্গে হ্যাচরণ কর্ম পরমাপ্রোতি পুরুষঃ ॥১৯॥

সেই স্থিতি লাভ করবার জন্য তুমি অনাসক্ত হয়ে নিরস্তর ‘কার্যং কর্ম’-করণীয় যে কর্ম, উত্তমরূপে সেই কর্মের অনুষ্ঠান কর। কারণ অনাসক্ত পুরুষ কর্মের অনুষ্ঠান করে পরমাত্মাকে লাভ করেন। ‘নিয়ত কর্ম’, ‘কার্যং কর্ম’ এক। কর্মের প্রেরণা দিয়ে তিনি বললেন—

কর্মগৈব হি সংসিদ্ধিমাস্তিতা জনকাদয়ঃ।

লোকসম্মুহমেবাপি সম্পশ্যন্ত কর্তুমহসি ॥২০॥

জনকের তাৎপর্য রাজা জনক নয়। জনক জন্মদাতাকে বলে। যোগাই জনক, আপনার স্বরূপকে জন্ম দেয়, প্রকট করে। যোগসংযুক্ত প্রত্যেক মহাপুরুষ জনক।

এরপ যোগ-সংযুক্ত বহু ঋষি 'জনকাদ্যঃ'- জনক ও এই শ্রেণীর সমস্ত জ্ঞানী মহাপুরুষ ও 'কর্মণা এব হি সংসিদ্ধিম'- কর্ম করেই পরমসিদ্ধি লাভ করেছেন। পরমসিদ্ধির অর্থ হল পরমতত্ত্ব পরমাত্মাকে লাভ করা। প্রাচীনকালে জনক ও এই শ্রেণীর যত মহৰ্ষি হয়েছেন, এই 'কার্যং কর্মের' দ্বারা, যা যজ্ঞের প্রক্ৰিয়া, এই কর্ম করেই 'সংসিদ্ধিম'- পরমসিদ্ধি লাভ করেছেন। কিন্তু লাভ করবার পর তাঁরাও লোক-সংগ্রহের জন্য কর্ম করেন, লোক-কল্যাণের জন্য কর্ম করেন। অতএব তুমি প্রাপ্তির পর লোকনায়ক হওয়ার জন্য কর্ম করবার উপযুক্তি কেন?

এখন শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, লাভ করবার পর মহাপুরুষের কর্ম করলে কোন লাভ হয়ে না এবং কর্ম না করলেও তাঁর কোন লোকসান হয় না। পুনরাপি লোকসংগ্রহ, লোকহিতের জন্য তাঁরা উত্তমরূপে কর্মের অনুষ্ঠান করেন।

যদ্যদাচরতি শ্রেষ্ঠস্তুবদেবেতরো জনঃ।

স যৎপ্রমাণং কুরুতে লোকস্তদনুবর্ততে॥২১॥

শ্রেষ্ঠ ব্যক্তি যা যা' আচরণ করেন, সাধারণ লোকে তা তাই অনুকরণ করে। সেই মহাপুরুষ যা কিছু প্রমাণ করে দেন, অন্য লোকে তাই অনুসরণ করে।

পূর্বে শ্রীকৃষ্ণ স্বরূপে স্থিত, আত্মতপ্ত মহাপুরুষের অবস্থিতির উপর আলোকপাত করেছেন যে, তাঁদের কর্ম করলে কোন লাভ হয় না এবং ত্যাগ করলে কোন লোকসানও হয় না। তা'সত্ত্বেও জনকাদি উত্তমরূপে কর্মের অনুষ্ঠান করতেন। এখানে শ্রীকৃষ্ণ সেই মহাপুরুষগণের সঙ্গে নিজের তুলনা করেছেন যে তিনিও মহাপুরুষ।

ন মে পাথাস্তি কর্তব্যং ত্রিযু লোকেষু কিঞ্চন।

নানবাস্তুমবাস্তুব্যং বর্ত এব চ কর্মণি॥২২॥

হে পার্থ! তিনিলোকে আমার কোন কর্তব্য নেই। পূর্বে বলেছেন যে, সেই মহাপুরুষের সর্বভূতের প্রতি কোন কর্তব্য নেই। এখানে বলছেন, তিন লোকে আমার কোন কর্তব্য বাকী নেই এবং লাভের যোগ্য বস্তু কিঞ্চিন্মাত্র লাভ করতে বাকী নেই, তাসত্ত্বেও আমি উত্তম প্রকার কর্মের আচরণ করি। কেন?—

যদি হ্যহং ন বর্তেযং জাতু কর্মণ্যতন্ত্রিতঃ।

মম বঅ্বানুবর্তত্বে মনুষ্যাঃ পার্থ সর্বশঃ॥২৩॥

কারণ যদি আমি সাবধান হয়ে কর্ম না করি, তাহলে মনুষ্যগণ আমার অবলম্বিত পথেরই অনুগামী হবে। তাহলে আপনার অনুকরণ কি খারাপ? শ্রীকৃষ্ণও বললেন- হ্যাঁ!

উৎসীদেয়ুরিমে লোকা ন কুর্যাং কর্ম চেদহম্।

সক্ষরস্য চ কর্তা স্যামুপহন্যমিমাঃ প্রজাঃ ॥২৪॥

যদি আমি সাবধান হয়ে কর্ম না করি, তাহলে এই সকল লোক অষ্ট হবে এবং আমি ‘সক্ষরস্য’- বর্ণসক্ষরের সৃষ্টিকর্তা হব এবং এই সকল প্রজার বিনাশের কারণ হব।

স্বরূপে স্থিত মহাপুরুষ সতর্ক হয়ে যদি আরাধনা-ক্রমে প্রবৃত্ত না থাকেন, তাহলে সমাজ তাঁর অনুকরণ করে অষ্ট হয়ে যাবে। তিনি না করলেও, তাঁর কোন লোকসান নেই, কারণ তিনি আরাধনা সম্পূর্ণ করে নিবৃত্ত হয়েছেন; কিন্তু সমাজ তো এখনও আরাধনা আরভুই করেনি। অনুগামীদের পথ-প্রদর্শনের জন্যই মহাপুরুষ কর্ম করেন, আমিও করি অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ মহাপুরুষ ছিলেন। তিনি বৈকুণ্ঠ থেকে অবতরিত কোন বিশিষ্ট ভগবান ছিলেন না। তিনি বললেন, মহাপুরুষ লোককল্যাণের জন্য কর্ম করেন, আমিও করি। আমি যদি না করি, তাহলে মানুষ আদর্শভুট্ট হবে, সকলেই কর্মত্যাগ করবে।

মন বড় চপঞ্চল। সবকিছু পেতে চায়, কেবল ভজন করতে চায় না। স্বরূপস্থ মহাপুরুষ যদি কর্ম না করেন, তবে তাঁকে দেখে অনুগামীগণও কর্ম ত্যাগ করবে। অজুহাত দেখাবে যে, ইনি তো ভজন করেন না, পান খান, সুগন্ধ দ্রব্য ব্যবহার করেন, সামান্যজনের মত কথা বলেন, তবুও এঁকে মহাপুরুষ বলে সমাদর করা হয়-এরূপ চিন্তন করে তারাও আরাধনা ত্যাগ করে, আদর্শভুট্ট হয়। শ্রীকৃষ্ণ বললেন- যদি আমি কর্ম না করি, তাহলে সকলেই অষ্ট হবে এবং আমি বর্ণসক্ষর দোষের মূলকারণ হব।

স্ত্রীগণ কল্যাণিত হলে বর্ণসক্ষরের প্রভাব দেখা যায়। অর্জুনও এই ভয়ে ব্যাকুল ছিলেন যে স্ত্রীগণ কল্যাণিত হলে বর্ণসক্ষর উৎপন্ন হবে; কিন্তু শ্রীকৃষ্ণ বললেন-যদি আমি সাবধান হয়ে আরাধনায় রত না থাকি, তাহলে বর্ণসক্ষর দোষের মূলকারণ আমি হব। বস্তুতঃ আত্মার শুদ্ধবর্ণ পরমাত্মা। নিজের শাশ্বত স্বরূপের পথ থেকে

অষ্ট হওয়াই বর্ণসঙ্করতা। স্বরূপস্ত মহাপুরুষ আরাধনা-ক্রিয়াতে প্রবৃত্ত না থাকলে অনুগামীগণ তাঁকে অনুকরণ করতে গিয়ে ক্রিয়ারহিত হয়ে যাবে, আত্মপথ থেকে অষ্ট হবে, বর্ণসঙ্কর হয়ে যাবে। তারা প্রকৃতির মোহে মুঝ হবে।

স্ত্রীগণের সতীত্ব এবং জাতির শুদ্ধতা, এগুলি সামাজিক ব্যবস্থা, অধিকারের প্রশ্ন, সমাজের পক্ষে এর উপযোগিতাও আছে; কিন্তু মাতা-পিতার ভূলের কোন প্রভাব সন্তানের সাধনার উপর পড়ে না। ‘আপন করনী পার উতৱনী’ হনুমান, ব্যাস, বশিষ্ঠ, নারদ, শুকদেব, কবীর, যীশু ইত্যাদি উন্নত মহাপুরুষ হয়েছিলেন; কিন্তু সামাজিক কুলীনতার সঙ্গে এঁদের কোন সম্পর্ক ছিল না। আত্মা নিজের পূর্বজন্মের গুণধর্ম সঙ্গে নিয়ে আসে। শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—‘মনঃ ষষ্ঠানীন্দ্রিয়াণি প্রকৃতিস্থানি কর্ষিতি।’ (১৫/৭) মন ও ইন্দ্রিয়সমূহ দ্বারা যে কাজ এই জন্মে করা হয়, সেই সংস্কার নিয়ে জীবাত্মা পুরানো দেহ ত্যাগ করে নতুন দেহে প্রবেশ করে। এতে জন্মদাতাদের কোন ভূমিকা নেই। তাঁদের বিকাশ-ক্রমে কোন ব্যবধানের সৃষ্টি হয় না। অতএব স্ত্রীগণ কল্যাণিত হলে বর্ণসঙ্কর হয় না। স্ত্রীগণের কল্যাণিত হওয়া ও বর্ণসঙ্করের মধ্যে সম্পর্ক নেই। শুদ্ধ স্বরূপের দিকে অগ্রসর না হয়ে, প্রকৃতিতে মুঝ হওয়াকেই বর্ণসঙ্কর বলে।

মহাপুরুষ যদি সাধনার হয়ে ক্রিয়াতে (নিয়ত কর্মে) প্রবৃত্ত না থাকেন এবং অন্য লোকদের দিয়ে ক্রিয়া না করান, তাহলে তিনি সেই সকল প্রজার হননকারী, বিনাশক হন। সাধনা-ক্রমে চলে সেই মূল অবিনাশীকে লাভ করাই জীবন এবং প্রকৃতিতে মুঝ হওয়া, পথভূষ্ট হওয়াই মৃত্যু; কিন্তু মহাপুরুষ যদি এই সকল প্রজাদের ক্রিয়া-পথে চালিত না করেন, সেই সকল প্রজাদের সংযত করে সংপথে না চালান, তাহলে তিনি সকল প্রজার হননকর্তা, হিংসক হবেন এবং যিনি স্বয়ং চলে অন্যকেও সেই পথে চালান, তিনিই শুদ্ধ অহিংসক। গীতাশাস্ত্র অনুসারে দেহের মৃত্যু নশ্বর কলেবরের মৃত্যু, পরিবর্তন মাত্র, হিংসা নয়।

**সন্তাঃ কর্মণ্যবিদ্বাংসো যথা কুবন্তি ভারত।**

**কুযাদ্বিদ্বাংস্তথাসন্তক্ষিকীর্যুলোর্কসমৃহম্ ॥২৫॥**

হে ভারত ! অজ্ঞানীগণ আসন্ত হয়ে যেৱন্প কৰ্ম করেন, পূর্ণজ্ঞাতা বিদ্বান্ত অনাসন্ত হয়ে লোক-হৃদয়ে প্রেৱণা এবং কল্যাণ-সংগ্রহের জন্য সেইৱন্প কৰ্ম করেন।

যজ্ঞের বিধি জেনেও, করেও আমরা অজ্ঞানী। জ্ঞানের অর্থ হল প্রত্যক্ষভাবে জানা। যতক্ষণ আমরা লেশমাত্রও আরাধ্য থেকে পৃথক ততক্ষণ অজ্ঞান বিদ্যমান, যতক্ষণ অজ্ঞান বিদ্যমান ততক্ষণ কর্মে আসক্তি থাকে। অজ্ঞানী যতটা আসক্ত হয়ে আরাধনা করেন, ততটাই অনাসক্তও। যাঁর কর্ম করবার প্রয়োজন নেই, তাঁর আসক্তি কেন হবে? এরপ পূর্ণজ্ঞাতা মহাপুরুষও লোকহিতের জন্য কর্মে করেন, দৈবী সম্পদের উৎকর্ষ করেন, যাতে সমাজ সেই পথে চলতে পারে।

ন বুদ্ধিভেদং জনয়েদজ্ঞানাং কর্মসঙ্গিনাম্।

জোষয়েৎস্বর্কমাণি বিদ্বান् যুক্তঃ সমাচরন্ত। ॥২৬॥

জ্ঞানী পুরুষের লক্ষ্য রাখা উচিত যাতে কর্মে আসক্ত অজ্ঞানীগণের বুদ্ধিভ্রম না হয় অর্থাৎ স্বরূপস্থ মহাপুরুষগণ সতর্ক হয়ে আচরণ করবেন, যাতে অনুগামীদের মনে কর্মের প্রতি অশ্রদ্ধা উৎপন্ন না হয়। পরমাত্মতত্ত্বের সঙ্গে সংযুক্ত মহাপুরুষের উচিত যে, স্বয়ং উত্তমরূপে নির্ধারিত কর্ম করে, তাদেরও সেই কর্ম করবার জন্য প্রেরণা দেন।

এই কারণেই চিত্রকুট, অনুসূইয়া আশ্রমে ‘পূজ্য মহারাজজী’ বৃদ্ধাবস্থাতেও রাত দুটোয় উঠে বসতেন ও রাত তিনটোয় আশ্রমবাসী সাধকদের ডেকে তুলে বলতেন-“মাটির পুতুলরা ওঠো সবাই।” আশ্রমবাসীগণ উঠে যে যার চিন্তন-ক্রিয়ায় মগ্ন হয়ে যেতেন। তখন তিনি কিছুক্ষণ গড়িয়ে, পুনরায় উঠে বসতেন এবং বলতেন-“তোমরা মনে চিন্তন কর যে মহারাজজী শুয়ে আছেন; কিন্তু আমি ঘুমাই না, শ্বাস-ক্রিয়ায় রত আছি। এখন বৃদ্ধাবস্থা বসতে কষ্ট হয়, তাই আমি পড়ে থাকি; কিন্তু তোমাদের তো স্থির ও সোজা হয়ে বসে চিন্তন করা উচিত। যতক্ষণ তৈলধারার মত শ্বাস-ক্রিয়ায় ক্রমভঙ্গ না হয়, মাঝে কোন সংকল্প যাতে ব্যবধান উৎপন্ন না করতে পারে, ততক্ষণ সতত প্রবৃত্ত থাকা সাধকের ধর্ম। আমার শ্বাস এখন বাঁশের মত স্থির দাঁড়িয়ে গেছে।” অনুগামীদের জন্য মহাপুরুষগণ উত্তম রূপে কর্মে প্রবৃত্ত থাকেন। “জিস গুণকো শিখাইবে, উসে করকে দিখাইবে।” অর্থাৎ আপনি আচারি ধর্ম জীবেরে শিখায়।

এইরূপ স্বরূপস্থ মহাপুরুষের উচিত যে স্বয়ং কর্মে প্রবৃত্ত থেকে সাধকদেরও আরাধনায় প্রবৃত্ত হওয়ার জন্য প্রেরণা দেন। সাধকদেরও শ্রদ্ধাপূর্বক আরাধনা-

ক্রিয়াতে প্রবৃত্ত হওয়া উচিত; কিন্তু জ্ঞানযোগী হউন অথবা নিষ্কাম কর্মযোগী, সাধকের অহংকার হওয়া উচিত নয়। কারণারা কর্ম হয়? কর্ম সম্পাদনের কারণ কি? এর উপর শ্রীকৃষ্ণ আলোকপাত করলেন—

প্রকৃতেঃ ক্রিয়মাণানি গুণেঃ কর্মাণি সর্বশঃ।

অহঙ্কারবিমৃচ্ছাং কর্তাহ্মিতি মন্যতে। ।২৭।।

আরস্ত থেকে পূর্ণহওয়া পর্যন্ত কর্ম প্রকৃতির গুণত্বয়দ্বারা সম্পাদিত হয়, তা সত্ত্বেও অহঙ্কারে যিনি বিশেষরূপে মুচ, তিনি ‘আমি কর্তা’-এরূপ মনে করেন। একথা কিরূপে স্মীকার করা হবে যে, আরাধনা প্রকৃতির গুণে হয়? এটা কে দেখেছেন? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

তত্ত্ববিত্তু মহাবাহো গুণকর্মবিভাগয়োঃ।

গুণা গুণেষু বর্তন্ত ইতি মত্তা ন সজ্জতে। ।২৮।।

হে মহাবাহো! গুণবিভাগ ও কর্মবিভাগকে ‘তত্ত্ববিত্ত’- পরমতত্ত্ব পরমাত্মার সম্যক্ জ্ঞানবিশিষ্ট মহাপুরুষগণ দেখেছেন এবং সম্পূর্ণ গুণ, গুণসমূহে বর্তিত।— এরূপ চিন্তা করে তাঁরা গুণ এবং কর্মের কর্তৃত্বে আসন্ত হন না।

এখানে তত্ত্বের অর্থ পরমতত্ত্ব পরমাত্মা, পাঁচটা অথবা পাঁচিশটা তত্ত্ব নয়, লোকে যেমন গণনা করে থাকে। যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের বাণীতে তত্ত্ব একমাত্র পরমাত্মা, অন্য কোন তত্ত্ব নেই। গুণীতীত হয়ে পরমতত্ত্ব পরমাত্মায় স্থিত মহাপুরুষ গুণের অনুসারে কর্মগুলির বিভাজন দেখতে পান। তামসিক গুণের প্রভাবে আলস্য, নিদ্রা, প্রমাদ, কর্মে প্রবৃত্ত না হওয়ার স্বভাব দেখা যায়। রাজসিক গুণের প্রভাবে-আরাধনা থেকে সরে না আসার স্বভাব, শৌর্য এবং স্বামীভাব দেখা যায়। সাত্ত্বিক গুণ কার্যরত হলে—ধ্যান, সমাধি, অনুভবে উপলব্ধি, নিবন্ধন চিন্তন, সারল্য স্বভাবে হবে। গুণ পরিবর্তনশীল। প্রত্যক্ষদর্শী জ্ঞানীই বুঝতে পারেন গুণ অনুসারে কর্মের উৎকর্ষ-অপকর্ষ হয়। গুণ নিজের কর্ম করিয়ে নেয় অর্থাৎ গুণ গুণে বর্তিত হয়— এরূপ চিন্তা করে প্রত্যক্ষদ্রষ্টা কর্মে আসন্ত হন না; কিন্তু যিনি গুণের অতীত হতে পারেননি, এখনও পথিক তাঁকে কর্মে আসন্ত থাকতে হবে। সেইজন্য—

প্রকৃতেগুণসম্মৃচ্ছাঃ সজ্জন্তে গুণকর্মসু।

তানকৃত্মবিদো মন্দান্ কৃত্মবিন্ন বিচালয়েৎ। ।২৯।।

প্রকৃতির গুণের দ্বারা মুক্ত পুরুষগণ কর্মে ক্রমশঃ নির্মল গুণের উন্নতি দেখে তাতে আসক্ত হন। সেই অসম্পূর্ণ জ্ঞানবিশিষ্ট ‘মন্দান’- শিথিল চেষ্টা যাদের, তাদের উত্তম জ্ঞানসম্পন্ন জ্ঞানীপুরুষ চালিত করবেন না। তাদের হতোৎসাহ করবেন না, উৎসাহ দেবেন, কারণ কর্ম করেই পরম নৈক্ষম্য স্থিতি লাভ হবে। নিজের শক্তি ও স্থিতি বুঝে কর্মে প্রবৃত্ত জ্ঞানমার্গী সাধকের উচিত যে, গুণের প্রভাবে কর্মের আচরণ হচ্ছে বলে যেন মনে করেন, নিজেকে কর্তা ভেবে অহঙ্কারী যেন না হয়ে যান, নির্মল গুণলাভ হলেও তাতে আসক্ত যেন না হন। কিন্তু নিষ্কাম কর্মযোগীর কর্ম এবং গুণের বিশ্লেষণ করে সময় নষ্ট করা উচিত নয়। তাঁকে আত্মসমর্পণ করে শুধু কর্মে প্রবৃত্ত থাকতে হবে। কোন গুণ কার্যরত, তা দেখার ভার ইষ্টের। গুণের পরিবর্তন এবং ক্রমশ উত্থান তিনি ইষ্টের কৃপা বলে মনে করেন, কর্মের আচরণও তাঁরই কৃপা বলে মনে করেন। অতএব আমি কর্তা এই অহঙ্কার অথবা গুণে আসক্ত হওয়ার সমস্যা তাঁর থাকে না। তিনি তো অনবরত প্রবৃত্ত থাকেন। এই প্রসঙ্গে এর সঙ্গে যুদ্ধের স্বরূপ বর্ণনা করে শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

ময়ি সবাণি কমাণি সম্যস্যাধ্যাত্মচেতসা ।

নিরাশীনির্মমো ভৃত্বা যুধ্যস্ব বিগতজ্বরঃ ॥ ৩০ ॥

সেইজন্য অর্জন! তুমি ‘অধ্যাত্মচেতসা’- অন্তরাত্মায় চিন্তকে নিরুদ্ধ করে, ধ্যানস্থ হয়ে, কর্মগুলি আমাতে সমর্পণ করে আশা-মমতা ও শোকশূন্য হয়ে যুদ্ধ কর। যখন চিন্ত ধ্যানস্থ, লেশমাত্র কিছু পাওয়ার আশা নেই, কর্মের প্রতি আসক্তি নেই, অসফলতার সত্তাপ নেই, তখন সেই পুরুষ যুদ্ধ কি করবেন? যখন চারিদিক থেকে চিন্ত সংযত হয়ে হৃদয়-দেশে নিরুদ্ধ হয়ে আসছে, তখন সেই পুরুষ যুদ্ধ করতে যাবেন কেন? কার সঙ্গে যুদ্ধ করবেন? সেস্থানে কে বা আছে? বাস্তবে যখন আপনি ধ্যান করতে আরম্ভ করবেন, তখনই যুদ্ধের আসল স্বরূপ আপনি বুঝতে পারবেন। কাম-ক্রেত্র, রাগ-দেব, আশা-তৃষ্ণ ইত্যাদি বিকারসমূহ, বিজাতীয় প্রবৃত্তিগুলি যাদের ‘কুরু’ বলা হয়, এরা সংসারে যাতে প্রবৃত্তি হয় তারই চেষ্টা করবে। বিঘ্নদণ্ডে ভয়ঙ্কর আক্রমণ করবে। এদের সঙ্গে সংঘর্ষের নামই যুদ্ধ। একে অতিক্রম করে যাওয়াই হ'ল বাস্তবিক যুদ্ধ। এদের নিশ্চিহ্ন করে, অন্তরাত্মায় মনকে স্থির করা, ধ্যানস্থ হওয়াই যথার্থ যুদ্ধ। এর উপর পুনরায় জোর দিলেন—

যে মে মতমিদং নিত্যমনুত্তিষ্ঠতি মানবাঃ ।

**শ্রদ্ধাবন্তোহনসূয়ন্তো মুচ্যন্তে তেহপি কর্মভিঃ ॥ ৩১ ॥**

অর্জুন ! যাঁরা দোষ-দৃষ্টিশূন্য হয়ে, শ্রদ্ধাবান्, আত্মসর্মাণের সঙ্গে আমার এই মতের সর্বদা অনুষ্ঠান করেন যে, ‘যুদ্ধ কর’, তাঁরা সকল কর্ম থেকে মুক্ত হন। যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের এই আশ্চাস কেবল হিন্দু মুসলমান অথবা খৃষ্টানদের জন্য নয়, বরং মানুষ মাত্রের জন্য। তাঁর বাণী হল ‘যুদ্ধ কর’। এই আদেশ থেকে এই মনে হয় যেন এই উপদেশ কেবল যুদ্ধাকাঙ্ক্ষী ব্যক্তিদের জন্যই ছিল। অর্জুনের সম্মুখে সৌভাগ্যবশতঃ বিশ্বুদ্বের পরিস্থিতি ছিল; কিন্তু আপনার সম্মুখে কোন যুদ্ধ স্থিতি নেই। তাহলে গীতাশাস্ত্রের উপদেশ আপনার কি কাজে লাগবে ? কারণ কর্ম থেকে মুক্ত হওয়ার একমাত্র উপায় যুদ্ধ। এটা তাঁদের জন্য বিবৃত করা হয়েছে। বাস্তবে কিন্তু তা নয়। বস্তুতঃ এটা অস্তর্দেশের যুদ্ধ। ক্ষেত্র এবং ক্ষেত্রজ্ঞের, বিদ্যা এবং অবিদ্যার, ধর্মক্ষেত্র এবং কুরংক্ষেত্রের সংঘর্ষ। আপনি যেমন যেমন ধ্যানে চিন্তকে নিরন্তর করবার চেষ্টা করবেন, তেমন তেমন বিজাতীয় প্রবৃত্তিগুলি বিঘ্নরূপে ভয়ঙ্করভাবে আক্রমণ করবে। তাদের শাস্ত করে, চিন্তকে নিরন্তর করার চেষ্টাই যুদ্ধ। যিনি দোষ-দৃষ্টিমুক্ত হয়ে শ্রদ্ধাপূর্বক এই যুদ্ধে প্রবৃত্ত হন, তিনি কর্মবন্ধন থেকে, বার বার আসা-যাওয়া থেকে, সম্পূর্ণরূপে মুক্ত হয়ে যান। যারা এই যুদ্ধে প্রবৃত্ত হয় না, তাদের কেমন গতি হয় ? এই প্রসঙ্গে বলা হয়েছে—

যে স্তেদভ্যসূয়ন্তো নানুত্তিষ্ঠতি মে মতম্ ।

**সর্বজ্ঞানবিমৃতাংস্তাষিদ্বি নষ্টানচেতসঃ ॥ ৩২ ॥**

যে দোষ-দৃষ্টিযুক্ত ‘অচেতসঃ’- মোহনিশাতে অচেতন ব্যক্তিগণ আমার এই মতের অনুসারে অনুষ্ঠান করে না অর্থাৎ ধ্যানস্ত হয়ে আশা-মমতা-সন্তাপরহিত হয়ে আত্মসমর্পণ করে যুদ্ধে প্রবৃত্ত হয় না, ‘সর্বজ্ঞানবিমৃতান्’- জ্ঞানপথে সর্বদা মোহমুক্ত সেই ব্যক্তিগণকে তুমি কল্যাণভূষ্টই জানবে। যদি এটাই সত্য, তাহলে লোকে এর অনুষ্ঠান করে না কেন ? এই প্রসঙ্গে বলা হয়েছে—

সদৃশং চেষ্টতে স্বস্যাঃ প্রকৃতেজ্ঞনবানপি ।

প্রকৃতিং যান্তি ভূতানি নিগ্রহঃ কিং করিয্যতি ॥ ৩৩ ॥

সকল প্রাণী নিজের প্রকৃতিকে অনুসরণ করে, স্বীয় স্বভাবের বশীভূত হয়ে কর্মে অংশগ্রহণ করে। প্রত্যক্ষদর্শী জ্ঞানীও নিজের প্রকৃতির অনুরূপ কার্য করেন। প্রাণী নিজের কর্ম অনুসারে আচরণ করে, জ্ঞানী নিজ স্বরূপ অনুসারে। যেমন যার প্রকৃতির প্রভাব, সে সেরকমই কার্য করে থাকে। এটা স্বতঃসিদ্ধ। কেউ এর হাত থেকে নিষ্ঠার পায় না। এই কারণেই সবাই আমার মতানুযায়ী কর্মে প্রবৃত্ত হতে পারে না। তারা আশা, মমতা, সন্তাপ, শক্তাস্ত্রে রাগ-দ্বেষ এদের ত্যাগ করতে পারে না, যার জন্য কর্মের সম্যক্ আচরণ হয় না। একেই আরও স্পষ্ট করলেন এবং অন্য কারণ দেখালেন—

ইন্দ্রিয়স্যেন্দ্রিয়স্যার্থে রাগদ্বেষো ব্যবস্থিতো ।  
তয়োর্ন বশমাগচ্ছেন্তো হ্যস্য পরিপন্থিনৌ ॥ ৩৪ ॥

ইন্দ্রিয় এবং ইন্দ্রিয়গুলির ভোগে রাগ-দ্বেষ স্থিত। এই দুটির বশীভূত হওয়া উচিত নয়, কারণ এই কল্যাণপথে কর্মমুক্ত হওয়ার প্রণালীতে এই রাগ ও দ্বেষ দুর্ধর্ষ শক্ত, আরাধনাতে বাধার সৃষ্টি করে। শক্ত যখন অন্তরে, তখন বাইরে কার সঙ্গে কে যুদ্ধ করবে? ইন্দ্রিয় এবং ভোগের সংসর্গে শক্ত থাকে, আমাদের অস্তংকরণেই বাস করে। কাজেই এই যুদ্ধও অস্তংকরণের যুদ্ধ। কারণ দেহটাই ক্ষেত্র, যার মধ্যে দুটি প্রবৃত্তি সজাতীয় এবং বিজাতীয়, বিদ্যা এবং অবিদ্যা থাকে। যারা মায়ারই দুটি অঙ্গ। এই প্রবৃত্তিগুলির অতীত হওয়া, সজাতীয় প্রবৃত্তিকে আয়ত্ত করে বিজাতীয়কে নিশ্চিহ্ন করাই যুদ্ধ। বিজাতীয় নিশ্চিহ্ন হলে সজাতীয়ের উপযোগিতা আর থাকে না। স্বরূপের ছোঁয়ায় সজাতীয় তার অস্তরালে বিলীন হয়ে যায়। এইভাবে প্রকৃতির পার পাওয়াই যুদ্ধ, যা ধ্যানদ্বারা সম্ভব।

রাগ-দ্বেষ শাস্ত করতে সময় লাগে, সেইজন্য বহু সাধক ক্রিয়াত্যাগ করে সহসা মহাপুরুষের অনুকরণ করতে আরাস্ত করেন। শ্রীকৃষ্ণ এর থেকে সাবধান করলেন—

শ্রেয়ান্স্বধর্মো বিশুণঃ পরধর্মাণ্স্বনুষ্ঠিতাণ্ঃ ।  
স্বধর্মে নিধনঃ শ্রেয়ঃ পরধর্মো ভয়াবহঃ ॥ ৩৫ ॥

একজন সাধক দশ বছর ধরে সাধনায় প্রবৃত্ত এবং অন্য একজন আজ সাধনায় প্রবৃত্ত হয়েছে। উভয়ের ক্ষমতা এক হবে না। প্রারম্ভিক সাধক যদি তাঁর অনুকরণ

করে, তাহলে সে তার নিজের যোগ্যতাটুকুও হারিয়ে ফেলবে। এই প্রসঙ্গেই শ্রীকৃষ্ণ বলছেন, উত্তমরূপে আচরিত পরধর্ম অপেক্ষা গুণরহিত নিজধর্ম অধিক উত্তম। কর্মে প্রবৃত্ত হওয়ার স্বভাবজাত ক্ষমতাই স্বধর্ম। নিজের ক্ষমতা অনুসারে সাধক কর্মে প্রবৃত্ত হলে একদিন মুক্তিলাভ করে। অতএব স্বধর্ম আচরণে মৃত্যুও পরম কল্যাণকর। যেখানেই সাধনে ছেদ পড়ে, আবার দেহলাভ করার পর সেখান থেকেই পুনরায় যাত্রা আরম্ভ হয়। আস্তার মৃত্যু হয় না। (দেহের) বন্দের পরিবর্তন হলেও বিচার, বুদ্ধি বদলায় না। নিজের থেকে শ্রেষ্ঠ ব্যক্তির অনুকরণ করতে আরম্ভ করলে সাধক ভয় পাবেন। ভয় প্রকৃতিতে, পরমাত্মায় নয়। প্রকৃতির আবরণ আরও ঘনীভূত হবে।

ভগবৎ পথে অনুকরণের বাহ্য্য দেখা যায়। একবার পূজ্য মহারাজজীর প্রতি আকাশবাণী হয়েছিল যে, তিনি যেন অনুসূহিয়াতে গিয়ে বসবাস করেন, তখন তিনি জন্ম থেকে চিত্রকূট এসেছিলেন এবং অনুসূহিয়ার ঘোর জঙ্গলে বাস করতে আরম্ভ করেছিলেন। অনেক মহাত্মা ঐপথ দিয়ে যাতায়াত করতেন। তাঁদের মধ্যে একজন লক্ষ্য করেছিলেন যে, পরমহংসজী দিগন্বর অবস্থাতে থাকেন এবং তাঁর সম্মানও অনেক, তখন সেই মহাত্মাও কৌপীন ত্যাগ করলেন, দণ্ড-কমণ্ডলু অন্য এক সাধুকে দিয়ে ত্যাগী দিগন্বর সেজে বসলেন। কিছুকাল পরে এসে দেখলেন, পরমহংসজী লোকের সঙ্গে কথাবার্তা বলেন, প্রয়োজন মত সময় সময় তাড়না দেওয়ার ছলে অপশব্দও ব্যবহার করেন। মহারাজজীর প্রতি আদেশ হয়েছিল, তিনি যেন ভক্তদের কল্যাণার্থে কিছু তিরস্কার করেন, এই পথের পথিকদের উপর প্রথর দৃষ্টি রাখেন। মহারাজের অনুকরণ করে সেই মহাত্মাও গালাগাল দিতে আরম্ভ করলেন; কিন্তু তার পরিবর্তে লোকেও তাঁকে ভাল-মন্দ দুকথা শুনিয়ে দিত। তিনি তখন বলেছিলেন—পরমহংসজীকে কেউ কিছু বলে না আর এখানে তো মুখে মুখে জবাব দিচ্ছে।

বছর দুই পরে ফিরে এসে সেই মহাত্মা দেখেছিলেন যে পরমহংসজী গদিতে বসে, লোকে পাখা দিয়ে বাতাস করছে, চামর ব্যজন করছে। তিনিও দেখাদেখি সেই জঙ্গলের এক ভাঙ্গা বাড়ীতে তক্তাপোশ আনিয়ে, তাতে গদি পেতে, দুটি লোক নিযুক্ত করলেন, চামর ব্যজন করবার জন্য। প্রতি সোমবার ভীড়ও হতে লাগল, পুত্রের ইচ্ছুক পঞ্চাশ টাকা দিন, কন্যার ইচ্ছুক পাঁচিশ টাকা দিন; পরস্ত কথায় বলে

‘উঘরে অস্ত ন হোই নিবাহু’। এক মাসের মধ্যেই সেই সাধুকে সেস্থান ত্যাগ করে অন্যত্র যেতে হয়েছিল। মান-প্রতিষ্ঠা সব খুইয়ে বসেছিলেন। এই ভগবৎ-পথে অনুকরণের কোন স্থান নেই। সাধককে স্বধর্মেরই আচরণ করা উচিত।

স্বধর্ম কি? দ্বিতীয় অধ্যায়ে শ্রীকৃষ্ণ স্বধর্মের নাম নিয়েছিলেন যে, স্বধর্ম লক্ষ্য করলেও, তুমি যদ্ব করার উপযুক্ত পাত্র। এর চেয়ে শ্রেষ্ঠ কল্যাণকর পথ ক্ষত্রিয়ের জন্য আর নেই। স্বধর্মে অর্জুন ক্ষত্রিয়। যোগেশ্বর সক্ষেত করলেন যে, অর্জুন! যাঁরা ব্রাহ্মণ, তাঁদের জন্য বেদের উপদেশ ক্ষুদ্র জলাশয়ের তুল্য। তুমি বেদের উৎখ্রে ওঠ এবং ব্রাহ্মণ হও, অর্থাৎ স্বধর্মে পরিবর্তন সন্তুষ্ট। এখানে পুনরায় বললেন—রাগ-দ্বয়ের বশীভূত হয়ো না। এদের কাটিয়ে ওঠ। স্বধর্মই শ্রেয়স্কর—তাঁর বলবার অর্থ এই নয় যে অর্জুন কোন ব্রাহ্মণের অনুকরণ করে তাঁর মত বেশ-ভূষা ধারণ করব্বক।

কর্মের একমাত্র পথকেই মহাপুরুষগণ চারটি শ্রেণীতে বিভক্ত করেছেন—নিকৃষ্ট, মধ্যম, উত্তম এবং অতি উত্তম। এই শ্রেণী বিভাগকে সাধকের জন্য ক্রমশঃ শূদ্র, বৈশ্য, ক্ষত্রিয় এবং ব্রাহ্মণের নাম দিলেন। শূদ্র স্থিতি (সেবাধর্ম) থেকে কর্মের আরম্ভ হয় এবং সাধনা ক্রমে ঐ সাধকেই ব্রাহ্মণের স্থিতিলাভ করতে পারেন। এর পরের অবস্থাতে সাধক যখন পরমাত্মায় স্থিতিলাভ করেন, তখন ‘ন ব্রাহ্মণো ন ক্ষত্রিযঃ ন বৈশ্যো ন শূদ্রঃ চিদানন্দরূপঃ শিবোহহম্ শিবোহহম্।’ তিনি বর্ণগুলির উৎখ্রে উঠে যান। এ কথাই শ্রীকৃষ্ণও বললেন যে, ‘চাতুর্বর্ণং ময়া সৃষ্টম্’— এই চারবর্ণের সৃষ্টি কর্তা আমি। তাহলে কি জন্মের আধারে মানুষের জাতি-বিভাগ করা হয়েছে? না, ‘গুণকর্ম বিভাগশঃ’— গুণের আধারে কর্ম-বিভাগ করেছি। কর্ম কি? তা কি সাংসারিক কর্ম? শ্রীকৃষ্ণ বললেন— না, তা হল নিয়ত কর্ম। এই নিয়ত কর্ম কি? তিনি বললেন— যজ্ঞের প্রক্রিয়াই নিয়ত কর্ম, যার দ্বারা নিঃশ্বাস (প্রাণ)কে প্রশ্বাসে (অপানে) আন্তি, প্রশ্বাস (অপান)কে নিঃশ্বাসে (প্রানে) আন্তি, ইন্দ্রিয় সংযম ইত্যাদি। যার শুন্দ অর্থ হ’ল আরাধনা, যোগসাধনা। আরাধ্যদেবপর্যন্ত পৌঁছিয়ে দেয় যে বিধি-বিশেষ তা হল আরাধনা। এই আরাধনা কর্মকেই চারটি শ্রেণীতে বিভাগ করা হয়েছে। যার যেমন ক্ষমতা, সেই ক্ষমতা অনুযায়ীই তাকে নিজ শ্রেণী থেকেই আরম্ভ করা উচিত। একেই বলে সকলের নিজ নিজ ধর্ম। যদি কেউ শ্রেষ্ঠ পুরুষের অযৌক্তিক অনুকরণ করে, তাহলে তা বিড়ম্বনার কারণ হয়ে দাঁড়ায়। তার নাশ হবে না, কারণ এতে বীজের নাশ নেই; কিন্তু সে প্রকৃতির চাপে ভয়াক্রান্ত,

দীন-হীন নিশ্চয়ই হয়ে যাবে। যদি প্রথম শ্রেণীর কোন ছাত্র স্নাতক শ্রেণীতে বসতে আরম্ভ করে তাহলে কি তার পাঠ্য-বিষয় বোধগম্য হবে? সে প্রারম্ভিক বর্ণমালা থেকেও বিধিত হয়ে যাবে। অর্জুন প্রশ্ন করলেন যে, মানুষ স্বধর্মের আচরণ করতে পারে না, কেন?—

### অর্জুন উবাচ

অথ কেন প্রযুক্তোহয়ং পাপং চরতি পূর্ণবৎ।

অনিচ্ছন্নপি বাষ্পেষ্য বলাদিব নিয়োজিতঃ ॥৩৬॥

হে কৃষ্ণ! মানুষ কারদ্বারা চালিত হয়ে অনিচ্ছাসত্ত্বেও যেন বলপূর্বক নিযুক্ত হয়ে পাপাচরণে প্রবৃত্ত হয়? আপনার মতানুসারে চলতে পারে না কেন? এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন—

### শ্রীভগবানুবাচ

কাম এষ ক্রোধ এষ রজোগুণসমুক্তবৎ।

মহাশনো মহাপাপমা বিদ্যেনমিহ বৈরিগ্যম্ ॥ ৩৭॥

অর্জুন! রজোগুণজাত এই কাম এবং এই ক্রোধ অগ্নির ন্যায় ভোগে অতৃপ্তি অত্যন্ত পাপী। কাম-ক্রোধ রাগ-দ্বেষের পূরক। একটু আগেই আমি যার চর্চা করেছি, এই বিষয়ে তুমি এদেরই শক্ত জানবে। এখন এদের প্রভাব সম্বন্ধে বলছেন—

ধূমেনাব্রিয়তে বহির্ঘথাদশো মলেন চ।

যথোন্নেনাবৃত্তে গভস্ত্বথা তেনেদমাবৃতম্ ॥ ৩৮॥

যেরূপ ধূমদ্বারা অগ্নি, ময়লাদ্বারা দর্পণ এবং ঝিল্লী দ্বারা গর্ভ আবৃত থাকে, সেরূপ কাম-ক্রোধাদি বিকারসমূহ দ্বারা এই জ্ঞান আবৃত থাকে। তেজা কাঠ জালালে কেবল ধোঁয়াই হয় আগুণ থাকা সত্ত্বেও শিখারূপ নিতে পারে না, ময়লা দিয়ে ঢাকা দর্পণে যেরূপ প্রতিবিন্ধ স্পষ্ট হয় না, ঝিল্লীদ্বারা যেরূপ গর্ভ আবৃত থাকে, সেরূপ এই বিকারগুলি থাকতে পরমাত্মার প্রত্যক্ষ জ্ঞান হয় না।

আবৃতং জ্ঞানমেতেন জ্ঞানিনো নিত্যবৈরিণ।

কামরূপেণ কৌন্তেয় দুষ্পুরেণানলেন চ ॥ ৩৯॥

কৌন্তেয় ! আপির ন্যায় ভোগে অত্পু, জ্ঞানীর চিরশক্তি এই কামদ্বারা জ্ঞান আবৃত থাকে। এখন শ্রীকৃষ্ণ কাম এবং ক্রোধ দুটি শক্তির কথা বললেন। প্রস্তুত প্লোকে তিনি কেবল একটা শক্তি কামের বিষয়ে বললেন। বস্তুতঃ কামের মধ্যে ক্রোধের অন্তর্ভুবি বিদ্যমান। কামনা পূর্ণ হলে ক্রোধ শাস্তি হয়, কিন্তু কামনা শেষ হয় না। কামনা পূরণে বাধা উৎপন্ন হলেই পুনরায় ক্রোধ জেগে ওঠে। কামের অন্তরালে ক্রোধ নিহিত থাকে। এই শক্তির উৎস কোথায় ? কোথায় একে খুঁজবে ? নিবাসস্থান জানা থাকলে এর সমূল বিনাশে সুবিধা হবে। এই প্রসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ বললেন—

ইন্দ্রিয়াণি মনো বুদ্ধিরস্যাধিষ্ঠানমুচ্যতে।

এতেবিমোহযত্যেষ জ্ঞানমাবৃত্য দেহিনম্॥ ৪০॥

ইন্দ্রিয়সমূহ, মন এবং বুদ্ধি এদেরই কামের আশ্রয় বলা হয়। কাম মন, বুদ্ধি এবং ইন্দ্রিয়সমূহের দ্বারাই জ্ঞানকে আবৃত করে এই জীবকে মোহমুক্তি করে।

তস্মাত্ত্বমিল্লিয়াণ্যাদৌ নিয়ম্য ভরতর্ত্বভ।

পাপ্মানং প্রজহি হ্যেনং জ্ঞানবিজ্ঞানাশনম্॥ ৪১॥

সেইজন্য অর্জুন ! তুমি আগে ইন্দ্রিয়গুলিকে ‘নিয়ম্য’- সংযত কর, কারণ এর অন্তরালে শক্তি বিদ্যমান। তা’ তোমার দেহের ভিতরে, বাইরে খুঁজলে কোথাও পাবে না। এটা হৃদয়-দেশের, অন্তর্জগতের যুদ্ধ। ইন্দ্রিয়সমূহকে বশ করে, জ্ঞান এবং বিজ্ঞানের বিনাশক, এই ক্ষতিকারক কামের নাশ কর। কাম সহজে আয়ত্তে আসে না, অতএব বিকারের নিবাসস্থানকেই অবরুদ্ধ কর, ইন্দ্রিয়সমূহকেই সংযত কর।

কিন্তু ইন্দ্রিয়সমূহ এবং মনকে সংযত করা খুব কঠিন। আমি কি তা করতে পারব ? এই প্রসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ তাঁর সামর্থ্য বলে উৎসাহ দিচ্ছেন—

ইন্দ্রিয়াণি পরাণ্যাহুরিন্দ্রিয়েভ্যঃ পরং মনঃ।

মনস্তু পরা বুদ্ধিযোৰ বুদ্ধেঃ পরতস্তু সঃ॥ ৪২॥

অর্জুন ! এই দেহ থেকে ইন্দ্রিয়গণকে শ্রেষ্ঠ অর্থাৎ সুক্ষ্ম এবং বলবান বলে জানবে। ইন্দ্রিয়সমূহ থেকে মন শ্রেষ্ঠ এবং বলশালী। মন থেকে বুদ্ধি শ্রেষ্ঠ এবং

যিনি বুদ্ধির থেকেও অত্যন্ত শ্রেষ্ঠ, তিনিই তোমার আত্মা। সেই হলে তুমি। সেইজন্য ইন্দ্রিয়সমূহ, মন এবং বুদ্ধি নিরঙ্কু করতে তুমি সম্ভব।

এবং বুদ্ধেং পরং বুদ্ধা সংস্তভ্যাত্মানমাত্মনা।

জহি শক্রং মহাবাহো কামরূপং দুরাসদম্॥ ৪৩॥

এইরূপ বুদ্ধি থেকে শ্রেষ্ঠ অর্থাৎ সুস্ম এবং বলবান् স্বীয় আত্মাকে জেনে, আঘবল বুঝে, বুদ্ধিদ্বারা নিজ মনকে বশ করে অর্জুন! এই কামরূপ দুর্জয় শক্রের নাশ কর। নিজের শক্তি বুঝে এই দুর্জয় শক্রের নাশ কর। কাম দুর্জয় শক্র। ইন্দ্রিয়গুলির সাহায্যে কাম আত্মাকে মোহমুক্ত করে, তাই নিজের শক্তি বুঝে, আত্মাকে বলবান্ জেনে কামরূপ শক্রের বিনাশ কর। এখানে স্বতঃসিদ্ধ হয় যে, এই শক্র আস্তরিক এবং ‘যুদ্ধ’ও অন্তর্জাগতেরই।

নিষ্কর্ষ –

বহুধা ব্যাখ্যাকার তাঁরা বর্তমান অধ্যায়ের নাম ‘কর্মযোগ’ দিয়েছেন; কিন্তু এটা সঙ্গত বলে মনে হয় না। দ্বিতীয় অধ্যায়ে যোগেশ্বর কর্মের নাম নিয়েছেন। তিনি কর্মের মহত্ব প্রতিপন্থ করে, তার মনে কর্ম-জিজ্ঞাসা জাগ্রত করলেন এবং বর্তমান অধ্যায়ে তিনি কর্মকে পরিভাষিত করলেন যে, যজ্ঞের প্রক্রিয়া কর্ম। এখানে একথা প্রমাণিত হচ্ছে যে, যজ্ঞ কোন নির্ধারিত দিক অর্থাৎ প্রক্রিয়া-বিশেষ। এছাড়া জগতে যা কিছু করা হয় তা’ এই লোকেরই বন্ধন। শ্রীকৃষ্ণ যে কর্ম সম্বন্ধে বলবেন, সে কর্ম ‘মোক্ষসেহশুভাত্’— সংসার-বন্ধন থেকে মুক্তিদায়ক কর্ম।

শ্রীকৃষ্ণ যজ্ঞের উৎপত্তির বিষয়ে বললেন। যজ্ঞ থেকে আমরা কি ফললাভ করি?—তার বিশেষত্বের চিত্রণ করলেন। যজ্ঞ অনুষ্ঠানের উপর জোর দিলেন। তিনি বললেন—এই যজ্ঞের প্রক্রিয়াই কর্ম। যে অনুষ্ঠান করে না, সে পাপী, আরামপিয় ব্যর্থই জীবন ধারণ করে। পূর্ব মহার্যিগণও কর্ম করেই পরম নৈক্ষম্য সিদ্ধি লাভ করে ছিলেন। তাঁরা আত্মতপ্ত, তাঁদের আর কর্মের প্রয়োজন নেই, কিন্তু তবুও অনুগামীদের পথ-প্রদর্শনের জন্য তাঁরাও উত্তমরূপে কর্মে প্রবৃত্ত থাকেন। সেই মহাপুরুষগণের সঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ নিজের তুলনা করলেন, বললেন—আমারও আর কর্ম করবার প্রয়োজন নেই, কিন্তু অনুগামীদের মঙ্গলের জন্য আমিও সর্বদা কর্মে প্রবৃত্ত। শ্রীকৃষ্ণ স্পষ্ট পরিচয় দিলেন যে, তিনিও যোগী।

তিনি কর্মে প্রবৃত্তি সাধকগণকে বিচলিত করতে নিষেধ করলেন, কারণ কর্ম করেই সেই সাধককে পরমস্থিতি লাভ করতে হবে। না করলে নাশ হয়ে যাবে। এই কর্ম অনুষ্ঠানের জন্য শ্রীকৃষ্ণ ধ্যানস্থ হয়ে যুদ্ধ করতে বললেন। দুচোখ বন্ধ, ইন্দ্রিয়সমূহ সংযত করে, মন নিশ্চল করে, চিন্ত নিরন্তর করার অভ্যাস, সে কি রকম যুদ্ধ? না, সে সময় কাম, ক্রোধ, রাগ, দেশ ইত্যাদি সাধকের জন্য বাধক হয়ে দাঁড়ায়, এই বিজাতীয় প্রবৃত্তিসমূহের হাত থেকে উদ্বার হওয়ার চেষ্টাই যুদ্ধ। আসুরী সম্পদ কুরঙ্কেত্র, বিজাতীয় প্রবৃত্তিশূলির এক-একটাকে নাশ করে ধ্যানে মগ্ন হওয়ার চেষ্টাই যুদ্ধ। বস্তুতঃ ধ্যানেই যুদ্ধ নিহিত। বর্তমান অধ্যায়ের সারাংশ এটাই, এতে যজ্ঞের বাস্তবিক স্বরূপ স্পষ্ট হয়নি। কর্মের বিধি-বিধানের সম্যক্ অনুভবও হয়নি। যজ্ঞের স্বরূপ স্পষ্ট হলেই কর্ম কি? তা বোঝা যাবে। এখনও কর্ম স্পষ্ট হয়নি।

বর্তমান অধ্যায়ে কেবল স্থিতপ্রাজ্ঞ মহাপুরুষের প্রশিক্ষণাত্মক দিকের উপর জোর দেওয়া হয়েছে। এই নির্দেশ গুরুজনদের জন্য। তাঁরা যদি কর্মানুষ্ঠান নাও করেন, তবুও তাতে তাঁদের কোন লোকসান নেই, করলে কোন লাভও নেই; কিন্তু যাদের অভীষ্ট পরমগতি, তাদের জন্য যদি নিয়ম-নির্দেশ না দেওয়া হয়, তবে তা যে ‘কর্মযোগ’ একথা বলা যাবেই বা কি করে? যোগেশ্বর বলেছেন-‘যজ্ঞের প্রক্রিয়াই কর্ম’; কিন্তু সেই কর্মের স্বরূপ স্পষ্ট করলেন না এবং যজ্ঞ কি? তা বললেন না। বর্তমান অধ্যায়ে যুদ্ধের যথার্থ চিত্রণ করা হয়েছে।

সম্পূর্ণ গীতাশাস্ত্রে দৃষ্টিপাত করলে দেখা যায় দ্বিতীয় অধ্যায়ে যোগেশ্বর বলেছেন যে, ‘এই শরীর নাশবান, অতএব যুদ্ধ কর’—গীতাশাস্ত্রে যুদ্ধের বাস্তবিক কারণ এটাই। পরে জ্ঞানযোগের বিষয়ে ক্ষত্রিয়ের জন্য যুদ্ধাই কল্যাণের একমাত্র সাধন বলা হয়েছে এবং বললেন যে, এই বুদ্ধি তোমার জন্য জ্ঞানযোগের বিষয়ে বলা হয়েছে। কোন বুদ্ধি? এই যে, জয়-পরাজয় উভয়দৃষ্টিতেই জয়লাভ হয়, একথা জেনে যুদ্ধ কর। চতুর্থ অধ্যায়ে বলেছেন— যোগেস্থিত হয়ে হস্তযন্ত্রিত এই স্বীয় সংশয় জ্ঞানরূপ অসিদ্ধারা ছেদন করে যুদ্ধার্থ উদ্ধিত হও। পঞ্চম অধ্যায় থেকে দশম অধ্যায় পর্যন্ত যুদ্ধের কোন চর্চা করেননি। একাদশ অধ্যায়ে কেবল এই বলেছেন যে, এই শক্রগণ আমার দ্বারা পুর্বেই নিহত হয়েছে, তুমি নিমিত্ত মাত্র হও। যশলাভ কর। এই মৃতদিগকে তুমি বধ কর। যিনি প্রেরক তিনি করিয়ে নেবেন। মৃতদেরই বধ কর।

পথওদশ অধ্যায়ে সংসারকে দৃঢ়মূল অশ্বথ বৃক্ষের ন্যায় বলা হয়েছে, যাকে অসংগতারদপী শস্ত্রদ্বারা ছেদন করে ঐ পরমপদের অনুসন্ধান করবার জন্য নির্দেশ দেওয়া হয়েছে। পরবর্তী অধ্যায়গুলিতে যুদ্ধের উল্লেখ নেই। যষ্ঠাদশ অধ্যায়ে অসুরের চিত্রণ অবশ্যই করা হয়েছে, যারা নরকগামী। শুধু বর্তমান অধ্যায়ে যুদ্ধের বিশদ বর্ণনা আছে। শ্লোক সংখ্যা ৩০ থেকে ৪৩ পর্যন্ত যুদ্ধের স্বরূপ, যুদ্ধের অনিবার্যতা, যুদ্ধে প্রবৃত্ত না হলে বিনাশ, যুদ্ধে হল্য শক্রদের নাম, তাদের বধ করবার জন্য নিজ শক্তির আহ্বান এব নিশ্চয়ই তাদের বধ করবার জন্য জোর দিলেন। বর্তমান অধ্যায়ে শক্র এবং শক্রের আন্তরিক স্বরূপ স্পষ্টরূপে বর্ণনা করে হয়েছে, যাদের বিনাশ করবার জন্য প্রেরণা প্রদান করা হয়েছে। অতএব—

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্ৰহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণার্জুন সংবাদে ‘শক্রবিনাশপ্রেরণা’ নাম তৃতীয়োহথ্যায়ঃ ॥ ৩ ॥

এই প্রকার শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারদপী উপনিষদ্ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ এবং অর্জুনের সংবাদে ‘শক্রবিনাশ প্রেরণা’ নামক তৃতীয় অধ্যায় পূর্ণ হল।

ইতি শ্রীমৎপরমহৎস পরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে  
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ ‘যথার্থগীতা’ ভাষ্যে ‘শক্রবিনাশপ্রেরণা’ নাম তৃতীয়োহথ্যায়ঃ  
॥ ৩ ॥

এই প্রকার শ্রীমৎপরমহৎস পরমানন্দজীর শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত ‘শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা’র ভাষ্য ‘যথার্থ গীতা’তে ‘শক্রবিনাশ প্রেরণা’ নামক তৃতীয় অধ্যায় সমাপ্ত হল।

॥ হরিঃ ওঁ তৎসৎ ॥

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মনে নমঃ ।।

## ।। অথ চতুর্থোহধ্যায়ঃ ।।

তৃতীয় অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ আশ্বাস দিয়েছিলেন যে, দোষদৃষ্টিমুক্ত হয়ে যিনি শনাপূর্বক আমার মতে চলবেন; তিনি সকল কর্মবন্ধন থেকে সম্পূর্ণরূপে মুক্ত হয়ে যাবেন। যোগই (জ্ঞানযোগ ও কর্মযোগ) আমাদের কর্মবন্ধন থেকে মুক্তি দিতে পারে। এই যোগেই যুদ্ধসংগ্রহ নিহিত। প্রস্তুত অধ্যায়ে তিনি বলছেন যে এই যোগের আবিষ্কারক কে? কিভাবে এর ক্রমিক বিকাশ হয়?

### শ্রীভগবানুবাচ

ইমং বিবস্ততে যোগং প্রোক্তবানহমব্যঘ্রম্ ॥

বিবস্তান্নবে প্রাহ মনুরিক্ষ্বাকবেহৰবীৎ ॥১॥

অর্জুন! আমি এই অবিনাশী যোগ কল্পের আরম্ভে বিবস্তান् (সূর্য) কে বলেছিলাম, বিবস্তান্ মনুকে এবং মনু ইক্ষ্বাকুকে বলেছিলেন। কে বলেছিলেন? আমি। শ্রীকৃষ্ণ কে ছিলেন? যোগী। তত্ত্বস্থিত মহাপুরুষই এই অবিনাশী যোগ কল্পের আরম্ভে অর্থাৎ ভজনের আরম্ভে বিবস্তান্ অর্থাৎ যে নিশ্চেষ্ট, এরূপ প্রাণীর প্রতি বলেন। শ্঵াসে সঞ্চার করে দেন। এই স্থানে সূর্য প্রতীকস্বরূপ, কারণ শ্বাসেই ঐ পরমপ্রকাশস্বরূপ বিদ্যমান এবং ঐরূপেই তাঁর প্রকাশ উপলব্ধি করা বিধেয়। বাস্তবিক প্রকাশদাতা (সূর্য) সেস্থানেই আছে।

এই যোগ অবিনাশী। শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন, এর আরম্ভের নাশ নেই। এই যোগ একবার আরম্ভ করে দিলে পূর্ণত্ব প্রদান করেই শান্ত হয়। দেহের কল্প ঔষধির দ্বারা হয়, কিন্তু ভজনের দ্বারা আঘাত কল্প হয়। ভজনের আরম্ভই আঘাতকল্পের আদি। এই সাধন-ভজনও মহাপুরুষের কৃপালাভ হলেই করা সম্ভব হয়। মোহনিশায় অচেতন আদিম মানব, যাদের মধ্যে ভজনের সংস্কার নেই, যোগবিষয়ে যারা কোনদিন চিন্তন

করেনি, এ ধরনের মানুষও মহাপুরুষের দর্শন মাত্র, তাঁর বাণী শুনে, কিছু সেবা-সান্নিধ্য করলে যোগের সংস্কার তাদের মধ্যেও সঞ্চার হয়। একেই গোস্বামী তুলসীদাসজী বলেছেন- ‘জে চিতয়ে প্রভু জিন্ত প্রভু হেরে।’, ‘তে সব ভয়ে পরমপদ জোগু।’ (রামচরিতমানস, ২/২১৬/১-২)।

শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, এই যোগ আমি আরভে সুর্যকে বলেছিলাম। ‘চক্ষোঃ সূর্যো অজায়ত।’ মহাপুরুষের দৃষ্টি-নিক্ষেপ মাত্রই এই যোগের সংস্কার শ্বাসে সঞ্চার হয়। সকলের হাদয়ে স্বয়ংপ্রকাশ, স্ববশ পরমেশ্বরের নিবাস স্থান। শ্বাস নিরোধের দ্বারাই এর প্রাপ্তির বিধান। শ্বাসে সংস্কারের সৃজনই হ'ল সূর্যের প্রতি বলা। সময় হলে এই সংস্কারের স্ফুরণ মনে হয়, মনুর প্রতি এই হ'ল সূর্যের বক্তব্য। মনে স্ফুরণ হলে মহাপুরুষের বাকেয়ের প্রতি ইচ্ছা জাগ্রত হয়। মনে কোন লালসার স্ফুরণ হলে তা লাভ করবার ইচ্ছাও অবশ্যই হয়, মনু ইক্ষ্বাকুকে তাই বলেছিলেন। লালসা জাগবে যে, সেই নিয়ত কর্ম করি, যা অবিনাশী, যা কর্মবন্ধন থেকে মুক্তি দেবে— যদি এমনই হয়, তাহলে করা যাক্ এবং এইভাবে আরাধনাতে তীব্রতা এসে যায়। এই যোগে তন্ময়তা, কোন স্তরে গিয়ে পৌঁছোয়? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

এবং পরম্পরাপ্রাপ্তমিঃ রাজর্যমো বিদৃঃ।

স কালেনেহ মহতা যোগো নষ্টঃ পরন্তপ।।২।।

এইরূপ কোন মহাপুরুষদ্বারা সংস্কারহিত পুরুষের শ্বাসে, শ্বাস থেকে মনে, মন থেকে ইচ্ছায় এবং ইচ্ছা প্রবল রূপ ধারণ করে ক্রিয়াত্মক আচরণের মধ্য দিয়ে এই যোগ ক্রমশঃ উত্থান করতে করতে রাজৰ্য স্তরে পৌঁছোয়, সেই অবস্থায় গিয়েই প্রকাশমান হয়। এই স্তরের সাধকের মধ্যে খাদ্য-সিদ্ধাই-এর সঞ্চার হয়। সেই যোগ এই মহত্পূর্ণকালে এই লোকেই (দেহেই) প্রায়ই নষ্ট হয়ে যায়। এই সীমারেখা কিভাবে পার করা যায়? তাহলে কি এই বিশেষ স্তরে পৌঁছে সকলেই নষ্ট হয়ে যায়? শ্রীকৃষ্ণ বললেন— না, যিনি আমার আশ্রিত, আমার প্রিয় ভক্ত, অনন্য সখা তিনি নষ্ট হন না।

স এবাযং ময়া তেহদ্য যোগঃ প্রোক্তঃ পুরাতনঃ।

ভক্তোহসি মে সখা চেতি রহস্যং হ্যতদুত্তমম্।। ৩।।

এই পুরাতন যোগ-সম্বন্ধে এখন আমি তোমাকে বললাম, কারণ তুমি আমার ভক্ত ও সখা এবং এই যোগ উভয় ও রহস্যপূর্ণ। অর্জুন ক্ষত্রিয় শ্রেণীর সাধক ছিলেন, রাজৰ্যি স্তরের ছিলেন, যেখানে ঝান্দি-সিন্দিই-এর লোভে পড়ে সাধক নষ্ট হয়ে যায়। এই স্তরেও যোগ কল্যাণের মুদ্রাতেই থাকে; কিন্তু প্রায়ই সাধক এখানে এসে স্থলিত হয়ে যায়। এরূপ অবিনাশী কিন্তু রহস্যময় যোগ-সম্বন্ধে শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনকে বললেন; কারণ অর্জুন নষ্ট হবার অবস্থায় ছিলেন। কেন বললেন? এই জন্য যে তুমি আমার ভক্ত, অনন্যভাবে আমার আশ্রিত, প্রিয় এবং সখা।

প্রস্তুত অধ্যায়ের শুরুতে ভগবান বলেছেন যে, এই অবিনাশী যোগ কল্নের আরম্ভে আমিই সূর্যকে বলেছিলাম। সূর্যের নিকট মনু এই গীতা লাভ করেছিলেন এবং নিজের স্মৃতি ভাঙ্গারে সুরক্ষিত করেছিলেন। মনুর নিকট এই স্মৃতি ইক্ষ্বাকু লাভ করেছিলেন এবং পরে রাজৰ্যগণ তাঁর কাছে থেকে এ বিষয়ে জানতে পেরেছিলেন, কিন্তু এই মহত্ত্বপূর্ণ কালে সেই যোগ লুপ্ত হয়ে গিয়েছিল। সেই পুরাতন স্মৃতিজ্ঞান-সম্বন্ধে ভগবান অর্জুনকে বলেছেন। মনু জ্ঞানের যে সারতত্ত্ব লাভ করেছিলেন, সেটা এই গীতাশাস্ত্র। মনু এটাই বংশপরম্পরায় লাভ করেছিলেন। এর অতিরিক্ত আর কোন স্মৃতি তিনি ধারণ করতেন। গীতাজ্ঞান শ্রবণ করে অষ্টাদশ অধ্যায়ের শেষে অর্জুন বলেছেন যে, “আমি জ্ঞান লাভ করেছি”, যেরূপ মনু লাভ করেছিলেন। অতএব শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা শাস্ত্রই বিশুদ্ধ মনুস্মৃতি।

যে পরমাত্মাকে লাভ করতে ইচ্ছুক আমরা, সেই (সদ্গুরু) পরমাত্মা যখন আত্মা থেকে অভিন্ন হয়ে নির্দেশ দেবেন, তখনই যথার্থ ভজন আরম্ভ হবে। এখানে প্রেরকের স্থানে পরমাত্মা এবং সদ্গুরু একে অন্যের পর্যায়। যে স্তরে সাধক দাঁড়িয়ে, সেই স্তরে যখন প্রভু স্বয়ং নেমে আসেন, আদেশ-নির্দেশ দিতে থাকেন, দিক্ব্রান্ত হলে রক্ষা করেন, তখনই মন বশে হয়- “মন বশ হোই তবহি, জব প্রেরক প্রভু বরজে।” (বিনয়পত্রিকা, ৮৯) ইষ্টদেব আত্মা থেকে রথী হয়ে, অভিন্ন হয়ে প্রেরকরূপে প্রেরণা প্রদান না করলে, এই পথে ঠিক-ঠিক প্রবেশ হয় না। সেই সাধক প্রত্যাশী অবশ্যই, কিন্তু তার কাছে ভজন কোথায়?

পুজ্য গুরুদেব ভগবান বলতেন- “হো! আমি কয়েকবারই পথভ্রষ্ট হতে হতে বেঁচে গেছি। ভগবানই বাঁচিয়েছেন। ভগবান এইভাবে বুঝিয়েছেন, এই বলেছেন।” আমি জিজ্ঞাসা করেছিলাম- “মহারাজজী! ভগবানও কথা-বার্তা বলেন?”

বললেন—“হ্যাঁ হো ! ভগবানও এমনিই কথা বলেন, যেমন আমি-তুমি বলে থাকি, ঘন্টার পর ঘন্টা বার্তালাপ চলে, কিন্তু ক্রমভঙ্গ হয় না ।” আমি স্মিয়মান হয়েছিলাম ও সঙ্গে সঙ্গে আশ্চর্যেও পড়েছিলাম যে, ভগবান কথা বলেন, এটাতো বড় নতুন কথা । কিছুক্ষণ পরে মহারাজজী বলেছিলেন—“কেন মন অধীর করছ, তোমার সঙ্গেও বলবেন ।” সত্য ছিল তাঁর বক্তব্য এবং এটাই সখ্যভাব । সখার মত তিনি নিরাকরণ করেন, তাহলেই এই দুরবস্থা সাধক উত্তীর্ণ করতে পারে ।

এপর্যন্ত যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ মহাপুরুষদ্বারা যোগের আরম্ভ, যোগপথে বাধা এবং তা থেকে উত্তীর্ণ হবার পথসম্বন্ধে বললেন । এই প্রসঙ্গে অর্জুন প্রশ্ন করলেন-

### অর্জুন উবাচ

অপরং ভবতো জন্ম পরং জন্ম বিবস্তৎ ।

কথমেতদ্বিজানীয়াৎ ত্বমাদৌ প্রোক্তবানিতি ॥ ৪ ॥

ভগবন् ! আপনার জন্ম ‘অপরম’- এখন হয়েছে এবং আমার মধ্যে শ্বাসের সঞ্চার বহু আগে হয়েছিল । এই যোগসম্বন্ধে ভজনের আদিতে আপনিই বলেছিলেন, তা কিরণপে বুবাব ? এই প্রসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ মহারাজ বললেন—

### শ্রীভগবানুবাচ

বহুনি মে ব্যুতীতানি জন্মানি তব চার্জুন ।

তান্যহং বেদ সর্বাণি ন ত্বং বেথ পরন্তপ ॥ ৫ ॥

অর্জুন ! আমার এবং তোমার বহু জন্ম-এর পূর্বেও হয়েছে । হে পরন্তপ ! আমি সেই সকল জানি, কিন্তু তুমি তা জান না । সাধক জানে না, স্বরূপস্থ মহাপুরুষ জানেন । যিনি অব্যক্ত স্বরূপে স্থিত, তিনি জানেন । তাহলে কি আপনি আর সকলের মত জন্ম গ্রহণ করেন ? শ্রীকৃষ্ণ বললেন— না, স্বরূপলাভ এবং দেহলাভ এক নয় । আমার জন্ম এই চোখে দেখা সম্ভব নয় । আমি অজন্মা, অব্যক্ত, শাশ্঵ত হয়েও এখন দেহের আধারযুক্ত ।

অবধু, জীবত মেঁ কর আসা ।

মুএ মুক্তি গুরু কহে স্বার্থী, ঝুঠা দে বিশ্বাসা ॥

দেহ থাকতেই সেই পরমতন্ত্রে স্থিতিলাভ সম্ভব। লেশমাত্র ক্রটি থাকলে, জন্মগ্রহণ করতে হয়। অর্জুন এখনও শ্রীকৃষ্ণকে নিজের মতই দেহধারী বলে মনে করছেন। তিনি অস্তরঙ্গ প্রশ্ন করলেন— আপনার জন্ম কি অন্য সকলের মতই হয়েছে? আপনিও কি দেহগুলি যেভাবে উৎপন্ন হয়, সেই ভাবে জন্মগ্রহণ করেছেন? শ্রীকৃষ্ণ বললেন—

অজোহপি সন্ধ্যয়াত্মা ভূতানামীশ্বরোহপি সন्।

প্রকৃতিং স্বামধিষ্ঠায় সম্ভবাম্যাত্মায়য়।। ৬।।

আমি বিনাশরহিত, পুনর্জন্মরহিত এবং সমস্ত প্রাণীর প্রাণবায়ুতে সঞ্চারিত হয়েও স্বীয় প্রকৃতিকে বশীভূত করে আত্মায়াদ্বারা আবির্ভূত হই। একটি মায়া অবিদ্যা, যা প্রকৃতিতে বিশ্বাস এনে দেয়, মৌচ এবং অধমযোনির কারণ। অন্যটি মায়া আত্মায়া, যা আত্মতন্ত্রকে জানবার সুযোগ এনে দেয়, স্বরূপকে জন্ম দেয়। একেই যোগমায়াও বলে। যার থেকে আমরা পৃথক ঐ শাশ্বত স্বরূপের সঙ্গে যুক্ত করে, মিলন করিয়ে দেয়। সেই আত্মিক প্রক্রিয়াদ্বারা আমি স্বীয় ত্রিগুণময়ী প্রকৃতিকে বশীভূত করে আবির্ভূত হই।

প্রায়ই লোকে বলে যে, ভগবানের অবতার হবে, তখন দর্শন করব। শ্রীকৃষ্ণ বললেন যে, এমন কিছু হয় না যে অন্য কেউ দেখতে পাবে। স্বরূপের জন্ম পিণ্ডরূপে হয় না। শ্রীকৃষ্ণ বললেন— যোগসাধনাদ্বারা, আত্মায়াদ্বারা নিজের ত্রিগুণময়ী প্রকৃতিকে স্ব-বশ করে আমি ক্রমশ আবির্ভূত হই। কিন্তু কোন্-কোন্ পরিস্থিতিতে?—

যদা যদা হি ধর্মস্য গ্লানির্বতি ভারত।

অভ্যুত্থানমধর্মস্য তদাত্মানং সৃজাম্যহম্ম।। ৭।।

হে অর্জুন! যখন যখন পরমধর্ম পরমাত্মার জন্য হৃদয় গ্লানিতে ভরে যায়, যখন অধর্মের বৃদ্ধিতে অনুরাগী উদ্ধারের পথ দেখতে পায় না, তখন আমি আত্মস্বরূপের রচনা করি। এরূপ গ্লানিটি মনুর হয়েছিল—

হৃদয় বহুত দুখ লাগ, জন্ম গয়ড় হরি ভগতি বিনু।

(রামচরিতমানস, ১/১৪২)

যখন আপনার হৃদয় অনুরাগে ভরে ওঠে, ঐ শাশ্ত্রত ধর্মের জন্য ‘গদ্গদ গিরা নয়ন বহ নীরা’ এই ভাব আসে, চেষ্টা করেও যখন অনুরাগী অধর্ম থেকে উদ্ধার হতে পারে না—এরূপ পরিস্থিতিতে আমি স্বরূপের রচনা করি অর্থাৎ ভগবান কেবল অনুরাগীর জন্য আবির্ভূত হন-

সো কেবল ভগতন হিত লাগী। (রামচরিতমানস, ১/১২/৫)

এই অবতার কোন কোন ভাগ্যবান् সাধকের অন্তরে অবতীর্ণ হন। আপনি আবির্ভূত হয়ে কি করেন ?—

পরিত্রাণয় সাধুনাং বিনাশায় চ দুষ্ক্রতাম্।

ধর্মসংস্থাপনার্থায় সন্তবামি যুগে যুগে।। ৮।।

অর্জুন ! ‘সাধুনাং পরিত্রাণয়’- পরমসাধ্য একমাত্র পরমাত্মাই। যাঁকে লাভ করবার পর অন্যলাভের প্রয়োজন থাকে না। সেই সাধ্যে প্রবেশ সাহায্য করে যে বিবেক, বৈরাগ্য, শম, দম ইত্যাদি দৈবী সম্পদগুলি, সেগুলি নির্বিঘ্নে প্রবাহিত করবার জন্য এবং ‘দুষ্ক্রতাম্’- যাদের মাধ্যমে দোষযুক্ত কার্যগুলি সম্পাদিত হয়, সেই কাম-ক্রেণ্ড, রাগ-দেবোদি বিজাতীয় প্রবৃত্তিসমূহ সমূলে নষ্ট করতে এবং ধর্মকে উত্তমরূপে স্থাপন করতে আমি যুগে যুগে আবির্ভূত হই।

যুগের তাৎপর্য এখানে সত্য, ব্রেতা, দ্বাপর যুগে নয়; যুগধর্মের উত্থান এবং পতন মানুষের স্বভাবের উপর নির্ভর করে। যুগধর্ম চিরকাল ধরে আছে। রামচরিতমানসে সক্ষেত্র দেওয়া হয়েছে—

নিত জুগ ধর্ম হোহিঁ সব কেরে। হৃদয় রাম মায়া কে প্রেরে।।

(রামচরিতমানস, ৭/১০৩ খ/১)

যুগধর্ম সকলের হৃদয়ে সর্বদা পরিবর্তমান। অবিদ্যা থেকে নয়, বরং বিদ্যা থেকে, রামমায়ার প্রেরণা থেকেই হৃদয়ের হয়। রামমায়াকেই প্রস্তুত শ্ল�কে আত্মমায়া বলা হয়েছে। হৃদয়ে রামের স্থিতি প্রদানকারী, সেই বিদ্যা রামদ্বারাই প্রেরিত। তাহলে এখন কি করে জানা যাবে যে, কখন কোন যুগ কাজ করছে? তা’ ‘সুদৃঢ় সত্ত্ব সমতা বিগ্যানা। কৃত প্রভাব প্রসংগ মন জানা।।’ (মানস, ৭/১০৩ খ/২) যখন হৃদয়ে শুদ্ধ সত্ত্বগুণ কার্যরত হয়, রাজস এবং তামস দুটি গুণই শাস্ত হয়ে যায়, বৈষম্য শেষ হয়ে

যায়, যিনি দ্বেষশূণ্য, বিজ্ঞানময় হয়ে যান অর্থাৎ ইষ্ট নির্দেশ গ্রহণ এবং তার উপর দৃঢ় থাকবার ক্ষমতা অর্জন করে নেন, মনে প্রসন্নতার সংগ্রাম হয়, এরূপ যোগ্যতা লাভ হলে তখন সত্যযুগে প্রবেশ করেন। এই ভাবেই অন্যদুটি যুগেরও বর্ণনা করা হয়েছে - তামস বহুত রজোগুণ থেরা। কলি প্রভাব বিরোধ চল্ল ওরা।। (রামচরিতমানস, ৭/১০৩ খ/৫) তামসিক গুণ পরিপূর্ণ, কিছু রজোগুণ মিশ্রিত, চারিদিকে শক্রভাব এবং বিরোধ দৃষ্টিগোচর হয়, এরূপ অবস্থাযুক্ত ব্যক্তির হৃদয় কলিযুগীয় জানতে হবে। যখন তমোগুণ সক্রিয় হয়, তখন মানুষের মধ্যে আলস্য, নিদ্রা এবং প্রমাদের বাহ্যিক দেখা যায়। তমোগুণী ব্যক্তি কর্তব্য জেনেও তাতে প্রবৃত্ত হতে পারে না, নিয়ন্ত্র কর্ম জানার পরও তা' থেকে নিবৃত্ত হতে পারে না। এইভাবে যুগধর্মের উত্থান এবং পতন মানুষের আন্তরিক যোগ্যতার উপর নির্ভর করে। কোন মহাপুরুষ এই যোগ্যতাগুলিকেই চারটা যুগ বলেছেন, কেউ এই চারযুগকেই চারবর্ণ বলে থাকেন, কেউ এগুলিকেই অতি উত্তম, উত্তম, মধ্যম এবং নিকৃষ্ট সাধকের চারটি শ্রেণীরূপে চিহ্নিত করেন। প্রত্যেক যুগে ইষ্ট সহায়করূপে সঙ্গে থাকেন। হ্যাঁ, উচ্চশ্রেণীতে অনুকূল সাহায্য বেশী পাওয়া যায় এবং নিম্নযুগে সহযোগ ক্ষীণ প্রতীত হয়।

সংক্ষেপে শ্রীকৃষ্ণ বললেন যে, সাধ্যবস্তু প্রদান করে যে বিবেক, বৈরাগ্য ইত্যাদিকে নির্বিস্তু প্রাপ্তি করবার জন্য এবং দ্যুগের কারক কাম-ক্রেত্ব, রাগ-দ্বেষ ইত্যাদিকে সম্পূর্ণরূপে বিনাশ করবার জন্য এবং পরমধর্ম পরমাত্মাতে অচল রাখবার জন্য আমি যুগে যুগে অর্থাৎ প্রত্যেক পরিস্থিতিতে, প্রত্যেক শ্রেণীতে আবির্ভূত হই; কিন্তু হৃদয়ে থানি উৎপন্ন হওয়া আবশ্যক। যতক্ষণ ইষ্ট সম্মতি না দেন, ততক্ষণ আপনি বুবত্তেই পারবেন না যে, কোন-কোন বিকার শাস্ত হয়েছে, কোন-কোন্টা এখনও বাকী? প্রত্যেক শ্রেণীর যোগ্যতার সঙ্গে ইষ্ট থাকেন। অনুরাগীর হৃদয়ে তিনি প্রকট হন। ভগবান প্রকট হলে, সকলেই নিশ্চয় দর্শন করবে? শ্রীকৃষ্ণ বললেন না -

**জন্মকর্ম চ মে দিব্যমেবং যো বেত্তি তত্ত্বতঃ।**

**ত্যত্ত্বা দেহং পুনর্জন্ম নৈতি মামেতি সোহর্জুন।। ৯।।**

অর্জুন! আমার ঐ জন্ম অর্থাৎ থানির সঙ্গে সঙ্গে স্বরূপের রচনা এবং আমার কর্ম অর্থাৎ দুষ্কর্মগুলির কারণ যেগুলি সেই কারণগুলির নাশ, যে ক্ষমতাগুলির মাধ্যমে

সাধ্য বস্ত লাভ হয় সেগুলির নির্দোষ সংগ্রহ, ধর্মের স্থিরতা— এই কর্ম এবং জন্ম দিব্য অর্থাত্ অলোকিক, লৌকিক নয়। এই চর্মচক্ষুর দ্বারা তা দেখা সম্ভব নয়। মন এবং বুদ্ধি দিয়ে অনুমান করা দুরস্থ। এত গৃঢ় যখন, তখন তাঁকে দর্শন করেন কারা? কেবল ‘যো বেত্তি তত্ত্বতঃ’- কেবল তত্ত্বদর্শীগণ আমার এই জন্ম এবং কর্ম দেখতে সক্ষম হন। আমাকে সাক্ষাৎ করে, তাঁরা পুনর্জন্ম প্রাপ্ত হন না, কারণ আমাকে লাভ করেন।

যখন তত্ত্বদর্শীই ভগবানের জন্ম এবং কার্য বুঝতে পারেন, তখন লক্ষ লক্ষ মানুষ অবতারপুরুষ দেখবার জন্য কেন ভীড় করে যে কোথাও অবতার অবতীর্ণ হবেন তখন দর্শন করব? আপনি কি তত্ত্বদর্শী? আজও বহু ব্যক্তি বিভিন্ন উপায়ে, বিশেষত মহাত্মা বেশে নিজেকে অবতারপুরুষ বলে প্রচার করেন, কিন্তু তাদের দালালরা প্রচার করে থাকে। ভীড় উপচে পড়ে অবতারপুরুষ দেখার জন্য; কিন্তু শ্রীকৃষ্ণ বললেন, কেবল তত্ত্বদর্শীই প্রত্যক্ষ করেন। তত্ত্বদর্শী কে?

বিভীষিয় অধ্যায়ে সৎ-অসৎ এর নির্ণয় করে বলেছেন যে, অঙ্গুন! অসৎ বস্তর অস্তিত্ব নেই এবং সৎ এর তিনকালে অভাব নেই। তাহলে কি শুধু আপনিই এরপ বলেন? তিনি বললেন— “না, তত্ত্বদর্শীগণ এটা অনুভব করেছেন!” কোন ভাষাবিদ্বা সমৃদ্ধিশালী কেউ দেখেননি। পুনরায় এখানে জোর দিলেন যে, আমি আবির্ভূত হই, কিন্তু শুধু তত্ত্বদর্শী প্রত্যক্ষ করেন। এখানে তত্ত্বদর্শী একটা প্রশ্ন। পাঁচ অথবা পঁচিশটি তত্ত্ব নয়। সংখ্যা-গণনা করতে পারলেই তত্ত্বদর্শী হওয়া যায় না। শ্রীকৃষ্ণ আরও বললেন যে, আত্মাই পরমতত্ত্ব। আত্মা পরম-এর সঙ্গে সংযুক্ত হয়ে পরমাত্মা হয়। যিনি আত্মসাক্ষাৎকার করেছেন, তিনিই এই আবির্ভাব অনুভব করতে পারেন। এর থেকে প্রমাণ হয় যে, অবতার উৎকৃষ্ট অনুরাগীর হাদয়েই আবির্ভূত হন। আর স্তো সাধকের অনুভবে তা ধরা পড়ে না, সাধক বুঝতে পারেন না তাঁকে সংক্ষেত কে দেন? কে পথ দেখান? কিন্তু পরমতত্ত্ব পরমাত্মার দর্শনের পরই তিনি দেখতে ও বুঝতে পারেন এবং দেহত্যাগের পর তাঁকে আর জন্মগ্রহণ করতে হয় না।

শ্রীকৃষ্ণ বললেন যে, আমার জন্ম দিব্য, এই জন্ম যিনি প্রত্যক্ষ করেন তিনি আমাকে লাভ করেন। কিন্তু লোকে তাঁর মৃত্তি তৈরী করে, পূজা করে, আকাশে কোথাও তাঁর নিবাসস্থান আছে বলে কল্পনা করে থাকে। এ সমস্তের অস্তিত্বই নেই।

সেই মহাপুরুষের বলবার অর্থ এই যে, যদি আপনি নির্ধারিত কর্ম করেন, তাহলে বুঝতে পারবেন যে, আপনিও দিব্য। “আপনি যে স্থিতি অবস্থা লাভ করবেন, আমি সেই অবস্থা লাভ করেছি। আপনি যার সন্তাননা করেন, তা আমি এবং আপনার ভবিষ্যৎও আমি।” যখন আপনি পূর্ণতা লাভ করবেন, তখন আপনিও সেই অবস্থা লাভ করবেন, যে অবস্থাপ্রাপ্তি শ্রীকৃষ্ণ। তাই শ্রীকৃষ্ণের স্বরূপ আপনারও হতে পারে। অবতার বাইরে প্রকট হন না। হ্যাঁ, হৃদয় অনুরাগে পূর্ণ হলে আপনার অন্তরেও অবতারের আবির্ভাব সম্ভব। আপনার অন্তরে সেই অনুভূতি সম্ভব। শ্রীকৃষ্ণ আপনাকে প্রোৎসাহিত করলেন যে, বহু ব্যক্তি আমার মতানুসারে চলে, আমার স্বরূপলাভ করেছেন—

বীতরাগভয়ক্রোধা মন্ময়া মামুপাশ্রিতাঃ।

বহবো জ্ঞানতপসা পৃতা মন্ত্রাবমাগতাঃ ॥ ১০ ॥

রাগ ও বিরাগ, উভয়ের অতীত বীতরাগ এবং সেইরূপ ভয়-অভয়, ক্রোধ-অত্রেধ, উভয়ের অতীত, অনন্যভাবে অর্থাৎ নিরহঙ্কার হয়ে আমার শরণাগত অনেক মানুষ জ্ঞানরূপ তপস্যা দ্বারা পবিত্র হয়ে আমার স্বরূপলাভ করেছেন। তবে কি আগে এরূপ বিধান ছিল না, এখন হয়েছে? না তা নয়, এই বিধান সর্বদা ছিল। বহু পুরুষ এই প্রকার আমার স্বরূপলাভ করেছেন। কি প্রকার? যাঁর যাঁর হৃদয় অধর্মের বৃক্ষ দেখে পরমাত্মাকে লাভ করবার জন্য প্লানিতে ভরে ওঠে, সেই অবস্থায় আমি নিজ স্বরূপের রচনা করি। তাঁরা আমারই স্বরূপ লাভ করেন। যাকে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ তত্ত্বদর্শন বলেছিলেন, এখানে তাকেই ‘জ্ঞান’ বলছেন। পরমতত্ত্ব পরমাত্মাকে বলে। তাঁকে প্রত্যক্ষ করে, তাঁকে জানাই জ্ঞান। এরূপ জানেন যিনি, তিনি জ্ঞানী এবং তিনি আমার স্বরূপলাভ করেন। এই প্রশ্ন এখানেই সম্পূর্ণ হল। এখন তিনি যোগ্যতার আধারে, ভজনাকারীদের শ্রেণী-বিভাগ করছেন—

যে যথা মাং প্রপদ্যন্তে তাংস্তৈথেব ভজাম্যহম্।

মম বর্ত্মানুবর্তন্তে মনুষ্যাঃ পার্থ সর্বশঃ ॥ ১১ ॥

অর্জুন! যিনি যতটুকু নিষ্ঠার সঙ্গে আমার ভজনা করেন, আমি তাঁকে সেই ভাবেই ভজনা করি, ততটুকুই সহযোগিতা করি। সাধকের শ্রদ্ধাই কৃপারূপে তাঁর

উপর বর্ণিত হয়। এই রহস্য উপলব্ধি করে জ্ঞানী ব্যক্তি পূর্ণ সমর্পণের সঙ্গে আমার মতানুযায়ী কর্মেরত থাকেন। আমি যেমন আচরণ করি, আমার প্রিয়ভক্তগণও সেই আচরণ করেন। আমি যা করাই, তাই তাঁরা করেন।

ভগবান কিরণে ভজনা করেন? তিনি রথীর দায়িত্ব নিয়ে নেন, সঙ্গে-সঙ্গে থাকেন, এটাই তাঁর ভজন। কলুষসৃষ্টির কারণ নাশ করবার জন্য তিনি সদা প্রস্তুত থাকেন। যে-যে সদ্গুণের সাহায্যে আমরা সত্যে অনুপ্রবেশ করতে পারি, সেই-সেই সদ্গুণ রক্ষা করবার জন্য তিনি এগিয়ে আসেন। যতক্ষণ ইষ্টদেব হাদয় থেকে রথী না হন, এবং প্রতি পদক্ষেপে সাবধান না করেন, ততক্ষণ কোন ভজনাকারীই হাজার চোখবুজে প্রযত্ন করুন, তিনি প্রকৃতির এই দ্বন্দ্ব থেকে পার হতে পারেন না। কি করে বুঝবেন যে, তিনি কতদূর পথ এগিয়েছেন? কতটুকুই বা বাকী? ইষ্টই আত্মা থেকে অভিন্ন হয়ে তাকে পথ দেখান যে, তুমি এখানে এইভাবে কর, এইভাবে চল। এইভাবে প্রকৃতির বাধা বিঘ্ন সরিয়ে ধীরে ধীরে এগিয়ে দিয়ে স্বরূপে প্রবেশ দিয়ে দেন। ভজন সাধকই করেন, কিন্তু তিনি যে দুরত্ব অতিক্রম করতে সক্ষম হন, সেটা ইষ্টের দান। এইরূপ জেনে সকলেই সর্বতোভাবে আমার অনুসরণ করেন। তাঁরা কিরণপ আচরণ করেন?—

কাঙ্ক্ষন্তঃ কর্মণাং সিদ্ধিং যজন্ত ইহ দেবতাঃ।

ক্ষিপ্তং তি মানুষে লোকে সিদ্ধির্ভবতি কর্মজা॥ ১২॥

সেই পুরুষ এই দেহে কর্মে সাফল্য কামনা করে অন্যান্য দেবতার পূজা করেন। সেই কর্মকি? শ্রীকৃষ্ণ বললেন—“অর্জন! তুমি নিধারিত কর্ম কর।” নিধারিত কর্ম কি? যজ্ঞের প্রক্রিয়াই কর্ম। যজ্ঞ কি? সাধনার বিধি-বিশেষ; যাতে নিঃশ্঵াস-প্রশ্বাসের (প্রাণ-অপানের) আহতি, ইন্দ্রিয়সমূহের বহিমুখী প্রবাহকে সংযমাপ্তিতে হোম করা হয়। যার পরিণাম পরমাত্মা। কর্মের শুন্দর অর্থ হল আরাধনা, যার স্বরূপ বর্তমান অধ্যায়েই পরে স্পষ্ট হবে। এই আরাধনার পরিণাম কি? ‘সংসিদ্ধিম্’-পরমসিদ্ধি পরমাত্মা, ‘যান্তি ব্ৰহ্ম সনাতনম্’- শাশ্বত ব্ৰহ্মে প্রবেশ, পরম নৈঞ্চল্যের স্থিতি। শ্রীকৃষ্ণ বললেন-আমার কথামত চলেন যাঁরা, তাঁরা এই মনুষ্যলোকে কর্মের পরিণাম পরম নৈঞ্চল্য সিদ্ধির জন্য অন্যান্য দেবতাকে পূজা করেন অর্থাৎ দৈবী সম্পদ বলবত্তী করেন।

তৃতীয় অধ্যায়ে বলেছিলেন যে, এই যজ্ঞদ্বারা তুমি দেবতাদের বৃদ্ধি কর, দৈবী সম্পদ বলবতী কর। যেমন যেমন হৃদয়-রাজ্যে দৈবী সম্পদ উন্নত হবে, তেমন তেমন তোমার উন্নতি হবে। এইভাবে পরম্পরকে উন্নত করে পরমশ্রেয় লাভ কর। শেষপর্যন্ত উন্নতি করে যাওয়া এই অস্তংক্রিয়া। এরই উপর জোর দিয়ে শ্রীকৃষ্ণ বললেন, আমার আনুকূল্যে যে মনুষ্য কর্মে সিদ্ধি প্রার্থনা করেন, আচরণ করেন দৈবী সম্পদ দৃঢ় করেন, যারদ্বারা সেই নৈঝর্ম্য সিদ্ধি শীঘ্রই লাভ হয়। তিনি অসফল হন না, সফলই হন। শীঘ্রের তাৎপর্য? কর্মে প্রবৃত্ত হওয়ার সঙ্গে-সঙ্গেই কি এই পরমসিদ্ধি লাভ হয়? শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—না, এই সোপানে ওঠার বিধান ক্রমে ক্রমে। কেউ লাফিয়ে ভাবাতীত ধ্যানে পোঁচে যাবে, এমন চমৎকার হয় না। এই প্রসঙ্গে দেখুন—

চাতুর্বর্ণং ময়া সৃষ্টং গুণকর্মবিভাগশঃ।

তস্য কর্তারমপি মাং বিদ্যকর্তারমব্যয়ম্॥ ১৩॥

অর্জুন! ‘চাতুর্বর্ণং ময়া সৃষ্টম্’- চার বর্ণের রচনা আমি করেছি। তাহলে কি মানুষকে চারটি শ্রেণীতে ভাগ করেছেন? শ্রীকৃষ্ণ বললেন- না, ‘গুণকর্মবিভাগশঃ’- গুণের আধারে কর্মকে চারভাগে বিভাগ করেছি। গুণ এখানে মানদণ্ড। তামসিক গুণ সক্রিয় থাকলে আলস্য, নিদ্রা, প্রমাদ, কর্মে প্রবৃত্ত না হওয়ার স্বভাব, অকর্তব্য জেনেও তার থেকে নিবৃত্ত হতে অক্ষম হবে। এরপ অবস্থাতে সাধন আরম্ভ হবেই বা কি করে? আপনি এই কর্মের জন্য যদি প্রযত্নশীল হতে চান, ঘন্টা দুই-তিন আরাধনাতেও বসেন, তাহলেও দশ মিনিটের জন্যও কিন্তু একাগ্রচিন্তিত হতে পারবেন না। দেহটাকে অবশ্যই বসিয়ে রাখবেন; কিন্তু যে মনকে স্থির হওয়া উচিত, বায়ু তরঙ্গে তা বিক্ষিপ্ত থাকে, কুতর্কের জালে জড়িয়ে থাকে। তরঙ্গের উপর তরঙ্গ ছেয়ে আসে, তাহলে আপনি বসেন কেন? সময় নষ্ট করেন কেন? এরপ অবস্থাতে শুধু ‘পরিচর্যাত্মকং কর্ম শুদ্ধস্যাপি স্বভাবজ্ঞম্’, যিনি অব্যক্ত স্থিতিযুক্ত, অবিনাশী তত্ত্বে স্থিত, তাঁর এবং এই পথে অগ্রসর নিজের থেকে উন্নত সাধকের সেবা করুন। এই সেবাদ্বারা দৃষ্টিত সংস্কার শান্ত হবে এবং যে সংস্কার এই সাধনায় এগিয়ে দেবে, তা সবল হতে শুরু করবে।

তামসিক গুণ ক্রমশঃ জ্ঞান হয়ে এলে রাজসিক গুণের প্রাধান্য ও সাত্ত্বিক গুণের স্বল্প সংগ্রারের সঙ্গে সাধকের ক্ষমতা বৈশ্য শ্রেণীর হয়। সেই সময় ঐ সাধক

ইন্দ্রিয়সংযম এবং আত্মিক সম্পত্তির সংগ্রহ স্বভাবতঃ করে যাবেন। কর্মে তৎপর ঐ সাধকের মধ্যে এইভাবে একদিন সাত্ত্বিকগুণের বাহ্যিক ঘটবে, রাজসিক গুণ হ্রাস হয়ে আসবে, তামসিক গুণ শান্ত হয়ে যাবে। ঐ সময় সাধক ক্ষত্রিয় শ্রেণীতে প্রবেশ করবেন। তখন শৌর্য, কর্মে প্রবৃত্ত থাকবার ক্ষমতা, পশ্চাত্পদ না হওয়ার মনোভাব, প্রত্যেক ভাবের উপর প্রভুত্ব, প্রকৃতির গুণগ্রায় ছেদন করবার ক্ষমতা তাঁর স্বভাবের মধ্যে দেখা দেবে। ঐ কর্ম আরও সূক্ষ্ম হলে, সাত্ত্বিক গুণ কার্যরত থাকলে মনে শান্তভাব, ইন্দ্রিয়গুলির দমন, একাগ্রতা, সরলতা, ধ্যান, সমাধি, স্তর্ষীয় নির্দেশ, আস্তিকতা ইত্যাদি ব্রহ্মে স্থিতি প্রদান করে যে স্বাভাবিক ক্ষমতাগুলি, সেগুলির বিকাশ হয়। তখন ঐ সাধক ব্রাহ্মণ শ্রেণীর হন। এটা ব্রাহ্মণ শ্রেণীর কর্মের নিম্নতম সীমা। যখন ঐ সাধক ব্রহ্মে স্থিতিলাভ করেন, ঐ অস্তিম সীমায় তিনি না ব্রাহ্মণ হন না ক্ষত্রিয়, না বৈশ্য না শুদ্র; কিন্তু অন্যের মার্গদর্শনের সময় তিনিই ব্রাহ্মণ। কর্ম একটাই—নিয়ত কর্ম, আরাধনা। অবস্থাভেদে এই কর্মকেই উঁচু-নীচু চারটি শ্রেণীতে বিভাগ করা হয়েছে। কে বিভাগ করেছেন? যোগেশ্বর বিভাগ করেছেন, অব্যক্ত স্থিতিযুক্ত মহাপুরুষ বিভাগ করেছেন। সেই অবিনাশী কর্তা আমাকে তুমি অকর্তা বলেই জানবে। কেন?—

ন মাং কর্মাণি লিঙ্গপত্তি ন মে কর্মফলে স্পৃহা ।

ইতি মাং যোহভিজানাতি কর্মভিন্ন স বধ্যতে ॥ ১৪ ॥

কারণ কর্মফলে আমার স্পৃহা নেই। কর্মফল কি? শ্রীকৃষ্ণ পূর্বেই বলেছেন যে, যারাদ্বারা যজ্ঞ পূর্ণ হয়, সেই ক্রিয়ার নাম কর্ম এবং যজ্ঞ সম্পূর্ণ হলে পরিণামস্বরূপ যা লাভ হয়, সেই জ্ঞানাত্মত পান করেন যিনি, তিনি শাশ্঵ত, সনাতন ব্রহ্মে স্থিতিলাভ করেন। কর্মের পরিণাম পরমাত্মা, এখন পরমাত্মাকে লাভ করবার ইচ্ছাও বাকী নেই, কারণ এখন তিনি এবং আমি অভিন্ন। আমি অব্যক্ত স্বরূপ, তাঁরই স্থিতিযুক্ত। এর থেকে শ্রেষ্ঠ কোন সত্তা নেই, যার জন্য কর্মের প্রতি স্নেহ রাখিব, সেইজন্য কর্ম আমাকে লিপ্ত করতে পারে না এবং এই স্তর থেকে যিনি আমাকে জানেন অর্থাৎ যিনি কর্মের পরিণাম পরমাত্মাকে লাভ করেন, তিনিও কর্মে আবদ্ধ হন না। যেমন শ্রীকৃষ্ণ, তেমনই সেই স্তরের জ্ঞানী মহাপুরুষ।

এবং জ্ঞাত্বা কৃতং কর্ম পূর্বেরপি মুমুক্ষুভিঃ ।

কুরু কর্মের তস্মাত্বং পূর্বে পূর্বতরং কৃতম্ ॥ ১৫ ॥

অর্জুন ! প্রাচীন মুমুক্ষুগণও এই প্রকার জেনেই কর্ম করেছেন। কি জেনে ? এই যে, যখন কর্মের পরিণাম পরমাত্মা পৃথক্ থাকেন না, কর্মের পরিণাম পরমাত্মার স্পৃহা সমাপ্ত হলে, এ পুরুষ কর্মদ্বারা আবদ্ধ হন না। শ্রীকৃষ্ণ এইরূপ স্থিতিযুক্ত, সেইজন্য তিনি কর্মে লিপ্ত হন না। সেই স্তর সম্বন্ধে জ্ঞাত হলে, আমরাও কর্মদ্বারা আবদ্ধ হব না। যেরূপ শ্রীকৃষ্ণ, এই সমস্ত স্তরের জ্ঞাতারও সেই-ই রূপ তিনিও কর্মবন্ধন থেকে মুক্ত হবেন। শ্রীকৃষ্ণ ‘ভগবান’, ‘মহাত্মা’, ‘অব্যক্ত’, ‘যোগেশ্বর’, ‘মহাযোগেশ্বর’ যাই হোন না কেন, সে স্বরূপ সকলের জন্য। এই অনুভব করেই পূর্ব মুমুক্ষুপুরুষগণ, মোক্ষ ইচ্ছুক পুরুষগণ কর্ম আরম্ভ করেছিলেন। সেইজন্য অর্জুন, তুমিও এই কর্ম কর, যা পূর্বপুরুষগণ সর্বদা করে এসেছেন। এটাই কল্যাণের একমাত্র পথ।

এ পর্যন্ত যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ কর্ম করবার উপর জোর দিয়েছেন; কিন্তু স্পষ্ট বলেননি যে, কর্ম কি ? দ্বিতীয় অধ্যায়ে তিনি কর্মের নাম মাত্র নিয়েছেন। ও বলেছেন-এখন একেই তুমি নিষ্কাম কর্মের বিষয়ে শোন। এর বিশেষত্বের বর্ণনা করেছেন যে, এই কর্ম আমাদের জন্ম-মৃত্যুর মহাভীতি থেকে রক্ষা করে। কর্ম করবার সময় সাবধান হতে বলেছেন, কিন্তু বলছেন না কর্ম কি ? তৃতীয় অধ্যায়ে বলেছেন যে, জ্ঞানমার্গ ভাল লাগে অথবা নিষ্কাম কর্মযোগ, উভয় মার্গেই কর্ম করতে হবে। কর্মত্যাগ করলেই কেউ জ্ঞানী হয় না এবং কর্ম আরম্ভ না করে নিষ্কর্মীও হওয়া যায় না। হঠকারিতাবশতঃ যে করে না, সে দাস্তিক, সেইজন্য মন থেকে ইন্দ্রিয়গুলিকে সংযত করে কর্ম কর। কোন কর্ম ? বললেন-নিয়ত কর্ম কর। এখন এই নিয়ত কর্ম কি ? তখন বললেন- যজ্ঞের প্রক্রিয়াই নিয়ত কর্ম। এ এক নতুন জিজ্ঞাসা যে, যজ্ঞ কি, যার অনুষ্ঠান করলে কর্মের আচরণ করা হয় ? এখানেও যজ্ঞের উৎপত্তি বিষয়ে বলেছেন, এর বিশেষত্বের বর্ণনা করেছেন; কিন্তু যজ্ঞ কি ? তা বললেন না। তাহলে কর্ম কি স্পষ্ট হত এখনও কর্ম কি ? স্পষ্ট হয়নি। এখন বলছেন, অর্জুন ! কর্ম কি ? অকর্ম কি ?- এই বিষয়ে বড় বড় বিদ্বানও মোহিত; তাই তা'সুস্পষ্টভাবে জানা উচিত-

কিং কর্ম কিমকমেতি কবয়োহপ্যত্র মোহিতাঃ।

তত্ত্বে কর্ম প্রবক্ষ্যামি যজ্ঞাত্মা মোক্ষসেহশুভাঃ। ১৬॥

কর্ম কি? অকর্ম কি?— এই বিষয়ে বুদ্ধিমান् পুরুষগণও মোহাচ্ছন্ন। সেই জন্য আমি সেই কর্ম কি? তা তোমাকে স্পষ্টভাবে বলব, যা জেনে তুমি ‘অশুভাং মোক্ষ্যসে’ অর্থাৎ সংসার-বন্ধন থেকে সম্পূর্ণরূপে মুক্ত হবে। কর্মই সংসার-বন্ধন থেকে মুক্ত করে। এই কর্মকে জানবার জন্য শ্রীকৃষ্ণ পুনরায় জোর দিলেন—

কর্মণো হ্যপি বোদ্ধব্যৎ বোদ্ধব্যৎ চ বিকর্মণঃ।

অকর্মণশ্চ বোদ্ধব্যৎ গহনা কর্মণো গতিঃ॥ ১৭॥

কর্মের ও অকর্মের স্বরূপ অবগত হওয়া আবশ্যক এবং বিকর্ম অর্থাৎ বিকল্পশূণ্য বিশেষকর্ম, যার আচরণ আপ্তপুরুষগণ করতে সমর্থ হন, তা'ও অবগত হওয়া আবশ্যক। কারণ কর্মের গতি দুর্ভেদ। কিছু লোক বিকর্মের অর্থ ‘নিষিদ্ধ কর্ম’, ‘মনোযোগ সহকারে যে’ কর্ম করা হয় ইত্যাদি মনে করেন। বস্তুতঃ এখানে ‘বি’ উপসর্গ বিশিষ্টতার দ্যোতক। প্রাপ্তির পর প্রত্যেক মহাপুরুষের কর্ম বিকল্পশূণ্য হয়। আত্মস্থিত, আত্মতৃপ্তি, আপ্তকাম মহাপুরুষগণ কর্মে প্রবৃত্ত থাকলে না কোন লাভ হয় এবং কর্মত্যাগ করলে না কোন লোকসান হয়, তবুও অনুগামীদের মঙ্গলের জন্য তাঁরা কর্মে প্রবৃত্ত থাকেন। এরূপ কর্ম বিকল্পশূণ্য হয়, বিশুদ্ধ হয় এবং এই কর্মকেই বিকর্ম বলা হয়।

উদাহরণের জন্য গীতায় যেখানে যেখানে ‘বি’ উপসর্গের প্রয়োগ হয়েছে সেটা তার বিশেষত্বের দ্যোতক, নিকৃষ্টতার নয়। যেমন- ‘যোগযুক্তো বিশুদ্ধাত্মা বিজিতাত্মা জিতেন্দ্রিযঃ’ (গীতা, ৫/৭) যিনি যোগযুক্ত, তিনি বিশেষরূপে শুন্দ আঘাযুক্ত, বিশেষরূপে জয়ী অংতঃকরণযুক্ত ইত্যাদি বিশিষ্টতার দ্যোতকস্বরূপ। এই প্রকারে গীতায় মাঝে মাঝে ‘বি’-এর প্রয়োগ করা হয়েছে, যা বিশেষরূপে পূর্ণের দ্যোতকস্বরূপ। এইপ্রকার ‘বিকর্ম’ও বিশিষ্ট কর্মের দ্যোতকস্বরূপ, যা প্রাপ্তির পর মহাপুরুষগণ দ্বারা সম্পাদিত হয়, যা’ শুভাশুভ সংস্কারের সৃষ্টি করে না।

বিকর্ম কাকে বলে আপনি দেখলেন, বাকী রইল কর্ম এবং অকর্ম, যা পরের শ্লোকে বুঝবার চেষ্টা করুন। যদি এখানে কর্ম-অকর্মের পার্থক্য বুঝাতে না পারেন, তাহলে কখনও বুঝাতে পারবেন না।

কর্মণ্যকর্ম যঃ পশ্যেদকর্মণি চ কর্ম যঃ।

স বুদ্ধিমান্মনুষ্যেষু স যুক্তঃ কৃৎস্মকর্মকৃৎ॥ ১৮॥

যিনি কর্মে অকর্ম দেখেন, কর্মের অর্থ আরাধনা অর্থাৎ আরাধনা করেও নিজেকে কর্তা বলে অনুভব করেন না, এবং গুণত্রয়ই আমাকে চিন্তনে নিযুক্ত করে, ‘আমি ইষ্টদ্বারা সঞ্চালিত’- এরূপ অনুভব করেন এবং যখন এই প্রকার অকর্ম দেখার ক্ষমতা এসে যায় এবং নিরস্তর কর্ম হতে থাকে, তখনই বুঝতে হবে যে, ঠিক পথে কর্ম হচ্ছে। তিনিই বুদ্ধিমান, মানুষের মধ্যে তিনিই যোগী, যোগাযুক্ত বুদ্ধিসম্পন্ন এবং সম্পূর্ণ কর্মের কর্তা। তাঁর কর্মে লেশমাত্রও ক্রটি থাকে না।

সারাংশতঃ অতএব এই আরাধনাই কর্ম। সেই কর্ম করুন এবং করবার সময় অকর্তৃভাব নিয়ে করুন যে, আমি তো যন্ত্রমাত্র, করাচ্ছেন ইষ্ট এবং আমি গুণজাত অবস্থা অনুসারে চেষ্টা করে যাচ্ছি মাত্র।— যখন অকর্ম দেখবার ক্ষমতা আসে, তখন নিরস্তর কর্ম হতে থাকে, তখনই পরমকল্যাণের স্থিতি প্রদানকারী কর্ম করা সম্ভব। ‘পূজ্য মহারাজজী’ বলতেন যে— “যতক্ষণ ইষ্ট রয়ী না হন, আদেশ-নির্দেশ না দেন, ততক্ষণ সাধনার ঠিক-ঠিক আরম্ভ হয় না।” এর পূর্বে যা কিছু করা হয় তা কর্মে প্রবেশের প্রয়াস ছাড়া আর কিছু নয়। লাঙলের সব ভার গরুর কাঁধের উপরই থাকে, তবুও খেতের চাষ চাষীর কৃতিত্ব, ঠিক এইরূপ সাধনের সব ভার সাধকের উপরই থাকে, কিন্তু বাস্তবিক সাধক ইষ্ট, যিনি সঙ্গে থেকে পথপ্রদর্শন করেন। ইষ্টের ইঙ্গিত ব্যতীত আপনি বুঝতেই পারবেন না যে, আপনি কতদূর এগিয়েছেন? প্রকৃতিতে ভ্রান্ত অথবা পরমাত্মার দিকে এগিয়ে যাচ্ছেন। এই প্রকার ইষ্টের নির্দেশে যে সাধক এই আত্মিক পথে অগ্রসর হন, নিজেকে অকর্তা ভোবে নিরস্তর কর্ম করেন, তিনিই বুদ্ধিমান, তিনি যথার্থ জ্ঞানী, তিনিই যোগী। প্রশংস্ক স্বাভাবিক যে, কর্ম কি সর্বদা করতে হবে অথবা কখনও সম্পূর্ণও হবে? এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর বললেন—

শ্রীকৃষ্ণের মত অনুসারে যা’ কিছু করা হয়, তা’ কর্ম নয়। নির্ধারিত ক্রিয়াই কর্ম। ‘নিয়তং কুরু কর্ম ত্বং’- অর্জুন! তুমি নির্ধারিত কর্ম কর। নির্ধারিত কর্ম কি? বললেন, ‘যজ্ঞার্থাত্কর্মগোহন্যত্র লোকোহয়ং কর্মবন্ধনঃ’- যজ্ঞকে কার্যরূপ দেওয়াই কর্ম। তাহলে এছাড়া যা’ কিছু করা হয়, সে সমস্ত কি কর্ম নয়? শ্রীকৃষ্ণ বললেন- ‘অন্যত্র লোকোহয়ং কর্মবন্ধনঃ’- এই যজ্ঞকে কার্যরূপ দেওয়া ছাড়া যা’ কিছু করা হয়, তা এই লোকেরই বন্ধন, কর্ম নয়। ‘তদর্থং কর্ম’- অর্জুন! যজ্ঞ সম্পূর্ণ করবার জন্য উত্তমরূপে আচরণ কর। এবং যজ্ঞের স্বরূপ বললেন, যা হ’ল শুদ্ধরূপে আরাধনার এক বিধি-বিশেষ, যা আরাধ্যদেবপর্যন্ত পৌঁছিয়ে, তাঁতেই বিজীন করে দেয়।

এই যজ্ঞে ইন্দ্রিয়ের দমন, মনের শমন, দৈবী সম্পদ্ভাব ইত্যাদি বলে শেষে বললেন—বহু যোগী প্রাণ এবং অপানের গতি নিরুদ্ধ করে প্রাণায়াম পরায়ণ হয়ে যান। এরূপ অবস্থাতে অস্তরে কোন সকল্প জাগে না, বাইরের জগতের ঘটনা মনে রেখাপাত করতে পারে না। এইরূপ স্থিতিতে চিন্তকে সম্পূর্ণরূপে নিরুদ্ধ করে সেই নিরুদ্ধ চিন্তের বিলয়কালে সেই পুরুষ ‘যান্তি ব্রহ্ম সনাতনম্’- শাশ্বত, সনাতন ব্রহ্মে প্রবেশ পান। এই সমস্তই যজ্ঞ, যাকে কার্যরূপ দেওয়ার নাম কর্ম। কর্মের শুন্দরূপ ‘আরাধনা’, কর্মের অর্থ ‘ভজন’, কর্মের অর্থ যোগসাধনাকে উত্তমরূপে সম্পাদিত করা, যার বিশদ বর্ণনা বর্তমান অধ্যায়েই পারে করা হবে। এখানে কর্ম ও অকর্মে পার্থক্য করা হয়েছে, যাতে কর্ম করবার সময় তার সঠিক দিক্ষ-নির্ধারণ হয় এবং তাতে চলা যেতে পারে।

যস্য সর্বে সমারস্তাঃ কামসকল্বর্জিতাঃ।

জ্ঞানাপ্রিদঞ্চকর্মাণং তমাহঃ পশ্চিতং বুধাঃ॥ ১৯॥

অর্জন ! ‘যস্য সর্বে সমারস্তাঃ’- যিনি সম্পূর্ণরূপে ক্রিয়া আরম্ভ করেছেন (যা পূর্বের শ্লোকে বলা হয়েছে যে, অকর্ম কি তা দেখবার ক্ষমতা এলে কর্মে প্রবৃত্ত পুরুষ সম্পূর্ণ কর্মের কর্তা হন, যাতে লেশমাত্রও ক্রটি থাকেনা।) ‘কামসকল্বর্জিতাঃ’- ক্রমশঃ উত্থান হতে হতে যখন এতটা সূক্ষ্ম হয় যে বাসনা এবং মনের সকল্প-বিকল্পের উত্থের উচ্চে যায় (কামনা এবং সকল্পের নিরুদ্ধ হওয়াই মনের জয়ী অবস্থা। অতএব কর্ম এই মনকে কামনা এবং সকল্প-বিকল্পের উত্থের নিয়ে যায়) সেই সময় ‘জ্ঞানাপ্রিদঞ্চকর্মাণং’- অস্তিম সকল্প শাস্ত হওয়ার পর, যাঁকে জানি না, জানবার ইচ্ছুক ছিলাম, সেই পরমাত্মার প্রত্যক্ষ জ্ঞান হয়। ক্রিয়াত্মক পথে চলে পরমাত্মাকে প্রত্যক্ষভাবে জানা ‘জ্ঞান’। সেই জ্ঞানলাভের সঙ্গেই ‘দঞ্চকর্মাণং’- কর্ম সর্বদার জন্য ভস্মীভূত হয়। যাঁকে লাভ করার আকাঙ্ক্ষা ছিল, যখন তাঁকে লাভ করেছি, এর চেয়ে শ্রেষ্ঠ কোন সত্তা নেই, তখন কর্ম করে কার খোঁজ করা হবে? তাঁকে জানবার পর কর্মের প্রয়োজন হয় না। এরূপ স্থিতি যাঁদের, তাঁদেরই বোধস্বরূপ মহাপুরুষগণ পশ্চিত বলেছেন। তাঁদের জ্ঞান পূর্ণ। এরূপ স্থিতিযুক্ত মহাপুরুষ করেন কি? কি ভাবে অবস্থান করেন? তাঁর অবস্থিতির উপর আলোকপাত করলেন—

ত্যজ্ঞা কর্মফলাসঙ্গং নিত্যত্ত্বে নিরাশ্রয়ঃ।

কর্মণ্যভিপ্রবৃত্তোহপি নৈব কিঞ্চিত্করোতি সঃ॥ ২০॥

অর্জুন ! সেই পুরুষ সাংসারিক আশ্রয় থেকে মুক্ত, নিত্যবস্তু পরমাত্মাতেই তৃপ্তি, কর্মের ফল পরমাত্মার আসঙ্গিও ত্যাগ করে (কারণ এখন পরমাত্মা অভিন্ন) উত্তমরূপে কর্মে প্রবৃত্ত থেকেও কিছু করেন না ।

**নিরাশীর্ঘতচিত্তাত্মা ত্যক্তসর্বপরিগ্রহঃ ।**

**শারীরং কেবলং কর্ম কুর্বনাপ্নোতি কিঞ্চিষ্ম্ ॥২১॥**

যিনি দেহ এবং অন্তঃকরণ জয় করেছেন, সকল ভোগসামগ্রী ত্যাগ করেছেন, এরপ আশামুক্ত পুরুষের দেহ কর্ম করছে দেখা যায় মাত্র । বস্তুতঃ তিনি কিছুই করেন না, এইজন্য তাঁর পাপ হয় না । তিনি পূর্ণত্ব লাভ করেছেন, সেইজন্য তাঁকে গমনাগমন করতে হয় না ।

**যদৃচ্ছালাভসন্ত্বে দ্বন্দ্বাতীতো বিমৎসরঃ ।**

**সমঃ সিদ্ধাবসিদ্ধৌ চ কৃত্তাপি ন নিবধ্যতে ॥ ২২॥**

বিনা চেষ্টাতে যা কিছু লাভ হয় তাতেই সন্তুষ্ট, সুখ-দুঃখ, রাগ-দেব এবং হৰ্ষ-শোকাদি দ্বন্দ্বগুলির অতীত, ‘বিমৎসরঃ’- ঈর্ষামুক্ত এবং সিদ্ধি ও অসিদ্ধিতে সমত্ত্বাবযুক্ত পুরুষ কর্ম করলেও সেই কর্মে আবদ্ধ হন না । সিদ্ধি অর্থাৎ যাঁকে লাভ করবার ছিল, তিনি যখন অভিন্ন এবং আর কখনও পৃথকও হবে না, সেইজন্য অসিদ্ধিও ভয় নেই । এই প্রকার সিদ্ধি ও অসিদ্ধিতে সমত্ত্বাবযুক্ত পুরুষ কর্ম করেও আবদ্ধ হন না । তিনি কোন কর্ম করেন ? সেই নিয়ত কর্ম, যজ্ঞের প্রক্রিয়া । পুনরায় একেই বলছেন—

**গতসঙ্গস্য মুক্তস্য জ্ঞানাবস্থিতচেতসঃ ।**

**যজ্ঞায়াচরতঃ কর্ম সমগ্রং প্রবিলীয়তে ॥ ২৩॥**

অর্জুন ! ‘যজ্ঞায়াচরতঃ কর্ম’- যজ্ঞের আচরণই কর্ম এবং সাক্ষাৎকারকেই জ্ঞান বলে । এই যজ্ঞের আচরণ করে সাক্ষাৎকারের পর জ্ঞানে স্থিত, সঙ্গে এবং আসঙ্গিমুক্ত মুক্তপুরুষের সমস্ত কর্ম উত্তমরূপে বিলীন হয় । সেই কর্মের কোন পরিণাম নেই, কারণ কর্মের ফল পরমাত্মা ও তিনি এখন অভিন্ন । ফলে আর কি ফল হবে ? সেইজন্য ঐ মুক্ত পুরুষগণের নিজের জন্য কর্মের প্রয়োজন হয় না । তবুও

লোকসংগ্রহের জন্য তাঁরা কর্ম করেন এবং কর্মে প্রবৃত্ত থেকেও তাঁরা কর্মে লিপ্ত হন না। কর্ম করলেও তাতে লিপ্ত হন না, কেন? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

ৰক্ষার্পণং ৰক্ষা হবিৰ্ক্ষাহৌৰী ৰক্ষণা হত্ম্।

ৱৈৰ তেন গন্তব্যং ৰক্ষাকর্মসমাধিনা ॥ ২৪ ॥

এরূপ মুক্তপুরুষের সমর্পণ ব্রহ্মা, হবি ব্রহ্মা, অগ্নি ও ‘ব্রহ্মাই অর্থাৎ ব্রহ্মারূপ অগ্নিতে ব্রহ্মারূপ কর্তাদ্বারা যা আছতি দেওয়া হয় তা’ ব্রহ্ম। ‘ব্রহ্মকর্ম সমাধিনা’- যাঁর কর্ম ব্রহ্মের স্পর্শ করে সমাধিস্থ, তাঁতে বিলীন হয়ে গেছে, এরূপ মহাপুরুষের জন্য লাভের যোগ্য ব্রহ্মাই। তিনি কিছু করেন না, লোক-সংগ্রহার্থ কর্মে প্রবৃত্ত থাকেন।

এ সমস্তই প্রাপ্তিযুক্ত মহাপুরুষের লক্ষণ; কিন্তু কর্মে প্রবেশ করেছেন যে প্রারম্ভিক সাধক, তিনি কোন যজ্ঞ করেন?

পূর্বের অধ্যায়ে শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন- অর্জুন! কর্ম কর। কোন্কর্ম? বললেন- ‘নিয়তং কুরু কর্ম’- নির্ধারিত কর্ম কর। নির্ধারিত কর্ম কোন্টি? বললেন- ‘যজ্ঞার্থংকর্মগোহন্যত্র লোকোহয়ং কর্মবন্ধনঃ’ (৩/৯)- অর্জুন! যজ্ঞের প্রক্রিয়াই কর্ম। এই যজ্ঞের অতিরিক্ত যা কিছু কার্য করা হয়, তা’ এই লোকেরই বন্ধন, কর্ম নয়। কর্ম সংসার-বন্ধন থেকে মুক্তি প্রদান করে। অতএব ‘তদর্থং কর্ম কৌন্তেয় মুক্তসঙ্গঃ সমাচর’।- যজ্ঞ সম্পূর্ণ করবার জন্য সঙ্গদোষ থেকে তফাতে অবস্থান করে উত্তমরূপে যজ্ঞের আচরণ কর। এখানে এক নতুন প্রসঙ্গের অবতারণা করলেন যে, সেই যজ্ঞ কি, যার অনুষ্ঠান করলে কর্ম সম্পূর্ণতার পথে এগিয়ে যাবে? তিনি কর্মের বিশেষত্বের উপর জোর দিলেন, বললেন যজ্ঞের উৎপত্তি হল কোথেকে? যজ্ঞ থেকে আমরা কি ফললাভ করি? বৈশিষ্ট্যের বর্ণনা করেছেন; কিন্তু যজ্ঞ কি? তা এখনও বললেন না।

এখন সেই যজ্ঞকেই এখানে স্পষ্ট করছেন—

দৈবমেবাপরে যজ্ঞং যোগিনঃ পর্যুপাসতে।

ৰক্ষাহ্বাবপরে যজ্ঞং যজ্ঞেনবোপজুত্তি ॥ ২৫ ॥

আগের শ্লোকটিতে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ পরমাত্মাস্থিত মহাপুরুষের যজ্ঞের নিরূপণ করেছেন; কিন্তু অন্যযোগীগণ, যাঁরা এখনও সেই তত্ত্বে স্থিত হননি, ক্রিয়াতে

প্রবেশ করবেন, তাঁরা কোথেকে আরম্ভ করবেন? এই প্রসঙ্গে বলছেন যে, অন্যযোগীগণ ‘দৈবৎ যজ্ঞম’ অর্থাৎ দৈবী সম্পদ হাদয়ে সংগ্রহ করেন, যা’ করবার নির্দেশ ব্রহ্মা দিয়েছিলেন যে, এই যজ্ঞদ্বারা তোমরা দেবতাগণকে উন্নত কর। যেমন যেমন হাদয়ক্ষেত্রে দৈবী সম্পদ অর্জন হবে, তেমন তেমন প্রগতি হবে এবং ক্রমশঃ পরম্পর উন্নতি করে পরমশ্রেষ্ঠ লাভ কর। দৈবী সম্পদ হাদয়ক্ষেত্রে সংগ্রহ করা প্রাথমিক শ্রেণীর যোগীদের যজ্ঞ।

এই দৈবী সম্পদের, যষ্টাদশ অধ্যায়ের প্রথম তিনটি শ্লोকে বর্ণনা করা হয়েছে, যা’ আছে সকলের মধ্যে, কেবল মহত্ত্বপূর্ণ কর্তব্য মনে করে সেগুলিকে হাদয়ে ধারণ করতে হবে, তা’তে লিপ্ত হতে হবে। এগুলিকেই ইঙ্গিত করে যোগেশ্বর বলছেন- অর্জুন! তুমি শোক করো না, কারণ তোমার মধ্যে দৈবী সম্পদের সমাবেশ হয়েছে, তুমি আমাতে নিবাস করবে, আমার শাশ্বত স্বরূপ লাভ করবে। এই দৈবী সম্পদ পরমকল্যাণকর এবং এর বিপরীত আসুরী সম্পদ নীচ এবং অধম যোনির কারণ। আসুরী সম্পদের আহতি দেওয়া হয়, সেই জন্য এর নাম যজ্ঞ এবং এখান থেকেই এই যজ্ঞ আরম্ভ হয়।

অন্যযোগীগণ ‘ব্রহ্মাশৌ’- পরব্রহ্ম পরমাত্মারূপ অগ্নিতে যজ্ঞদ্বারাই যজ্ঞের অনুষ্ঠান করেন। শ্রীকৃষ্ণ আরও বলছেন যে, এই দেহে ‘অধিযজ্ঞ’ আমি। যজ্ঞের অধিষ্ঠাতা অর্থাৎ যজ্ঞ যাতে বিলীন হয়, সেই পুরুষ আমি। শ্রীকৃষ্ণ যোগী, সদ্গুরু ছিলেন। এই প্রকার অন্যযোগীগণ ব্রহ্মরূপ অগ্নিতে যজ্ঞ অর্থাৎ যজ্ঞস্বরূপ সদগুরুকে উদ্দেশ্য করে যজ্ঞের অনুষ্ঠান করেন, সারাংশতঃ সদ্গুরুর স্বরূপের ধ্যান করেন।

শ্রোতৃদীনীত্ত্বিয়াগ্যন্যে সংযমাশ্চিম্বু জুত্তি।

শব্দাদীন্বিষয়ানন্য ইত্ত্বিয়াশ্চিম্বু জুত্তি॥ ২৬॥

অন্যযোগীগণ শ্রোতৃদিক (শ্রোত্র, নেত্র, ত্বক, জিহ্বা, নাসিকা) সকল ইত্ত্বিয়ের সংযমরূপ অগ্নিতে আহতি দেন অর্থাৎ ইত্ত্বিয়ের বিষয় থেকে আকর্ষণ করে সংযত করেন। এখানে আগুন জুলে না। আগুনে যেমন প্রত্যেকটি বস্তু ভঙ্গীভূত হয়, সেইরূপ সংযম এক প্রকার আগুন, যা’ ইত্ত্বিয়সমূহের বহিমুখী প্রবাহ দন্ধ করে। আরও অন্যান্য যোগীগণ শব্দাদিক (শব্দ, স্পর্শ, রূপ, রস ও গন্ধ) বিষয়গুলিকে ইত্ত্বিয়রূপ অগ্নিতে আহতি দেন অর্থাৎ সে সমস্তের অর্থ পরিবর্তন করে সাধনোপযোগী করে নেন।

সাধককে সংসারে থেকেই ভজন করতে হয়। সাংসারিক ব্যক্তিদের ভালমন্দ শব্দ সবই শোনেন। বিষয়োন্তেজক শব্দ শোনামাত্র সাধক সে সবের আশয় বৈরাগ্যে সহায়ক, বৈরাগ্যোন্তেজক ভাবে পরিবর্তিত করে ইন্দ্রিয়াগ্নিতে আছতি দিয়ে দেন। যেমন একবার অর্জুন চিন্তনে রত ছিলেন, অকস্মাৎ তাঁর কর্ণকুহরে সঙ্গীত লহরী প্রতিধ্বনিত হল। মাথাতুলে দেখলেন উর্বশী দাঁড়িয়ে, যে বেশ্যা ছিল। সকলেই তার রূপে মুঝ ছিল, কিন্তু অর্জুন তাকে স্নেহদৃষ্টিতে মাতৃবৎ দেখলেন। এইভাবে দেখামাত্র শব্দ ও রূপে বিকৃত করে যে বিকারণ্তলি, সেগুলি ইন্দ্রিয়ের অন্তরালে বিলীন হয়ে গিয়েছিল।

এখানে অগ্নি ইন্দ্রিয়। অগ্নিতে যেমন যে কোন বস্তু ভস্মীভূত হয়, সেই প্রকার অর্থ পরিবর্তন করে ইষ্টের অনুকূল করে নিলে বিষয়োন্তেজক রূপ, রস, গন্ধ, স্পর্শ ও শব্দ ভস্ম হয়ে যায়, সাধকের মনে কুপ্রভাব পড়ে না। সাধক এই শব্দগুলিতে রূচি দেখান না, এগুলি গ্রহণ করেন না।

এই শ্লোকগুলিতে ‘অপরে’, ‘অন্যে’ শব্দ একজন সাধকেরই উঁচু-নীচু অবস্থা-বিশেষ, যজ্ঞকর্তার উঁচু-নীচু স্তর। ‘অপর’- এর তাৎপর্য পৃথক পৃথক যজ্ঞ নয়।

সবগীনিদ্রিয়কমাণি প্রাণকর্মাণি চাপরে।

আত্মসংযমযোগাশ্রী জুহুতি জ্ঞানদীপিতে॥ ২৭॥

এখনপর্যন্ত যোগেশ্বর যে যজ্ঞের চর্চা করলেন, তাতে ক্রমশঃ দৈবী সম্পদ অর্জন করা হয়, ইন্দ্রিয়সমূহের সমস্ত চেষ্টাগুলিকে সংযত করা হয়, বিষয়োন্তেজক শব্দগুলির প্রবল আঘাতের পরও, সেগুলির অর্থ পরিবর্তন করে তাদের প্রভাব এড়ানো যায়। এর থেকে উন্নত অবস্থাযুক্ত যোগীগণ ইন্দ্রিয়সমূহের সকল চেষ্টা এবং প্রাণের ব্যাপারকে সাক্ষাৎকারের পর জ্ঞানদ্বারা প্রকাশিত পরমাত্মা-স্থিতিদৰ্প যোগাগ্নিতে আছতি দেন। যখন সংযমের ক্ষমতা আত্মার সঙ্গে তদ্বপ হয়, প্রাণ ও ইন্দ্রিয়গুলির ব্যাপার শাস্ত হয়ে যায় সেই সময় বিষয়গুলিকে উদ্বোধ করে যে ধারা এবং ইষ্টে প্রবৃত্তি প্রদান করে যে ধারা, দুটি ধারাই আত্মসাং হয়ে যায়। পরমাত্মাতে স্থিতিলাভ হয়। যজ্ঞের পরিণাম দৃষ্টিগোচর হয়। এই হ'ল যজ্ঞের পরাকার্ষা যে পরমাত্মা লাভের ইচ্ছা ছিল, যখন তাঁতেই স্থিতিলাভ হয়েছে, তখন বাকী রইল কি? পুনরায় যোগেশ্বর যজ্ঞের বিশদ বর্ণনা করলেন—

দ্রব্যজ্ঞানপোষণ যোগবজ্ঞানস্থাপনে।

স্বাধ্যায়জ্ঞানযজ্ঞাশ যতয়ঃ সংশিত্বতাঃ।। ২৮।।

কেউ কেউ দ্রব্যজ্ঞ করেন অর্থাৎ আত্মপথে মহাপুরুষের সেবায় পত্র-পুষ্প অর্পণ করেন। তাঁরা সমর্পণের সঙ্গে মহাপুরুষের সেবাতে দ্রব্যদান করেন। শ্রীকৃষ্ণ আরও বলছেন যে, ভক্তিভাবে পত্র-পুষ্প, ফল, জল যা কিছু আমাকে অর্পণ করা হয়, তা আমি গ্রহণ করি এবং তারজন্য পরমকল্যাণ সৃজন করি। এটাও যজ্ঞ। প্রত্যেক আত্মার সেবা, আনন্দক্রিয়কে আত্মপথে নিয়ে আসা দ্রব্যজ্ঞ। কারণ দ্রব্যজ্ঞ প্রাকৃতিক সংস্কার ভস্মীভূত করতে সমর্থ।

এই প্রকার অন্য কেউ কেউ ‘তপোষণাঃ’-স্বর্থম পালনে ইন্দ্রিয়গুলিকে সংযম করেন অর্থাৎ স্বভাবজাত ক্ষমতা অনুসারে যজ্ঞের নিম্ন এবং উন্নত অবস্থাগুলির মাঝে অবস্থান করেন। এই পথে যার জ্ঞান অল্প সে প্রথম শ্রেণীর সাধক শুদ্ধ পরিচর্যাদ্বারা, বৈশ্য দৈবী সম্পদ সংগ্রহদ্বারা, ক্ষত্রিয় কাম-ক্রেণ্ডাদির উন্মুলনদ্বারা এবং ব্রাহ্মণ ব্রহ্মে প্রবেশের যোগ্যতার স্তর থেকে ইন্দ্রিয়সমূহ সংযত করেন। একই পরিশ্রম সকলকেই করতে হয়। বাস্তবে যজ্ঞ একটাই। অবস্থা অনুসারে উঁচু-নীচু শ্রেণী পার হতে থাকে।

‘পূজ্য মহারাজজী’ বলতেন- “মনের সঙ্গে ইন্দ্রিয়গুলি ও শরীরকে লক্ষ্যের অনুরূপ সংযত করাকেই তপ বলে। এরা লক্ষ্য থেকে দূরে পালাবে, এদের সংযত করে সেই দিকেই নিযুক্ত কর।”

অনেক পুরুষ যোগবজ্ঞের আচরণ করেন। প্রকৃতিতে দিক্ব্রান্ত আত্মার প্রকৃতি থেকে পর পরমাত্মার সঙ্গে মিলনের নাম ‘যোগ’। যোগের পরিভাষা অধ্যায় ৬/২৩-এ দ্রষ্টব্য। সামান্যতঃ দুটি বস্ত্র মিলনকে যোগ বলা হয়। কাগজের সঙ্গে কলম, থালা ও টেবিল ঘনিষ্ঠভাবে থাকলে, একে কি যোগ বলা যেতে পারে? না, এ সমস্ত পথভূতে নির্মিত পদার্থ। একটাই, দুটো নয়। দুই হ'ল প্রকৃতি ও পুরুষ। প্রকৃতিতে স্থিত আত্মা নিজেরই শাশ্বতরূপ পরমাত্মাতে স্থিতিলাভ করে, তখন প্রকৃতি পুরুষে বিলীন হয়ে যায়, তাকেই যোগ বলে। অতএব অনেক পুরুষ এই মিলনে সহায়ক শর্ম, দম ইত্যাদি নিয়মগুলির উন্নমনস্পে আচরণ করেন। যোগ যজ্ঞের কর্তা এবং অহিংসাদি তীক্ষ্ণ ব্রতগুলির সঙ্গে সংযুক্ত যত্নশীল পুরুষ ‘স্বাধ্যায়জ্ঞানযজ্ঞাশ’- নিজের

অধ্যয়ন, স্ব-রন্পের অধ্যয়ন করেন তিনিই জ্ঞানযজ্ঞের কর্তা। এখানে যোগের অঙ্গগুলি (যম, নিয়ম, আসন, প্রাণায়াম, প্রত্যাহার, ধারণা, ধ্যান এবং সমাধি) কে অহিংসাদি তীক্ষ্ণব্রতগুলি দ্বারা নির্দিষ্ট করা হয়েছে। অনেকেই স্বাধ্যায় করেন। বই পড়া স্বাধ্যায়ের আরম্ভিক স্তর। বিশুদ্ধ স্বাধ্যায় হল নিজের অধ্যয়ন, যার ফলে স্বরন্পের উপলক্ষ্মী হয়, যার পরিণাম জ্ঞান অর্থাৎ সাক্ষাৎকার।

যজ্ঞের পরবর্তী অনুষ্ঠান সম্বন্ধে বলছেন—

অপানে জুহুতি প্রাণং প্রাণেহপানং তথাপরে ।

প্রাণাপানগতী রূদ্ধা প্রাণায়ামপরায়ণাঃ ॥ ২৯ ॥

বহু যোগী অপানবায়ুতে প্রাণবায়ুর আন্তি দেন এবং এই প্রকার কোন কোন যোগী প্রাণবায়ুতে অপানবায়ুর আন্তি দেন। এর থেকে সুক্ষ্ম অবস্থা হলে অন্য যোগীগণ প্রাণ এবং অপান উভয়ের গতিরূপ করে প্রাণায়াম পরায়ণ হয়ে যান।

যাকে শ্রীকৃষ্ণ প্রাণ-অপান বলছেন, তাকেই মহাঞ্চাল বুদ্ধ ‘অনাপান’ বলেছেন। একেই তিনি শ্বাস-প্রশ্বাস বলেছেন। প্রাণ সেই শ্বাসকে বলে, যা আপনি গ্রহণ করেন এবং অপান সেই শ্বাসকে বলে, যা’ ত্যাগ করেন। যোগীগণ অনুভব করেছেন যে, আপনি শ্বাসের সঙ্গে বাহ্য বায়ুমণ্ডলের সংকলনও গ্রহণ করেন এবং প্রশ্বাসে আন্তরিক ভাল-মন্দ চিন্তনের তরঙ্গ ত্যাগ করেন। বাহ্য কোন সংকলন গ্রহণ না করা প্রাণের আন্তি এবং অন্তরে সংকলন জাগ্রত না হতে দেওয়াকে অপানের আন্তি বলে। অন্তরে সংকলনের স্ফুরণ যেন না হয় এবং বাহ্য জগতের কোন চিন্তন অন্তরে যাতে ক্ষেত্র উৎপন্ন না করতে পারে। এই প্রকার প্রাণ এবং অপান উভয়ের গতির মধ্যে সামঞ্জস্য স্থাপিত হলে, প্রাণের আয়াম অর্থাৎ নিরূদ্ধ হয়, একেই প্রাণায়াম বলা হয়। এই হল মনকে জয় করা। প্রাণের গতি রংধন করা এবং মনের গতি রংধন করা একই কথা।

প্রত্যেক মহাপুরুষ এই প্রকরণটি নিয়েছেন। বেদে উল্লেখ করা হয়েছে- ‘চতুর্বি  
বাক পারিমিতা পদানি’- (খাত্রীবেদ ১/১৬৪/৪৫, অর্থবৰ্বেদ ৯/১৫/২৭) এ বিষয়ে  
‘পুজ্যমহারাজজী’ বলতেন- “হো! একটা নামকেই চারটি শ্রেণীতে জপ করা হয়-যেমন  
বৈখরী, মধ্যমা, পশ্যস্তী এবং পরা। বৈখরী অর্থাৎ যা’ ব্যক্ত হয়, নামের উচ্চারণ  
এতে এমনভাবে হয় যে, জপকর্তা ছাড়াও আশে-পাশে কেউ থাকলে তিনিও শুনতে  
পাবেন। মধ্যমা অর্থাৎ মধ্যম স্বরে জপ, জপকর্তা ছাড়া আর কেউ শুনতে পাবেন

না। এই উচ্চারণ কষ্ট থেকে উত্তুত হয়, ধীরে ধীরে নামের একতানের সাহায্যে তম্ময়তা চলে আসে। সাধনা আরও সূক্ষ্ম হবার পর- পশ্যন্তী অর্থাৎ নাম দেখবার ক্ষমতা চলে আসে, এই অবস্থাতে আর জপ করতে হয় না। নাম শাস-এ নিরন্তর হতে থাকে। এইস্তরে মনকে দ্রষ্টব্যপে স্থির করে দেখতে হয় যে, শ্বাস কি বলতে চাইছে? কখন গ্রহণ করা হয়? কখন ত্যাগ করা হয়? শ্বাস কি বলে? মহাপুরুষগণ বলেন এই শ্বাস ‘নাম’ ছাড়া কিছুই বলে না। এই স্তরে সাধক নাম-জপ করেন না, কেবল উচ্চারিত ধ্বনি শোনেন, শ্বাসের প্রতি লক্ষ্য রাখেন, সেইজন্য এই স্তরকে ‘পশ্যন্তী’ বলে।

‘পশ্যন্তী’ স্তরে মনকে দ্রষ্টব্যপ লক্ষ্য রাখতে হয়; কিন্তু সাধন আরও উন্নত হলে শোনারও প্রয়োজন হয় না। জপ আরন্ত করলে স্বতঃই শোনা যায়। ‘জটে ন জপাবৈ, অপনৈ সে আবৈ’- স্বযং জপ করবার দরকার হয় না, না মনকেই বাধ্য করা হয়, কিন্তু জপ অনবরত হতে থাকে, একেই অজপা বলে। এমন নয় যে জপ আরন্ত না করেই অজপা স্থিতিলাভ হয়। যদি কেউ জপ আরন্তই করেনি, তাহলে তার কাছে অজপা বলে কিছু থাকে না। অজপার অর্থ এই যে, জপ না করা সত্ত্বেও জপ অনবরত হতে থাকে। একবার শ্বাসে জপ আরন্ত করলেই, তা’ প্রবাহিত হয় এবং নিরন্তর হয়। এই স্বাভাবিক জপকে বলে অজপা এবং এই হল ‘পরাবাণী’র জপ। এই জপ প্রকৃতির উর্ধ্বের তত্ত্ব পরমাত্মাতে স্থিতি প্রদান করে। এর পর বাণীতে আর কোন পরিবর্তন হয় না। পরম-এর দিগন্দর্শন করে তাতেই বিলীন হয়ে যায়, সেইজন্য একে ‘পরা’ বলা হয়।

প্রস্তুত শ্লোকে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ কেবল শ্বাসের উপর লক্ষ্য রাখতে বললেন, যদিও আগামী অধ্যায়ে (৮/১৩) তিনি ওঁ জপের উপর জোর দিয়েছেন। গৌতম বুদ্ধও ‘অনাপান সতী’তে শ্বাস-প্রশ্বাস (প্রাণ-অপান)- এরই চর্চা করেছেন। তাহলে সেই মহাপুরুষ বলতে কি চাইছেন? বস্তুতঃ শুরুতে বৈখরী, তার থেকে মধ্যমাতে প্রবেশ এবং এর থেকে উন্নত হলে জপের পশ্যন্তী অবস্থাতে শ্বাস ধরা পড়ে। এই সময় জপ শ্বাসে অনবরত হতে থাকে, সেইজন্য জপ করবার প্রয়োজন হয় না, তখন কেবল শ্বাসকে লক্ষ্য করে যেতে হয়। সেই জন্য প্রাণ-অপান শুধু বললেন, ‘নাম জপ কর’- এরপ বলেননি, কারণ বলবার প্রয়োজন নেই। যদি বলেন তাহলে পথভ্রষ্ট হয়ে নিম্ন শ্রেণীগুলিতে ঘোরা ফেরা করতে থাকবে। মহাত্মা বুদ্ধ, ‘গুরুদেব

ভগবান्' এবং প্রত্যেক মহাপুরুষ যাঁরা এই পথ দিয়ে গমন করেছেন, সকলেই একই কথা বলেছেন। বৈখরী এবং মধ্যমা নামজপের প্রবেশ দ্বারামাত্র। পশ্যন্তী স্তর থেকেই নামে প্রবেশ হয়। পরা শ্রেণীতে নাম অনবরত হতে থাকে, জপ বন্ধ হয় না।

এই মন শ্বাসের সঙ্গে জড়িত। যখন শ্বাসের উপর লক্ষ্য রাখা হয়, শ্বাসে নাম নিরস্তর হতে থাকে, অস্তরে সকল্প উদয় হয় না এবং বাহ্য বায়ু মণ্ডলের সকল্প অস্তরে প্রবেশ করে না, এটাই মনজয়ের অবস্থা। এরই সঙ্গে যজ্ঞের পরিণাম দেখা যায়।

অপরে নিয়তাহারাঃ প্রাণান্ত প্রাণেষু জুহুতি।

সর্বেহপ্যেতে যজ্ঞবিদো যজ্ঞক্ষপিতকম্যাঃ।। ৩০।।

অন্য যাঁরা নিয়মিত আহার করেন, তাঁরা প্রাণকে প্রাণেই আহুতি দেন। ‘পূজ্য মহারাজজী’ বলতেন, “যোগীর আহারে নিয়ন্ত্রণ, আসন দৃঢ় এবং নিদ্রাতে কঠোর ভাবে নিয়ন্ত্রণ হওয়া উচিত।” আহার-বিহারের উপর নিয়ন্ত্রণ একাস্ত আবশ্যক। এরপ বহু যোগী প্রাণকে প্রাণেই আহুতি দেন অর্থাৎ শ্বাস গ্রহণকেই লক্ষ্য করেন, প্রশ্বাসে লক্ষ্য রাখেন না। শ্বাস গ্রহণের সময় ওঁ শোনেন, পুনরায় শ্বাস গ্রহণের সময় ‘ওঁ’ শোনেন। এই প্রকার যজ্ঞদ্বারা যাঁদের সমুদয় পাপ নষ্ট হয়েছে, সেই সকল পুরুষ যজ্ঞের জ্ঞাতা। এই নিদিষ্ট বিধিগুলির মধ্যে যে কোন একটি বিধির আচরণ করলেও তারার সকলেই যজ্ঞের জ্ঞাতা। এখন যজ্ঞের পরিণাম বলছেন—

যজ্ঞশিষ্টামৃতভুজো যান্তি ব্রহ্ম সনাতনম্।

নায়ং লোকোহস্ত্যযজ্ঞস্য কুতোহল্যঃ কুরুসন্তম।। ৩১।।

কুরুশ্রেষ্ঠ অর্জুন ! ‘যজ্ঞশিষ্টামৃতভুজো’- যজ্ঞ যা’ সৃষ্টি করে, শেষে যা’ প্রদান করে, তা হল অমৃত। তার প্রত্যক্ষ অনুভূতি জ্ঞান। সেই জ্ঞানামৃত যিনি পান করেন অর্থাৎ প্রাপ্তকর্তা যোগীগণ ‘যান্তি ব্রহ্ম সনাতনম্’- শাশ্঵ত, সনাতন পরমব্রহ্মকে লাভ করেন। যজ্ঞ সম্পূর্ণ হওয়ার সঙ্গে সঙ্গে সনাতন পরব্রহ্মে স্থিতি প্রদান করে। যজ্ঞের অনুষ্ঠান না করলে কি কেন আপত্তি আছে ? শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, যজ্ঞরহিত পুরুষ পুনরায় এই মনুষ্যলোক অর্থাৎ মানবদেহ লাভ করে না, তাহলে অন্যলোকে কি সুখ পাওয়া যাবে ? তার জন্য তির্যক যোনিসকল সুরক্ষিত, এর বেশী কিছুই নয়। অতএব যজ্ঞ করা নিতান্ত আবশ্যক। যজ্ঞ মানুষ মাত্রের জন্য।

এবং বহুবিধি যজ্ঞ বিততা ব্রহ্মণে মুখে।

কর্মজান্বিদি তান্ সর্বানেবং জ্ঞানা বিমোক্ষ্যসে ॥ ৩২ ॥

এই প্রকার উপর্যুক্ত বহুবিধি যজ্ঞ বেদবাণীতে বিস্তারিত ও ব্রহ্মমুখে ব্যাখ্যাত হয়েছে। প্রাণ্পন্থের পরে মহাপুরুষগণের দেহ পরব্রহ্ম ধারণ করেন। ব্রহ্ম থেকে অভিন্ন অবস্থাযুক্ত ঐ মহাজ্ঞাগণের বুদ্ধি যন্ত্রমাত্র হয়ে যায়। তাঁদের মাধ্যমে ব্রহ্মাই কথা বলেন। তাঁদের বাণীতে এই যজ্ঞের বিস্তৃত বর্ণনা করা হয়েছে।

এই সমস্ত যজ্ঞকে তুমি ‘কর্মজান্বিদি’- কর্ম থেকে উৎপন্ন হয়েছে জানবে। এই কথা পূর্বেও বলেছেন, ‘যজ্ঞঃ কর্মসমুদ্ভবঃ’ (৩/১৪)। সেই সমস্ত এইভাবে ক্রিয়া চলে জানবার পর (এখানে বললেন, যজ্ঞের অনুষ্ঠান করে যাঁদের পাপ নষ্ট হয়ে গেছে, তাঁরাই যজ্ঞের যথার্থ জ্ঞাতা) অর্জন! তুমি ‘বিমোক্ষ্যসে’- সংসার-বন্ধন থেকে সম্পূর্ণরূপে মুক্ত হয়ে যাবে। এখানে যোগেশ্বর কর্ম কি, তা’ স্পষ্ট করেছেন। সেই ক্রিয়াই কর্ম, যার আচরণ করলে উপর্যুক্ত যজ্ঞ সম্পূর্ণ হয়।

এখন যদি দৈবী সম্পদের অর্জন, সদ্গুরুর ধ্যান, ইন্দ্রিয়গুলির সংযম, নিঃশ্঵াসকে (প্রাণকে) প্রশ্বাসে আহতি, প্রশ্বাসকে (অপানকে) নিঃশ্বাসে আহতি, প্রাণ-অপানের গতিরোধ, এই সমস্ত কর্ম, কৃষিকর্মে, ব্যবসা-চাকুরী অথবা রাজনীতিতে সম্ভব হয়, তাহলে আপনি করুন। যজ্ঞ এরূপ ক্রিয়া, যা সম্পূর্ণ হওয়ার সঙ্গে-সঙ্গেই পরব্রহ্মে প্রবেশ সম্ভব। বাহ্য কোন কার্যদ্বারা পরব্রহ্ম লাভ অসম্ভব।

বস্তুতঃ এ সমস্তই যজ্ঞ চিন্তনের অসংক্রিয়া, আরাধনার চিত্রণ, যাতে আরাধ্যদেব বিদিত হন। যজ্ঞ আরাধ্যদেব পর্যন্ত পৌঁছানোর নির্ধারিত প্রক্রিয়া-বিশেষ। এই যজ্ঞ নিঃশ্বাস-প্রশ্বাস (প্রাণ-অপান), প্রাণায়াম ইত্যাদি যে ক্রিয়ার দ্বারা সম্পন্ন হয়, সেই কার্য-প্রণালীর নাম ‘কর্ম’। কর্মের শুন্দ অর্থ ‘আরাধনা’, ‘চিন্তন’।

প্রায়ই লোকে বলে যে, সংসারে যা’ কিছু করা হয়, সে সমস্তই কর্ম। কামনাশূণ্য হয়ে যা’ কিছু করা হবে, তাই নিষ্কাম কর্ম হবে। কেউ বলে বেশী লাভ করবার জন্য বিদেশী বন্ধুবিক্রি করলে আপনি সকামী। দেশ-সেবার জন্য স্বদেশী বন্ধুবিক্রি করলে আপনি নিষ্কাম কর্মযোগী। নিষ্ঠাপূর্বক চাকুরী করলে, লাভ-লোকসানের চিন্তা-ত্যাগ করে ব্যবসা করলে আপনি নিষ্কাম কর্মযোগী। জয়-পরাজয়ের চিন্তা না করে যুদ্ধ

করলে, নির্বাচনে অংশগ্রহণ করলে নিষ্কর্মী, মৃত্যুর হাত থেকে নিষ্ঠার পায় ? বস্তুতঃ এমন কিছুই হয় না । যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ স্পষ্ট করে বলেছেন যে, এই নিষ্কাম কর্মে নির্ধারিত ক্রিয়া একটাই- ‘ব্যবসায়াত্মিকা বুদ্ধিরেকেহ কুরঞ্জন্দন ।’ অর্জুন ! তুমি নির্ধারিত কর্ম কর । যজ্ঞের প্রক্রিয়াই কর্ম । যজ্ঞ কি ? নিঃশ্বাস-প্রশ্বাসের আভ্যন্তি, ইন্দ্রিয়সমূহের সংযম, যজ্ঞস্বরূপ মহাপুরুষের ধ্যান, প্রাণায়াম অর্থাৎ প্রাণের নিরোধ । এই হ'ল মনকে জয় করা । মনের প্রসারই এই জগৎ । শ্রীকৃষ্ণের বাণীতে, ‘ইহৈব তৈর্জিতঃ সর্গো যেবাং সাম্যে স্থিতঃ মনঃ’ (৫/১৯)- যাঁদের মন সমভাবে স্থিত, সেই পুরুষগণ চরাচর জগৎ এখানেই জয় করতে সক্ষম । মনের সমতা এবং জগৎ জয় উভয়ের মধ্যে কি সম্বন্ধ ? যদি জগৎ জয় করা হ'ল, তাহলে বাধা কোথায় ? তখন বলেছেন, সেই ব্রহ্ম নির্দোষ এবং সম, যদি মনও নির্দোষ এবং সমভাব যুক্ত হয়, তাহলে তখন মন ব্রহ্মে স্থিত হয় ।

সারাংশতঃ মনের প্রসারই জগৎ । চরাচর জগৎ আভ্যন্তির সামগ্ৰী রূপে বিদ্যমান । মন সর্বথা নিরঞ্জন হওয়ার সঙ্গে সঙ্গে জগতের নিরোধ হয়ে যায় । মন নিরঞ্জন হলেই যজ্ঞের পরিণাম বেরিয়ে আসে । যজ্ঞ যে জ্ঞানামৃত সৃষ্টি করে, সেই জ্ঞানামৃত যাঁরা পান করেন, তাঁরা সনাতন ব্রহ্মে লীন হয়ে যান । এই সকল যজ্ঞের বিবরণ ব্রহ্মস্থিত মহাপুরুষের বাণীদ্বারা বিবৃত হয়েছে । এমন নয় যে পৃথক পৃথক সম্প্রদায়ের সাধকগণ পৃথক পৃথক যজ্ঞ করেন, বরং এই সমস্ত যজ্ঞই সাধকের উচ্চ-নীচ অবস্থামাত্র । এই যজ্ঞ যে উপায়ে অনুষ্ঠিত হয়, সেই ক্রিয়ার নাম কর্ম । গীতাশাস্ত্রের একটা শ্লোকও সাংসারিক কার্য-ব্যবসার সমর্থন করে না ।

প্রায়ই যজ্ঞ বলতে লোকে এক যজ্ঞবেদী তৈরী করে তিল, যব ইত্যাদি নিয়ে ‘স্বাহা’ বলে হোম করতে শুরু করেন । কিন্তু এটা ফাঁকিবাজি । দ্রব্যযজ্ঞ অন্য, যা শ্রীকৃষ্ণ কয়েকবারই বলেছেন । পশুবলি, বস্ত্র-দাহ ইত্যাদির সঙ্গে এর কোন সম্বন্ধ নেই ।

শ্রেয়ান্ত্র দ্রব্যময়াদ্যজ্ঞানযজ্ঞঃ পরন্তপ ।

সর্বং কর্মাখিলং পার্থ জ্ঞানে পরিসমাপ্যতে ॥ ৩৩ ॥

অর্জুন ! সাংসারিক দ্রব্যগুলি দ্বারা যে যজ্ঞ সিদ্ধ হয়, তার থেকে জ্ঞানযজ্ঞ [যার পরিণাম জ্ঞান (সাক্ষাৎকার), যজ্ঞ যার সৃষ্টি করে, সেই অমৃত তত্ত্বকে জানা

জ্ঞান, এরূপ যজ্ঞ।] শ্রেয়স্কর, পরমকল্যাণকর। হে পার্থ! সম্পূর্ণ কর্ম জ্ঞানে শেষ হয়, ‘পরিসমাপ্ত্যতে’- উত্তমরূপে সমাহিত হয়। যজ্ঞের পরাকার্ষা জ্ঞান। তারপরে কর্ম করলে কোন লাভ হয় না এবং কর্মত্যাগ করলে সেই মহাপুরুষের কোন লোকসানও হয় না।

এই প্রকার ভৌতিক দ্রব্যগুলির দ্বারা অনুষ্ঠিত যজ্ঞকেও যজ্ঞই বলে, কিন্তু সেই যজ্ঞের তুলনায়, যার পরিণাম সাক্ষাৎকার, সেই জ্ঞানযজ্ঞ অপেক্ষা অত্যন্ত। আপনি কোটি টীকার হোম করুন, শত শত যজ্ঞবেদী তৈরী করুন, সৎপথে দ্রব্যদান করুন, সাধু-সন্ত মহাপুরুষগণের সেবাতে দ্রব্যদান করুন; কিন্তু তা এই জ্ঞান-যজ্ঞ অপেক্ষা অত্যন্ত অল্প। বস্তুতঃ যজ্ঞ শ্বাস-প্রশ্বাসে (নিঃশ্বাস-প্রশ্বাসে) অনুষ্ঠিত হয়, ইন্দ্রিয়সমূহের সংযম, মন নিরোধ, এগুলিকেই শ্রীকৃষ্ণ যজ্ঞ বলেছেন। এই যজ্ঞ কিরণে লাভ হবে? তার পদ্ধতি কোথেকে শেখা হবে? মন্দির, মসজিদ, গিরজাঘরে লাভ হবে অথবা পুস্তকে? তীর্থযাত্রা করলে লাভ হবে অথবা নদীতে অবগাহন করলে লাভ হবে? শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—না, লাভ করবার শ্রেত একটাই তত্ত্বান্তিত মহাপুরুষ; যেমন—

তত্ত্বান্তি প্রণিপাতেন পরিপ্রক্ষেন সেবয়া।

উপদেক্ষ্যন্তি তে জ্ঞানং জ্ঞানিনস্তত্ত্বদর্শিনঃ। ৩৪।।

সেইজন্য অর্জুন! তুমি তত্ত্বদর্শী মহাপুরুষের সান্নিধ্যে উত্তমরূপে প্রণত হয়ে (প্রণাম করে, অহংকার ত্যাগ করে, শরণাগত হয়ে), উত্তমরূপে সেবা করে, নিষ্কপট ভাবে প্রশ্ন করে সেই জ্ঞানলাভ কর। ঐ তত্ত্বের জ্ঞাতা জ্ঞানীগণ তোমাকে জ্ঞান-সম্পন্নে উপাদেশ দেবেন, সাধনা পথে এগিয়ে দেবেন। আত্মসমর্পণ করে সেবা করবার পরই এই জ্ঞান অনুশীলন করার ক্ষমতা আসে। তত্ত্বদর্শী মহাপুরুষ পরমতত্ত্ব পরমাত্মার প্রত্যক্ষ দিগন্দর্শন করেছেন। তাঁরা যজ্ঞের বিধি-বিশেষের জ্ঞাতা এবং সেই বিধি-বিশেষ আপনাকেও শেখাবেন। অন্য যজ্ঞ হলে জ্ঞানী-তত্ত্বদর্শীর কি দরকার ছিল?

অর্জুন তো ভগবানেরই সম্মুখে ছিলেন, তাহলে তাঁকে ভগবান কেন তত্ত্বদর্শীর কাছে পাঠাচ্ছেন? বস্তুতঃ শ্রীকৃষ্ণ যোগী ছিলেন। তাঁর আশয় কেবল এই ছিল যে, আজ তো অর্জুন আমার সম্মুখে উপস্থিত, কিন্তু ভবিষ্যতে অনুরাগীদের যেন কোন অম উৎপন্ন না হয় যে, শ্রীকৃষ্ণ তো চলে গেছেন, এখন বর্তমানে কার শরণে যাওয়া

যাবে ? সেই জন্য স্পষ্ট করলেন যে, তত্ত্বদর্শীর সান্নিধ্যে যাবে। ঐ জ্ঞানীগণ তোমাকে  
উপদেশ দেবেন, এবং—

যজ্ঞাত্মা ন পুনর্মোহনেবং যাস্যসি পাণ্ডব।

যেন ভূতান্যশেষেণ দ্রক্ষ্যসাত্ত্বন্যথো ময়ি ॥ ৩৫ ॥

সেই জ্ঞানলাভ করলে তুমি আর এই প্রকার মোহমুক্ত হবে না। তাঁদের দেওয়া  
জ্ঞানের দ্বারা, সেই অনুসারে আচরণ করলে তুমি ভূতসমূহকে নিজের আত্মাতে  
দেখতে পাবে অর্থাৎ সকল প্রাণীর মধ্যে এই আত্মার বিস্তার দেখবে। যখন সর্বত্র  
একই আত্মার প্রসার দেখবার ক্ষমতা আসবে, তখন তুমি আমাতে একীভূত হবে।  
অতএব সেই পরমাত্মাকে লাভ করবার সাধন ‘তত্ত্বস্থিত মহাপুরুষ’। জ্ঞানের সম্বন্ধে,  
ধর্ম এবং শ্বাশত সত্যের সম্বন্ধে শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে তত্ত্বদর্শীর কাছ থেকেই জিজ্ঞাসা  
করা বিধেয়।

অপি চেদসি পাপেভ্যঃ সর্বেভ্যঃ পাপকৃত্তমঃ।

সর্বং জ্ঞানপ্লবেনৈব বৃজিনং সন্তরিয়সি ॥ ৩৬ ॥

সকল পাপী থেকেও যদি তুমি অধিক পাপিষ্ঠ হও, তবুও জ্ঞানরূপ নৌকাদ্বারা  
সকল পাপ থেকে নিঃসন্দেহে উত্তমরূপে উদ্ধার হবে। এর আশয় এই নয় যে,  
অধিক থেকে অধিক পাপ করে কখনও না কখনও উদ্ধার হয়ে যাবে। শ্রীকৃষ্ণের  
বলবার অর্থ এই যে, আপনার যেন ভ্রম উৎপন্ন না হয়, যে “আমি তো খুব পাপী,  
আমার উদ্ধার হবে না”— এরূপ মনে করবেন না যেন, সেইজন্য শ্রীকৃষ্ণ উৎসাহ  
এবং আশ্঵াস দিচ্ছেন যে, সকল পাপীর পাপসমূহ থেকেও বেশী পাপ করে থাকলেও,  
তত্ত্বদর্শীগণ দ্বারা প্রাপ্ত জ্ঞানরূপ নৌকাদ্বারা তুমি নিঃসন্দেহে সমুদয় পাপরাশি  
উত্তমরূপে পার করবে। কিরণপে—

যথেধাংসি সমিদ্বোহঘির্ভস্যসাত্কুরুতেহর্জুন।

জ্ঞানাপ্লিঃ সর্বকর্মণি ভস্মসাত্কুরুতে তথা ॥ ৩৭ ॥

অর্জুন ! প্রজ্ঞলিত অগ্নি যেমন ইঞ্চনকে ভস্মীভূত করে, সেইরূপ জ্ঞানরূপ  
অগ্নি সমস্ত কর্ম ভস্মসাত্ত্ব করে। এটা জ্ঞানের প্রবেশিকা নয়, যেখান থেকে যেজে  
প্রবেশ পাওয়া যায় বরং এই জ্ঞান অর্থাৎ সাক্ষাৎকারের পরাকার্ষার চিত্রণ, যাতে

আগে বিজাতীয় কর্ম ভস্ম হয় এবং পরে প্রাপ্তির সঙ্গে সঙ্গে চিন্তন কর্ম তাতেই বিলয় হয়। যাঁকে লাভ করা উদ্দেশ্য ছিল, যখন তাঁকে লাভ করেছি, তখন চিন্তনদ্বারা কার খোঁজ করব? এরপ সাক্ষাৎকার যাঁর হয়েছে, সেই জ্ঞানী সমস্ত শুভাশুভ কর্মের অন্ত করে নেন। সেই সাক্ষাৎকার হবে কোথায়? বাইরে হবে অথবা ভিতরে? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

ন হি জ্ঞনেন সদৃশং পবিত্রিমিহ বিদ্যতে।

তৎস্মযং যোগসংসিদ্ধং কালেনাত্মনি বিন্দতি॥ ৩৮॥

জ্ঞানের সমান পবিত্র এই সংসারে আর কিছু নেই। সেই জ্ঞান (সাক্ষাৎকার) তুমি স্বযং (অন্য কেউ নয়) যোগের পরিপক্ষ অবস্থায় (আরম্ভে নয়) নিজের আত্মার অন্তর্গত হৃদয়-ক্ষেত্রেই অনুভব করবে, বাইরে নয়। এই জ্ঞানের জন্য কোন্ যোগ্যতার প্রয়োজন? যোগেশ্বরেরই বাণীতে—

শ্রদ্ধাবান্নভতে জ্ঞনং তৎপরঃ সংযতেন্দ্রিযঃ।

জ্ঞনং লক্ষ্মা পরাং শাস্তিমচিরেণাধিগচ্ছতি॥ ৩৯॥

শ্রদ্ধাবান्, তৎপর এবং সংযতেন্দ্রিয় পুরুষই জ্ঞানলাভ করতে পারেন। ভাবপূর্বক জিজ্ঞাসা না হলে, তো তত্ত্বদর্শীর শরণাগত হলেও জ্ঞানলাভ হয় না। কেবল শ্রদ্ধা পর্যাপ্ত নয়। শ্রদ্ধাবান् শিথিল প্রযত্নশীল হতে পারেন। অতএব মহাপুরুষদ্বারা নির্দিষ্ট পথে তৎপরতার সঙ্গে অগ্রসর হওয়ার নিষ্ঠা আবশ্যক। এর সঙ্গে ইন্দ্রিয়সমূহের সংযম অনিবার্য। যে বাসনা থেকে বিরত নয়, তার জন্য সাক্ষাৎকার (জ্ঞানপ্রাপ্তি) কঠিন। কেবল শ্রদ্ধাবান্, আচরণেরত সংযতেন্দ্রিয় পুরুষই জ্ঞানলাভ করেন। জ্ঞানলাভ করে তিনি তৎক্ষণাং পরমশাস্তি লাভ করেন। তারপর কিছু পাওয়া বাকী থাকে না। এটাই অস্তিম শাস্তি। এর পর কখনও তিনি আর অশাস্ত হন না। এবং যেখানে শ্রদ্ধা নেই—

অক্ষতাশ্রদ্ধানশ্চ সংশয়াত্মা বিনশ্যতি।

নাযং লোকোহস্তি ন পরো ন সুখং সংশয়াত্মনঃ॥ ৪০॥

অজ্ঞানী— যজ্ঞের বিধি-বিশেষ সম্বন্ধে অনভিজ্ঞ এবং শ্রদ্ধাহীন এবং সংশয়যুক্ত ব্যক্তি এই পরমার্থ পথ থেকে ভ্রষ্ট হয়। এদের মধ্যেও সংশয়যুক্ত ব্যক্তির জন্য সুখ,

পুনরায় মনুষ্যদেহ বা পরমাত্মা কিছুই নেই। অতএব তত্ত্বদর্শী মহাপুরুষের কাছে প্রশ্ন করে এই পথের সংশয়গুলির নিবারণ করে নেওয়া উচিত, অন্যথা তারা দুর্ভি অবস্থার পরিচয় কখনও পাবে না। তাহলে কে লাভ করেন?—

যোগসন্ধ্যস্তকর্মণং জ্ঞানসংচ্ছলসংশয়ম্।

আত্মবন্তং ন কর্মণি নিবধ্নতি ধনঞ্জয়॥ ৪১॥

যাঁর কর্ম যোগদ্বারা ভগবানে সমাহিত, যাঁর সম্পূর্ণ সংশয় পরমাত্মাকে প্রত্যক্ষ করে নষ্ট হয়ে গেছে, পরমাত্মার সঙ্গে সংযুক্ত এরূপ পুরুষকে কর্ম আবদ্ধ করতে পারে না। যোগের আচরণদ্বারাই কর্মগুলি শান্ত হয়। জ্ঞানলাভের পরই সংশয় নষ্ট হয়। সেইজন্য শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

তস্মাদজ্ঞানসন্তুতং হৎস্তং জ্ঞানাসিনাত্মনঃ।

ছিট্টেনং সংশয়ং যোগমাতিঠোত্তিষ্ঠ ভারত॥ ৪২॥

সেইজন্য ভরতবর্ষীয় অর্জুন! তুমি যোগে স্থিত হও এবং অজ্ঞানজাত হৃদয়স্থিত নিজের এই সংশয়কে জ্ঞানরূপ তরবারিদ্বারা ছেদন কর এবং যুদ্ধার্থ উত্থিত হও। সাক্ষাৎকারে বাধক সংশয় শক্র যখন মনের ভিতরে, তখন বাইরে কেউ কারণ সঙ্গে কেন যুদ্ধ করবে? বস্তুতঃ যখন আপনি চিন্তন পথে এগিয়ে যান, তখন সংশয়জাত বাহ্য প্রবৃত্তিগুলি বাধারূপে উপস্থিত হয় এবং শক্ররূপে ভয়কর আক্রমণ করে। সংযমের সঙ্গে যজ্ঞের বিধি-বিশেষের আচরণ করে এই বিকারগুলিকে অতিক্রম করে যাওয়াই যুদ্ধ, যার পরিণাম পরমশান্তি। এই হল শাশ্বত বিজয়, এর পরে আর পরাজয় নেই।

**নিষ্কর্ষ –**

বর্তমান অধ্যায়ের আরম্ভে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন যে, এই যোগসম্বন্ধে আগে আমি সূর্যকে বলেছি, সূর্য মনুকে এবং মনু ইক্ষ্বাকুকে বলেছেন এবং রাজ্যিগণ জেনেছেন। অব্যক্ত স্থিতিযুক্ত অথবা আমি বলেছি। মহাপুরুষও অব্যক্ত স্বরূপযুক্ত। দেহটা তাঁদের জন্য নিবাসস্থান মাত্র। এরূপ মহাপুরুষের বাণীতে পরমাত্মাই কথা বলেন। এইরূপ মহাপুরুষ থেকে যোগক্রিয়া সুর্যের আলোকরস্মির ন্যায় প্রতিবিম্বিত হয়। সেই পরম প্রকাশরূপের প্রসার শ্঵াসের অন্তরালে হয়, সেইজন্য সূর্যকে বলেছি।

শ্বাসে সঞ্চারিত সেগুলির সংস্কারনদপে উদয় হয়। শ্বাসে সঞ্চিত হলে, উপযুক্ত কালে সে সমস্ত সংকল্পনাপে উৎপন্ন হয়। তার মহসু অবগত হলেই, সেই বাক্যের প্রতি কামনা জন্মায় এবং যোগ কার্যরূপ গ্রহণ করে। ক্রমশঃ উত্থান হতে হতে এই যোগ খাদ্য-সিদ্ধির রাজর্ভষ্ট শ্রেণীপর্যন্ত পৌঁছলেই নষ্ট হওয়ার স্থিতিতে এসে পৌঁছায়; কিন্তু যে প্রিয়ভক্ত, অনন্য সখা তাকে মহাপুরুষই রক্ষা করেন।

অর্জুনের জিজ্ঞাসার পর যে, আপনার জন্ম তো এখন হয়েছে। যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন যে অব্যক্ত, অবিনাশী, অজন্মা এবং সকল প্রাণীর মধ্যে প্রবাহিত হওয়ার পর আত্মায়া, যোগপ্রক্রিয়াদ্বারা নিজের ত্রিগুণময়ী প্রকৃতিকে বশীভূত করে আমি আবির্ভূত হই। আবির্ভূত হয়ে কি করেন? সাধ্য বস্তুগুলিকে পরিত্রাণ করবার জন্য এবং যার মাধ্যমে দূষিত, তার বিনাশ করতে এবং পরমধর্ম পরমাত্মাকে স্থির করবার জন্য আমি আরম্ভ থেকে পুর্তিকালপর্যন্ত জন্ম নিতে থাকি। আমার সেই জন্ম এবং কর্ম দিয়, যা' কেবল তত্ত্বদর্শীই জানতে পারেন। কলিযুগের অবস্থা থেকেই ভগবানের আবির্ভাব হয় (বাস্তবিক নিষ্ঠা থাকলে তা' হয়।); কিন্তু প্রারম্ভিক সাধক, ভগবান বলছেন অথবা এমনিই কোন সঙ্কেত পাওয়া যাচ্ছে, তা বুঝতে পারে না। আকাশ থেকেই বা কে কথা বলেন? 'মহারাজজী' বলতেন, যখন ভগবান কৃপা করেন, রঘী হয়ে যান, তখন স্তুতি থেকে, বৃক্ষ থেকে, পাতা থেকে, শূণ্য থেকে, সর্বত্র থেকে কথা বলেন, সামলান। উত্থান হতে হতে যখন পরমতত্ত্ব পরমাত্মা বিদিত হন, তখন স্পর্শের সঙ্গেই তাঁকে স্পষ্ট বোঝা যায়। সেইজন্য অর্জুন! আমার ঐ স্বরূপ তত্ত্বদর্শীগণ দেখেছেন এবং আমাকে জানবার পর তাঁরা আমাতেই বিলীন হয়ে গেছেন, যে স্থান থেকে আর গমনাগমন করতে হয় না।

এই প্রকার তিনি ভগবানের আবির্ভাবের বিধি বললেন যে, সেই আবির্ভাব কোন কোন অনুরাগীর হস্তয়েই হয়, বাইরের জগতে আবির্ভাব ঘটে না। শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, কর্ম আমাকে আবদ্ধ করে না। এই স্তর থেকে যিনি জানেন, তাঁকেও কর্ম আবদ্ধ করে না। এইরূপ বিবেচনা করেই মুমুক্ষু পুরুষগণ কর্মের আরম্ভ করেছিলেন। সেই সমস্ত স্তর সম্বন্ধে যিনি অবগত, তিনি সেইরূপ হন, যেরূপ শ্রীকৃষ্ণ ও অর্জুন। যজ্ঞের অনুষ্ঠান করলে, এই উপলক্ষ্মি নিশ্চিত হবেই। যজ্ঞের স্বরূপ সম্বন্ধে বললেন। যজ্ঞের পরিণাম পরমতত্ত্ব পরমশাস্ত্র বললেন। এই জ্ঞান

কোথায় লাভ হবে ?— এই প্রসঙ্গে কোন তত্ত্বদর্শীর কাছে গিয়ে সেই বিধি-বিশেষের আচরণ করতে বলেছেন, যাতে সেই মহাপুরুষ তাঁর প্রতি অনুকূল হন।

যোগেশ্বর স্পষ্ট বলেছেন যে, সেই জ্ঞান তুমি স্বয়ং আচরণ করে লাভ করবে, অন্য কেউ আচরণ করলে তাতে তোমার কোন লাভ হবে না। তা'ও যোগের সিদ্ধিকালে লাভ হবে, আরভে নয়। সেই জ্ঞান (সাক্ষাৎকার) হৃদয়-দেশে লাভ হবে, বাইরে নয়। শ্রদ্ধালু, তৎপর সংযত ইন্দ্রিয় এবং সংশয়রহিত পুরুষই এই জ্ঞানলাভ করেন। অতএব হৃদয়স্থিত সংশয়কে বৈরাগ্যের তরবারিদ্বারা ছেদন কর। এটা হৃদয়-দেশের যুদ্ধ। বাহ্য যুদ্ধের সঙ্গে গীতোক্ত যুদ্ধের কোন প্রয়োজন নেই।

বর্তমান অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ মুখ্যরূপে যজ্ঞের স্বরূপ স্পষ্ট করেছেন ও বলেছেন, যে প্রক্রিয়াদ্বারা যজ্ঞ সম্পূর্ণ হয়, সেই কার্যপ্রণালীর নাম কর্ম। বর্তমান অধ্যায়ে উত্তমরূপে কর্ম-সম্বন্ধে বলেছেন, অতএব—

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণার্জুন সংবাদে ‘যজ্ঞকর্মস্পষ্টীকরণম্’ নাম চতুর্থেহথ্যায়ঃ ॥ ৪ ॥

এইরূপ শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারূপী উপনিষদ্ এবং ব্রহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ এবং অর্জুনের সংবাদে ‘যজ্ঞকর্ম স্পষ্টীকরণ’ নামক চতুর্থ অধ্যায় পূর্ণ হ'ল।

ইতি শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ ‘যথার্থগীতা’ ভাষ্যে ‘যজ্ঞকর্মস্পষ্টীকরণম্’ নাম চতুর্থেহথ্যায়ঃ ॥ ৪ ॥।

এই প্রকার শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দজীর শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত ‘শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা’র ভাষ্য ‘যথার্থগীতা’তে ‘যজ্ঞকর্মস্পষ্টীকরণ’ নামক চতুর্থ অধ্যায় সমাপ্ত হল।

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মনে নমঃ ।।

## ।। অথ পঞ্চমোহধ্যাযঃ ।।

তৃতীয় অধ্যায়ে অর্জুন জিজ্ঞাসা করেছিলেন—ভগবন! যদি জ্ঞানযোগই শ্রেষ্ঠ বলে আপনার অভিমত, তাহলে আপনি কেন আমাকে ভয়ক্র কর্মে নিযুক্ত করছেন? নিষ্কাম কর্মযোগ অপেক্ষা জ্ঞানযোগ অর্জুনের সরল বলে মনে হয়েছিল; কারণ জ্ঞানযোগে পরাজয় হলে দেবত্ব লাভ হয় এবং জয়ে মহামহিম স্থিতি- উভয় অবস্থাতেই মনে হয়েছিল লাভ। কিন্তু এখন অর্জুন উত্তমরূপে অবগত হয়েছেন যে, উভয়মাগেই কর্ম করতে হবে। (যোগেশ্বর তাঁকে সংশয়শূণ্য হয়ে তত্ত্বদর্শী মহাপুরুষের শরণাগত হওয়ার নির্দেশ দিলেন; কারণ জ্ঞানলাভের স্বৈত তত্ত্বদর্শী মহাপুরুষ)। অতএব উভয় পথের মধ্যে থেকে একটি নির্বাচনের পূর্বে তিনি নিবেদন করলেন—

### অর্জুন উবাচ

সন্ধ্যাসং কর্মণাং কৃষ্ণ পুনর্যোগাং চ শংসসি।

যচ্ছ্রয় এতয়োরেকং তন্মে জ্ঞাহি সুনিশ্চিতম্ ॥১॥

হে কৃষ্ণ! আপনি কখনও সন্ধ্যাস অবলম্বন করে যে কর্ম করা হয় সেই কর্মের এবং কখনও নিষ্কাম দ্রষ্টিদ্বারা যে কর্ম করা হয় সেই কর্মের প্রশংসা করছেন। উভয়ের মধ্যে আপনি যেটি উত্তমরূপে নির্দিষ্ট করেছেন, যেটি পরমকল্যাণকর তা আমাকে বলুন। দুটি পথ যদি একই জায়গায় পৌঁছোয়তাহলে আপনি সুবিধাজনক পথ কোনটি নিশ্চয় জিজ্ঞাসা করবেন। যদি না করেন, তাহলে জানতে হবে যে, আপনি যাবেন না। এই প্রসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

### শ্রীভগবানুবাচ

সন্ধ্যাসঃ কর্মযোগশ্চ নিঃশ্রেয়সকরাবুভোঁ।

তয়োন্ত কর্মসন্ধ্যাসাত্কর্মযোগো বিশিষ্যতে ॥২॥

অর্জুন ! সন্ধ্যাস অবলম্বনপূর্বক যে কর্ম করা হয় অর্থাৎ জ্ঞানমার্গে যে কর্ম করা হয় এবং 'কর্মযোগঃ'- নিষ্কামভাবে যে কর্ম করা হয়, উভয়ই পরমশ্রেয় প্রদান করে; কিন্তু তাদের মধ্যে সন্ধ্যাস অথবা জ্ঞানদৃষ্টি প্রসূত কর্ম অপেক্ষা নিষ্কাম কর্মযোগ শ্রেষ্ঠ। এখন প্রশ্ন স্বাভাবিক যে, শ্রেষ্ঠ কিরণপে ?

জ্ঞেয়ঃ স নিত্যসন্ধ্যাসী যো ন দ্বেষ্টি ন কাঙ্ক্ষিতি।

নির্দেশ্মে হি মহাবাহো সুখং বন্ধাঃপ্রামুচ্যতে॥ ৩॥

মহাবাহু অর্জুন ! যিনি বিদ্রেয পোষণ করেন না, কিছুই আকাঙ্খা করেন না, তাঁকে সর্বদা সন্ধ্যাসী বলে জানবে। তিনি জ্ঞানমার্গী অথবা নিষ্কাম কর্মযোগীই হোন না কেন। রাগ, দেবাদি দ্বন্দ্বহীন সেই পুরুষ ভব-বন্ধন থেকে মুক্ত হন।

সাঞ্জ্যযোগৌ পৃথগ্নালাঃ প্রবদ্ধিতি ন পণ্ডিতাঃ।

একমপ্যাস্তিঃ সম্যগ্নভয়োর্বিন্দতে ফলম্॥ ৪॥

এই পথে যাদের জ্ঞান এখন অত্যন্ত তারা নিষ্কাম কর্মযোগ এবং জ্ঞানযোগ উভয়কেই ভিন্নভিন্ন মনে করেন; কিন্তু পূর্ণজ্ঞাতা পণ্ডিতগণ এইরূপ মনে করেন না; কারণ উভয়ের মধ্যে একটিতেও উভমুন্দপে স্থিত পুরুষ উভয়ের ফলরূপ পরমাত্মাকে লাভ করেন। উভয়ের ফল এক, সেইজন্য উভয়ই সমতুল বলে বিবেচিত হয়।

যৎসাংঘ্রেঃ প্রাপ্যতে স্থানং তদ্যোগৈরপি গম্যতে।

একং সাঞ্জ্যং চ যোগং চ যঃ পশ্যতি স পশ্যতি॥ ৫॥

সাঞ্জ্যদৃষ্টি ভাবাপন্ন কর্মযোগী যেখানে পৌঁছান, নিষ্কাম কর্মের মাধ্যমে যিনি কর্ম করেন, তিনিও সেই একই স্থানে পৌঁছান। সেইজন্য যিনি উভয়কেই ফলের দৃষ্টিতে এক দেখেন, তিনিই যথার্থ জ্ঞানী। যদি উভয়েই একই স্থানে পৌঁছায়, তবে নিষ্কাম কর্মযোগ বিশেষ কেন ? শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

সন্ধ্যাসন্ত মহাবাহো দুঃখমাপ্তুমযোগতঃ।

যোগযুক্তো মুনির্বন্ধ নচিরেণাধিগচ্ছতি॥ ৬॥

অর্জুন ! নিষ্কাম কর্মযোগের আচরণ ব্যতীত 'সন্ধ্যাসঃ'- অর্থাৎ সর্বস্বের ন্যাস প্রাপ্ত হওয়া দুঃখপ্রদ। যখন যোগের আচরণ আরম্ভই হয়নি, তখন তা প্রায় অসম্ভব।

সেইজন্য যিনি ভগবৎ স্বরূপ মনন করেন তিনিই মুনি, যাঁর মন এবং ইন্দ্রিয়সমূহ মৌন, নিষ্কাম কর্মযোগের আচরণ করে শীঘ্রই পরমাত্মাকে লাভ করেন।

স্পষ্ট হল যে, জ্ঞানযোগে নিষ্কাম কর্মযোগেরই আচরণ করতে হয়, কারণ দৃষ্টিতেই ক্রিয়া এক—সেই যজ্ঞের ক্রিয়া, যার শুদ্ধ অর্থ ‘আরাধনা’। উভয় মাগেই তফাঁৎ কেবল কর্তার দৃষ্টিকোণের। একজন নিজের ক্ষমতা বুঝে লাভ-লোকসান বিবেচনা করে এই কর্মে প্রবৃত্ত হন এবং অন্যজন যিনি নিষ্কাম কর্মযোগী, তিনি ইষ্টের উপর নির্ভর করে এই ক্রিয়াতে প্রবৃত্ত হন। উদাহরণস্বরূপ, একজন ব্যক্তিগতভাবে পড়ে, অন্যজন সংস্থাগতভাবে। উভয়ের পাঠ্যক্রম এক, পরীক্ষা এক, পরীক্ষক-নিরীক্ষক উভয়েই এক। এইরূপ উভয়ের সদ্গুরু তত্ত্বদর্শী এবং উপাধি এক। কেবল পড়বার পদ্ধতি তাদের ভিন্ন। হ্যাঁ, সংস্থাগত ছাত্রের জন্য সুবিধা অধিক থাকে।

পূর্বে শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে কাম এবং ক্রোধ দুর্জয় শক্ত। অর্জুন! এদের তুমি বিনাশ কর। অর্জুনের মনে হল, এ-তো বড় কঠিন, তখন শ্রীকৃষ্ণ বললেন—না, দেহ থেকে শ্রেষ্ঠ ইন্দ্রিয়, ইন্দ্রিয় থেকে শ্রেষ্ঠ মন, মন থেকে শ্রেষ্ঠ বুদ্ধি, বুদ্ধি থেকে শ্রেষ্ঠ তোমার স্বরূপ। সেখান থেকেই তুমি প্রেরিত। এই প্রকার নিজের ক্ষমতা বুঝে, নিজের শক্তি সম্বল করে, স্বাবলম্বী হয়ে কর্মে প্রবৃত্ত হওয়া ‘জ্ঞানযোগ’। শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন, চিন্তকে ধ্যানস্থ করে, কর্মগুলি আমাকে সমর্পণ করে আশা, মমতা এবং সন্তাপরহিত হয়ে যুদ্ধ কর। সমর্পণের সঙ্গে ইষ্টের উপর নির্ভর করে, সেই কর্মে প্রবৃত্ত হওয়া নিষ্কাম কর্মযোগ। উভয়ের ক্রিয়া এবং পরিণাম এক।

এরই উপর জোর দিয়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ এখানে বলেছেন যে, যোগের আচরণ ব্যতীত সন্ধ্যাস অর্থাৎ শুভাশুভ কর্মের সমাপ্তির স্থিতিলাভ অসম্ভব। শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে এরূপ কোন যোগ নেই যে, হাত গুটিয়ে বসে এটা বললেই যে—“আমি পরমাত্মা, শুদ্ধ, বুদ্ধ, আমার কর্ম করবার প্রয়োজন নেই, আমার কোন বন্ধন নেই। আমি ভাল-মন্দ যা কিছু করি, তা’ আমি করি না। ইন্দ্রিয়সমূহ নিজ নিজ কর্মে প্রবৃত্ত।”— এরূপ কপটতা শ্রীকৃষ্ণের শব্দে কোথাও নেই। সাক্ষাৎ যোগেশ্বরও নিজের অনন্য স্থানে অর্জুনকে কর্ম ছাড়া এই স্থিতি প্রদান করতে পারেননি। এরূপ করতে পারলে, গীতার প্রয়োজন কি ছিল? কর্ম করতেই হবে। কর্ম করেই সন্ধ্যাসের স্থিতিলাভ করা সম্ভব এবং যোগযুক্ত পুরুষ শীঘ্রই পরমাত্মাকে লাভ করেন। এরূপ পুরুষের লক্ষণ কি? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

যোগযুক্তো বিশুদ্ধাত্মা বিজিতাত্মা জিতেন্দ্রিযঃ।  
সর্বভূতাত্মভূতাত্মা কুর্বন্নপি ন লিপ্যতে॥ ৭॥

‘বিজিতাত্মা’-যিনি বিশেষরূপে দেহ জয় করেছেন, ‘জিতেন্দ্রিযঃ’- যিনি ইন্দ্রিয়সমূহ জয় করেছেন এবং ‘বিশুদ্ধাত্মা’- যাঁর অস্তঃকরণ বিশেষরূপে শুদ্ধ, এরূপ পুরুষ ‘সর্বভূতাত্মভূতাত্মা’- সম্পূর্ণ ভূতপ্রাণির আত্মার মূল উদ্গম পরমাত্মার সঙ্গে একীভূত এবং যোগযুক্ত হন। তিনি কর্ম করেও তাতে লিপ্ত হন না। তাহলে করেন কে? অনুগামীদের মধ্যে পরমকল্যাণকর বীজের সংগ্রহের জন্য। কেন লিপ্ত হন না? কারণ সম্পূর্ণ প্রাণিগণের যিনি মূল উদ্গম, যাঁর নাম পরমতত্ত্ব, সেই তত্ত্বে তিনি স্থিত হয়ে গেছেন। এর থেকে শ্রেষ্ঠ আর কিছু নেই, যার খোঁজ করা হবে। যাবতীয় বস্তু যেগুলি ত্যাগ করে এসেছেন, সে সমস্ত তুচ্ছ হয়ে গেছে, তাহলে আসক্তি কার উপর করবেন? সেইজন্য তিনি কর্মে আবদ্ধ হন না। এটাই যোগযুক্তের শেষ সীমা। পুনরায় যোগযুক্ত পুরুষের স্থিতি স্পষ্ট করছেন যে, তিনি কর্মে প্রবৃত্ত থেকেও তাতে লিপ্ত হন না কেন?—

নৈব কিঞ্চিত্করোমীতি যুক্তো মন্যেত তত্ত্ববিদঃ।  
পশ্যন্ শৃংশ্বন্ স্পৃশ্বাঞ্জিষ্মশন্গচ্ছন্স্বপন্স্বসন্॥ ৮॥  
প্রলপন্নিসংজন্ গৃহন্মুনিষশ্চিমিষন্নপি।  
ইন্দ্রিযাণীন্দ্রিয়ার্থে বর্তন্ত ইতি ধারযন্ন॥ ৯॥

পরমতত্ত্ব পরমাত্মার সাক্ষাৎসহিত অনুভূত যোগযুক্ত পুরুষের মনের স্থিতি অর্থাৎ অনুভূতি এই যে, আমি কিঞ্চিন্মাত্রও করি না। এটা তাঁর কল্পনা নয়, বরং এই স্থিতি তিনি কর্ম করে লাভ করেছেন। যথা ‘যুক্তো মন্যেত’- এখন প্রাপ্তির পর তিনি সমস্ত কিছু পশ্যন্তে, শ্রবণে, স্পর্শণে, আস্তাণে, ভোজনে, গমনে, নিদায়, বায় গ্রহণে, চক্ষুর উন্মেষ এবং নিমেষেও ‘ইন্দ্রিয়সমূহ স্ব স্ব বিষয়ে প্রবৃত্ত’, এইরূপ ধারণাযুক্ত হন। পরমাত্মা থেকে শ্রেষ্ঠ কিছু নেই, এবং যখন তিনি সেই পরমাত্মাতেই স্থিত, তখন তার থেকে শ্রেষ্ঠ কোন্ সুখের কামনা করে তিনি কারও স্পর্শহিত্যাদি করবেন? যদি এর থেকে শ্রেষ্ঠ কিছু থাকত, তাহলে আসক্তি অবশ্যই হত। কিন্তু প্রাপ্তির পর এখন এগিয়ে যাবেন কোথায়? এবং কি ত্যাগ করবেন? সেইজন্য যোগযুক্ত পুরুষ লিপ্ত হন না। একেই একটি উদাহরণের মাধ্যমে স্পষ্ট করলেন—

**ব্ৰহ্মণ্যাধায় কৰ্মাণি সঙ্গৎ ত্যক্তা করোতি যৎ।  
লিপ্যতে ন স পাপেন পদ্মপত্ৰমিবাস্তসা॥ ১০॥**

পদ্ম ফুলের জন্ম কাদায় হয়, পদ্মপাতা জলে ভাসতে থাকে। তরঙ্গ রাত-দিন তার উপর দিয়ে যাওয়া-আসা করে; কিন্তু এর পাতা দেখবেন শুকনোই থাকে। জলের একটা বিন্দুও তার উপর স্থির হতে পারে না। জল এবং পাঁকের মধ্যে থেকেও পদ্মপাতা তাতে লিপ্ত হয় না। সেইরূপ যে পুরুষ সমস্ত কর্ম পরমাত্মাতে বিলয় করে (সাক্ষাৎকারের সঙ্গেই কর্মের বিলয় হয়, এর পূর্বে নয়), আসক্তি ত্যাগ করে (কারণ এর থেকে শ্রেষ্ঠ আর কিছু নেই, অতএব আসক্তিও থাকে না, সেই জন্য আসক্তি ত্যাগ করে) কর্ম করেন, এইরূপ তিনিও লিপ্ত হন না। তাহলে তিনি করেন কেন? আপনাদের জন্য, সমাজের কল্যাণ-সাধনের জন্য, অনুগামীদের পথ দেখানোর জন্য। এই প্রসঙ্গেই জোর দিলেন—

কায়েন মনসা বুদ্ধ্যা কেবলেরিন্দ্ৰিয়ৈরপি।

**যোগিনঃ কর্ম কুর্বন্তি সঙ্গৎ ত্যক্তাঞ্চুদ্বয়ে॥ ১১॥**

যোগীগণ কেবল ইন্দ্ৰিয়, মন, বুদ্ধি এবং দেহের আসক্তি ত্যাগ করে আত্মশুদ্ধির জন্য কর্ম করেন। কর্ম ব্ৰহ্মে লীন হওয়ার পরেও কি আত্মা অশুদ্ধ থাকে? না, তিনি ‘স্বৰ্ভূতাত্মভূতাত্মা’ হয়ে যান। সকল প্রাণীর মধ্যে তিনি নিজের আত্মাকে ব্যাপ্ত দেখেন। সেই সকল আত্মার শুদ্ধির জন্য, আপনাদের সকলের পথ-প্রদর্শনের জন্য তাঁর কর্ম প্রবৃত্ত থাকেন। দেহ, মন, বুদ্ধি এবং ইন্দ্ৰিয়সমূহ দ্বারা তিনি কর্ম করেন। তাঁর স্বরূপ কোন কর্ম করে না, স্থির থাকে। বাইরে থেকে দেখে তাঁকে সক্রিয় মনে হয়, কিন্তু তাঁর অন্তরে অসীম শান্তি প্রবাহিত থাকে। যেমন পোড়া দড়ি দিয়ে বাঁধা যায় না, শুধু আকারটুকু বাকী থাকে।

যুক্তঃ কর্মফলং ত্যক্তা শান্তিমাপ্নোতি নৈষ্ঠিকীম্।

**অযুক্তঃ কামকারেণ ফলে সক্তো নিবধ্যতে॥ ১২॥**

‘যোগযুক্ত’ অর্থাৎ যিনি যোগের ফললাভ করেছেন, সেই পুরুষ সকল প্রাণীর আত্মার মূল পরমাত্মা যিনি, তাঁতে স্থিত, এইরূপ যোগী কর্মের ফলত্যাগ করে (কর্মফল পরমাত্মা এবং তিনি ভিন্ন নন, সেইজন্য এখন কর্মফল ত্যাগ করে) ‘নৈষ্ঠিকীম শান্তিম আপ্নোতি’- শান্তির অস্তিম অবস্থা লাভ করেন, যারপর আর কোন শান্তি লাভ করা

বাকী থাকে না অর্থাৎ তিনি আর কখনও অশান্ত হন না। কিন্তু অযুক্ত পুরুষ, যিনি যোগের পরিণামের সঙ্গে যুক্ত নন, পাথিক- এরূপ পুরুষ ফলে আসন্ত হয়ে (ফল হলেন পরমাত্মা, তাঁতে আসন্ত হওয়া আবশ্যিক, সেইজন্য ফলে আসন্ত হওয়া সত্ত্বেও) ‘কামকারেণ নিবধ্যতে’- কামনা করে আবদ্ধ হন অর্থাৎ পূর্ণ হওয়া পর্যন্ত কামনাগুলি জাগে, অতএব সাধককে চরম অবস্থা লাভ না হওয়া পর্যন্ত সাবধান থাকা উচিত। ‘মহারাজজী’ বলতেন, “হো ! তিনিকো হম অলগ, ভগবান অলগ হ্যাঁয়, তো মায়া কাময়াব হো সকতী হ্যায়।” কালকে লাভ হবে তবুও আজ তো সে অজ্ঞানীই। অতএব পূর্তিপর্যন্ত সাধকের অসাবধান হওয়া উচিত নয়। এই প্রসঙ্গেই দেখুন—

সর্বকর্মাণি মনসা সম্যস্যাত্তে সুখৎ বশী ।

নবদ্বারে পুরে দেহী নৈব কুর্বন্ন কারয়ন্ন ॥ ১৩॥

যিনি সম্পূর্ণরূপে স্ব-বশে, যিনি কায়, মন, বুদ্ধি এবং প্রকৃতির উৎরে স্বয়ং-এ স্থিত, এরূপবশী পুরুষ নিঃসন্দেহে নিজে কিছু করেন না এবং কাউকে কর্মে প্রবর্তিতও করেন না। অনুগামীদের দিয়ে করালেও তাঁর আন্তরিক শান্তিকে কিছু স্পর্শ করতে পারে না। এরূপ স্বরূপস্ত পুরুষ শব্দাদি বিষয়গুলিকে যে নবদ্বারের মাধ্যমে অনুভব করেন, সেই নবদ্বার (দুটি কান, দুটি চোখ, দুটি নিসিকা ইত্যাদি, একটা মুখ, উপস্থ এবং পায়) যুক্ত দেহরূপ গৃহে সমস্ত কর্ম মন থেকে ত্যাগ করে স্বরূপানন্দেই স্থিত থাকেন। বাস্তবপক্ষে তিনি কিছু করেন না এবং করানও না।

পুনরায় একেই শ্রীকৃষ্ণ অন্য শব্দে বলেছেন যে, সেই প্রভু নিজে কিছু করেন না, কাউকে কোন কর্মে প্রবর্তিতও করেন না। সর্দগুর, ভগবান, প্রভু, স্বরূপস্ত মহাপুরুষ, যুক্ত ইত্যাদি একে অন্যের পর্যায়। আলাদাভাবে কোন ভগবান কিছু করবার জন্য আসেন না। যখন কিছু করেন, তখন এই স্বরূপস্ত ইষ্টের মাধ্যমে করান। মহাপুরুষের জন্য দেহ গৃহমাত্র, অতএব পরমাত্মা করুন অথবা মহাপুরুষ, একই ব্যাপার; কারণ তিনি তাঁদের মাধ্যমে করেন। বস্তুতঃ সেই পুরুষ করেও কিছুই করেন না। এই প্রসঙ্গেই এর পরের শ্লোকটি দেখুন—

ন কর্তৃত্বং ন কর্মাণি লোকস্য সৃজতি প্রভুঃ ।

ন কর্মফলসংযোগং স্বভাবসন্ত প্রবর্ততে ॥ ১৪॥

সেই প্রভু ভূতপ্রাণীগণের কর্তৃত, কর্ম এবং কর্মফলের সংযোগ সৃষ্টি করেন না; বরং স্বভাবে যে প্রকৃতির চাপ সেই অনুসারেই সকলেই প্রবর্তিত হয়। যার যেমন প্রকৃতি- সাত্ত্বিক, রাজসিক অথবা তামসিক, সেই স্তর থেকেই সে প্রবর্তিত হয়। প্রকৃতি তো বিস্তৃত, কিন্তু আপনার উপর ততটাই প্রভাব বিস্তার করতে পারে, যতটা আপনার স্বভাব বিকৃত অথবা উন্নত।

প্রায়ই লোকে বলে যে, কর্ম করেন-করান ভগবান, আমরা তো যন্ত্রমাত্র। আমাদের দিয়ে তিনি ভাল করান অথবা মন্দ। কিন্তু যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, প্রভু স্বয়ং কিছু করেন না, কাউকে দিয়ে করানও না এবং জোগাড়ও করে দেন না, লোকে স্বভাবে স্থিত প্রকৃতির চাপ অনুসারেই আচরণ করে। স্বত-ই কার্য করে। তারা নিজের স্বভাবের জন্য করতে বাধ্য হয়, ভগবান করেন না। তাহলে লোকে বলে কেন যে, ভগবান করেন? এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর বলছেন—

নাদত্বে কস্যচিত্পাপং ন চৈব সুকৃতং বিভুঃ।

অজ্ঞানেনাৰ্বতং জ্ঞানং তেন মুহৃষ্টি জন্মবৎ। ১৫।।

যাঁকে আগে প্রভু বলা হয়েছে, এখানে তাঁকেই বিভু বলা হ'ল, কেননা তিনি সম্পূর্ণ বৈভবযুক্ত। প্রভুতা এবং বৈভবে সংযুক্ত সেই পরমাত্মা কারও পাপকর্ম অথবা কারও পুণ্যকর্ম গ্রহণ করেন না তবুও লোকে বলে কেন? এই কারণে যে অজ্ঞানে জ্ঞান আবৃত হয়ে। আছে তাদের এখনও প্রত্যক্ষ গোচরীভূত যে জ্ঞান, তা হয়নি। তারা এখনও জন্ম। মোহবশতঃ যা কিছু বলতে পারে। জ্ঞানদ্বারা কি হয়? একে স্পষ্ট করলেন—

জ্ঞানেন তু তদজ্ঞানং যেষাং নাশিতমাত্মানঃ।

তেষামাদিত্যবজ্ঞানং প্রকাশয়তি তৎপরম। ১৬।।

যাঁদের অন্তৎকরণের সেই অজ্ঞান (যার দ্বারা জ্ঞান আবৃত ছিল) আত্মসাক্ষাৎকার দ্বারা বিনষ্ট হয়েছে এবং যিনি উপর্যুক্ত রূপে জ্ঞান লাভ করেছেন, তাঁর সে জ্ঞান সূর্যের মত পরমতত্ত্ব পরমাত্মাকে প্রকাশিত করে। তাহলে কি পরমাত্মা অন্ধকারের নাম? না, তিনি তো ‘স্বয়ং প্রকাশরূপ দিন রাতী’- স্বয়ং প্রকাশমান। আছেন ঠিকই, কিন্তু আমাদের উপভোগের জন্য নয়, দেখা তো যায় না? যখন জ্ঞানদ্বারা অজ্ঞান অপসারিত হয়, তখন সেই জ্ঞান সূর্যের মত পরমাত্মাকে নিজের

মধ্যে প্রবাহিত করে দেয়। তখন তাঁর জন্য কোথাও অঙ্ককার বলে কিছু থাকে না।  
সেই জ্ঞানের স্বরূপ কি?—

তদ্বুদ্ধযন্ত্রান্তমিষ্ঠান্তঃপরায়ণাঃ।

গচ্ছত্যপুনরাবৃত্তিং জ্ঞাননির্ধৃতকল্ম্যাঃ॥ ১৭॥

যখন সেই পরমতত্ত্ব পরমাত্মার অনুরূপ বুদ্ধি হয়, তত্ত্বের অনুরূপ প্রবাহিত মন হয়, পরমতত্ত্ব পরমাত্মাতেই নিরস্তর স্থিতি এবং তৎপরায়ণ হয়, একেই জ্ঞান বলে। জ্ঞান তর্কের বিষয় নয়। এই জ্ঞানদ্বারা পাপমুক্ত পুরুষ পুনরাগমন মুক্ত পরমগতি লাভ করেন। পরমগতি প্রাপ্ত, পূর্ণজ্ঞানসম্পন্ন পুরুষকেই পঞ্চিত বলে। আরও দেখুন-

বিদ্যাবিনয়সম্পন্নে ব্রাহ্মণে গবি হস্তিনি।

শুনি চৈব শ্঵পাকে চ পঞ্চিতাঃ সমদর্শিনঃ॥ ১৮॥

জ্ঞানদ্বারা যাঁদের পাপ বিনষ্ট হয়েছে, যাঁরা ‘অপুনরাবর্তী পরমগতি’ লাভ করেছেন, এইরূপ জ্ঞানীগণ বিদ্যা-বিনয়সম্পন্ন ব্রাহ্মণ এবং চণ্ডালে, গরং, কুকুর ও হাতীতে সমদর্শী হন। তাঁদের দৃষ্টিতে বিদ্যা-বিনয়সম্পন্ন ব্রাহ্মণে কোন বিশেষত্ব হয় না এবং চণ্ডালের প্রতি কোন হেয়ভাব হয় না। তাঁদের দৃষ্টিতে গাভী ধর্ম নয়, কুকুর অধর্ম নয় এবং হাতির মধ্যেও কোন বিশেষত্ব নেই। এরূপ পঞ্চিত, জ্ঞাতাগণ সমদর্শী এবং সমবর্তী হন। তাঁদের দৃষ্টি চর্মে নয়, আত্মাতে পড়ে। পার্থক্য কেবল এতটাই বিদ্যা-বিনয়সম্পন্ন স্বরূপের কাছে হন এবং বাকী যারা, তারা কিছু দূরে থাকে। কেউ একস্তর উপরে, কেউ একস্তর নীচে থাকে। দেহটা তো বস্ত্র। তাঁদের দৃষ্টি বস্ত্রকে গুরুত্ব দেয় না বরং তাদের হস্তয়ে স্থিত আত্মাতে পড়ে। সেই জন্য তাঁরা পার্থক্য করেন না।

শ্রীকৃষ্ণ যথেষ্ট গোসেবা করেছিলেন। তাঁকে গাভীর প্রতি গৌরবপূর্ণ শব্দ বলা উচিত ছিল, কিন্তু তিনি সেরূপ কিছু বলেননি। শ্রীকৃষ্ণ গাভীকে ধর্মে কোন স্থান দেন নি। তিনি কেবল এইটুকু স্বীকার করেছিলেন যে, অন্য আরও জীবাত্মার মত তাদের মধ্যেও আত্মা বিদ্যমান। গাভীর আর্থিক মহসূল যা হোক না কেন, তাদের ধার্মিক বৈশিষ্ট্য পরবর্তী মানুষেরা জোর করে চাপিয়েছে। শ্রীকৃষ্ণ গত অধ্যায়ে বলেছেন যে, অবিবেকীদের বুদ্ধি অনন্ত ভেদযুক্ত হওয়ার জন্য তারা অনন্ত ত্রিয়ার বিস্তার করে নেয়। অনর্থক শোভাযুক্ত বাণীতে তারা সে সমস্ত ব্যক্তিগত করে। তাদের বাণীর

প্রভাব যাদের চিন্তের উপর পড়ে, তাদের বুদ্ধিও নাশ হয়। কিছু লাভ হয় না, বরং অনেক কিছু লোকসান হয়। কিন্তু নিষ্কাম কর্মযোগে অর্জুন! নির্ধারিত ক্রিয়া একটাই—যজ্ঞের প্রক্রিয়া ‘আরাধনা’। গাভী, কুকুর, হাতী, অশ্বথ, নদীর ধার্মিক মহত্ব এই অনন্ত শাখাযুক্ত আবিবেকীদেরই সৃষ্টি। যদি এগুলির ধার্মিক মহত্ব থাকত, তাহলে তা’ শ্রীকৃষ্ণ অবশ্যই বলে থাকতেন। হ্যাঁ মন্দির, মসজিদ ইত্যাদি পূজার স্থানের প্রয়োজন সাধনার আরণ্ডিক কালে অবশ্যই থাকে। সেখানে প্রেরণাদায়ক সামুহিক উপদেশ পাওয়া যায়, তার উপযোগিতা অবশ্যই আছে, এগুলি ধর্মোপদেশ কেন্দ্র।

প্রস্তুত শ্লোকে দুইজন পণ্ডিতের উল্লেখ করা হয়েছে। একজন পূর্ণজ্ঞাতা এবং অন্যজন বিদ্যা-বিনয়সম্পন্ন। কিরণপে তাঁরা দুজন? বস্তুতঃ প্রত্যেক শ্রেণীর সীমা দুটি—অধিকতম সীমা পরাকার্ষা এবং প্রবেশিকা অথবা নিম্নতম সীমা। উদাহরণস্বরূপ ভক্তির নিম্নতম সীমা সেখানে, যেখান থেকে ভক্তি আরম্ভ করা হয়; বিবেক-বৈরাগ্য ও নিষ্ঠার সঙ্গে যখন আরাধনা করা হয় এবং অধিকতম সীমা সেটা, যেখানে ভক্তি পরিণাম দেওয়ার স্থিতিকে থাকে। ব্রাহ্মণ শ্রেণীতেও এইরূপ হয়। যখন ব্রহ্মে স্থিতিলাভের ক্ষমতা চলে আসে, তখন বিদ্যা, বিনয় স্বাভাবিক ভাবে সাধকের মধ্যে পাওয়া যায়। মনে শান্তভাব, ইন্দ্রিয়সমূহের দমন, অনুভূতির সংঘরণ, ধারাবাহিক চিন্তন, ধ্যান এবং সমাধি ইত্যাদি ব্রহ্মে স্থিত হওয়ার সমস্ত যোগ্যতা তার অন্তরালে স্বাভাবিকভাবে কার্য করে। একে ব্রাহ্মণত্বের নিম্নতম সীমা বলে। যখন ক্রমশঃ উন্নত হতে হতে ব্রহ্মের দিগন্দর্শন করে সাধক তাঁতেই বিলীন হন, তখন উচ্চতম সীমা উপস্থিত হয়। যাঁকে জানবার জন্য সাধনারত ছিলেন, তাঁকে লাভ করে তিনি পূর্ণজ্ঞাতা হন। অপুনরাবৃত্তিযুক্ত এরূপ মহাপুরুষ সেই বিদ্যা-বিনয়সম্পন্ন ব্রাহ্মণ, চণ্ডাল, কুকুর, হাতী, গাভী সকলের প্রতি সমদৃষ্টি হন, কারণ তাঁর দৃষ্টি হস্তয়াস্থিত আত্মস্বরূপে পড়ে। এরূপ মহাপুরুষ পরমগতি লাভ করে কি পেয়েছেন এবং কিরণপে? এর উপর আলোকপাত করে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

ইহৈব তৈর্জিতঃ সর্গো যেষাং সাম্যে স্থিতঃ মনঃ।

নির্দোষঃ হি সমং ব্রহ্ম তস্মাদ্বক্ষণি তে স্থিতাঃ। ১৯।।

সেই পুরুষগণ জীবিত অবস্থাতেই সম্পূর্ণ সংসার জয় করেন, যাঁদের মন সমভাবে স্থিত। মনের সমভাবের সঙ্গে সংসার জয় করার কি সম্ভব? সংসার লুপ্ত হওয়ার পর সেই পুরুষ থাকেন কোথায়? শ্রীকৃষ্ণ বলছেন, ‘নির্দোষঃ হি সমং ব্রহ্ম’—

সেই ব্রহ্ম নির্দেশ এবং সম হন, এদিকে সেই পুরুষের মনও নির্দেশ ও সমস্তিতি যুক্ত হয়ে যায়। 'তম্বাদ্ব্রক্ষণি তে স্থিতাঃ'- সেইজন্য তাঁরা ব্রহ্মে স্থিত হতে পারেন। একেই অপুনরাবর্তী পরমগতি বলে। এটা কখন লাভ হয়? যখন সংসাররূপ শক্রকে জয় করে নেওয়া হয়। এই সংসারকে কখন জয় করা সম্ভব হয়? যখন মন নিরংকৃত হয়, সমভাবে স্থিত হয় (কারণ মনের প্রসারই জগৎ)। যখন তাঁরা ব্রহ্মে স্থিত হন, তখন ব্রহ্মাবিদের লক্ষণ কি? তাঁদের অবস্থিতি স্পষ্ট করলেন—

ন প্রহ্লায়েত্প্রিয়ং প্রাপ্য নোদিজেৎপ্রাপ্য চাপ্রিয়ম্।

স্থিরবুদ্ধিরসম্মুচ্ছো ব্রহ্মবিদ্বজ্ঞানি স্থিতঃ ॥ ২০ ॥

তাঁর প্রিয়-অপ্রিয় বলে কেউ থাকে না। সেইজন্য সাধারণ লোকে যাকে প্রিয় বলে মনে করে, তাকে পেয়ে তিনি উৎফুল্ল হন না এবং যাকে লোকে অপ্রিয় বলে ভাবে (যেমন ধর্মাবলম্বী প্রতীকরণে ব্যবহার করেন) তাকে পেয়ে তিনি উদ্বিগ্ন হন না। এরপ স্থিরবুদ্ধি, 'অসংমুচ্ছ'- সংশয়শূণ্য, 'ব্রহ্মবিদ্ব'- ব্রহ্মের সঙ্গে সংযুক্ত, ব্রহ্মবেত্তা 'ব্রহ্মণি স্থিতঃ'- পরাঽপর ব্রহ্মে সদৈব স্থিত থাকেন।

বাহ্যস্পর্শেস্বসক্তাত্মা বিন্দত্যাত্মনি যৎসুখম্।

স ব্রহ্মাযোগযুক্তাত্মা সুখমক্ষয়মশুতে ॥ ২১ ॥

বাহ্য সংসারের বিষয়-ভোগে অনাসক্ত পুরুষ অস্তরাত্মাতে স্থিত যে সুখ বিদ্যমান, সেই সুখলাভ করেন। সেই পুরুষ 'ব্রহ্মাযোগযুক্তাত্মা'- পরব্রহ্ম পরমাত্মায় মিলিত হয়ে যুক্তাত্মা হন, সেইজন্য তিনি অক্ষয় আনন্দ অনুভব করেন, যে আনন্দ কখনও ক্ষয় হয় না। এই আনন্দ উপভোগ কে করতে সমর্থ? যিনি বাহ্য বিষয় ভোগে অনাসক্ত। তাহলে কি ভোগ বাধক? ভগবান শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

যে হি সংস্পর্শজা ভোগা দুঃখযোনয় এব তে।

আদ্যন্তবন্তঃ কৌন্তেয় ন তেষু রমতে বুধঃ ॥ ২২ ॥

কেবল ত্বক্ষই নয়, সকল ইন্দ্রিয স্পর্শ করে। দেখা—চোখের স্পর্শ, শোনা—কানের স্পর্শ। এই প্রকার ইন্দ্রিয়সমূহ এবং বিষয়সমূহের সংযোগে উৎপন্ন সকল ভোগ যদ্যপি ভোগকালে সুখদায়ক বলে মনে হয়, কিন্তু নিঃসন্দেহে সে সকল 'দুঃখযোনয়ঃ'- দুঃখদায়ক যোনির কারণ। এই ভোগই যোনিগুলির কারণ। তাই শুধু

নয়, ভোগের কামনা মনে জাগে এবং কামনা পূরণের পর তা নাশ হয়ে যায়, ভোগ নাশবান्। সেইজন্য কৌন্তেয়! বিবেকী পুরুষ তাতে আবদ্ধ হন না। ইন্দ্রিয়সমূহের এই স্পর্শে কি থাকে? কাম এবং ক্রোধ, রাগ এবং দ্রেষ। এই প্রসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

শক্তোত্তৈবে যঃ সোচ্চৎ প্রাক্ষরীরবিমোক্ষণাঃ।

কামক্রোধোত্তুবং বেগং স যুক্তঃ স সুখী নরঃ।। ২৩।।

সেইজন্য যে মনুষ্য দেহ বিনাশের পূর্বেই কাম এবং ক্রোধ থেকে উৎপন্ন বেগ সহ্য করতে (নাশ করতে) সক্ষম হন, তিনি নর (যিনি রমণ করেন না।)। তিনিই এই লোকে যোগযুক্ত এবং সুখী। এর পর আর দুঃখ নেই, সেই সুখে অর্থাৎ পরমাত্মাতে স্থিতিলাভ করেন। জীবিত অবস্থাতেই এর প্রাপ্তির বিধান, মৃত্যুর পর নয়। সস্ত কবীর এই বিষয়ে স্পষ্ট বলেছেন- ‘অবধু! জীবত মে কর আশা।’ তাহলে কি মৃত্যুর পর মুক্তিলাভ হয় না? তিনি বলেছেন- ‘মুএ মুক্তি গুরু কহে স্বার্থী, ঝুঁঠা দে বিশ্বাসা।’ এই কথন যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণেরও যে, দেহ থাকতেই, মৃত্যুর পূর্বেই যিনি কাম-ক্রোধের বেগ নাশ করতে সক্ষম, সেই পুরুষ এই লোকে যোগী, তিনিই সুখী। কাম, ক্রোধ, বাহ্য স্পর্শই শক্ত। এদের জয় করুন। এইরূপ পুরুষের লক্ষণ সম্বন্ধে পুনরায় বলছেন—

যোহস্তঃসুখোহস্তরারামস্তথাস্তজ্যোতিরেব যঃ।

স যোগী ব্রহ্মনির্বাণং ব্রহ্মভূতোহধিগচ্ছতি।। ২৪।।

যিনি অস্তরাত্মাতেই সুখী, ‘অস্তরারামঃ’- অস্তরাত্মাতেই প্রশাস্তচিত্ত এবং যিনি অস্তরাত্মাতেই প্রকাশমান (যিনি সাক্ষাৎকার করেছেন) সেই যোগী ‘ব্রহ্মভূতঃ’- ব্রহ্মে একীভূত হয়ে ‘ব্রহ্মনির্বাণম্’- বাণীর উর্ধ্বে যে ব্রহ্ম, সেই শাশ্঵ত ব্রহ্মকে লাভ করেন। অর্থাৎ সর্বপ্রথম বিকারসমূহের (কাম-ক্রোধের) অস্ত, তারপরে দর্শন এবং শেষে প্রবেশ। আরও দেখুন—

লভত্তে ব্রহ্মনির্বাণমৃষযঃ ক্ষীণকল্ম্যাঃ।

চিন্নাদ্বেধা যতাত্মানঃ সর্বভূতহিতে রতাঃ।। ২৫।।

পরমাত্মার সাক্ষাৎকার করে যাঁদের পাপ নাশ হয়েছে, যাঁদের সংশয় নষ্ট হয়েছে এবং সকল প্রাণীর কল্যাণে নিরত (যাঁরা লাভ করেছেন, তাঁরাই এবংপ

করতে পারেন। যারা গর্তে পড়ে আছে, তারা কি অন্যকে বাইরে বার করবে? সেইজন্য মহাপুরুষগণের স্বাভাবিক গুণ করণা) এবং ‘যতাজ্ঞানঃ’- জিতেন্দ্রিয় ব্রহ্মবেত্তা পুরুষ শান্ত পরব্রহ্মকে লাভ করেন। সেই মহাপুরুষের স্থিতির উপর পুনরায় আলোকপাত করলেন—

কামক্রোধবিযুক্তানাং যতীনাং যতচেতসাম্।

অভিতো ব্রহ্মনির্বাণং বর্ততে বিদিতাঞ্জনাম্॥ ২৬॥

কাম এবং ক্রোধ থেকে মুক্ত, যিনি চিন্ত জয় করেছেন, যিনি পরমাত্মার সাক্ষাৎকার করেছেন, সেই জ্ঞানাপুরুষগণ সর্বদিক থেকে শান্ত পরব্রহ্মকে লাভ করেন। যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বার বার সেই পুরুষের স্থিতির উপর জোর দিচ্ছেন যাতে প্রেরণা লাভ করে সাধক এতে প্রবৃত্ত হন। প্রশ্নটি প্রায় সম্পূর্ণ হল। এখন তিনি পুনরায় জোর দিচ্ছেন যে, এই স্থিতিলাভ করবার আবশ্যক অঙ্গ হল ‘প্রাণ-অপানে (নিঃশ্বাস-প্রশ্বাসে) চিন্তণ’। যজ্ঞের প্রক্রিয়াতে প্রাণের অপানে আহতি, অপানের প্রাণে আহতি, প্রাণ এবং অপান উভয়ের গতি কিরণে নিরন্দ করতে হয় বলেছেন।

সেটাই বুবিয়ে দিচ্ছেন—

স্পর্শান্তকৃত্বা বহির্বাহ্যাংশচক্ষুষ্টৈবান্তরে ভূবোঃ।

প্রাণাপানৌ সমৌ কৃত্বা নাসাভ্যন্তরাচারিণৌ॥ ২৭॥

যতেন্দ্রিয়মনোবুদ্ধিমূলিমোক্ষপরায়ণঃ।

বিগতেচ্ছাভয়ক্রোধো যঃ সদা মুক্ত এব সঃ॥ ২৮॥

অর্জন! বাহ্য বিষয়, দৃশ্যগুলির চিন্তন না করে, সেগুলি ত্যাগ করে, দৃষ্টি অ্যুগলের মধ্যে স্থির করে, ‘আবোঃ অন্তরে’ এর অর্থ নয় যে, নেতৃত্বয়ের মধ্যে অথবা অ্যুগলের মধ্যেই কোথাও দেখবার চিন্তা করে দৃষ্টি স্থির করবেন। অ্যুগলের মধ্যের অর্থ এটাই যে, সোজা হয়ে বসলে দৃষ্টি অ্যুগলের মধ্যে দিয়ে যেন সোজা সম্মুখে পড়ে। কখনও ডানদিকে, কখনও বাঁদিকে, এদিক-ওদিক অস্থির দৃষ্টি যেন না হয়। নাকের অগ্রভাগে সোজা দৃষ্টি স্থির করে (নাক যেন নজরে না পড়ে), নাকের মধ্যে যে প্রাণ এবং অপান বায়ু বিচরণ করে, সেই বায়ু সমান করে অর্থাৎ দৃষ্টি সেখানে হবে এবং স্মৃতি শ্বাসে যুক্ত করতে হবে, সে শ্বাস কখন ভিতরে যায়? কতক্ষণ থাকে? (প্রায় আধ সেকেণ্ডের মত থাকে, জোর করে বেশীক্ষণ শ্বাসবন্ধ

রাখা উচিত নয়।) কখন বাইরে আসে? বাইরে কতক্ষণ থাকে? বলবার দরকার নেই যে, শ্বাসে যে নামধরনি হয়, তা শুনতে পাওয়া যাবে। এইভাবে নিঃশ্বাস-প্রশ্বাসে যখন স্মৃতি স্থির হবে, তখন ধীরে ধীরে শ্বাস অচল, স্থির হয়ে যাবে, সম হয়ে যাবে। মনে কোন সংকল্পের উদ্দয় হবে না এবং বাহ্য কোন সকল অস্তরে প্রবেশ করে মনকে নাড়া দিতেও পারবে না। বাহ্য ভোগ সমূহের চিন্তন বাইরেই ত্যাগ করে দিলে অস্তরেও সকল জাগবে না। স্মৃতি একদম স্থির হয়ে যাবে, তৈলধারার সদৃশ। তৈলধারা জলের মত বিন্দু বিন্দু পড়ে না, যতক্ষণ পড়ে ধারাতেই পড়ে। এইরূপ প্রাণ ও অপানের গতি সমান, স্থির করে ইন্দ্রিয়সমূহ, মন এবং বুদ্ধি যিনি জয় করেছেন; ইচ্ছা, ভয় এবং ক্রেত্বারহিত, যিনি মনশিলাতার চরমসীমায় পৌঁছেছেন, এরূপ মোক্ষপরায়ণ মুনি সদা ‘মুক্ত’। মুক্ত হয়ে তিনি কোথায় যান? কি লাভ করেন? এই প্রসঙ্গে বলছেন-

ভোক্তারং যজ্ঞতপস্যাং সর্বলোকমহেশ্বরম্।

সুহৃদং সর্বভূতানাং ভজাত্বা মাং শান্তিমৃচ্ছতি ॥ ২৯ ॥

সেই মুক্ত পুরুষ আমাকে যজ্ঞ এবং তপস্যার ভোক্তা, সর্বলোকের ঈশ্বরের ঈশ্বর, সকল প্রাণীর স্বার্থরহিত হিতৈষী সাক্ষাত এইরূপ জেনে শান্তিলাভ করেন। শ্রীকৃষ্ণ বলছেন, সেই পুরুষের নিঃশ্বাস-প্রশ্বাসের যজ্ঞ এবং তপস্যার ভোক্তা আমি। যজ্ঞ এবং তপস্যা অবশ্যে যার মধ্যে বিলীন হয়, সে আমি। সেই পুরুষ আমাকে লাভ করেন। যজ্ঞের শেষে যার নাম ‘শান্তি তা’ আমারই স্বরূপ। সেই মুক্ত পুরুষ আমাকে জানেন এবং জানবার পর আমাকেই লাভ করেন। একেই শান্তি বলে। আমি যেমন ঈশ্বরেরও ঈশ্বর, সেইরূপ তিনিও।

**নিষ্কর্ষ –**

বর্তমান অধ্যায়ের আরঙ্গে অর্জুন জিজ্ঞাসা করেছিলেন যে, কখনও আপনি নিষ্কাম কর্মযোগের এবং কখনও সন্ন্যাস মার্গ অনুসারে যে কর্ম করা হয়, তার প্রশংসা করেছেন, অতএব উভয়ের মধ্যে যেটা আপনি চূড়ান্ত বলে নির্দিষ্ট করেছেন, যা’ পরম কল্যাণকর, তা আমাকে বলুন। শ্রীকৃষ্ণ বললেন- অর্জুন! দুটিই পরমকল্যাণকর। উভয় মাগেই নির্ধারিত যজ্ঞের প্রক্রিয়াই সম্পাদন করা হয়; কিন্তু তবুও নিষ্কাম কর্মযোগ বিশিষ্ট। এর অনুষ্ঠান না করলে সন্ন্যাস (শুভাশুভ কর্মগুলি শেষ) হয় না।

সন্ন্যাস পথের নাম নয়, গন্তব্যের নাম সন্ন্যাস। যিনি যোগযুক্ত, তিনিই সন্ন্যাসী। যোগযুক্তের লক্ষণ বললেন যে, তিনিই প্রভু। তিনি কিছু করেন না, কাউকে দিয়ে কিছু করানও না, বরং স্বভাববশতঃ প্রকৃতির চাপে পড়ে বাধ্য হয়ে মানুষ নিজ নিজ কর্মে ব্যস্ত থাকে। যিনি সাক্ষাৎ আমাকে জানতে পারেন, তিনি জাতা এবং পঞ্চিত। যজ্ঞের পরিণামে পুরুষ আমাকে জানতে পারেন। প্রাণ-অপানে জপ এবং যজ্ঞ-তপস্যা যাঁর মধ্যে বিলীন হয়, সে আমি। যজ্ঞের পরিণামস্বরূপ আমাকে জানবার পর তাঁরা যে শাস্তি লাভ করেন, তা'ও আমি। অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ এবং মহাপুরুষের মত স্বরূপ তাঁরাও লাভ করেন। তিনিও ঈশ্বরের ঈশ্বর, আত্মারও আত্মস্বরূপময় হয়ে যান, সেই পরমাত্মার সঙ্গে একীভূত হন (এক হতে যতগুলি জন্মই লাভক না কেন।)। বর্তমান অধ্যায়ে স্পষ্ট করলেন যে, যজ্ঞ-তপস্যার ভোক্তা, মহাপুরুষেরও অন্তরে বিদ্যমান শক্তি মহেশ্বর, অতএব—

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসু পনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াঃ যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণার্জুন সংবাদে “যজ্ঞভোক্তামহাপুরুষস্তু মহেশ্বরঃ” নাম পঞ্চমোহধ্যায়ঃ ॥৫॥

এই প্রকার শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারপী উপনিষদ্ এবং ব্রহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ এবং অর্জুনের সংবাদে ‘যজ্ঞভোক্তামহাপুরুষস্তু মহেশ্বর’ নামক পঞ্চম অধ্যায় পূর্ণ হ'ল।

ইতি শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে  
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়াঃ ‘যথার্থ গীতা’ ভাষ্যে ‘যজ্ঞভোক্তামহাপুরুষস্তু মহেশ্বরঃ’ নাম  
পঞ্চমোহধ্যায়ঃ ॥৫॥

এই প্রকার শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দজীর শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত  
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা’র ভাষ্য ‘যথার্থ গীতা’তে যজ্ঞভোক্তা মহাপুরুষস্তু মহেশ্বর’ নামক  
পঞ্চম অধ্যায় সমাপ্ত হল।

।। হরিঃ ওঁ তৎসৎ ।।

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মানে নমঃ ॥

## ।। অথ ষষ্ঠোহধ্যাযঃ ।।

সংসারে ধর্মের নামে ভিন্নভিন্ন রীতি-নীতি, পূজা-পদ্ধতি, সম্প্রদায়ের বাহ্যিক হলে, কুরীতি শাস্তি করে এক সৌধরের স্থাপনা এবং তার প্রাপ্তির প্রক্রিয়াকে প্রশস্ত করবার জন্য মহাপুরুষের আবির্ভাব হয়। ক্রিয়া পরিত্যাগ, নিজেকে জ্ঞানী বলে পরিচয় দেওয়ার ভঙ্গামী কৃফের কালেও অত্যন্ত ব্যাপক ছিল। সেই জন্য বর্তমান অধ্যায়ের প্রারম্ভেই যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ এই বিষয়ে চতুর্থবার বললেন যে, জ্ঞানযোগ এবং নিষ্কাম কর্মযোগ উভয়ের অনুসারেই কর্ম করতেই হবে।

দ্বিতীয় অধ্যায়ে তিনি বলেছিলেন- অর্জুন! ক্ষত্রিয়ের জন্য যুদ্ধ থেকে শ্রেষ্ঠ কল্যাণকর আর কোন পথ নেই। এই যুদ্ধে পরাজিত হলে দেবতা এবং জয়লাভ করলে মহামহিম স্থিতিলাভ করবে-এইরূপ চিন্তা করে যুদ্ধ কর। অর্জুন! এই বুদ্ধি তোমার জন্য জ্ঞানযোগের বিষয়ে বলা হয়েছে। সেটা কোন বুদ্ধি? এই যে যুদ্ধ কর। জ্ঞানযোগে যে কর্ম করতে হয় না, তা নয়। জ্ঞানযোগে কেবল নিজের লাভ-লোকসানের বিচার করে, নিজের শক্তি সম্বন্ধে সজাগ থেকে কর্মে প্রবৃত্ত হতে হবে; যদিও প্রেরক মহাপুরুষই। জ্ঞানযোগে যুদ্ধ অনিবার্য।

তৃতীয় অধ্যায়ে অর্জুন জিজ্ঞাসা করেছিলেন যে, ভগবন্ত! নিষ্কাম কর্মযোগ অপেক্ষা জ্ঞানযোগ যদি শ্রেষ্ঠ বলে আপনার অভিমত, তাহলে আমাকে ঘোর কর্মে কেন নিযুক্ত করছেন? নিষ্কাম কর্মযোগ অর্জুনের কঠিন বলে মনে হচ্ছিল। এই প্রসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ বললেন যে, এই দুটি সিদ্ধান্ত আমার দ্বারা বলা হয়েছে, কিন্তু কোন পথেই কর্মত্যাগ করে চলবার বিধান নেই। কর্ম আরম্ভ না করে কেউ পরম নৈংকর্ম্যের স্থিতিলাভ করতে পারে না এবং ক্রিয়া আরম্ভ করে তা ত্যাগ করে দিলেও কেউ পরমসিদ্ধি লাভ করতে পারে না। উভয় মাগেই নিয়ত কর্ম, যজ্ঞের প্রক্রিয়া করতেই হয়।

এখন অর্জুন উত্তরণপে বুঝোছেন যে জ্ঞানমার্গ ভাল লাগুক অথবা নিষ্কাম কর্মযোগ, উভয় দৃষ্টিতেই কর্ম করতে হবে; এর পরেও পঞ্চম অধ্যায়ে তিনি প্রশ্ন করেছিলেন যে, ফলের দিক্ক দিয়ে কোনটা শ্রেষ্ঠ? কোনটা সুবিধাজনক? শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন- অর্জুন! দুটিই পরমত্বের প্রদান করে। দুটিই এক স্থানে পৌঁছায়, তবুও সাংখ্য অপেক্ষা নিষ্কাম কর্মযোগ শ্রেষ্ঠ, কারণ নিষ্কাম কর্মের আচরণ না করে কেউ সন্ধ্যাসী হতে পারে না। দুই মার্গেই কর্ম একটাই। অতএব স্পষ্ট হ'ল যে, সেই নির্ধারিত কর্ম না করে কেউ সন্ধ্যাসী হতে পারে না এবং না কেউ যোগীই হতে পারে। কেবল এই পথের পথিকের দুটি দৃষ্টিকোণ, যা' পূর্বেই বলা হয়েছে।

### শ্রীভগবানুবাচ

অনাত্মিতঃ কর্মফলং কার্যং কর্ম করোতি যঃ।

স সন্ধ্যাসী চ যোগী চ ন নিরগ্নির্ণ চাক্রিযঃ ॥১॥

শ্রীকৃষ্ণ মহারাজ বললেন- অর্জুন! কর্মফলের আশ্রয় না করে অর্থাৎ যিনি কর্ম করবার সময় কোন প্রকার কামনা করেন না, ‘কার্যম্ কর্ম’- করণীয় প্রক্রিয়া বিশেষের অনুষ্ঠান করেন, তিনিই সন্ধ্যাসী, তিনিই যোগী। যিনি কেবল অগ্নিত্যাগ করেছেন এবং ক্রিয়াত্যাগ করেছেন, তিনি সন্ধ্যাসী বা যোগী নন। ক্রিয়ার সংখ্যা অনেক। তার মধ্যে থেকে ‘কার্যম্ কর্ম’- করবার যোগ্য ক্রিয়া, ‘নিয়ত কর্ম’- নির্ধারিত কোন ক্রিয়া-বিশেষ আছে। তা’ হ'ল, যজ্ঞের প্রক্রিয়া। যার শুন্দর অর্থ হ'ল আরাধনা, যা' আরাধ্যদেবে লাভ করবার বিধি-বিশেষ। তাকে কার্যরূপ দেওয়া কর্ম। যিনি এই কর্মের অনুষ্ঠান করেন, তিনিই সন্ধ্যাসী, তিনিই যোগী। যারা অগ্নিত্যাগী বলে যে, ‘আমরা অগ্নি স্পর্শ করি না’ অথবা কর্মত্যাগী বলে যে, ‘আমাদের কর্ম করবার দরকার নেই, আমরা আত্মজ্ঞানী’।—কর্ম আরস্ত না করে যারা এরূপ বলে, করণীয় ক্রিয়া-বিশেষের আচরণ করে না, তারা সন্ধ্যাসীও নয়, যোগীও নয়। এই প্রসঙ্গে আরও দেখুন-

যৎ সন্ধ্যাসমিতি প্রাহ্যর্য্গং তৎ বিদ্বি পাণুব।

ন হ্যসন্ধ্যস্তসকল্লো যোগী ভবতি কশ্চন ॥২॥

অর্জুন ! যা'কে 'সন্ন্যাস' এইরূপ বলা হয়, তাকেই তুমি যোগ বলে জানবে; কারণ সকল্প ত্যাগ না করলে কোন পুরুষ যোগী অথবা সন্ন্যাসী কোনটাই হতে পারেন না অর্থাৎ কামনা-ত্যাগ উভয়মার্গীর জন্য আবশ্যিক। তাহলে তো ভালই, বলে দিই যে, আমি সকল্প করি না, তাহলেই যোগী-সন্ন্যাসী। হয়ে যাবে, শ্রীকৃষ্ণ বলছেন, এরূপ হয় না—

আরংক্ষের্মুনের্যোগং কর্ম কারণমুচ্যতে ।

যোগারূদস্য তস্যেব শমঃ কারণমুচ্যতে ॥ ৩ ॥

যোগে আরোহণ করতে ইচ্ছুক মননশীল পুরুষের জন্য যোগের প্রাপ্তির জন্য কর্মানুষ্ঠানই কারণ এবং যোগের অনুষ্ঠান করতে করতে যখন তা পরিণাম দেওয়ার স্থিতিতে আসে, সেই যোগারূদত্বে 'শমঃ কারণমুচ্যতে'- সকল সকলের অভাবই কারণ। এর পূর্বে সকলের হাত থেকে রেহাই পাওয়া যায় না, এবং—

যদা হি নেত্রিয়ার্থেযু ন কর্মস্বনুষজ্জতে ।

সর্বসকলসন্ন্যাসী যোগারূদস্তদোচ্যতে ॥ ৪ ॥

যে কালে পুরুষ ইন্দ্রিয়ভোগে আসক্ত হন না এবং কর্মেও আসক্ত হন না (যোগের পরিপক্ষ অবস্থাতে পৌঁছানোর পর কর্ম করে আর কার খোঁজ করা হবে ? অতএব নিয়ত কর্ম আরাধনার আর প্রয়োজন হয় না, সেইজন্য তিনি আর কর্মে আসক্ত হন না ), সেই সময় 'সর্বসকলসন্ন্যাসী'- সর্বসকলের অভাব দেখা দেয়। একেই বলে সন্ন্যাস এই হল যোগারূদত্ব। পথে সন্ন্যাস বলে কিছুই নেই। এই যোগারূদত্বে কি লাভ ?—

উদ্ধরেদাত্মানাত্মানং নাত্মানমবসাদয়েৎ ।

আত্মেব হ্যাত্মনো বন্ধুরাত্মেব রিপুরাত্মনঃ ॥ ৫ ॥

অর্জুন ! মানুষের কর্তব্য এই যে নিজেই নিজেকে উদ্ধার করবে। আত্মার যাতে অধোগতি না হয়; কারণ এই জীবাত্মা স্বয়ং নিজের বন্ধু আবার স্বয়ং নিজের শক্তি। কখন শক্ত হয় ও কখন মিত্র হয় ? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

বন্ধুরাত্মাত্মনস্তস্য যেনাত্মেবাত্মনা জিতঃ ।

অনাত্মনস্ত শক্তত্বে বর্তেতাত্মেব শক্তবৎ ॥ ৬ ॥

যে জীবাত্মা দ্বারা মন এবং ইন্দ্রিয়সমূহ সহিত দেহ জয় করা হয়েছে, তার জন্য তারই জীবাত্মা বন্ধু এবং যার দ্বারা মন এবং ইন্দ্রিয়সমূহ সহিত দেহ জয় করা হয়নি, তার জন্য শক্তি সে স্বয়ং।

উপরোক্ত দুটি শ্লোকেই শ্রীকৃষ্ণ একটা কথাই বললেন যে, নিজের আত্মাকে নিজেই উদ্বার করুন, তাকে অধোগতিতে নিয়ে যাবেন না; কারণ আত্মাই বন্ধু। এই সৃষ্টিতে অন্য কেউ শক্তি বা বন্ধু নয়। কিরণপে ? যিনি মন ও ইন্দ্রিয়সমূহ জয় করেছেন, তাঁর জন্য তাঁর আত্মাই বন্ধুর মত ব্যবহার করে, পরমকল্যাণকর এবং যিনি মন ও ইন্দ্রিয়সমূহ জয় করেননি, তাঁর জন্য তাঁর আত্মাই শক্তির মত ব্যবহার করে, নীচ যোনি এবং যাতনার দিকে নিয়ে যায়। প্রায়ই লোকে বলে- ‘আমি তো আত্মা’ গীতাশাস্ত্রে বলেছে, “একে শন্ত ছেদন করতে পারে না, অগ্নি দাহ করতে পারে না, বায়ু শুক করতে পারে না। আত্মা নিত্য, অমৃতস্বরূপ, শাশ্঵ত, অপরিবর্তশীল এবং সেই আত্মা আমাতেই বিদ্যমান।” তারা গীতাশাস্ত্রের এই পংক্তিগুলি লক্ষ্য করে না যে আত্মা অধোগতিতেও যায়। আত্মার উদ্বারণ হয়, যার জন্য ‘কার্যম্ কর্ম’- করণীয় প্রক্রিয়ার আচরণ করলেই উপলব্ধি হয় বলা হয়েছে। এখন অনুকূল আত্মার লক্ষণ দেখুন—

**জিতাত্মনঃ প্রশান্তস্য পরমাত্মা সমাহিতঃ।**

**শীতোষ্ণসুখদুঃখেষ্য তথা মানাপমানয়োঃ।। ৭।।**

শীত ও উষ্ণে, সুখ ও দুঃখে এবং মান ও অপমানে যাঁর অস্তঃকরণের বৃত্তিসমূহ শান্ত, এইরূপ স্বাধীন আত্মা যাঁর, তাঁর মধ্যে পরমাত্মা সদা স্থিত। কখনও পৃথক হন না। ‘জিতাত্মা’ অর্থাৎ যিনি মন ও ইন্দ্রিয়সমূহ জয় করেছেন, বৃত্তি পরমশান্তিতে প্রবাহিত। (একেই আত্মার উদ্বারের অবস্থা বলে।) আরও বললেন—

**জ্ঞানবিজ্ঞানতত্ত্বাত্মা কুটস্থো বিজিতেন্দ্রিযঃ।**

**যুক্ত ইত্যচ্যতে যোগী সমলোক্ষাকাঞ্চনঃ।। ৮।।**

যাঁর অস্তঃকরণ জ্ঞান ও বিজ্ঞানে তৃপ্তি, যাঁর স্থিতি অচল, স্থির এবং নির্বিকার, যিনি বিশেষরূপে ইন্দ্রিয়সমূহ জয় করেছেন, যাঁর দৃষ্টিতে মাটি, পাথর ও সোনা এক, এইরূপ যোগীকে ‘যুক্ত’ বলা হয়। যুক্তের অর্থ যোগে সংযুক্ত। একেই বলে

যোগের পরাকার্ষা, যোগেশ্বর পঞ্চম অধ্যায়ের শ্লোক সংখ্যা সাত থেকে বারো পর্যন্ত যা'র বর্ণনা করেছেন। পরমতত্ত্ব পরমাত্মার সাক্ষাৎকার এবং সেই সঙ্গে তাঁকে জানাকেই জ্ঞান বলে। সাধক ইষ্ট থেকে যদি এক ইঁধিং দূরেই থাকে, জানবার ইচ্ছুক, তবও তাকে অজ্ঞানীই বলে। সেই প্রেরক কিরণপে সর্বব্যাপ্ত? কিরণপে প্রেরণা প্রদান করেন? কিরণপে অনেকগুলি আত্মার একসঙ্গে পথ-প্রদর্শন করেন? কিরণপে তিনি ভূত, ভবিষ্যৎ এবং বর্তমানের জ্ঞাতা? সেই প্রেরক ইষ্টের কার্য-প্রণালীর জ্ঞানই 'বিজ্ঞান'। যেদিন থেকে হৃদয়ে ইষ্টের আবির্ভাব ঘটে, সেদিন থেকেই তিনি নির্দেশ দিতে আরম্ভ করেন; কিন্তু শুরুতে সাধক বুঝতে পারেন না। পরাকার্ষা কালেই যোগী তাঁর আন্তরিক কার্য-প্রণালী সম্পূর্ণভাবে বুঝতে পারেন। এই বোঝার ক্ষমতাকেই বিজ্ঞান বলে। যোগারাত্ অথবা যুক্ত পুরুষের অস্তঃকরণ জ্ঞান-বিজ্ঞানে তৃপ্ত থাকে। এইরপ যোগযুক্ত পুরুষের স্থিতির নিরংপণ করে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ পুনরায় বললেন—

সুহৃদ্দিগ্নিদুসীনমধ্যস্থদ্বেষ্যবন্ধু ।

সাধুম্বপি চ পাপেষু সমবুদ্ধিবিশিষ্যতে ॥ ৯ ॥

লাভ করবার পর মহাপুরুষ সমদর্শী ও সমবর্তী হন। যেরূপ পূর্বের শ্লোকে তিনি বলেছেন যে, যিনি পূর্ণজ্ঞাতা অথবা পঞ্চিত, তিনি বিদ্যাবিনয়সম্পন্ন ব্রাহ্মণে, চগ্নলে, গরু, কুরু, হাতীতে সমদর্শী হন। এই শ্লোক তারই পুরুক। তিনি আন্তরিকতার সঙ্গে পরের উপকার করেন, এরূপ সহাদয়, মিত্র, শক্র, উদাসীন, দেবী, বন্ধু, ধর্মাত্মা এবং পাপীদের প্রতিও সমানদৃষ্টিসম্পন্ন যোগযুক্ত পুরুষ অতি শ্রেষ্ঠ। তারা কি করে, না করে, কার্যকলাপের উপর দৃষ্টি দেন না, তাদের ভিতরে যে আত্মা আছে, সেই দিকেই তাঁর দৃষ্টি পড়ে। এদের মধ্যে পার্থক্য কেবল এই দেখেন যে, কেউ কিছু নিম্নতরে দাঁড়িয়ে, কেউ নির্মলতার কাছাকাছি পোঁচেছেন; কিন্তু সে ক্ষমতা সকলের মধ্যেই আছে। এখানে যোগযুক্তের লক্ষণ পুনরায় পুনরাবৃত্তি করা হয়েছে।

কিভাবে যোগযুক্ত অবস্থা-লাভ করা যায়? কিভাবে যজ্ঞ করা হয়? যজ্ঞস্ত্রলী কিভাবে প্রস্তুত হবে? আসন কেমন হবে? কিরণপে আসনে উপবেশন করা হবে? যজ্ঞকর্তা দ্বারা যে নিয়মগুলি পালন করা হবে, আহার-বিহার, শয়ন-জাগরণে সংযম এবং কর্মচেষ্টা কিভাবে সম্পাদন হবে? এই বিন্দুগুলির উপর যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ এর

পরের পাঁচটি শ্ল�কে আলোকপাত করেছেন, আপনিও যাতে সেই যজ্ঞ সম্পন্ন করতে সমর্থ হন।

তৃতীয় অধ্যায়ে তিনি যজ্ঞের নাম নিয়ে বলেছেন যে, যজ্ঞের প্রক্রিয়াই সেই নিয়ত কর্ম। চতুর্থ অধ্যায়ে তিনি যজ্ঞের স্বরূপ বিস্তারপূর্বক বলেছেন, যাতে প্রাণের অপানে আহতি, অপানের প্রাণে আহতি, প্রাণ-অপানের গতিরোধ করে মনকে নিরস্তুক করা হয়। যজ্ঞের শুন্দ অর্থ আরাধনা এবং আরাধ্য দেবপর্যষ্ট যে প্রক্রিয়ার দ্বারা পৌঁছানো যায়, সেই বিষয়ে পঞ্চম অধ্যায়েও বলা হয়েছে। কিন্তু তার জন্য ভূমি, আসন, করবার বিধি ইত্যাদির সম্বন্ধে বলা বাকী ছিল। তারই উপর যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ এখানে আলোকপাত করছেন—

যোগী যুক্তীত সততমাত্মানং রহসি স্থিতঃ।

একাকী যতচিন্তাত্মা নিরাশীরপরিগ্রহঃ ॥ ১০ ॥

চিন্ত জয় করবার জন্য প্রয়ত্নশীল যোগী মন, ইন্দ্রিয়সমূহ এবং দেহ সংযত করে, বাসনা ও সংগ্রহরহিত হয়ে, নির্জন স্থানে একাকী চিন্তকে (আঘোপলক্ষি করবার) যোগক্রিয়াতে নিযুক্ত করবেন। তার জন্য কেমন স্থান হওয়া দরকার? আসন কিরণপ হবে?—

শুচো দেশে প্রতিষ্ঠাপ্য স্থিরমাসনমাত্মনঃ।

নাত্যচ্ছিতং নাতিনীচং চৈলাজিনকুশোত্তরম্ ॥ ১১ ॥

শুন্দভূমির উপর কুশ, মৃগচর্ম, বস্ত্র অথবা এর থেকে উত্তরোত্তর (রেশমী, উলের বস্ত্র, তঙ্গাপোষ যা কিছু হোক) স্থির আসন স্থাপন করবেন। আসন যেন অতি উঁচু বা অতি নিচু না হয়। শুন্দভূমির অর্থ হ'ল স্থান যেন পরিষ্কার হয়। ভূমিতে কিছু পেতে নেওয়া উচিত-মৃগচর্ম, মাদুর, বস্ত্র অথবা তঙ্গাপোষ যা হোক কিছু পেতে নেওয়া উচিত। আসন যেন একটুও না দোলে, স্থিরভাবে ‘স্থাপন হয়’। ‘পূজ্য মহারাজজী’ প্রায় পাঁচ ইঞ্চি উঁচু আসনের উপর বসতেন। একবার ভক্তগণ এক ফুট উঁচু মার্বেল পাথরের এক চৌকী এনে দিয়েছিলেন। মহারাজজী মাত্র একদিন ব্যবহার করেছিলেন, পরদিনই বলেছিলেন- “না হো! সাধুদের এত উঁচু আসনে বসা উচিত নয়, এতে অভিমান চলে আসে। আবার নীচুতেও বসা উচিত নয়, হীনভাব ও ঘৃণা

উৎপন্ন হয়।” সেটা সরিয়ে বাগানে রেখে দিয়েছিলেন। তিনি সেখানে কথনও যেতেন না। এখনও কেউ যায় না। এইরূপ ছিল সেই মহাপুরুষের শিক্ষা-পদ্ধতি। সাধকের জন্য বেশী উঁচু আসন ব্যবহার উচিত নয়, না হলে ভজন সম্পূর্ণ হবে পরে, আগে অহঙ্কারটাই প্রাধান্য পাবে। এর পরে—

তত্ত্বেকাগ্রং মনঃ কৃত্বা যতচিত্তেন্দ্রিয়াক্রিযঃ।

উপবিশ্যাসনে যুঞ্জ্যাদ্যোগমাত্ত্ববিশুদ্ধয়ে॥ ১২॥

সেই আসনে বসে (বসেই ধ্যান করবার বিধান), মনকে একাগ্র করে চিন্ত এবং ইন্দ্রিয়সমূহের ক্রিয়াকে বশে রেখে অস্তকরণের শুদ্ধির জন্য যোগাভ্যাস করবেন। কিভাবে উপবেশন করা হবে, তা বলছেন—

সমং কায়শিরোগ্রীবং ধারয়মচলং স্থিরঃ।

সম্প্রক্ষ্য নাসিকাগ্রং স্বং দিশশ্চানবলোকয়ন॥ ১৩॥

দেহ, গ্রীবা ও মস্তককে সোজা, অচল-স্থির করে (যেমন কোন সরলরেখা হয়) এইরূপ সোজা, দৃঢ় হয়ে বসুন এবং স্বীয় নাসিকার অগ্রভাগ দেখেন। (নাসিকার অগ্রভাগ দেখবার নির্দেশ দিচ্ছেন না বরং সোজা বসলে নাকের সোজাসুজি যেখানে দৃষ্টি পড়ে, সেখানেই দৃষ্টি থাকবে। এদিক-ওদিক দেখবার চথগ্লতা যেন না হয়) অন্য দিকে না দেখেন স্থির হয়ে বসবেন। এবং—

প্রশান্তাত্মা বিগতভীরুক্ষাচারিষ্ঠতে স্থিতঃ।

মনঃ সংযম্য মচিত্তো যুক্ত আসীত মৎপরঃ॥ ১৪॥

ব্রহ্মচর্য ব্রতে স্থিত (প্রায়ই লোকে বলে যে জননেন্দ্রিয় সংযমই ব্রহ্মচর্য; কিন্তু মহাপুরুষগণের অনুভূতি এই যে, মন থেকে বিষয়ের স্মরণ করে, চোখ দিয়ে সে রকম দৃশ্য দেখে, অব্ধি দ্বারা স্পর্শ করে, কানে বিষয়োভেজক শব্দ শুনে জননেন্দ্রিয় সংযম সম্ভব নয়। ব্রহ্মচারীর বাস্তবিক অর্থ হল, ‘ব্রহ্ম আচরণ স ব্রহ্মচারী’-ব্রহ্মের আচরণ হল নিয়ত কর্ম, যজ্ঞের প্রক্রিয়া, যার অনুষ্ঠান করে ‘যান্তি ব্রহ্ম সনাতনম्’-সনাতন ব্রহ্মে বিলীন হওয়া যায়। এর অনুষ্ঠানের সময় ‘স্পর্শান্ত কৃত্বা বহির্বাহ্যান্’-বাহ্য স্পর্শ, মন এবং ইন্দ্রিয় সমূহের স্পর্শ বাইরেই ত্যাগ করে চিন্তকে ব্রহ্ম চিন্তনে, নিঃশ্঵াস-প্রশ্বাসে (প্রাণ-অপানে), ধ্যানে নিযুক্ত করতে হবে। মন ব্রহ্মে নিযুক্ত থাকলে,

বাহ্য স্মরণ কে করবে ? যদি তবুও বাহ্য স্মরণ হয়, তাহলে মন নিযুক্ত হয়েছে কোথায় ? বিকার দেহে নয়, মনের তরঙ্গের মধ্যে থাকে। মন যদি ব্রহ্মাচরণে রত, তাহলে কেবল জননেন্দ্রিয় সংযমই নয়, বরং সকলেন্দ্রিয় সংযম স্বাভাবিক হয়ে যায়। অতএব ব্রহ্মাচরণে স্থিত থেকে) ভয়রহিত এবং উত্তমরূপে শান্ত অস্তঃকরণযুক্ত, মনকে সংযত করে, আমাতেই চিন্ত নিযুক্ত করে, মৎপরায়ণ হয়ে স্থিত হবেন। এরূপ আচরণের পরিণাম কি ?—

যুঞ্জন্নেবং সদাত্মানং যোগী নিয়তমানসঃ।

শান্তিং নির্বাণপরমাং মৎসংস্থামধিগচ্ছতি॥ ১৫॥

এইরূপ নিজেকে নিরস্তর সেই চিন্তনে নিযুক্ত করে, সংযত মনযুক্ত যোগী আমাতে স্থিতিরূপ পরাকাষ্ঠাযুক্ত শান্তি প্রাপ্ত হন। সেইজন্য নিজেকে নিরস্তর কর্মে নিযুক্ত করুন। এই প্রশ্নটি এখানেই সম্পূর্ণ হ'ল। এর পরে দুটি শ্ল�কে তিনি বলেছেন যে, পরমানন্দযুক্ত শান্তির জন্য শারীরিক সংযম, যুক্তাহার, বিহারও আবশ্যিক—

নাত্যশৃতস্ত যোগোহস্তি ন চৈকান্তমশ্বাতঃ।

ন চাতি স্বপ্নশীলস্য জাগ্রতো নৈব চার্জুন॥ ১৬॥

অর্জুন ! এই যোগ অতিভোজীর সিদ্ধ হয় না এবং একান্ত অনাহারীরও সিদ্ধ হয় না, অত্যন্ত নিদ্রালুর এবং অতি অনিদ্রা-অভ্যাসীরও সিদ্ধ হয় না। তাহলে কার সিদ্ধ হয় ?—

যুক্তাহারবিহারস্য যুক্তচেষ্টস্য কর্মসু।

যুক্তস্বপ্নাববোধস্য যোগো ভবতি দুঃখহা॥ ১৭॥

দুঃখের নাশক এই যোগ তাঁর পূর্ণ হয়, যিনি পরিমিত আহার-বিহার করেন, কর্মে পরিমিত চেষ্টা করেন এবং যাঁর নিদ্রা ও জাগরণ সংযমিত। অধিক ভোজনে আলস্য, নিদ্রা এবং প্রমাদ ঘিরে ধরে, তখন সাধনা ব্যাহত হয়। আহার ত্যাগ করলেও ইন্দ্রিয়সমূহ দুর্বল হয়ে যায়, অচল-স্থির হয়ে বসবার ক্ষমতা থাকে না। ‘পূজ্য মহারাজজী’ বলতেন যে, যতটা খোরাক তার থেকে একটা দুটো রূটি কম খাওয়া উচিত। বিহার অর্থাৎ সাধনের অনুকূল বিচরণ, অল্প পরিশ্রমও করা উচিত, কোন কাজ খুঁজে নিতে হয় অন্যথা রক্তসংঘর শিথিল হয়ে যাবে, যার ফলে রোগ-ব্যাধির

শিকার হবে। আয়ু নিদ্রা ও জাগরণ, আহার ও অভ্যাসে কম-বেশী হয়। ‘মহারাজজী’ বলতেন— “যোগীকে চার ঘন্টা শয়ন করা উচিত এবং সবসময় স্মরণ-মনন করা উচিত। যে বৃথা জাগরণ করে, সে শীঘ্ৰই পাগল হয়ে যায়।” কর্মে পরিমিত চেষ্টা হওয়া দরকার অর্থাৎ নিয়ত কর্ম আৱাধনার অনুরূপ নিরাস্তৰ প্রয়োজনীয় হওয়া দরকার। বাহ্য বিষয়গুলির স্মরণ না করে সর্বদা তাতেই যিনি নিযুক্ত, তাঁৰই যোগে সিদ্ধিলাভ হয়; সঙ্গে সঙ্গে—

যদা বিনিয়তং চিত্তমাত্মন্যেবাবতিষ্ঠতে।

নিঃস্পৃহঃ সর্বকামেভ্যো যুক্ত ইত্যুচ্যতে তদা ॥ ১৮ ॥

এই প্রকার যোগের অভ্যাসদ্বারা বিশেষরূপে সংযতচিত্ত যেকালে পরমাত্মাতে উত্তমরূপে স্থিত হন, প্রায় বিলীন হয়ে যান, সেইকালে কামনা থেকে মুক্ত পুরুষকে যোগযুক্ত বলা হয়। এখন বিশেষরূপে বিজিত চিত্তের লক্ষণ কি?—

যথা দীপো নিবাতস্থো নেস্তে সোপমা স্মৃতা।

যোগিনো যতচিত্তস্য যুঞ্জতো যোগমাত্মনঃ ॥ ১৯ ॥

যে প্রকার বায়ুশূণ্য স্থানে অবস্থিত প্রদীপের দীপশিখা যেমন কম্পিত হয় না, শিখা উর্ধ্বমুখী হয়, তাতে কম্পন হয় না, সেই উপমা দেওয়া হয়েছে পরমাত্মার ধ্যানে প্রবৃত্ত চিত্তজয়ী যোগীর সঙ্গে। প্রদীপ তার উদাহরণ মাত্র। বর্তমান সময়ে প্রদীপের প্রচলন কমে গেছে। বায়ুতে বেগ না থাকলে, ধূপকাঠির ধোঁয়া সোজা উপরের দিকে যায়। এটা যোগীর বিজিত চিত্তের একটা উদাহরণ মাত্র। এখন যদিও চিত্ত জয় করা হয়েছে, নিরোধও হয়ে গেল, কিন্তু এখনও চিত্ত তো বিদ্যমান। যখন এই নিরূপ চিত্তেরও বিলয় হয়, তখন কি বিভূতি লাভ হয়? দেখুন—

যত্রোপরমতে চিত্তং নিরূপং যোগসেবয়া।

যত্র চৈবাত্মনাত্মানং পশ্যন্নাত্মনি তুষ্যতি ॥ ২০ ॥

যে অবস্থায় যোগাভ্যাসের দ্বারা নিরূপ চিত্তেরও নিবৃত্তি হয়, বিলীন হয়ে যায়, শেষ হয়ে যায়, সেই অবস্থায় ‘আত্মনা’-স্মীয় আত্মার দ্বারা ‘আত্মানম्’-পরমাত্মার দর্শন করে ‘আত্মনি এব’- স্মীয় আত্মাতেই সম্পৃষ্ট হয়। দর্শন করেন পরমাত্মার কিন্তু সম্পৃষ্ট হন স্মীয় আত্মাতে। কারণ প্রাণিকালে পরমাত্মার সাক্ষাৎকার হয়, কিন্তু পরক্ষণেই

তিনি নিজের আত্মাকে সেই শাশ্বত ঈশ্বরীয় বিভূতিগুলিতে ওতপ্রোত দেখেন। ব্রহ্ম যেমন অজর, অমর, শাশ্বত, অব্যক্ত ও অমৃতস্বরূপ। তেমনি আত্মাও অজর, অমর, শাশ্বত অব্যক্ত ও অমৃতস্বরূপ। আছে কিন্তু সেই আত্মা অচিন্ত্য। যতক্ষণ চিন্ত এবং চিন্তের তরঙ্গ বিদ্যমান, ততক্ষণ আপনার উপভোগের জন্য নয়। নিরাঙ্গ চিন্ত এবং নিরাঙ্গ চিন্তেরও বিলুপ্তিকালে পরমাত্মার সাক্ষাৎকার হয় এবং দর্শনের পরেই সেই ঈশ্বরীয় বিভূতিগুলিতে যুক্ত যোগী নিজের আত্মাকে দেখেন। সেই জন্য তিনি নিজের আত্মাতেই সন্তুষ্ট হন। এই তাঁর স্বরূপ। এই হল পরাকার্ষা। এরই পূরক পরের শ্লোকটি দেখুন—

সুখমাত্যন্তিকং যত্তদ্বুদ্ধিগ্রাহ্যমতীন্দ্রিয়ম্।

বেত্তি যত্র ন চৈবাযং স্থিতশ্চলতি তত্ত্বতঃ।। ২১।।

এবং ইন্দ্রিয়সমূহের অতীত, কেবল শুন্দ সূক্ষ্মবুদ্ধিদ্বারা গ্রহণ যোগ্য যে অসীম আনন্দ আছে, তা' যে অবস্থায় অনুভব করেন এবং যে অবস্থায় স্থিত হয়ে এই যোগী ভগবৎ স্বরূপকে তত্ত্বস্থিত জেনে বিচলিত হন না, সর্বদা তাতে প্রতিষ্ঠিত থাকেন এবং—

যং লক্ষ্মা চাপরং লাভং মন্যতে নার্থিকং ততঃ।

যশ্চিন্ন স্থিতো ন দুঃখেন গুরুণাপি বিচাল্যতে।। ২২।।

পরমেশ্বরের প্রাপ্তিরূপ যে লাভ, পরাকার্ষার শাস্তিলাভ করে যোগী অন্য লাভ তদপেক্ষা অধিক মনে করেন না এবং ভগবৎ প্রাপ্তিরূপ যে অবস্থায় স্থিত যোগী মহাদুঃখেও বিচলিত হন না, তাঁর দুঃখবোধ হয় না, কারণ যে চিন্ত বোধ করত, তা বিলীন হয়ে গেছে, এইরূপ—

তৎ বিদ্যাদ্বৃৎসংযোগবিয়োগং যোগসংজ্ঞিতম্।

স নিশ্চয়েন যোক্তব্যো যোগোহনির্বিষ্টচেতসা।। ২৩।।

যা সংসারের সংযোগ ও বিয়োগ থেকে রহিত, তার নাম যোগ। সে সুখ আত্যন্তিক, তার মিলনকে যোগ বলে। যাঁকে পরমতত্ত্ব পরমাত্মা বলা হয়, তাঁর মিলনকে যোগ বলে। সে যোগ অবিচলিত চিন্তদ্বারা নিশ্চয়পূর্বক করা কর্তব্য। যিনি ধৈর্যধারণ করে রত থাকেন, তিনিই যোগে সফল হন।

সকলপ্রভবান্নামাংস্ত্যত্বা সর্বানশেষতঃ ।

মনসৈবেন্দ্রিয়গ্রামং বিনিয়ম্য সমস্ততঃ ॥ ২৪ ॥

সেইজন্য মানুষের উচিত যে, সকলজাত সমস্ত কামনাকে বাসনা ও আসক্তি সহিত সর্বদা ত্যাগ করে মনের দ্বারা ইন্দ্রিয়সমূহকে সর্বদিকে ভাল প্রকারে বশে করে—

শনৈঃ শনৈরপরমেদ্বুদ্ধ্যা ধ্রতিগৃহীতয়া ।

আত্মসংস্থং মনঃ কৃত্বা ন কিঞ্চিদপি চিন্তয়েৎ ॥ ২৫ ॥

অভ্যাস করে ধীরে ধীরে উপরত করবে। চিন্তনিরস্ত্ব এবং বিলীন হয়ে যাবে। তদন্তর সে ধৈর্যবৃক্ষ বুদ্ধির দ্বারা মনকে পরমাত্মাতে স্থিত করে অন্য কিছুই চিন্তন করবে না। লাভ করবার বিধান নিরস্তর প্রবৃত্ত থেকেই। কিন্তু শুরুতে মন লাগে না, এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর বলছেন—

যতো যতো নিশ্চরতি মনশঞ্চলমস্তিরম ।

ততস্তো নিয়ম্যেতদাত্মণ্যেব বশং নয়েৎ ॥ ২৬ ॥

এই অস্ত্রির ও চঞ্চল মন যে যে কারণে সাংসারিক পদার্থে ধাবিত হয়, সেই সেই বিষয় থেকে সংযমিত করে বার বার অস্তরাত্মাতেই নিরস্ত্ব করবেন। প্রায়ই লোকে বলে যে, মন যেখানে যেতে চায় যেতে দাও, প্রকৃতির মধ্যেই কোথাও যাবে এবং প্রকৃতিও ব্রহ্মের অস্তর্গত, প্রকৃতিতে বিচরণ করা ব্রহ্মের বাইরে নয়; কিন্তু শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে এটা ভুল। গীতায় এই সমস্ত মান্যতাগুলির কোন স্থান নেই। শ্রীকৃষ্ণ বলছেন, মন যে যে বিষয়ে ধাবিত হয়, যে মাধ্যমে যায়, সেই মাধ্যমকেই সংযত করে পরমাত্মাতে নিযুক্ত করবেন। মনকে নিরস্ত্ব করা সম্ভব। এই নিরস্ত্বের পরিণাম কি?—

প্রশান্তমনসং হ্যেনং যোগিনং সুখমুত্তমম् ।

উপৈতি শান্তরজসং ব্রহ্মভূতমকল্যাম ॥ ২৭ ॥

যাঁর মন পূর্ণরূপে শান্ত, যিনি পাপমুক্ত, যাঁর রজোগুণ শান্ত হয়ে গেছে, ব্রহ্মের সঙ্গে একীভূত এরূপ যোগী সর্বোত্তম আনন্দলাভ করেন, যার থেকে শ্রেষ্ঠ কিছুই নেই। এই প্রসঙ্গে পুনরায় জোর দিলেন—

যুঞ্জনেবং সদাত্মানং যোগী বিগতকল্পঃ।

সুখেন ব্রহ্মসংস্পর্শমত্যন্তং সুখমশ্নুতে॥ ২৮॥

এইরূপে আত্মাকে নিরস্তর সেই পরমাত্মাতে যুক্ত করে নিষ্পাপ যোগী সুখপূর্বক পরব্রহ্ম পরমাত্মার প্রাপ্তির অসীম আনন্দের অনুভব করেন। তিনি ‘ব্রহ্মসংস্পর্শ’ অর্থাৎ ব্রহ্মের স্পর্শ এবং তাঁতে স্থিত হওয়ার সঙ্গে অসীম আনন্দের অনুভব করেন। অতএব ভজন অনিবার্য। এই প্রসঙ্গে আরও বলছেন—

সর্বভূতস্ত্রমাত্মানং সর্বভূতানি চাত্মনি।

সংক্ষিতে যোগযুক্তাত্মা সর্বত্র সমদর্শনঃ॥ ২৯॥

যোগের পরিণামের সঙ্গে যুক্ত আত্মবান्, সর্বভূতে সমদর্শী যোগী আত্মাকে সর্বভূতে দর্শন করেন এবং সমস্ত ভূতকে আত্মাতেই প্রবাহিত দেখেন। এরূপ দর্শন করলে কি লাভ ?—

যো মাং পশ্যতি সর্বত্র সর্বং চ ময়ি পশ্যতি।

তস্যাহং ন প্রণশ্যামি স চ মে ন প্রণশ্যতি॥ ৩০॥

যিনি সর্বভূতে পরমাত্মারূপ আমাকে দর্শন করেন, ব্যাপ্ত দেখেন এবং সর্বভূতকে সর্বাত্মা আমাতে দর্শন করেন, তাঁর জন্য আমি অদৃশ্য হই না এবং তিনিও আমার জন্য অদৃশ্য হন না। এটাই প্রেরকের মুখোমুখি মিলন, সখ্যভাব, সামীপ্যমুক্তি।

সর্বভূতস্থিতং যো মাং ভজত্যেকত্ত্বমাস্থিতঃ।

সর্বথা বর্তমানোহপি স যোগী ময়ি বর্ততে॥ ৩১॥

যিনি বহুর মধ্যে উপর্যুক্ত একত্রভাবে আমাকে ভজনা করেন, তিনি সর্বপ্রকারের কার্যে নিযুক্ত থেকেও আমাতেই অবস্থিতি করেন; কারণ আমি ব্যতীত তাঁর জন্য আর কেউ নেই, তাঁর সবকিছু বিলীন হয়ে গেছে। সেইজন্য এখন তিনি ওঠাবসা, যা কিছু করেন, আমার সকলেই করেন।

আচ্ছৌপম্যেন সর্বত্র সমং পশ্যতি যোহর্জন।

সুখং বা যদি বা দুঃখং স যোগী পরমো মতঃ॥ ৩২॥

হে অর্জুন ! যিনি নিজের সমান সর্বভূতকে দেখেন, সকল ভূতের সুখ ও দুঃখকে নিজের সুখ ও দুঃখের ন্যায় অনুভব করেন, তিনি (যাঁর ভেদ-ভাব সমাপ্ত হয়ে গেছে) সর্বশ্রেষ্ঠ যোগী। প্রশ্নটি সম্পূর্ণ হল। এই প্রসঙ্গে অর্জুন জিজ্ঞাসা করলেন—

### অর্জুন উবাচ

যোহয়ং যোগস্ত্রয়া প্রোক্তঃ সাম্যেন মধুসুদন ।

এতস্যাহং ন পশ্য্যামি চথ্বলজ্ঞাং স্থিতিং স্থিরাম্ ॥ ৩৩ ॥

হে মধুসুদন ! যে যোগ আপনি ব্যাখ্যা করলেন, যাতে সমদর্শী হওয়া যায়, মন চথ্বল, এই কারণে দীর্ঘকাল স্থায়ী স্থিতিতে আমি নিজেকে দেখছি না।

চথ্বলং হি মনঃ কৃষ্ণ প্রমাথি বলবদ্ধতম্ ।

তস্যাহং নিশ্চিহ্নং মন্যে বায়োরিব সুদুষ্করম্ ॥ ৩৪ ॥

হে কৃষ্ণ ! এই মন অতি চথ্বল, প্রমথন স্বভাবযুক্ত (প্রমথন অর্থাং যা' আলোড়ন সৃষ্টি করে), অবিবেচক এবং প্রবল, সেইজন্য একে বশে করা আমি বায়ুর ন্যায় অতি দুষ্কর মনে করি। বাড়ের বায়ুকে এবং মনকে নিবৃত্ত করা দুই-ই সমান। এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

### শ্রীভগবানুবাচ

অসংশয়ং মহাবাহো মনো দুর্নিশ্চিহ্নং চলম্ ।

অভ্যাসেন তু কৌন্তেয় বৈরাগ্যেণ চ গৃহ্যতে ॥ ৩৫ ॥

মহান्, কার্যে প্রযত্নশীল অর্থাং মহাবাহ অর্জুন ! মন নিঃসন্দেহে চথ্বল এবং একে বশ করা অতি কঠিন; পরস্ত কৌন্তেয় ! মন অভ্যাস ও বৈরাগ্য দ্বারা বশীভূত করা যায়। যেখানে চিন্ত নিযুক্ত করতে হবে, সেখানে স্থির করবার জন্য বার বার প্রযত্ন করাকে অভ্যাস বলে এবং দেখা-শোনা বিষয়-বস্তু থেকে (সংসার অথবা স্বগাদি ভোগগুলিতে) রাগ অর্থাং আসক্তির ত্যাগ বৈরাগ্য। শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে মনকে বশীভূত করা কঠিন; কিন্তু অভ্যাস ও বৈরাগ্যের দ্বারা একে বশ করা যায়।

অসংযতাত্মনা যোগো দুষ্প্রাপ ইতি মে মতিঃ ।

বশ্যাত্মনা তু যততা শক্যোহবাপ্তুমুপায়তঃ ॥ ৩৬ ॥

অর্জুন ! যে পুরুষ মনকে বশে করে নাই, তার পক্ষে যোগ দুষ্প্রাপ্য ; কিন্তু যাঁর মন স্ববশ, সেই প্রযত্নশীল পুরুষ যোগলাভ করতে পারেন, এই আমার অভিমত । যত কঠিন তুমি মনে করছ, তত কঠিন নয় । অতএব একে কঠিন মনে করে ত্যাগ করে দিও না । প্রযত্নপূর্বক এই যোগলাভ কর, কারণ মন বশীভূত হলেই যোগ সন্তুষ্ট । এই প্রসঙ্গে অর্জুন জিজ্ঞাসা করলেন—

### অর্জুন উবাচ

অযতিঃ শ্রদ্ধযোপেতো যোগাচলিতমানসঃ ।

অপ্রাপ্য যোগসংসিদ্ধিং কাং গতিং কৃষ্ণ গচ্ছতি ॥ ৩৭ ॥

যোগ করতে করতে যদি কোন ব্যক্তির মন বিচলিত হয়, যদ্যপি তিনি এখনও শ্রদ্ধাবান, তথাপি এরূপ ব্যক্তি ভগবৎ সিদ্ধি লাভ না করে কোন গতি পেয়ে থাকেন ?

কচিল্লোভয়বিভৃষ্টশিঘ্নাভমিব নশ্যতি ।

অপ্রতিষ্ঠো মহাবাহো বিমুটো ব্রক্ষণঃ পথি ॥ ৩৮ ॥

মহাবাহু শ্রীকৃষ্ণ ! ভগবৎ প্রাপ্তির মার্গ থেকে বিচলিত সেই মোহিত ব্যক্তি ছিন্ন-ভিন্ন মেঘের ন্যায় উভয় দিক থেকে নষ্ট-ভষ্ট হয়ে যান কি ? এক খণ্ড মেঘ বর্ষাও দিতে পারে না আবার বড় মেঘের সঙ্গে মিশতেও পারে না বরং দেখতে দেখতে হাওয়ায় বিলুপ্ত হয়ে যায় । সেইরূপ শিথিল প্রযত্নশীল, কিছুকাল সাধনা করে স্থগিত করে দিলে তিনি নষ্ট হয়ে যান কি ? তিনি আপনার সঙ্গে একীভূত হতে পারেন না এবং ভোগগুলিও ভোগ করতে পারেন না, তাহলে তাঁর গতি কি হয় ?

এতন্মে সংশয়ঃ কৃষ্ণ ছেত্রমুহূর্স্যশেষতঃ ।

ত্বদন্যঃ সংশয়স্যাস্য ছেত্রা ন হ্যপপদ্যতে ॥ ৩৯ ॥

হে শ্রীকৃষ্ণ ! আমার এই সংশয় সম্পূর্ণরূপে দূর করতে একমাত্র আপনিই সমর্থ । আপনি ভিন্ন অন্য কারণ পক্ষে এই সংশয় দূর করা সন্তুষ্ট নয় । এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন—

### শ্রীভগবানুবাচ

পার্থ নৈবেহ নামুত্র বিনাশস্তস্য বিদ্যতে ।

ন হি কল্যাণকৃতকশ্চিদ্গতিং তাত গচ্ছতি ॥ ৪০ ॥

পার্থিব দেহকেই রথ ভেবে লক্ষ্ম্যের দিকে অগ্রসর আর্জুন ! সেই পুরুষের না এই লোকে এবং না পরলোকেই নাশ হয় ; কারণ হে বৎস ! সেই পরম কল্যাণকর নিয়ত কর্মের আচরণ করেন যিনি, তাঁর কখনও দুর্গতি হয় না । তাহলে তাঁর কি হয় ?—

প্রাপ্য পুণ্যকৃতাং লোকানুষিত্বা শাশ্বতীঃ সমাঃ ।

শুটীনাং শ্রীমতাং গোহে যোগভৃষ্টেহভিজায়তে ॥ ৪১ ॥

মন বিচলিত হলে যোগভৃষ্ট সেই ব্যক্তি পুণ্যবান্গণের লোকাদিতে বাসনাগুলি ভোগ করেন (যে বাসনাগুলির জন্য তিনি যোগভৃষ্ট হয়েছিলেন, ভগবান् অঙ্গসময়ের মধ্যেই সব দেখিয়ে-শুনিয়ে দেন, সেগুলিকে ভোগ করে) তিনি ‘শুটীনাং শ্রীমতাম্’-সদাচারসম্পন্ন শ্রীমান् পুরুষের গৃহে জন্মগ্রহণ করেন । (শ্রীমান् তিনি, যিনি শুন্দ আচরণ করেন ।)

অথবা যোগিনামেব কুলে ভবতি ধীমতাম् ।

এতদ্বি দুর্লভতরং লোকে জন্ম যদীদৃশ্ম ॥ ৪২ ॥

অথবা সেস্থানেও যদি জন্ম না হয়, তাহলে স্থিরবৃদ্ধি যোগিগণের কুলে তিনি প্রবেশ পেয়ে যান । শ্রীমান् পুরুষের গৃহে পবিত্র সংস্কার ছেলেবেলা থেকেই পড়তে থাকে; কিন্তু সেখানে জন্ম না হলে তিনি যোগিগণের কুলে (গৃহে নয়) শিষ্য-পরম্পরায় প্রবেশ পেয়ে যান । কবীর, তুলসী, রৈদাস, বাঞ্মীকি এঁরা শুন্দ আচরণযুক্ত শ্রীমান্গণের গৃহে নয়, যোগীকুলে স্থান পেয়েছিলেন । সদ্গুরুর কুলে সংস্কারের পরিবর্তনও একটা জন্ম এবং এইরূপ জন্ম সংসারে নিঃসন্দেহে অতিদুর্লভ । যোগীগণের কুলে জন্মের অর্থ কেবল তাদের পুত্রদণ্ডেই উৎপন্ন হওয়া নয় । গৃহত্যাগের পূর্বে যারা পুত্রদণ্ডে জন্মগ্রহণ করে, তারা মোহবশতঃ মহাপুরুষকে পিতা বলে মনে করলেও সেই মহাপুরুষের জন্য ঘর-পরিবারের নামে আপনজন বলে কেউ থাকে না । যে শিষ্য তাঁর আদর্শকে সম্বল করে নিষ্ঠা ভরে তার অনুষ্ঠান করেন, তাঁর মহত্ত্ব পুত্র অপেক্ষা বহুগুণ বেশী, সেই কারণে সেই শিষ্যই তাঁর বাস্তবিক পুত্র ।

যে ব্যক্তি যোগের সংস্কারের সঙ্গে যুক্ত নয়, তাকে মহাপুরুষগণ শিষ্য বলে গ্রহণ করেন না । ‘পূজ্য মহারাজজী’ যদি কেবল গেরুয়াধারী সাধুর সংখ্যা-বৃদ্ধি করতে

চাইতেন, তাহলে হাজার হাজার ব্যক্তি তাঁর শিষ্যত্ব গ্রহণ করতেন; কিন্তু তিনি কাউকে গাড়ি ভাড়া দিয়ে, কারও বাড়ীতে চিঠি দিয়ে, বুঝিয়ে, ঘরে পাঠিয়ে দিয়েছিলেন। কেউ জিদ করলে তিনি যত রকম কুলক্ষণই দেখতে পেতেন। অন্তর থেকে নিষেধ হত যে, এর মধ্যে সাধু হওয়ার একটা লক্ষণও নেই, একে রাখা ঠিক হবে না, এ পার হতে পারবে না। নিরাশ হয়ে দু'একজন পাহাড় থেকে বাঁপ দিয়ে জীবনত্যাগও করেছিল, কিন্তু মহারাজজী তাদেরও নিজের আশ্রমে স্থান দেননি। পরে জানতে পেরে বলেছিলেন- “যদিও জানতাম খুবই ব্যাকুল, তবুও মরে যাবে জানলে পরে রেখে নিতাম। একজন পতিত ব্যক্তিই থাকত আর কি হত।” মমত্ব তাঁর মধ্যেও খুব বেশী ছিল, তবুও রাখেননি। ৬-৭ জন যাঁদের জন্য আদেশ হয়েছিল যে- “আজ একজন যোগভূষ্ট ব্যক্তি আশ্রমে আসছে, জন্ম-জন্মান্তর থেকে অমিত হয়ে চলে আসছে। এই তার নাম, এই তার রূপ, তাকে স্থান দিয়ে ব্ৰহ্মবিদ্যার উপদেশ দাও, তাকে এগিয়ে দাও।” কেবল তাদেরই রেখেছিলেন। আজও তাঁদের মধ্যে একজন মহাপুরুষ ধারকৃগুলিতে আছেন, একজন অনুসুইয়াতে, দু'-তিনজন অন্যত্রও আছেন। এঁরাই বাস্তবিকরণপে সদ্গুরুর কুলে স্থান পেয়েছিলেন। এরূপ মহাপুরুষের সাম্মিধ্য-লাভ অতি দুর্লভ।

তত্ত্ব তৎ বুদ্ধিসংযোগং লভতে পৌর্বদেহিকম্।

যততে চ ততো ভূযঃ সংসিদ্ধৌ কুরুনন্দন॥ ৪৩॥

যোগভূষ্ট পুরুষ পূর্বজন্মে যে সাধন করেছিলেন সেই বুদ্ধির সংযোগকে সেখানে অনায়াসেই লাভ করেন এবং হে কুরুনন্দন! তার প্রভাবে তিনি পুনরায় ‘সংসিদ্ধৌ’- ভগবৎপ্রাপ্তিরূপ পরমসিদ্ধি লাভের জন্য প্রযত্ন করেন।

পূর্বাভ্যাসেন তেনৈব ত্রিয়তে হ্যবশোহপি সঃ।

জিজ্ঞাসুরপি যোগস্য শব্দৰুচ্নাতিবর্ততে॥ ৪৪॥

শ্রীমানের গৃহে বিষয়ের বশীভূত হয়েও তিনি পূর্বজন্মের সেই অভ্যাসদ্বারা ভগবৎপথের দিকে আকর্ষিত হন এবং যোগে শিথিল প্রযত্নশীল সেই জিজ্ঞাসু ও বাণীর বিষয়কে পার করে নির্বাণপদ প্রাপ্ত হন। এটাই তাঁর প্রাপ্তির উপায়। এক জন্মে কেউ লাভ করেনও না।

প্রযত্নাদ্যতমানস্ত যোগী সংশুদ্ধকিঞ্চিষৎ।

অনেকজন্মসংসিদ্ধস্তো যাতি পরাং গতিম্॥ ৪৫॥

অনেক জন্ম থেকে প্রযত্নশীল যোগী পরমসিদ্ধি লাভ করেন। যিনি প্রযত্নপূর্বক অভ্যাস করেন, তিনি সমস্ত পাপ থেকে মুক্ত হয়ে পরমগতি লাভ করেন। এটাই প্রাপ্তির ক্রম। সর্বপ্রথম শিথিল প্রযত্নাদ্যারা যোগের আরস্ত হয়, মন বিচলিত হয়ে পথভ্রষ্ট হলে পুনরায় জন্মগ্রহণ করতে হয়, পরে সদ্গুরুর কুলে প্রবেশ পাওয়া যায় এবং প্রত্যেক জন্মে অভ্যাসে প্রবৃত্ত থেকে সেখানেই পৌঁছান, যাকে পরমগতি, পরমধার বলা হয়। শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, এই যোগে বীজের নাশ হয় না। আপনি এই পথে শুধু দু-পা চলুন, সেই সাধনের কখনও নাশ হবে না। যে কোন পরিস্থিতিতে পুরুষ এতটা নিশ্চয়ই করতে পারেন, কারণ অঙ্গ সাধন নানা পরিস্থিতিতে ঘরে থাকে যে ব্যক্তি সেই করতে পারে, কারণ তার সময় নেই। আপনি কালো, ফর্সা যা-ই হোন, এই পৃথিবীতে কোথাও আপনার বসতি হোক, এই গীতাশাস্ত্র সকলের জন্য। আপনার জন্যও, শর্ত এই যে, আপনি মানুষ হবেন। উৎকট প্রযত্নশীল যিনি হোন; কিন্তু শিথিল প্রযত্নশীল কেবল গৃহস্থই হয়। গীতা গৃহস্থ-বৈরাগ্যবান, শিক্ষিত-অশিক্ষিত, সর্বসাধারণ মানুষমাত্রের জন্য। শুধু সাধু নামের বিশেষ প্রাণীর জন্য নয়। শেষে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ নির্ণয় করলেন—

তপস্মিভ্যোহথিকো যোগী জ্ঞানিভ্যোহপি মতোহথিকঃ।

কর্মভ্যশ্চাধিকো যোগী তস্মাদ্যোগী ভবার্জুন॥ ৪৬॥

যোগী তপস্মীগণ অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ। জ্ঞানীগণ অপেক্ষা এবং কর্মিগণ অপেক্ষাও যোগী শ্রেষ্ঠ। অতএব অর্জুন! তুমি যোগী হও।

**তপস্মী**— তপস্মী মনসহিত ইন্দ্রিয়সমূহকে সংযম করে যোগ স্থিতিতে পৌঁছাবার জন্য তপস্যা করেন। এখনও যোগযুক্ত হননি।

**কর্মী**— কর্মী এই নিয়ত কর্মকে জেনে তাতে প্রবৃত্ত হন। তিনি নিজের সামর্থ্যের বিবেচনা না করেই প্রবৃত্ত হন এবং সমর্পণের ভাব নিয়েও প্রবৃত্ত হন না। কর্ম করেন মাত্র।

জ্ঞানী—জ্ঞানমার্গী সেই নিয়ত কর্ম, যজ্ঞের প্রক্রিয়া-বিশেষ উত্তমরূপে অবগত হয়ে, নিজের ক্ষমতা বিবেচনা করে তাতে প্রবৃত্ত হন। তাঁর লাভ-লোকসানের দায়িত্ব তাঁর নিজের উপরই থাকে। তাতেই দৃষ্টি নিবন্ধ করে চলেন।

যোগী—নিষ্কাম কর্মযোগী ইষ্টের উপর নির্ভর করে, পূর্ণসমর্পণের সঙ্গে সেই নিয়ত কর্ম ‘যোগসাধনা’তে প্রবৃত্ত হন। তাঁর যোগক্ষেমের দায়িত্ব স্বয়ং ভগবান् এবং যোগেশ্বর বহন করেন। পতনের পরিস্থিতি এলেও তাঁর পতনের ভয় নেই, কারণ যে পরমতত্ত্ব লাভের তিনি ইচ্ছুক, সেই পরমতত্ত্ব তাঁর সব ভারবহন করেন।

তপস্বী নিজেকে যোগযুক্ত করবার জন্য প্রযত্নশীল। কর্মী শুধু কর্ম জেনেই এতে প্রবৃত্ত। উভয়েরই পতনের সম্ভবনা অধিক; কারণ এদের মধ্যে সমর্পণের ভাব থাকে না এবং নিজের লাভ-লোকসান বুঝাবার ক্ষমতাও নেই; কিন্তু জ্ঞানী যোগের পরিস্থিতি সম্বন্ধে অবগত, নিজের সামর্থ্য বোঝেন, তাঁর সব ভার তাঁর নিজের উপরই থাকে। এবং নিষ্কাম কর্মযোগী নিজেকে ইষ্টের উপর ছেড়ে দেন, এই ভেবে যে, ইষ্টদেবই সব ভার, সব দায়িত্ব নেবেন। পরমকল্যাণের পথে উভয়েই ঠিক চলেন; কিন্তু যাঁর সবভার ইষ্ট নেন, তিনি এদের সকলের চেয়ে শ্রেষ্ঠ, কারণ প্রভু তাঁকে গ্রহণ করেছেন। তাঁর লাভ-লোকসান সবকিছু প্রভু দেখেন, সেইজন্য যোগী শ্রেষ্ঠ। সেইজন্য অর্জুন ! তুমি যোগী হও। সমর্পণের সঙ্গে যোগের আচরণ ক'র।

যোগী শ্রেষ্ঠ; কিন্তু তাঁর থেকেও শ্রেষ্ঠ তিনি, যিনি অন্তর থেকে প্রবৃত্ত হন। এই প্রসঙ্গে বলছেন—

যোগিনামপি সর্বেষাং মদ্গতেনান্তরাত্মনা ।

শ্রদ্ধাবান্ ভজতে যো মাং স মে যুক্ততমো মতঃ ॥ ৪৭ ॥

সম্পূর্ণ নিষ্কাম কর্মযোগীগণের মধ্যেও যিনি শ্রদ্ধাবিভোর হয়ে অন্তর থেকে, অন্তর্চিন্তনদ্বারা নিরস্তর আমার ভজনা করেন, সেই যোগী পরমশ্রেষ্ঠ, এটা আমার অভিমত। ভজন আড়ম্বর অথবা প্রদর্শন নয়। আড়ম্বর অথবা প্রদর্শনে সমাজ অনুকূল হতে পারে; কিন্তু প্রভু প্রতিকূল হয়ে যান। ভজন অত্যন্ত গোপনীয়ভাবে অনুষ্ঠিত হয় এবং তা’ অন্তঃকরণ থেকেই হয়। এর উ�্থান-পতন অন্তঃকরণের উপর নির্ভর করে।

## নিষ্কর্ষ –

বর্তমান অধ্যায়ের প্রারম্ভে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, ফলের আশা-ত্যাগ করে যিনি ‘কার্যম् কর্ম’ অর্থাৎ করণীয় প্রক্রিয়া-বিশেষের আচরণ করেন, তিনিই সন্ধ্যাসী এবং সেই কর্মের কর্তা বাস্তবিক যোগী। সকলক্রিয়া ত্যাগী অথবা অগ্রিত্যাগী যোগী অথবা সন্ধ্যাসী হন না। সংকল্প-ত্যাগ না করলে কোন পুরুষ যোগী অথবা সন্ধ্যাসী হতে পারেন না। ‘আমি সকল করি না’ বললেই সংকল্প-ত্যাগ হয় না। যিনি যোগে আরুদ্ধ হতে চান, তাঁকে সর্বদা ‘কার্যম্ কর্ম’-এর আচরণে তৎপর থাকা উচিত। এই কর্মে অনবরত নিযুক্ত থাকলেই একদিন যোগী যোগারুদ্ধ হন এবং তখনই সর্বসংকল্পের অভাব হয়, এর পূর্বে নয়। সর্বসংকল্পের অভাবই সন্ধ্যাস।

যোগেশ্বর পুনরায় বলেছেন যে, আত্মা অধোগতিতে যায় এবং তার উদ্ধারও হয়। যিনি ইন্দ্রিয়সমূহ এবং মন জয় করেছেন, তাঁর আত্মা তাঁর সঙ্গে বন্ধুর মত ব্যবহার করে এবং পরমকল্যাণকর হয়। যিনি জয় করেননি, তাঁর আত্মা তাঁরজন্য শক্ত হয়ে শক্রতা করে, যাতনার কারণ হয়ে দাঁড়ায়। অতএব মানুষের উচিত যাতে আত্মা অধোগতিতে না যায় তার চেষ্টা করা, উদ্ধারের জন্য কর্ম করা উচিত।

যোগেশ্বর ভগবৎ প্রাপ্তযোগীর স্থিতি স্পষ্ট করলেন। ‘যজ্ঞস্থান’, উপবেশন করবার আসন ও উপবেশনের নিয়ম সম্বন্ধে তিনি বললেন যে, স্থান যেন নির্জন ও পরিত্র হয়। বস্ত্র, মৃগচর্ম অথবা কুশাসনের মধ্যে যে কোন একটা হওয়া উচিত। কর্মের অনুরূপ চেষ্টা, যুক্তাহার-বিহার, নিদ্রা-জাগরণের সংযমের উপর তিনি জোর দিলেন। যোগীর নিরঞ্জন চিন্তের উপমা তিনি বায়ুশূণ্য স্থানের অকম্পিত প্রদীপ-শিখার সঙ্গে দিলেন। এবং এই প্রকার নিরঞ্জন চিন্তায় যখন বিলীন হয়ে যায়, তখন তিনিই যোগের পরাকার্ষা অর্থাৎ অসীম আনন্দ লাভ করেন। সংসারের সংযোগ-বিয়োগ শূণ্য অনন্তসুখকে মোক্ষ বলে। যোগের অর্থ হ'ল তার সঙ্গে মিলন। যিনি এর সঙ্গে একীভূত হন, তিনি সমদর্শী হন। নিজের আত্মা যেরূপ, সেইরূপ সকলের আত্মাকে দেখেন। তিনি পরম পরাকার্ষারূপ শান্তি প্রাপ্তি হন। অতএব যোগ আবশ্যিক। মন যেখানেই যাক, সেখান থেকেই আকর্ষণ করে বার বার একে নিরঞ্জন করবার প্রয়ত্ন করা উচিত। শ্রীকৃষ্ণ স্বীকার করলেন যে মনকে বশীভূত করা কঠিন, কিন্তু একে বশীভূত করা সম্ভব। মন অভ্যাস ও বৈরাগ্যদ্বারা বশীভূত হয়। শিথিল প্রযত্নশীল

ব্যক্তিও বহুজনের অভ্যাসের পর সেখানেই পৌঁছান, যাকে পরমগতি অথবা পরমধাম বলে। তপস্থীগণ, জ্ঞানমার্গীগণ এবং কেবল কৰ্মীগণ অপেক্ষা যোগী শ্ৰেষ্ঠ। সেইজন্য অৰ্জুন! তুমি যোগী হও। সমৰ্পণের সঙ্গে অন্তর থেকে যোগের আচরণ কৰ। প্রস্তুত অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ প্রমুখরূপে যোগ-প্রাপ্তিৰ জন্য অভ্যাসের উপর জোৱ দিলেন। অতএব—

ওঁ তৎসদিতি শ্ৰীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্ৰহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণার্জুন সম্বাদে ‘অভ্যাসযোগে’ নাম ষষ্ঠোহথ্যায়ঃ ॥ ৬ ॥

এইরূপ শ্ৰীমদ্ভগবদ্গীতারূপী উপনিষদ্ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ ও অৰ্জুনের সংবাদে ‘অভ্যাসযোগ’ নামক ষষ্ঠ অধ্যায় পূৰ্ণ হল।

ইতি শ্ৰীমৎপুরমহৎস পুরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে  
শ্ৰীমদ্ভগবদ্গীতায়াঃ ‘যথাৰ্থ গীতা’ভাষ্যে ‘অভ্যাসযোগে’ নাম ষষ্ঠোহথ্যায়ঃ ॥ ৬ ॥

এই প্রকার শ্ৰীমৎপুরমহৎস পুরমানন্দজীৰ শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত  
‘শ্ৰীমদ্ভগবদ্গীতা’ৰ ভাষ্য ‘যথাৰ্থ গীতা’তে ‘অভ্যাস যোগ’ নামক ষষ্ঠম অধ্যায় সমাপ্ত হল।

॥ হরিঃ ওঁ তৎসৎ ॥

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মানে নমঃ ।।

## ।। অথ সপ্তমোহধ্যায়ঃ ।।

পূর্ব অধ্যায়গুলিতে গীতার সকল প্রমুখ প্রশ্নের প্রায় সমাধান হয়ে গেছে। নিষ্কাম কর্মযোগ, জ্ঞানযোগ, কর্ম এবং যজ্ঞের স্বরূপ এবং তার বিধি, যোগের বাস্তবিক স্বরূপ এবং তার পরিণাম এবং অবতার, বর্ণসংক্র, সনাতন, আত্মস্থিত মহাপুরুষেরও লোকহিতার্থে কর্ম করবার উপর জোর, যুদ্ধ ইত্যাদির উপর বিশদ চর্চা করা হয়েছে। পরের অধ্যায়গুলিতে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ এই প্রশ্নগুলিরই সঙ্গে সম্বন্ধিত বহু পূরক প্রশ্নের উত্থাপন করেছেন, যেগুলির সমাধান এবং অনুষ্ঠান আরাধনাতে সহায়ক সিদ্ধ হবে।

ষষ্ঠ অধ্যায়ের অন্তিম শ্লোকে যোগেশ্বর এই বলে প্রশ্নের স্বয়ং বীজারোপণ করেছেন যে, ‘মদ্গতেনান্তরাত্মনা’ – আমাতে উত্তমরূপে স্থিত অন্তকরণযুক্ত যোগী অতিশয় শ্রেষ্ঠ, এটা আমার অভিমত। পরমাত্মায় উত্তমরূপে স্থিতি অবস্থা কি? অনেক যোগী পরমাত্মাকে লাভ করেন ঠিক, কিন্তু তা সত্ত্বেও কোথাও কোন অপূর্ণতা তাঁরা অনুভব করেন। এরূপ অবস্থা লাভ কখন হয়, যখন লেশমাত্রও ত্রুটি থাকে না? সম্পূর্ণভাবে কখন পরমাত্মাকে জানা যায়? এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন –

শ্রীভগবানুবাচ

ময্যাসক্তমনাঃ পার্থ যোগং যুঞ্জন্মাত্রাশ্রয়ঃ।

অসংশয়ং সমগ্রাং মাং যথা জ্ঞাস্যসি তচ্ছু ॥ ১ ॥

পার্থ! তুমি আমাতে আসক্ত মনযুক্ত, বাহ্য নয় বরং ‘মদাশ্রয়ঃ’ - অর্থাৎ মৎপরায়ণ হয়ে, যোগে সংযুক্ত (ত্যাগ করে নয়) আমাকে নিঃসংশয়ে যেরূপে জানতে পারবে, তা শ্রবণ কর। যা জানবার পর লেশমাত্রও সংশয় থাকবে না। বিভূতিসকলকে সমগ্রভাবে জানবার উপর পুনরায় জোর দিলেন –

জ্ঞানং তেহহং সবিজ্ঞানমিদং বক্ষ্যাম্যশেষতঃ ।

যজ্ঞাত্মা নেহ ভুয়োহন্যজ্ঞাতব্যমবশিষ্যতে ॥ ২ ॥

আমি তোমাকে এই বিজ্ঞানসম্মত জ্ঞানের সম্পূর্ণতা সম্পর্কে বলব। যজ্ঞ সমাপনের পর যজ্ঞ থেকে যে অমৃততত্ত্বের সৃষ্টি হয়, সেই অমৃততত্ত্বের প্রাপ্তির সঙ্গে প্রাপ্ত অনুভবকে জ্ঞান বলে। পরমতত্ত্ব পরমাত্মাকে প্রত্যক্ষভাবে জানাই জ্ঞান। মহাপুরুষ একসঙ্গে সর্বত্র কার্য করবার যে ক্ষমতা লাভ করেন, তা' বিজ্ঞান। তাহলে সেই প্রভু একসঙ্গে সকলের হাদয়ে কিভাবে কার্য করেন? কিভাবে নিয়ন্ত্রণ, করে প্রকৃতির দ্বন্দ্ব থেকে উদ্বার করে স্বরূপে পৌঁছিয়ে দেন? তাঁর এই কার্যপ্রণালীর নাম বিজ্ঞান। এই বিজ্ঞানসম্মত জ্ঞানের সম্পূর্ণতা সম্পর্কে বলব, যা জানবার পর (শুনে নয়) সংসারে আর কিছু জানা বাকী থাকবে না। তাঁকে জানে এরূপ লোকের সংখ্যা খুবই কম—

মনুষ্যাণাং সহস্রে কশ্চিদ্যততি সিদ্ধয়ে ।

যততামপি সিদ্ধানাং কশ্চিত্যাং বেত্তি তত্ত্বতঃ ॥ ৩ ॥

হাজার হাজার মানুষের মধ্যে কদাচিং কেউ আমার প্রাপ্তির জন্য প্রযত্নশীল হন এবং এই প্রযত্নশীল যোগীগণের মধ্যেও কোন বিরল পুরুষই আমাকে তত্ত্বের (সাক্ষাৎকারের) মাধ্যমে জেনে থাকেন। এই সমগ্র তত্ত্বকে জানা যাবে কিরূপে? একস্থানে পিণ্ডরূপে বিদ্যমান অথবা সর্বত্রব্যাপ্ত? এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

ভূমিরাপোহনলো বায়ুঃ খৎ মনো বুদ্ধিরেব চ ।

অহক্ষার ইতীয়ং মে ভিন্না প্রকৃতিরষ্ঠা ॥ ৪ ॥

অর্জুন! পৃথিবী, জল, অগ্নি, বায়ু, আকাশ, মন, বুদ্ধি এবং অহক্ষার-এই আটভাগে আমার প্রকৃতি বিভক্ত। এটাই অষ্টধা মূল প্রকৃতি।

অপরেয়মিতস্তন্যাং প্রকৃতিং বিদ্ধি মে পরাম্ ।

জীবভূতাং মহাবাহো যয়েদং ধার্যতে জগৎ ॥ ৫ ॥

‘ইয়ম’ অর্থাৎ এই আট প্রকারের আমার অপরা প্রকৃতি অর্থাৎ জড় প্রকৃতি। মহাবাহু অর্জুন! যেটা এর থেকে ভিন্ন সেটা আমার জীবনপ ‘পরা’ অর্থাৎ চৈতন্য প্রকৃতি জানবে, যে শক্তি সারা জগৎ ধারণ করে আছে, সে হল জীবাত্মা। প্রকৃতির সঙ্গে সমন্বয় থাকায় এও প্রকৃতি।

**এতদ্যোনীনি ভূতানি সর্বাণীত্যপথারয়।**

অহং কৃত্মস্য জগতঃ প্রভবঃ প্রলয়স্তথা ॥ ৬ ॥

অর্জুন! এমন জান যে সমস্ত ভূত ‘এতদ্যোনীনি’- এই মহাপ্রকৃতি, এই দুই প্রকৃতি পরা ও অপরা থেকেই উৎপন্ন হয়। এই দুটিই হল একমাত্র যোনি। আমি সমগ্র জগতের উৎপত্তি এবং প্রলয়নপ অর্থাৎ মূলকারণ। জগতের উৎপত্তি আমার থেকে হয় এবং (প্রলয়) বিলয়ও আমাতেই হয়। প্রকৃতি যতক্ষণ বিদ্যমান ততক্ষণ আমিই তার উৎপত্তি এবং যখন কোন মহাপুরুষ প্রকৃতির উর্ধ্বে চলে যান, তখন মহাপ্রলয়ও আমি, যা’ অনুভবে ধরা পড়ে।

সৃষ্টির উৎপত্তি এবং প্রলয়ের প্রশ্নকে মানব সমাজ কৌতুহলের সঙ্গে দেখেছে। বিশ্বের বহুশাস্ত্রে একে কোন না কোন ভাবে বুঝাবার প্রয়াস চলে আসছে। কেউ বলে—প্রলয়ে সংসার মজ্জমান হয়, তো কারও মত অনুসারে সূর্য পৃথিবীর এত কাছে চলে আসে যে পৃথিবী জ্বলে শেষ হয়ে যায়। কেউ একেই প্রলয় (কয়ামত) বলে, যে এই দিন সকলের নির্ণয় সুনান হয়, তো কেউ নিত্য প্রলয়, নৈমিত্তিক প্রলয়ের গণনাতে ব্যস্ত আছে; কিন্তু যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে প্রকৃতি অনাদি, পরিবর্তন হয়েই চলেছে; কিন্তু কখনও ধ্বংসপ্রাপ্ত হয়নি।

ভারতীয় ধর্মগ্রন্থের অনুসারে মনু প্রলয় দেখেছিলেন। তার সঙ্গে এগারোজন ঋষি মৎস্য শৃঙ্গে নৌকা বেঁধে হিমালয়ের এক উত্তুঙ্গ শিখরে আশ্রয় নিয়েছিলেন। লীলাকার শ্রীকৃষ্ণের উপদেশ এবং জীবনের সঙ্গে সমন্বিত তাঁর সমকালীন শাস্ত্র ভাগবতে মৃকঞ্জু মুনির পুত্র মার্কণ্ডেয়জী প্রলয়ের যে দৃশ্য সচক্ষে দেখেছিলেন তার বর্ণনা নিম্নে প্রস্তুত করা হয়েছে। তিনি হিমালয়ের উত্তরে পুষ্পভদ্রা নদীর তীরে বাস করতেন।

ভাগবতের দ্বাদশ স্কন্দের অষ্টম ও নবম অধ্যায়ের অনুসারে শৌনকাদি ঋষিগণ সূতজীকে জিজ্ঞাসা করেছিলেন যে, মার্কণ্ডেয় ঋষি মহাপ্রলয়ের সময় বটপাতার

উপরে ভগবান् বালমুকন্দের দর্শন করেছিলেন; কিন্তু তিনি আমাদেরই বৎশের ছিলেন, আমাদের থেকে কিছুসময় পূর্বে তাঁর জন্ম হয়েছিল। তাঁর জন্মের পর কোন প্রলয় ঘটেনি এবং সৃষ্টিও লোপ পায়নি। সবকিছু আগেকার মতই আছে, তাহলে তিনি কিরণ প্রলয় দেখেছিলেন?

সৃতজী বলছেন যে, মার্কণ্ডেয় ঋষির প্রার্থনায় প্রসন্ন হয়ে নরনারায়ণ তাঁকে দর্শন দিয়েছিলেন। তখন মার্কণ্ডেয় ঋষি বলেছিলেন যে, আমি আপনার মায়া কি তা দেখতে চাই, যার দ্বারা প্রেরিত হয়ে এই আত্মা অনন্ত যোনিতে ভ্রমণ করে। ভগবান্ স্মীকার করেছিলেন তাঁর প্রার্থনা। একদিন যখন মুনি নিজের আশ্রমে ভগবানের চিন্তনে তন্ময় ছিলেন তখন তিনি দেখতে পেয়েছিলেন যে, চারদিক থেকে সমুদ্র স্ফীত হয়ে উত্তালরূপে তাঁর দিকেই ছুটে আসছে। তাতে কুমীর লাফাচ্ছে। তাদের দ্বারা আক্রান্ত হয়ে ঋষি মার্কণ্ডেয় বাঁচবার জন্য দিক্খান্ত হয়ে ছুটছেন। আকাশ, সূর্য, পৃথিবী, চন্দ্রমা, স্বর্গ, জ্যোতির্মণ্ডল সবকিছু সেই সমুদ্রে প্লাবিত হচ্ছে। এমন সময় মার্কণ্ডেয় ঋষি এক বটবৃক্ষ এবং তার পাতায় এক শিশুকে দেখতে পেয়েছিলেন, শ্বাসের সঙ্গে তিনি শিশুর উদরে প্রবেশ করেছিলেন এবং নিজের আশ্রম, সূর্যমণ্ডল এবং সৃষ্টি জীবন্ত দেখতে পেয়েছিলেন এবং নিষ্পাসের সঙ্গে পুনরায় শিশুর উদর থেকে বেরিয়ে এসে চোখ খোলার পর মার্কণ্ডেয় ঋষি নিজেকে সেই আশ্রমের মধ্যেই নিজের আসনে উপবিষ্ট অবস্থায় দেখতে পেয়েছিলেন।

স্পষ্ট হল যে কোটি বছর ভজনের পর মুনি ঈশ্বরীয় দৃশ্য নিজের হাদয়ে, অনুভবে দেখেছিলেন। বাইরে যেমনটি ছিল তেমনিই রইল। অতএব যোগীর হাদয়েই প্রলয়, ঈশ্বর লাভ করবার উপায়। ভজন শেষ হয়ে গেলে যোগীর হাদয়ে সংসারের প্রবাহ বিনষ্ট হয়ে কেবলমাত্র পরমাত্মার চিন্তাকু থেকে যায়। এই হল প্রলয়। বাইরে প্রলয় হয় না। শরীর থাকাকালীনই অদ্বৈত অবস্থার অনিবর্চনীয় স্থিতিকে মহাপ্রলয় বলে। এটা ত্রিয়াত্মক। কেবল বুদ্ধিমারা যারা নির্ণয় করে, তারা কেবল ভ্রম সৃষ্টি করে। তাতে আমি হই অথবা আপনি। এই প্রসঙ্গে আরও দেখুন—

মন্ত্রঃ পরতরং নান্যৎ কিঞ্চিদন্তি ধনঞ্জয়।

ময়ি সর্বমিদং প্রোতং সুত্রে মণিগণা ইব।। ৭।।

ধনঞ্জয় ! আমা-ছাড়া কিঞ্চিন্মাত্র অন্য বস্তু নেই। যেমন সুতোয় মণিসমূহ গাঁথা থাকে, তেমনি সমগ্র জগৎ আমাতে অনুসৃত। তা' অবিচ্ছিন্ন কখন জানা যায় ? যখন (বর্তমান অধ্যায়ের প্রথম শ্লোক অনুসারে) অনন্য আসত্তি (ভক্তি) দ্বারা আমার প্রতি নিষ্ঠাবান् হয়ে যোগে সেইরূপ প্রবৃত্ত হবেন। এছাড়া সন্তুর নয়। যোগে প্রবৃত্ত হওয়া আবশ্যক।

রসোহহমন্ত্র কৌন্তেয় প্রভাস্মি শশিসূর্যমোঃ।

প্রণবঃ সর্ববেদেযু শব্দঃ খে পৌরূষং ন্যুঃ॥ ৮॥

কৌন্তেয় ! জলে আমি রস, চন্দ্রে ও সূর্যে প্রকাশ, চারি বেদে উঁকার। (ও + অহং + কার) স্বয়ং আকার। আকাশে শব্দ এবং মনুষ্য মধ্যে পুরুষত্ব রাপে বিরাজ করি। এবং আমি—

পুণ্যে গন্ধঃ পৃথিব্যাং চ তেজশ্চাস্মি বিভাবসৌ।

জীবনং সর্বভূতেযু তপশ্চাস্মি তপস্মিয়॥ ৯॥

আমি পৃথিবীতে পবিত্র গন্ধ এবং অগ্নিতে দীপ্তি। সর্বভূতে জীবন ও তপস্মিগণের মধ্যে তপঃশক্রিয়ত্বে বিরাজ করি।

বীজং মাং সর্বভূতানাং বিদ্ধি পার্থ সনাতনম্।

বুদ্ধিবুদ্ধিমতামস্মি তেজস্তেজস্মিনামহম্॥ ১০॥

পার্থ ! তুমি আমাকে সকলভূতের সনাতন কারণ অর্থাৎ বীজ বলে জানবে। আমি বুদ্ধিমানগণের বুদ্ধি এবং তেজস্মিগণের তেজঃ স্বরূপ। এই ক্রমে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

বলং বলবত্তাং চাহং কামরাগবিবর্জিতম্।

ধর্মাবিরংদ্বো ভূতেযু কামোহস্মি ভরতর্তৰ্ত্বে॥ ১১॥

হে ভরতশ্রেষ্ঠ অর্জুন ! বলবানগণের কামনা ও আসক্তিশূণ্য বল আমি। সংসারে সকলেই শক্তিশালী হওয়ার চেষ্টা করে। কেউ ডন-বৈঠক লাগায়, কেউ পরমাণু একত্র করে; কিন্তু না, শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, কাম ও রাগের উত্থের্ব যে বল,

সেই বল আমি। তাই বাস্তবিক বল। সর্বভূতে ধর্মের অনুকূল কামনা আমি। পরব্রহ্ম পরমাত্মাই একমাত্র ধর্ম, যিনি সকলকে ধারণ করে স্থিত। শাশ্঵ত আত্মাই ধর্ম, তার অবিরোধী কামনা আমি। পূর্বেও শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, অর্জুন! আমাকে লাভ করবার ইচ্ছা কর। সমস্ত কামনাগুলি বর্জিত; কিন্তু পরমাত্মার প্রাপ্তির কামনা আবশ্যিক, অন্যথা আপনি সাধন কর্মে প্রবৃত্ত হবেন না। এরূপ কামনাও আমারই কৃপা।

যে চৈব সান্ত্বিক ভাবা রাজসান্তামসাশ্চ যে।

মন্ত্র এবেতি তান্ত্বিদি ন ত্বহং ত্যে তে ময়ি॥ ১২॥

সান্ত্বিক, রাজসিক ও তামসিক গুণ থেকে উৎপন্ন আরও যে সমস্ত ভাব আছে, তা তুমি আমা থেকেই উৎপন্ন জানবে। পরন্তৰ বাস্তবে তাদের মধ্যে আমি এবং তারা আমাতে নেই। কারণ আমি তাদের প্রতি অনুরক্ত নই এবং তারাও আমাতে স্থিত নয়; কারণ আমার কর্মে স্পৃহা নেই। আমি নির্লিপ্ত, এই ভাবগুলি থেকে আমার কিছুই লাভ করার নেই, সেইজন্য আমাতে প্রবেশ করতে পারে না। এরূপ হওয়া  
সত্ত্বেও—

যেরূপ আত্মার উপস্থিতিতেই দেহের ক্ষুধা-তৃষ্ণা অনুভব হয়, আত্মার অন্ন অথবা জলে কোন প্রয়োজন নেই, সেইরূপ প্রকৃতি পরমাত্মার উপস্থিতিতেই নিজের কাজ করতে সমর্থ হয়। পরমাত্মা প্রকৃতির গুণ এবং কার্য থেকে নির্লিপ্ত থাকে।

ত্রিভিণ্ডগময়েভৰ্বৈরেভিঃ সর্বমিদং জগৎ।

মোহিতং নাভিজানাতি মামেভ্যঃ পরমব্যয়ম্॥ ১৩॥

সান্ত্বিক, রাজসিক ও তামসিক- এই ত্রিগুণের কার্যরূপ ভাবের দ্বারা এই সম্পূর্ণ জগৎ মোহমুঞ্চ হয়ে আছে। এই কারণে লোকে ত্রিগুণাতীত, অবিনাশীরূপ আমাকে তত্ত্বতঃ জানতে পারে না। আমি ত্রিগুণাতীত অর্থাৎ যতক্ষণ এই ত্রিগুণের যৎসামান্য আবরণও বিদ্যমান, ততক্ষণ কেউ আত্মাকে জানতে পারে না। তার পথ চলা বাকী, এখনও সে পথিক। এবং—

দৈবী হেয়া গুণময়ী মম মায়া দুরত্যয়া।

মামেব যে প্রপদ্যন্তে মায়ামেতাং তরাণ্তি তে॥ ১৪॥

এই তিনগুণের সঙ্গে সংযুক্ত আমার অদ্ভুত মায়া দুষ্টর; কিন্তু যে পুরুষ নিরস্তর আমারই ভজনা করেন, তারা এই মায়া উত্তীর্ণ হতে পারেন। এটা দৈবী মায়া, পরস্ত ধূপ-ধূনা দিয়ে এর পূজা আরস্ত করে দেবেন না যেন। উত্তীর্ণ হতে হবে।

ন মাং দুষ্কৃতিনো মৃচাঃ প্রপদ্যন্তে নরাধমাঃ।

মায়য়াপহতজ্ঞনা আসুরং ভাবমাণ্ডিতাঃ ॥ ১৫ ॥

যিনি নিরস্তর আমার ভজনা করেন, তিনি জানেন। তবুও লোকে ভজনা করে না। মায়াদ্বারা যাদের জ্ঞান অপহৃত, যারা আসুর স্বভাব আশ্রয় করেছে, মনুষ্যগণের মধ্যে নিকৃষ্ট, কাম-ক্রেধাদি দুষ্কর্মকারী যারা, ঐ মৃচ্যব্যক্তিগণ আমার ভজনা করে না। তাহলে কে ভজনা করে?—

চতুর্বিংশ্ব ভজন্তে মাং জনাঃ সুকৃতিনোহর্জুন।

আর্তো জিজ্ঞাসুরথার্থী জ্ঞনী চ ভরতর্যত ॥ ১৬ ॥

হে ভরতশ্রেষ্ঠ অর্জুন! ‘সুকৃতিনঃ’- উত্তম অর্থাং নিয়ত কর্মের (যার পরিণাম স্বরূপ শ্রেয়লাভ হয়, সেই কর্মের) যিনি আচরণ করেন, ‘অর্থার্থী’ অর্থাং সকাম, ‘আর্তঃ’ অর্থাং দুঃখের হাত থেকে মুক্তি পাওয়ার জন্য ইচ্ছুক, ‘জিজ্ঞাসুঃ’ অর্থাং প্রত্যক্ষরূপে জানতে ইচ্ছুক এবং ‘জ্ঞনী’ অর্থাং যিনি প্রবেশের স্থিতিযুক্ত- এই চারপ্রকার ভক্তিগণ আমার ভজনা করেন।

যার দ্বারা আমাদের দেহ অথবা অন্য যাবতীয় সম্বন্ধের পূরণ হয় তা হল ‘অর্থ’। সেইজন্য অর্থ, কামনা সবকিছু আগে ভগবানের দ্বারা পূর্ণ হয়। শ্রীকৃষ্ণ বলছেন, আমিই পূরণ করি; কিন্তু এটুকুই বাস্তবিক অর্থ নয়। আত্মিক সম্পত্তি স্থির সম্পত্তি, একেই অর্থ বলে।

সাংসারিক অর্থের পূর্তি করতে করতে ভগবান বাস্তবিক অর্থ আত্মিক সম্পত্তির দিকে এগিয়ে দেন; কারণ তিনি জানেন যে, এইটুকুতেই আমার ভক্ত সুখী হবে না। সেইজন্য তিনি আত্মিক সম্পত্তি ও তাকে প্রদান করতে থাকেন। ‘লোকলাঙ্ঘ পরলোক নিবাহ’- অর্থাং এই লোকে লাভ এবং পরলোকে নির্বাহ, এই দু-ই ভগবানের বস্ত। নিজের ভক্তকে তিনি রিক্ত রাখেন না।

‘আর্তঃ’- যে দুঃখী, ‘জিজ্ঞাসৃঃ’- সমগ্ররূপে জানবার ইচ্ছুক, জিজ্ঞাসু আমার ভজনা করেন। সাধনার পরিপক্ষ অবস্থাতে দিগ্দর্শনের (প্রত্যক্ষ দর্শন) অবস্থাযুক্ত জ্ঞানীও আমার ভজনা করেন। এরপ চার স্তরের ভক্ত আমার ভজনা করেন, যাদের মধ্যে জ্ঞানী শ্রেষ্ঠ অর্থাৎ জ্ঞানীও ভক্তই। এদের মধ্যেও—

তেষাং জ্ঞানী নিত্যযুক্ত একভক্তিবিশিষ্যতে ।

প্রিয়ো হি জ্ঞানিনোহত্যর্থমহং স চ মম প্রিয়ঃ ॥ ১৭ ॥

অর্জুন ! এই চারপ্রকার ভক্তের মধ্যেও নিত্য আমাতে একীভাবে স্থিত, অনন্য ভক্তিযুক্ত জ্ঞানী বিশিষ্ট; কারণ সাক্ষাৎকার করে যিনি আমাকে জানেন এইরূপ জ্ঞানীর আমি অত্যন্ত প্রিয় এবং ঐ জ্ঞানীও আমার অতিপ্রিয়। ঐ জ্ঞানী মৎস্বরূপ—

উদারাঃ সর্ব এবিতে জ্ঞানী ভাস্তুব মে মতম্ ।

আস্থিতঃ স হি যুক্তাঞ্চ মামেবানুস্মারণ গতিম্ ॥ ১৮ ॥

যদ্যপি এই চার প্রকারের ভক্তই উদার (কি উদারতা করলেন ? আপনি ভক্তি করলে ভগবানের কি কিছু লাভ হয় ? ভগবানের কি কিছুর অভাব আছে, যা' আপনি পূর্ণ করে দিয়েছেন ? না, প্রকৃত পক্ষে তিনিই উদার, যিনি নিজের আত্মাকে অধোগতিতে নিয়ে যান না, যিনি তাকে উদ্বার করবার জন্য এগিয়ে এসেছেন। এইরূপে এঁরা সকলেই উদার।) পরন্তৰ জ্ঞানী সাক্ষাৎ আমার স্বরূপ, এরূপ আমার অভিমত; কারণ সেই স্থিরবুদ্ধি জ্ঞানী ভক্ত সর্বোত্তম গতিস্বরূপ আমাতেই স্থিত। অর্থাৎ তিনি আমিই, তিনি আমাতেই স্থিত। আমাতে এবং তাঁতে কোন ভেদ নেই। এই প্রসঙ্গে পুনরায় জোর দিলেন—

বহুনাং জন্মানামন্তে জ্ঞানবান্মাং প্রপদ্যতে ।

বাসুদেবঃ সর্বমিতি স মহাঞ্চা সুদুর্লভঃ ॥ ১৯ ॥

অভ্যাস করতে করতে বহু জন্মের পর শেষ জন্মে, প্রাপ্তির জন্মে সাক্ষাৎকার করে ‘সমুদায় জীবজগৎ বাসুদেব’- এইরূপ জেনে জ্ঞানী আমার ভজনা করেন। এইরূপ মহাপুরূষ দুর্লভ। তিনি কোন বাসুদেবের প্রতিমা স্থাপন করেন না বরং অন্তরে যে পরমঙ্গশ্চর অধিষ্ঠিত তা অনুভব করেন। ঐ জ্ঞানী মহাপুরূষকে শ্রীকৃষ্ণ

তত্ত্বদর্শীও বলেছেন। এই মহাপুরূষদ্বারা সমাজের কল্যাণ সংভব। এইরূপ প্রত্যক্ষ তত্ত্বদর্শী মহাপুরূষ শ্রীকৃষ্ণের বাণীতে অতি দুর্লভ।

যখন শ্রেয় এবং প্রেয় (মুক্তি এবং ভোগ) ভগবানের কাছ থেকেই লাভ হয়, তখন সকলেরই একমাত্র ভগবানের ভজনা করা উচিত। তবুও লোকে তাঁর ভজন করে না। কেন? শ্রীকৃষ্ণেরই বাণীতে—

কামৈষ্টেষ্টেহাতজ্জনাঃ প্রপদ্যস্তেহন্যদেবতাঃ।

তৎ তৎ নিয়মমাস্ত্বায় প্রকৃত্যা নিয়তাঃ স্বয়া ॥ ২০ ॥

“সেই তত্ত্বদর্শী মহাত্মা অথবা পরমাত্মাই সবকিছু”- এইরূপ লোকে জানতে পারে না, কারণ ভোগের কামনাদ্বারা তাদের বিবেক অভিভূত হয়েছে, সেইজন্য তারা স্বীয় প্রকৃতি অর্থাৎ জন্ম-জন্মান্তরের অর্জিত সংস্কারের স্বত্ত্বাবের দ্বারা প্রেরিত হয়ে ‘আমি পরমাত্মা’ থেকে ভিন্ন অন্য দেবতাগনের এবং তাঁদের জন্য প্রচলিত নিয়মের আশ্রয় নেয়। এখানে ‘অন্য দেবতা’র প্রসঙ্গ প্রথমবার এসেছে।

যো যো যাং যাং তনুং ভন্তঃ শ্রদ্ধার্চিত্বমিচ্ছতি।

তস্য তস্যাচলাং শ্রদ্ধাং তামেব বিদ্ধাম্যহম্ ॥ ২১ ॥

যে যে সকামীভন্ত যে যে দেবতার স্বরূপ শ্রদ্ধাপূর্বক অর্চনা করতে ইচ্ছুক, আমি তাদের শ্রদ্ধা সেই সেই দেবতার প্রতি স্থির করি। আমি স্থির করি, কারণ যদি দেবতার অস্তিত্ব থাকত, তাহলে সেই দেবতাই শ্রদ্ধা স্থির করতেন।

স তয়া শ্রদ্ধয়া যুক্তস্যারাধনমীহতে।

লভতে চ ততঃ কামান্নায়েব বিহিতান্তি তান্তি ॥ ২২ ॥

সেই পুরুষ শ্রদ্ধাযুক্ত হয়ে সেই দেব-বিগ্রহের পূজাতে তৎপর হন এবং সেই দেবতার মাধ্যমে আমারই দ্বারা বিহিত কাম্য বস্তু অবশ্য লাভ করেন। ভোগ প্রদান করেন কে? আমি প্রদান করি। তাঁর শ্রদ্ধার পরিণাম হ'ল ভোগ, তা কোন দেবতার কৃপা নয়। কিন্তু তিনি ফললাভ তো করেন, তাহলে ক্ষতি কি? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

অন্তবন্তু ফলং ত্যোং তত্ত্বত্যন্নমেধসাম্।

দেবান্দেবযজ্ঞো যান্তি মন্ত্রত্বা যান্তি মামপি ॥ ২৩ ॥

পরস্ত অঞ্জবুদ্ধি ব্যক্তিগণের সেই ফল অস্থায়ী। আজ ফল আছে, তা উপভোগ করবার পর শেষ হয়ে যাবে, সেইজন্য নাশবান्। দেবোপাসকগণ দেবতাগণকে প্রাপ্ত হন অর্থাৎ দেবতাও নাশবান्। দেবতা থেকে আরভ করে সম্পূর্ণ জগৎ পরিবর্তনশীল এবং মরণধর্ম। আমার ভক্ত আমাকেই লাভ করেন, যা অব্যক্ত নৈষ্ঠিকীম্ পরমশান্তি' লাভ করেন।

তৃতীয় অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, এই যজ্ঞদ্বারা তোমরা দেবতাগণের অর্থাৎ দৈবী সম্পদের উন্নতি কর। যেমন যেমন দৈবী সম্পদ উন্নত হবে, তেমন তেমন তোমাদেরও উন্নতি হবে। ক্রমশঃ উন্নতি করতে করতে পরমশ্রেষ্ঠ লাভ কর। এখানে দেবতা সেই দৈবী সম্পদের সমূহ, যাদের মাধ্যমে পরমদেব পরমাত্মার দেবত্ব অর্জন করা হয়। মোক্ষের জন্য দৈবী সম্পদের প্রয়োজন হয়, যার ছাবিশটি লক্ষণের নিরূপণ গীতার ঘষ্টাদশ অধ্যায়ে করা হয়েছে।

‘দেবতা’ হৃদয়ের অন্তরালে পরমদেব পরমাত্মার দেবত্ব অর্জন করতে সাহায্য করে যে সদ্গুণসমূহ, তাদের নাম। এটা অন্তরের বস্তু; কিন্তু কালান্তরে লোকেরা অন্তরের বস্তুকে বাইরে দেখতে শুরু করে দিয়েছে। মূর্তি গড়ে, কর্মকাণ্ডের সৃষ্টি করে, যথার্থ থেকে দূরে সরে দাঁড়িয়েছে। শ্রীকৃষ্ণ চারটি শ্লোকের মাধ্যমে এই ভাস্তি দূর করেছেন। প্রথমবার ‘অন্যান্য দেবতা’র নাম উল্লেখ করে তিনি বললেন, দেবতার অস্তিত্বই নেই। মানুষের শ্রদ্ধা যে দেবতার স্বরূপের প্রতি হয়, আমি তাদের শ্রদ্ধা সেই দেবতার প্রতিটি স্থির করি এবং ফলও প্রদান করি। সেই ফলও নাশবান্। ফল নষ্ট হয়ে যায়, দেবতা নষ্ট হয়ে যায় এবং দেবভক্ত ও বিলুপ্ত হয়ে যায়। যাঁদের বিবেক লোপ পেয়েছে, সেই মৃচ্ছগাই অন্যান্য দেবতাগণকে পূজা করেন। শ্রীকৃষ্ণ এও বলেছেন যে, অন্যান্য দেবতাগণকে পূজা করার বিধানই অযৌক্তক। (নবম অধ্যায়ের ২৩শ শ্লোকে এ বিষয়েই বর্ণনা করা হয়েছে।)

**অব্যক্তং ব্যক্তিমাপন্নং মন্যন্তে মামবুদ্ধয়ঃ।**

**পরং ভাবমজানন্তো মমাব্যয়মনুত্তমম্। ২৪।।**

যদ্যপি দেবতার অস্তিত্ব নেই, যা’ ফললাভ হয় তা’ও অস্থায়ী তথাপি প্রত্যেক ব্যক্তি আমার ভজনা করে না; কারণ বুদ্ধিহীন ব্যক্তি (পূর্বের শ্লোকে বলা হয়েছে

যে, কামনার দ্বারা যাদের জ্ঞান অভিভূত হয়েছে, তারা) আমার সর্বোন্ম, অবিনাশী এবং পরমপ্রভাব উত্তমরূপে জানে না। সেইজন্য তারা অব্যক্ত পুরুষ আমাকে ব্যক্তিভাবপ্রাণ মানুষ বলে মনে করে। অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণও মনুষ্য দেহধারী যোগী ছিলেন, যোগেশ্বর ছিলেন। যিনি স্বয়ং যোগী এবং অন্যকেও যোগ প্রদান করবার ক্ষমতা রাখেন, তাঁকে যোগেশ্বর বলা হয়। সঠিক পথে সাধনা করে ক্রমশঃ উন্নতি করতে করতে মহাপুরুষও সেই পরমভাব-এ স্থিত হন। দেহধারী হয়েও তিনি সেই অব্যক্ত স্বরূপে স্থিত হন; তা সত্ত্বেও কামনাদ্বারা অভিভূত হয়ে মন্দবুদ্ধি ব্যক্তি তাঁদের সাধারণ ব্যক্তি বলেই মনে করে। সেই মন্দবুদ্ধিব্যক্তিগণ চিন্তণ করে যে, এঁদের জন্ম তো আমাদেরই মত হয়েছে, তাহলে এঁরা ভগবান কি করে হতে পারেন? তাদের এই ধরণের বিচারের দোষ কোথায়? দৃষ্টিপাত করলে তো দেহটাই দেখা যায়। তারা মহাপুরুষের যথার্থ স্বরূপ-দর্শন করতে অসমর্থ হয় কেন? এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের কাছ থেকেই শুনুন—

নাহং প্রকাশঃ সর্বস্য যোগমায়াসমাবৃতঃ।

মুচ্যেহয়ং নাভিজানাতি লোকো মামজমব্যয়ম্। ২৫।।

সামান্য ব্যক্তির জন্য মায়া আবরণ স্বরূপ, যার দ্বারা পরমাত্মা সর্বদা আবৃত থাকেন। যোগসাধনা বুঝে এতে প্রবৃত্ত হতে হয়। তার পর যোগমায়া অর্থাৎ যোগক্রিয়াও এক আবরণস্বরূপ। যোগের অনুষ্ঠান করতে করতে এর পরাকার্ষা যোগারাত্ম হওয়ার ক্ষমতালাভ হলে, যে পরমাত্মা অস্তরে স্থিত, তাঁর দর্শন লাভ হয়। যোগেশ্বর বলছেন যে, আমি স্বীয় যোগমায়া দ্বারা আবৃত। কেবলমাত্র যোগের পরিপক্ষ অবস্থায় পৌঁছেছেন যাঁরা, তাঁরাই আমার যথার্থ স্বরূপ দর্শন করতে পারেন। আমি সকলের কাছে প্রকাশিত হইনা, সেইজন্য অজ্ঞানী ব্যক্তি অজ্ঞান (যাঁকে আর জন্মগ্রহণ করতে হবে না), অবিনাশী (যাঁর নাশ হবে না), অব্যক্ত স্বরূপ (যাঁকে পুনরায় ব্যক্ত হতে হবে না) আমাকে জানে না। অর্জুনও শ্রীকৃষ্ণক নিজের মত মানুষ মনে করেছিলেন। তার পর তিনি দৃষ্টিপ্রদান করলেন যেই, তখন অর্জুন অনুনয়-বিনয়, কাতরভাবে প্রার্থনা করতে লাগলেন। বস্তুতঃ যিনি অব্যক্ত স্থিতি লাভ করেছেন, এরপ মহাপুরুষকে চিনতে আমরা প্রায়ই অক্ষম। এর পর বললেন—

বেদাহং সমতীতানি বর্তমানানি চার্জুন।

ভবিষ্যাণি চ ভূতানি মাঃ তু বেদ ন কশচন ॥ ২৬ ॥

অর্জুন ! অতীত, বর্তমান ও ভবিষ্যৎ – এই তিনিকালের সমস্ত ভূতকেই আমি জানি; পরন্তু কেউ আমাকে জানতে পারে না । কেন জানতে পারে না ? –

ইচ্ছাদ্বেষসমুখেন দ্বন্দ্বমোহেন ভারত।

সর্বভূতানি সম্মোহং সর্গে যান্তি পরন্তপ ॥ ২৭ ॥

ভরতবংশীয় অর্জুন ! ইচ্ছা এবং দ্বেষ অর্থাৎ রাগ এবং দ্বেষাদি দ্বন্দ্বের মোহদ্বারা সংসারের সমস্ত প্রাণী অত্যন্ত মোহমুঞ্খ, সেইজন্য আমাকে জানতে পারে না । তাহলে কি কেউ জানবে না ? যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন –

যেয়াং ত্বন্তগতং পাপং জনানাং পুণ্যকর্মণাম্ ।

তে দ্বন্দ্বমোহনির্মুক্তা ভজন্তে মাঃ দৃচ্বতাঃ ॥ ২৮ ॥

পরন্তু পুণ্যকর্মা (যা সংস্তির নাশ করে, যার নাম কার্য্যম্ কর্ম, নিয়ত কর্ম, যজ্ঞের প্রক্রিয়া বলে বার বার বুবিয়েছেন, সেই কর্ম) যে সকল ভক্তগণের পাপনাশ হয়েছে, তাঁরা রাগ-দ্বেষাদি দ্বন্দ্বের মোহ থেকে উত্তমরূপে মুক্ত হয়ে, দৃচ্বতা হয়ে আমার ভজনা করেন । কেন ভজনা করেন ?

জরামরণমোক্ষায় মামাশ্রিত্য যতন্তি যে ।

তে ব্রহ্ম তদ্বিদুঃ কৃৎস্মধ্যাত্মাং কর্ম চাখিলম্ ॥ ২৯ ॥

যাঁরা জরা ও মৃত্যু থেকে মুক্তি লাভের জন্য আমাকে আশ্রয় করে প্রযত্ন করেন, তাঁরা সেই ব্রহ্ম, সমগ্র অধ্যাত্ম এবং কর্মসমূহ অবগত হন । এবং এই ক্রমে-

সাধিভূতাধিদৈবং মাঃ সাধিযজ্ঞং চ যে বিদুঃ ।

প্রয়াণকালেহপি চ মাঃ তে বিদ্যুক্তচেতসঃ ॥ ৩০ ॥

যাঁরা অধিভূত, অধিদৈব এবং অধিযজ্ঞের সঙ্গে বিদ্যমান আমাকে জানেন, সেই সকল আমাতে সমাহিতচিত্ত ব্যক্তি মৃত্যুকালেও আমাকেই জানেন, আমাতেই স্থিত হন এবং সদাই আমাকে লাভ করে থাকেন । ২৬ ও ২৭শ শ্লোকে তিনি বলেছেন

যে, আমাকে কেউ জানে না, কারণ তারা মোহমুক্ত; কিন্তু যাঁরা সেই মোহ থেকে মুক্ত হওয়ার জন্য যত্নশীল, তাঁরা (১) সম্পূর্ণ ব্রহ্ম, (২) সম্পূর্ণ অধ্যাত্ম, (৩) সম্পূর্ণ কর্ম, (৪) সম্পূর্ণ অধিভূত, (৫) সম্পূর্ণ অধিদৈব এবং (৬) সম্পূর্ণ অধিযজ্ঞসহিত আমাকে জানেন অর্থাৎ এই সমস্তের পরিগাম আমি (সদ্গুরু)। তাঁরাই আমাকে জানেন, এমন নয় যে কেউ জানে না।

**নিষ্কর্ষ –**

বর্তমান অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন যে, অনন্যভাবে আমার শরণাগত হয়ে, আমার আশ্রিত হয়ে যিনি যোগে প্রবৃত্ত হন, তিনি সমগ্ররূপে আমাকে জানেন। আমাকে জানবার জন্য শত-সহস্র ব্যক্তির মধ্যে কোন একজন ব্যক্তিই প্রযত্ন করেন এবং এঁদের মধ্যেও কোন কোন পুরুষই আমাকে জানেন। তিনি আমাকে কেবল পিণ্ডরূপে এক দেশীয় নয় বরং সর্বত্র পরিব্যাপ্ত দেখেন। অষ্টভোদয়ুক্ত আমার জড়-প্রকৃতি এবং এর অন্তরালে জীবরূপ আমার চেতন প্রকৃতি বিদ্যমান। উভয়ের সংযোগে এই সম্পূর্ণ জগৎ টিকে আছে। আমিই তেজ এবং শক্তিরূপে বিদ্যমান। রাগ এবং কামমুক্ত যে শক্তি এবং যা' ধর্মানুকূল কামনা, তা আমি। যেমন সমস্ত বিষয়-কামনা বর্জিত, কিন্তু আমার প্রাপ্তির জন্য কামনা কর। এইরূপ ইচ্ছার অভ্যন্তর হওয়া আমার কৃপা। কেবল পরমাত্মাকে লাভ করার কামনাই হ'ল ধর্মের অনুকূল কামনা।

শ্রীকৃষ্ণ বলছেন, আমি ত্রিগুণাতীত। পরম-এর স্পর্শ করে পরমভাব-এ স্থিত; কিন্তু ভোগে আসক্ত মৃচ্যজ্ঞিগণ আমার ভজনা না করে অন্য দেবতাগণের উপাসনা করে, যদ্যপি দেবতার অস্তিত্ব নেই। তথাপি পাথর, জল, গাছ যা' কিছুকে তারা পূজা করে, তাদের শ্রদ্ধা সেই বস্তুতেই আমি স্থির করি। অন্তরালে থেকে আমিই ফল প্রদান করি; কারণ সেখানে কোন দেবতা নেই, সেইজন্য তাদের কাছে কোন ভোগ্য বস্তুও নেই। লোকে আমাকে সাধারণ ব্যক্তি মনে করে আমার ভজনা করে না; কারণ আমি যোগ-প্রক্রিয়াদ্বারা আবৃত। অনুষ্ঠান করে যোগমায়ার আবরণ ভেদ করেই দেহধারী আমাকে অব্যক্তরূপে জানা সম্ভব, অন্য স্থিতিতে নয়।

আমার ভক্ত চার প্রকারের—অর্থাৎ, আর্ত, জিজ্ঞাসু এবং জ্ঞানী। চিন্তন করতে-করতে বহু জন্মের পর শেষের জন্মে প্রাপ্তিযুক্ত জ্ঞানী আমারই স্বরূপ অর্থাৎ বহু জন্ম ধরে চিন্তন করে সেই ভগবৎ স্বরূপ লাভ করা যায়। রাগ-দ্বেষে মোহাক্রান্ত

ব্যক্তি আমাকে কখনও জানতে পারে না; কিন্তু রাগ-দেষের মোহ থেকে মুক্ত হয়ে যিনি নিয়ত কর্মের (সংক্ষেপে আরাধনা বলা যেতে পারে) চিন্তন করে জরা-মৃত্যুর হাত থেকে মুক্ত হওয়ার জন্য প্রয়ত্নশীল, সেই পুরুষ সমগ্রভাবে আমাকে জানতে পারেন। তিনি সম্পূর্ণ ব্রহ্ম, সম্পূর্ণ অধ্যাত্ম, সম্পূর্ণ অধিদৈব, সম্পূর্ণ কর্ম এবং সম্পূর্ণ যজ্ঞসহিত আমাকে জানেন। তিনি আমাতে স্থিত হন এবং মৃত্যুকালেও আমাকেই জানেন অর্থাৎ পুনরায় কখনও তিনি বিস্মৃত হন না।

বর্তমান অধ্যায়ে সমগ্রভাবে পরমাত্মাকে জানার বিবেচনা করা হয়েছে অতএব—

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে ‘সমগ্রবোধঃ’ নাম সপ্তমোহৃথ্যায়ঃ ॥৭॥

এই প্রকার শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারপী উপনিষদ্ এবং ব্রহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ এবং অর্জুনের সন্মাদে ‘সমগ্রবোধ’ নামক সপ্তম অধ্যায় পূর্ণ হল।

ইতি শ্রীমৎপরমহৎস পরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ ‘যথার্থ গীতা’ ভাষ্যে ‘সমগ্রবোধঃ’ নাম সপ্তমোহৃথ্যায় ॥৭॥

এই প্রকার শ্রীমৎপরমহৎস পরমানন্দজীর শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত ‘শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা’র ভাষ্য ‘যথার্থ গীতা’তে ‘সমগ্রবোধ’ নামক সপ্তম অধ্যায় সমাপ্ত হল।

॥ হরিঃ ওঁ তৎসৎ ॥

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মনে নমঃ ॥

## ।। অথষ্টমোহধ্যায়ঃ ।।

সপ্তম অধ্যায়ের শেষে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন যে, পুণ্যকর্ম (নিয়ত কর্ম, আরাধনা) করেন যাঁরা সেই যোগীগণ সমস্ত পাপ থেকে মুক্ত হয়ে সেই ব্যাপ্তি ব্রহ্মকে জানেন, অর্থাৎ কর্ম এমন যা’ এই ব্যাপ্তি ব্রহ্মকে জানবার সুযোগ এনে দেয়। কর্মে প্রবৃত্ত পুরুষগণ ব্যাপ্তি ব্রহ্ম, সম্পূর্ণ কর্ম, সম্পূর্ণ অধ্যাত্ম, সম্পূর্ণ অধিদৈব, অধিভূত এবং অধিযজ্ঞসহিত আমাকে জানেন। অতএব কর্ম এই সমস্তের সঙ্গে আমাদের পরিচয় করিয়ে দেয়। এমনকি শেষ সময়েও তাঁরা আমাকেই জানেন। তাঁদের আমাকে জানা কখনও বিস্মৃত হয় না।

এই প্রসঙ্গে অর্জুন বর্তমান অধ্যায়ের প্রারম্ভেই সেই শব্দগুলির পুনরাবৃত্তি করে জিজ্ঞাসা করলেন—

### অর্জুন উবাচ

কিং তদ্বন্দ্ব কিমধ্যাত্মং কিং কর্ম পুরুণ্যোত্তম।

অধিভৃতং চ কিং প্রোক্তমধিদৈবং কিমুচ্যতে ॥ ১ ॥

হে পুরুণ্যোত্তম ! ব্রহ্ম কি ? অধ্যাত্ম কি ? কর্ম কি ? অধিভূত এবং অধিদৈব কাকে বলে ?

অধিযজ্ঞঃ কথং কোহত্র দেহেহশ্মিমাধুসূদন।

প্রয়াণকালে চ কথং জ্ঞেয়োহসি নিয়তাত্মভিঃ ॥ ২ ॥

হে মধুসূদন ! অধিযজ্ঞ কে এবং কিরণপে এই দেহে অবস্থিত ? প্রমাণিত হল যে, অধিযজ্ঞ অর্থাৎ যজ্ঞের অধিষ্ঠাতা কোন এমন পুরুষ, যে মনুষ্য শরীরের আধারযুক্ত। সমাহিত চিত্তযুক্ত পুরুষগণদ্বারা অন্ত সময়ে আপনি কিভাবে অবগত হন ? এই সাতটি জিজ্ঞাসার ক্রমানুসারে সমাধান করবার জন্য যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

## শ্রীভগবানুবাচ

অক্ষরং ব্রহ্ম পরমং স্বভাবোহধ্যাত্মামুচ্যতে।

ভূতভাবোন্দ্রবকরো বিসর্গঃ কর্মসংজ্ঞিতঃ॥ ৩॥

‘অক্ষরং ব্রহ্ম পরমং’- যিনি অক্ষয়, যাঁর ক্ষয় হয় না, তাঁকেই পরব্রহ্ম বলে। ‘স্বভাবঃ অধ্যাত্ম উচ্যতে’- স্বয�়ং-এ স্থিরভাবই অধ্যাত্ম অর্থাৎ এটাই আত্মার আধিপত্য। এর পূর্বে সকলেই মায়ার আধিপত্যে অবস্থান করে; কিন্তু যখন ‘স্ব’-ভাব অর্থাৎ স্বরূপে স্থির ভাব (স্বয�়ং-এ স্থিরভাব) লাভ হয়, তখন আত্মার আধিপত্য তার উপর আরোপ হয়। এটাই অধ্যাত্ম এই হ’ল অধ্যাত্মের পরাকার্ষ। ‘ভূতভাবোন্দ্রবকরঃ’- ভূতগণের সেই ভাব, যা’ কিছু না কিছু উদ্ভব করে অর্থাৎ প্রাণীগণের সেইসব সকল্প, যা’ ভাল অথবা মন্দ সংস্কারের রচনা করে, তাদের বিসর্গ অর্থাৎ বিসর্জন, সে সমস্ত বিলুপ্ত হওয়াই কর্মের পরাকার্ষ। এটাই সম্পূর্ণ কর্ম, যার জন্য যোগেশ্বর বলেছিলেন-‘তিনি সম্পূর্ণ কর্মের জ্ঞাতা।’ কর্ম তখনই সম্পূর্ণ হয়, এর পরে এর প্রয়োজন হয় না। (নিয়ত কর্ম) এই অবস্থাতে ভূতগণের সেই ভাবগুলি, যেগুলি কিছু না কিছু রচনা করতেই থাকে, ভাল অথবা মন্দ সংস্কার তৈরী করে, সে সমস্ত যখন সর্বথা শান্ত হয়, কর্ম তখন সম্পূর্ণ হয়। এর পরে আর কর্মের প্রয়োজন হয় না। অতএব কর্ম তাই যা’ ভূতগণের সমস্ত সকল্পকে, যাদের দ্বারা কিছু না কিছু সংস্কারের সৃষ্টি হয়, শান্ত করে দেয়। কর্মের অর্থ (আরাধনা) চিন্তন, যা’ যজ্ঞে প্রতিষ্ঠিত।

অধিভূতং ক্ষরো ভাবঃ পুরুষশাধিদৈবতম্।

অধিযজ্ঞেহহমেবাত্র দেহে দেহভৃতাং বর॥ ৪॥

যতক্ষণ অক্ষয়ভাব প্রাপ্ত না হয়, ততক্ষণ বিনাশশীল সম্পূর্ণ ক্ষরভাব ‘অধিভূত’ অর্থাৎ ভূতগণের অধিষ্ঠান। সম্পূর্ণ ক্ষরভাবই হ’ল ভূতগণের উৎপত্তির কারণ। ‘পুরুষঃ চ অধিদৈবতম্’- প্রকৃতির উর্ধ্বে পরমপুরুষ স্থিত যিনি, তিনিই অধিদৈব অর্থাৎ সম্পূর্ণ দেবগণের (দৈবী সম্পদের) অধিষ্ঠাতা। দৈবী সম্পদ সেই পরমদেব-এ বিলীন হয়ে যায়। দেহধারীগণের মধ্যে শ্রেষ্ঠ অর্জুন! এই মনুষ্য দেহে আমিই ‘অধিযজ্ঞ’ অর্থাৎ যজ্ঞের অধিষ্ঠাতা। অতএব এই দেহে, অব্যক্ত স্বরূপে স্থিত

মহাপুরুষই অধিযজ্ঞ। শ্রীকৃষ্ণ ঘোগী ছিলেন। যিনি সম্পূর্ণ যজ্ঞের ভোক্তা, অবশ্যে যজ্ঞ তাতে সমাহিত হয়। সেই পরমস্বরাপ লাভ হয়। এইরূপে অঙ্গুনের ছয়টি প্রশ্নের সমাধান করেছেন। এখন শেষ জিজ্ঞাসা যে, শেষ সময়ে কিভাবে আপনাকে জানতে পারা যায়, যে তার পরে আর কখনও বিস্মৃত হন না?

অন্তকালে চ মামেব স্মরণুক্তা কলেবরম্।

যৎ প্রয়াতি স মন্ত্রাবৎ যাতি নাস্ত্যএ সংশয়ঃ।। ৫।।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, যিনি মৃত্যুকালে অর্থাৎ নিরংকু মনের বিলীন হওয়ার সময় আমাকে স্মরণ করতে করতে দেহের সম্বন্ধ ত্যাগ করে পৃথক হয়ে যান, তিনি ‘মদ্ভাবং’-সাক্ষাৎ আমার স্বরূপ লাভ করেন, তাতে কোন সন্দেহ নেই।

দেহের বিনাশ শুন্দ অন্তকাল নয়। মৃত্যুর পরেও দেহের ত্রুম থেকে মুক্তি পাওয়া যায় না। প্রারম্ভ ভোগ হয়ে গেলেই মন নিরংকু হয়ে যায়। এবৎ যখন নিরংকু মনেরও বিলয় হয়, তখনই শেষসময়, যার পরে দেহ ধারণ করতে হয় না। এটা ক্রিয়াভূক, কেবল শুনে, বার্তালাপে বোঝা সম্ভব নয়। যতক্ষণ বন্ধের মত দেহের পরিবর্তন হচ্ছে, ততক্ষণ দেহের অন্ত কোথায় হ'ল? নিরংকু মন এবৎ যখন নিরংকু মনেরও বিলয় হয়, তখন দেহ থাকতেই দেহের সম্বন্ধগুলি বিচ্ছিন্ন হয়ে যায়। যদি মৃত্যুর পরেই এই অবস্থা লাভ হয়, তাহলে শ্রীকৃষ্ণ পূর্ণ হতেন না। তিনি বলেছেন যে, বহু জন্মের অভ্যাসের পর প্রাপ্তিষ্ঠুক্ত জ্ঞানী সাক্ষাৎ আমার স্বরূপ হন। আমি তাঁতে এবৎ তিনি আমাতে স্থিত হন। তাঁতে ও আমাতে লেশমাত্রও পার্থক্য থাকে না। এটাই জীবিত থাকাকালীন প্রাপ্তি। যখন আর দেহধারণ করতে হয় না, তখন সেটাই দেহের শেষকাল।

এটা বাস্তবিক শরীরান্তের চিত্রণ, যার পরে আর জন্ম হয় না। অন্য শরীরান্ত মৃত্যু, যা’ লোক-প্রচলিত; কিন্তু এই শরীরান্তের পর আবার জন্ম হয়—

যৎ যৎ বাপি স্মরন্ত ভাবৎ ত্যজত্যন্তে কলেবরম্।

তৎ তমেবৈতি কৌন্তেয় সদা তন্ত্রাবভাবিতঃ।। ৬।।

কৌন্তেয়! মৃত্যুকালে মানুষ যে যে ভাবে চিন্তন করতে করতে দেহত্যাগ করে, সেই সেই ভাবকেই প্রাপ্ত হয়। তাহলে তো খুব সোজা আদান-প্রদান, আজীবন

আনন্দ করে, মৃত্যুর সময় ভগবানের স্মরণ করে নিলেই হয়। কিন্তু শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে এরূপ হয় না, ‘সদা তদ্ভাবভাবিতঃ’- সেই ভাবেরই চিন্তন করতে সমর্থ হল, যে ভাবের চিন্তন আজীবন করেছেন। আজীবন ‘যা’ চিন্তন করে এসেছেন, এরই মনের মধ্যে প্রতিফলন হয়। এর অন্যথা হয় না। অতএব—

তস্মাঽসবেষ্যু কালেষু মামনুম্মু র যুধ্য চ।

ম্যাপির্তমনোবুদ্ধির্মামেবেষ্যস্যশংশয়ম্ ॥৭॥

সেইজন্য অর্জুন! তুমি সর্বদা আমাকে স্মরণ কর এবং যুদ্ধ কর। আমাতে মন ও বুদ্ধি সমর্পণ করলে তুমি নিৎসন্দেহে আমাকেই লাভ করবে। নিরস্ত্র চিন্তন এবং যুদ্ধ একসঙ্গে কিরাপে সম্ভব? নিরস্ত্র চিন্তন এবং যুদ্ধের স্বরূপ কি তাহলে এরূপ যে, ‘জয় কলহেয়া লাল কী’, ‘জয় ভগবান কী’ বলে বলে শরসন্ধান করতে থাকবেন। কিন্তু স্মরণের স্বরূপ এর পরের শ্লোকে স্পষ্ট করে যোগেশ্বর বলছেন—

অভ্যাসমোগযুক্তেন চেতসা নান্যগামিনা ।

পরমং পুরুষং দিব্যং যাতি পার্থানুচিন্তয়ন ॥৮॥

হে পার্থ! সেই স্মরণের জন্য যোগাভ্যাসে যুক্ত হয় (আমার চিন্তন এবং যোগের অভ্যাস একে অন্যের পর্যায়) অনন্যগামী চিন্তে নিরস্ত্র চিন্তন করতে করতে যোগী পরমপ্রকাশস্বরূপ দিদ্যপুরুষ অর্থাৎ পরমাত্মাকে লাভ করেন। মনে করুন এই পেন্সিলটি ভগবান, তাহলে এখন এটা ছাড়া অন্য কোন বস্তুর স্মরণ উচিত নয়। এর আশে-পাশে যদি আপনি বই অথবা অন্য কিছু দেখতে পান, তাহলে আপনার স্মরণ খণ্ডিত হয়ে গেছে। স্মরণ যখন এইরূপ সূক্ষ্ম হয় যে, ইষ্টের অতিরিক্ত অন্য কোন বস্তুর স্মরণপর্যন্ত হয় না, মনে তরঙ্গও ওঠে না, তাহলে এখন কথা হল যে, স্মরণ এবং যুদ্ধ একসঙ্গে কি করে হবে? বস্তুতঃ যখন আপনি চিন্তকে সবদিক থেকে সংযত করে, নিজের একমাত্র আরাধ্যের স্মরণে প্রবৃত্ত হবেন, তখন মায়াময় প্রবৃত্তিরাপে কাম-ক্রোধ, রাগ-দ্রেষ বাধারূপে উপস্থিত হবে। আপনি স্মরণ করে যাবেন, কিন্তু তারা আপনার অস্তরে উদ্বেগের সৃষ্টি করবে, আপনার মনকে স্মরণ থেকে বিচলিত করবার চেষ্টা করবে। এই বাহ্য প্রবৃত্তিগুলির পারে যাওয়াই যুদ্ধ। নিরস্ত্র চিন্তনের সঙ্গেই যুদ্ধ সম্ভব। অর্থাৎ নিরস্ত্র চিন্তনে প্রবৃত্ত থাকবার চেষ্টা

করে যাওয়াই যুদ্ধ। গীতাশাস্ত্রের একটা শ্লোকও বাহ্য জগতের যুদ্ধের সমর্থন করে না। চিন্তন কার করা হবে? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

**কবিঃ পুরাণমনুশাসিতারমণোরণীয়াৎসমনুস্মরেদ্যঃ।**

**সর্বস্য ধাতারমচিন্ত্যরূপমাদিত্যবর্ণৎ তমসঃ পরস্তাঃ।।৯।।**

সেই যুদ্ধের সঙ্গে ঐ পুরুষ সর্বজ্ঞ, অনাদি, সকলের নিয়ন্তা, সূক্ষ্ম থেকেও সূক্ষ্ম, সকলের ধারণ-পোষণ করেন যিনি, অচিন্ত্যস্বরূপ (যতক্ষণ চিন্ত এবং চিন্তের তরঙ্গ বিদ্যমান, ততক্ষণ তাঁকে দর্শন করা সম্ভব নয়। যখন নিরস্ত্র চিন্ত বিলীন হয়, তখনই তাঁকে জানা সম্ভব হয়), নিত্য প্রকাশস্বরূপ এবং অবিদ্যার অতীত সেই পরমাত্মার স্মরণ করেন। পূর্বে বলেছেন—আমার চিন্তন করেন, এখানে বলছেন—পরমাত্মার। আতএব সেই পরমাত্মার চিন্তনের (ধ্যানের) মাধ্যম তত্ত্বস্থিত মহাপুরুষ। এই ক্রমেই-

**প্রয়াণকালে মনসাহচলেন**

**ভক্ত্যা যুক্তো যোগবলেন চৈব।**

**জ্ঞানোর্ধ্যে প্রাণমাবেশ্য সম্যক্**

**স তৎ পরং পুরুষমুপৈতি দিব্যম্।।১০।।**

যিনি নিরস্ত্র সেই পরমাত্মার স্মরণ করেন, সেই ভক্তিযুক্ত পুরুষ ‘প্রয়াণকালে’- মনের বিলয়কালে যোগবলে অর্থাৎ নিয়ত কর্মের আচরণ করে, জ্ঞান-যুগলের মধ্যে প্রাণ উত্তমরূপে স্থাপন করে (প্রাণ-অপানকে সম করে, আন্তরে উদ্বেগের সৃষ্টি হবে না, বাহ্য সংকল্পও গ্রহণ করা হবে না, সত্ত্ব, রজ ও তম উত্তম রূপে শান্ত হবে, স্মৃতি ইষ্টে স্থিত হবে, সেইকালে) সেই আচল মন অর্থাৎ স্থিরবুদ্ধি পুরুষ এই দিব্যপুরুষ পরমাত্মাকে লাভ করেন। সতত স্মরণীয় যে, সেই একমাত্র পরমাত্মার প্রাপ্তির বিধান যোগ। তাঁর জন্য নিয়ত ক্রিয়ার আচরণই যোগক্রিয়া, যার সবিস্তার বর্ণনা যোগেশ্বর চতুর্থ-ষষ্ঠ অধ্যায়ে করেছেন। এখন তিনি বলছেন, “নিরস্ত্র আমাকেই স্মরণ কর।” কিরণে করা হবে? এই যোগ ধারণায় স্থির থেকে করতে হবে। যিনি এইরূপ কর্ম করেন, তিনি সেই দিব্যপুরুষকে লাভ করেন। যিনি আর কখনও বিস্মৃত হন না। এখানে এই জিজ্ঞাসার সমাধান হল যে, প্রয়াণকালে আপনাকে

কিরণে জানা সন্তু ? প্রাপ্তিযোগ্য পদের চিত্রণ দেখুন, যার উল্লেখ গীতাশাস্ত্রে বিভিন্ন  
স্থানে করা হয়েছে—

**যদক্ষরং বেদবিদো বদন্তি**

**বিশন্তি যদ্যতয়ো বীতরাগাঃ।**

**যদিচ্ছন্তো ব্রহ্মচর্যং চরন্তি**

**তত্ত্বে পদং সন্ধহেণ প্রবক্ষ্যে ॥ ১১ ॥**

‘বেদবিদ্’ অর্থাৎ অবিদিত তত্ত্বকে যারা প্রত্যক্ষভাবে জানেন এবং যে  
পরমপদকে ‘অক্ষরম্’- অক্ষয় বলেন, বীতরাগ মহাআত্মা যাতে প্রবেশের জন্য যত্নশীল  
এবং যে পরমপদ লাভ করবার জন্য ব্রহ্মচর্যের পালন করেন (ব্রহ্মচর্যের অর্থ  
কেবলমাত্র জননেন্দ্রিয়ের সংযম নয়, বরং ‘ব্রহ্ম আচরতি স ব্রহ্মচারী’- বাহ্য স্পর্শ  
মন থেকে ত্যাগ করে নিরস্তর ব্রহ্মের চিন্তন-স্মরণই ব্রহ্মচর্য। এইরূপ আচরণে ব্রহ্মের  
দর্শন, তাঁতে স্থিতি এবং শান্তি লাভ হয়। এই আচরণ দ্বারা ইন্দ্রিয় সংযমই নয় বরং  
সকলেন্দ্রিয় সংযম স্বাভাবিক ভাবে হয়ে যায়। যিনি এইরূপ ব্রহ্মের আচরণ করেন)  
, যা হৃদয়ে সংগ্রহের যোগ্য, ধারণের যোগ্য, সেই পরমপদের সন্ধানে আমি তোমাকে  
বলব। সেই পদ কি ? কিরণে লাভ হয় ? এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

**সর্বদ্বারাগি সংযম্য মনো হৃদি নিরুধ্য চ।**

**মুর্ম্যাধ্যাত্মনঃ প্রাণমাস্তিতো যোগধারণাম ॥ ১২ ॥**

সমস্ত ইন্দ্রিয়দ্বার সংযত করে অর্থাৎ বাসনা থেকে পৃথক্ অবস্থান করে, মন  
হৃদয়ে স্থিত করে (ধ্যান হৃদয়েই করা হয়, বাইরে নয়। পূজা বাইরে হয় না) প্রাণ  
অর্থাৎ অন্তঃকরণের ব্যাপারকে মস্তিষ্কে নিরূপ করে, যোগধারণাতে স্থিত হয়ে (যোগ  
ধারণ করতে হবে, অন্য উপায় নেই) এইরূপ স্থিত হয়ে—

**ওমিত্যেকাক্ষরং ব্রহ্ম ব্যাহরণ্মামনুস্মরন্ম।**

**যঃ প্রযাতি ত্যজন্দেহং স যাতি পরমাং গতিম ॥ ১৩ ॥**

যে পুরুষ ‘ওঁ ইতি’- ওঁ কেবল, যা’ অক্ষয় ব্রহ্মের পরিচায়ক, এর জপ এবং  
আমাকে স্মরণ করতে করতে দেহত্যাগ করেন, সেই পুরুষ পরমগতি লাভ করেন।

শ্রীকৃষ্ণ একজন যোগেশ্বর, পরমতত্ত্বে স্থিত মহাপুরুষ, সদ্গুরু ছিলেন। যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন যে, ‘ও’ অক্ষয় ব্ৰহ্মেৰ পৰিচায়ক, তুমি এৱং জপ কৰ এবং আমাৰ ধ্যান কৰ। প্রাপ্তিযুক্ত প্ৰত্যেক মহাপুৰুষেৰ নাম সেই হয়, যা তাৰা লাভ কৰেন, যাঁৰ মধ্যে তাৰা বিলীন হন। সেই নাম ও এবং রূপ নিজেৰ বললেন। যোগেশ্বৰ ‘কৃষ্ণ - কৃষ্ণ’ জপ কৰবাৰ নিৰ্দেশ দেননি। কালান্তৰে ভাবুকগণ তাৰ নাম জপ কৰতে শুৱৰ কৰে দিয়েছেন এবং শ্ৰদ্ধা অনুসারে ফলও পেয়ে থাকেন; যেমন—মানুষেৰ শ্ৰদ্ধা যেখানেই হয়, সেখানেই আমি তাৰ শ্ৰদ্ধা স্থিৰ কৰি এবং আমিহ ফলেৰ বিধানও কৰি।

ভগবান শিব ‘রাম’ নাম জপ কৰবাৰ উপৰ জোৱ দিয়েছেন। ‘রমন্তে যোগিনো ঘশ্মিন্স রামঃ।’, ‘রা অওৱ ম কে বিচ মেঁ, কবিৱা রহা লুকায়।’ রা ও ম এই দুই অক্ষরেৰ অন্তৱালে কবীৰ নিজেৰ মনকে স্থিৰ কৰতে সক্ষম হয়েছিলেন।

শ্রীকৃষ্ণ ‘ও’ জপ কৰবাৰ উপৰ জোৱ দিচ্ছেন। ‘ও অহং স ওঁ’ অৰ্থাৎ ঐ সত্তা আমাৰ মধ্যে আছেন, বাইৱে খুঁজতে শুৱ কৰে দেবেন না যেন। এই ‘ওঁ’ ও পৰম সত্তাৰ পৰিচয় প্ৰদান কৰে শাস্ত হয়ে যায়। বাস্তবে সেই প্ৰভুৰ নাম অনন্ত; কিন্তু জপ কৰবাৰ জন্য সেই নাম সাৰ্থক যা ছোট, শ্বাসে লীন হয়ে যায় এবং পৰমাত্মা এক বোধ কৰিয়ে দেয়। তাঁকে ভুলে বহু দেবী-দেবতাৰ অবিবেকপূৰ্ণ কল্পনাতে জড়িয়ে লক্ষ্য থেকে দৃষ্টি সৱিয়ে দেবেন না।

‘পূজ্য মহারাজজী’ বলতেন—“আমাৰ স্বৰূপ-চিন্তন কৰবে এবং শ্ৰদ্ধা অনুসারে যে কোন দুই-আড়াই অক্ষরেৰ নাম—‘ওঁ’, ‘রাম’, ‘শিব’ এদেৱ মধ্যে থেকে একটা বেছে, তাৰ চিন্তন এবং তাৱই অৰ্থস্বৰূপ ইষ্টেৰ স্বৰূপেৰ ধ্যান কৰবে।” ধ্যান সদ্গুরুদেবেৱই কৰা হয়। আপনি রাম, কৃষ্ণ অথবা ‘বীতৱাগ বিষয়ং বা চিত্তম্।’- বীতৱাগ মহাআগণেৰ অথবা ‘যথাভিমতধ্যানাদ্বা।’ (পাতঞ্জল যোগ৩০, ১/৩৭, ৩৯) অভিমত অৰ্থাৎ যোগেৰ অভিমত, অনুকূল কোন মহাপুৰুষেৰ স্বৰূপেৰ ধ্যান কৰুন, তিনি অনুভবে আপনাৰ সঙ্গে মিলিত হবেন এবং আপনাৰ সমকালীন কোন সদ্গুরুৰ দিকে এগিয়ে দেবেন, যাঁৰ মার্গদৰ্শনে আপনি ধীৱে ধীৱে প্ৰকৃতিৰ ক্ষেত্ৰে পাৱে চলে যাবেন। আগে আমিও এক দেবতাৰ (শ্রীকৃষ্ণেৰ বিৱাট রূপ) ছবিৱ ধ্যান কৰতাম; কিন্তু পূজ্য মহারাজজীৰ ভাবধাৰায় প্ৰবাহিত হয়ে তা শাস্ত হয়ে গেছে।

প্রারম্ভিক সাধক নাম-জপ করেন ঠিকই; কিন্তু মহাপুরুষের স্বরূপের ধ্যান করতে তাঁরা ইতস্ততঃ বোধ করেন। অঙ্গিত সংস্কার ত্যাগ করতে পারেন না। যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ অন্য দেবতার ধ্যান করতে নিষেধ করেছেন। অতএব পূর্ণ সমর্পণের সঙ্গে কোন জ্ঞানী মহাপুরুষের শরণাগত হলেই। পুণ্য-পুরুষার্থ সবল হবে এবং কুর্তুর্গুলি শান্ত হবে যার ফলে যথার্থ ক্রিয়াতে প্রবেশ লাভ হবে। যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে ‘ওঁ’- জপ এবং পরমাত্মস্বরূপ সদ্গুরুর স্বরূপের নিরন্তর স্মরণ করলে মন নিরক্ষণ এবং বিলীন হয়ে যায় এবং তৎক্ষণেই দেহের সম্মত বিচ্ছিন্ন হয়ে যায়। কেবল মৃত্যু হলে দেহধারণ থেকে মুক্তি পাওয়া যায় না।

অনন্যচেতাঃ সততঃ যো মাং স্মরতি নিত্যশঃ।

তস্যাহং সুলভঃ পার্থ নিত্যযুক্তস্য যোগিনঃ॥ ১৪ ॥

“আমা ব্যতীত কাউকে চিন্তে ঠাঁই দেন না”- অর্থাৎ অনন্য চিন্ত হয়ে যিনি নিরন্তর আমার স্মরণ করেন, সেই নিত্য আমাতে যুক্ত যোগীর কাছে আমি সহজলভ্য। আপনি সহজলভ্য হলে কি লাভ ?—

মামুপেত্য পুনর্জ্যম দৃঢ়খালয়মশাশ্঵তম্।

নাপুরাণ্তি মহাআনাঃ সংসিদ্ধিৎ পরমাং গতাঃ॥ ১৫ ॥

আমাকে লাভ করলে তাঁদের দৃঢ়খের স্থানস্বরূপ ক্ষণতঙ্গুর পুনর্জ্যম হয় না, বরং পরমসিদ্ধি লাভ হয় অর্থাৎ আমাকে লাভ করা অথবা পরমসিদ্ধি লাভ করা একই কথা। কেবল তাঁদের পুনর্জ্যম হয় না, যাঁরা ভগবানকে লাভ করেছেন। তাহলে পুনর্জ্যমের সীমা কতদূর পর্যন্ত?—

আব্রহাম্বুবনাল্লোকাঃ পুনরাবর্তিনোহর্জন।

মামুপেত্য তু কৌস্ত্রে পুনর্জ্যম ন বিদ্যতে॥ ১৬ ॥

অর্জন ! ব্রহ্মা থেকে শুরু করে কীট-পতঙ্গাদি সমস্ত লোকই পুনরাবর্তনশীল, জন্মগ্রহণ করে ও মৃত্যু হয় এবং পুনঃপুনঃ এই ক্রমেই চলতে থাকে; কিন্তু কৌস্ত্রে ! আমাকে লাভ করলে সেই পুরুষের আর পুনর্জ্যম হয় না।

ধর্মগ্রন্থগুলিতে লোক-লোকান্তরের পরিকল্পনা ঈশ্বর-পথের বিভূতিগুলির বোধ করিয়ে দেয়, যা’ হল আন্তরিক অনুভব। অন্তরিক্ষে এমন কোন গর্ত নেই

যেখানে কীট দংশন করে এবং এমন কোন প্রাসাদও নেই যাকে স্বর্গ বলা হয়। দৈবী সম্পদ্যুক্ত পুরুষই দেবতা এবং আসুরী সম্পদ্যুক্ত মানুষই অসুর। স্বয়ং শ্রীকৃষ্ণের আঞ্চলিক কংস রাক্ষস এবং বানাসুর দৈত্য ছিল। দেব, মানব, তির্যক যৌনগুলিই হল বিভিন্ন লোক। শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে এই জীবাত্মা মন এবং পাঁচটি ইন্দ্রিয়কে নিয়ে জন্ম-জন্মান্তরের সংস্কারসমূহের অনুরূপ নতুন দেহ ধারণ করে।

যে দেবতাদের অমর বলা হয়, তারাও মরণধর্মা-‘ক্ষীণে পুণ্যে মর্ত্যলোকং বিশন্তি’। এর থেকে বেশী ক্ষতি কি হতে পারে? সেই দেবদেহে কি লাভ, যাতে সংক্ষিপ্ত পুণ্য শেষ হয়ে যায়? দেবলোক, পশুলোক, কীট-পতঙ্গাদি সমস্ত লোক ভোগলোক মাত্র। কেবল মানুষই কর্মের রচয়িতা, যার দ্বারা সে পরমধারণপর্যন্ত লাভ করতে সমর্থ হয়, যেখান থেকে পুনরাবর্তন হয় না। যথার্থ কর্মের আচরণ করে মানুষ দেবতা হোক অথবা ব্ৰহ্মার স্থিতিলাভ করুক; কিন্তু পুনর্জন্মের হাত থেতে ততক্ষণ রেহাই পায় না, যতক্ষণ মন নিরঞ্জন না হয়, এবং বিলীন হয়ে পরমাত্মার সাক্ষাৎকার করে ঐ পরমভাব-এ স্থিত না হয়। উদাহরণার্থ উপনিষদও এই সত্যের উদ্ঘাটন করে—

যদা সৰ্বে প্রমুচ্যন্তে কামা যেহস্য হানিস্থিতাঃ।

অথ মর্ত্যোহমৃতো ভবত্যত্র ব্ৰহ্ম সমশ্বৰে।। (কঠো০, ২/৩/১৪)

হাদয়েস্থিত সমস্ত কামনা যখন সমুলে নষ্ট হয়ে যায়, তখন মরণধর্মা ব্যক্তি অমর হয়ে যায় এবং এখানে, এই সংসারেই, এই মনুষ দেহেই উন্নমনুপে পরমাত্মার সাক্ষাৎ অনুভব করে থাকেন।

প্রশ্ন ওঠে যে, তাহলে কি ব্ৰহ্মাও মরণধর্মা? তৃতীয় অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ প্রজাপতি ব্ৰহ্মার প্রসঙ্গে বলেছিলেন যে, প্রাপ্তিৰ পরে বুদ্ধি যন্ত্রমাত্র হয়ে যায়। তাঁর মাধ্যমে পরমাত্মা ব্যক্ত হন। এরূপ মহাপুরুষগণ দ্বারাই যজ্ঞের সৃষ্টি হয়েছে, এবং এখানে বলছেন যে, ব্ৰহ্মার স্থিতিলাভ করেছেন যিনি, তিনিও প্রত্যাবর্তন করেন। যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ কি বলতে চাইছেন?

বস্তুতঃ যে মহাপুরুষগণের মাধ্যমে পরমাত্মা ব্যক্ত হন, সেই মহাপুরুষগণের বুদ্ধিও ব্ৰহ্মা নয়; কিন্তু উপদেশ দেন ও কল্যাণের সুত্রপাত করেন, সেইজন্য ব্ৰহ্মা

বলা হয়। তাঁরাও ব্রহ্মা নন। তাঁদের কাছে নিজের বুদ্ধি বলে কিছু থাকে না। কিন্তু এর পূর্বে সাধনাকালে বুদ্ধিই ব্রহ্মা- ‘অহংকার শিব বুদ্ধি অজ, মন সমি চিন্ত মহান।’ (মানস, ৬/১৫ ক)

সাধারণ ব্যক্তির বুদ্ধি ব্রহ্মা নয়। বুদ্ধি যখন ইষ্টে স্থিত হয়, তখনই ব্রহ্মার রচনা হয়, যার চারটি সোপান সম্বন্ধে মনীষীগণ বলেছেন। পূর্বে তৃতীয় অধ্যায়ে বলেছেন, স্মরণের জন্য পুনরায় দেখতে পারেন- ব্রহ্মবিং, ব্রহ্মবিদ্ব, ব্রহ্মবিদ্বরীয়ান्, ব্রহ্মবিদ্বরিষ্ট। ব্রহ্মবিং সেই বুদ্ধিকে বলে, যা ব্রহ্মবিদ্বার সঙ্গে সংযুক্ত। যিনি ব্রহ্মবিদ্যাতে শ্রেষ্ঠত্ব অর্জন করেছেন, তিনিই ব্রহ্মবিদ্ব। ব্রহ্মবিদ্বরীয়ান্ সেই বুদ্ধি, যার সাহায্যে পুরুষ ব্রহ্মবিদ্যাতে দক্ষতাই নয়, এবং তার নিয়ন্ত্রক, সঞ্চালক হয়ে যান। ব্রহ্মবিদ্বরিষ্ট বুদ্ধির শেষ সীমা, যার মাধ্যমে ইষ্ট প্রবাহিত হন। বুদ্ধির অস্তিত্ব এতদূর পর্যন্তই, কারণ যে ইষ্ট প্রবাহিত হন তিনি ও গ্রহকর্তা বুদ্ধি এখনও পৃথক পৃথক। এখনও তা প্রকৃতির মধ্যেই সীমাবদ্ধ। এখন স্বয়ং প্রকাশস্বরূপে যখন বুদ্ধি (ব্রহ্মা) থাকে, জাগ্রত থাকলে সম্পূর্ণ ভূত (চিন্তনের প্রবাহ) জাগ্রত থাকে এবং যখন অবিদ্যাতে থাকে, তখন অচেতন্য অবস্থায় থাকে। একেই প্রকাশ ও অন্ধকার, রাত্রি ও দিন বলে সমোধন করা হয়। দেখুন—

ব্রহ্মবিদ্বেতার সেই শ্রেণীকে ব্রহ্মা বলে, যার মধ্যে ইষ্টের ভাবধারা প্রবাহিত হয়, ইষ্ট লাভ করেও সর্বোৎকৃষ্ট বুদ্ধিতে বিদ্যার (যিনি স্বয়ং প্রকাশস্বরূপ তাঁতে বিলীন করে) দিন এবং অবিদ্যার রাত্রি, প্রকাশ এবং অন্ধকারের ক্রম ক্রমাগত চলতে থাকে। এতদ্রূপর্যস্ত মায়া সাধকের উপর প্রভাব বিস্তার করতে পারে। প্রকাশকালে অচেতন ভূত সচেতন হয়ে যায়, লক্ষ্য দৃষ্টিগোচর হয় এবং বুদ্ধির অন্তরালে অবিদ্যার রাত্রির প্রবেশকালে সমস্ত ভূত অচেতন্য হয়ে যায়। বুদ্ধি নিশ্চয় করতে পারে না। স্বরাপের দিকে এগোনো বন্ধ হয়ে যায়। এটাই ব্রহ্মার দিন এবং রাত্রি। দিনের আলোয় বুদ্ধির হাজার হাজার প্রবৃত্তিগুলিতে ঈশ্বরীয় প্রকাশ অনুভব হয় এবং অবিদ্যার রাত্রিতে এই হাজার হাজার স্তরের মধ্যে অচেতন্য অবস্থার অন্ধকার নেমে আসে।

শুভ এবং অশুভ, বিদ্যা এবং অবিদ্যা-এই দুটি প্রবৃত্তি সম্পূর্ণরূপে শাস্ত হওয়ার পরে অর্থাৎ অচেতন এবং সচেতন, রাত্রিতে বিলীন এবং দিনে জেগে ওঠা দুই প্রকার ভূতেরই (সংকল্প প্রবাহ) বিলীন হওয়ার পর সেই অব্যক্ত বুদ্ধিরও অতি

উদ্ধেৰ শাশ্ত অব্যক্ত ভাব প্রাপ্ত হয়, যা আৱ কখনও নষ্ট হয় না। ভুতেৱ অচেতন  
এবং সচেতন উভয় স্থিতিলোপ পেলেই সেই সনাতন ভাব প্রাপ্ত হয়।

বুদ্ধিৱ উপর্যুক্ত চারটি অবস্থা পার কৱেই পুৱন্ন মহাপুৱন্ন হতে পাৱে। সেই  
মহাপুৱন্নেৱ অন্তৱালে বুদ্ধি থাকে না, বুদ্ধি পৱমাঞ্চাল যন্ত্ৰস্বৰূপ হয়ে যায়; কিন্তু  
উপদেশ দেওয়াৱ জন্য, প্ৰেৱণা দেওয়াৱ জন্য তাঁদেৱ মধ্যে বুদ্ধিৱ উপস্থিতি প্ৰতীত  
হয়। কিন্তু তাঁৱা বুদ্ধিৱ স্থৱেৱ উদ্ধেৰ চলে যান। তাঁৱা পৱম অব্যক্ত ভাবে স্থিত হন,  
তাঁদেৱ পুনৰ্জন্ম হয় না; কিন্তু এই অব্যক্ত স্থিতিলাভেৱ আগে যতক্ষণ তাঁদেৱ কাছে  
নিজ বুদ্ধি থাকে, যতক্ষণ তাঁৱা ব্ৰহ্মা, ততক্ষণ তাঁৱা পুনৰ্জন্মেৱ পৱিধিৱ মধ্যে পড়েন।  
এই তথ্যগুলিৱ উপৱ আলোকপাত কৱে যোগেশ্বৱ শ্ৰীকৃষ্ণ বলছেন—

সহস্রযুগপর্যন্তমহর্যদৰ্শনাগো বিদুঃ।

রাত্ৰিং যুগসহস্রাত্মাং তেহহোৱাত্ৰবিদো জনাঃ।। ১৭।।

যাঁৱা সহস্র চতুৰ্যুগেৱ ব্ৰহ্মাৱ রাত্ৰি এবং সহস্র চতুৰ্যুগেৱ তাৱ দিন সম্বৰ্কে  
অবগত হন, সেই পুৱন্নগণ সময়েৱ তত্ত্ব যথাৰ্থ জানেন।

প্ৰস্তুত শ্লোকে দিবা এবং রাত্ৰি, বিদ্যা এবং অবিদ্যাকে বলা হয়েছে।  
ব্ৰহ্মাবিদ্যাসংযুক্ত বুদ্ধি ব্ৰহ্মাৱ প্ৰবেশিকা এবং ব্ৰহ্মাবিদ্বিৱিষ্ট বুদ্ধি ব্ৰহ্মাৱ পৱাকাৰ্ষা।  
বিদ্যাসংযুক্ত বুদ্ধিই হল ব্ৰহ্মাৱ দিন। যখন বিদ্যা কাৰ্যৱত হয়, তখন যোগী স্বৱন্ধেৱ  
দিকে এগিয়ে যান, অস্তঃকৱণেৱ শত শত প্ৰবৃত্তিৱ মধ্যে ঈশ্বৰীয় প্ৰকাশেৱ সংঘাৱ  
হয়। এইৱন্প অবিদ্যার রাত্ৰিৱ আগমনে অস্তঃকৱণেৱ হাজাৱ হাজাৱ প্ৰবৃত্তিগুলিৱ  
মধ্যে মায়াৱ দ্বন্দ্ব প্ৰবাহিত হয়। প্ৰকাশ ও অনুকাৱেৱ সীমা এতদূৰ পৰ্যন্তহই। এৱ  
পৱে না অবিদ্যা থাকে, না বিদ্যাই থাকে, তখনই পৱমতত্ত্ব পৱমাঞ্চালকে জানতে  
পাৱা যায়। যিনি একে তত্ত্বতঃ উত্তৰণপে জানেন, সেই যোগী কালেৱ তত্ত্বকে জানেন  
যে, কখন অবিদ্যার রাত্ৰি হয়? কখন বিদ্যার দিন উপস্থিত হয়? কালেৱ প্ৰভাৱ  
কতদূৰ পৰ্যন্ত অথবা সময়েৱ হাত থেকে কখন নিষ্ঠাৱ পাওয়া যায়?

প্ৰারম্ভিক মনীয়ীগণ অস্তঃকৱণকে চিন্ত অথবা কখনও কখনও বুদ্ধি বলে  
সমোধন কৱেছিলেন। কালাস্তৱে অস্তঃকৱণকে মন, বুদ্ধি, চিন্ত এবং অহংকাৱ এই  
চারটি প্ৰমুখ বৃত্তিতে বিভাজন কৱা হয়েছে, যদিও অস্তঃকৱণেৱ প্ৰবৃত্তি অনন্ত। বুদ্ধিৱ

অন্তরালেই অবিদ্যার রাত্রি বিদ্যমান এবং সেই বুদ্ধিতেই বিদ্যার দিনও বর্তমান। একেই ব্রহ্মার রাত্রি ও দিন বলে। জগৎকূপ রাত্রিতে সমস্ত জীব অচেতন্য হয়ে পড়ে আছে। প্রকৃতিতে ভাস্ত হয়ে তাদের বুদ্ধি সেই প্রকাশ স্বরূপকে দেখতে পায় না; কিন্তু যিনি যোগের আচরণ করেন, তিনি চেতনা লাভ করে স্বরূপের দিকে এগিয়ে যান, যেমন গোস্বামী তুলসীদাস রামচরিতমানসে লিখেছেন—

কবল্লি দিবস মহঁ নিবিড়তম, কবল্লি প্রগট পতঙ্গ।

বিনসই উপজই গ্যান জিমি, পাই কুসঙ্গ সুসঙ্গ।।

(রামচরিতমানস, ৪/১৫ খ)

বিদ্যার সঙ্গে সংযুক্ত বুদ্ধি কুসঙ্গে পড়ে অবিদ্যাতে পরিণত হয়। পুনরায় সুসঙ্গলাভ করে সেই বুদ্ধিতেই বিদ্যার সংগ্রাম হয়। এই উত্থান-পতন সাধনা সম্পূর্ণ না হওয়া পর্যন্ত চলতে থাকে। সম্পূর্ণ হওয়ার পরে বুদ্ধি, ব্রহ্মা, রাত্রি, দিন কিছুই থাকে না। এই হল ব্রহ্মার দিবা-রাত্রির রূপক। হাজার হাজার বছর দীর্ঘরাত্রি হয় না, না হাজার হাজার চতুর্যুগের দিনই হয় এবং চারমুখ্যযুক্ত কোন ব্রহ্মাও নেই। বুদ্ধির উপর্যুক্ত চারটি ক্রমিক অবস্থাই ব্রহ্মার চারটি মুখ এবং অন্তঃকরণের চারটি প্রমুখ প্রবৃত্তি তার চতুর্যুগ। এই প্রবৃত্তিগুলিতেই রাত্রি ও দিন ঘটে থাকে। যাঁরা এই রহস্য সম্বন্ধে তত্ত্বাত্মক অবগত, সেই যোগীগণ কালের রহস্য সম্বন্ধে অবগত যে, কালের প্রভাব কতদুর পর্যন্ত এবং কোন পুরুষ কালের অতীত হন? দিবা এবং রাত্রি, বিদ্যা এবং অবিদ্যাতে কার্য ঘটে থাকে, তা যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ স্পষ্ট করছেন-

অব্যক্তাদ্ব্যক্তয়ঃ সর্বাঃ প্রভবন্ত্যহরাগমে।

রাত্র্যাগমে প্রলীয়ন্তে তত্ত্বেবাব্যক্তসংজ্ঞকে।। ১৮।।

ব্রহ্মার দিনের প্রবেশকালে অর্থাৎ বিদ্যা (দৈবী সম্পদ) র প্রবেশকালে সমস্ত প্রাণী অব্যক্ত বুদ্ধিতে চেতনালাভ করে এবং রাত্রির প্রবেশকালে সেই অব্যক্ত, অদৃশ্য বুদ্ধিতে জাগ্রত সূক্ষ্মতত্ত্ব অচেতন হয়ে যায়। ঐ সমস্ত প্রাণী অবিদ্যার রাত্রিতে স্বরূপ স্পষ্ট প্রত্যক্ষ করতে পারে না; কিন্তু তাদের অস্তিত্ব বজায় থাকে। জাগ্রত হওয়া এবং অচেতন হওয়ার মাধ্যম এই বুদ্ধি, যা সকলের মধ্যে অব্যক্তরূপে বিদ্যমান, দৃষ্টিগোচর হয় না।

ভূতগ্রামঃ স এবাযং ভূত্বা ভূত্বা প্রলীয়তে।

রাত্র্যাগমেহবশঃ পার্থ প্রভবত্যহরাগমে॥ ১৯॥

হে পার্থ! এইরূপ সমস্ত প্রাণী জাগ্রত হয়ে, প্রকৃতির বশীভূত হয়ে অবিদ্যারূপী রাত্রির সমাগমে অচেতন হয়ে যায়। তারা বুঝাতে পারে না যে, তাদের লক্ষ্য কি? দিনের সমাগমে তারা পুনরায় জাগ্রত। যতক্ষণ বুদ্ধি থাকে ততক্ষণ এর অন্তরালে বিদ্যা ও অবিদ্যার ক্রমে চলতে থাকে। ততক্ষণ সেই সাধক, মহাপুরুষ নয়।

পরস্তম্বাত্মু ভাবোহন্যোহ্ব্যক্তোহ্ব্যক্তাসনাতনঃ।

যঃ স সর্বেযু ভূতেষু নশ্যৎসু ন বিনশ্যতি॥ ২০॥

এক তো ব্রহ্মা অর্থাৎ বুদ্ধি অব্যক্ত, ইন্দ্রিয়গ্রাহ্য নয় এবং এর থেকেও পর সনাতন অব্যক্তভাব, যা সমস্ত ভূতের বিনাশ হলেও বিনাশ হয় না অর্থাৎ বিদ্যাতে সচেতন এবং অবিদ্যাতে অচেতন, দিনে উৎপন্ন এবং রাত্রিতে বিলীন ভাবযুক্ত অব্যক্ত ব্রহ্মারও বিলীন হবার পরে সেই সনাতন অব্যক্ত ভাব প্রাপ্ত হয়, যার বিনাশ হয় না। বুদ্ধিতে এই উর্থা-পড়ার তরঙ্গ যখন শেষ হয়, তখন সনাতন অব্যক্ত প্রাপ্ত হয়, যা আমার পরমধার্ম। যখন সনাতন অব্যক্তভাব প্রাপ্ত হয়, তখন বুদ্ধিও সেই ভাবে ভাবিত হয়, সেই ভাবকেই ধারণ করে। সেইজন্য বুদ্ধি বিলীন হয়ে যায় এবং তার পরিবর্তে সনাতন অব্যক্তভাব শুধু থাকে।

অব্যক্তোহক্ষর ইত্যুক্তশমাহৃৎ পরমাং গতিম্।

যঃ প্রাপ্য ন নির্বর্তন্তে তদ্বাম পরমং মম॥ ২১॥

সেই সনাতন অব্যক্ত ভাবকে অক্ষর অর্থাৎ অবিনাশী বলা হয়। একেই পরমগতি বলে। ঐ আমার পরমধার্ম, যা প্রাপ্ত হয়ে মানুষ ফিরে আসে না, তাদের পুনর্জন্ম হয় না। এই সনাতন অব্যক্তভাবের প্রাপ্তির উপায় বলছেন—

পুরুষঃ স পরঃ পার্থ ভক্ত্যা লভ্যস্তন্যয়া।

যস্যান্তঃ স্থানি ভূতানি যেন সর্বমিদং ততম্॥ ২২॥

পার্থ! যে পরমাত্মার অন্তর্গত সমস্ত ভূতগণ, যার দ্বারা সমগ্র জগৎ পরিব্যাপ্ত, সনাতন অব্যক্ত ভাবযুক্ত সেই পরমপুরুষকে অনন্য ভক্তিদ্বারা লাভ করা যায়। অনন্য ভক্তির তাৎপর্য হল, পরমাত্মা ভিন্ন অন্য কোন দেবতার স্মরণ না করে তাঁর সঙ্গে

যুক্ত হওয়া। অনন্যভাবে সংযুক্ত পুরুষ কতক্ষণ পুনর্জন্মের সীমার মধ্যে থাকেন এবং কখন তাঁরা পুনর্জন্মের অতিক্রমণ করেন? এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর বলছেন—

যত্র কালে ত্বনাবৃত্তিমাবৃত্তিং চৈব যোগিনঃ।

প্রয়াতা যান্তি তৎ কালং বক্ষ্যামি ভরতর্বত্ত। ২৩।।

হে অর্জুন! যে কালে দেহত্যাগ করলে যোগীগণ পুনর্জন্ম লাভ করেন না এবং যে কালে দেহত্যাগ করলে পুনর্জন্ম লাভ করেন, এখন আমি সেই কালের কথা বলব।

অগ্নিজ্যোতিরহঃ শুক্লঃ ষগ্নাসা উত্তরায়ণম্।

তত্র প্রয়াতা গচ্ছন্তি ব্রহ্ম ব্রহ্মবিদো জনাঃ। ২৪।।

দেহের সম্বন্ধ ত্যাগ করবার সময় যার সমক্ষে জ্যোতির্ময় অগ্নি প্রজ্ঞানিত, দিনের প্রকাশ বিদ্যমান, সূর্য উজ্জ্বলভাবে আকাশে বিরাজমান, শুক্লপক্ষের চন্দ্ৰ ক্রমবদ্ধিত, উত্তরায়ণের নিরভ এবং সুন্দর আকাশ থাকে যখন, সেই কালে প্রয়াণ করলে ব্রহ্মবেত্তা যোগীগণ ব্রহ্মকে লাভ করেন।

অগ্নি ব্রহ্মতেজের প্রতীক। দিন হল বিদ্যার প্রকাশ। শুক্লপক্ষ নির্মলতার দ্যোতক। বিবেক, বৈরাগ্য, শৰ্ম, দম, তেজ এবং প্রজ্ঞা এই সমস্ত ষড়শৰ্ষ্যকেই ষগ্নাস বলে। উর্দ্ধরেতা স্থিতিই হল উত্তরায়ণ। প্রকৃতি পারে এই অবস্থায় যাঁরা পোঁছেছেন, তাঁরাই, ঐ ব্রহ্মবেত্তা যোগীগণ ব্রহ্মকে লাভ করেন, তাঁদের পুনর্জন্ম হয় না; কিন্তু অনন্যচিত্ত যোগীগণ যদি এই জ্যোতিস্তরূপ লাভ না করতে পারেন, যাঁদের সাধনা এখনও সম্পূর্ণ হয়নি, তাঁদের কোন গতি হয়? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

ধূমো রাত্রিস্থা কৃষ্ণঃ ষগ্নাসা দক্ষিণায়নম্।

তত্র চান্দ্রমসং জ্যোতিষ্যেগী প্রাপ্য নির্বর্ততে। ২৫।।

যার প্রয়াণকালে ধূম আচ্ছন্ন হয়, যোগাগ্নি হয় (অগ্নি যজ্ঞ প্রতিয়ায় উৎপন্ন অগ্নির স্বরূপ) কিন্তু ধূমদ্বারা আচ্ছাদিত থাকে, অবিদ্যার রাত্রি থাকে, অন্ধকার থাকে, কৃষ্ণপক্ষের চন্দ্রমা ক্ষীণ হতে থাকে, কালিমার বাহ্ল্য থাকে, ষড়বিকার (কাম, ক্রোধ, লোভ, মোহ, মদ ও মৎসর) যুক্ত দক্ষিণায়ন অর্থাৎ বহিমুখী হয় (যে পরমাত্মা

থেকে এখনও দূরে) সেই যোগীকে পুনরায় জন্ম নিতে হয়, তাহলে কি দেহের সঙ্গে  
সেই যোগীর সাধনা নষ্ট হয়ে যায়? এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

শুল্কুক্ষে গতি হ্যেতে জগতঃ শাশ্বতে মতে।

একয়া যাত্যনাবৃত্তিমন্য়াবর্ততে পুনঃ। ২৬।।

উপর্যুক্ত শুল্ক এবং কৃষ্ণ এই দুই প্রকারের গতি জগতে শাশ্বত অর্থাৎ সাধনের  
কখনও বিনাশ হয় না। এক (শুল্ক) অবস্থাতে প্রয়াণ করেন যিনি, তিনি পরমগতি  
প্রাপ্ত হন এবং অন্য অবস্থাতে, যার মধ্যে ক্ষীণ প্রকাশ এবং কালিমা বাকী থাকে,  
এইরূপ অবস্থাতে প্রয়াণ করেন যিনি, তাঁকে পুনরায় দেহধারণ করতে হয়। যতক্ষণ  
পূর্ণ প্রকাশ লাভ না হয়, ততক্ষণ ভজন করবার প্রয়োজন হয়। প্রশ্নটি সম্পূর্ণ হল।  
এখন এর জন্য সাধনের উপর পুনরায় জোর দিলেন—

নৈতে সৃষ্টী পার্থ জানন্যোগী মুহৃতি কশচন।

তস্মাঃসর্বেষু কালেষু যোগযুক্তো ভবার্জন।। ২৭।।

হে পার্থ! এইরূপ উভয় মার্গ সম্বন্ধে অবগত হয়ে কোন যোগী মোহগ্রস্ত হন  
না। তিনি জানেন যে পূর্ণ প্রকাশ লাভ হলে ব্রহ্মকে লাভ করবেন এবং ক্ষীণ প্রকাশ  
থাকলেও পুনর্জন্মে সাধনের নাশ হয় না। দুটি গতিই শাশ্বত। অতএব আর্জুন! তুমি  
সবকালে যোগেযুক্ত হও অর্থাৎ নিরস্তর সাধন কর।

বেদেষু যজ্ঞেষু তপঃসু চৈব

দানেষু যৎপুণ্যফলং প্রদিষ্টম্।

অত্যেতি তৎসর্বমিদং বিদিত্বা

যোগী পরং স্থানমুপৈতি চাদ্যম।। ২৮।।

যোগী পুরুষ সাক্ষাৎকার করে এইরূপ অবগত হয়ে (স্বীকার করে নয়) বেদ,  
যজ্ঞ, তপস্যা এবং দানের পুণ্যফলগুলিকে নিঃসন্দেহে অতিক্রমণ করেন এবং সন্তান  
পরমপদ লাভ করেন। অবিদিত পরমাত্মাকে সাক্ষাৎ জানার নাম বেদ। সেই অবিদিত  
তত্ত্ব অবগত হলে, কি জানা বাকী থাকে? অতএব সম্পূর্ণ জ্ঞান হ্বার পরে বেদের  
প্রয়োজন থাকেনা; কারণ যিনি অবগত, তিনি এখন ভিন্ন নন। যজ্ঞ অর্থাৎ আরাধনার

নিয়ত ক্রিয়া আবশ্যক ছিল; কিন্তু যখন এই তত্ত্ব সম্বন্ধে এখন অবগত, তখন কার জন্য ভজন করা হবে? মন এবং ইন্দ্রিয়গুলিকে লক্ষ্যের অনুরূপ তৈয়ার করাই তপস্যা। এই লক্ষ্য প্রাপ্তির পরে যোগী কার জন্য তপস্যা করবেন? মন, বচন ও কর্মদ্বারা সর্বতোভাবে সমর্পণের নাম দান। এই সমস্তের পুণ্যফল হল—পরমাত্মার প্রাপ্তি। ফল এখন পৃথক্ নেই, সেইজন্য এই সবের প্রয়োজনীয়তা ফুরিয়ে যায়। সেই যোগী যজ্ঞ, তপস্যা, দান ইত্যাদির ফলকেও অতিক্রম করেন। তিনি পরমপদ লাভ করেন।

### নিষ্কর্ষ –

বর্তমান অধ্যায়ে পাঁচটি প্রমুখ বিষয়ের উপর বিবেচনা করা হয়েছে, যার মধ্যে সর্বপ্রথম সপ্তম অধ্যায়ের শেষে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণদ্বারা বীজারোপিত প্রশ্নগুলিকে স্পষ্টভাবে বোঝাবার আগ্রহে বর্তমান অধ্যায়ের আরস্তে অর্জুন সাতটি প্রশ্ন করেছেন যে— ভগবন! আপনি যাঁর সম্বন্ধে বললেন সেই ব্রহ্ম কি? অধ্যাত্ম কি? সম্পূর্ণ কর্ম কি? অধিদৈব, অধিভূত এবং অধিযজ্ঞ কাকে বলে? এবং শেষ সময়ে আপনি কিরূপে স্মৃতিতে জেগে থাকেন যে, আর কখনও বিস্মৃত হন না? যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, যাঁর কখনও বিনাশ হয় না সেই পরবর্ত্তা। ‘স্বয়ং’- এর উপলব্ধিযুক্ত পরমভাবই অধ্যাত্ম। যার ফলে জীব মায়ার আধিপত্য থেকে মুক্ত হয়ে আত্মার আধিপত্যে চলে আসে তাই অধ্যাত্ম এবং ভূতগণের সেই সমস্তভাব, যা শুভ অথবা অশুভ সংস্কার উৎপন্ন করে, সেই সমস্ত ভাব স্থির হওয়া ‘বিসর্গঃ’-লোপ পাওয়া কর্মের সম্পূর্ণতা। এর পরে কর্ম করবার প্রয়োজন হয় না। অতএব কর্ম শুভাশুভ সংস্কারের উদ্গমকেই বিনষ্ট করে দেয়।

এইরূপে ক্ষরভাব অধিভূত অর্থাৎ ভূতগণের উৎপত্তির মাধ্যম বিনাশশীল ভাব। সেগুলিই ভূতগণের অধিষ্ঠাতা। পরমপুরুষই অধিদৈব। সমস্ত দৈবী সম্পদ তাঁতে বিলীন হয়। এই দেহে অধিযজ্ঞ আমি অর্থাৎ যজ্ঞ যাতে বিলীন হয়, তা আমি, যজ্ঞের অধিষ্ঠাতা আমি। যোগী আমার স্঵রূপ লাভ করেন অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ যোগী ছিলেন। অধিযজ্ঞ যিনি, তিনি এই দেহেই বাস করেন, বাইরে নয়।

শেষ প্রশ্নটি ছিল যে, শেষ সময়ে কিরূপে আপনাকে জানা যায়? তিনি বললেন যে, যিনি নিরস্তর আমাকে স্মরণ করেন, আমার অতিরিক্ত অন্য কোন

বিষয়-বস্তুর চিন্তনকে মনে ঠাঁই দেন না এবং এইরূপ আচরণ করে দেহের সম্বন্ধ ত্যাগ করেন, তিনি সাক্ষাৎ আমার স্বরূপ প্রাপ্ত হন, শেষ সময়েও তিনি আমাকেই প্রাপ্ত হন। দেহত্যাগ করবার পরেই এই উপলব্ধি হবে এমন কথা নয়। যদি মৃত্যুর পরে এই স্থিতি লাভ হত, তাহলে শ্রীকৃষ্ণ পূর্ণ হতেন না। বঙ্গজন্ম ধরে যে পথিক চলে আসছেন ও লাভ করছেন, সেই জন্মী তাঁর স্বরূপ হতেন না। সেইজন্য সম্পূর্ণরূপে মন নিরঞ্জন এবং এই নিরঞ্জন মনেরও বিলয়ই হ'ল অস্তিকাল। তবেই এই দেহের উৎপত্তির মাধ্যম শান্ত হয়ে যায়। সেই সময় পরমভাব-এ প্রবেশের যোগ্যতা লাভ হয়। যিনি এইরূপ স্থিতিলাভ করেছেন, তাঁর পুনর্জন্ম হয় না।

এইরূপ প্রাপ্তির জন্য তিনি স্মরণের বিধান বললেন যে, অর্জুন! নিরস্তর আমার স্মরণ কর এবং যুদ্ধ কর। এই দুটি কাজ একসঙ্গে করা কি করে সম্ভব? কদাচিং এরূপ হবে যে, ‘জয় গোপাল, হে কৃষ্ণ’ বলে বলে লাঠি চালনাও করা হবে। এখানে স্মরণের স্বরূপ স্পষ্ট করলেন যে, যোগধারণাতে স্থির থেকে, আমাকে ছাড়া অন্য কোন বস্তুর স্মরণ না করে, নিরস্তর স্মরণ কর। স্মরণ যখন এত গভীর, তখন যুদ্ধ কিভাবে সম্ভব? মনে করুন এই পুস্তকটি ভগবান, আপনি যখন তার ধ্যান করবেন তখন যেন এর আশে-পাশের বস্তু, সম্মুখে যেগুলি আছে সেগুলির, বা অন্য দেখা-শোনা কোন বস্তুর চিন্তণ যেন মনে না ওঠে, এই সমস্ত যেন আপনি দেখতে না পান। যদি দেখতে পাচ্ছেন, তাহলে ঠিকভাবে স্মরণ হচ্ছে না, এইরূপ স্মরণে যুদ্ধ কি করে হবে? বস্তুতঃ যখন আপনি নিরস্তর স্মরণে প্রবৃত্ত হবেন, তখনই যুদ্ধের যথার্থ স্বরূপ প্রকট হবে। সেই সময় মায়াময় প্রবৃত্তি বাধারূপে উপস্থিত হবে। কাম, ক্রোধ, রাগ দ্বেষ এরা দুর্জয় শক্তি। এই শক্তিগুলি স্মরণে বাধা সৃষ্টি করে। এদের পার করে যাওয়াই যুদ্ধ। এই শক্তিদের নাশ করলেই যোগীপরমগতি লাভ করেন।

এই পরমগতি লাভ করবার জন্য অর্জুন! তুমি ‘ওঁ’জপ কর এবং ধ্যান আমার কর অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ যোগী ছিলেন। নাম ও রূপ আরাধনার চাবিকাঠি।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ এই জিজ্ঞাসার সমাধান করলেন যে পুনর্জন্ম কি? কারা এর অস্তর্গত? তিনি বললেন, ব্রহ্মা থেকে শুরু করে যাবন্মাত্র জগৎ পুনরাবৃত্তি নিয়মের অস্তর্ভুত এবং এদের সমাপ্তির পরেও আমার পরম অব্যক্ত ভাব এবং তাতে স্থিতি সমাপ্ত হয় না।

এই যোগে প্রবিষ্ট পুরুষের গতি দুটি। যিনি পূর্ণপ্রকাশ প্রাপ্ত ষড়শ্চর্যসম্পন্ন এবং উত্থর্বরেতা, যাঁর মধ্যে লেশমাত্রও ক্রটি নেই, তিনি পরমগতি লাভ করেন। যদি ঐ যোগকর্তার মধ্যে লেশমাত্রও ক্রটি থাকে, কৃষ্ণপক্ষের ন্যায় কালিমার সংগ্রাম দেখা যায়, এইরূপ অবস্থাতে যাঁর দেহের সময় পূর্ণ হয় সেই যোগীকে জন্ম নিতে হয়। তিনি সামান্য জীবের মত জন্ম-মৃত্যুর চক্রে জড়ান্না, জন্ম নিয়ে বাকী সাধনা সম্পূর্ণ করেন।

এইরূপে পরের জন্মে সেই ক্রিয়ার আচরণ করে তিনিও সেখানেই পৌঁছান, যার নাম পরমধাম। এর পূর্বেও শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, এর যৎসামান্য সাধনও জন্ম-মৃত্যুর মহাভয় থেকে উদ্বার করে। “উভয় পথই শাশ্বত অর্থাৎ অচল।” এই যথার্থকে বুঝে পুরুষ যোগ থেকে অষ্ট হন না। অর্জুন! তুমি যোগী হও। যোগী বেদ, তপস্যা, যজ্ঞ এবং দানের পুণ্য ফলকে লঙ্ঘন করে যান, পরমগতি প্রাপ্ত হন।

বর্তমান অধ্যায়ে পরমগতির উল্লেখ করেকবারই করা হয়েছে। যাকে অব্যক্ত, অক্ষয় এবং অক্ষর বলে সম্মোধিত করা হয়েছে, যা কখনও ক্ষয় অথবা বিনাশ হয় না। অতএব—

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসুপনিষৎসু ব্ৰহ্মাবিদ্যায়াঃ যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণজূনসংবাদে ‘অক্ষরব্ৰহ্মযোগো’ নাম অষ্টমোহথ্যায়ঃ ॥৮॥

এই প্রকার শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারামী উপনিষদ্ এবং ব্ৰহ্মাবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ-অর্জুনের সংবাদে ‘অক্ষর ব্ৰহ্মযোগ’ নামক অষ্টম অধ্যায় পূর্ণ হ'ল।

ইতি শ্রীমৎপরমহংসপরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে  
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ ‘যথার্থগীতা’ ভাষ্যে ‘অক্ষরব্ৰহ্মযোগো’ নাম  
অষ্টমোহথ্যায়ঃ ॥৮॥

এই প্রকার শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দজীর শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত  
‘শ্রীমদ্ভগবদ্গীতার’ ভাষ্য ‘যথার্থ গীতা’তে ‘অক্ষর ব্ৰহ্মযোগ’ নামক অষ্টম অধ্যায়  
সমাপ্ত হল।

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মানে নমঃ ।।

## ।। অথ নবমোহধ্যাযঃ ।।

ষষ্ঠ অধ্যায়পর্যন্ত যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ যোগের ক্রমিক বিশ্লেষণ করেছেন। যার শুন্দ অর্থ ছিল, যজ্ঞের প্রক্রিয়া। যজ্ঞে সেই আরাধনার বিধি-বিশেষের বর্ণনা আছে, যাতে চরাচর জগৎ আহুতি-সামগ্ৰী রূপে বিদ্যমান। মনের নিরুদ্ধ অবস্থাতে এবং নিরুদ্ধ মনেরও বিলয়কালে সেই অমৃত তত্ত্বকে জানা যায়। সাধনের শেষে যজ্ঞের পরিণাম অমৃতপান করে জ্ঞানী সনাতন ব্রহ্মে স্থিত হয়ে যান। ব্রহ্মে স্থিত অর্থাৎ মিলনের নামই যোগ। সেই যজ্ঞকে কার্যরূপ দেওয়াকেই কর্ম বলে। সপ্তম অধ্যায়ে তিনি বলেছেন যে, যিনি এই কর্ম করেন, তিনি ব্যাপ্ত ব্ৰহ্ম, সম্পূর্ণ কর্ম, সম্পূর্ণ অধ্যাত্মা, অধিদৈব, অধিভূত এবং অধিযজ্ঞ সহ আমাকে জানেন। অষ্টম অধ্যায়ে তিনি বলেছেন যে, পরমগতি একেই বলে, এই হল পরমধার।

প্রস্তুত অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, যোগযুক্ত পুরুষের ঐশ্বর্য কিৱৰপ ? সকলের মধ্যে ব্যাপ্ত থেকেও তিনি কিভাবে নির্লিপ্ত ? কর্ম করেও কিৱৰপে তিনি অকৰ্তা ? সেই পুরুষের স্বভাব এবং প্রভাবের উপর আলোকপাত, যোগকে আচরণে পরিণত কৱাৰ পথে দেবতাদিক বাধা-বিঘ্ন থেকে সতর্ক কৱলেন এবং সেই পুরুষের শরণে যাবাৰ জন্য জোৱ দিলেন।

### শ্রীভগবানুবাচ

ইদং তু তে গুহ্যতমং প্রবক্ষ্যাম্যনসূয়বে ।

জ্ঞানং বিজ্ঞানসহিতং যজ্ঞাত্মা মোক্ষসেহশুভাঃ ॥ ১ ॥

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন- অর্জুন ! অসূয়া (ঈর্ষা, দ্রেষ) মুক্ত তোমার জন্য আমি এই অতি গোপনীয় জ্ঞানকে বিজ্ঞানসহিত বলব অর্থাৎ প্রাপ্তিৰ পৱে মহাপুরুষের অবস্থিতি সম্পর্কে বলব যে, কিৱৰপে সেই মহাপুরুষ সর্বত্র একসঙ্গে কর্ম কৱেন,

কিরনপে জাগৃতি প্রদান করেন, কিরনপে রঠী হয়ে সর্বদা আত্মার সঙ্গে থাকেন? 'যৎ জ্ঞাত্বা'- যা' সাক্ষাৎ জ্ঞানার পর তুমি দুঃখরূপ সংসার থেকে মুক্ত হয়ে যাবে। সেই জ্ঞান কিরনপ? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

রাজবিদ্যা রাজগুহ্যং পবিত্রমিদমুত্তমম্।

প্রত্যক্ষাবগমং ধর্ম্যং সুসুখং কর্তৃমব্যয়ম্॥ ২॥

বিজ্ঞানসংযুক্ত এই জ্ঞান সর্ববিদ্যার রাজা। বিদ্যার অর্থ ভাষা-জ্ঞান অথবা শিক্ষা নয়। 'বিদ্যা হি কা ব্রহ্মগতিপ্রদায়া।', 'সা বিদ্যা যা বিমুক্তয়ে।' বিদ্যা তাকে বলে যা লাভ করে পুরুষ ব্রহ্মপথে চলে মোক্ষলাভ করেন। যদি পথ মধ্যে সিদ্ধাই অথবা প্রকৃতিতে কোথাও আবদ্ধ হন, তাহলে প্রমাণিত হয় যে, অবিদ্যা সফল হয়ে গেছে। সেটা বিদ্যা নয়। এই রাজবিদ্যা নিশ্চিত কল্যাণ করে। এই রাজবিদ্যা সমস্ত গোপনীয়ের রাজা। অবিদ্যা এবং বিদ্যার অবগুর্ণন অনাবরণ ও যোগযুক্ত হলেই এর সঙ্গে মিলন হয়। এই বিদ্যা অতি পবিত্র, উত্তম এবং প্রত্যক্ষ ফলযুক্ত। এদিকে করলেই, ওদিকে ফল লাভ হয়— এইরূপ প্রত্যক্ষ ফলযুক্ত। এটা অন্ধবিশ্বাস নয় যে, এই জন্মের সাধনার ফল অন্য জন্মে লাভ হবে। এটা পরমধর্ম পরমাত্মার সঙ্গে সংযুক্ত। বিজ্ঞানসম্মত এই জ্ঞানলাভ করা সরল এবং অবিনাশী।

দ্বিতীয় অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন- অর্জুন! এই যোগপথে বীজের নাশ হয় না। এর অল্প সাধনও জন্ম-মৃত্যুর মহাভয় থেতে উদ্ধার করে। যষ্ঠ অধ্যায়ে অর্জুন জিজ্ঞাসা করেছিলেন যে, ভগবন্ত! শিথিল প্রযত্নশীল সাধক নষ্ট-প্রষ্ট তো হয়ে যান না? শ্রীকৃষ্ণ বললেন, অর্জুন! প্রথমে তো কর্ম কি, তা বোৰা আবশ্যিক এবং বুবৰার পরে যৎসামান্য সাধন করে থাকলেও তা কোন জন্মে, কখনও বিনাশ হয় না; বরং ঐ যৎসামান্য অভ্যাসের প্রভাবে প্রত্যেক জন্মে তারই আচরণ করেন এবং অনেক জন্মের সাধনার পরিণামস্বরূপ, সেখানেই পৌঁছে যান, যার নাম পরমগতি অর্থাৎ পরমাত্মা। যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ এই সাধনার সম্মেলনেই এখানেও বলছেন যে, এই সাধন করা খুব সহজ এবং অবিনাশী, পরম্পর এর জন্য শ্রদ্ধা নিতান্ত আবশ্যিক।

অশ্রদ্ধানাঃ পুরুষা ধর্মস্যাস্য পরন্তপ।

অপ্রাপ্য মাঃ নিবর্তনে মৃত্যুসংসারবর্ত্তনি॥ ৩॥

পরস্তপ অর্জুন ! এই ধর্মে (যার যৎসামান্য সাধন করে থাকলেও তার বিনাশ হয় না) শ্রদ্ধারহিত পুরুষ (এক ইষ্টে মনকে কেন্দ্রিত করেন না যিনি) তিনি আমাকে লাভ না করে সংসারেই বিচরণ করেন। অতএব শ্রদ্ধা অনিবার্য। আপনি কি সংসার থেকে আলাদা ? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

ময়া ততমিদং সর্বং জগদব্যক্তমূর্তিনা ।

মৎস্তানি সর্বভূতানি ন চাহং তেষ্঵বস্থিতঃ ॥ ৪ ॥

অব্যক্ত স্বরূপ আমার দ্বারা এই সমগ্র বিশ্ব পরিব্যাপ্ত অর্থাৎ আমি যে স্বরূপে স্থিত, তা'সর্বত্র পরিব্যাপ্ত। সমস্ত প্রাণী আমাতে অবস্থিত; কিন্তু আমি তাদের মধ্যে স্থিত নই; কারণ আমি অব্যক্ত স্বরূপে স্থিত। মহাপুরুষ যে অব্যক্ত স্বরূপে স্থিত, সেই স্তর থেকেই (দেহ নই সেই অব্যক্ত স্তর থেকেই) বার্তা করেন। এই ক্রমেই আরও বলছেন—

ন চ মৎস্তানি ভূতানি পশ্য মে যোগমেশ্বরম् ।

ভূতভূম চ ভূতশ্চো মমাত্মা ভূতভাবনঃ ॥ ৫ ॥

বস্তুতঃ সমস্ত ভূত আমাতে অবস্থিত নয়; কারণ তারা মরণধর্মা, প্রকৃতির আশ্রিত; কিন্তু আমার যোগমায়ার ঐশ্বর্য দর্শন কর যে, আমার আত্মা ভূতগণে অবস্থিত না হয়েও তাদের পোষক এবং উৎপাদক। আমি আত্মস্বরূপ সেইজন্য আমি ঐ ভূতগণে অবস্থিত নই। এই হ'ল যোগের প্রভাব। এটা স্পষ্ট করবার জন্য যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ দৃষ্টান্ত দিলেন—

যথাকাশস্থিতো নিত্যং বাযুঃ সর্বত্রগো মহান् ।

তথা সবাণি ভূতানি মৎস্তানীত্যপধারয় ॥ ৬ ॥

যেমন আকাশে উৎপন্ন মহাবায়ু যেরূপ আকাশে সদৈব অবস্থান করেও আকাশকে মলিন করতে পারে না, সেইরূপ ভূতসকল আমাতে স্থিত, এরূপ জানবে। আমি আকাশবৎ নির্লিপ্ত, তারা আমাকে মলিন করতে পারে না। প্রশ্নাটি সম্পূর্ণ হ'ল। এইরূপ হয় যোগের প্রভাব। এখন প্রশ্ন— যোগী করেন কি ? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

**সর্বভূতানি কৌণ্ঠেয় প্রকৃতিং যান্তি মামিকাম্।  
কল্পক্ষয়ে পুনস্তানি কল্পাদৌ বিস্জাম্যহম্॥ ৭॥**

অর্জুন ! কল্পের বিলয়কালে সকলভূত আমার প্রকৃতি অর্থাৎ আমার স্বভাব প্রাপ্ত হয় এবং কল্পাদিতে আমি তাদের পুনঃ পুনঃ ‘বিস্জামি’- বিশেষরূপে সৃষ্টি করি। তারা আগে বিকৃত অবস্থাতে ছিল, তাদেরই রচনা করি, সুসজ্জিত করি। যারা অচেতন, তাদের চেতনা প্রদান করি, কল্পের জন্য প্রেরণ করি। কল্পের তাৎপর্য উখানোন্মুখ পরিবর্তন। আসুরী সম্পদ্য ত্যাগ করে পুরুষ যেমন যেমন দেবী সম্পদের অধিকারী হন, তেমন তেমন কল্পের আরম্ভ হয় এবং যখন ঈশ্বর-ভাব প্রাপ্ত হন, তখনই কল্পের শেষ হয়। নিজের কর্ম সম্পূর্ণ করে কল্পও বিলীন হয়ে যায়। ভজনের আরম্ভ কল্পের আদি এবং যেখানে লক্ষ্য স্পষ্ট হয় সেটাই ভজনের পরাকার্ষা, কল্পের শেষ সেখানেই। যখন প্রত্যগাত্মা যোনির কারণভূত রাগ-দ্বেষাদি থেকে মুক্ত হয়ে নিজ শাশ্঵ত স্বরূপে স্থির হয়ে যায়, এই অবস্থা সম্বন্ধেই শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, তারা আমার প্রকৃতি প্রাপ্ত হয়।

যে মহাপুরুষ প্রকৃতিকে বিলীন করে স্বরূপে স্থিত হন, তাঁর আবার প্রকৃতি কি ? তাঁর মধ্যে কি প্রকৃতি এখনও বাকী ? না, তৃতীয় অধ্যায়ের ৩৩শ শ্লোকে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, সমস্ত প্রাণী নিজ প্রকৃতিকে প্রাপ্ত হয়। তাঁদের উপর প্রকৃতির গুণের যেরূপ প্রভাব থাকে, সেইরূপ তাঁরা কার্য করেন। এবং ‘জ্ঞানবানপি’- প্রত্যক্ষ দর্শনের পরে জ্ঞানীও নিজ প্রকৃতির অনুরূপ চেষ্টা করেন। তিনি অনুগামীদের কল্যাণের জন্য করেন। পূর্ণজ্ঞানী তত্ত্বস্থিত মহাপুরুষের অবস্থিতিই তাঁর প্রকৃতি। তিনি স্ব স্বভাব মতই প্রবৃত্ত থাকেন। কল্পের শেষে মানুষ মহাপুরুষের এই অবস্থিতি প্রাপ্ত হন। মহাপুরুষের এই কৃতিত্বের উপর পুনরায় আলোকপাত করছেন—

**প্রকৃতিং স্বামবষ্টভ্য বিস্জামি পুনঃ পুনঃ।**

**ভূতগ্রামমিমৎ কৃত্স্নমবশং প্রকৃতের্বশাঽ॥ ৮॥**

স্বীয় প্রকৃতি অর্থাৎ মহাপুরুষের অবস্থিতি স্বীকার করে ‘প্রকৃতের্বশাঽ’- নিজ নিজ স্বভাবে স্থিত প্রকৃতির গুণগুলির বশীভূত এই সমস্ত ভূতসমূদায়কে আমি পুনঃ পুনঃ ‘বিস্জামি’- বিশেষরূপে সৃষ্টি, সুসজ্জিত করি। স্বীয় স্বরূপের দিকে এগিয়ে যাবার জন্য তাদের প্রেরণা প্রদান করি। তাহলে তো আপনি এই কর্মদ্বারা আবদ্ধ ?

ন চ মাং তানি কর্মাণি নিবশ্বাস্তি ধনঞ্জয় ।

উদাসীনবদাসীনমসক্তং তেষ্য কর্মসু ॥ ৯ ॥

চতুর্থ অধ্যায়ের নবম শ্লোকে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন যে— মহাপুরুষের কার্য-প্রণালী অলৌকিক হয়। নবম অধ্যায়ের চতুর্থ শ্লোকে বলেছেন যে-আমি অব্যক্তরূপে কর্ম করি। এখানেও বলছেন— ধনঞ্জয়! আমি যে সমস্ত কর্ম অব্যক্তরূপে করি, সেগুলিতে আমার আসঙ্গ নেই। উদাসীন পুরুষের ন্যায় অবস্থিত বলে পরমাত্মা-স্বরূপ আমাকে সেইসকল কর্ম আবদ্ধ করতে পারে না; কারণ কর্মের পরিণামে যে লক্ষ্যপ্রাপ্ত হয়, তাতে আমি অবস্থিত, সেইজন্য সেই সমস্ত কর্ম করার জন্য আমি বাধ্য নই।

এই প্রশ্ন ছিল স্বভাবের সঙ্গে যুক্ত প্রকৃতির কার্যগুলির, মহাপুরুষের অবস্থিতি ছিল, তাঁর রচনা ছিল। এখন আমার অধ্যক্ষতায় মায়া যা' সৃষ্টি করে, তা' কি? তা'ও একটা কল্প—

ময়াধ্যক্ষেণ প্রকৃতিঃ সূয়তে সচরাচরম् ।

হেতুনানেন কৌন্তেয় জগদ্বিপরিবর্ততে ॥ ১০ ॥

অর্জুন! আমার অধ্যক্ষতা দ্বারা অর্থাৎ আমার উপস্থিতিতে সর্বত্র ব্যাপ্ত আমার অধ্যাসন্ধারা এই মায়া (ত্রিগুণময়ী প্রকৃতি, অষ্টধা মূল প্রকৃতি এবং চেতন উভয়ই) চরাচর সহিত জগৎকে রচনা করে, যা' ক্ষুদ্র কল্প, এবং এই কারণেই এই জগৎ আবাগমনের চক্রে ঘূরতে থাকে। প্রকৃতির এইটা ক্ষুদ্র কল্প যার মধ্যে কালের পরিবর্তন হতে থাকে, আমার অধ্যাসায় প্রকৃতিই করে, আমি করি না; কিন্তু সপ্তম শ্লোকের কল্প আরাধনার সংগ্রাম এবং সাধনা সম্পূর্ণ হওয়া পর্যন্ত মার্গদর্শনযুক্ত কল্প মহাপুরুষ স্বয়ং করে থাকেন। এক স্থানে তিনি স্বয়ং কর্তা, যেখানে বিশেষরূপে সংজ্ঞ করেন। এখানে কর্ত্ত্ব প্রকৃতি, যে কেবল আমার অধ্যাস পেয়েই এই ক্ষণিক পরিবর্তন করে, যার মধ্যে দেহ-পরিবর্তন, কাল-পরিবর্তন এবং যুগের পরিবর্তন ইত্যাদিগুলি আছে। এইরূপ ব্যাপ্ত প্রভাব হওয়া সত্ত্বেও মৃচ্য ব্যক্তিগণ আমাকে জানতে পারে না। যেমন—

অবজানন্তি মাং মৃচ্য মানুষীং তনুমাশ্রিতম্ ।

পরং ভাবমজানন্তো মম ভূতমহেশ্বরম্ ॥ ১১ ॥

সমস্ত ভূতের মহান् ঈশ্বররূপ আমার পরমত্বাব সম্বন্ধে যারা জানে না সেই মৃচ্য ব্যক্তিগণ আমাকে মনুষ্য দেহধারী এবং তুচ্ছ বলে অবজ্ঞা করে। সমস্ত প্রাণীগণের ঈশ্বরেরও যিনি মহান् ঈশ্বর, সেই পরমত্বাব-এ আমি অবস্থিত; কিন্তু মনুষ্য দেহ আশ্রয় করে ব্যবহার করি বলে মৃচ্য ব্যক্তিগণ জানে না। তারা আমাকে মানুষ বলে সম্মোধন করে। তাদেরই বা কি দোষ? দৃষ্টিপাত করে যখন, তখন মহাপুরুষের দেহটাই তো দেখতে পায়। আপনি মহান् ঈশ্বরত্বাব-এ স্থিত, কিরণে তারা বুবৰে? কেন তারা দর্শনে অসমর্থ হয়? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

মোঘাশা মোঘকর্মাণো মোঘজ্ঞানা বিচেতসঃ।

রাক্ষসীমাসুরীং চৈব প্রকৃতিং মোহিনীং শ্রিতাঃ॥ ১২॥

তারা বৃথা আশা (যা' কখনও পূর্ণ হবে না এইরূপ আশা), বৃথা কর্ম (বন্ধনকারী কর্ম), বৃথা জ্ঞান (যা বস্তুতঃ অজ্ঞান), ‘বিচেতসঃ’- বিশেষরূপে অচেতন, রাক্ষস এবং অসুরের ন্যায় মোহপ্রাপ্ত হয়, এইরূপ স্বভাব ধারণ করে থাকে অর্থাৎ আসুরী স্বভাবযুক্ত হয়, সেইজন্য মানুষ বলে অবজ্ঞা করে। অসুর এবং রাক্ষসভাব মনেরই স্বভাব, জাতিপ্রসূত বা যৌনিপ্রসূত নয়। যাদের আসুরী স্বভাব তারা আমাকে জানতে পারে না; কিন্তু মহাআগ্নেগ আমাকে জানেন এবং ভজনা করেন—

মহাআনন্দ মাং পার্থ দৈবীং প্রকৃতিমাশ্রিতাঃ।

ভজন্ত্যন্যমনসো জ্ঞাত্বা ভূতাদিমব্যয়ম্॥ ১৩॥

পরস্ত হে পার্থ! দৈবী প্রকৃতি অর্থাৎ দৈবী সম্পদ আশ্রয় করে মহাআগ্নেগ আমাকে সর্বভূতের আদিকারণ, অব্যক্ত এবং অক্ষর জেনে অনন্যমনে অর্থাৎ মনের অন্তরালে অন্য কাউকে স্থান না দিয়ে কেবল আমাতে শ্রদ্ধাযুক্ত হয়ে নিরস্তর আমাকে ভজনা করেন। কিরণে ভজনা করেন? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

সততং কীর্তয়ন্তো মাং যতন্ত্রশ দৃত্বতাঃ।

নমস্যন্তশ মাং ভক্ত্যা নিত্যযুক্তা উপাসতে॥ ১৪॥

তারা নিরস্তর চিন্তনের ব্রতে দৃঢ় থেকে আমার গুণের স্মরণ করেন, প্রাপ্তির জন্য যত্নশীল হন এবং পুনঃ পুনঃ আমাকে নমস্কার করে সদা সমাহিত হয়ে অনন্য ভক্তিদ্বারা আমার উপাসনা করেন। অবিরল নিযুক্ত থাকেন। কি উপাসনা করেন?

এই কীর্তিগান কিরণপ ? অন্য কোন উপাসনা নয় বরং সেই ‘যজ্ঞ’ যা’ বিস্তারপূর্বক বলেছেন। সেই আরাধনা সম্মুখেই যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ এখানে সংক্ষেপে পুনরায় বলেছেন—

জ্ঞানযজ্ঞেন চাপ্যন্তে যজন্তো মামুপাসতে।

একত্বেন পৃথক্ক্রেন বহুধা বিশ্বতোমুখ্যম্ ॥ ১৫ ॥

তাদের মধ্যে কেউ কেউ সর্বব্যাপ্তি বিরাট পরমাত্মারূপ আমাকে জ্ঞানযজ্ঞ দ্বারা যজন করেন অর্থাৎ নিজের লাভ-লোকসান এবং সামর্থ্য বুঝে এই নিয়ত কর্ম যজ্ঞে প্রবৃত্ত হন। কেউ কেউ একচৰ্ভাবে আমার উপাসনা করেন যে, তাঁকে, সেই পরমাত্ম-তত্ত্বে একীভূত হতে হবে এবং কেউ সমস্ত কিছু আমাকে পৃথক রেখে, আমাকে সমর্পণ করে নিষ্কাম সেবা-ভাব দ্বারা আমার উপাসনা করেন এবং নানাভাবে উপাসনা করেন; কারণ এ সকলই একটা যজ্ঞের উঁচু-নীচু স্তর মাত্র। সেবা থেকেই যজ্ঞ আরম্ভ হয়; কিন্তু এই যজ্ঞের অনুষ্ঠান হয় কিরণপে ? যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন— যজ্ঞ করি আমি। যদি মহাপুরূষ রয়ী না হন, তাহলে যজ্ঞ সম্পূর্ণ হবে না। তাঁর নির্দেশ পেয়েই সাধক বুঝতে সক্ষম হন যে, কোন স্তরে তিনি এখন, কতদূর এগিয়েছেন ? বস্তুতঃ যজ্ঞকর্তা কে ? এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন—

অহং ক্রতুরহং যজ্ঞঃ স্বধাহমহমৌষধম্।

মন্ত্রোহমহমেবাজ্যমহমগ্নিরহং হৃতম্ ॥ ১৬ ॥

আমিই কর্তা। বস্তুতঃ কর্তাকে প্রেরকরণপে সংগ্রহণ করেন ইষ্ট। কর্তার দ্বারা যেটুকু সন্তুষ্ট হয়, তা’ আমার কৃপা। আমিই যজ্ঞ। যজ্ঞ আরাধনার বিধি-বিশেষ মাত্র। যজ্ঞ সম্পূর্ণ হবার পর পরিণামস্বরূপ যে অমৃত প্রাপ্ত হয়, তা’ পান করে পুরুষ সনাতন ব্রহ্মকে জানতে পারেন। আমিই স্বধা অর্থাৎ অতীতের অনন্ত সংস্কার বিলীন করা, তাদের তৃপ্ত করতে সক্ষম হওয়া, সেটা আমারই কৃপা। আমিই ভবরোগ দূর করবার ঔষধি। আমাকে লাভ করার পর মনুষ্যগণ এই রোগ থেকে মুক্ত হয়ে যায়। আমিই মন্ত্র। সাধক আমারই কৃপাতে মনকে শ্঵াসের অন্তরালে নিরঙ্গ করতে সমর্থ হয়। এই নিরোধ ক্রিয়াতে যে ‘আজ্য’ (হবি) বস্তু তীব্রতা আনে, তা’ আমি। আমারই প্রকাশে মনের সমস্ত প্রবৃত্তি বিলীন হয় এবং আহুতি অর্থাৎ সমর্পণও আমি।

এখানে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বার বার ‘আমিই’ এই কথা বলছেন। এর তৎপর্য এই যে, আমিই প্রেরকরণপে আত্মা থেকে অভিন্ন হয়ে এবং নিরস্তর নির্ণয় করে যোগক্রিয়া সম্পূর্ণ করতে সাহায্য করি। একেই বিজ্ঞান বলে। ‘পূজ্য মহারাজজী’ বলতেন যে—“যতক্ষণপর্যন্ত ইষ্টদেব রথী হয়ে শ্঵াস-প্রশ্বাসের (নিঃশ্বাস-প্রশ্বাসের) গতি নিয়ন্ত্রণ করতে শুরু না করে দেন, ততক্ষণপর্যন্ত ভজন আরঙ্গই হয় না।” কেউ হাজার চোখ বুজে ভজন করক, দেহ কৃশ করক কিন্তু যতক্ষণ সেই পরমাত্মা, যাঁকে লাভ করতে ইচ্ছুক আমরা, যে স্তরে আমরা দাঁড়িয়ে, সেই স্তর থেকে, আত্মা থেকে অভিন্ন হয়ে জাগ্রত না হন, ততক্ষণ ঠিকভাবে ভজনের স্বরূপ বোঝা যায় না। সেইজন্য মহারাজজী বলতেন—“আমার স্বরূপ ধারণ কর, আমি সব দেব।” শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—সবকিছু আমিই প্রদান করি।

পিতাহমস্য জগতো মাতা ধাতা পিতামহঃ।

বেদ্যং পবিত্রমোক্ষার খাক্সাম যজুরেব চ ॥১৭॥

অর্জুন ! আমিই সম্পূর্ণ জগতের ‘ধাতা’ অর্থাৎ ধারণকর্তা, ‘পিতা’ অর্থাৎ পালনকর্তা, ‘মাতা’ অর্থাৎ জন্মদাত্রী, ‘পিতামহঃ’ অর্থাৎ মূল উদ্গম, যাতে সকলেই জীব হয়ে যায় এবং জানবার যোগ্য পবিত্র ওঁকার অর্থাৎ ‘অহম্ আকার ইতি ওঁকারঃ’ সেই পরমাত্মা আমার স্বরূপে স্থিত। ‘সোহহং’, ‘তত্ত্বমসি’ ইত্যাদি একে অন্যের পর্যায়, এইরূপ জানবার যোগ্য স্বরূপ আমিই। ‘ঝাক্’ অর্থাৎ সম্পূর্ণ প্রার্থনা, ‘সাম’ অর্থাৎ সমস্ত প্রদানকারী প্রক্রিয়া, ‘যজুঃ’ অর্থাৎ যজ্ঞের বিধি-বিশেষণ আমিই। যোগ অনুষ্ঠানের উপর্যুক্ত তিনটি আবশ্যক অঙ্গ আমার দ্বারা সম্পাদিত হয়।

গতির্ভর্তা প্রভুঃ সাক্ষী নিবাসঃ শরণং সুহৃৎ।

প্রভবঃ প্রলয়ঃ স্থানং নিধানং বীজমব্যয়ম ॥ ১৮ ॥

হে অর্জুন ! ‘গতিঃ’ অর্থাৎ লাভের যোগ্য পরমগতি, ‘ভত্ত্ব’-ভরণ-পোষণকারী, সকলের স্বামী, ‘সাক্ষী’ অর্থাৎ দ্রষ্টারূপে স্থিত সকলের জ্ঞাতা, সকলের বাসস্থান, শরণগ্রহণের যোগ্য, অকারণ সুহৃদ, উৎপন্নি এবং প্রলয় অর্থাৎ শুভ-অশুভ সংস্কার সমূহের বিলয় এবং অবিনাশী কারণ আমি। অর্থাৎ শেষে যার মধ্যে বিলীন হয়, সেই সমস্ত বিভূতি আমিই।

তপাম্যহমহং বর্ষং নিগৃহ্ণাম্যঃস্তজামি চ।

অমৃতৎ চৈব মৃত্যুশ্চ সদসচাহমর্জুন ॥ ১৯ ॥

সূর্যরূপে আমি উত্তাপ বিকিরণ করি, বর্ষা আকর্ষণ করি। মৃত্যুর অতীত যে অমৃততত্ত্ব এবং মৃত্যু, সৎ ও অসৎ সব আমি। অর্থাৎ যে পরমপ্রকাশ প্রদান করে, সেই সূর্যও আমি। যাঁরা ভজনা করেন, কখন-কখনও তাঁরা আমাকে অসৎ বলে মনে করেন, তাঁদের মৃত্যু হয়। এইরূপ বলছেন—

ত্রৈবিদ্যা মাং সোমপাঃ পৃতপাপা

যজ্ঞেরিষ্ঠা স্বর্গতঃ প্রার্থয়ন্তে।

তে পুণ্যমাসাদ্য সুরেন্দ্রলোক-

মশ্যন্তি দিব্যান্দিবি দেবভোগান ॥ ২০ ॥

আরাধনা বিদ্যার অঙ্গ তিনটি— ঝুক্, সাম এবং যজু অর্থাৎ প্রার্থনা, সমস্তের প্রক্রিয়া এবং যজনের আচরণ করেন যাঁরা, সোম অর্থাৎ চন্দ্রমার ক্ষীণ প্রকাশ যাঁরা পেয়ে থাকেন, পাপ থেকে মুক্ত হয়ে পবিত্র পুরুষ সেই যজ্ঞের নির্ধারিত প্রক্রিয়ার আচরণ করেন, আমাকে ইষ্টরূপে পূজা করেন, স্বর্গ প্রাপ্তির জন্য প্রার্থনা করেন। একেই অসৎ কামনা বলে, এতে তাঁদের মৃত্যু ঘটে, তাঁদের পুনর্জীব্য হয়, যেরূপ এর আগের শ্লোকটিতে যোগেশ্বর বলেছেন। তাঁরা আমারই পূজা করেন, সেই নির্ধারিত বিধি দ্বারাই করেন, কিন্তু পরিবর্তে স্বর্গ-কামনা করেন। সেই পুরুষগণ পুণ্যকর্মের ফলস্বরূপ ইন্দ্রলোক লাভ করেন, স্বর্গে অসাধারণ দেবভোগ উপভোগ করেন; অর্থাৎ আমিই সেই ভোগ প্রদান করি।

তে তৎ ভুক্তা স্বর্গলোকং বিশালং

ক্ষীণে পুণ্যে মর্ত্যলোকং বিশ্বষ্টি।

এবং ত্রয়ীধর্মমনুপ্রপন্না

গতাগতৎ কামকামা লভন্তে ॥ ২১ ॥

তাঁরা সেই বিপুল স্বর্গলোক উপভোগ করে পুণ্যক্ষয় হলে মৃত্যুলোক অর্থাৎ জন্ম-মৃত্যুর চক্রে বিবর্তিত হন। এইরূপ ‘ত্রয়ীধর্ম’- প্রার্থনা, সমস্ত এবং যজনের

তিনটি বিধিদ্বারা একটা যজ্ঞেরই অনুষ্ঠান করেন যাঁরা, তাঁরা আমার শরণাগত হলেও সকাম হওয়ার জন্য পুনঃ পুনঃ জন্ম-মৃত্যুর চক্রে অর্থাৎ পুনর্জন্ম লাভ করেন। কিন্তু তাঁদের মূল কখনও নাশ হয় না, কারণ এই পথে বীজের নাশ হয় না। কিন্তু যাঁরা কোনরূপ কামনা করেন না, তাঁরা কি লাভ করেন?—

অনন্যাশিষ্টযন্ত্রে মাং যে জনাঃ পর্যুপাসতে।

তেষাং নিত্যভিযুক্তানাং যোগক্ষেমং বহাম্যহম্॥ ২২॥

অনন্যভাব-এ আমাতে স্থিত ভক্তগণ পরমাত্মস্বরূপ আমারই নিরস্তর চিন্তন করেন, ‘পর্যুপাসতে’-লেশমাত্রও ক্রটি না রেখে আমার উপাসনা করেন, সেই নিত্য একীভাবে সংযুক্ত পুরুষগণের যোগক্ষেম স্বয়ং আমি বহন করি অর্থাৎ তাঁদের যোগের সুরক্ষার সমস্ত দায়িত্ব নিজের হাতে তুলে নিই। এর পরেও লোকে অন্যান্য দেবতাগণের ভজনা করে—

যেহেত্যন্যদেবতা ভক্তা যজন্তে শ্রদ্ধায়িতাঃ।

তেহপি মামেব কৌন্তেয় যজন্ত্যবিধিপূর্বকম্॥ ২৩॥

কৌন্তেয়! শ্রদ্ধাযুক্ত হয়ে যে ভক্তগণ অন্যান্য দেবতার পূজা করেন, তাঁরা আমারই পূজা করেন; কারণ সেস্থানে কোন দেবতার অস্তিত্ব নেই, কিন্তু তাঁদের এই পূজা বিধিসম্মত নয়, আমাকে লাভ করার বিধি থেকে এটা পৃথক्।

এখানে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ দ্বিতীয়বার দেবতাগণের প্রকরণ তুলেছেন। সর্বপ্রথম সপ্তম অধ্যায়ের ২০শ শ্লোক থেকে ২৩শ শ্লোকপর্যন্ত তিনি বলেছেন যে, অর্জন! কামনাদ্বারা যাদের জ্ঞান অভিভূত হয়েছে, এইরূপ মৃচ্যবাঙ্গি অন্যান্য দেবতার পূজা করেন এবং যে দেবতাকে পূজা করেন, সেখানে দেবতা বলে কোন সক্ষম সন্তার অস্তিত্বই তো নেই। পরন্তু অশ্বথ, প্রস্তর, ভূত, ভবানী অথবা অন্যত্র যে দেবতার প্রতি শ্রদ্ধা নিবেদন করা হয়, সেখানে কোন দেবতার অস্তিত্ব নেই। সর্বত্র আমিই। সেই স্থানেও আমি দাঁড়িয়ে তাঁদের দেবশ্রদ্ধা সেই-সেই দেবতাতে স্থির করি। ফলেরও বিধান আমি করি, ফল প্রদান করি। ফললাভও হয়; কিন্তু সেই ফল নষ্ট হয়ে যায়। আজ আছে তা কাল ভোগ করে নষ্ট হয়ে যাবে; পরন্তু আমার ভক্তের বিনাশ হয় না। অতএব সেই মৃচ্যগণ, যাদের জ্ঞান অভিভূত হয়েছে, তারা অন্যান্য দেবতার ভজনা করে।

প্রস্তুত অধ্যায়ের ২৩ থেকে ২৫শে শ্লোকপর্যন্ত যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ পুনরায় বলছেন যে, অর্জুন! যাঁরা শ্রদ্ধাপূর্বক অন্যান্য দেবতার পূজা করেন, তাঁরা আমারই পূজা করেন; কিন্তু তা' বিধিসম্মত নয়। সেখানে দেবতার সক্ষম সত্তা নেই। তাদের প্রাপ্তির বিধি দোষপূর্ণ। এখন প্রশ্ন উঠছে যে, যখন তাঁরাও প্রকারাস্ত্রে আপনারই পূজা করেন এবং ফললাভও করেন, তখন তাঁতে ক্ষতি কি?

অহং হি সর্বজ্ঞানাং ভোক্তা চ প্রভুরেব চ।

ন তু মামভিজানন্তি তত্ত্বাশ্চ্যবন্তি তো॥ ২৪॥

সকল যজ্ঞের ভোক্তা অর্থাৎ যজ্ঞ যার মধ্যে বিলীন হয়, যজ্ঞের পরিণামে যা' লাভ হয় তা' আমি এবং আমিই প্রভু; পরন্তু তাঁরা আমাকে তত্ত্বতঃ উত্তমরূপে জানেন না, সেইজন্য 'চ্যবন্তি'-স্থালিত হন। অর্থাৎ তাঁরা কখনও অন্যান্য দেবতাতে পতিত হন এবং তত্ত্বতঃ যতক্ষণ না জানেন ততক্ষণ কামনা দ্বারাও পতিত হন। তাঁদের গতি কি?—

যান্তি দেবৱতা দেবান্ পিতৃন् যান্তি পিতৃবতাঃ।

ভূতানি যান্তি ভূতেজ্যা যান্তি মদ্যাজিনোহপি মাম॥ ২৫॥

অর্জুন! দেবোপাসকগণ দেবগণকে প্রাপ্ত হন। দেবগণ পরিবর্তিত সত্তা। তাঁরা নিজের সদ্ব্যক্তিমানুসারে জীবন অতিবাহিত করেন। পিতৃগণের পূজকগণ পিতৃগণকে প্রাপ্ত হন অর্থাৎ অতীতের মধ্যেই সীমাবদ্ধ থাকেন। ভূতোপাসকগণ ভূত হন অর্থাৎ দেহধারণ করেন এবং আমার ভক্ত আমাকেই লাভ করেন। তাঁরা সাক্ষাৎ আমার স্মরণ হন। তাঁদের পতন হয় না। এটুকুই নয়, আমার পূজার বিধিও সরল—

পত্রং পুষ্পং ফলং তোয়ং যো মে ভক্ত্যা প্রযচ্ছতি।

তদহং ভক্ত্যপহতমশামি প্রযতাত্মনঃ॥ ২৬॥

এখান থেকেই ভক্তি আরম্ভ হয় যে যিনি আমাকে ভক্তিপূর্বক পত্র, পুষ্প, ফল, জল অর্পণ করেন, মন থেকে প্রযত্নশীল সেই ভক্তের ঐসব সামগ্রী আমি গ্রহণ করি। সেইজন্য-

যৎকরোষি যদশ্চাসি যজ্ঞুহোষি দদাসি যৎ।

যন্তপস্যসি কৌণ্ঠেয় তৎকুরুত্ব মদর্পণম্॥ ২৭॥

অর্জুন ! তুমি যে কর্মের (যথার্থ কর্মের) আচরণ কর, যা' আহার কর, যা' হোম কর, দান কর এবং মনসহিত ইল্লিয়সমূহকে আমার অনুরূপ তৈয়ার কর, সেই সমস্ত আমাকে সমর্পণ করবে অর্থাৎ আমার প্রতি সমর্পিত হয়ে এই সমস্ত কর। সমর্পণ করলে আমি যোগক্ষেত্রের দায়িত্ব বহন করব।

শুভাশুভফলেরেবং মোক্ষসে কর্মবন্ধনেঃ।

সন্ধ্যাসযোগযুক্তাত্ত্বা বিমুক্তে মামুপৈষ্যসি॥ ২৮॥

এইরূপে সর্বস্বের ন্যাস সন্ধ্যাসযোগে যুক্ত হয়ে তুমি শুভাশুভ ফল বিশিষ্ট কর্মের বন্ধন থেকে মুক্ত হয়ে আমাকে লাভ করবে।

উপর্যুক্ত তিনটি শ্লোকেই যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ ক্রমবদ্ধভাবে সাধন এবং তার পরিণামের বর্ণনা করেছেন। প্রথমে পত্র, পুষ্প, ফল ও জল পূর্ণশুদ্ধার সঙ্গে অর্পণ, দ্বিতীয় সমর্পিত হয়ে কর্মের আচরণ এবং তৃতীয় পূর্ণ সমর্পণের সঙ্গে সর্বস্বের ত্যাগ। এ সকলদ্বারা কর্মবন্ধন থেকে বিমুক্ত (বিশেষরূপে মুক্ত) হয়ে যাবে। মুক্ত হলে লাভ কি? বলছেন আমাকে লাভ করবে। এখানে মুক্তি এবং প্রাপ্তি একে অন্যের পূরক। আপনার প্রাপ্তিই হ'ল মুক্তি, তাহলে তাতে লাভ? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

সমোহহং সর্বভূতেষু ন মে দ্বেষ্যোহস্তি ন প্রিযঃ।

যে ভজন্তি তু মাং ভক্ত্যা ময়ি তে তেষু চাপ্যহম্॥ ২৯॥

সর্বভূতের প্রতি আমার একই ভাব। সৃষ্টিতে আমার প্রিয় বা অপ্রিয় বলে কেউ নেই; কিন্তু যিনি অনন্য ভক্ত, তিনি আমাতে অবস্থান করেন এবং আমিও তাঁর হাদয়ে বাস করি। এই আমার একমাত্র আত্মীয়তার সম্পর্ক। তাতে পরিপূর্ণ হয়ে যায়। আমাতে ও তাতে কোন পার্থক্য থেকে যায় না। তাহলে তো বহু ভাগ্যবান् ব্যক্তিগণই ভজন করেন? ভজনের অধিকার কাদের? এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

অপি চেৎসুদুরাচারো ভজতে মামনন্যভাক্।

সাধুরেব স মন্ত্ব্যঃ সম্যুক্তিসিতো হি সঃ ॥ ৩০ ॥

অতি দুরাচারীও যদি অনন্যভাবে অর্থাৎ (অন্য + ন) আমাকে ছাড়া কোন অন্য বস্তু অথবা দেবতাকে ভজনা না করে কেবল আমারই নিরস্তর ভজনা করে, তাহলে তাকে সাধু বলে মনে করবে। যদিও এখন সে সাধন নয়, কিন্তু তার সাধু হওয়াতে কোন সন্দেহও নেই; কারণ সে এখন দৃঢ়ব্রত হয়েছে। অতএব ভজন আপনিও করতে পারেন, শর্ত কেবল এই যে, আপনি মানুষ হবেন। কারণ মানুষই দৃঢ়ব্রত হতে সক্ষম। গীতাশাস্ত্র পাপীদের উদ্ধার করে এবং সেই পথিক-

ক্ষিপ্রং ভবতি ধর্মাত্মা শশচ্ছাস্তিং নিগচ্ছতি।

কৌন্তেয় প্রতিজানীহি ন মে ভক্তঃ প্রগশ্যতি ॥ ৩১ ॥

ভজনের প্রভাবে সেই দুরাচারীও শীঘ্রই ধর্মাত্মা হন, পরমধর্ম পরমাত্মার সঙ্গে সংযুক্ত হন এবং সদা শাশ্঵ত পরমশাস্তি লাভ করেন। কৌন্তেয়! আমার ভক্ত কখনও নষ্ট হয় না, তুমি নিশ্চিত জানবে। একটা জন্মে মুক্তিলাভ না হলে, পরের জন্মগুলিতে সেই সাধন সম্পূর্ণ করে শীঘ্রই পরমশাস্তি লাভ করেন। অতএব সদাচারী, দুরাচারী ভজনের অধিকার সকলেরই। এতটাই নয়, বরং—

মাং হি পার্থ ব্যপাশ্রিত্য যেহপি স্যুঃ পাপযোনয়ঃ।

দ্বিয়ো বৈশ্যাস্তথা শুদ্ধাস্তেহপি যাস্তি পরাং গতিম্ ॥ ৩২ ॥

পার্থ! স্ত্রী, বৈশ্য, শুদ্ধ বা পাপযোনি যে কেউ হোক না কেন, তারা সকলেই আমাকে আশ্রয় করে পরমগতি লাভ করে। অতএব গীতাশাস্ত্র মানুষ মাত্রের জন্য, তা' সে যে কোন কর্মেই প্রবৃত্ত হোক না কেন, বিশ্বের যে কোন স্থানে তার জন্ম হয়ে থাকুক না কেন, গীতা সকলের জন্য একসমান কল্যাণের উপদেশ দেয়। গীতাশাস্ত্র সার্বভৌম।

**পাপযোনিঃ**— অধ্যায় ১৬/৭-২১-এ আসুরীবৃক্তির লক্ষণগুলির অন্তর্গত ভগবান বলেছেন যে, যারা শাস্ত্রবিধি ত্যাগ করে নামমাত্র যজ্ঞের দ্বারা সদস্তে যজ্ঞ করে, তারা নরগণের মধ্যে অধম। যজ্ঞের অনুষ্ঠান না করেও যজ্ঞের নাম দিয়ে

সদস্তে যজন করে যারা, তারা ক্রুরকর্ম এবং পাপাচারী (পাপযোনি)। তারা পরমাত্মারূপ আমাকে দ্বেষ করে সেইজন্য পাপী। বৈশ্য এবং শুদ্ধ ভগবৎপথের স্তর-বিশেষ। স্তুজাতির প্রতি কখনও সম্মান, কখনও হেয় দৃষ্টিতে দেখার মনোভাব সমাজে সদাই ছিল; কিন্তু যোগত্রিয়াতে স্তু এবং পুরুষ উভয়েরই সমান প্রবেশাধিকার।

কিং পুনর্বাচ্ছণাঃ পুণ্যা তত্ত্বা রাজ্যযন্তথা ।

অনিত্যমসুখং লোকমিমং প্রাপ্য ভজস্ব মাম ॥ ৩৩ ॥

তাহলে ব্রাহ্মণ, রাজৰ্ষি এবং ক্ষত্রিয় শ্রেণীর ভক্তগণের জন্য কি বলার থাকতে পারে? ব্রাহ্মণ হ'ল এক অবস্থা-বিশেষ, এই অবস্থা প্রাপ্ত সাধকের মধ্যে ব্রহ্মে স্থিত হওয়ার সমস্ত যোগ্যতা পাওয়া যায়। শাস্তি, আর্জব, অনুভবে উপলব্ধি, ধ্যান এবং ইষ্টের নির্দেশ অনুসারে চলবার ক্ষমতা যাঁর মধ্যে আছে, তিনিই ব্রাহ্মণ। রাজৰ্ষি ক্ষত্রিয়ের মধ্যে খন্দি-সিদ্ধির সঞ্চার, শৌর্য, প্রভুভাব, পশ্চাত্পদ না হওয়ার মনোভাব থাকে। এই স্তরের যোগী মুক্ত হয়ে যান, তাঁদের জন্য কিছু বলবার থাকে না। অতএব অর্জন! তুমি সুখবিহীন, ক্ষণভঙ্গুর এই মনুষ্য দেহ ধারণ করেছ যখন, তখন আমারই ভজনা কর। এই নশ্বর দেহের প্রতি আসক্ত হয়ে সময় নষ্ট করো না।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ এখানে চতুর্থবার ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য এবং শুদ্ধের চর্চা করলেন। দ্বিতীয় অধ্যায়ে তিনি বলেছিলেন যে, ক্ষত্রিয়ের জন্য যুদ্ধ অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ কল্যাণের আর কোন পথ নেই। তৃতীয় অধ্যায়ে তিনি বলেছিলেন যে, স্বর্ধমে নিধনও শ্রেয়স্ত্র। সংক্ষেপে চতুর্থ অধ্যায়ে তিনি বলেছিলেন যে, চার বর্ণের সৃষ্টি আমি করেছি। তাহলে কি মানুষের বিভাগ চার জাতিতে করেছেন? বললেন- না, ‘গুণকর্ম বিভাগশঃ’-গুণের পরিমাপে কর্মকে চার শ্রেণীতে ভাগ করা হয়েছে। শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে কর্ম হল একমাত্র যজ্ঞের প্রক্রিয়া। অতএব এই যজ্ঞের অনুষ্ঠান যাঁরা করেন, তাঁরা চার প্রকারের হন। প্রবেশকালে এই যজ্ঞকর্তা শুদ্ধ, অন্তর্জ্ঞ হয়। এইপথে এগিয়ে কিছু ক্ষমতা লাভ হলে, আত্মিক সম্পত্তি কিছু-কিছু সংগ্রহ হয়, যখন, তখন এই যজ্ঞকর্তাই বৈশ্য শ্রেণীতে প্রবেশ করে। এই স্তর থেকে আরও উন্নত হলে প্রকৃতির তিনিটি গুণকে সংযোগ করার ক্ষমতা সম্পন্ন হলে সেই সাধকই ক্ষত্রিয় শ্রেণীতে প্রবেশ করেন এবং যখন এই সাধকের স্বভাবে ব্ৰহ্মানুভূতিৰ যোগ্যতা লাভ হয়, তখন

সাধক ব্রাহ্মণ হন। শুন্দ্র ও বৈশ্য শ্রেণীর সাধকের থেকে ক্ষত্রিয় ও ব্রাহ্মণ শ্রেণীর সাধকগণ ঈশ্বর-প্রাপ্তির অধিক সমীক্ষে অবস্থান করেন। শুন্দ্র ও বৈশ্য ও ব্রহ্মের অন্তর্ভূত হয়ে শান্ত হবে, তাহলে যাঁরা এর চেয়ে উঁচু অবস্থা লাভ করেছেন, তাঁদের জন্য কি বলা বাকী থাকে? তাঁরা তো লাভ করবেনই।

গীতা যে সমস্ত উপনিষদের সার-সর্বস্ব, সেগুলি ব্রহ্মবিদ্যী মহিলাদের কাহিনীতে পরিপূর্ণ। তথাকথিত ধর্মভীরুৎ, গোঁড়া ব্যক্তিগণ বেদাধ্যয়নের অধিকার-অনাধিকারের ব্যবস্থা নিয়ে অনর্থক মস্তিষ্ক চালনায় ব্যস্ত থাকুক; কিন্তু যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের স্পষ্ট বক্তব্য যে, যজ্ঞার্থ কর্মের নির্ধারিত ত্রিয়া-পদ্ধতিতে স্ত্রী-পুরুষ সকলেরই সমান অধিকার। অতএব তিনি ভজনা করবার জন্য উৎসাহ দিচ্ছেন—

মন্মনা ভব মন্ত্রক্তো মদ্যাজী মাং নমস্কুরু ।

মামেবেষ্যসি যুক্তেমাত্মানং মৎপরায়ণঃ ॥ ৩৪ ॥

অর্জুন! মদগতচিন্ত হও। আমার অতিরিক্ত মনে যেন অন্য কোন ভাবের উদয় না হয়। আমার অনন্যভক্ত হও, অনবরত চিন্তনে প্রবৃত্ত থাক। শ্রদ্ধাপূর্বক নিরস্তর আমাকেই পূজা কর এবং আমাকেই নমস্কার কর। এইরূপে আমার শরণাগত হয়ে, আঘাত আমাতে একীভাবে স্থিত করলে আমাকেই লাভ করবে অর্থাৎ আমার সঙ্গে একস্থবোধ করবে।

**নিষ্কর্ষ -**

বর্তমান অধ্যায়ের আরম্ভে শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন— অর্জুন! তোমার মত দোষমুক্ত ভক্তের জন্য আমি এই জ্ঞান বিজ্ঞানসম্মত ভাবে বলব, যা' জানবার পর কিছু জানা বাকী থাকবে না। এই সম্বন্ধে জেনে তুমি সংসার-বন্ধন থেতে মুক্ত হয়ে যাবে। এই জ্ঞান সম্পূর্ণ বিদ্যার রাজা। বিদ্যা তাকেই বলে যা' পরবর্ত্তো স্থিতি প্রদান করে। এই জ্ঞান সম্পূর্ণ গোপনীয় বিষয়গুলির রাজা অর্থাৎ গোপনীয় বিষয়গুলিকে প্রত্যক্ষ করতে সাহায্য করে। এই জ্ঞান প্রত্যক্ষ ফলযুক্ত, সাধন-সুগম ও অবিনাশী। আপনি যদি অংয়ল্ল সাধনও করে থাকেন, তবু তা'কোন কালে নাশ হবে না, বরং এই সাধনের প্রভাবে আপনি পরমশ্রেয়পর্যস্ত পৌঁছে যাবেন; কিন্তু একটা শর্তে, শ্রদ্ধাহীন পুরুষ পরমগতি লাভ না করে এই সংসার-চক্রে বিবর্তিত হয়।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ যোগের ঐশ্বর্যের উপর আলোকপাত করলেন। দুঃখের সংযোগের বিয়োগকেই যোগ বলে অর্থাৎ সংসারের সংযোগ-বিয়োগ থেকে যা' সর্বথা মুক্ত, তার নামই যোগ। পরমতত্ত্ব পরমাত্মার মিলনের নাম যোগ। পরমাত্মার প্রাপ্তি যোগের পরাকাঠা। যিনি এতে স্থিতিলাভ করেছেন, সেই যোগীর প্রভাব লক্ষ্য কর যে, সম্পূর্ণ ভূতগণের প্রভু এবং জীবধারীগণের পোষক হওয়া সত্ত্বেও আমার আত্মা এই ভূতগণে স্থিত নয়। আমি আত্মস্বরূপে স্থিত সেই পরমাত্মা আকাশে উৎপন্ন সর্বত্র বিচরণশীল বায়ু ধেনুপ আকাশে স্থিত হয়েও তাকে মলিন করতে পারে না, সেইনুপ সমস্তভূত আমাতে স্থিত কিন্তু আমি তাদের মধ্যে লিপ্ত নই।

অর্জুন! কল্পের আদিতে ভূতগণকে বিশেষরূপে সৃষ্টি করি, সুসজ্জিত করি এবং কল্পের শেষে সমস্ত ভূত আমার প্রকৃতি অর্থাৎ যোগে আরুচি যে মহাপুরুষ, তাঁর অবস্থিতি, তাঁর অব্যক্তিভাব লাভ করে। যদ্যপি মহাপুরুষ প্রকৃতির অতীত হন; কিন্তু প্রাপ্তির পরে স্বভাব অর্থাৎ স্বয়ং-এ স্থিত থেকে লোক-সংগ্রহের জন্য যে কাজ করেন, তাই হয় তাঁর স্থিতি। এই স্থিতির কার্যকলাপকে সেই মহাপুরুষের প্রকৃতি বলে সম্মোধন করা হয়েছে।

এক রচয়িতা আমি, যে সমস্ত ভূতকে কল্পের জন্য প্রেরণা প্রদান করি এবং আর এক রচয়িতা ত্রিগুণময়ী প্রকৃতি যে আমার ইঙ্গিত পেয়ে চরাচরসহিত ভূতগণকে সৃষ্টি করে। এও এক কল্প, যার মধ্যে দেহ-পরিবর্তন, স্বভাব-পরিবর্তন এবং কাল-পরিবর্তন নিহিত। গোস্বামী তুলসীদাসও তাই বলছেন—

এক দুষ্ট অতিসয় দুখ রূপা। যা বস জীব পরা ভবকৃপা ॥

(রামচরিতমানস, ৩/১৪/৫)

এই প্রকৃতির প্রভেদ দুটি, বিদ্যা ও অবিদ্যা। এর মধ্যে অবিদ্যা অতিশয় দুষ্ট, দুঃখরূপ, যার দ্বারা বাধ্য হয়ে জীব ভবকৃপে পড়ে আছে। যার প্রেরণাতে জীব কাল, কর্ম, স্বভাব এবং গুণের চক্রে জড়িয়ে যায়। অন্যটি-বিদ্যামায়া, যার সম্বন্ধে শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—আমি সৃষ্টি করি। গোস্বামীজীর অনুসারে প্রভু সৃষ্টি করেন—

এক রচই জগ গুণ বস জাকে। প্রভু প্রেরিত নহিঁ নিজ বল তাকে ॥

(রামচরিতমানস, ৩/১৪/৬)

এটি জগতের রচনা করে, গুণ যার আশ্চর্ত। কল্যাণকর গুণ একমাত্র ঈশ্বরে বিদ্যমান। প্রকৃতির কোন গুণই নেই, তা' নশ্বর; কিন্তু বিদ্যাতে প্রভুই প্রেরকরণপে কর্ম করেন।

এইরূপ কল্প দুই প্রকার। বস্তু, দেহ এবং কালের পরিবর্তন এক প্রকারের কল্প; কিন্তু এই যে পরিবর্তন তা' প্রকৃতি আমার ইঙ্গিত পেয়ে করে; কিন্তু এর থেকে শ্রেষ্ঠ কল্প, যা' আত্মাকে নির্মলরূপ প্রদান করে, তার বিন্যাস মহাপুরূষ করেন। তাঁরা অচেতন ভূতগণকে সচেতন করেন। ভজনের আদিই এই কল্পের আরম্ভ এবং ভজনের পরাকার্ষা হল কল্পের শেষ। যখন এই কল্প ভবরোগ থেকে সম্পূর্ণরূপে নিরোগ করে শাশ্বত ব্রহ্মে স্থিতি প্রদান করে, সেই স্থিতি অবস্থা লাভের সময় যোগী আমার অবস্থিতি এবং আমার স্বরূপ লাভ করেন। প্রাপ্তির পরে মহাপুরূষের অবস্থিতিকেই তাঁর প্রকৃতি বলে।

ধর্মগ্রন্থগুলি গঞ্জের মাধ্যমে উল্লেখ করা হয়েছে যে, চারটি যুগ সম্পূর্ণ হওয়ার পরেই কল্প সম্পূর্ণ হয়, মহাপ্লয় হয়। প্রায়ই লোকে এর যথার্থ সম্বন্ধে বুঝতে পারে না। যুগের তাৎপর্য হল দুই। যতক্ষণ আপনি পৃথক্, আরাধ্য পৃথক্, ততক্ষণ যুগধর্ম থাকবে। গোস্বামীজী রামচরিতমানসের উত্তরকাণ্ডে এই বিষয়ে চর্চা করেছেন। যখন তামসিক গুণ কাজ করে, রাজসিক গুণ অল্প মাত্রাতে থাকে, চারিদিকে শক্তি এবং বিরোধভাব দেখা দেয়, এইরূপ ব্যক্তি কলিযুগীয় হয়। সে ভজনে অক্ষম হয়; কিন্তু সাধনা আরম্ভ হলে যুগের পরিবর্তন হয়। রাজসিক গুণের বৃদ্ধি হয়, তামসিক গুণ ক্ষীণ হয়ে আসে, স্বভাবে সামান্য সাত্ত্বিক গুণও চলে আসে, হর্ষ এবং ভয়ের দ্বিধা অন্তর্মনে চলতে থাকে তখন সেই সাধক দ্বাপর যুগের অবস্থা লাভ করে। ক্রমশঃ সাত্ত্বিক গুণের বাহ্যিক হলে, রজোগুণ স্বল্পমাত্রায় থাকে, আরাধনা কর্মে আসক্তি হয়, ত্যাগের ক্ষমতা লাভ করে ত্রেতা যুগে এইরূপ সাধক বহু যজ্ঞ করেন। 'যজ্ঞানাং জপযজ্ঞেহস্মি'- যে জপ যজ্ঞের শ্রেণীতে পড়ে সেই জপ, যার ওঠা-মানা শ্বাস-প্রশ্বাসে (নিঃশ্বাস-প্রশ্বাসে), তার অনুষ্ঠান করবার ক্ষমতা লাভ হয়। যখন শুধু সত্ত্বগুণ বাকী থাকে, বৈষম্যের ভাব বিলুপ্ত হয়, সমতা লাভ হয়, এটাই কৃত্যুগ অর্থাৎ কৃতার্থ যুগ অথবা সত্যুগের প্রভাব। সেই সময় প্রতোক যোগী বিজ্ঞানী হন, ঈশ্বরকে সম্যক্রন্তে জানার যোগ্য হন, স্বাভাবিকভাবে ধ্যানমগ্ন হওয়ার ক্ষমতা তাঁরা লাভ করেন।

বিবেকীগণ মনের মধ্যে যে যুগধর্মের উখ্তান-পতন হয় তা বুঝাতে পারেন। মনকে নিরংকৃত করবার জন্য অধর্মকে পরিত্যাগ করে ধর্মে প্রবৃত্ত হন। যখন নিরংকৃত মনের বিলয় হয় তখন যুগের সঙ্গে কল্পও শেষ হয়ে যায়। পূর্ণত্বে স্থিতি প্রদান করে কল্পও শান্ত হয়ে যায়। একেই প্রলয় বলে, যখন প্রকৃতি পুরুষে বিলীন হয়। এর পর মহাপুরুষের যা অবস্থিতি, তাই তাঁর প্রকৃতি তাঁর স্বভাব।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন- অর্জুন ! মৃচ্ছ ব্যক্তি আমাকে জানে না, ঈশ্বরেরও ঈশ্বর আমাকে তুচ্ছ বলে মনে করে, সাধারণ মানুষ ভাবে। প্রত্যেক মহাপুরুষের সঙ্গে এই বিড়ম্বনা হয়, তৎকালীন সমাজ তাঁদের উপেক্ষা করে। তীব্রভাবে তাঁদের বিরোধ করা হয়েছে। শ্রীকৃষ্ণও এর অপবাদ ছিলেন না। তিনি বলছেন যে, আমি পরমভাব-এ স্থিত; কিন্তু শরীর আমার মানুষেরই, সেইজন্য মৃচ্ছগণ আমাকে তুচ্ছ বলে, মানুষ বলে সম্মোধন করে। এইরূপ ব্যক্তিগণের আশা, কর্ম, জ্ঞান সব ব্যর্থ। এইরূপ ব্যক্তিগণ যা খুশি তাই বলে, যে কোন কাজ করে বলে আমরা কামনা করি না, এইরূপ বললেই যেন নিষ্কাম কর্মযোগী হওয়া যায়। সেই আসুরিক স্বভাব ব্যক্তিগণ আমাকে পরখ করতে পারে না; কিন্তু দৈবী সম্পদ্ধ যাঁরা লাভ করেছেন তাঁরা অনন্যভাবে আমার ধ্যান করেন। নিরস্তর আমার গুণের চিন্তন করেন।

অনন্য উপাসনা অর্থাৎ যজ্ঞার্থ কর্মের মার্গ দুটি। প্রথমটি জ্ঞানযজ্ঞ অর্থাৎ নিজের উপর নির্ভর করে, নিজের সামর্থ্য বুঝে সেই নিয়ত কর্মে প্রবৃত্ত হওয়া এবং অন্যটি প্রভু-সেবক ভাবের, যার মধ্যে সদ্গুরুর প্রতি সমর্পিত হয়ে সেই কর্মই করা হয়। এই দুটি দৃষ্টিকোণের মাধ্যমে লোকে আমার উপাসনা করে; কিন্তু তাঁদের দ্বারা যতটুকু কর্ম সন্তুষ্ট হয় সেই যজ্ঞ, আন্তর্তি, কর্তা, শুদ্ধা এবং ঔষধি-যেগুলির দ্বারা ভবরোগের চিকিৎসা হয়, তা আমি। শেষে যে গতিলাভ হয়, সেই গতিও আমি।

এই যজ্ঞকেই লোকে ‘ত্রৈবিদ্যাঃ’- প্রার্থনা, যজন অর্থাৎ যজ্ঞ এবং সমত্ব প্রদানকারী বিধিগুলির মাধ্যমে সম্পাদন করেন; কিন্তু পরিবর্তে স্বর্গের কামনা করেন, আমি তা’ প্রদানও করি। তাঁর প্রভাবে তাঁরা ইন্দ্রপদ প্রাপ্ত করেন, দীর্ঘকাল ধরে উপভোগ করেন; কিন্তু পুণ্য ক্ষীণ হলে তাঁদের পুনর্জন্ম হয়। সেইজন্য ভোগের কামনা করা উচিত নয়। যিনি অনন্যভাবে অর্থাৎ ‘আমি ছাড়া অন্য কেউ নেই’, এরপ্রভাব নিয়ে নিরস্তর আমার চিন্তন করেন, লেশমাত্রও ক্রটি না রেখে ভজনা করেন, তাঁর যোগের সুরক্ষার দায়িত্ব আমি নিজ হাতে তুলে নিই।

এর পরেও কিছু লোক অন্যান্য দেবতার পূজা করে। তারা আমারই পূজা করে; কিন্তু আমার প্রাপ্তির বিধি তা নয়। সম্পূর্ণ যজ্ঞের ভোক্তা যে আমি এটা তারা জানে না অর্থাৎ তারা পূজার পরিণামে আমাকে লাভ করে না, সেইজন্য তাদের পতন হয়। তারা দেবতা, ভূত অথবা পিতৃগণের কংগ্রিষ্ঠপে নিবাস করে; কিন্তু আমার ভক্ত আমার মধ্যে নিবাস করে, আমার স্বরূপলাভ করে।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ এই যজ্ঞার্থ কর্মকে অতি সহজ বলছেন, তিনি বলছেন, ‘ফল, ফুল অথবা যা’ কিছু শ্রদ্ধার সঙ্গে আমাকে অর্পণ করা হয়, তা আমি গ্রহণ করি। অতএব অর্জুন! তুমি সমস্ত আরাধনা আমাকে সমর্পণ কর। যখন সর্বস্তৰের ন্যাস হবে, তখন তুমি যোগযুক্ত হয়ে কর্মের বন্ধন থেকে মুক্ত হয়ে যাবে এবং সেই মুক্তি ও আমার স্বরূপ এক।

বিশ্বের সমস্ত প্রাণী আমার, কোন প্রাণীর প্রতি আমার প্রীতি বা দেবতাব নেই। আমি তটস্থ থাকি; কিন্তু যিনি আমার অন্য ভক্ত, আমি তাঁর মধ্যে অবস্থিত এবং তিনি আমার মধ্যে স্থিত। অত্যন্ত দুরাচারী, জগন্যতম পাপীও যদি অনন্যভক্তি-শ্রদ্ধার সঙ্গে আমাকে ভজনা করে, তাহলে সে সাধু মান্য করার যোগ্য। যদি সে দৃঢ়নিশ্চয় হয়, তাহলে সে শীত্বাই পরম-এর সঙ্গে সংযুক্ত হয়ে যায় এবং সদা শাশ্঵ত পরমশাস্তি লাভ করে। এখানে শ্রীকৃষ্ণ স্পষ্ট করলেন যে, ধার্মিক কে? এই সৃষ্টির অন্তর্ভূত যে কোন প্রাণী যদি অনন্যভাবে এক পরমাত্মার ভজনা করে, তাঁর চিন্তন করে, তাহলে সে শীত্বাই ধার্মিক হয়ে যায়। অতএব সেই ব্যক্তি ধার্মিক, যে একমাত্র পরমাত্মার স্মরণ করে। অবশ্যে আশ্বাস দিচ্ছেন যে, অর্জুন! আমার ভক্ত কখনও নষ্ট হয় না। শুন্দ, নীচ, আদিবাসী, অনাদিবাসী যে কোন নামধারী, পুরুষ অথবা স্ত্রী, পাপযোনি, তির্যক্যোনি সকলেই আমার শরণাগত হয়ে পরমশ্রেয় লাভ করে। সেইজন্য অর্জুন! সুখরহিত, ক্ষণভঙ্গুর কিন্তু দুর্লভ মনুষ্য দেহ ধারণ করেছ যখন, তখন আমার ভজনা কর। তাহলে ব্রহ্মো স্থিতি প্রদানকারী যোগ্যতাগুলির সঙ্গে যিনি যুক্ত, সেই ব্রাহ্মণ এবং যিনি রাজর্ধিত্বের স্তর থেকে ভজনা করেন, এইরূপ যোগীর জন্য কি বলার থাকতে পারে? তাঁরা তো প্রকৃতির দ্বন্দ্বের অতীত। অতএব অর্জুন! নিরস্তর আমাতেই মনকে যুক্ত কর, নিরস্তর নমস্কার কর। এইরূপে আমার শরণাগত হয়ে তুমি আমাকেই লাভ করবে। যেখান থেকে ফিরে আসতে হয় না।

প্রস্তুত অধ্যায়ে সেই বিদ্যার উপর আলোকপাত করেছেন যা' শ্রীকৃষ্ণ স্বয়ং  
জাগ্রত করেন। এটি রাজবিদ্যা একবার জাগ্রত হলে নিশ্চিতরূপে কল্যাণ করে।  
অতএব—

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্ৰহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণজুনসম্বাদে 'রাজবিদ্যাজাগ্রতি' নাম নবমোহথ্যায়ঃ ॥৯॥

এই প্রকার শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারূপী উপনিষদ্ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র  
বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ এবং অজুনের সংবাদে 'রাজবিদ্যা জাগ্রতি' নাম নবম অধ্যায় পূর্ণ  
হ'ল।

ইতি শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে  
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ 'যথার্থগীতা' ভাষ্যে 'রাজবিদ্যাজাগ্রতি' নাম  
নবমোহথ্যায়ঃ ॥৯॥

এই প্রকার শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত  
'শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা'র ভাষ্য 'যথার্থ গীতা'তে 'রাজবিদ্যা জাগ্রতি' নামক নবম অধ্যায়  
সমাপ্ত হল।

॥ হরিঃ ওঁ তৎসৎ ॥

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মানে নমঃ ।।

## ।। অথ দশমোহধ্যাযঃ ।।

পূর্ব অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ গুপ্ত রাজবিদ্যার বর্ণনা করেছেন, যা' অবশ্যই কল্যাণকর। বর্তমান অধ্যায়ে তিনি বলছেন যে, মহাবাহু অর্জুন! আমার পরম রহস্যপূর্ণ বাণী পুনরায় শোন। এখানে দ্বিতীয়বার সেই বিষয়েই বলার কি প্রয়োজন? বস্তুতঃ সাধকের সাধনা সম্পূর্ণ হওয়া পর্যন্ত বিপদের সন্তান থাকে। যেমন যেমন সাধক স্বরূপের দিকে এগিয়ে যান, তেমন তেমন প্রকৃতির আবরণ সূক্ষ্ম হয়ে আসে, নতুন-নতুন দৃশ্য দেখা যায়। সেই সব সম্বন্ধে মহাপুরুষ জানিয়ে দেন। সাধক জানেন না। যদি মহাপুরুষ মার্গদর্শন করা বন্ধ করে দেন, তাহলে সাধক স্বরূপের উপলক্ষ্মী থেকে বঞ্চিত হবেন। যতক্ষণ সাধক স্বরূপ থেকে দূরে অবস্থান করেন, ততক্ষণ একথা প্রমাণিত যে, প্রকৃতির কোন না কোন আবরণ এখনও বিদ্যমান, সেইজন্য স্থলন হওয়ার সন্তান থাকে। অর্জুন শরণাগত শিষ্য ছিলেন, তিনি বলেছিলেন—  
‘শিষ্যস্তেহহং শাথি মাং ত্বাং প্রপন্নম্।’- ভগবন্ত! আমি আপনার শিষ্য, আপনার শরণাগত, আমাকে রক্ষা করুন। অতএব তাঁর হিতকামনায় যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ পুনরায় বললেন—

### শ্রীভগবানুবাচ

ভূয় এব মহাবাহো শৃণু মে পরমং বচঃ ।

যন্তেহহং প্রীয়মাণায় বক্ষ্যামি হিতকাম্যয়া ॥ ১ ॥

মহাবাহু অর্জুন! আমার পরম প্রভাবপূর্ণ বাক্য পুনরায় শ্রবণ কর, যা' আমি অতিশয় অনুরাগী তোমার হিতকামনায় বলব।

ন মে বিদুঃ সুরগণাঃ প্রভবং ন মহর্ঘঃ ।

অহমাদিহি দেবানাং মহর্ঘাং চ সর্বশঃ ॥ ২ ॥

অর্জুন ! আমার উৎপত্তি সম্বন্ধে দেবতা অথবা মহর্ষিগণ কেউই অবগত নন। শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন, ‘জ্ঞানকর্ম চ মে দিব্যং’- আমার সেই জন্ম এবং কর্ম অনোন্ধিক অর্থাৎ এই চর্মচক্ষুর দ্বারা তা’ দেখা অসম্ভব। সেইজন্য আমার আবির্ভাব সম্বন্ধে দেবতা ও মহর্ষি স্তরের পুরুষগণ অবগত নন। আমি সর্বপ্রকার দেবতা ও মহর্ষিগণের আদিকারণ।

যো মামজমনাদিৎ চ বেত্তি লোকমহেশ্বরম্ ।

অসম্মুচ্ছঃ স মর্ত্যেষু সর্বপাপৈশঃ প্রমুচ্যতে ॥ ৩ ॥

যিনি অজন্মা, অনাদি আমাকে, সমস্ত লোকের মহান् ঈশ্বরকে প্রত্যক্ষ করে জানতে পারেন, মরণধর্ম মনুষ্যমধ্যে সেই পুরুষ জ্ঞানবান्— অর্থাৎ অজ, অনাদি এবং সর্বলোকের মহেশ্বরকে উত্তমরূপে জানা জ্ঞান এবং এইরূপ যিনি জানেন, তিনি সর্বপাপ থেকে মুক্ত হন, তাঁর পুনর্জন্ম হয় না। শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, এই যে উপলক্ষি তা’ও আমারই কৃপা।

বুদ্ধির্জনমসম্মেহঃ ক্ষমা সত্যং দমঃ শমঃ ।

সুখং দুঃখং ভবোহভাবো ভযং চাভয়মেব চ ॥ ৪ ॥

অর্জুন ! নিশ্চয়াত্মিকা বুদ্ধি, সাক্ষাৎকারসহিত জ্ঞান, লক্ষ্যের প্রতি বিবেকপূর্বক প্রবৃত্তি, ক্ষমা, শাশ্বত সত্য, ইন্দ্রিয়সমূহের দমন, মনের শমন, অস্তঃকরণের প্রসন্নতা, চিন্তন-পথের কষ্ট, পরমাত্মার জাগৃতি, স্বরূপের প্রাপ্তিকালে সর্বস্বের লয়, ইষ্টের প্রতি অনুশাসনাত্মক ভয় এবং প্রকৃতি থেকে নির্ভয়তা এবং—

অহিংসা সমতা তুষ্টিস্তপো দানং যশোহযশঃ ।

ভবন্তি ভাবা ভূতানাং মন্ত এব প্রথম্বিধাঃ ॥ ৫ ॥

অহিংসা অর্থাৎ নিজ আত্মাকে অধোগতিতে যেতে না দেওয়ার আচরণ, সমতা অর্থাৎ যাঁর মধ্যে বৈষম্যভাব থাকে না, সন্তোষ, তপ অর্থাৎ মন এবং ইন্দ্রিয়সমূহকে লক্ষ্যের অনুরূপ তৈরী করা, দান অর্থাৎ সর্বস্বের সমর্পণ, ভগবৎপথে মান-অপমান সহ্য করা— এইরূপ প্রাণীগণের উপর্যুক্ত ভাব আমার থেকেই সম্পাদিত হয়। এইসকল ভাব দৈবী চিন্তন-পদ্ধতির লক্ষণ। এই সকলের অভাবকেই ‘আসুরী সম্পদ’ বলে।

মহর্ঘয়ঃ সপ্ত পূর্বে চত্বারো মনবস্তথা ।

মন্ত্রাবা মানসা জাতা যেষাং লোক ইমাঃ প্রজাঃ ॥ ৬ ॥

সপ্তুর্ধি অর্থাৎ যোগের সাতটি ক্রমিক ভূমিকা (শুভেচ্ছা, সুবিচারণা, তনুমানসা, সত্ত্বাপত্তি, অসংস্কৃতি, পদার্থাভাবনা ও তুর্যগা) এবং এদের অনুরূপ অন্তঃকরণ চতুর্ষ্টয় (মন, বুদ্ধি, চিত্ত ও অহংকার), তার অনুরূপ মন যা' আমার ভাব-এ ভাবিত এই সকল আমার সঙ্কল্পদ্বারা (আমার প্রাপ্তির সংকল্প থেকে এবং যা' আমার প্রেরণা থেকেই উৎপন্ন হয়, উভয়েই একে অন্যের পূরক) উৎপন্ন হয়। এই সংসারে এই সমস্ত (সম্পূর্ণ দৈবী সম্পদ) এদেরই প্রজা; কারণ সপ্ত ভূমিকার সঞ্চারে 'দৈবী সম্পদ' ভিন্ন অন্য কিছু নেই।

এতাং বিভূতিং যোগং চ মম যো বেত্তি তত্ততঃ ।

সোহৃবিকম্পেন যোগেন যুজ্যতে নাত্র সংশয়ঃ ॥ ৭ ॥

যে পুরুষ যোগকে ও আমার উপর্যুক্ত বিভূতি সকলকে সাত্ত্বকারসহিত জানেন, সে স্থির ধ্যানযোগের মাধ্যমে আমাতে একীভাবে স্থিত হন। এতে কোন সন্দেহ নেই। বায়ুশূণ্য স্থানে যেরূপ প্রদীপের শিখা অকম্পিত হয়, যোগীর বিজিত চিন্ত্বনেও এই পরিভাষা। প্রস্তুত শ্লোকে 'অবিকম্পেন' শব্দটির অভিপ্রায় এই।

অহং সর্বস্য প্রভবো মন্তঃ সর্বং প্রবর্ততে ।

ইতি মহা ভজন্তে মাং বুধা ভাবসমন্বিতাঃ ॥ ৮ ॥

সমস্ত জগতের উৎপত্তির কারণ আমি। আমার দ্বারাই জগৎ গতিমান। এইরূপ জেনে বিবেকীজ্ঞ শ্রদ্ধা ও ভক্তিপূর্বক নিরস্তর আমারই ভজনা করেন। তাৎপর্য এই যে, যোগীদ্বারা আমার অনুরূপ যে প্রবৃত্তি হয়, তাকে আমি করি। তা' আমারই কৃপা। (কিরণে ? এই সমস্তে পূর্বে বিভিন্ন স্থানে বলা হয়েছে) কিরণে তাঁরা নিরস্তর ভজন করেন ? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

মচিত্তা মদ্গতপ্রাণা বোধযন্তঃ পরম্পরম্ ।

কথযন্তশ্চ মাং নিত্যং তুষ্যন্তি চ রমান্তি চ ॥ ৯ ॥

অন্য কাউকে স্থান না দিয়ে নিরস্তর আমাতেই চিত্ত সংযোগ করেন, আমাকে প্রাণ অর্পণ করেছেন যাঁরা, তাঁরা সর্বদা পরম্পরের মধ্যে আমার প্রক্রিয়াগুলি বোধ করেন। আমার গুণগান করেই সন্তুষ্ট হন এবং নিরস্তর আমাতেই রমণ করেন।

তেষাং সতত্যুক্তানাং ভজতাং প্রীতিপূর্বকম্।

দদামি বুদ্ধিযোগং তৎ যেন মামুপযান্তি তে ॥ ১০ ॥

নিরস্তর আমার ধ্যানে মগ্ন এবং প্রেমপূর্বক ভজনা করেন যাঁরা, আমি তাঁদের সেই বুদ্ধিযোগ অর্থাৎ যোগে প্রবেশ করতে যে বুদ্ধির প্রয়োজন হয় সেই বুদ্ধি প্রদান করি, যে বুদ্ধিমারা তাঁরা আমাকে লাভ করেন। অর্থাৎ যোগের জাগ্রত্ব ইশ্঵রের কৃপা। সেই অব্যক্ত পুরুষ, ‘মহাপুরুষ’ কিরণপে যোগে প্রবেশের বুদ্ধি প্রদান করেন?—

তেষামেবানুকম্পার্থমহমজ্ঞানজং তমঃ।

নাশয়াম্যাত্মভাবস্থো জ্ঞানদীপেন ভাস্ততা ॥ ১১ ॥

তাঁদের উপর পূর্ণ অনুগ্রহ করবার জন্য আমি তাঁদের আত্মাতে একীভাবে স্থিত হয়ে, রথী হয়ে অজ্ঞান থেকে উৎপন্ন অনুকার জ্ঞানরূপ প্রদীপদ্মারা প্রকাশিত করে নষ্ট করি। বস্তুতঃ স্থিতপ্রজ্ঞ যোগীদ্বারা যতক্ষণ সেই পরমাত্মা আপনার আত্মাতে জাগ্রত হয়ে ক্ষণে ক্ষণে সঞ্চালন না করেন, আদেশ-নির্দেশ না দেন, এই প্রকৃতির দ্বন্দ্ব থেকে মুক্ত করে স্বয়ং এগিয়ে না দেন, ততক্ষণ প্রকৃতপক্ষে যথার্থ ভজনের আরম্ভটি হয় না। সকলাদিক থেকে ভগবান কথা বলেন; কিন্তু আরম্ভে তিনি স্বরূপস্থ মহাপুরুষের মাধ্যমেই কথা বলেন। যদি এইরূপ মহাপুরুষের সামিন্ধ্য আপনার না হয়ে থাকে, তবে তার কথা স্পষ্ট হবে না।

ইষ্ট, সদ্গুরু অথবা পরমাত্মার রথী হওয়া একই কথা। সাধকের আত্মায় জাগ্রত হলে তাঁর নির্দেশ চারভাবে পাওয়া যায়। প্রথমে স্তুলসুরা-সম্পন্নী অনুভব হয়। আপনি যখন আরাধনায় বসবেন, তখন আপনার মন কতটা তাতে নিযুক্ত? কখন আরাধনায় মগ্ন হয়? কখন মন আরাধনা করতে চায় না?— প্রতি সেকেন্ডে-মিনিটে ইষ্ট এর সঙ্কেত দেন অঙ্গ-স্পন্দনের মাধ্যমে। অঙ্গ-স্পন্দনকে স্তুলসুরা-সম্পন্নী অনুভব বলে, যা’ প্রতি সেকেন্ডে দু-চার স্থানে একসঙ্গে অনুভব হয় এবং সাধনাতে ব্যবধান উৎপন্ন হলে প্রতি মিনিটে তার অনুভব হয়। এই সঙ্কেত তখনই পাওয়া

যাবে যখন ইষ্টের স্বরূপ আপনি অনন্যভাবে হৃদয়ে ধারণ করবেন অন্যথা সাধারণ জীবের মধ্যে সংক্ষারের সংঘর্ষের ফলস্বরূপ অঙ্গ-স্পন্দন হয়েই থাকে, সেসবের ইষ্ট নির্দেশে সঙ্গ কোন সম্পর্ক নেই।

দ্বিতীয় হল স্বপ্নসুরা-সম্বন্ধী অনুভব। সাধারণ মানুষ যাস্বপ্ন দেখে তা বাসনাজনিত; কিন্তু যদি আপনি ইষ্টকে হৃদয়ে ধারণ করেন, তাহলে এই স্বপ্নও নির্দেশে পরিবর্তিত হবে। যোগী স্বপ্ন দেখেন না, ভবিষ্যৎ দেখেন।

উপর্যুক্ত দুটি অনুভবই প্রারম্ভিক, যে কোন তত্ত্বাত্মিত মহাপুরুষের সাম্মিধ্যে, মনে শুধু তাঁর প্রতি শ্রদ্ধাভাব থাকলে, তাঁর একটু-আধটু সেবা করে থাকলেও এই অনুভব জাগ্রত হয়; কিন্তু এই দুটি অনুভবের থেকেও সূক্ষ্ম শেষ দুটি অনুভব ক্রিয়াজ্ঞক, যা' ক্রিয়ার পথে চলেই গোচরীভূত হয়।

তৃতীয় অনুভব সুযুগ্মি সুরা-সম্বন্ধী। সংসারে প্রত্যেক জীব অচৈতন্য অবস্থাতে পড়ে আছে। মোহনিশায় সকলেই অচৈতন্য। রাত-দিন যা' করে সমস্তটাই স্বপ্ন। এখানে সুযুগ্মির শুন্দ অর্থ এই যে, যখন পরমাত্মার চিন্তনের এইরূপ শৃঙ্খলা উপস্থিত হয় যে মন একদম স্থির হয়ে যায়, দেহটা জেগে থাকে, কিন্তু মন সুপ্ত অবস্থাতে থাকে। এইরূপ অবস্থাতে ইষ্টদের আবার সক্ষেত্র দেন। যোগের অবস্থার অনুরূপ একটা রূপক (দৃশ্য) দেখা দেয়, যা সঠিক দিক্ প্রদান করে, ভূত-ভবিষ্যৎ সম্বন্ধে অবগত করিয়ে দেয়। পূজ্য মহারাজাজী বলতেন, “যেরূপ ডাঙ্গার অচৈতন্য অবস্থার ওযুধ দিয়ে, উচিত চিকিৎসা করে চেতনা ফিরিয়ে আনে, সেইরূপ ভগবানও বলে দেন।”

চতুর্থ অনুভব হল সমসুরা-সম্বন্ধী। যার মধ্যে আপনি ধ্যান কেন্দ্রিত করেছিলেন, সেই পরমাত্মাতে সমতা লাভ হলে। তারপর ওঠা-বসা, চলাফেরা করা, সবসময় সর্বত্র থেকে অনুভূতি হতে থাকে। এইরূপ যোগী ত্রিকালজ্ঞ হন। এই অনুভব ত্রিকালাতীত অব্যক্ত স্থিতিযুক্ত মহাপুরুষ আত্মাতে জাগ্রত হয়ে অজ্ঞানজনিত অন্ধকারকে জ্ঞানরূপ প্রদীপের দ্বারা নষ্ট করেন। এই প্রসঙ্গে অর্জুন জিজ্ঞাসা করলেন—

### অর্জুন উবাচ

পরং ব্রহ্ম পরং ধাম পবিত্রং পরমং ভবান्।

পুরুষং শাশ্঵তং দিব্যমাদিদেবমজৎ বিভূম্ভ।। ১২।।

আহস্ত্বামৃষঃ সর্বে দেবর্ণিরদন্তথা ।

অসিতো দেবলো ব্যাসঃ স্বযং চৈব ব্রবীষি মে ॥ ১৩ ॥

ভগবন् ! আপনি পরমব্রহ্ম, পরমধাম এবং পরম পবিত্র; কারণ আপনাকে সমস্ত ঋষিগণ সনাতন, দিব্যপুরুষ, দেবতাদেরও আদিদেব, অজন্মা এবং সর্বব্যাপী বলেন। পরমপুরুষ, পরমধামেরই পর্যায় দিব্যপুরুষ, অজন্মা ইত্যাদি শব্দ। দেবর্ণি নারদ, অসিত, দেবল, ব্যাস এবং স্বযং আপনি আমাকে তাই বলেছেন। অর্থাৎ পূর্বে পূর্বকালীন মহর্ষিগণ বলেছেন, এখন বর্তমানে যাঁদের সঙ্গ উপলব্ধ—নারদ, দেবল, অসিত এবং ব্যাসদেবের নাম উল্লেখ করলেন, যাঁরা অর্জুনের সমকালীন ছিলেন (অর্জুন সৎপুরুষদের সাম্রাজ্য লাভ করেছিলেন) আপনিও তাই বলেছেন। অতএব—

সর্বমেতদ্বত্তং মন্যে যশ্মাং বদসি কেশব ।

ন হি তে ভগবঘ্যত্তিঃ বিদুর্দেবা ন দানবাঃ ॥ ১৪ ॥

হে কেশব ! আপনি আমাকে যা বলেছেন, তা আমি সত্য বলে মনে করি। আপনার ব্যক্তিত্ব সম্বন্ধে না দেবতাগণ না দানবগণই জানেন।

স্বয়মেবাত্মনাত্মানং বেথ ত্বং পুরুষোত্তম ।

ভূতভাবন ভূতেশ দেবদেব জগৎপতে ॥ ১৫ ॥

হে ভূতগণের সৃষ্টিকর্তা ! হে ভূতগণের ঈশ্বর ! হে দেবদেব ! হে জগৎস্বামিন् ! হে পুরুষমধ্যে উত্তম ! আপনি স্বযং নিজেকে জানেন অথবা যাঁর আত্মায় জাগ্রত হয়ে আপনি জানিয়ে দেন, তিনিই জানেন। সেটাও নিজেকে নিজেই জানা হল। সেইজন্য—

বক্তুরহস্যশেষেণ দিব্যা হ্যাত্মবিভূতযঃ ।

যাভিবিভূতিভিলোকানিমাংস্তং ব্যাপ্য তিষ্ঠসি ॥ ১৬ ॥

আপনিই আপনার ঐ দিব্য বিভূতিগুলির সম্বন্ধে সম্পূর্ণরূপে, যৎসামান্যও বাকী না রেখে বলতে সক্ষম, যে যে বিভূতিদ্বারা আপনি এই লোকসমূহ ব্যাপ্ত করে স্থিত আছেন।

কথং বিদ্যামহং যোগিঃস্ত্রাং সদা পরিচিত্যন্ত।

কেষু কেষু চ ভাবেষু চিন্ত্যোহসি ভগবন্ত্যা ॥ ১৭ ॥

হে যোগিন! (শ্রীকৃষ্ণ যোগী ছিলেন) কিরণে সতত আপনার চিন্তন করলে আমি আপনাকে জানতে পারব? হে ভগবন! কোন কোন ভাবদ্বারা আমি আপনাকে স্মরণ করব?

বিস্তরেগাত্মনো যোগং বিভূতিং চ জনার্দন।

ভূয়ঃ কথয় ত্তপ্তিরি শৃষ্টতো নাস্তি মেহযুতম্ ॥ ১৮ ॥

হে জনার্দন! আপনার যোগশক্তি এবং যোগের বিভূতি সম্বন্ধে পুনরায় বিস্তৃতভাবে বলুন। সংক্ষেপে বর্তমান অধ্যায়ের আরঙ্গেই বলেছেন, পুনরায় বলুন; কারণ অমৃত তত্ত্ব প্রদানকারী এই বচন শ্রবণ করে আমার পরিত্তপ্তি হচ্ছে না।

রাম চরিত জে সুনত অঘাহীঁ। রস বিশেষ জানা তিন্ত নাহীঁ ॥

(রামচরিতমানস, ৭/৫২/১)

যতক্ষণ প্রবেশলাভ না হয়, ততক্ষণ অমৃত তত্ত্ব সম্বন্ধে জানার ব্যাকুলতা থেকেই যায়। প্রবেশের পূর্বেই যদি পথিক চিন্তা করেন যে, বহু জানা হয়েছে, তাহলে তিনি কিছুই জানতে পারেন নি। এতে প্রমাণ হয় যে, সেই ব্যক্তির পথ অবরুদ্ধ হয়ে আসছে। সেইজন্য সাধককে সাধনা সম্পূর্ণ হওয়া পর্যন্ত ইষ্টের নির্দেশ পালন করা উচিত এবং তা আচরণে পরিণত করা উচিত। অর্জুনের উক্ত জিজ্ঞাসা সম্বন্ধে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

শ্রীভগবানুবাচ

হস্ত তে কথয়িষ্যামি দিব্যা হ্যাত্মবিভূতয়ঃ।

প্রাথান্যতঃ কুরুশ্রেষ্ঠ নাস্ত্যন্তো বিস্তরস্য মে ॥ ১৯ ॥

কুরুশ্রেষ্ঠ অর্জুন! এখন আমি নিজের দিব্য বিভূতিসকল, তারমধ্যেও প্রধান-প্রধান বিভূতিসমূহ সম্বন্ধে তোমাকে বলব, কারণ আমার বিস্তৃত বিভূতির অন্ত নেই।

অহমাত্মা গুডাকেশ সর্বভূতাশয়স্থিতঃ।

অহমাদিশ মধ্যৎ চ ভূতানামস্ত এব চ। ২০।।

অর্জুন ! আমিই সর্বভূতের হৃদয়ে অবস্থিত সকলের আত্মা এবং সমস্ত ভূতের আদি, মধ্য এবং অন্ত আমিই অর্থাৎ জন্ম, মৃত্যু এবং জীবনও আমি ।

আদিত্যানামহং বিষ্ণুর্জ্যোতিষাঃ রবিরংশুমান्।

মরীচিমরূপতামস্মি নক্ষত্রাণামহং শশী।। ২১।।

আদিতির দ্বাদশ পুত্রমধ্যে আমি বিষ্ণু এবং জ্যোতিসমূহের মধ্যে আমি প্রকাশমান সূর্য। বায়ুর মধ্যে আমি মরীচি নামক বায়ু এবং আমি নক্ষত্রসমূহের মধ্যে চন্দ্ৰ ।

বেদানাং সামবেদোহস্মি দেবানামস্মি বাসবঃ।

ইন্দ্ৰিয়াণাং মনশ্চাস্মি ভূতানামস্মি চেতনা।। ২২।।

বেদের মধ্যে আমি সামবেদ অর্থাৎ পূর্ণ সমস্ত প্রদানকারী গায়ন। দেবগণের মধ্যে আমি তাদের অধিপতি ইন্দ্র এবং ইন্দ্ৰিয়সকলের মধ্যে আমি মন; কারণ মন-নিগ্ৰহ হৰার পরেই আমাকে জানা সন্তুষ্ট এবং প্ৰাণীদের মধ্যে আমি তাদের চেতনা ।

রংদ্রাণাং শক্ররশ্চাস্মি বিত্তেশো যক্ষরক্ষসাম্।

বসুনাং পাবকশ্চাস্মি মেরঃ শিখরিণামহম।। ২৩।।

আমি একাদশ রংদ্রের মধ্যে শক্র। শক্র অরঃ স শক্ররঃ অর্থাৎ সমস্ত শক্র থেকে আমি মুক্ত। যক্ষ ও রাক্ষসগণের মধ্যে আমি ধনের স্বামী কুবের। অষ্টবসুর মধ্যে আমি অগ্নি এবং শৃঙ্গযুক্ত পর্বতসকলের মধ্যে আমি সুমেরঃ অর্থাৎ সমস্ত শুভের মিলন আমি। সেটাই সর্বোপরি শৃঙ্গ, কোন পৰ্বত শৃঙ্গ নয়। বস্তুতঃ এই সমস্তই যোগ-সাধনার প্রতীক, যৌগিক শব্দ ।

পুরোধসাং চ মুখ্যৎ মাং বিদ্বি পার্থ বৃহস্পতিম।

সেনানীনামহং স্কন্দঃ সরসামস্মি সাগরঃ।। ২৪।।

যাঁরা পুর রক্ষা করেন সেই পুরোহিতগণের মধ্যে আমি বৃহস্পতি, যার থেকে দৈবী সম্পদের সংগ্রহ হয় এবং হে পার্থ ! সেনাপতিগণের মধ্যে আমি স্বামী কার্তিকেয়। কর্মত্যাগকে কার্তিক বলে, যার আচরণ করলে চরাচরের সংহার, প্রলয় এবং ইষ্ট লাভ হয়। জলাশয়সমূহের মধ্যে আমি সাগর।

**মহর্ষীগাং ভৃগুরহং গিরামস্প্যেকমক্ষরম্।**

**যজ্ঞানাং জপযজ্ঞেহস্মি স্থাবরাগাং হিমালয়ঃ।। ২৫।।**

মহর্ষিগণের মধ্যে আমি ভৃগু এবং বাণীমধ্যে একাক্ষর ওঁকার, যা সেই ব্রহ্মের পরিচায়ক। যজ্ঞসকলের মধ্যে আমি জপরূপ যজ্ঞ। যজ্ঞ পরম-এ স্থিতি প্রদানকারী আরাধনার বিধি-বিশেষের চিত্রণকে বলে। তার সারাংশ হল— স্বরূপের স্মরণ এবং নামজপ। দুটি বাণী পার করে নাম যখন যজ্ঞের শ্রেণীতে এসে পৌঁছায়, তখন বাণীদ্বারা জপ করা হয় না, চিন্তন অথবা কঠ থেকেও জপ করা হয় না, বরং তখন শ্বাসে জগ্রত হয়ে যায়। স্মৃতিকে শ্বাসের সঙ্গ নিয়োজন করে মন থেকে অবিরল চলতে হয় মাত্র। যজ্ঞের শ্রেণীভুক্ত নামের ওঠা-নামা শ্বাসের উপর নির্ভর করে। এটা ক্রিয়াত্মক। স্থাবর পদার্থসমূহের মধ্যে আমি হিমালয়। শীতল, সম এবং অচল একমাত্র পরমাত্মা। যখন প্রলয় হয়েছিল, তখন মনু সেই শৃঙ্গেই বাঁধা পড়েছিলেন। অচল, সম এবং শান্ত ব্রহ্মের প্রলয় হয় না। আমি সেই ব্রহ্মের স্থিতি।

**অশ্বথঃ সর্ববৃক্ষাগাং দেবর্ষীগাং চ নারদঃ।**

**গন্ধর্বাগাং চিত্ররথঃ সিদ্ধানাং কপিলো মুনিঃ।। ২৬।।**

সকল বৃক্ষের মধ্যে আমি অশ্বথ। অশ্বঃ— আগামীকালপর্যন্তও যার থাকা সম্বন্ধে স্থির করে বলা যায় না, এইরূপ ‘উত্তর্ব্যমূলমধ্যঃ শাখম্ অশ্বথ’(১৫/১)- উত্তর্ব্য পরমাত্মা যার মূল, নিম্নে প্রকৃতি যার শাখা, এইরূপ সংসারই বৃক্ষস্বরূপ, যাকে অশ্বথ বলা হয়েছে—সামান্য অশ্বথ বৃক্ষ নয় যে পূজা আরম্ভ করবেন। এই প্রসঙ্গেই বলছেন যে—তা’ আমি এবং আমি দেবর্ষিগণের মধ্যে নারদ। ‘নাদস্য রঞ্জনঃ স নারদঃ’। দৈবী সম্পদ এত সৃষ্টি হয়ে যায় যে স্বরে যে ধ্বনি (নাদ) ওঠে তা’ আয়ন্তে চলে আসে, এইরূপ জাগ্রিতি আমি। গন্ধর্বগণের মধ্যে আমি চিত্ররথ অর্থাৎ গায়ন (চিন্তন) করার প্রবৃত্তিসমূহতে যখন স্বরূপ চিত্রিত হতে থাকে, সেই অবস্থা-বিশেষ আমি।

সিদ্ধপুরুষগণের মধ্যে আমি কপিলমুনি। ‘কায়া’কেই কপিল বলে। এতে যখন একাগ্র হওয়া সম্ভব হয়, সেই ঈশ্বরীয় সংগ্রামের অবস্থা আমি।

**উচ্চেংশ্ববসমশ্বানাং বিদ্ধি মামমৃতোন্তবম্।**

**ঐরাবতং গজেন্দ্রাণাং নরাণাং চ নরাধিপম্ ॥ ২৭ ॥**

আমি অশ্বগণের মধ্যে অমৃত থেকে উৎপন্ন উচ্চেংশ্ববা নামক অশ্ব। সংসারের প্রত্যেকটি বস্ত্র বিনাশকীল। আঘাত অজর-অমর, অমৃতস্বরূপ। এই অমৃতস্বরূপ থেকে যার সংগ্রাম হয়, সেই অশ্ব আমি। অশ্বকে গতির প্রতীক বলা হয়। আঘাতস্ত্র গ্রহণ করবার জন্য যখন মন সেই দিকে সচেষ্ট হয়, তখন একেই অশ্ব বলে। এইরূপ গতি আমি। হস্তিগণের মধ্যে আমি ঐরাবত নামক হস্তি। আমাকে মনুষ্যগণের মধ্যে রাজা বলে জানবে। বস্ত্রতঃ মহাপুরুষই রাজা, যার অভাববোধ নেই।

**আয়ুধানামহং বজ্রং ধেনুনামস্মি কামধুক্ঃ।**

**প্রজনশ্চাস্মি কন্দপঃ সর্পাণামস্মি বাসুকিঃ ॥ ২৮ ॥**

আমি শস্ত্রসমূহের মধ্যে বজ্র। গাভীদের মধ্যে কামধেনু। কামধেনু এমন কোন গাভী নয়, যে দুধের পরিবর্তে মনের মত ব্যঙ্গন পরিবেশন করে। খৃষিদের মধ্যে বশিষ্ঠের কাছে কামধেনু ছিল। বস্ত্রতঃ ‘গো’ ইন্দ্রিয়সমূহকে বলে। যে পুরুষগণ ইষ্টকে অনুকূল করতে সমর্থ হন, তাঁরাই ইন্দ্রিয়সমূহকে সংযত করতে পারেন। যাঁর ইন্দ্রিয়সমূহ ইষ্টের অনুরূপ স্থির হয়ে যায়, তাঁর জন্য তাঁরই ইন্দ্রিয়সমূহ ‘কামধেনু’ হয়ে যায়। তখন—

জো ইচ্ছা করিহউ মন মাহীঁ। হরি প্রসাদ কছু দুর্লভ নাহীঁ।।

(রামচরিতমানস, ৭/১১৩/৪)

তাঁর জন্য কিছু দুর্লভ হয় না। প্রজননকারীদের মধ্যে আমি নতুন স্থিতি প্রকট করি। ‘প্রজনন’ অর্থাৎ সন্তানোৎপাদন, চরাচর বিশ্বে রাত-দিন জন্ম হয়েই চলেছে, ইঁদুর-পিপালিকা রাত-দিন জন্ম দিতে ব্যস্ত তা’ নয়; বরং একধরণের পরিস্থিতি থেকে আর এক ধরণের পরিস্থিতি, এইরূপ বৃত্তিশুলির পরিবর্তন হয়, এই পরিবর্তনের স্বরূপ আমি। সর্পগণের মধ্যে আমি বাসুকি।

অনন্তশ্চাস্মি নাগানাং বরংগো যাদসামহম্।

পিতৃগামর্যমা চাস্মি যমঃ সংযমতামহম্॥ ২৯॥

নাগগণের মধ্যে আমি অনন্ত অর্থাৎ শেষনাগ। বস্তুতঃ এটা কোন সর্প নয়। গীতাশাস্ত্রের সমকালীন পুস্তক শ্রীমদ্ভাগবতে এর রূপের বর্ণনা করা হয়েছে যে, পৃথিবী থেকে ত্রিশ হাজার যোজন দূরে পরমাত্মার বৈষণবী শক্তি বিদ্যমান, যার মাথার উপরে এই পৃথিবী সরবের দানার মত ভারশূণ্য অবস্থাতে স্থিত। সে যুগে যোজনের মানদণ্ড যাই ছিল, তবুও এই দূরত্ব পর্যাপ্ত। বস্তুতঃ এটা আকর্ষণ-শক্তির চিত্রণ। বৈজ্ঞানিকগণ যাকে ইথর বলে স্বীকার করেছেন। গ্রহ-উপগ্রহ যাবতীয় জ্যোতিষ্ঠ এই শক্তির আধারেই টিকে আছে। সেই শুণ্যে গ্রহগুলি ভারশূণ্য অবস্থাতে স্থিত। সেই শক্তি সাপের কুণ্ডলীর মত সমস্ত গ্রহগুলিকে জড়িয়ে আছে। এই হল সেই অনন্ত, যার দ্বারা এই পৃথিবী ধৃত। শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—এইরূপ ঈশ্বরীয় শক্তি আমি। জলচরণগণের মধ্যে তাদের অধিপতি ‘বরংণ’ এবং পিতৃগণের মধ্যে ‘অর্যমা’ আমি। যম পাঁচ প্রকারের যেমন—অহিংসা, সত্য, অস্তেয়, ব্রহ্মচর্য এবং অপরিগ্রহ। এসমস্ত পালন করে চলার পথে যে বিকারগুলি বাধা দেয়, সেগুলি ছেদন করাই ‘অরঃ’। বিকারগুলি শাস্ত হলে পিতৃ অর্থাৎ ভূত-সংস্কার ত্তপ্ত হয়, নিবৃত্তি প্রদান করে। শাসকগণের মধ্যে আমি যমরাজ অর্থাৎ উপর্যুক্ত পথগুলির নিয়ামক।

প্রহ্লাদশ্চাস্মি দৈত্যানাং কালঃ কলয়তামহম্।

মৃগাণাং চ মৃগেন্দ্রোহং বৈনতেয়শ্চ পক্ষিণাম্॥ ৩০॥

দৈত্যগণের মধ্যে আমি প্রহ্লাদ। (পর + আহ্লাদ—পরের জন্য আহ্লাদ) প্রেমই প্রহ্লাদ। আসুরী সম্পদ্যুক্ত ব্যক্তির মধ্যেই ঈশ্বরপ্রাপ্তির জন্য আকুলি-বিকুলি আরভ হয়, এর পরেই পরম প্রভুর দিগন্দর্শন হয়, এইরূপ প্রেমো঳্লাস আমি। গণনাকারীদের মধ্যে আমি সময়। এক, দুই, তিন, চার এইরূপ গণনা অথবা ক্ষণ-দিন-পক্ষ-মাস ইত্যাদি নয় বরং ঈশ্বরের চিন্তনে যে সময়টুকু ব্যতীত হয়, সেই সময়টুকু আমি। এমনকি ‘জাগত মে সুমিরণ করে, সোবত মে লো লায়’ অনবরত চিন্তনে যে সময় সেই সময় আমি। পশ্চগণের মধ্যে মৃগরাজ (যোগী ও মৃ + গ অর্থাৎ যোগারূপী জঙ্গলে গমন করেন) এবং পক্ষিগণের মধ্যে আমি গরুড়। জ্ঞানই গরুড়। যখন ঈশ্বরীয় অনুভূতি হয়, তখন এই মনই নিজ আরাধ্যদেবের বাহন হয়ে যায় এবং

যখন এই মনই সংশয়েযুক্ত থাকে, তখন ‘সপ’ হয়ে দংশন করে, যোনির কারণ হয়। গরড় বিষুর বাহন। যে সত্তা বিষে অনুরূপে সঞ্চারিত, জ্ঞানসংযুক্ত মন তাকে নিজের মধ্যে ধারণ করে, তার বাহক হয়ে যাক। শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—আমি সেই মন, যে মন ইষ্টকে ধারণ করে।

পৰনঃ পৰতামস্মি রামঃ শন্তভূতামহম্।

ঘৰাণং মকরশ্চাস্মি শ্রোতসামস্মি জাহ্নবী ॥ ৩১ ॥

যারা পবিত্র করে, তাদের মধ্যে আমি বায়ু। শন্ত্রধারিগণের মধ্যে আমি রাম। ‘রমন্তে যোগিনঃ যশ্চিন্মস রামঃ’। যোগী কার মধ্যে রমণ করেন? অনুভবে। ঈশ্বর ইষ্টরূপে যা’ নির্দেশ দেন, যোগী তার মধ্যে রমণ করেন। সেই জাগৃতির নাম রাম এবং সেই জাগৃতি আমি। মৎস্যগণের মধ্যে আমি মকর এবং নদীগুলির মধ্যে আমি গঙ্গা।

সগৰাণামাদিরন্তশ্চ মধ্যং চৈবাহমজুন।

অধ্যাত্মবিদ্যা বিদ্যানাং বাদঃ প্রবদ্ধতামহম্ ॥ ৩২ ॥

হে অর্জুন! সৃষ্টির আদি, মধ্য ও অন্ত আমি। বিদ্যার মধ্যে আমি অধ্যাত্মবিদ্যা। যা’ আত্মার আধিপত্য প্রদান করে, সেই বিদ্যা আমি। সংসারে অধিকাংশ প্রাণী মায়ার আধিপত্যেই বাস করে। রাগ, দেব, কাল, কর্ম, স্বভাব এবং গুণসমূহদ্বারা প্রেরিত। এদের আধিপত্য থেকে মুক্ত করে আত্মার আধিপত্য নিয়ে যায় যে বিদ্যা, তা আমি, যাকে অধ্যাত্ম বিদ্যা বলে। ব্রহ্মচর্চায় যে পরম্পর বাদ-বিবাদ হয়, তাতে যেটি নির্ণয়ক, এইরূপ বার্তা আমি। বাকী নির্ণয়গুলি তো অনিগৰ্ত থাকে।

অক্ষরাগামকারোহস্মি দ্বন্দ্বঃ সামাসিকস্য চ।

অহমেবাক্ষযঃ কালো ধাতাহং বিশ্বতোমুখঃ ॥ ৩৩ ॥

আমি অক্ষরসমূহের মধ্যে অক্তার অর্থাৎ ওঁকার এবং সমাসসকলের মধ্যে দ্বন্দ্ব নামক সমাস। সাধনার উন্নত অবস্থাতে মন যখন নিশ্চল হয়ে আসে তখন সাধক ইষ্টের সম্মুখীন হন। কোন ইচ্ছা বাকী থাকে না। এখানে স্বামী-সেবকের সংঘর্ষ রয়েছে; কিন্তু দ্বন্দ্বের এই অবস্থা ভগবানের কৃপা। আমি অক্ষয়কাল। কাল

সদা পরিবর্তনশীল; কিন্তু সেই সময়, যা' অক্ষয়, অজর, অমর পরমাত্মাতে স্থিতি প্রদান করে, সেই অবস্থা আমি। বিরাট স্বরূপ অর্থাৎ সর্বত্র ব্যাপ্ত আমি সকলকে ধারণ-পোষণ করি।

**মৃত্যঃ সর্বহরশ্চাহমুক্তবশ্চ ভবিষ্যতাম্ ।**

**কীর্তিঃ শ্রীর্বাক্ত নারীগাং স্মৃতির্মেধা ধৃতিঃ ক্ষমা ॥ ৩৪ ॥**

আমি সকলের নাশক মৃত্য এবং আমি ভাবী উৎপত্তির কারণ। নারীগণের মধ্যে আমি যশ, শক্তি, বাকপটুতা, স্মৃতি, মেধা অর্থাৎ বুদ্ধি, ধৈর্য এবং ক্ষমা।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে—“দ্বাবিমৌ পুরুষৌ লোকে ক্ষরশ্চাক্ষর এব চ।” (অধ্যায় ১৫, শ্লোক ১৬)। পুরুষ দুই প্রকারের হয়, ক্ষয় এবং অক্ষয়। সম্পূর্ণ ভূতাদিকের উৎপত্তি এবং বিনাশশীল এই দেহ ক্ষর পুরুষ। তাঁরা নর, নারী; পুরুষ অথবা স্ত্রী যা কিছু হোন, শ্রীকৃষ্ণের মতানুসারে তাঁরা সকলেই পুরুষ। দ্বিতীয় হল—অক্ষর পুরুষ যা’ কুটস্থ চিত্তের স্থির অবস্থায় দৃষ্ট হয়। এই কারণেই এই যোগপথে নারী-পুরুষ সকলেই সমান স্থিতির মহাপুরুষ হয়েছেন। কিন্তু এখানে স্মৃতি, শক্তি, বুদ্ধি ইত্যাদি গুণ নারীদের বলা হয়েছে। এই সমস্ত সদ্গুণের প্রয়োজন কি পুরুষদের নেই? কোন পুরুষ শ্রীমান्, কীর্তিমান्, বক্তা, স্মরণশক্তিসম্পন্ন, মেধাবী, ধৈর্যবান্ এবং ক্ষমাবান্ হতে চান না? বৌদ্ধিক স্তরে দুর্বল ছেলেদের মধ্যে এই সকল গুণের বিকাশ করার জন্য মাতা-পিতা পড়াশোনার অতিরিক্ত ব্যবস্থা করে থাকেন। এখানে বলছেন এই গুণগুলি কেবল স্ত্রীজাতির মধ্যে পাওয়া যায়। অতএব আপনি বিচার করে দেখুন যে স্ত্রী কে? বস্তুতঃ আপনার হস্তয়ের প্রতিভিই হল ‘নারী’। তার মধ্যে এই সমস্ত গুণের সঠিগুর হওয়া দরকার। এই সমস্ত সদ্গুণ ধারণ করা স্ত্রীলিঙ্গ-পুরুষ সকলের জন্যেই উপযোগী। এই সমস্ত সদ্গুণ আমিই প্রদান করি।

**বৃহৎসাম তথা সাম্নাং গায়ত্রী ছন্দসামহম্ ।**

**মাসানাং মাগশীর্ঘ্যোহহমৃতুনাং কুসুমাকরঃ ॥ ৩৫ ॥**

গায়নের যোগ্য শুভ্রিসমূহের মধ্যে আমি বৃহৎসাম অর্থাৎ বৃহৎ-এর সঙ্গে সংযুক্ত, সমস্ত প্রদানকারী গায়ন অর্থাৎ এইরূপ জাগতি আমি। ছন্দ সমূহের মধ্যে আমি গায়ত্রী ছন্দ। গায়ত্রী কোন মন্ত্র নয়, যা পাঠ করলে মুক্তিলাভ হয়, বরং এটা

একটা সমর্পণাত্মক ছন্দ। তিনবার বিচলিত হবার পর ঋষি বিশ্বমিত্র নিজেকে ইষ্টের প্রতি সমর্পিত করে বলেছিলেন—“ওঁ ভূভূবঃ স্বঃ তৎসবিতুর্বরেণ্যং ভগো দেবস্য ধীমহি ধিয়ো যো নঃ প্রচোদয়াৎ।” অর্থাৎ ভূঃ, ভুবঃ এবং স্বঃ তিনলোকে তত্ত্বরূপে ব্যাপ্ত দেব ! আপনিই বরেণ্য। এইরূপ বুদ্ধি দিন আমাকে, এইরূপ প্রেরণা প্রদান করুন, যাতে আমি লক্ষ্য পোঁচ্ছোতে পারি। এটা একটা প্রার্থনা। সাধক নিজ বুদ্ধিদ্বারা যথার্থ নির্ণয় নিতে পারেন না যে, কখন তিনি ঠিক এবং কখন ভুল ? তাঁর এইরূপ যে সমর্পিত প্রার্থনা, তা’ আমি, যা’ নিশ্চয় কল্যাণকর; কারণ তিনি আমার আশ্রিত। মাসগুলির মধ্যে শীর্ষস্থ মার্গ আমি এবং যার মধ্যে সদা প্রফুল্লতা বিদ্যমান, এইরূপ খাতু, হৃদয়ের এইরূপ অবস্থাও আমি।

**দ্যুতং ছলয়তামস্মি তেজস্তেজস্তিনামহম্।**

**জয়োহস্মি ব্যবসায়োহস্মি সত্ত্বং সত্ত্ববতামহম্।। ৩৬।।**

তেজস্মী পুরুষগণের তেজ আমি। আমি অক্ষক্রীড়া মধ্যে ছলনাকারিগণের ছল। তাহলে তো ভাল, অক্ষক্রীড়াতে কল-বল-ছল করে গেলেই হয়, তাই যখন ভগবান्। না, এরূপ নয়। এই প্রকৃতিই একরকম জুয়া। এই প্রকৃতি ছলনাময়ী। এই প্রকৃতির দন্ত থেকে মুক্ত হবার জন্য প্রদর্শন ত্যাগ করে গুপ্তভাবে ভজন করে যাওয়াই ছল। এটা ছল না হওয়া সত্ত্বেও, আত্মরক্ষার জন্য আবশ্যিক। জড়ভরতের ন্যায় উন্নত, অঙ্গ-বাধির এবং বোবার মত এমনভাবে থাকা উচিত যে, জেনেও যেন কিছুই জানেন না, শুনেও না শোনার ভান করবেন, দেখেও দেখবেন না। গুপ্তভাবেই ভজন করার বিধান, তবেই সাধক প্রকৃতি পুরুষের জুয়াতে বিজয়ী হন। আমি বিজয়ীগণের বিজয় এবং ব্যবসায়গণের নিশ্চয় (যা’ দ্বিতীয় অধ্যায়ের একচল্লিশ শ্লোকে বলেছেন। এই যোগে নিশ্চযাত্মক ক্রিয়া, বুদ্ধি ও দিক্ একটাই, এইরূপ) ক্রিয়াত্মক বুদ্ধি আমি। সান্ত্বিক পুরুষগণের ওজঃ এবং তেজ আমি।

**বৃঞ্গীনাং বাসুদেবোহস্মি পাণ্ডবানাং ধনঞ্জয়ঃ।**

**মুনীনামপ্যহং ব্যাসঃ কবীনামুশনা কবিঃ।। ৩৭।।**

আমি বৃঞ্গীবংশে বাসুদেব অর্থাৎ সর্বত্র যিনি বাস করেন সেই দেব আমি। পাণ্ডবগণের মধ্যে আমি ধনঞ্জয়। পুণ্যই পাণ্ডু এবং আত্মিক সম্পত্তি স্থির সম্পত্তি।

পুণ্যদ্বারা প্রেরিত হয়ে আত্মিক সম্পত্তি যিনি সংগ্রহ করেন আমি সেই ধনঞ্জয়।  
মুনিগণের মধ্যে আমি ব্যাস। পরমতত্ত্বকে ব্যক্ত করার ক্ষমতা যাঁর মধ্যে বিদ্যমান,  
সেই মুনি আমি। কবিদের মধ্যে ‘উশনা’ অর্থাৎ তাতে প্রবেশ প্রদান করেন যিনি,  
সেই কাব্যকার আমি।

দণ্ডো দময়তামস্মি নীতিরস্মি জিগীষতাম্।

মৌনং চৈবাস্মি গুহ্যানাং জ্ঞানং জ্ঞানবতামহম্॥ ৩৮ ॥

দমনকারীগণ মধ্যে দমন করার শক্তি আমি। জিগীষুগণের নীতি আমি।  
গোপনীয় ভাবসমূহের মধ্যে আমি মৌন এবং জ্ঞানিগণ সাক্ষাৎ করে যে জ্ঞান লাভ  
করেন সেই জ্ঞান আমি।

যচ্চাপি সর্বভূতানাং বীজং তদহমজুন।

ন তদন্তি বিনা যৎস্যান্ময়া ভূতং চরাচরম্॥ ৩৯ ॥

অর্জুন! সর্বভূতের উৎপত্তির কারণও আমি; কারণ স্থাবর বা জঙ্গম এমন  
কোন বস্তু নেই, যা' আমা ব্যতীত সন্তানান् হতে পারে। আমি সর্বত্র ব্যাপ্তি। সকলেই  
আমারই সকাশ থেকে।

নান্তোহন্তি মম দিব্যানাং বিভূতীনাং পরন্তপ।

এষ তৃদেশতঃ প্রোক্তো বিভূতেবিস্তরো ময়া॥ ৪০ ॥

পরন্তপ অর্জুন! আমার দিব্য বিভূতির অন্ত নেই। আমি সংক্ষেপে এই সকল  
বিভূতির বর্ণনা করলাম, বস্তুতঃ সে সকল অনন্ত।

বর্তমান অধ্যায়ে সামান্য বিভূতির স্পষ্টীকরণ করা হয়েছে, কারণ এর পরের  
অধ্যায়েই অর্জুন সে সমস্ত দেখতে চেয়েছেন। প্রত্যক্ষ দর্শনের পরই বিভূতিগুলির  
সম্বন্ধে স্পষ্টভাবে জানা যায়। বিচারধারা অবগত করানোর জন্য এর থেকেই সামান্য  
অর্থ দেওয়া হয়েছে।

যদ্যদ্বিভূতিমৎসন্তং শ্রীমদুর্জিতমেব বা।

তত্ত্বেবাবগচ্ছ ত্বং মম তেজোংহশসন্তবম্॥ ৪১ ॥

যা' যা' ঐশ্বর্য্যুক্ত, কান্তিযুক্ত এবং শক্তিযুক্ত বস্তু বিদ্যমান, তাদেব তাদেবকে তুমি আমার তেজের এক অংশমাত্র থেকে উৎপন্ন জান।

অথবা বহুনেতেন কিং জ্ঞাতেন তবার্জুন।

বিষ্টভ্যাহমিদং কৃত্মমেকাংশেন স্থিতো জগৎ।। ৪২।।

অথবা অর্জুন ! এত অধিক জানবার তোমার প্রয়োজন কি ? আমি এই সম্পূর্ণ জগৎ এক অংশমাত্র দ্বারা ধারণ করে রয়েছি।

উপর্যুক্ত বিভূতিসমূহের বর্ণনার তাৎপর্য এই নয় যে, আপনি অথবা অর্জুন এই সমস্ত বস্তুর পূজা করবেন; বরং শ্রীকৃষ্ণের বলবার অভিপ্রায় এই যে, সমস্ত দিক থেকে শ্রদ্ধা কুড়িয়ে কেবল সেই অবিনাশী পরমাত্মায় স্থির করণ। এইটুকুতেই তাঁর কর্তব্য পূর্ণ হবে।

নিষ্কর্ষ –

বর্তমান অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, অর্জুন ! আমি পুনরায় তোমাকে উপদেশ দান করব; কারণ তুমি আমার অত্যন্ত প্রিয়। পূর্বে বলেছেন, তবুও আবার বলছেন; কারণ সাধনা সম্পূর্ণ হওয়া পর্যন্ত সদ্গুরুর কাছ থেকে শ্রবণ করার প্রয়োজন থাকে। আমার উৎপত্তি সম্বন্ধে দেবতা অথবা মহর্ঘিগণ কেউই জানেন না; কারণ তাঁদেরও আদিকারণ আমি। অব্যক্ত স্থিতির পরের সার্বভৌম অবস্থা সম্বন্ধে তিনিই জানেন, যিনি সেই স্থিতি লাভ করেছেন। যিনি আমাকে অজন্মা, অনাদি এবং সমস্তলোকের মহান् ঈশ্বরকে যথার্থ জানেন, তিনিই জ্ঞানী।

বুদ্ধি, জ্ঞান, অসংমুচ্ছতা, ইন্দ্রিয়সমূহকে দমন, মনের শমন, সন্তোষ, তপস্যা, দান এবং কীর্তির ভাব অর্থাৎ দৈবী সম্পদের উক্ত লক্ষণ আমারই কৃপা। সাতজন মহর্ঘি অর্থাৎ যোগের সাতটি ভূমিকা এরও পূর্বেকার তদনুরূপ অস্তঃকরণ চতুর্ষয় এবং এর অনুকূল মন, যা' স্বয়ংস্তু, স্বয়ং রচয়িতা-এই সমস্ত আমাতে ভাবযুক্ত, সম্বন্ধযুক্ত এবং শ্রদ্ধাযুক্ত, সংসারের সমস্ত প্রজা যাঁদের, এরা সকলেই আমা থেকেই উৎপন্ন অর্থাৎ সাধনাময়ী প্রবৃত্তিগুলিই আমার প্রজা। এদের উৎপত্তি স্বতঃ না, গুরুর মাধ্যমে হয়। যিনি উপর্যুক্ত আমার বিভূতিসমূহকে সাক্ষাৎ জেনে নেন, তিনি নিঃসন্দেহে আমাতে একীভূত হন।

অর্জুন! ‘আমিই সকলের উৎপত্তির কারণ’-এইরূপ যাঁরা শ্রদ্ধাপূর্বক অবগত হন, তাঁরা অনন্যভাবে আমার চিন্তন করেন, নিরস্তর আমাতে মন, বুদ্ধি এবং প্রাণপথে নিযুক্ত হন, পরম্পর আমার গুণচিন্তন এবং আমাতে রমণ করেন। নিরস্তর আমাতে সংযুক্ত সেই পুরুষগণকে আমি যোগে প্রবেশের বুদ্ধি প্রদান করি। সেটাও আমারই কৃপা। বুদ্ধিযোগ কিরূপে প্রদান করেন? তো অর্জুন! ‘আত্মাবস্থ’-তাঁদের আত্মাতে জগত হয়ে, তাঁদের হৃদয়ের অজ্ঞানরূপ অন্ধকারকে জ্ঞানরূপ প্রদীপদ্বারা নষ্ট করি।

অর্জুন জিজ্ঞাসা করলেন যে, ভগবন! আপনি পরম পবিত্র, সনাতন, দিব্য, অনাদি এবং সর্বত্র ব্যাপ্ত-এইরূপ মহার্যিগণ বলে থাকেন এবং বর্তমানে দেবৰ্যি নারদ, দেবল, ব্যাস এবং আপনিও সেই এক কথাই বলছেন। এ কথা সত্য যে, আপনাকে দেবতাগণ বা দানবগণ কেউই জানে না। স্বয়ং আপনি যাঁকে জানিয়ে দেন, তিনিই জানতে পারেন। আপনার অনন্ত বিভূতির কথা আপনিই বলতে সমর্থ। অতএব জনার্দন! আপনি আপনার বিভূতিসমূহের সম্বন্ধে সবিস্তারে বলুন। সাধনা সম্পূর্ণ হওয়া পর্যন্ত ইষ্টের নিকট থেকে শ্রবণ করার উৎকর্ষ থাকা উচিত। ইষ্টের অন্তরালে কি আছে, তা’ সাধক কি করে জানবে।

এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ এক-এক করে নিজের একাশিতি প্রমুখ বিভূতির লক্ষণ সংক্ষেপে বললেন—যোগসাধনে প্রবৃত্ত হবার সঙ্গে সঙ্গে প্রাপ্ত কিছু অন্তরঙ্গ বিভূতির বর্ণনা তারমধ্যে করা হয়েছে এবং বাকী ঋদ্ধি-সিদ্ধির সঙ্গে যে-যে বিভূতি লাভ হয়, সেই-সেই বিভূতির উপর আলোকপাত করা হয়েছে এবং শেষে তিনি জোর দিয়ে বললেন— অর্জুন! এত অধিক জানবার তোমার কি প্রয়োজন? এই সংসারে যা কিছু তেজ এবং ঐশ্বর্য্যাকৃত বস্তু আছে, সেই সমস্তই আমার তেজের অংশমাত্রে স্থিত। বস্তুতঃ আমার বিভূতি অনন্ত। এইরূপ বলে যোগেশ্বর বর্তমান অধ্যায় এখানেই সম্পূর্ণ করলেন।

বর্তমান অধ্যায়ে শ্রীকৃষ্ণ নিজের বিভূতিগুলির সম্বন্ধে বৌদ্ধিক জ্ঞানমাত্র দিয়েছেন, যাতে অর্জুনের শ্রদ্ধা সমস্তদিক্ থেকে সরে এক ইষ্টে স্থির হয়; কিন্তু বন্ধুগণ! সবটা শোনার এবং পুঁজানুপুঁজিভাবে বিচার করার পরেও সেই পথে চলে সে সম্বন্ধে জানা বাকী থাকে। এইপথ ক্রিয়াত্মক।

সম্পূর্ণ অধ্যায়ে যোগেশ্বরের বিভূতিসকলেরই বর্ণনা আছে। অতএব-

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসুপনিষৎসু ব্রহ্মাবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণজুন সংবাদে ‘বিভূতিবর্ণনম্’ নাম দশমোহধ্যায়ঃ ॥ ১০ ॥

এই প্রকার শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারূপী উপনিষদ্ এবং ব্রহ্মাবিদ্যাতথা যোগশাস্ত্র  
বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ ও অর্জুনের সংবাদে ‘বিভূতি বর্ণন’ নামক দশম অধ্যায় পূর্ণ হল।

ইতি শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে  
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়াঃ ‘যথার্থ গীতা’ ভাষ্যে ‘বিভূতিবর্ণনম্’ নাম দশমোহধ্যায়ঃ  
॥ ১০ ॥

এই প্রকার শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দজীর শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত  
‘শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা’র ভাষ্য ‘যথার্থ গীতা’তে ‘বিভূতি বর্ণন’ নামক দশম অধ্যায়  
সমাপ্ত হল।

॥ হরিঃ ওঁ তৎসৎ ॥

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মনে নমঃ ।।

।। অথেকাদশোহধ্যাযঃ ।।

পূর্ব অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ নিজের মুখ্য মুখ্য বিভূতিগুলির সংক্ষিপ্ত বর্ণনা প্রস্তুত করেছেন; কিন্তু অর্জুন ভাবলেন যে, তাঁর এই প্রসঙ্গে বিস্তারিতভাবে শোনা হয়ে গেছে, তাই তিনি বললেন যে, আপনার বাণী শ্রবণ করে আমার সকল মোহনাশ হয়েছে; কিন্তু আপনি যা' বললেন, তা' প্রত্যক্ষ করতে ইচ্ছা করি। প্রত্যক্ষ দর্শন এবং শ্রবণের মধ্যে প্রভেদ আকাশ-পাতালের। সেই পথে চলে দেখবার পর বস্তুস্থিতি অন্যরকম হয়। অর্জুন ঐ রূপদর্শন করে কাঁপতে লাগলেন, ক্ষমা-প্রার্থনা করলেন। জ্ঞানী কি কখনও ভয়ভীত হন? তাঁর কোন জিজ্ঞাসা কি বাকী থাকে? না, বৌদ্ধিক স্তরের অনুভব সর্বদা অস্পষ্ট হয়। হ্যাঁ, তা' সম্পূর্ণ জ্ঞানার প্রেরণা অবশ্য প্রদান করে। সেইজন্য অর্জুন নিবেদন করলেন—

অর্জুন উবাচ

মদনুগ্রহায় পরমং গুহ্যমধ্যাত্মসংজ্ঞিতম্।

যদ্বয়োক্তং বচস্তেন মোহোহযং বিগতো মম ॥১॥

ভগবন! আমার প্রতি অনুগ্রহ করে গোপনীয় অধ্যাত্মে প্রবেশপ্রদানকারী যে উপদেশ আপনি দান করলেন, তার দ্বারা আমার অজ্ঞান দূর হয়েছে। আমি এখন জ্ঞানী।

ভবাপ্যয়ৌ হি ভূতানাং শ্রতৌ বিস্তরশো ময়া ।

ত্বতঃ কমলপত্রাক্ষ মাহাত্ম্যমপি চাব্যয়ম্ ॥২॥

কারণ, হে কমলনেত্র! আমি ভূতগণের উৎপত্তি ও প্রলয় এবং আপনার অবিনাশী প্রভাব বিস্তৃতভাবেই আপনার কাছে শুনলাম।

এবমেতদ্যথাথ ত্বমাত্মানং পরমেশ্বর।

দ্রষ্টুমিচ্ছামি তে রূপমেশ্বরং পুরুষোত্তম ॥৩॥

হে পরমেশ্বর ! আপনি নিজেকে যেভাবে ব্যক্ত করেছেন, তাঁতদ্বপ, এতে কোন সন্দেহ নেই; কিন্তু একথা আমি কেবল শুনেছি। অতএব হে পুরুষোত্তম ! সেই গ্রিষ্ম্যবৃক্ষ স্বরূপ আমি প্রত্যক্ষ করতে ইচ্ছা করি।

মন্যসে যদি তচ্ছক্যং ময়া দ্রষ্টুমিতি প্রভো ।

যোগেশ্বর ততো মে তৎ দর্শযাত্মানমব্যয়ম ॥৪॥

হে প্রভো ! আমার দ্বারা আপনার সেই রূপ দেখা সম্ভব, যদি এইরূপ আপনি বিবেচনা করেন, তাহলে যোগেশ্বর ! আপনি আমাকে আপনার অবিনাশী স্বরূপের দর্শন করান। এতে যোগেশ্বর কোন প্রতিবাদ করলেন না; কারণ পূর্বেও তিনি বহুবার বলেছেন যে, তুমি আমার অনন্যভুক্ত এবং প্রিয়সখা। অতএব বড় প্রসন্ন হয়ে তিনি নিজের স্বরূপ প্রকট করলেন—

### শ্রীভগবানুবাচ

পশ্য মে পার্থ রূপাণি শতশোহথ সহস্রশঃ ।

নানাৰিধানি দিব্যাণি নানাৰ্বণ্যাকৃতীনি চ ॥৫॥

পার্থ ! শত শত এবং সহস্র সহস্র নানা প্রকার, নানা বর্ণ এবং নানা আকৃতি বিশিষ্ট আমার দিব্যস্বরূপ দর্শন কর।

পশ্যাদিত্যাঘসূন্ রঞ্জানশ্চনৌ মরহতস্তথা ।

বহুন্যদ্রষ্টপূর্বাণি পশ্যাশ্চযাণি ভারত ॥৬॥

হে ভারত ! অদিতির দ্বাদশপুত্র, অষ্টবসু, একাদশরঞ্জ, অশ্বিনীকুমারদ্বয় এবং উনপঞ্চাশ মরহৎ দর্শন কর এবং আরও বহু অদ্রষ্টপূর্ব আশ্চর্যময়রূপ দর্শন কর।

ইহৈকস্থং জগৎকৃত্মং পশ্যাদ্য সচরাচরম् ।

মম দেহে গুড়াকেশ যচ্চান্যদ্রষ্টুমিচ্ছসি ॥৭॥

অর্জুন ! এখন আমার এই দেহে একত্র অবস্থিত সমগ্র স্থাবর-জঙ্গমাত্মক বিশ্ব এবং অন্য যা' কিছু দেখতে ইচ্ছা কর, তা' দর্শন কর।

এই প্রকার তিনটি শ্লোকে ভগবান্ একনাগাড়ে দর্শন করিয়ে গেছেন কিন্তু অর্জুন কিছুই দেখতে পেলেন না, অতএব এইরূপ দেখাতে দেখাতে ভগবান্ হঠাৎ থেমে গেলেন ও বললেন—

ন তু মাঃ শক্যসে দ্রষ্টুমনেনৈব স্বচক্ষ্য।

দিব্যং দদামি তে চক্ষুঃ পশ্য মে যোগমেশ্বরম্। ।৮।।

অর্জুন ! তুমি তোমার নিজের চক্ষুদ্বারা অর্থাৎ বৌদ্ধিক দৃষ্টিদ্বারা আমাকে দর্শন করতে সমর্থ হবে না সেইজন্য আমি তোমাকে দিব্য অর্থাৎ অলৌকিক দৃষ্টি প্রদান করছি, যার সাহায্যে আমার প্রভাব এবং যোগশক্তি দর্শন কর।

এদিকে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের কৃপা-প্রসাদে অর্জুন সেই দৃষ্টিলাভ করলেন এবং দর্শন করলেন, উদিকে সেই দৃষ্টিই যোগেশ্বর ব্যাসের কৃপা-প্রসাদে সঞ্জয় লাভ করেছিলেন। যা' কিছু অর্জুন দর্শন করেছিলেন, সঞ্জয়ও তাই দর্শন করেছিলেন এবং তার প্রভাবে নিজেকে কল্যাণের অংশীদার করেছিলেন। স্পষ্ট হল যে শ্রীকৃষ্ণ যোগীর সমকক্ষ।

### সঞ্জয় উবাচ

এবমুক্তা ততো রাজশ্বামোগেশ্বরো হরিঃ।

দর্শযামাস পার্থায় পরমং রূপমেশ্বরম্। ।৯।।

সঞ্জয় বললেন— হে রাজন ! মহাযোগেশ্বর হরি এইরূপ বলে পার্থকে নিজের পরম শ্রেষ্ঠ্যবৃক্ষ দিব্যস্বরূপ দেখালেন। যিনি স্বয়ং যোগী এবং অন্যকেও যোগপ্রদান করার ক্ষমতা যাঁর মধ্যে রয়েছে, যিনি যোগের স্বামী, তাঁকে যোগেশ্বর বলা হয়। এইরূপ হরি সর্বস্বের হরণ করেন। যদি সুখ বাদ দিয়ে কেবল দুঃখ হরণ করেন তাহলে পরে দুঃখ আসবে। অতএব সমস্ত পাপনাশ করে, সর্বস্ব হরণ করে, নিজের স্বরূপ প্রদান করতে যিনি সক্ষম, তিনিই হরি। তিনি পার্থকে নিজের দিব্যস্বরূপ দেখালেন। সম্মুখে তো দাঁড়িয়ে ছিলেনই।

অনেকবক্রনয়নমনেকাঙ্গুতদর্শনম্।

অনেকদিব্যাভরণং দিব্যানেকোদ্যতাযুধম্॥১০॥

অনেক মুখ এবং অনেক নেত্রযুক্ত, অনেক অঙ্গুত আকৃতিবিশিষ্ট, অনেক দিব্য ভূষণযুক্ত এবং অনেক উদ্যত দিব্য আযুধে সজ্জিত এবং—

দিব্যমাল্যান্বরধরং দিব্যগন্ধানুলেপনম্।

সর্বশর্যাময়ং দেবমনন্তং বিশ্বতোমুখম্॥১১॥

দিব্যমাল্য এবং বস্ত্রে ভূষিত, দিব্যগন্ধান্বারা অনুলিপ্ত, সর্বপ্রকার আশ্চর্যেযুক্ত অসীম বিরাট স্বরূপ পরমদেবকে দৃষ্টিলাভ করার পর অর্জুন দেখলেন।

দিবি সূর্যসহস্রস্য ভবেদ্যুগপদুথিতা।

যদি ভাঃ সদ্শী সা স্যাত্তাসন্তস্য মহাত্মনঃ॥১২॥

(অজ্ঞানবন্ধ ধৃতরাষ্ট্র, সংযমবন্ধ সংজ্ঞয়—যেমন পূর্বে উল্লেখ করা হয়েছে) সংজ্ঞয় বললেন— হে রাজন! আকাশে যুগপৎ সহস্র সূর্যের উদয় হলে যত প্রকাশ হয়, সেই প্রকাশও ঐ মহাত্মার প্রকাশের সদৃশ কদাচিত্ত হতে পারে। এখানে শ্রীকৃষ্ণ মহাত্মা, যোগেশ্বর ছিলেন।

তত্ত্বেকস্থং জগৎকৃত্মনং প্রবিভক্তমনেকধা।

অপশ্যেদেবদেবস্য শরীরে পাণুবস্তদা॥১৩॥

পাণুপুত্র অর্জুন (পুণ্যাই পাণু, পুণ্য অনুরাগ উৎপন্ন করে) তখন সেই পরমদেবের দেহে নানাভাবে বিভক্ত সমগ্র জগৎ একত্র স্থিত দেখলেন।

ততঃ স বিশ্বায়াবিষ্টো হষ্টরোমা ধনঞ্জয়ঃ।

প্রণম্য শিরসা দেবং কৃতাঞ্জলিরভাষত॥১৪॥

তদনন্তর আশচ্যাস্ত্রিত, রোমাপ্রিত অর্জুন পরমাত্মাকে অবনত মস্তকে প্রণাম করে (পূর্বেও প্রণাম করতেন; কিন্তু প্রভাব দর্শন করে সাদারে প্রণাম করে) করজোড়ে বললেন। এখানে অর্জুন আস্তরিকভাবে অস্তঃকরণ থেকে প্রণাম করলেন এবং বললেন—

## অর্জুন উবাচ

পশ্যামি দেবাংস্তৰ দেব দেহে

সর্বাংস্তথা ভূতবিশেষসংজ্ঞান्।

ব্ৰহ্মাগমীশং কমলাসনস্ত-

মৃৰ্মীংশ্চ সর্বানুরগাংশ্চ দিব্যান্ম।।১৫।।

হে দেব ! আপনার দেহে আমি সমস্ত দেবতা এবং বহুভূতের সমুদায়, পদ্মের আসনে অবস্থিত ব্ৰহ্মা, মহাদেব, সমস্ত ঋষিগণ এবং দিব্য সর্পসমূহ দেখছি। এটা প্রত্যক্ষ দর্শন ছিল, নিচুক কল্পনা নয়; কিন্তু তখনই এইসমস্ত হয় যখন যোগেশ্বর, পূর্ণত্বপ্রাপ্ত মহাপুরুষ আন্তরিক দৃষ্টি প্রদান করেন। এটা সাধনগম্য।

অনেকবাহুদরবক্তৃনেত্ৰং

পশ্যামি ত্বাং সর্বতোহনন্তরপম্।

নান্তং ন মধ্যৎ ন পুনস্তবাদিং

পশ্যামি বিশ্বেশ্বর বিশ্বরূপ।।১৬।।

বিশ্বের স্বামী ! সর্বত্র বহু বাহু, বহু উদর, বহু মুখ ও বহু নেত্র বিশিষ্ট আপনার অনন্তরূপ আমি দেখছি। হে বিশ্বরূপ ! আমি আপনার আদি, মধ্য ও অন্ত দেখছি না অর্থাৎ আপনার আদি, মধ্য ও অন্তের নির্ণয় করতে অক্ষম।

কিৱাচিনং গদিনং চক্ৰিণং চ

তেজোৱাশং সর্বতো দীপ্তিমন্তম্।

পশ্যামি ত্বাং দুনিৰীক্ষ্যৎ সমস্তা-

দীপ্তানলার্কণ্ডুতিমপ্রমেয়ম।।১৭।।

কিৱাট, গদা ও চক্ৰধারী, সর্বত্র দীপ্তিমান, তেজঃপুঞ্জস্বরূপ, প্রদীপ্ত অঘি ও সূর্যের ন্যায় দুনিৰীক্ষ্য অর্থাৎ যাঁৰ দর্শন দুর্লভ এবং বুদ্ধি ইত্যাদিৰ মাধ্যমে গ্রহণ করা অসম্ভব অপ্রমেয় স্বরূপ আপনাকে আমি সর্বত্র দেখছি। এইসমস্ত ইন্দ্ৰিয়দ্বাৰা সম্পূর্ণরূপে সমৰ্পিত হয়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণকে এইসমস্তে দর্শন কৰে অর্জুন তাঁৰ স্তুতি করতে লাগলেন।

ত্বমক্ষরং পরমং বেদিতব্যং

ত্বমস্য বিশ্বস্য পরং নিধানম্।

ত্বমব্যয়ঃ শাশ্঵তধর্মগোপ্তা

সনাতনস্ত্রং পুরুষো মতো মো ॥১৮॥

ভগবন्! আপনি পরম অক্ষয় অর্থাৎ অক্ষয় পরমাত্মা এবং জানবার যোগ্য। আপনি জগতের পরম আশ্রয়, আপনি শাশ্বত ধর্মের রক্ষক এবং আপনি অবিনাশী সনাতন পুরুষ— এই আমার অভিমত। আত্মার স্বরূপ কি? শাশ্বত, সনাতন, অব্যক্ত, অবিনাশী। এখানে শ্রীকৃষ্ণের স্বরূপ কি? সেই শাশ্বত, সনাতন, অব্যক্ত, অবিনাশী অর্থাৎ প্রাপ্তির পর মহাপুরুষও সেই আত্মাবে স্থিত হন। তাই ভগবান এবং আত্মা একই লক্ষণযুক্ত।

অনাদিমধ্যান্তমনন্তবীর্য-

মনন্তবাহং শশিসূর্যনেত্রম্।

পশ্যামি ত্বাং দীপ্তভূতাশবক্রং

স্বতেজসা বিশ্বমিদং তপন্তম ॥১৯॥

হে পরমাত্মন! আমি দেখছি আপনার আদি, মধ্য ও অন্ত নেই, অনন্ত শক্তিশালী ও অসংখ্য বাহুবিশিষ্ট (পূর্বে সহস্র সহস্র ছিল, এখন অনন্ত হয়েছে), চন্দ্র ও সূর্যরূপ নেত্রবিশিষ্ট (তাহলে তো ভগবান् অঙ্গ হলেন। একটা চোখ চন্দ্রের ন্যায় ক্ষীণ প্রকাশযুক্ত এবং অন্যটা সূর্যের ন্যায় সতেজ, না। সূর্যের মত প্রকাশ এবং চন্দ্রের মত শীতলতা প্রদান করার গুণ একমাত্র ভগবানে রয়েছে। শশি এবং সূর্য প্রতীক মাত্র। অর্থাৎ চন্দ্র ও সূর্যের দৃষ্টিযুক্ত), আপনার মুখমণ্ডলে প্রদীপ্ত অগ্নির জ্যোতিঃ এবং আপনি স্বীয় তেজে সমস্ত জগৎ সন্তপ্ত করছেন।

দ্যাবাপ্তিব্যোরিদমন্ত্রং হি

ব্যাপ্তং ভ্রায়েকেন দিশশচ সর্বাঃ।

দৃষ্ট্বাঙ্গুতং রূপমুগ্রং তবেদং

লোকত্রয়ং প্রব্যথিতং মহাত্মন ॥২০॥

হে মহাভ্রন! অস্তরীক্ষ এবং পৃথিবীর মধ্যবর্তী সম্পূর্ণ আকাশ এবং সমস্ত দিক্ একমাত্র আপনার দ্বারাই পরিপূর্ণ। আপনার এই অলৌকিক, উগ্ররূপ দেখে ত্রিলোক অত্যন্ত ব্যথিত।

অমী হি ভ্রাং সুরসজ্জা বিশন্তি  
কেচিত্তিতাঃ প্রাঞ্জলয়ো গৃণন্তি।

স্বন্তীত্যক্ত্বা মহবিসিদ্ধসজ্জাঃ  
স্ত্রবন্তি ভ্রাং স্তুতিভিঃ পুষ্ফলাভিঃ ॥২১॥

ঐ দেবতাগণের সমূহ আপনাতেই প্রবেশ করছেন এবং কেউ কেউ ভীত হয়ে করজোড়ে আপনার গুণগান করছেন। মহৰ্ষি ও সিদ্ধগণ স্তুতিবাক্য অর্থাৎ কল্যাণ হোক, এইরূপ বলে সমস্ত স্তোত্রদ্বারা আপনার স্তব করছেন।

রংজ্ঞাদিত্যা বসবো যে চ সাধ্যা  
বিশ্বেহশ্চিনৌ মরুতশ্চেত্পাশ্চ।  
গন্ধৰ্বার্যক্ষাসুরসিদ্ধসজ্জা  
বীক্ষ্টে ভ্রাং বিশ্বিতাশ্চেব সর্বে ॥২২॥

রংজ্ঞ, আদিত্য, বসু, সাধ্য, বিশ্বেদেব, অশ্বিনীকুমার, বাযুদেব ও 'উত্তপাঃ'- ঈশ্বরীয় উত্তা গ্রহীতা এবং গন্ধৰ্ব, যক্ষ, রাক্ষস ও সিদ্ধগণ সকলেই বিস্মিত হয়ে আপনার দর্শন করছেন। দর্শন করেও তাঁরা বুঝতে অসমর্থ, কারণ তাঁদের কাছে সেই দৃষ্টি নেই। শ্রীকৃষ্ণ পূর্বে বলেছিলেন; যাদের আসুরী স্বভাব সেই ব্যক্তিগণ আমাকে তুচ্ছ বলে সম্মোধন করে, সামান্য ব্যক্তি মনে করে, যদিও আমি পরমভাব, পরমেশ্বররূপে স্থিত। যদিও এখন মনুষ্যদেহ ধারণ করেছি। সেই সম্মতে এখানে বিস্তৃতভাবে বলা হয়েছে যে তাঁরা বিস্মিত হয়ে দর্শন করছেন, যাথার্থ্য বুঝতে তাঁরা অক্ষম।

রূপং মহত্তে বহুবক্তৃনেত্রং  
মহাবাহো বহুবাহুরূপাদম্।  
বহুদরং বহুদংস্ত্রাকরালং  
দৃষ্ট্বা লোকাঃ প্রব্যথিতাস্তথাহম্ ॥২৩॥

মহাবাহো ! (শ্রীকৃষ্ণ এবং অর্জুন উভয়েই মহাবাহু। প্রকৃতির অতীত মহান্  
সন্তার মধ্যে যাঁর কার্যক্ষেত্র, তিনি মহাবাহু। শ্রীকৃষ্ণ মহানতার ক্ষেত্রে পূর্ণ, অধিকতম  
সীমাতে স্থিত। অর্জুন তারই প্রবেশিকাতে, এখনও পথিক। গন্তব্যস্থল মার্গের  
আরেকটি প্রান্তকেই বলে।) মহাবাহু যোগেশ্বর ! আপনার বহু মুখ, বহু চক্ষু,  
বাহু-উরু-চরণ ও বহু উদর বিশিষ্ট এবং অসংখ্য বৃহৎ দস্তদ্বারা ভীসণীকৃত বিরাটরূপ  
দেখে সকলেই ব্যাকুল হচ্ছেন এবং আমিও ব্যাকুল হয়েছি। এখন অর্জুনের ভয়  
হচ্ছে যে, শ্রীকৃষ্ণ এত মহান्।

নভঃস্পৃশঃ দীপ্তমনেকবর্ণঃ

ব্যাতাননঃ দীপ্তবিশালনেত্রম্।

দৃষ্ট্বা হি ত্বাং প্রব্যথিতান্তরাত্মা

ধ্রুতিং ন বিন্দামি শমং চ বিষ্ণে॥ ১৪ ॥

বিশে সর্বত্র অণুরূপে ব্যাপ্ত হে বিষ্ণু ! আকাশস্পর্শী, তেজোময়, নানারূপযুক্ত,  
বিস্তারিত মুখ এবং প্রকাশমান বিশাল চক্ষুযুক্ত আপনাকে দেখে বিশেষরূপে ভয়ভাতী  
অস্তঃকরণযুক্ত আমি ধৈর্য ও মনের সমাধানরূপ শাস্তি পাচ্ছি না।

দংষ্ট্রাকরালানি চ তে মুখানি

দৃষ্ট্বে কালানলসন্নিভানি।

দিশো ন জানে ন লভে চ শর্ম

প্রসীদ দেবেশ জগন্নিবাস॥ ১৫ ॥

আপনার ভয়ংকর দাঢ়াযুক্ত (দংষ্ট্রাকরাল) এবং কালান্ধি (কালের জন্যও  
অগ্নিস্঵রূপ পরমাত্মা) তুল্য প্রজ্ঞনিত মুখসকল দেখে আমি দিগ্ভ্রম হচ্ছে। ঘরিদিকে  
প্রকাশ দেখে দিগ্ভ্রম হয়েছি। আপনার এইরূপ দেখে আমাকে সুখও মিলছে না।  
হে দেবেশ ! হে জগন্নিবাস ! আপনি প্রসন্ন হোন।

অমী চ ত্বাং ধ্রুতরাষ্ট্রস্য পুত্রাঃ

সর্বে সহৈবাবনিপালসজ্জেঃ।

ভীষ্মো দ্রোণঃ সুতপুত্রস্থাসৌ

সহাস্মদীয়েরপি যোধমুখ্যঃ॥ ১৬ ॥

সেই সব ধৃতরাষ্ট্রপুত্রগণ রাজন্যবর্গসহ আপনাতে মধ্যে প্রবেশ করছেন।  
পিতামহ ভীম্বা, দ্রোগাচার্য ও কর্ণ (যাঁর থেকে অর্জুন ভয়ভীত ছিলেন, সেই কর্ণ)  
এবং আমাদের পক্ষীয় প্রধান যোদ্ধাদের সহিত সকলেই—

**বক্রাণি তে ভুরমাণা বিশন্তি**

দংষ্ট্রাকরালানি ভয়ানকানি।

**কেচিদ্বিলঘা দশনান্তরেষু**

সংদ্শ্যন্তে চুর্ণিতেরুত্তমাস্তেঃ।।২৭।।

দ্রুতবেগে আপনার দংষ্ট্রাকরাল ভয়ানক মুখে প্রবেশ করছেন এবং তাদের  
মধ্যে কেউ কেউ চুর্ণিতমস্তক হয়ে আপনার দস্তসন্ধিস্থলে সংলগ্ন হয়েছেন দেখছি।  
তাঁরা কি বেগে প্রবেশ করছেন? এবার তাঁদের বেগের বর্ণনা করলেন—

**যথা নদীনাং বহুবোহস্মুবেগাঃ**

সমুদ্রমেবাভিমুখা দ্রবণ্তি।

**তথা তবামী নরলোকবীরা**

**বিশন্তি বক্রাণ্যভিবজ্ঞলণ্তি।।২৮।।**

যেমন নদীসমূহের বহু জলপ্রবাহ (ভীষণ হওয়া সত্ত্বেও) সমুদ্রাভিমুখে প্রবাহিত  
হয়ে, সমুদ্রে প্রবেশ করে, সেইরূপ এই বীরপুরুষগণ আপনার প্রজ্ঞলিত মুখে প্রবেশ  
করছেন। অর্থাৎ তাঁরা নিশ্চয়ই বীরপুরুষ; কিন্তু আপনি সমুদ্রবৎ। আপনার কাছে  
তাঁদের বল তুচ্ছ। তাঁরা কেন এবং কিভাবে প্রবেশ করছেন? এরজন্য উদাহরণ  
প্রস্তুত করলেন—

**যথা প্রদীপ্তং জ্বলনং পতঙ্গা**

**বিশন্তি নাশায় সমৃদ্ধবেগাঃ।**

**তৈথেব নাশায় বিশন্তি লোকা-**

**স্তবাপি বক্রাণি সমৃদ্ধবেগাঃ।।২৯।।**

যেমন পতঙ্গ নষ্ট হবার জন্যই প্রজ্ঞলিত অগ্নিতে দ্রুতবেগে প্রবেশ করে, সেইরূপ এই সমস্ত প্রাণীও নিজের বিনাশের জন্য আপনার মুখসমূহে প্রবলবেগে প্রবেশ করছে।

**লেনিহ্যসে গ্রসমানঃ সমস্ত-**

**লোকান্ সমগ্রাষ্টদনৈর্জলণ্ডিঃ।**

**তেজোভিরাপূর্য জগৎসমগ্রং**

**ভাসস্তবোগ্রাঃ প্রতপস্তি বিষ্ণে।।৩০।।**

আপনি আপনার প্রজ্ঞলিত মুখসমূহদ্বারা সেই সকল লোককে গ্রাস করে লেহন করছেন, তাদের আস্তাদন করছেন। হে ব্যাপ্তি পরমাত্মা! আপনার উগ্র প্রকাশ সমগ্র জগৎকে তেজোরাশি দ্বারা ব্যাপ্ত করে সন্তপ্ত করছে। এর তাৎপর্য এই যে, আগে আসুরী সম্পদ পরমতত্ত্বে বিলীন হয়, তারপর দৈবী সম্পদের প্রয়োজন থাকে না সেইজন্য দৈবী সম্পদ্ও সেই স্বরূপে বিলীন হয়ে যায়। অর্জুন দেখলেন যে, কৌরব পক্ষ, তদনন্তর তাঁর পক্ষের যোদ্ধাগণ শ্রীকৃষ্ণের মুখে বিলীন হয়ে যাচ্ছেন। তিনি জিজ্ঞাসা করলেন—

**আখ্যাহি মে কো ভবানুগ্রহাপো**

**নমোহস্ত তে দেববর প্রসীদ।**

**বিজ্ঞাতুমিচ্ছামি ভবন্তমাদ্যং**

**ন হি প্রজানামি তব প্রবৃত্তিম।।৩১।।**

আমাকে বলুন যে এই উগ্রমূর্তি আপনি কে? হে দেবশ্রেষ্ঠ! আপনাকে প্রণাম করি, আপনি প্রসন্ন হোন। আদিস্বরূপ! আমি আপনাকে উত্তমরূপে জানতে ইচ্ছা করি (যেমন, আপনি কে? আপনি কি করতে চান?); কারণ আপনার প্রবৃত্তি অর্থাৎ প্রচেষ্টাণ্গলি বুঝতে পারছি না। এর পর যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন—

## শ্রীভগবানুবাচ

কালোহস্মি লোকক্ষয়কৃত্প্ৰবন্দো

লোকান् সমাহর্তুমিহ প্ৰবৃত্তঃ।

ঝাতেহপি দ্বাং ন ভবিষ্যন্তি সৰ্বে

যেহেবস্থিতাঃ প্রত্যনীকেষু যোধাঃ। ।৩২।।

অর্জুন ! আমি লোকবিনাশকারী বৃদ্ধিপ্রাপ্ত কাল এবং বর্তমানে লোক সকল  
সংহার করতে প্ৰবৃত্ত হয়েছি। প্রতিপক্ষের সেনাতে যে যোদ্ধাগণ আছেন, তাঁৱা  
তোমা বিনাও থাকবেন না, তাঁৱা জীবিত থাকবেন না সেইজন্য আমি প্ৰবৃত্ত হয়েছি।

তস্মাত্ত্বমুক্তিষ্ঠ যশো লভস্ব

জিত্বা শক্রন् ভূঞ্ছ রাজ্যং সমৃদ্ধম্।

ময়ৈবেতে নিহতাঃ পূৰ্বমেব

নিমিত্তমাত্রং ভব সব্যসাচিন্ম। ।৩৩।।

অতএব অর্জুন ! তুমি যুদ্ধার্থ উথিত হও, যশলাভ কর। শক্রদের পরাজিত  
করে সমৃদ্ধি-সম্পূর্ণ রাজ্যভোগ কর। এই সমস্ত বীৱির আমাৰ দ্বাৰা পূৰ্বেই নিহত হয়েছে।  
সব্যসাচিন্ম ! তুমি নিমিত্ত মাত্র হও।

প্রায় সর্বত্র শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, সেই পরমাত্মা স্বয়ং কিছু করেন না, কাৰণ  
দ্বাৰা কৰানও না, যোগাযোগ কৰিয়েও দেন না। মোহাবৃত্ত বৃদ্ধিৰ জন্যই লোকে  
বলে যে, পরমাত্মা কৰান; কিন্তু এখানে তিনি স্বয়ং তালঢ়ুকে দৃঢ়স্বরে বললেন—  
অর্জুন ! কৰ্তা-ধৰ্তা আমি। আমাৰ দ্বাৰা এই সমস্ত বীৱিৰ পূৰ্বেই নিহত হয়েছেন। তুমি  
দাঁড়িয়ে থেকে কেবল যশলাভ কৰ। এইরূপ এইজন্যে—'সো কেবল ভগতক্ষ হিত  
লাগী।' অর্জুন সেই অবস্থা লাভ কৰেছিলেন যখন ভগবান স্বয়ং সাহায্য কৰতে  
এগিয়ে আসেন। অনুরাগই অর্জুন। অনুরাগীৰ জন্য ভগবান সৰ্বদা সহায়কৰণপে  
এগিয়ে যান, তাঁদেৱ কৰ্তা, রথী হয়ে যান।

এখানে গীতায় তৃতীয়বার সান্নাজ্যেৰ প্ৰকৰণ এসেছে। পূৰ্বে অর্জুন যুদ্ধেৰ  
জন্য প্ৰস্তুত ছিলেন না। তিনি বলেছিলেন যে, পৃথিবীৰ ধন-ধান্যসম্পূৰ্ণ নিষ্পটক  
সান্নাজ্য এবং দেবতাগণেৰ স্বামীত্ব অথবা ত্ৰেলোক্যেৰ রাজ্যও আমি সেই উপায়

দেখছি না, যা' আমার ইন্দ্রিয়সমূহের বিষমতা দূর করতে পারে। যখন ব্যাকুলতা দূর হবে না, তখন তাতে আমার প্রয়োজন নেই। যোগেশ্বর বললেন— এই যুদ্ধে পরাজিত হলে দেবত এবং জয়লাভ করলে মহামহিম স্থিতি লাভ করবে এবং এখানে একাদশ অধ্যায়ে বলছেন যে এই শক্রগণ আমার দ্বারা পূর্বেই নিহত হয়েছে, তুমি নিমিত্ত মাত্র হও, যশলাভ কর এবং সমৃদ্ধ রাজ্য ভোগ কর। পুনরায় সেই একই কথা বলছেন, যে বিষয়ে অর্জুন শক্তি, স্থিতিই যা' লাভ করে তিনি নিজের শোক নিবারণের কোন উপায় দেখছেন না, অস্তরে সক্রিয় তা সত্ত্বেও শ্রীকৃষ্ণ কি সেই রাজ্যই প্রদান করবেন? না, বস্তুতঃ সমস্ত বিকার শাস্ত হবার সঙ্গে-সঙ্গে যে পরমাত্মস্বরূপে বাস্তবিক সমৃদ্ধি, যা' স্থির সম্পত্তি। যা' কখনও বিনাশ হয় না, এই হ'ল রাজযোগের পরিণাম।

### দ্রোণং চ ভীম্বং চ জয়দ্রথং চ

#### কর্ণং তথান্যানপি যোধবীরান্।

ময়া হতাঃস্তং জহি মা ব্যথিষ্ঠা

যুধ্যস্ব জেতাসি রণে সপত্নান्। ১৩৪ ॥

দ্রোণ, ভীম্ব, জয়দ্রথ ও কর্ণ এবং অন্যান্য বহু যোদ্ধাকে আমি পূর্বেই নিহত করেছি, সেই বীর যোদ্ধাগণকে তুমি বধ কর। ভীত হয়ে না। তুমি যুদ্ধে শক্রগণকে নিশ্চয় জয় করবে অতএব যুদ্ধ কর। এখানেও যোগেশ্বর বললেন যে আমার দ্বারা নিহত হয়েছে, সেই মৃতদেরই তুমি বধ কর। স্পষ্ট করলেন যে, আমি কর্তা, যদিও পঞ্চম অধ্যায়ের ১৩-১৪ এবং ১৫শ শ্লোকে তিনি বলেছিলেন যে ভগবান অকর্তা। অষ্টাদশ অধ্যায়ে তিনি বলেছেন যে শুভ অথবা অশুভ প্রত্যেক কার্য সম্পন্ন হওয়ার পিছনে পাঁচটি মাধ্যম কাজ করে—অধিষ্ঠান, কর্তা, করণ, চেষ্টা এবং দৈব। যাঁরা বলেন কৈবল্য স্঵রূপ পরমাত্মা প্রদান করেন, তাঁরা অবিবেকী, যথার্থ জানেন না অর্থাৎ পরমাত্মা করেন না, এইরূপ বিরোধাভাস কেন?

বস্তুতঃ প্রকৃতি এবং সেই পরমাত্ম-পুরুষের মাঝে একটা সীমারেখা আছে। যতক্ষণপর্যন্ত প্রকৃতির পরমাণুগুলির প্রভাব বেশী থাকে ততক্ষণ মায়া প্রেরণা প্রদান করে এবং যখন সাধক তার প্রভাব থেকে মুক্ত হয়ে, ঈশ্বর, ইষ্ট অথবা সদ্গুরুর কার্যক্ষেত্রে প্রবেশ করেন, তখন থেকে সদ্গুরু ইষ্ট (একথা স্মরণীয় যে, প্রেরকের জায়গায় সদ্গুরু, আত্মা, পরমাত্মা, ইষ্ট, ভগবান পর্যায়ভুক্ত)। যা' কিছু বলুন, ভগবানই

বলেন।) হাদয়ে রথী হয়ে যান, অস্তরে সক্রিয় হয়ে সেই অনুরাগী সাধকের পথ-সংগ্রান করেন।

পুজ্য মহারাজজী বলতেন—“হো, যে পরমাত্মার আকাঙ্ক্ষা আমাদের অস্তরে আছে, আমরা যে স্তরে দাঁড়িয়ে, যতক্ষণ সেই স্তরে নেমে এসে আত্মা থেকে জাগ্রত না হয়ে যান ততক্ষণ সঠিক সাধনের আরভট্ট হয় না। তারপর সাধকদ্বারা যা’ কিছু সন্তুষ্ট হয়, সব তাঁরই কৃপা। সাধক নিমিত্ত মাত্র হয়ে তাঁর সঙ্কেত ও আদেশ অনুযায়ী চলতে থাকেন শুধু। সাধক যে জয়লাভ করেন তা’ও তাঁর কৃপা। এইরূপ অনুরাগীর জন্য ইষ্ট নিজের দৃষ্টিতে দেখেন, দেখিয়ে দেন এবং নিজের স্বরূপপর্যন্ত এগিয়ে নিয়ে যান।” একথাই শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, আমার দ্বারা নিহত এই শত্রুদের বধ কর। নিঃসন্দেহে তুমি জয়লাভ করবে, আমি যে দাঁড়িয়ে।

### সঞ্জয় উবাচ

এতচ্ছুত্বা বচনং কেশবস্য

কৃতাঞ্জলিবেপমানঃ কিরীটী।

নমস্কৃত্বা ভূয় এবাহ কৃষং

সগদ্গদং ভীতভীতঃ প্রণম্য ॥৩৫॥

সঞ্জয় বললেন—(যা’ কিছু অর্জন দর্শন করেছেন, সেইরূপ সঞ্জয়ও দর্শন করেছেন। অজ্ঞানাবৃত মনই অন্ধ ধৃতরাষ্ট্র; কিন্তু এইরূপ মনও সংযমের মাধ্যমে উন্নতমরূপে দেখে, শোনে ও বোঝে।) কেশবের উপর্যুক্ত এই কথা শুনে কিরীটধারী অর্জুন ভীত হয়ে কম্পিত দেহে করজোড়ে প্রণামপূর্বক শ্রীকৃষ্ণকে এই প্রকার গদ্গদ ভাবে বললেন—

### অর্জুন উবাচ

স্থানে হৃষীকেশ তব প্রকীর্ত্যা

জগৎ প্রহ্লাদ্যত্যনুরজ্যতে চ।

রক্ষাংসি ভীতানি দিশো দ্রবণ্তি

সর্বে নমস্যন্তি চ সিদ্ধসঙ্ঘাঃ ॥৩৬॥

হে অন্ত্যামী হ্যাকেশ ! এটা যুক্তিযুক্ত যে আপনার কীর্তিতে সংসার আনন্দিত  
হয় এবং অনুরাগী হয়। আপনার মহিমাতে ভৌত হয়ে রাক্ষসগণ নানাদিকে পলায়ন  
করে এবং সিদ্ধগণ আপনার মহিমা দেখে আপনাকে নমস্কার করেন।

কস্মাচ তে ন নমেরগ্রহাত্মন्

গরীয়সে ব্রহ্মগোহপ্যাদিকর্ত্রে ।

অনন্ত দেবেশ জগন্নিবাস

ত্বমক্ষরং সদসন্তৎপরং যৎ । ৩৭ ॥

হে মহাত্মন ! ব্রহ্মারও আদিকর্ত্তা সকলের শ্রেষ্ঠ আপনাকে সকলে কেন  
নমস্কার করবেন না; কারণ হে অনন্ত ! হে দেবেশ ! হে জগন্নিবাস ! সৎ, অসৎ এবং  
উভয়ের অতীত যে অক্ষর অর্থাৎ অক্ষয় স্বরূপ তা আপনি। অর্জুন এই অক্ষয় স্বরূপের  
দর্শন করেছিলেন। কেবল বৌদ্ধিক স্তরে কঙ্কনা করলে অথবা স্থীকার করে নিলেই  
এইরূপ অক্ষয়স্থিতি লাভ হয় না। অর্জুনের প্রত্যক্ষ দর্শন তাঁর আন্তরিক অনুভূতি।  
তিনি সবিনয়ে বললেন—

ত্বমাদিদেবঃ পুরুষঃ পুরাণ-

স্ত্রম্য বিশ্বস্য পরং নিধানম্ ।

বেত্তাসি বেদ্যং চ পরং চ ধাম

ত্যা ততং বিশ্বমনন্তরূপ । ৩৮ ॥

আপনি আদিদেব এবং সনাতন পুরুষ। আপনি এই জগতের পরম আশ্রয়  
এবং জ্ঞাতা, জানবার যোগ্য এবং পরমধাম। হে অনন্তস্বরূপ ! আপনিই এই সম্পূর্ণ  
জগৎকে পরিব্যাপ্ত করে আছেন। আপনি সর্বত্র বিরাজমান।

বায়ুর্ঘোহগ্নিরূপঃ শশাঙ্কঃ

প্রজাপতিস্ত্রং প্রপিতামহশ ।

নমো নমস্তেহস্ত সহস্রকৃতঃ

পুনশ্চ ভূয়োহপি নমো নমস্তে । ৩৯ ॥

আপনি বায়ু, যম, অগ্নি, বরঞ্চ, চন্দ্ৰ এবং প্রজাপতি ব্ৰহ্মা এবং ব্ৰহ্মারও পিতা। আপনাকে সহস্রবার নমস্কার কৰি। আবাৰ আপনাকে পুনঃপুনঃ নমস্কার কৰি। অত্যন্ত শ্ৰদ্ধা ও ভক্তিৰ জন্য নমস্কার কৱে অৰ্জুনেৰ তৃপ্তি হচ্ছে না। তিনি বলছেন—

**নমঃ পুৱন্তাদথ পৃষ্ঠতস্তে**

**নমোহস্ত তে সৰ্বত এব সৰ্ব।**

**অনন্তবীয়ামিতবিক্রমস্তঃং**

**সৰ্বৎ সমাপ্লোধি ততোহসি সৰ্বঃ॥৪০॥**

হে অত্যন্ত সামৰ্থ্যবান्! আপনাকে সম্মুখে নমস্কার কৱছি, আপনাকে পশ্চাতে নমস্কার কৱছি। হে সৰ্বাত্মান! আপনাকে সকলদিক থেকেই নমস্কার কৱছি; কাৰণ হে অসীম পৱাক্রমশালী! আপনি সকলদিক থেকে বিশ্বকে ব্যাপ্ত কৱে স্থিত, সেইজন্য আপনিই সৰ্বৱৰ্ণ এবং সৰ্বত্র বিৱাজমান। এইরূপ বাৰংবাৰ নমস্কার কৱে ভীত অৰ্জুন নিজেৰ সমস্তভূলেৰ জন্য ক্ষমা-প্ৰাৰ্থনা কৱছেন—

**সখেতি মত্তা প্ৰসভৎ যদুক্তং**

**হে কৃষ্ণ হে যাদব হে সখেতি।**

**অজানতা মহিমানং তবেদং**

**ময়া প্ৰমাদাঃপ্ৰণয়েন বাপি॥৪১॥**

আপনাৰ এই প্ৰভাৰ না জেনে আপনাকে সখা, মিত্ৰ ভেবে প্ৰেম অথবা প্ৰমাদহেতু হে কৃষ্ণ! হে যাদব! হে সখা! এইরূপ সবিনয়ে সম্মোধন কৱে যা' বলেছি। এবং—

**যচ্চাবহাসার্থমসংক্রতোহসি**

**বিহারশ্যাসনভোজনেযু।**

**একোহথবাপ্যচ্যুত তৎসমক্ষং**

**তৎক্ষময়ে ভামহমপ্রমেয়ম্॥৪২॥**

হে অচ্যুত ! বিহার, শয়ন, আসন এবং ভোজনাদিতে একাকী অথবা বন্ধুজন সমক্ষে আপনাকে যে অসম্মান করেছি, সেই সমস্ত অপরাধ অচিন্ত্য প্রভাবযুক্ত আপনার কাছে ক্ষমা-প্রার্থনা করছি। কিভাবে ক্ষমা করবেন ?—

**পিতামি লোকস্য চরাচরস্য**

**ত্বমস্য পূজ্যশ্চ গুরুগরীয়ান্।**

**ন ত্বৎসমোহস্ত্যভ্যধিকঃ কুতোহন্যে।**

**লোকত্রয়েহপ্যপ্রতিমপ্রভাব ॥৪৩॥**

আপনি এই চরাচর জগতের পিতা, গুরুর থেকেও শ্রেষ্ঠ গুরু এবং পূজ্য। যাঁর কোন প্রতিমা নেই, এইরূপ অপ্রতিম প্রভাবশালিন् ! আপনার সমান ত্রিলোকে আর কেউ নেই, তাহলে বেশী কি করে হবে ? আপনি সখাও নন, সমকক্ষ যে জন, সেই সখা হয়।

**ত্বমাঽপ্রণম্য প্রণিধায় কায়ং**

**প্রসাদয়ে দ্বামহমীশমীড্যম্।**

**পিতেব পুত্রস্য সখেব সখ্যঃ**

**প্রিয়ঃ প্রিয়ায়াহসি দেব সোচুম ॥৪৪॥**

আপনি চরাচরের পিতা, সেইজন্য আমি আপনাকে দণ্ডবৎ প্রণাম করে, স্মৃতির যোগ্য ঈশ্বর আপনার প্রসন্নতা প্রার্থনা করছি। হে দেব ! পিতা যেমন পুত্রের, সখা যেমন সখার এবং পতি যেমন প্রিয়া স্ত্রীর অপরাধ ক্ষমা করেন, আপনিও তদন্তপ আমার অপরাধ ক্ষমা করুন। কি অপরাধ করে ছিলেন ? কখনও হে যাদব ! হে সখা ! হে কৃষ্ণ ! বলেছিলেন। সকলের সামনে বলেছিলেন অথবা একাকী বলেছিলেন। ভোজনের সময় অথবা শয়নকালে বলেছিলেন। কৃষ্ণ বলা কি অপরাধ ? কালো ছিলেনই, গৌর কিন্তু কেউ বলতেন ? যাদব বলাও অপরাধ হয়নি; কারণ শ্রীকৃষ্ণও নিজেকে অর্জুনের সখা বলে মনে করতেন। কৃষ্ণ বলা যখন অপরাধ, একবার কৃষ্ণ বলেছিলেন সেইজন্য অর্জুন অনন্তবার ক্ষমা-প্রার্থনা করছেন, তাহলে কোন নাম জপ করা হবে ? কোন নাম নেবেন ?

বস্তুতঃ চিন্তনের যে বিধান যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ দিয়েছেন, আপনি সেই ভাবেই করুন। পূর্বে তিনি বলেছেন ‘ওমিত্যেকাক্ষরং ব্রহ্ম ব্যাহরণামনুস্মরন्।’- অর্জুন! ‘ওঁ’ এই হল অক্ষয় ব্রহ্মের পরিচায়ক, তুমি এর জপ এবং ধ্যান আমার কর; কারণ সেই পরমত্বাব-এ স্থিতি লাভ করার পর সেই মহাপুরুষের নামও তাই, যা’ সেই অব্যক্তের পরিচায়ক। প্রভাব দর্শনের পরে অর্জুন অনুভব করলেন যে—ইনি কালোও নন, গৌরও নন, সখাও নন, যাদবও নন, ইনি অক্ষয় ব্রহ্মের স্থিতিপ্রাপ্ত মহাঘা।

সম্পূর্ণ গীতায় যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ সাতবার ‘ওঁ’ জপ করবার উপর জোর দিয়েছেন। আপনি যদি জপ করতে চান, তাহলে কৃষ্ণ-কৃষ্ণ না বলে ‘ওঁ’ জপ করুন। প্রায়ই ভাবুকেরা কোন না কোন পথ খুঁজে নেন। কেউ কেউ ‘ওঁ’ জপ করার অধিকার-অনাধিকারের চর্চায় ভীত, কেউ মহাঘাদের দোহাই দেন, অনেকে কেবল কৃষ্ণই নয়, তাঁর নামের আগে রাধা, গোপীদের নামও তাঁর শীঘ্র প্রসন্নতার লোভে জপ করেন। পুরুষ শ্রদ্ধাযুক্ত হয়, সেইজন্য তাদের এইরূপ জপ ভাবুকতা মাত্র। যদি আপনি সত্য সত্যই ভক্ত, তাহলে তাঁর আদেশ-পালন করুন। তিনি অব্যক্তে স্থিত হলেও আজ তাঁকে তো আপনি কাছে পাচ্ছেন না কিন্তু তাঁর বাণী তো আপনার কাছে আছে। তাঁর আজ্ঞা-পালন করুন, অন্যথা ভেবে দেখুন গীতাশাস্ত্র আপনার স্থান কি? হাঁ, এটা অবশ্যই যে “অধ্যেয্যতে চ য ইমং শ্রদ্ধাবাননসুয়শ্চ শৃণুয়াদপি যো নরঃ।” যিনি অধ্যয়ন ও শ্রবণ করেন, তিনি জ্ঞান এবং যজ্ঞ সম্বন্ধে অবগত হন, শুভ লোক লাভ করেন। অতএব অধ্যয়ন নিশ্চয় করুন।

প্রাণ-অপান-এর চিন্তনে ‘কৃষ্ণ’ নামের ক্রম ধরা পড়ে না। অনেকে ভাবপ্রবণ হওয়ার জন্য ‘রাধে-রাধে’ বলা আরম্ভ করেছেন। আজকাল অধিকারীদের দিয়ে কার্যসিদ্ধি না হলে পরে অধিকারী মহাশয়ের আত্মীয় স্বজনদ্বারা, প্রেমিকা অথবা পত্নী সম্পর্কের সুত্রধরে কার্যোদ্ধারের চেষ্টা চলেছে। তাই লোকে চিন্তা করে যে বোধ হয় ভগবানের ঘরের ব্যবস্থাও এইরূপ, অতএব তাঁরা ‘কৃষ্ণ’ বলা বন্ধ করে ‘রাধে-রাধে’ বলা আরম্ভ করে দিয়েছেন। তাঁরা বলেন, ‘রাধে রাধে! শ্যাম মিলা দে’। যে রাধার শ্যামের সঙ্গে বিচ্ছেদ হবার পর, দ্বিতীয়বার শ্যামের সঙ্গে মিলন হয়নি, সেই রাধা আপনার সঙ্গে শ্যামের মিলন কি করে করিয়ে দেবে? অতএব অন্য কারও কথা না শুনে শ্রীকৃষ্ণের আদেশ আপনি পালন করুন, জপ করুন ওঁ।

এটা ঠিক যে রাধা আমাদের আদর্শ, ততটাই শন্দা ও সমর্পণের সঙ্গে আমাদেরও প্রবৃত্ত হতে হবে। যদি আপনি ঈশ্বর লাভের ইচ্ছুক, তাহলে রাধার মত বিরহী হতে হবে।

পরেও অর্জুন শ্রীকৃষ্ণকে ‘কৃষ্ণ’ বলে সম্মোধন করেছেন। ‘কৃষ্ণ’ তাঁর প্রচলিত নাম ছিল। এইরূপ কয়েকটাই নাম ছিল, যেমন ‘গোপাল’। অনেক সাধক গুরু-গুরু অথবা গুরুর প্রচলিত নাম ভাবুকভাবশতঃ জপ করতে চান; কিন্তু প্রাপ্তির পর প্রত্যেক মহাপুরুষের সেই এক নাম, যে অব্যক্তে তিনি স্থিত। অনেক শিষ্য জিজ্ঞাসা করে—“গুরুদেব! ধ্যান যখন আপনার করব, তখন পুরোনো নাম ‘ওঁ’ ইত্যাদি কেন জপ করব, ‘গুরু-গুরু’ অথবা ‘কৃষ্ণ কৃষ্ণ’ কেন জপ করব না।” কিন্তু এখানে যোগেশ্বর স্পষ্ট করলেন যে, অব্যক্ত স্বরূপে বিলয়ের পর মহাপুরুষেরও সেই একই নাম হয়, যাতে তিনি স্থিত হন। ‘কৃষ্ণ’ সম্মোধন ছিল, জপ করার নাম ছিল না।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের কাছে অর্জুন নিজের অপরাধের জন্য ক্ষমা-প্রার্থনা করলেন, তাঁকে স্বাভাবিকরূপ ধারণ করবার জন্য প্রার্থনা করলেন। শ্রীকৃষ্ণ রাজী হলেন, সহজরূপ ধারণ অর্থাৎ তাঁকে ক্ষমা করলেন। অর্জুন নিবেদন করলেন—

অদ্বৃত্পূর্বং হৃষিতোহস্মি দৃষ্ট্বা

ভয়েন চ প্রব্যাথিতঃ মনো মে।

তদেব মে দর্শয় দেবরূপঃ

প্রসীদ দেবেশ জগন্নিবাস ॥৪৫॥

এখনও পর্যন্ত অর্জুনের সমক্ষে যোগেশ্বর বিশ্বরূপে দাঁড়িয়ে। সেইজন্য অর্জুন বলছেন যে, যা’ পূর্বে আমি দেখিনি, আপনার সেই আশ্চর্যময় রূপ দেখে আমি আনন্দিত হয়েছি এবং আমার মন ভয়ে অত্যন্ত ব্যাকুলও হয়েছে। আগে সখা বলে মনে করতেন, ধনুর্বিদ্যায় নিজেকে শ্রেষ্ঠই মনে করতেন; কিন্তু এখন প্রভাব দেখে ভয় হয়েছে। পূর্ব অধ্যায়ে প্রভাব শুনে তিনি নিজেকে জ্ঞানী বলেই ভোবেছিলেন। জ্ঞানী কোথাও ভয় পান না। বস্তুতঃ প্রত্যক্ষ দর্শনের প্রভাব বিলক্ষণ হয়। সবকিছু শোনা ও স্বীকার করার পরও সেই পথে চলে সমস্ত জানা বাকী থাকে। তিনি বলছেন—যা’ পূর্বে দেখিনি, আপনার সেইরূপ দেখে আমি আনন্দিত হয়েছি। আমার

মন ভয়ে ব্যাকুল হয়েছে। অতএব হে দেব ! আপনি প্রসন্ন হোন। হে দেবেশ ! হে জগন্মিবাস ! আপনি আপনার সেইরূপই আমাকে দেখান। কোন রূপ ?—

**কিরীটিনং গদিনং চক্রহস্ত-**

**মিছামি ভ্রাং দ্রষ্টুমহং তথেব।**

**তেনেব রূপেণ চতুর্ভুজেন**

**সহস্রবাহো ভব বিশ্বমূর্তে॥৪৬॥**

আমি আপনাকে পূর্ববৎ সেই কিরীট, গদা ও চক্রধারীরূপে দেখতে ইচ্ছা করি। সেইজন্য হে বিশ্বরূপে ! হে সহস্রবাহ ! আপনি আপনার সেই চতুর্ভুজ স্বরূপ ধারণ করুন। কিরূপে দেখতে চাইলেন ? চতুর্ভুজরূপে। এখন দেখতে হয় যে চতুর্ভুজ রূপটি কি ?

**শ্রীভগবানুবাচ**

**ময়া প্রসরেন তবাঞ্জুনেং**

**রূপং পরং দর্শিতমাত্মাযোগাঃ।**

**তেজোময়ং বিশ্বমনন্তমাদ্যঃ**

**যন্মে ভদন্যেন ন দৃষ্টপূর্বম্॥৪৭॥**

অর্জুনের এইরূপ প্রার্থনা শুনে শ্রীকৃষ্ণ বললেন— অর্জুন ! আমি অনুগ্রহপূর্বক স্বীয় যোগশক্তির প্রভাবে আমার পরম তেজোময়, সকলের আদি এবং অন্তশূণ্য বিশ্বরূপ তোমাকে দেখালাম, তুমি ভিন্ন অন্য কেউ পূর্বে এই রূপ দর্শন করে নি।

**ন বেদযজ্ঞাধ্যয়নৈর্ন দানৈ-**

**র্চ ক্রিয়াভিন তপোভিরংগ্রেঃ।**

**এবংরূপঃ শক্য অহং ন্ত্লোকে**

**দ্রষ্টুং ভদন্যেন কুরুপ্রবীর॥৪৮॥**

অর্জুন ! এই মনুষ্যলোকে বেদব্দারা, যজ্ঞব্দারা, অধ্যয়নব্দারা, ক্রিয়াব্দারা বা কঠোর তপস্যাব্দারাও আমার এই বিশ্বরূপ তোমা ভিন্ন কেউ দর্শন করতে পারে নি

অর্থাৎ তোমা ভিন্ন অন্য কেউ এইরূপ দর্শন করতে পারবে না। তাহলে গীতাশাস্ত্র আপনার জন্য নয়। ভগবদ্দর্শনের যোগ্যতাও অর্জুন পর্যন্তই সীমিত থেকে গেল, কিন্তু পূর্বে বলেছেন যে, অর্জুন! রাগ, ভয় এবং ক্ষেত্রহিত হয়ে অনন্যভাবে আমার শরণাগত বস্তুলোক জ্ঞানরূপ তপস্যা দ্বারা পবিত্র হয়ে সাক্ষাৎ আমার স্বরূপ লাভ করেছেন। এখানে বলছেন—তুমি ভিন্ন অন্য কেউ দর্শন করেনি এবং ভবিষ্যতেও অন্য কেউ দর্শন করতে সমর্থ হবে না। অতএব অর্জুন কে? কোন পিণ্ডধারী কি? কোন দেহধারী? না; বস্তুতঃ অনুরাগই অর্জুন। অনুরাগরহিত পুরুষ কখনও দর্শন পাননি এবং ভবিষ্যতেও দর্শন পাবেন না। সর্বদিক থেকে চিন্তকে সংযত করে একমাত্র ইষ্টের অনুরূপ রাগই অনুরাগ। অনুরাগের দ্বারাই ভগবৎপ্রাপ্তির বিধান।

মা তে ব্যথা মা চ বিমুচ্বাবো

দৃষ্ট্বা রূপং ঘোরমীদ়ঙ্গমেদম্।

ব্যগ্নেতভীঃ প্রীতমনাঃ পুনস্তঃঃ

তদেব মে রূপমিদং প্রপশ্য ॥৪৯॥

এই প্রকার আমার এই ভয়ঙ্কর রূপ দেখে তুমি ব্যাকুল ও বিমুচ্ছ হয়ো না, অন্যথা ভীত হয়ে পৃথক হয়ে যাবে। এখন তুমি ভয়ত্যাগ করে প্রসন্নচিত্তে আমার এইরূপ অর্থাৎ চতুর্ভুজরূপ পুনরায় দর্শন কর।

সংজ্ঞয় উবাচ

ইত্যর্জুনং বাসুদেবস্তথোক্ত্বা

স্বকং রূপং দর্শয়ামাস ভূয়ঃ।

আশ্঵াসয়ামাস চ ভীতমেনঃ

ভূত্বা পুনঃ সৌম্যবপুর্মহাত্মা ॥৫০॥

সংজ্ঞয় বললেন— সর্বত্র বাস করেন যিনি, সেই বাসুদেব অর্জুনকে এইরূপ বলে পুনরায় নিজের সেইরূপ তাঁকে দেখালেন। পুনরায় মহাত্মা শ্রীকৃষ্ণ ‘সৌম্যবপুঃ’ অর্থাৎ প্রসন্ন হয়ে ভীত অর্জুনকে ধৈর্য প্রদান করলেন। অর্জুন বললেন—

## অর্জুন উবাচ

দ্বিতীয় মানুষং রূপং তব সৌম্যং জনার্দন।

ইদানীমস্মি সংবৃতঃ সচেতাঃ প্রকৃতিং গতঃ ॥৫১॥

জনার্দন ! আপনার এই অত্যন্ত শান্ত মানুষরূপ দেখে এখন আমি প্রসন্নচিন্তিত ও প্রকৃতিস্থ হলাম। অর্জুন বলেছিলেন— ভগবন् ! এখন আপনি আমাকে সেই চতুর্ভুজ স্বরূপের দর্শন করান। যোগেশ্বর দর্শন করিয়েছিলেন; কিন্তু অর্জুন কি দেখতে পেয়েছিলেন ? ‘মানুষং রূপং’- মানুষরূপে দেখেছিলেন। বস্তুতঃ প্রাপ্তির পর মহাপুরুষকেই চতুর্ভুজ ও অনন্তভুজ বলা হয়। দুই বাহুবিশিষ্ট মহাপুরুষ তো অনুরাগীর সম্মুখে আছেনই; কিন্তু অন্য কোন স্থান থেকে যদি কেউ স্মরণ করেন তখন সেই স্মরণকর্তার অন্তরে সক্রিয় হয়ে (রয়ী হয়ে) তাঁরও মার্গদর্শন করেন। ‘বাহু’ কার্যের প্রতীক। তিনি অন্তরেও কার্য করেন এবং বাহিরেও, এই হ'ল চতুর্ভুজ স্বরূপ। তাঁর হাতে শঙ্খ, চক্র, গদা ও পদ্ম ত্রৈমশাঃ বাস্তবিক লক্ষ্যঘোষ, সাধন-চক্র-এর প্রবর্তন, ইন্দিয়সমূহের দমন এবং নির্মল-নির্লিঙ্গ কার্য-ক্ষমতার প্রতীক মাত্র। এই কারণেই চতুর্ভুজরূপে তাঁকে দর্শন করেও অর্জুন তাঁকে মানুষ রূপেই দেখতে পেলেন। মহাপুরুষের দেহ এবং স্বরূপের মাধ্যমে কার্য করার বিধি-বিশেষের নাম চতুর্ভুজ। কোন চতুর্ভুজ শ্রীকৃষ্ণ ছিলেন না।

## শ্রীভগবানুবাচ

সুদুর্দশ্মিদং রূপং দ্঵িতীয়বানসি যশম।

দেবা অপ্যস্য রূপস্য নিত্যং দর্শনকাঞ্জিকণঃ ॥৫২॥

মহাআত্মা শ্রীকৃষ্ণ বললেন— অর্জুন ! আমার এই রূপদর্শন করা অতিদুর্ভ, যেইরূপ তুমি দেখলে; কারণ দেবতাগণও সদা এইরূপের দর্শনাকাঙ্ক্ষী। বস্তুতঃ সকলেই মহাপুরুষ চিনতে পারে না। ‘পূজ্য সৎসঙ্গী মহারাজ’ অন্তঃপ্রেরণাযুক্ত পূর্ণ মহাপুরুষ ছিলেন; কিন্তু লোকে তাঁকে পাগল বলে মনে করত। কোন কোন পুণ্যাত্মার প্রতি আকাশবাণী হয়েছিল যে, ইনি সদগুরু; কেবল সেই পুণ্যাত্মাগণ তাঁর স্বরূপ হৃদয়ে ধারণ করেছিলেন এবং স্বরূপ লাভ করে পরমগতি লাভ করেছিলেন। সেই

কথাই শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, যাঁদের হৃদয়ে দৈবী সম্পদ জাগ্রত, সেই দেবতাগণও  
সদা এই রূপের দর্শনাকাঞ্চকী। তাহলে যজ্ঞ, দান অথবা বেদাধ্যয়ন দ্বারা আপনার  
দর্শন কি সন্তুষ? সেই মহাত্মা বলছেন—

নাহং বেদৈন তপসা ন দানেন ন চেজ্যয়া।

শক্য এবংবিধো দ্রষ্টঁ দ্রষ্টবানসি মাং যথা ॥৫৩॥

তুমি আমার যে রূপ দর্শন করলে সেইরূপ বেদ, তপস্যা, দান অথবা যজ্ঞদ্বারা  
দর্শন করা যায় না। তাহলে আপনার দর্শনের কি কোন উপায় নেই? সেই মহাত্মা  
বলছেন, এক উপায়ে সন্তুষ—

ভক্ত্যা ত্বন্যয়া শক্য অহমেবংবিধোহর্জুন।

জ্ঞাতুং দ্রষ্টঁ চ তত্ত্বেন প্রবেষ্টুং চ পরম্পর ॥৫৪॥

হে শ্রেষ্ঠ তপস্মী অর্জুন! অনন্য ভক্তিদ্বারা অর্থাৎ আমা ভিন্ন অন্য কোন  
দেবতার স্মরণ না করে, অনন্য শ্রদ্ধাদ্বারা আমি এইরূপ প্রত্যক্ষ করতে, তত্ত্বতঃ  
জ্ঞানার জন্য এবং প্রবেশের জন্যও সুলভ অর্থাৎ তাঁকে লাভ করার একমাত্র সুগম  
মাধ্যম অনন্য ভক্তি। শেষে জ্ঞানও অনন্যভক্তিতে পরিণত হয়। (যা' সপ্তম অধ্যায়ে  
দ্রষ্টব্য)। পূর্বে তিনি বলেছেন যে, তুমি ভিন্ন কেউ দর্শন করেনি এবং দর্শন করবে  
না; কিন্তু এখানে বলছেন, অনন্যভক্তি শুধু কেবল প্রত্যক্ষ করা নয়, বরং সাক্ষাৎ  
জ্ঞান এবং আমাতে বিলীন হওয়াও সন্তুষ, অর্থাৎ অর্জুন অনন্যভক্তের নাম, অবস্থা-  
বিশেষের নাম। অনুরাগই অর্জুন। শেষে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

মৎকর্মকৃমংপরমো মন্ত্রকঃ সঙ্গবজ্জিতঃ।

নির্বেরঃ সর্বভূতেষু যঃ স মামেতি পাণ্ডব ॥৫৫॥

হে অর্জুন! যে পুরুষ আমার দ্বারা নির্দিষ্ট কর্ম অর্থাৎ নিয়ত কর্ম যজ্ঞার্থ কর্ম  
করেন, 'মৎপরমঃ'- মৎপরায়ণ কর্মকারী, যিনি আমার অনন্যভক্ত, কিন্তু 'সঙ্গবজ্জিতঃ'-  
সঙ্গদোষ থাকলে সেই কর্ম হয় না। অতএব সঙ্গদোস মুক্ত 'নির্বেরঃ সর্বভূতেষু'-  
সর্বভূতের প্রতি বৈরভাববিহীন যিনি, তিনি আমাকে প্রাপ্ত হন।

তাহলে কি অর্জুন যুদ্ধ করেছিলেন? প্রতিজ্ঞা করে তিনি কি জয়দ্রথাদিকে বধ করেছিলেন? যদি তাদের বধ করে থাকতেন তাহলে ভগবানের দর্শন পেতেন না; পরস্ত অর্জুন দর্শন করেছিলেন। এর থেকে প্রমাণ হয় যে, গীতাশাস্ত্রের একটা শ্লোকও বাহ্য যুদ্ধের সমর্থন করে না। যিনি নির্দিষ্ট কর্ম যজ্ঞের প্রক্রিয়ার আচরণ করেন, অনন্যভাবে তাঁকে ভিন্ন অন্যের স্মরণপর্যন্ত করেন না, সঙ্গদোষ থেকে পৃথক্ বাস করেন, তাহলে সেই ব্যক্তি যুদ্ধ কিরণে করবেন? যখন আপনার সঙ্গে কেউ নেই, তখন আপনি যুদ্ধ কার সঙ্গে করবেন? সর্বভূতের প্রতি বৈরভাববিহীন যিনি, কাউকে কষ্ট দেওয়ার কল্পনাপর্যন্ত করেন না, তিনি আমাকে প্রাপ্ত হন- তাহলে কি অর্জুন যুদ্ধ করেছিলেন? না।

বস্তুতঃ সঙ্গদোষ থেকে পৃথক্ বাস করে আপনি যখন অনন্য চিন্তনে প্রবৃত্ত হবেন, নিখারিত যজ্ঞের ত্রিয়ায় নিযুক্ত হবেন, সেই সময় পরিপন্থী রাগ-দ্বেষ, কাম-ক্রোধ ইত্যাদি দুর্জয় শক্তি বাধারূপে আক্রমণ করবে। তাদের অতিক্রম করে যাওয়াই যুদ্ধ।

### নিষ্কর্ষ –

বর্তমান অধ্যায়ের আরম্ভে অর্জুন বলেছিলেন— ভগবন्! আপনার বিভূতি সকল আমি বিস্তারিতভাবে শ্রবণ করলাম, যার দ্বারা আমার মোহনাশ হয়েছে, অজ্ঞান দূর হয়েছে; কিন্তু যেরূপ আপনি বললেন যে, সর্বত্র আমি, তা' আমি প্রত্যক্ষ করতে ইচ্ছা করি। যদি আমি সেইরূপ দেখার যোগ্য, তাহলে কৃপা করে আমাকে সেই স্বরূপ দেখান। অর্জুন প্রিয়সখা, অনন্য সেবক ছিলেন, সেইজন্য যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ কোন প্রতিবাদ না করে সঙ্গে সঙ্গে দেখাতে আরম্ভ করলেন, বললেন— এখন আমাতে স্থিত সন্তুরি এবং তাঁদেরও পূর্বকালীন ঋষিগণকে দেখ, ব্রহ্মা এবং বিষ্ণুকে দেখ। সর্বত্র বিস্তারিত আমার তেজ দেখ। আমার দেহমধ্যে অবস্থিত তুমি বিশ্ব চরাচর দেখ; কিন্তু অর্জুন কিছুই দেখতে পেলেন না। এই প্রকার যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ দু-তিনাটি শ্লোকপর্যন্ত অনবচিন্ন দেখিয়ে গিয়েছিলেন; কিন্তু অর্জুন কিছুই দেখতে পাননি। সমস্ত বিভূতি যোগেশ্বরের মধ্যে সেই সময়ও ছিল; কিন্তু অর্জুন তাঁকে সামান্য ব্যক্তির মতই দেখতে পাচ্ছিলেন, এইরূপ দেখাতে দেখাতে সহসা

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ থেমে গিয়ে, বলেছিলেন— অর্জুন! এই চোখে তুমি আমাকে দর্শন করতে সমর্থ হবে না। নিজবুদ্ধিমারা আমাকে পরখ করতে পারবে না। এখন আমি তোমাকে সেই দৃষ্টি প্রদান করছি, যার দ্বারা তুমি আমার দর্শন করতে সমর্থ হবে। ভগবান তো সম্মুখে ছিলেনই। অর্জুন দর্শন করলেন, বাস্তবে দর্শন করলেন। দর্শন করে ক্ষুদ্র ক্রটিগুলির জন্য ক্ষমা-প্রার্থনা করতে লাগলেন, যা' বাস্তবে ক্রটি ছিল না। উদাহরণস্বরূপ— ভগবন! আমি কখনও আপনাকেও কৃষ্ণ, যাদব এবং কখনও সখা বলে সম্মোধন করেছি, এই সমস্ত ক্রটির জন্য আমাকে ক্ষমা করুন। তিনি ক্ষমাও করলেন; কারণ অর্জুনের প্রার্থনা স্বীকার করে তিনি সৌম্যস্বরূপ ধারণ করলেন, ধৈর্য প্রদান করলেন।

বস্তুতঃ কৃষ্ণ বলা অপরাধ ছিল না। তিনি শ্যামবর্ণের ছিলেনই, গৌর কি করে কেউ বলত? যদুবংশে তাঁর জন্ম হয়েছিল। শ্রীকৃষ্ণ স্বয়ং নিজেকে অর্জুনের সখা বলে মনে করতেন। বাস্তবে প্রত্যেক সাধক ‘মহাপুরুষ’কে শুরুতে এই রূপই মনে করেন। কিছু লোক তাঁদের রূপ ও আকার অনুসারে, কিছু লোক তাঁদের বৃক্ষি অনুসারে সম্মোধন করেন এবং কিছু তাঁদেরকে নিজের সমকক্ষ বলে মনে করেন, তাঁদের যথার্থস্বরূপ বুঝতে পারে না। শ্রীকৃষ্ণের অচিন্ত্য স্বরূপ যখন অর্জুন দেখলেন তখন অনুভব করলেন যে, ইনি কালোও নন, গৌরও নন, কোন কুলেরও নন এবং কারও সঙ্গী, সাথীও নন। এঁর সমান কেউ নয়, তাহলে সখা বা সমান কি করে হবেন? এই স্বরূপ অচিন্ত্য। যাঁকে ইনি দেখিয়ে দেন, তিনিই দেখতে সমর্থ হন। সেইজন্য অর্জুন নিজের প্রারম্ভিক সমস্তভূলের জন্য ক্ষমা-প্রার্থনা করলেন।

এখন প্রশ্ন যে, কৃষ্ণ বলা যদি অপরাধ, তবে তাঁর কোন নাম জপ করা হবে? যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ স্বয়ং যা' জপ করার জন্য জোর দিয়েছেন, জপের যে বিধি বলেছেন, সেই বিধি অনুসারেই আপনি চিন্তন-স্মরণ করুন। তা' হল—‘ওমিত্যেকাক্ষরৎ ব্রহ্ম ব্যাহরণ্মামনুস্মরন্।’—‘ওঁ’ অক্ষর ব্রহ্মের পরিচায়ক। ‘ও অহম্ স ওম্’—যা' ব্যাপ্ত চতুর্দিকে, সেই সত্তা আমাতেও বিদ্যমান, এই হ'ল ‘ওঁ’-এর অর্থ। আপনি এর জপ এবং ধ্যান আমার করুন। রূপ নিজের এবং নাম ‘ওঁ’ বললেন।

অর্জুন চতুর্ভুজ রূপ ধারণ করতে প্রার্থনা করলেন। সেই সৌম্যরূপ শ্রীকৃষ্ণ ধারণ করলেন। অর্জুন বললেন— ভগবন! আপনার এই সৌম্য মানুষরূপ দেখে

আমি এখন প্রকৃতিস্থ হলাম। দেখতে চেয়েছিলেন চতুর্ভুজরূপ, দেখালেন ‘মানুষং  
রূপং’। বাস্তবে যিনি শাশ্বতে স্থিত সেই যোগীর দেহটা দেখা যায় বহু লোকের মাঝে  
বসে; কিন্তু যেখান থেকেই কোন ভক্ত অন্তর থেকে তাঁকে স্মরণ করেন, সেখানেই  
তাঁদের হাদয়ে জাগ্রত হয়ে একসঙ্গে সর্বত্র প্রেরকরণপে কাজ করেন। তাঁদের কার্যের  
প্রতীক বাছ, এই হল চতুর্ভুজের তাৎপর্য।

শ্রীকৃষ্ণ বললেন— অর্জুন! তুমি ভিন্ন কেউ এই রূপদর্শন করেনি এবং  
ভবিষ্যতেও কেউ দর্শন করতে সমর্থ হবে না। তাহলে কি গীতাশাস্ত্র আমাদের জন্য  
নয়? তা নয়, শ্রীকৃষ্ণ বলছেন— একটা উপায় আছে। যিনি আমার অনন্য ভক্ত, অন্য  
কারণ স্মরণ না করে যিনি নিরস্তর আমারই চিন্তন করেন, তাঁর অনন্য ভক্তির বলে  
আমি প্রত্যক্ষ করার (যে রূপ তুমি দেখলে), তত্ত্বতঃ জানার এবং স্থিত হবার জন্য  
সুলভ। অর্থাৎ অর্জুন অনন্য ভক্ত ছিলেন। ভক্তির পরিমার্জিত রূপ অনুরাগ, ইষ্টের  
অনুরূপ নিষ্ঠা। ‘মিলহিঁ ন রঘুপতি বিনু অনুরাগা।’— অনুরাগরহিত পুরুষ কখনও  
লাভ করেনি এবং ভবিষ্যতেও করবে না। অনুরাগী না হলে, কেউ লক্ষ্য যোগ করুক,  
জপ, তপস্যা অথবা দান করুক ‘তাঁকে’ লাভ করে না। অতএব ইষ্টের অনুরূপ রাগ  
অথবা অনন্য ভক্তি নিতান্ত আবশ্যিক।

অবশ্যে শ্রীকৃষ্ণ বললেন, অর্জুন! আমার দ্বারা নির্দিষ্ট কর্ম কর, আমার  
অনন্যভক্ত, আমার শরণাগত হয়ে কর, কিন্তু সঙ্গদোষ থেকে পৃথক অবস্থান করবে।  
সঙ্গদোষ থাকলে এই কর্ম হওয়া অসম্ভব। অতএব এই কর্ম সম্পাদনের পথে সঙ্গদোষ  
বাধকের কাজ করে। যিনি বৈরভাবরহিত, তিনি আমাকে লাভ করেন। যেখানে  
সঙ্গদোষ নেই, যেখানে আমাকে ছাড়া অন্য কেউ নেই, বৈরভাবের সকল নেই,  
সেই পরিস্থিতিতে যুদ্ধ কি রূপে সম্ভব? সংসারে লড়াই-ঝাগড়া হতেই থাকে; কিন্তু  
যাঁরা এই সাংসারিক যুদ্ধে জয়লাভ করেন, তাঁরাও বাস্তবিক বিজয়লাভ করেন না।  
দুর্জয় সংসাররূপ শক্তকে অসঙ্গতরূপ শক্ত দ্বারা ছেদন করে ‘পরম-এ’ স্থিতিলাভ  
করাই বাস্তবিক বিজয়, এর পর পরাজয় নেই।

বর্তমান অধ্যায়ে প্রথমে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনকে দৃষ্টি প্রদান করলেন,  
তারপর নিজের বিশ্বরূপের দর্শন করিয়েছিলেন। অতএব—

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসুপনিষৎযু ব্ৰহ্মাবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণজুন সংবাদে ‘বিশ্বরূপদর্শনযোগো’ নামেকাদশোহধ্যায়ঃ ॥১১॥

এই প্রকার শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারাপী উপনিষদ্ এবং ব্ৰহ্মাবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র  
বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ এবং অর্জুনের সংবাদে ‘বিশ্বরূপ-দর্শন যোগ’ নামক একাদশ অধ্যায়  
পূৰ্ণ হ'ল।

ইতি শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে  
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ ‘যথার্থগীতা’ ভাষ্যে ‘বিশ্বরূপদর্শনযোগো’  
নামেকাদশোহধ্যায়ঃ ॥১১॥

এই প্রকার শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দজীর শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত  
‘শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা’র ভাষ্য ‘যথার্থ গীতা’তে ‘বিশ্বরূপ-দর্শন যোগ’ নামক একাদশ  
অধ্যায় সমাপ্ত হল।

॥ হরিঃ ওঁ তৎসৎ ॥

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মনে নমঃ ।।

## ।। অথ দ্বাদশোহধ্যায়ঃ ।।

একাদশ অধ্যায়ের শেষে শ্রীকৃষ্ণ বার বার জোর দিয়েছেন যে, অর্জুন ! আমার এই স্বরূপ, যা' তুমি দর্শন করলে, তুমি ছাড়া আর কেউ দেখেনি এবং ভবিষ্যতেও কেউ দেখতে সমর্থ হবে না । তপস্যা, যজ্ঞ এবং দানদ্বারা আমার দর্শন পাওয়া যায় না; কিন্তু অনন্য ভক্তির দ্বারা অর্থাৎ আমার অতিরিক্ত অন্যত্র কেথাও যেন শুন্দা না যায়, নিরস্তর তৈলধারার ন্যায় চিন্তনদ্বারা ঠিক এইরূপ যে রূপ তুমি দর্শন করলে, আমি প্রত্যক্ষ করার জন্য, তত্ত্বতঃ জানার জন্য এবং স্থিতিলাভ করার জন্যও সুলভ । অতএব অর্জুন ! নিরস্তর আমার চিন্তন কর, ভক্ত হও । অধ্যায়ের শেষে তিনি বলেছিলেন, অর্জুন ! তুমি আমার দ্বারা নির্ধারিত কর্ম কর ! ‘মৎপরমঃ’- মৎপরায়ণ হয়ে কর । তাঁর প্রাপ্তির মাধ্যম অনন্য ভক্তি । অর্জুনের এই প্রশ্ন স্বাভাবিক ছিল যে, যিনি অব্যক্ত অক্ষরের উপাসনা করেন এবং যিনি সঙ্গ আপনার উপাসনা করেন, উভয়ের মধ্যে শ্রেষ্ঠ কে ?

অর্জুন তৃতীয়বার এই প্রশ্নটি করলেন । তৃতীয় অধ্যায়ে তিনি বলেছিলেন, ভগবন ! যদি নিষ্কাম কর্মযোগ অপেক্ষা সাংখ্যযোগ শ্রেষ্ঠ বলে আপনার অভিমত, তাহলে আমাকে ভয়ঙ্কর কর্মে কেন নিযুক্ত করছেন ? এই প্রসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন— অর্জুন ! নিষ্কাম কর্মর্মার্গ ভাল লাগুক অথবা জ্ঞানর্মার্গ, উভয় মাগেই কর্ম করতে হবে । এরপরও যে ব্যক্তি ইন্দ্রিয়সমূহকে বলপূর্বক রোধ করে মনে মনে বিষয়-চিন্তন করে, যে অহঙ্কারী, জ্ঞানী নয় । অতএব অর্জুন ! তুমি কর্ম কর । কি কর্ম ? সেই কর্ম ‘নিয়তং কুরু কর্ম ত্বং’- আমার দ্বারা নির্ধারিত কর্ম কর । নির্ধারিত কর্ম কি ? তখন বললেন— যজ্ঞের প্রক্রিয়া হ'ল একমাত্র কর্ম । যজ্ঞের বিধি বললেন, যা' আরাধনা-চিন্তন-এর বিধি-বিশেষ, যে প্রক্রিয়ার দ্বারা পরম-এ স্থিতি লাভ হয় । যখন নিষ্কাম কর্মর্মার্গ এবং জ্ঞানর্মার্গ উভয় মাগেই কর্ম করতে হবে, যজ্ঞার্থ কর্ম করতে হবে, ক্রিয়া একটাই, তখন পার্থক্য কোথায় ? যিনি ভক্ত তিনি ইষ্টকে সমস্ত কর্ম

সমর্পণ করে, ইষ্টের আন্তিত হয়ে যজ্ঞার্থ কর্মে প্রবৃত্ত হন এবং সাংখ্যযোগী যাঁরা, তাঁরা নিজের শক্তি সম্বন্ধে বিবেচনা করে সেই কর্মে প্রবৃত্ত হন। (আঘানির্ভর হয়ে) যতটা পরিশ্রমের প্রয়োজন ততটা করেন।

পঞ্চম অধ্যায়ে অর্জুন পুনরায় প্রশ্ন করেছিলেন— ভগবন्! কখনও আপনি সাংখ্য মাধ্যমে যে কর্ম করা হয়, তার প্রশংসা করছেন, কখনও সমর্পণ করে যে নিষ্কাম কর্ম করা হয়, তার প্রশংসা করছেন—উভয়ের মধ্যে শ্রেষ্ঠ মার্গ কোনটি? অর্জুন বুঝতে পেরেছিলেন যে, কর্ম উভয়মাগেই করতে হবে, তবুও তিনি শ্রেষ্ঠ মার্গটি বেছে নিতে চান। শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—অর্জুন! উভয় মাগেই কর্মে প্রবৃত্ত ব্যক্তি আমাকেই লাভ করেন; কিন্তু সাংখ্যমার্গ অপেক্ষা নিষ্কাম কর্মমার্গ শ্রেষ্ঠ। নিষ্কাম কর্মযোগের অনুষ্ঠান না করে কেউ যোগী বা জ্ঞানী হতে পারেন না। সাংখ্যযোগ দুষ্কর এবং তাতে বাধাও অনেক।

এখানে অর্জুন তৃতীয়বার জিজ্ঞাসা করলেন যে, ভগবন্! আপনার প্রতি অনন্য ভক্তির সঙ্গে যুক্ত এবং অব্যক্ত অক্ষরের উপাসনাতে (সাংখ্যমার্গদ্বারা) যাঁরা নিযুক্ত উভয়ের মধ্যে শ্রেষ্ঠ কে?

### অর্জুন উবাচ

এবং সততযুক্তা যে ভক্তাস্ত্রাং পর্যুপাসতে।

যে চাপ্যক্ষরমব্যক্তং ত্যোং কে যোগবিভূতাঃ ॥১॥

‘এবং’ অর্থাৎ এই যে বিধি, এখন আপনি বললেন, সেই বিধি অনুসারে যাঁরা অনন্য ভক্তির সঙ্গে আপনার শরণাগত হয়ে, নিরস্তর আপনার সঙ্গে সংযুক্ত হয়ে উত্তমরূপে আপনার উপাসনা করেন এবং অন্যান্য যাঁরা আপনাকে আশ্রয় না করে স্বতন্ত্ররূপে নিজের উপর নির্ভর করে সেই অক্ষয় এবং অব্যক্ত স্বরূপের উপাসনা করেন, যাঁর মধ্যে আপনিও স্থিত, এই দুই প্রকার ভক্তমধ্যে অধিক উত্তম যোগবেত্তা কারা? এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন—

### শ্রীভগবানুবাচ

ময্যাবেশ্য মনো যে মাং নিত্যযুক্তা উপাসতে।

শ্রদ্ধয়া পরয়োপেতাস্তে মে যুক্ততমা মতাঃ ॥২॥

অর্জুন ! আমাতে মনকে একাগ্র করে, নিরস্তর আমাতে সংযুক্ত ভক্তগণ  
পরম-এর সঙ্গে সম্বন্ধ রেখে শ্রেষ্ঠ শ্রদ্ধার সঙ্গে যুক্ত হয়ে আমার ভজনা করেন,  
তাঁরাই আমার মতে অতি উত্তম যোগী ।

যে স্বর্করণনিদেশ্যমব্যক্তঃ পর্যুপাসতে ।

সর্বত্রগমচিন্ত্যঃ চ কুটস্থমচলঃ ধ্রুবম্ ॥৩॥

সমিয়মেল্লিয়গ্রামঃ সর্বত্র সমবুদ্ধযঃ ॥

তে প্রাপ্তুবন্তি মামেব সর্বভূতহিতে রতাঃ ॥৪॥

যে পুরুষগণ ইদ্বিয়সমূহকে উত্তমরূপে সংযত করে, মন-বুদ্ধির চিন্তন থেকে  
অত্যন্ত উৎরে সর্বব্যাপী, অনিবর্চনীয় স্বরূপ, সদা একরস, নিত্য, অচল, অব্যক্ত  
আকারশূণ্য এবং অবিনাশী ব্রহ্মের উপাসনা করেন, সর্বভূতের হিতসাধনে নিযুক্ত  
এবং যাঁরা সকলকেই সমান বলে মনে করেন, সেই যোগীগণ আমাকেই প্রাপ্ত হন ।  
ব্রহ্মের উপর্যুক্ত বিশেষণ আমার থেকে আলাদা নয়; কিন্তু—

ক্লেশোহধিকতরস্তেষামব্যক্তাসক্তচেতসাম্ ।

অব্যক্তা হি গতিদৃঢ়খঃ দেহবক্তিরবাপ্যতে ॥৫॥

যাঁদের চিন্ত সেই অব্যক্ত পরমাত্মাতে আসক্ত, যেই পুরুষগণকে সাধন পথে  
অধিক ক্লেশ সহ্য করতে হয়; কারণ অব্যক্ত বিষয়ক গতিলাভ করা দেহাভিমানী  
ব্যক্তিগণের পক্ষে অতিশয় কষ্টকর । যতক্ষণ দেহবোধ বিদ্যমান, ততক্ষণ অব্যক্তের  
প্রাপ্তি দুঃখের ।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ সদ্গুরু ছিলেন । অব্যক্ত পরমাত্মা তাঁর মধ্যে ব্যক্ত ছিলেন ।  
তিনি বলছেন যে, মহাপুরুষের শরণাগত না হয়ে, যে সাধক আত্মানির্ভর হয়ে এগিয়ে  
যান যে, এখন আমি এই স্তরে, পরে এই স্তরে পৌঁছোব, আমি নিজের অব্যক্ত  
দেহলাভ করব, তা' আমারই স্বরূপ হবে এবং তাই আমার বাস্তবিকরণপ ।— এইরূপ  
চিন্তন করে, প্রাপ্তির অপেক্ষা না করে নিজের দেহকেই 'সোহহম্' বলেন । এই  
সাধনাপথের সবথেকে বড় বাধা এটাই । সেই সাধক 'দুঃখালয়ম্ তাশাশ্঵তম্'- এর  
মধ্যেই ঘোরাফেরা করতে থাকেন । কিন্তু যিনি আমার শরণাগত, তিনি—

যে তু সর্বাণি কর্মাণি ময়ি সন্ন্যস্য মৎপরাঃ ।

অনন্যেনেব যোগেন মাং ধ্যায়ন্ত উপাসতে ॥৬॥

যাঁরা মৎপরায়ণ হয়ে সমস্ত কর্ম অর্থাৎ আরাধনা আমাতে সমর্পণ করে অনন্যভাবে যোগ অর্থাৎ আরাধনা প্রক্রিয়ার দ্বারা নিরস্তর চিন্তন করে ভজনা করেন—

তেষামহং সমুদ্ধৰ্ত্তা মৃত্যুসংসারসাগরাঃ ।

ভবামি নচিরাংপার্থ ময্যাবেশিতচেতসাম ॥৭॥

কেবল মদ্গতচিন্ত সেই সকল ভক্তকে মৃত্যুরূপ সংসার থেকে আমি শীঘ্ৰ উদ্ধার করি। এইরূপ চিন্ত নিযুক্ত করার প্রেরণা এবং বিধির উপর যোগেশ্বর আলোকপাত করলেন—

ময়েব মন আধৎস্ব ময়ি বুদ্ধিং নিবেশয় ।

নিবিসিষ্যসি ময়েব অত উর্ধ্বং ন সংশয়ঃ ॥৮॥

অতএব অর্জুন ! আমাতে তুমি মন সমাহিত কর, আমাতেই বুদ্ধি নিবিষ্ট কর। এইরূপ করলে তুমি আমাতেই স্থিতিলাভ করবে, এতে কোন সন্দেহ নেই। মন সমাহিত এবং বুদ্ধি নিবিষ্ট করতে না পারলে, (অর্জুন পূর্বে বলেছিলেন যে, মনের গতিরোধ করা বায়ুর মত দুষ্কর বলে আমি মনে করি) এই প্রসঙ্গে যোগশ্বের শ্রীকৃষ্ণ বললেন—

অথ চিন্তং সমাধাতুং ন শক্তোষি ময়ি স্থিরম् ।

অভ্যাসযোগেন ততো মামিচ্ছাপ্তুং ধনঞ্জয় ॥৯॥

যদি তুমি আমাতে স্থিরভাবে চিন্ত সমাহিত করতে না পার, তাহলে হে অর্জুন ! যোগাভ্যাসের দ্বারা আমাকে লাভ করতে ইচ্ছা কর। (বিক্ষিপ্ত চিন্তকে আকর্ষণ করে আরাধনা, চিন্তন-ক্রিয়াতে নিযুক্ত করার যত্নকে অভ্যাস বলে) যদি এরূপ করতে অক্ষম হও তাহলে—

অভ্যাসেহপ্যসমর্থোহসি মৎকর্মপরমো ভব ।

মদর্থমপি কর্মাণি কুর্বন् সিদ্ধিমবান্ন্যসি ॥১০॥

যদি তুমি অভ্যাস করতেও অসমর্থ হও, তাহলে কেবল আমার জন্য কর্ম কর অর্থাৎ আরাধনাতে যত্নবান হও। এইরূপ আমার প্রাপ্তির জন্য কর্ম করতে-করতেই তুমি আমাকে প্রাপ্তিরূপ সিদ্ধিলাভ করবে অর্থাৎ অভ্যাস করতেও অসমর্থ হলে, সাধনায় প্রবৃত্ত থাক শুধু।

অঈতেতদপ্যশক্তোহসি কর্তৃং মদ্যোগমাণ্ডিতঃ ।

সর্বকর্মফলত্যাগং ততঃ কুরু যতাত্মবান् ॥১১॥

এও করতে যদি অসমর্থ হও, তাহলে সকল কর্মের ফলত্যাগ করে অর্থাৎ লাভ-লোকসানের চিন্তা ত্যাগ করে মদ্যোগের আশ্রয় করে অর্থাৎ সমর্পণের সঙ্গে আত্মবান মহাপুরুষের শরণাগত হও। তাঁর প্রেরণায় স্বতঃ কর্ম হতে থাকবে। সমর্পণের সঙ্গে কর্মফল ত্যাগের মহত্ব বর্ণনা করার পর যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন—

শ্রেয়ো হি জ্ঞানমভ্যাসাজ্জ্ঞানাদধ্যানং বিশিষ্যতে ।

ধ্যানাংকর্মফলত্যাগস্ত্যাগাচ্ছান্তিরনন্তরম্ ॥১২॥

কেবল চিন্তরোধ করার অভ্যাস থেকে জ্ঞানমার্গ দ্বারা কর্মে প্রবৃত্ত হওয়া শ্রেষ্ঠ। জ্ঞানমার্গ দ্বারা কর্ম করা অপেক্ষা ধ্যান শ্রেষ্ঠ; কারণ ধ্যানে ইষ্ট থাকেন। ধ্যান থেকেও সমস্ত কর্মের ফলত্যাগ শ্রেষ্ঠ; কারণ ইষ্টের প্রতি সমর্পণের সঙ্গে যোগের উপর দৃষ্টি রেখে কর্মফলের ত্যাগ করলে তার যোগক্ষেত্রের দায়িত্ব ইষ্টের, সেইজন্য এই ত্যাগের পরেই পরমশান্তি লাভ হয়।

এখন পর্যন্ত যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন যে, অব্যক্তের উপাসক জ্ঞানমার্গী অপেক্ষা সমর্পণের সঙ্গে কর্ম করেন যিনি, সেই নিষ্কাম কর্মযোগী শ্রেষ্ঠ। উভয়েই এক কর্ম করেন; কিন্তু জ্ঞানমার্গীর পথে ব্যবধান বেশী। তাঁর লাভ-লোকসানের দায়িত্ব তাঁর নিজের উপরই থাকে; কিন্তু যাঁরা সমর্পিত ভক্ত তাঁদের দায়িত্ব মহাপুরুষের উপর থাকে। সেইজন্য তাঁরা কর্মফল-ত্যাগ দ্বারা শীঘ্রই শান্তিলাভ করেন। ঐরূপ শান্তিপ্রাপ্ত পুরুষের লক্ষণ সম্বন্ধে বলছেন—

অদ্বেষ্টা সর্বভূতানাং মৈত্রঃ করণ এব চ ।

নির্মমো নিরহক্ষারঃ সমদুঃখসুখঃ ক্ষমী ॥১৩॥

ঐ শাস্তিলাভ করেছেন যিনি, তিনি সকলভূতের প্রতি দ্বেষহীন, সকলের সুহাদ্ এবং অহেতুক দয়ালু, মমত্বশূণ্য, নিরহংকার, সুখ-দুঃখে সম এবং ক্ষমাশীল,

**সন্তস্তঃ সততঃ যোগী যতাত্মা দৃঢ়নিশ্চয়ঃ।**

**ময়পর্তিমনোবুদ্ধির্মো মন্ত্রক্তঃ স মে প্রিয়ঃ ॥১৪॥**

যিনি নিরস্তর যোগের পরাকার্থার সঙ্গে সংযুক্ত, লাভ এবং লোকসানে সন্তস্ত, যাঁর মন, ইন্দ্রিয়সমূহ এবং দেহ সংযত, দৃঢ়নিশ্চয়, মন ও বুদ্ধি আমাতে অপৃত, তিনি আমার প্রিয়ভক্ত।

**যস্মান্নোদ্বিজতে লোকো লোকান্নোদ্বিজতে চ যঃ।**

**হর্ষমর্যব্যোদ্বেগের্মুক্তো যঃ স চ মে প্রিয়ঃ ॥১৫॥**

যাঁর দ্বারা কেউ উদ্বিঘ্ন হন না এবং যিনি নিজেও কোন জীবের দ্বারা উদ্বিঘ্ন হন না এবং যিনি হর্ষ, বিশাদ, ভয় এবং সমস্ত বিক্ষোভ থেকে মুক্ত, তিনি আমার প্রিয় ভক্ত।

সাধকদের জন্য এই শ্লোকটি অত্যন্ত উপযোগী। তাঁদের এমন ভাবে থাকা উচিত, যাতে তাঁদের দ্বারা কারও মনে আঘাত না লাগে। এটুকু সাধক নিশ্চয় করতে পারেন; কিন্তু অন্য ব্যক্তি এই আচরণ করবে না। তাঁরা সংসারী, তাই কটু কথা বলবেনই, ইচ্ছামত বলবেন; কিন্তু সাধকের হস্তয়ে যেন তাদের কটুবাক্য দ্বারা (তাঁদের আঘাত দ্বারা) বিক্ষোভ উৎপন্ন না হয়। ইষ্টচিন্তনে মগ্ন থাকবেন, যাতে কোন ব্যবধান উৎপন্ন না হয়। উদাহরণস্বরূপ, আপনি রাস্তায় বাঁদিক দিয়ে হেঁটে চলেছেন, যদি কোন মাতাল তখন সামনে থেকে আয়ে, তাহলে তাকে এড়িয়ে যাওয়াও আপনার কর্তব্য।

**অনপেক্ষঃ শুচিদৰ্শক উদাসীনো গতব্যথঃ।**

**সর্বারন্তপরিত্যাগী যো মন্ত্রক্তঃ স মে প্রিয়ঃ ॥১৬॥**

যিনি আকাঙ্ক্ষা করেন না, বাহ্যাভ্যন্তর শুচি, ‘দক্ষঃ’ অর্থাৎ আরাধনার বিশেষজ্ঞ (এমন নয় যে চুরিতে দক্ষ। শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে কর্ম একটাই, নিয়ত কর্ম—আরাধনা-চিন্তন, যিনি তাতে দক্ষ), পক্ষ-বিপক্ষের অতীত, দুঃখমুক্ত, সমস্ত

আরঙ্গের ত্যাগী, তিনি আমার প্রিয়ভক্ত। করণীয় কোন কর্ম তাঁর দ্বারা আরঙ্গ হবার জন্য বাকী থাকে না।

**যো ন হৃষ্যতি ন দ্বেষ্টি ন শোচতি ন কাঙ্ক্ষতি।**

**শুভাশুভপরিত্যাগী ভক্তিমানঃ স মে প্রিযঃ ॥১৭॥**

যিনি কখনও হষ্ট হন না, দ্বেষ করেন না, শোক করেন না, আকাঙ্ক্ষাও করেন না, যিনি শুভাশুভ সকল কর্মফল পরিত্যাগ করেছেন, যেখানে শুভ পৃথক নেই, অশুভ বাকী নেই, ভক্তির পরাকার্থার সঙ্গে যুক্ত সেই পুরুষ আমার প্রিয়ভক্ত।

**সমঃ শত্রৌ চ মিত্রে চ তথা মানাপমানয়োঃ।**

**শীতোষ্ণসুখদুঃখে সমঃ সঙ্গবিবর্জিতঃ ॥১৮॥**

যিনি শক্রতে ও মিত্রে, মান ও অপমানে সম, যাঁর অন্তঃকরণের বৃত্তিগুলি সম্পূর্ণরূপে শান্ত, যিনি শীতোষ্ণজনিত সুখে ও দুঃখে নির্বিকার এবং আসক্তিশূণ্য এবং—

**তুল্যনিন্দাস্ত্রিমৌলি সন্তস্তো যেন কেনচিৎ।**

**অনিকেতঃ স্থিরমাত্রভক্তিমাল্যে প্রিয়ো নরঃ ॥১৯॥**

যিনি নিন্দা ও প্রশংসায় সম, মননশীলতার চরমসীমায় পৌঁছে যাঁর মন এবং ইন্দ্রিয়সমূহ শান্ত, যে কোন প্রকার দেহ-নির্বাহ যিনি সন্তুষ্ট, যিনি নিজ বাস-স্থানের প্রতি মমতাশূন্য, ভক্তির পরাকার্থাতে স্থিত সেই স্থিরবুদ্ধি পুরুষ আমার প্রিয়ভক্ত।

**যে তু ধর্ম্যায়তমিদং যথোক্তং পর্যুপাসতে।**

**অদ্বানা মৎপরমা ভক্তাস্তেহতীব মে প্রিয়াঃ ॥২০॥**

যে সকল মৎপরায়ণ আন্তরিক শ্রদ্ধাযুক্ত পুরুষ উপর্যুক্ত ধর্মময় অনুত্তের উত্তমরূপে সেবন করেন, সেই সকল ভক্ত আমার অত্যন্ত প্রিয়।

**নিষ্কর্ষ—**

পূর্ব অধ্যায়ের শেষে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন, অর্জুন ! তুমি ভিন্ন কেউ দর্শন করে নি এবং কেউ দর্শন পাবেও না-যেরূপ তুমি দেখলে; কিন্তু অনন্যভক্তি অথবা অনুরাগের সঙ্গে যিনি ভজনা করেন, তিনি আমার এই রূপ-দর্শন করতে

সক্ষম, তত্ত্বতঃ আমাকে জানতে পারেন এবং আমাতে স্থিতিলাভ করতে পারেন। অর্থাৎ পরমাত্মা এরূপ সত্তা, যাঁকে লাভ করা যায়। অতএব অর্জুন ! তুমি ভক্ত হও।

বর্তমান অধ্যায়ে অর্জুন জিজ্ঞাসা করলেন যে, ভগবন् ! অনন্যভাবে যাঁরা আপনার চিন্তন করেন এবং অন্যান্য যাঁরা অক্ষর অব্যক্তের উপাসনা করেন, উভয়ের মধ্যে কারা উত্তম যোগবেত্তা ? যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন যে, উভয়েই আমাকেই লাভ করেন, কারণ আমি অব্যক্ত স্বরূপ; কিন্তু যিনি ইন্দ্রিয়সমূহকে বশীভূত করে বিক্ষিপ্ত মনকে সংযত করে অব্যক্ত পরমাত্মাতে আসন্ত, তাঁদের পথে কষ্ট বেশী হয়। যতক্ষণ দেহবোধ বিদ্যমান, ততক্ষণ অব্যক্তের প্রাপ্তি কষ্টকর; কারণ চিন্তের নিরোধ এবং বিলয়কালে অব্যক্ত স্বরূপ লাভ হয়। এই স্থিতির আগে সাধকের দেহই বাধকস্বরূপ। ‘আমি’, ‘আমি’, ‘আমাকে লাভ করতে হবে’— বলতে বলতে নিজের দেহের দিকেই মনটা চলে যায়। তার বিচলিত হবার সম্ভাবনা বেশী থাকে। অতএব অর্জুন ! তুমি সমস্ত কর্ম আমাকে সমর্পণ কর, অনন্য ভক্তি সহকারে আমার চিন্তন কর। মৎপরায়ণ ভক্তগণ সমস্ত কর্ম আমাকে অর্পণ করে, মানবদেহধারী সংগৃণ যৌগীরূপ আমার ধ্যান করেন, তৈলধারাবৎ নিরন্তর চিন্তন করেন, আমি তাঁদের শীঘ্রই সংসার-সাগর থেকে উদ্ধার করি। অতএব ভক্তিমার্গ শ্রেষ্ঠ।

অর্জুন ! আমাতে মন সমাহিত কর। তা’ যদি না পার তাহলে সমাহিত করার অভ্যাস কর। চিন্ত বিক্ষিপ্ত হলেই পুনরায় আকর্যণ করে তাকে নিরস্ত্র কর। তাতেও অক্ষম হলে তুমি কর্ম কর। কর্ম একটাই, যজ্ঞার্থ কর্ম। তুমি ‘কার্যম কর্ম’ করে যাও মাত্র, অন্য কিছু নয়। তাতে উদ্ধার হও অথবা না হও। যদি তা’ও করতে অক্ষম, তাহলে স্থিতিপঙ্খ, আত্মবান, তত্ত্বজ্ঞ মহাপুরুষের শরণাগত হয়ে সমস্ত কর্মের ফলত্যাগ কর। এইরূপ ত্যাগ করলে তুমি পরমশান্তি লাভ করবে।

তদনন্তর পরমশান্তিপ্রাপ্তি ভক্তের লক্ষণ বলার পর যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন— যিনি সমস্ত প্রাণীর প্রতি দ্বেষহীন, করণাময় এবং দয়ালু, মমত্বশূণ্য এবং নিরহংকার, তিনি আমার প্রিয়ভক্ত। যিনি ধ্যান-যোগ-এ নিরন্তর তৎপর, আত্মবান এবং আত্মস্থিত, তিনি আমার প্রিয়ভক্ত। যাঁরদ্বারা কোন ব্যক্তি উদ্বিগ্ন হয় না এবং যিনি স্বয়ং কোন ব্যক্তির দ্বারা উদ্বিগ্ন হন না, তিনি আমার প্রিয়ভক্ত। যিনি পবিত্র, দক্ষ, যিনি সুখে ও দুঃখে নির্বিকার, যিনি সকল আরঙ্গের ত্যাগী, মুক্ত, তিনি আমার

প্রিয়ভক্ত। সকল কামনা যিনি ত্যাগ করেছেন এবং যিনি শুভ-অশুভের উত্থের স্থিতি, তিনি আমার প্রিয়ভক্ত। যিনি প্রশংসা ও নিন্দায় সম এবং মৌন, যাঁর মন এবং ইন্দ্রিয়সমূহ শান্ত এবং মৌন, যিনি যে কোন প্রকার দেহ-নির্বাহ সম্মত এবং বাসস্থানের প্রতি মমত্বশৃঙ্খল, দেহরক্ষাতেও যাঁর আসত্তি নেই, এইরূপ স্থিতপ্রজ্ঞ ভক্তিমান পুরুষ আমার প্রিয়ভক্ত।

এইভাবে ১১শ শ্লোক থেকে ১৯শ শ্লোকপর্যন্ত যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ শাস্তিপ্রাপ্ত যোগাযুক্ত ভক্তের অবস্থিতির উপর আলোকপাত করলেন যা' সাধকদের জন্য বিশেষ উপযোগী। অবশেষে নির্ণয় করে তিনি বললেন—অর্জুন! যিনি মৎপরায়ণ, অনন্য শ্রদ্ধার সঙ্গে উক্ত ধর্ময় অমৃতকে নিষ্কামভাবে উত্তমরূপে আচরণে পরিণত করেন, তিনি আমার অত্যন্ত প্রিয়ভক্ত। অতএব সমর্পণের সঙ্গে এই কর্মে প্রবৃত্ত হওয়া শ্রেষ্ঠকর; কারণ তাঁর লাভ-লোকসানের দায়িত্ব সেই ইষ্ট, সদ্গুরু নিয়ে নেন। এখানে শ্রীকৃষ্ণ স্বরূপস্থ মহাপুরুষের লক্ষণ বললেন, তাঁদের আশ্রয়ে যেতে বললেন এবং অবশেষে নিজের শরণাগত হওয়ার প্রেরণা প্রদান করে সেই মহাপুরুষগণের সমকক্ষ নিজেকে ঘোষিত করলেন। শ্রীকৃষ্ণ যোগী, মহাআত্মা ছিলেন।

বর্তমান অধ্যায়ে ভক্তিকে শ্রেষ্ঠ বলা হয়েছে, সেইজন্য অধ্যায়টির নামকরণ ‘ভক্তিযোগ’ যুক্তিসঙ্গত।

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎযু ব্রহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণার্জুন সংবাদে ‘ভক্তিযোগে’ নাম দাদশোহধ্যায়ঃ ॥১২॥

এই প্রকার শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারন্পী উপনিষদ্ এবং ব্রহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ এবং অর্জুনের সংবাদে ‘ভক্তিযোগ’ নামক দাদশ অধ্যায় পূর্ণ হল।

ইতি শ্রীমৎপরমহৎস পরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে  
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়াঃ ‘যথার্থগীতা’ ভাষ্যে ‘ভক্তিযোগে’ নামক দাদশ অধ্যায় পূর্ণ ॥১২॥

এই প্রকার শ্রীমৎপরমহৎস পরমানন্দজীর শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত  
‘শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা’র ভাষ্য ‘যথার্থ গীতা’তে ‘ভক্তিযোগ’ নামক দাদশ অধ্যায় সমাপ্ত  
হল।

॥ হরিঃ ওঁ তৎসৎ ॥

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মনে নমঃ ।।

## ।। অথ ব্রহ্মদশোহধ্যায়ঃ ।।

গীতার আরঙ্গেই ধৃতরাষ্ট্র জিজ্ঞাসা করেছিলেন যে, হে সংজয় ! ধর্মক্ষেত্রে, কুরুক্ষেত্রে সমবেত যুদ্ধের ইচ্ছুক আমার এবং পাণ্ডুপুত্রগণ কি করল ? কিন্তু এখনও বলা হয়নি যে, সেই ক্ষেত্র কোথায় ? পরন্তু যে মহাপুরুষ যে ক্ষেত্রে যুদ্ধ বলেছেন, প্রস্তুত অধ্যায়ে সেই মহাপুরুষ স্বয়ং নির্ণয় করলেন যে, যে ক্ষেত্রে এই যুদ্ধ হয়েছিল, সেই ক্ষেত্র বস্তুতঃ কোথায় ?

শ্রীভগবানুবাচ

ইদং শরীরং কৌন্তেয় ক্ষেত্রমিত্যভিধীয়তে।

এতদ্যো বেত্তি তৎ প্রাহৃত ক্ষেত্রজ্ঞ ইতি তদ্বিদঃ ॥১॥

কৌন্তেয় ! এই দেহটাই একটা ক্ষেত্র এবং যিনি একে উত্তমরূপে জানেন, তিনিই ক্ষেত্রজ্ঞ । তিনি এর মধ্যে আবদ্ধ নন বরং এর সঞ্চালক । সেই তত্ত্ববিদ্ মহাপুরুষগণ এইরূপ বলেন ।

দেহ তো একটাই, তবে এতে ধর্মক্ষেত্র এবং কুরুক্ষেত্র এইদুটি ক্ষেত্র একত্রে কিরণপে থাকতে পারে ? বস্তুতঃ এই একটা দেহেরই অস্তরালে অস্তঃকরণের দুটি পুরাতন প্রবৃত্তিবিদ্যমান । প্রথমটি পুণ্যময় প্রবৃত্তি দৈবী সম্পদ, যা' পরমধর্ম পরমাত্মাতে স্থিতি প্রদান করে এবং দ্বিতীয়টি আসুরী সম্পদ—দোষযুক্ত দৃষ্টিকোণে যার গঠন হয়, যা' এই নশ্বর সংসারে বিশ্বাস এনে দেয় । যখন আসুরী প্রবৃত্তির বাহ্যিক ঘটে, তখন এই দেহই 'কুরুক্ষেত্র' এবং যখন এই দেহেরই অস্তরালে দৈবী সম্পদের বাহ্যিক ঘটে, তখন এই দেহকে 'ধর্মক্ষেত্র' বলা হয় । এই ওঠা-নামা নিরন্তর চলতে থাকে; কিন্তু তত্ত্বদর্শী মহাপুরুষের সাম্ভিধ্যে থেকে যখন কোন সাধক অনন্যভক্তি সহকারে আরাধনায় প্রবৃত্ত হন, তখন দুটি প্রবৃত্তির মধ্যে নির্ণয়ক যুদ্ধের সূত্রপাত হয় । দৈবী সম্পদের ক্রমশঃ উত্থান এবং আসুরী সম্পদের পতন হয় । আসুরী সম্পদসম্পূর্ণরূপে

ଶାନ୍ତ ହବାର ପର ପରମ-ଏର ଦିଗ୍ଦର୍ଶନେର ଅବସ୍ଥାତେ ସାଧକ ଏସେ ପୋଁଛାନ । ଦର୍ଶନେର ପରେ ଦୈବୀ ସମ୍ପଦେର ପ୍ରୟୋଜନୀୟତା ଫୁରିଯେ ଯାଯ । ଅତଏବ ଦୈବୀ ସମ୍ପଦଙ୍କ ତଥନ ପରମାତ୍ମାତେ ବିଲୀନ ହୁଏ । ଭଜନକର୍ତ୍ତା ପୁରୁଷ ପରମାତ୍ମାତେ ସ୍ଥିତିଲାଭ କରେନ । ଏକାଦଶ ଅଧ୍ୟାୟେ ଅର୍ଜୁନ ଦେଖିଲେନ ଯେ, କୌରବ-ପକ୍ଷେର ପର ପାଣ୍ଡବ-ପକ୍ଷେର ଯୋଦ୍ଧା ଯୋଗେଶ୍ଵରେ ବିଲୀନ ହୁଏ ଯାଚେନ । ଏହି ବିଲୀନେର ପର ପୁରୁଷେର ଯେ ସ୍ଵରାପ, ସେଇ ସ୍ଵରାପକେଇ କ୍ଷେତ୍ରଜ୍ଞ ବଲେ । ଏର ପର ଦେଖୁନ—

କ୍ଷେତ୍ରଜ୍ଞ ଚାପି ମାଂ ବିଦ୍ଵି ସରକ୍ଷେତ୍ରେୟ ଭାରତ ।

କ୍ଷେତ୍ରକ୍ଷେତ୍ରଓର୍ଜନ୍ମନ୍ତଃ ସତ୍ତଵଜ୍ଞନ୍ମ ମତଃ ମମ ॥୧॥

ହେ ଅର୍ଜୁନ ! ତୁ ମି ସକଳ କ୍ଷେତ୍ରେର କ୍ଷେତ୍ରଜ୍ଞ ଆମାକେଇ ଜାନବେ ଅର୍ଥାଂ ଆମି ଓ କ୍ଷେତ୍ରଜ୍ଞ । ଯିନି ଏହି କ୍ଷେତ୍ର-ସମ୍ବନ୍ଧେ ଅବଗତ, ତିନିଟି କ୍ଷେତ୍ରଜ୍ଞ—ଏଇରୂପ ତାଁକେ ସାକ୍ଷାଂ ଯେ ମହାପୁରୁଷଗଣ ଜାନେନ, ତାଁରା ବଲେନ । ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ବଲଛେନ ଯେ, ଆମି ଓ କ୍ଷେତ୍ରଜ୍ଞ ଅର୍ଥାଂ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ଯୋଗେଶ୍ଵର ଛିଲେନ । କ୍ଷେତ୍ର ଏବଂ କ୍ଷେତ୍ରଜ୍ଞ ଅର୍ଥାଂ ବିକାରସହ ପ୍ରକୃତି ଏବଂ ପୁରୁଷକେ ତତ୍ତ୍ଵତଃ ଜାନାଇ ଜ୍ଞାନ, ଏଇରୂପ ଆମାର ଅଭିମତ ଅର୍ଥାଂ ସମ୍ୟକ୍ରମପେ ତାଦେର ଜାନାକେଇ ଜ୍ଞାନ ବଲେ । ମିଥ୍ୟା ତର୍କ-ବିତର୍କକେ ଜ୍ଞାନ ବଲେ ନା ।

ତୃ କ୍ଷେତ୍ରଂ ଯଚ୍ଚ ଯାଦ୍ୱକ୍ତ ଯଦିକାରି ଯତଶ୍ଚ ଯଃ ।

ସ ଚ ଯୋ ଯତ୍ପ୍ରଭାବଶ୍ଚ ତତ୍ସମାସେନ ମେ ଶୃଣୁ ॥୧୩॥

ସେଇ କ୍ଷେତ୍ର ଯେଇରପି, ଯେ ଯେ ବିକାରଯୁକ୍ତ, ଯେ କାରଣେ ଉତ୍ସପନ ହେଁବେ ଏବଂ ସେଇ କ୍ଷେତ୍ରଜ୍ଞ ଯିନି ଓ ଯେ ଯେ ପ୍ରଭାବଯୁକ୍ତ, ସେ ସମସ୍ତ ସଂକ୍ଷେପେ ଶୋନ । ଅର୍ଥାଂ ଏହି କ୍ଷେତ୍ର ବିକାରଯୁକ୍ତ, କୋନୋ କାରଣେ ହେଁବେ, ପରମ୍ପରା କ୍ଷେତ୍ରଜ୍ଞ କେବଳ ପ୍ରଭାବସମ୍ପନ୍ନ ହୁଏ । ଆମିଇ ବଲଛି—ତା ନଯ, ଝ୍ୟାଗଣଙ୍କ ବଲେନ—

ଖ୍ୟାତିର୍ବନ୍ଧ୍ୱା ଗୀତଃ ଛନ୍ଦୋଭିରିବିଧେଃ ପୃଥକ୍ ।

ବ୍ରନ୍ଦସ୍ତ୍ରପଦୈଶ୍ୱର ହେତୁମଞ୍ଜିରିନିଶ୍ଚିତ୍ତେଃ ॥୧୪॥

ଏହି କ୍ଷେତ୍ର ଓ କ୍ଷେତ୍ରଜ୍ଞର ତତ୍ତ୍ଵ ଝ୍ୟାଗଣ ବହୁ ପ୍ରକାରେ ବର୍ଣ୍ଣନା କରେଛେ । ନାନାପ୍ରକାର ବେଦମୟ ଦ୍ୱାରା ବିଭାଜିତ କରେ ବଲା ହେଁବେ ଏବଂ ଉତ୍ତମରୂପେ ନିଶ୍ଚିତ ଯୁକ୍ତିଯୁକ୍ତ ବ୍ରନ୍ଦସ୍ତ୍ରେର ପଦସମୁହଦ୍ୱାରା ଓ ଏହି ତତ୍ତ୍ଵ ନିର୍ଣ୍ଣାତ ହେଁବେ । ଅର୍ଥାଂ ବେଦ, ମହାର୍ଷି, ବ୍ରନ୍ଦସ୍ତ୍ର ଏବଂ ଆମି

একই কথা বলছি। শ্রীকৃষ্ণ সেই কথাই বলছেন, যা' এঁরা সকলেই বলেছেন। দেহ (ক্ষেত্র) কি এতটাই, যতটা দেখতে পাওয়া যায়? এই প্রসঙ্গে বলেছেন—

মহাভূতান্যহঙ্কারো বুদ্ধিরব্যক্তমেব চ।

ইত্রিয়াণি দশেকং চ পঞ্চ চেত্রিয়গোচরাঃ ॥৫॥

অর্জুন! পঞ্চ মহাভূত (ক্ষিতি, জল, পাবক, গগন ও সমীর), অহঙ্কার, বুদ্ধি ও চিন্ত (চিন্তকে অব্যক্ত পরা প্রকৃতি বলা হয়েছে। অর্থাৎ মূল প্রকৃতির উপর আলোকপাত করা হয়েছে, যার মধ্যে পরা প্রকৃতিও সম্মিলিত, উপর্যুক্ত আটটিই অষ্টধা মূল প্রকৃতি) এবং দশ ইত্রিয় (চক্ষু, কর্ণ, নাসিকা, ছক্ষ, জিহ্বা, বাক্, পাণি, পাদ, উপস্থ ও পায়), মন ও ইত্রিয়ের পঞ্চ বিষয় (রূপ, রস, গন্ধ, শব্দ ও স্পর্শ) এবং—

ইচ্ছাঃ দেব সুখং দুঃখং সংজ্ঞাতশ্চেতনা ধৃতিঃ।

এতৎক্ষেত্রে সমাসেন সবিকারমুদাহৃতম ॥৬॥

ইচ্ছা, দেব, সুখ-দুঃখ প্রভৃতিসংযুক্ত এই স্তুল দেহ পিণ্ড, চেতনা এবং ধৈর্য, এইরূপ এই সকল বিকারযুক্ত ক্ষেত্র সংক্ষেপে বর্ণিত হল। সংক্ষেপে ক্ষেত্রের স্বরূপ এটাই, যার মধ্যে ভাল-মন্দ যে বীজাই বপন করা হয়, তা' পরে সংক্ষাররূপে প্রকাশিত হয়। দেহটাই ক্ষেত্র। কোন্ত-কোন্ত উপাদানে মাল-মশলা দিয়ে এই দেহের গঠন হয়েছে? পাঁচতল্ল, দশ ইত্রিয়, এক মন ইত্যাদি, যেরূপ লক্ষণ উপরে গোনা হয়েছে। এই সকলের সামুহিক সংঘাত এই পিণ্ডেহে। যতক্ষণ এই বিকারগুলি থাকবে, ততক্ষণ এই পিণ্ডও থাকবে, কারণ এই দেহ বিকারগুলি দিয়ে তৈরী। এখন সেই ক্ষেত্রের স্বরূপ দেখুন, যিনি এই ক্ষেত্রে লিপ্ত নন বরং তার থেকে নিবৃত্ত—

আমানিত্বমদভিত্তিমহিংসা ক্ষান্তিরার্জবম्।

আচার্যোপাসনং শৌচং স্ত্রৈর্মাত্মবিনিগ্রহঃ ॥৭॥

হে অর্জুন! মান-অপমানের অভাব, দণ্ডশূণ্যতা, অহিংসা (নিজের এবং অন্যের আত্মাকে কষ্ট না দেওয়া অহিংসা)। অহিংসার অর্থ কেবল এই নয় যে পিঁপড়া মেরো না। শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, নিজের আত্মাকে অধোগতিতে নিয়ে যাওয়া হিংসা ও তার উত্থান শুন্দ অহিংসা। এইরূপ পুরুষ অন্যান্য আত্মার উত্থান হেতু উন্মুখ থাকেন।

ହଁ, ଏଇ ଆରଭ୍ତ ହୁଯ କାଉକେ କଷ୍ଟ ନା ଦେଓୟା ଥେକେ । ଏଠା ତାରଇ ଏକଟା ଅଙ୍ଗ ।), କ୍ଷମା, ମନ-ବାଣୀର ସରଲତା, ଆଚାର୍ୟୋପାସନା ଅର୍ଥାତ୍ ଶ୍ରଦ୍ଧା-ଭକ୍ତିପୂର୍ବକ ସଦ୍ଗୁରଙ୍କ ସେବା ଏବଂ ତାଁର ଉପାସନା, ପବିତ୍ରତା, ଅନ୍ତଃକ୍ରମଗେର ସ୍ଥିରତା, ମନ ଏବଂ ଇନ୍ଦ୍ରିୟମହ ଦେହେର ନିଗ୍ରହ ଏବଂ—

**ଇନ୍ଦ୍ରିୟାର୍ଥେୟ ବୈରାଗ୍ୟମନହଙ୍କାର ଏବ ଚ ।**

**ଜନ୍ମମୃତ୍ୟୁଜରାବ୍ୟାଧି ଦୁଃଖଦୋୟାନୁଦର୍ଶନମ୍ । ୧୮ ॥**

ଇହଲୋକ ଏବଂ ପରଲୋକେର ଦେଖା-ଶୋନା ସମସ୍ତ ଭୋଗେର ପ୍ରତି ଆସନ୍ତିର ଅଭାବ, ଅଭିମାନଶୂଣ୍ୟତା, ଜନ୍ମ-ମୃତ୍ୟୁ, ବୃଦ୍ଧାବଞ୍ଚା, ରୋଗ ଓ ଭୋଗାଦିତେ ଦୁଃଖଦୋୟେର ପୁନଃପୁନଃ ଚିନ୍ତନ,

**ଅସନ୍ତିରନଭିଷଙ୍ଗଃ ପୁତ୍ରଦାରଗୃହାଦିଯ ।**

**ନିତ୍ୟଃ ଚ ସମଚିତ୍ତମିଷ୍ଟାନିଷ୍ଟୋପପତ୍ରିୟ । ୧୯ ॥**

ପୁତ୍ର, ସ୍ତ୍ରୀ, ଧନ ଓ ଗୃହାଦିତେ ଆସନ୍ତିର ଅଭାବ, ପ୍ରିୟ ଏବଂ ଅପ୍ରିୟେର ପ୍ରାପ୍ତିତେ ସଦା ଚିତ୍ତେର ସମଭାବ (ଗୃହସ୍ଥେର ଏହି ଅବଶ୍ଵାର ମଧ୍ୟ ଦିରେଇ କ୍ଷେତ୍ରଜ୍ଞେର ସାଧନା ଶୁରୁ ହୁଯ ।) ଯା’—

**ମଯି ଚାନନ୍ଦଯୋଗେନ ଭକ୍ତିରବ୍ୟଭିଚାରିଣୀ ।**

**ବିବିକ୍ତ ଦେଶସେବିତ୍ସମରତିର୍ଜନ ସଂସଦି । ୧୦ ॥**

ଆମାତେ (ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ଯୋଗୀ ଛିଲେନ ଅର୍ଥାତ୍ ଏଇରପ କୋନ ମହାପୁରଙ୍ଗେ) ଅନନ୍ୟ ଯୋଗେ ଅର୍ଥାତ୍ ଯୋଗେର ଅତିରିକ୍ତ ଅନ୍ୟ କିଛୁ ସ୍ମରଣ ନା କରେ, ଅବ୍ୟଭିଚାରିଣୀ ଭକ୍ତି (ଇଷ୍ଟେର ଅତିରିକ୍ତ ଅନ୍ୟ କୋନ ଚିନ୍ତନ ନା ଆସା), ନିର୍ଜନେ ବାସ, ମାନୁଷେର ସମୁହେ ବାସ କରାର ଆସନ୍ତି ନା ହୁଯା ଏବଂ—

**ଅଧ୍ୟାତ୍ମଜାନନିତ୍ୟତ୍ୱଃ ତତ୍ତ୍ଵଜାନାର୍ଥଦର୍ଶନମ୍ ।**

**ଏତଜ୍ଞାନମିତି ପ୍ରୋକ୍ତମଜ୍ଞାନଃ ସଦତୋହନ୍ୟଥା । ୧୧ ॥**

ଆୟାର ଆଧିପତ୍ୟେର ଜ୍ଞାନେ ଏକରସ ସ୍ଥିତି ଏବଂ ତତ୍ତ୍ଵଜାନେର ଅର୍ଥସ୍ଵରପ ପରମାଆର ସାକ୍ଷାତ୍କାର—ଏହି ସକଳକେ ଜ୍ଞାନ ବଲେ ଏବଂ ଏର ବିପରୀତ ଯା’ କିଛୁ ସମସ୍ତଇ ଅଜ୍ଞାନ—ଏଇରପ ବଲା ହୁଯେଛେ । ସେଇ ପରମତତ୍ୱ ପରମାଆକେ ସମ୍ଯକ୍ଭାବେ ଜାନା ଜ୍ଞାନ,

(চতুর্থ অধ্যায়ে তিনি বলেছিলেন যে, যজ্ঞ সম্পূর্ণ হ্বার পর পরিণামে যে জ্ঞানামৃত লাভ হয়, সেই জ্ঞানামৃত যিনি পান করেন, তিনি সনাতন ব্ৰহ্মে স্থিতি লাভ করেন। অতএব ব্ৰহ্মকে সাক্ষাৎ কৰে যা' জানা যায়, তাকেই জ্ঞান বলে। এখানেও তাই বলছেন যে, তত্ত্বস্বরূপ পৱনাভার সাক্ষাৎকারের নাম জ্ঞান।) এৰ বিপৰীত সমস্ত কিছু অজ্ঞান। আমানিত্ব ইত্যাদি উপর্যুক্ত লক্ষণ এই জ্ঞানের পূৰক। এই প্ৰশ্ন সম্পূর্ণ হল।

জ্ঞেয়ং যত্তৎপ্রবক্ষ্যামি যজ্ঞাত্মাহম্তমশুতে।

অনাদিমৎপৰং ব্ৰহ্ম ন সত্ত্বাসদৃচ্যতে।।১২।।

অর্জুন! যা জানার যোগ্য এবং যা' জেনে মৱণধৰ্মা মানুষ অমৃত তত্ত্ব লাভ কৰে, তা' উভমৱনপে বলব। সেই আদিহীন পৱনমৱনকে না সৎ বলা হয়, না অসৎ বলা হয়; কাৰণ যতক্ষণ তিনি পৃথক্ক, ততক্ষণ তিনি সৎ এবং যখন মানুষ তাঁৰমধ্যে সমাহিত হয়, তখন কে কাকে বলবে। এক বোধ থেকে যায়, দ্বিতীয় বোধ থাকে না। এইৱনপ স্থিতিতে সেই ব্ৰহ্ম সৎও নন, আবাৰ অসৎও নন, বৱং যা' স্বয়ংসহজ, তিনি তাই।

সৰ্বতঃপাণিপাদং তৎসৰ্বতোহক্ষিশিরোমুখম্।

সৰ্বতঃক্ষতিমল্লাকে সৰ্বমাৰ্বত্য তিষ্ঠতি।।১৩।।

সেই ব্ৰহ্ম সৰ্বদিক থেকে হস্ত-পদযুক্ত, সৰ্বদিক থেকে চক্ষু-মস্তক-মুখযুক্ত এবং সৰ্বদিক থেকে শ্ৰোত্ৰযুক্ত, কণ্যুক্ত; কাৰণ তিনি সংসাৰে সকলেৰ মধ্যে ব্যাপ্ত হয়ে স্থিত।

সৰ্বেন্দ্রিয়গুণাভাসং সৰ্বেন্দ্রিয়বিবৰ্জিতম্।

অসঙ্গং সৰ্বভূটৈব নিৰ্ণগং গুণভোক্ত চ।।১৪।।

তিনি সকল ইন্দ্ৰিয়েৰ বিষয় সম্বন্ধে অবগত, তা'সত্ত্বেও তিনি ইন্দ্ৰিয় ব্যাপাৰে ব্যাপ্ত নন। তিনি আসত্তিশুণ্য, গুণাতীত হয়েও সকলকে ধাৰণ-পোষণ কৰেন এবং সকল গুণেৰ ভোক্তা অৰ্থাৎ এক-এক কৰে সকল গুণ নিজেৰ মধ্যে লয় কৰে নেন। যেৱনপ শ্ৰীকৃষ্ণ বলেছেন যে যজ্ঞ এবং তপস্যাৰ ভোক্তা আমি। শেষে সমস্ত গুণ আমাতে বিলীন হয়।

ବହିରଙ୍ଗଚ ଭୂତାନାମଚରଂ ଚରମେବ ଚ ।

ସୁକ୍ଷ୍ମାତ୍ମାନ୍ଦବିଜ୍ଞେୟଂ ଦୂରଶ୍ଵଂ ଚାନ୍ତିକେ ଚ ତ୍ରେ ॥ ୧୫ ॥

ସେଇ ବ୍ରନ୍ଦ ସକଳ ଜୀବଧାରୀର ଭିତରେ-ବାଇରେ ପରିପୂର୍ଣ୍ଣ । ଚର ଓ ଅଚରରାପାତ୍ର ତିନି ।  
ସୁକ୍ଷ୍ମ ବଲେ ତାଁକେ ଦେଖା ଯାଯା ନା, ଅବିଜ୍ଞେୟ, ମନ-ଇନ୍ଦ୍ରିୟେର ଅତୀତ ଏବଂ ଅତି କାହେ ଓ  
ଦୂରେ ତିନିଇ ସ୍ଥିତ ।

ଅବିଭକ୍ତଂ ଚ ଭୂତେୟ ବିଭକ୍ତମିବ ଚ ସ୍ଥିତମ् ।

ଭୂତଭର୍ତ୍ତ ଚ ତଜ୍ଜ୍ଞେୟଂ ପ୍ରସିଦ୍ଧ ପ୍ରଭବିଷ୍ୱଂ ଚ ॥ ୧୬ ॥

ସେଇ ବ୍ରନ୍ଦ ଅବିଭାଜ୍ୟ ହୟେବେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଚରାଚର ଭୂତେ ବିଭକ୍ତରାପେ ପ୍ରତୀତ ହନ ।  
ସେଇ ଜ୍ଞାତବ୍ୟ ପରମାତ୍ମା ସର୍ବଭୂତେର ସୃଷ୍ଟିକର୍ତ୍ତା, ଭରଣ ଓ ପୋଷଣକର୍ତ୍ତା ଏବଂ ଶେଷେ  
ସଂହାରକର୍ତ୍ତା । ଏଥାନେ ବାହ୍ୟ ଏବଂ ଆନ୍ତରିକ ଦୁଇଭାବେର ଦିକେଇ ସଙ୍କେତ କରା ହୟେଛେ ।  
ଯେମନ-ବାଇରେ ଜନ୍ମ ଏବଂ ଭିତରେ ଜାଗୃତି, ବାଇରେ ପାଲନ ଏବଂ ଭିତରେ ଯୋଗକ୍ଷେମେର  
ନିର୍ବାହ, ବାଇରେ ଦେହେର ପରିବର୍ତନ ଏବଂ ଅନ୍ତରେ ସର୍ବସେବ ବିଲଯ ଅର୍ଥାତ୍ ଭୂତଗଣେର  
ଉତ୍ସପନ୍ତିର କାରଣଗୁଲିର ଲଯ ଏବଂ ସେଇ ଲଯେର ସଙ୍ଗେ-ସଙ୍ଗେଇ ସ୍ମୀଯ ସ୍ଵରାପଲାଭ ହୟ । ଏ  
ସକଳ ସେଇ ବ୍ରନ୍ଦୋର ଲକ୍ଷଣ ।

ଜ୍ୟୋତିଷାମପି ତଜ୍ଜ୍ୟାତିସ୍ତମଃ ପରମୁଚ୍ୟତେ ।

ଜ୍ଞାନଂ ଜ୍ଞେୟଂ ଜ୍ଞାନଗମ୍ୟଂ ହାଦି ସର୍ବସ୍ୟ ବିଷ୍ଟିତମ୍ ॥ ୧୭ ॥

ସେଇ ଜ୍ଞେୟ ବ୍ରନ୍ଦ ଜ୍ୟୋତିସମୁହେରେ ଜ୍ୟୋତି, ତମ ଥେକେ ବହୁ ଉତ୍ତର୍ଧେ ବଲା ହୟେଛେ ।  
ତିନି ପୂର୍ଣ୍ଣ ଜ୍ଞାନସ୍ଵରାପ, ପୂର୍ଣ୍ଣଜ୍ଞାତା, ଜ୍ଞାତବ୍ୟ ଏବଂ ଜ୍ଞାନଦ୍ୱାରାଇ ତାଁକେ ଲାଭ କରା ଯାଯା ।  
ସାକ୍ଷାତ୍କାରେର ପର ଯା' କିଛୁ ଜାନା ଯାଯା, ତାକେ ଜ୍ଞାନ ବଲା ହୟ । ଏହିରାପ ଜ୍ଞାନଦ୍ୱାରାଇ  
ସେଇ ବ୍ରନ୍ଦକେ ଲାଭ କରା ଯେତେ ପାରେ । ତିନି ସକଳେର ହଦିଯେ ସ୍ଥିତ । ତାଁର ନିବାସସ୍ଥାନ  
ହଦିଯ । ଅନ୍ୟତ୍ର ଖୁଁଜିଲେ ତାଁକେ ପାଓଯା ଯାବେ ନା । ଅତଏବ ହଦିଯେ ଧ୍ୟାନ ଏବଂ ଯୋଗାଚରଣେର  
ଦ୍ୱାରାଇ ସେଇ ବ୍ରନ୍ଦୋର ପ୍ରାପ୍ତିର ବିଧାନ ।

ଇତି କ୍ଷେତ୍ରଂ ତଥା ଜ୍ଞାନଂ ଜ୍ଞେୟଂ ଚୋକ୍ତଂ ସମାସତଃ ।

ମନ୍ତ୍ରକ୍ତ ଏତଦିଜ୍ଞାୟ ମନ୍ତ୍ରବାଯୋପପଦ୍ୟତେ ॥ ୧୮ ॥

হে অর্জুন ! এইরূপ ক্ষেত্র, জ্ঞান এবং জ্ঞেয় পরমাত্মার স্বরূপ সংক্ষেপে বলা হল। যা' জানার পরে আমার ভক্ত আমার সাক্ষাৎ স্বরূপলাভ করেন।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ যাকে ক্ষেত্র বলেছিলেন, তাকেই প্রকৃতি এবং যাঁকে ক্ষেত্রজ্ঞ বলেছিলেন, তাঁকেই এখন পুরুষ বলে ইঙিত করলেন—

প্রকৃতিং পুরুষং চৈব বিদ্যনাদী উভাবপি ।

বিকারাংশ্চ গুণাংশ্চেব বিদ্ধি প্রকৃতিসন্ত্বান् ॥১৯॥

এই প্রকৃতি ও পুরুষ উভয়কেই অনাদি বলে জানবে এবং বিকারসকল ত্রিগুণ প্রকৃতি থেকেই উৎপন্ন বলে জানবে।

কার্যকরণকর্তৃত্বে হেতুঃ প্রকৃতিরূচ্যতে ।

পুরুষঃ সুখদুঃখানাং ভোক্তৃত্বে হেতুরূচ্যতে ॥২০॥

কার্য এবং করণের (যার দ্বারা শুভ কার্য করা হয়— বিবেক, বৈরাগ্য ইত্যাদি এবং অশুভ কার্য হওয়াতে কাম, ক্রোধ ইত্যাদি করণ) উৎপত্তির প্রধান কারণ প্রকৃতি বলা হয় এবং পুরুষ সুখ ও দুঃখের উপলব্ধির কারণ বলা হয়।

প্রশ্ন ওঠে যে, পুরুষ কি ভোগ করতেই থাকবে অথবা এর হাত থেকে কখনও মুক্তি পাবে? যখন প্রকৃতি ও পুরুষ উভয়েই অনাদি, তখন এদের হাত থেকে নিশ্চার কিরণে পাওয়া সম্ভব? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

পুরুষঃ প্রকৃতিস্থো হি ভৃঙ্গত্বে প্রকৃতিজান্তুগান্ঃ ।

কারণঃ গুণসঙ্গোহস্য সদসদ্যোনিজন্মাসু ॥২১॥

পুরুষ প্রকৃতিতে অবস্থিত হয়ে প্রকৃতিজাত গুণসমূহের কার্যরূপ পদার্থসকল ভোগ করেন এবং এই গুণসমূহের সংযোগই এই জীবাত্মার উত্তম ও অধম যৌনিতে জন্মগ্রহণের প্রধান কারণ। এই কারণ অর্থাৎ প্রকৃতির গুণসমূহের সঙ্গে সংযোগ সমাপ্ত হলেই জন্ম-মৃত্যু থেকে মুক্তি পাওয়া যায়। এখন সেই পুরুষের উপর আলোকপাত করলেন যে, তিনি কিরণে প্রকৃতিতে অবস্থিত?—

উপদ্রষ্টানুমন্ত্র চ ভর্তা ভোক্তা মহেশ্বরঃ ।

পরমাত্মেতি চাপ্যক্তো দেহেহশ্চিন্পুরুষঃ পরঃ ॥২২॥

ସେଇ ପୁରୁଷ ଉପଦ୍ରଷ୍ଟା ଅର୍ଥାତ୍ ହଦ୍ୟ-ଦେଶେ ଅତି ସମୀପେ, ହାତ-ଗା-ମନ ଯତ ସମୀପେ ତାର ଚେଯେଓ ଅଧିକ ସମୀପେ ଦ୍ରଷ୍ଟାରଙ୍ଗେ ଥିଲା । ତାର ପ୍ରକାଶେ ଆପନି ଭାଲ କରନ୍ତି, ମନ୍ଦ କରନ୍ତି, ତାତେ ତାଁର କୋଣ ପ୍ରୋଜନ ନେଇ । ତିନି ସାକ୍ଷୀରଙ୍ଗେ ଥିଲା । ସାଧନା-ପଥେ ସାଧକ ଯଥନ ସଠିକଭାବେ ସାଧନା କରେ ନିଜେର ତୁର କିଛୁଟା ଉନ୍ନତ କରେନ, ତାଁର ଦିକେ ଏଗିଯେ ଯାନ ତଥନ ଦ୍ରଷ୍ଟା ପୁରୁଷେର କ୍ରମ-ପରିବର୍ତ୍ତନ ହୁଏ, ତିନି ‘ଅନୁମତ୍ତା’-ଅନୁମତି ପ୍ରଦାନ କରତେ ଶୁରୁ କରେନ, ଅନୁଭବ ଜାଗିଯେ ତୋଳେନ । ସାଧନାଦ୍ୱାରା ଆରଓ ନିକଟେ ଏଗିଯେ ସନିଷ୍ଠ ହଲେ ସେଇ ପୁରୁଷ ‘ଭତ୍ତା’ରଙ୍ଗେ ଭରଣ-ପୋଷଣ କରେନ, ସାଧକେର ଯୋଗକ୍ଷେମେରେଓ ଦାୟିତ୍ବ ଗ୍ରହଣ କରେନ । ସାଧନା ଆରଓ ସୂକ୍ଷ୍ମ ହଲେ ତିନିଇ ‘ଭୋକ୍ତା’ ହନ । ‘ଭୋକ୍ତାର ସଜ୍ଜ ତପସାମ୍ଭ’-ସଜ୍ଜ, ତପସ୍ୟା ଯା’ କିଛୁ ସନ୍ତ୍ଵନ ହୁଏ, ସମସ୍ତହି ସେଇ ପୁରୁଷ ଗ୍ରହଣ କରେନ, ଏବଂ ଯଥନ ଗ୍ରହଣ କରେ ନେନ, ତଥନ ତାର ପରେର ଅବହୃତେ ‘ମହେସ୍ଵରଃ’- ମହାନ୍ ଈଶ୍ୱରରଙ୍ଗେ ପରିଣତ ହନ । ତିନି ପ୍ରକୃତିର ପ୍ରଭୁରଙ୍ଗେ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ହନ । କିନ୍ତୁ ଏଥନେ ପ୍ରକୃତି ଜୀବିତ, ତବେଇ ତାର ପ୍ରଭୁ ତିନି । ଏର ଥେକେଓ ଉନ୍ନତ ଅବହୃତେ ସେଇ ପୁରୁଷ ‘ପରମାତ୍ମେତି ଚାପୁଜ୍ଞେ’-ସଥନ ପରମ-ଏର ସଙ୍ଗେ ସଂୟୁକ୍ତ ହନ, ତଥନ ତାଁକେ ପରମାତ୍ମା ବଲା ହୁଏ । ଏହିରଙ୍ଗେ ଏଇ ଦେହେ ଥିଲା ହୁଏଓ ପୁରୁଷ ଆତ୍ମା ‘ପରଃ’, ପ୍ରକୃତିର ଅତୀତ । ପାର୍ଥକ୍ୟ ଏହି ଯେ ଶୁରୁତେ ଦ୍ରଷ୍ଟାରଙ୍ଗେ ଛିଲେନ, କ୍ରମଶଃ ଉଥାନ ହତେ-ହତେ ପରମ-ଏର ସ୍ପର୍ଶ କରେ ସାଧକ ଓ ପରମାତ୍ମାରଙ୍ଗେ ପରିଣତ ହନ ।

ସ ଏବଂ ବେତ୍ତି ପୁରୁଷ ପ୍ରକୃତିଃ ଚ ଗୁଣେଃ ସହ ।

ସର୍ବଥା ବର୍ତମାନୋହପି ନ ସ ଭୂଯୋହଭିଜାଯତେ ॥ ୨୩ ॥

ଏହିରଙ୍ଗେ ଯିନି ପୁରୁଷକେ ଏବଂ ଗୁଣସମ୍ମହେର ସଙ୍ଗେ ପ୍ରକୃତିକେ ସାକ୍ଷାତ୍କାର କରାର ପର ଜାନେନ, ତିନି ସମସ୍ତ କର୍ମ କରେଓ ପୁନବାର ଜନ୍ମଗ୍ରହଣ କରେନ ନା । ଏକେଇ ମୁକ୍ତି ବଲେ । ଏଥନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଯୋଗେଶ୍ଵର ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ବ୍ରନ୍ଦ ଓ ପ୍ରକୃତିକେ ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ କରେ ଜାନାର ପର ଯେ ପରମଗତି ଲାଭ ହୁଏ ଅର୍ଥାତ୍ ତାଁର ପୁନର୍ଜନ୍ମ ଥେକେ ନିବୃତ୍ତିର ଉପର ଆଲୋକପାତ କରିଲେନ । ଏବଂ ଏଥନ ତିନି ସେଇ ଯୋଗେର ଉପର ଜୋର ଦିଲେନ ଯାର ପ୍ରକ୍ରିୟା ଆରାଧନା; କାରଣ ଏଇ କର୍ମ ନା କରେ କେଉଁ ପାନ ନା ।

ଧ୍ୟାନେନାତ୍ମନି ପଶ୍ୟନ୍ତି କେଚିଦାତ୍ମାନମାତ୍ମନା ।

ଅନ୍ୟେ ସାଞ୍ଚ୍ୟେନ ଯୋଗେନ କର୍ମଯୋଗେ ନ ଚାପରେ ॥ ୨୪ ॥

হে অর্জুন ! সেই 'আত্মানম্'-পরমাত্মাকে কতকগুলি মানুষ 'আত্মনা'- নিজের অন্তর্চিন্তনের সাহায্যে ধ্যানের দ্বারা 'আত্মনি'-হাদয়-দেশ-এ দর্শন করেন। কেউ কেউ সাংখ্যযোগদ্বারা (অর্থাৎ নিজের শক্তি বুঝে ঐ একই কর্মে প্রবৃত্ত হন।) এবং অন্যান্য বহু ব্যক্তি তাঁকে নিষ্কাম কর্মযোগ দ্বারা দর্শন করেন। সমর্পণ করে সেই নিয়ত কর্মে প্রবৃত্ত হন। প্রস্তুত শ্ল�কে মুখ্য সাধন, ধ্যান। সেই ধ্যানে প্রবৃত্ত হবার ধারা দুটি সাংখ্যযোগ ও নিষ্কাম কর্মযোগ।

অন্যে ত্বেমজানন্তঃ শ্রত্বান্যেভ্য উপাসতে।

তেহপি চাতিতরন্ত্যেব মৃত্যুঃ শ্রতিপরায়ণাঃ ॥২৫॥

পরস্ত অপর কেউ কেউ, যাঁদের সাধনার জ্ঞান নেই, তাঁরা এইরূপে জানতে না পেরে 'অন্যেভ্যঃ'-অন্য যাঁরা তত্ত্বদৰ্শী মহাপুরুষ, তাঁদের কাছে শুনে উপাসনা করেন এবং তাঁরাও শুনে মৃত্যুরূপ সংসার-সাগরকে নিঃসন্দেহে অতিক্রম করেন। অতএব কোনরূপ কর্ম করতে না পারলে সৎসঙ্গ করুন।

যাবৎসংঘায়তে কিঞ্চিত্সত্ত্বং স্থাবরজঙ্গমম্।

ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞসংযোগাত্মিদি ভরতবর্ত ॥২৬॥

হে অর্জুন ! যা' কিছু স্থাবর ও জঙ্গম পদাৰ্থ উৎপন্ন হয়, সেই সকলই ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞের সংযোগে উৎপন্ন হয় জানবে। প্রাপ্তি কখন হয় ? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

সমঃ সবেষু ভূতেষু তিষ্ঠস্তঃ পরমেশ্বরম্।

বিনশ্যৎস্ববিনশ্যস্তঃ যঃ পশ্যতি স পশ্যতি ॥২৭॥

যো পুরুষ বিনাশশীল চরাচর সর্বভূতে নির্বিশেষভাবে অবস্থিত অবিনাশী পরমেশ্বরকে দর্শন করেন, তিনিই যথার্থ দেখেন। অর্থাৎ সেই প্রকৃতির নাশ হবার পরেই তিনি পরমাত্মস্বরূপ, এর পূর্বে নয়। এই সম্বন্ধে অষ্টম অধ্যায়ে বলেছিলেন, 'ভূতভাবোভূতবকরো বিসগঃ কর্মসংজ্ঞিতঃ'—ভূতগণের সেই সমস্তভাব, যা' (ভাল অথবা মন্দ) কিছু (সংস্কার) সংরচনা করে, সেই সমস্ত লোপ হওয়াই কর্মের পরাকার্ষা। সেই সময় কর্ম সম্পূর্ণ হয়। সেই কথাই এখানেও বলেছেন, যিনি চরাচর ভূতকে ধ্বংস হতে দেখেন এবং পরমেশ্বরকে সমভাবে স্থিত দেখেন, তিনিই যথার্থ দেখেন।

ସମ୍ପଦାନିକ ହି ସର୍ବତ୍ର ସମବସ୍ଥିତମୀଶ୍ଵରମ୍ ।

ନ ହିନ୍ଦୁତ୍ୟାତ୍ମାନଂ ତତୋ ଯାତି ପରାଂ ଗତିମ୍ ॥୨୮ ॥

କାରଣ ସେଇ ସମଦର୍ଶୀ ପୁରୁଷ ସର୍ବତ୍ର ନିର୍ବିଶେଷରୂପେ ଅବସ୍ଥିତ ପରମେଶ୍ଵରକେ (ତିନି ଯେରୂପ, ସେଇରୂପ) ଦର୍ଶନ କରେନ, ସେଇଜନ୍ୟ ନିଜେ ନିଜେକେ ଧ୍ୱନି କରେନ ନା । କାରଣ ଯା' ଛିଲ, ତାଇ ତିନି ଦେଖେଛିଲେନ ସେଇଜନ୍ୟ ତିନି ପରମଗତି ଲାଭ କରେନ । ଆଣ୍ଟିଯୁକ୍ତ ପୁରୁଷେର ଲକ୍ଷଣ ବଲଛେ—

ପ୍ରକୃତ୍ୟେବ ଚ କର୍ମାଣି କ୍ରିୟମାଣାନି ସର୍ବଶଃ ।

ସଃ ପଶ୍ୟତି ତଥାତ୍ମାନମକର୍ତ୍ତରଂ ସ ପଶ୍ୟତି ॥୨୯ ॥

ଯେ ପୁରୁଷ ସକଳ କର୍ମ ପ୍ରକୃତି ଦ୍ୱାରାଇ ସର୍ବପ୍ରକାରେ ସଂଘଟିତ ହତେ ଦେଖେନ ଅର୍ଥାତ୍ ଯତକ୍ଷଣ ପ୍ରକୃତି ବିଦ୍ୟମାନ, ତତକ୍ଷଣ କର୍ମ ହତେ ଦେଖେନ ଏବଂ ଆତ୍ମାକେ ଅକର୍ତ୍ତରୂପେ ଦେଖେନ, ତାଁର ଦେଖାଟାଇ ଯଥାର୍ଥ ।

ଯଦା ଭୂତପୃଥିଗ୍ଭାବମେକଞ୍ଚମନୁପଶ୍ୟତି ।

ତତ ଏବ ଚ ବିଷ୍ଟାରଂ ବ୍ରଙ୍ଗ ସମ୍ପଦ୍ୟତେ ତଦା ॥୩୦ ॥

ଯେ କାଳେ ମାନୁଷ ପୃଥିକ୍ ପୃଥିକ୍ ଭୂତସମୁହେର ଭାବ-ଏ ଏକ ପରମାତ୍ମାକେ ପ୍ରବାହିତ, ସ୍ଥିତ ଦେଖେନ ଏବଂ ସେଇ ପରମାତ୍ମା ଥେକେ ଭୂତସକଳେର ବିଷ୍ଟାର ଉପଲବ୍ଧି କରେନ, ସେଇ କାଳେ ତିନି ବ୍ରଙ୍ଗକେ ଲାଭ କରେନ । ଏହି ଲକ୍ଷଣ ସ୍ଥିତପ୍ରତି ମହାପୁରୁଷେର ।

ଅନାଦିତ୍ୱାନ୍ତିର୍ଣ୍ଣତ୍ୱାଂପରମାତ୍ମାଯମବ୍ୟଯଃ ।

ଶ୍ରୀରାମ୍ଭୋହପି କୌଣସି ନ କରୋତି ନ ଲିପ୍ୟତେ ॥୩୧ ॥

କୌଣସି ! ଏହି ଅବିନାଶୀ ପରମାତ୍ମା ଅନାଦି ଓ ଗୁଣାତ୍ମିତ, ସେଇଜନ୍ୟ ତିନି ଦେହେ ଅବସ୍ଥିତ ହଲେଓ ବାସ୍ତବେ କୋନ କର୍ମ କରେନ ନା ଏବଂ ଲିପ୍ତ ହନ ନା । କିରାପେ ?—

ଯଥା ସର୍ବଗତଂ ସୌକ୍ରଯ୍ୟାଦାକଶଃ ନୋପଲିପ୍ୟତେ ।

ସର୍ବତ୍ରାବସ୍ଥିତୋ ଦେହେ ତଥାତ୍ମା ନୋପଲିପ୍ୟତେ ॥୩୨ ॥

ଯେମନ ସର୍ବବ୍ୟାପୀ ଆକାଶ ସୂକ୍ଷ୍ମ ବଲେ ଲିପ୍ତ ହୁଯ ନା, ତଦ୍ରୂପ ସକଳ ପ୍ରକାର ଦେହେ ଅବସ୍ଥିତ ହେଁଓ ଆତ୍ମା ଗୁଣାତ୍ମିତ ବଲେ ଦୈତ୍ୟିକ ଗୁଣସମୁହେ ଲିପ୍ତ ହନ ନା । ଆରା ବଲଲେନ—

যথা প্রকাশয়ত্যেকং কৃৎস্নং লোকমিমৎ রবিঃ।

ক্ষেত্রং ক্ষেত্রী তথা কৃৎস্নং প্রকাশযতি ভারত। ।৩৩।।

অর্জুন ! যেরূপ একমাত্র সুর্য সমগ্র জগৎকে আলোকিত করে, সেইরূপ এক আঘাত সমস্ত ক্ষেত্রকে প্রকাশিত করে। অবশ্যে বললেন—

ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞরোরেবমন্ত্ররং জ্ঞানচক্ষুয্যা।

ভূতপ্রকৃতিমোক্ষং চ যে বিদ্যুষ্যান্তি তে পরম। ।৩৪।।

এইরূপ যাঁরা ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞের পরম্পর প্রভেদ এবং প্রকৃতি ও তার বিকার থেকে মুক্ত হবার উপায় জ্ঞানরূপ নেতৃদ্বারা জ্ঞাত হল, সেই মহাআগণ পরব্রহ্মা পরমাত্মাকে লাভ করেন। অর্থাৎ ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞকে জ্ঞানচক্ষু দ্বারা দেখা যায় এবং জ্ঞান সাক্ষাৎকারে পর্যায়ভুক্ত।

নিষ্কর্ষ —

গীতাশাস্ত্রে শুরুতে ধর্মক্ষেত্র, কুরুক্ষেত্রের নাম উল্লেখ করা হয়েছে; কিন্তু সেই ক্ষেত্র বস্তুতঃ কোথায় ?— সেই স্থান-সম্বন্ধে বলা বাকি ছিল, যা' শাস্ত্রকার স্বয়ং প্রস্তুত অধ্যায়ে স্পষ্ট করেছেন যে—কৌন্তেয় ! এই দেহটাই একটা ক্ষেত্র। যিনি একে জানেন, তিনি ক্ষেতজ্জ। তিনি এই ক্ষেত্রে লিপ্ত নন, নির্লিপ্ত। এর সপ্তগ্রাম। অর্জুন ! ‘সকল ক্ষেত্রে আমিও ক্ষেত্রজ্ঞ’, অন্যা মহাপুরূষগণের সঙ্গে নিজের তুলনা করলেন। এতে স্পষ্ট হয় যে শ্রীকৃষ্ণ যোগী ছিলেন; কারণ যিনি জানেন তিনিই ক্ষেত্রজ্ঞ, এই কথা মহাপুরূষগণ বলেছেন। আমিও ক্ষেত্রজ্ঞ অর্থাৎ অন্য মহাপুরুষের মতই আমি।

ক্ষেত্র যেরূপ, যে যে বিকারযুক্ত, ক্ষেত্রজ্ঞ যে যে প্রভাবযুক্ত, তার উপর যোগেশ্বর আলোকগাত করলেন। শুধু যে আমি বলছি তা নয়, মহর্ষিগণও তাই বলেছেন। বেদের মন্ত্রগুলিতেও একেই বিভাজিত করে দেখানো হয়েছে। ব্রহ্মাসূত্রেও সেই সমস্তের উল্লেখ রয়েছে।

দেহ (যা' ক্ষেত্র) কি এতটাই, যতটা চোখে পড়ে ? এই দেহের উৎপত্তির পিছনে যে যে কারণ বিদ্যমান, তাদের গণনা করে বললেন যে, অষ্টধা মূল প্রকৃতি, অব্যক্ত প্রকৃতি, দশ ইলিয় এবং মন, ইলিয়সমূহের পাঁচটি বিষয়, আশা, ত্রুটাও

ବାସନା, ଏଇରୂପ ଏହି ବିକାରସମୁହେର ସାମୃତିକ ମିଶ୍ରଣ ଏହି ଦେହ । ସତକ୍ଷଣ ଏଗୁଳି ବିଦ୍ୟମାନ, ତତକ୍ଷଣ କୋନ ନା କୋନରୂପେ ଦେହ ଥାକବେଇ । ଏଟାଇ କ୍ଷେତ୍ର, ଯାର ମଧ୍ୟେ ଭାଲ-ମନ୍ଦ ଯେ ବୀଜଇ ବପନ କରା ହୟ, ତା' ସଂକ୍ଷାରରୂପେ ଅନ୍ଧୁରିତ ହୟ । ଯିନି ଏର ଅତୀତ ହୟେ ଯାନ, ତିନିଇ କ୍ଷେତ୍ରଙ୍ଗେର ସ୍ଵରଂପ ବଲାର ପର ତିନି ଈଶ୍ୱରୀୟ ଗୁଣଧର୍ମେର ଉପର ଆଲୋକପାତ କରଲେନ ଏବଂ ବଲଲେନ ଯେ, ଏହି କ୍ଷେତ୍ରେର ପ୍ରକାଶକ କ୍ଷେତ୍ରଙ୍ଗ ।

ଯୋଗେଶ୍ୱର ବଲଲେନ, ସାଧନା ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ହବାର ପର ପରମତତ୍ତ୍ଵ ପରମାତ୍ମାର ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ଦର୍ଶନ ଜାନ । ସମ୍ୟକ୍ତଭାବେ ଜାନାଟାଇ ଜାନ । ଏର ଅତିରିକ୍ତ ଯା' କିଛୁ ଆଛେ, ସେ ସମ୍ମତ ଅଞ୍ଜାନ । ଜାନାର ଯୋଗ୍ୟ ହଲେନ ପରାଂପରା ବ୍ରନ୍ଦ । ତିନି ସଂ ନନ ଏବଂ ଅସଂ ନନ । ତିନି ଏହି ଦୁଇଯେର ଅତୀତ । ତାଁକେ ଜାନାର ଜନ୍ୟ ମାନୁଷ ହଦୟେ ଧ୍ୟାନ କରେନ, ବାହିରେ ମୂର୍ତ୍ତିର ସମ୍ମୁଖେ ନୟ । ବହସ୍ୟକ୍ତି ସାଂଖ୍ୟ୍ୟୋଗେର ମାଧ୍ୟମେ ଧ୍ୟାନ କରେନ । ବହସ୍ୟକ୍ତି ନିଷାମ କର୍ମଯୋଗ, ସମର୍ପଣେର ସଙ୍ଗେ ତାଁକେ ଲାଭ କରାର ଜନ୍ୟ ସେଇ ନିଧାରିତ କର୍ମ ଆରାଧନାର ଆଚରଣ କରେନ । ଯାଁରା ଏହି ବିଧି ଜାନେନ ନା, ତାଁରା ତତ୍ତ୍ଵସ୍ଥିତ ମହାପୁରୁଷଗଣେର କାହେ ଶୁଣେ ଆଚରଣ କରେନ । ତାଁରାଓ ପରମକଳ୍ୟାଣ ପ୍ରାପ୍ତ ହୟ । ଅତଏବ ଯଦି କିଛୁ ବୋଧଗମ୍ୟ ନା ହୟ, ତାହଲେ ତାର ଜ୍ଞାତା ମହାପୁରୁଷେର ସଂସଙ୍ଗ ଆବଶ୍ୟକ ।

ହିତପ୍ରତ୍ୟେ ମହାପୁରୁଷେର ଲକ୍ଷଣ ବଲାର ପର ଯୋଗେଶ୍ୱର ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ବଲଲେନ ଯେ, ଯେରୂପ ଆକାଶ ସର୍ବବ୍ୟାପୀ ହୟେଓ ନିର୍ଲିପ୍ତ, ସୂର୍ଯ୍ୟ ଯେରୂପ ସର୍ବତ୍ର ପ୍ରକାଶିତ କରେଓ ନିର୍ଲିପ୍ତ ସେଇରୂପ ହିତପ୍ରତ୍ୟେ ପୁରୁଷ, ସର୍ବତ୍ର ସମ ଈଶ୍ୱର ଯେରୂପ ତତ୍ତ୍ଵ ଦେଖାର କ୍ଷମତା ଯାଁର ତିନି କ୍ଷେତ୍ର ଥେକେ ଅଥବା ପ୍ରକୃତି ଥେକେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣରୂପେ ନିର୍ଲିପ୍ତ । ଅବଶ୍ୟେ ତିନି ନିର୍ଣ୍ୟ କରେ ବଲଲେନ ଯେ, କ୍ଷେତ୍ର ଓ କ୍ଷେତ୍ରଙ୍ଗେକେ ଜାନରୂପ ନେତ୍ର ଦ୍ୱାରାଇ ଜାନା ସମ୍ଭବ । ଜାନ, ଯେମନ ପୂର୍ବେ ବଲା ହୟେଛେ, ସେଇ ପରମାତ୍ମାକେ ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ଦର୍ଶନ କରେ ଜାନାଟାଇ ଜାନ । ଶାସ୍ତ୍ର ସକଳ ମୁଖସ୍ଥ କରେ ଆୟୁତ୍ସି କରାକେ ଜାନ ବଲେ ନା ବରଂ ଅଧ୍ୟଯନ ଏବଂ ମହାପୁରୁଷଗଣେର କାହେ ସେଇ କର୍ମକେ ବୁଝେ, ସେଇ କର୍ମର ଆଚରଣ କରେ ମନ ଏବଂ ଇନ୍ଦ୍ରିୟମୁହୁ ନିରନ୍ତ୍ର ଏବଂ ନିରନ୍ଦେର ବିଲଯକାଳେ ପରମତତ୍ତ୍ଵକେ ଦର୍ଶନ କରେ ଯେ ଅନୁଭୂତି ହୟ, ସେଇ ଅନୁଭୂତିର ନାମ ଜାନ । ଅତଏବ କ୍ରିୟା ଆବଶ୍ୟକ । ବର୍ତ୍ତମାନ ଅଧ୍ୟାୟେ ମୁଖ୍ୟତଃ କ୍ଷେତ୍ରଙ୍ଗେର ବିସ୍ତାରପୂର୍ବକ ବର୍ଣ୍ଣନା କରା ହୟେଛେ । ବସ୍ତ୍ରତଃ କ୍ଷେତ୍ରେର ସ୍ଵରଂପ ବ୍ୟାପକ ହୟ । ଦେହ ବଲା ମୋଜା କିନ୍ତୁ ଏହି ଦେହେର ସମ୍ବନ୍ଧ କତ୍ତର ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବିସ୍ତୃତ ? ବଲା ଯେତେ ପାରେ ସମଗ୍ର ବ୍ରନ୍ଦାଣ ମୂଳ ପ୍ରକୃତିର ବିସ୍ତାର । ଆପନାର ଦେହେର ବିସ୍ତାର ଅନୁଷ୍ଠାନିକ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ । ତାର ଦ୍ୱାରା ଆପନାର ଜୀବନ ଉତ୍ସମ୍ମିତ, ତାଦେର ତ୍ୟାଗ କରେ ଆପନି ଜୀବିତ ଥାକତେ ପାରେନ ନା । ଏହି ଭୂମଣ୍ଡଳ, ବିଶ୍ୱଜଗଂ, ଦେଶ-ପ୍ରଦେଶ ଏବଂ

আপনার এই দৃশ্যমান শরীর সেই প্রকৃতির একটা মাত্র অংশও নয়। এইরূপ বর্তমান অধ্যায়ে ক্ষেত্রেই বিস্তারপূর্বক বর্ণনা করা হয়েছে। অতএব—

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসুব্রহ্মবিদ্যায়াংযোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণজুনসংবাদে ‘ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞবিভাগযোগে’ নাম ত্রয়োদশোহথ্যায়ঃ।।১৩।।

এই প্রকার শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারূপী উপনিষদ্ এবং ব্রহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ ও অর্জুনের সংবাদে ‘ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞ বিভাগ যোগ’ নামক ত্রয়োদশ অধ্যায় সম্পূর্ণ হল।

ইতি শ্রীঘৎপরমহংস পরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে  
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ ‘যথার্থগীতা’ ভাষ্যে ‘ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞবিভাগযোগে’ নাম  
ত্রয়োদশোহথ্যায়ঃ।।১৩।।

এই প্রকার শ্রীঘৎপরমহংস পরমানন্দজীর শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত  
‘শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা’র ভাষ্য ‘যথার্থ গীতা’তে ‘ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞ বিভাগ যোগ’ নামক  
ত্রয়োদশ অধ্যায় সমাপ্ত হল।

।। হরিঃ ওঁ তৎসৎ।।

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মনে নমঃ ।।

## ।। অথ চতুর্দশোহধ্যায়ঃ ।।

পূর্বে কয়েকটা অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ জ্ঞানের স্বরূপ স্পষ্ট করেছেন। অধ্যায় ৪/১৯-এ তিনি বলেছিলেন যে, যে পূরুষ নিয়ত কর্মের আচরণ আরম্ভ করেছেন এবং সেই আচরণ ক্রমশঃ উত্থান হতে হতে এত সুস্থ হয়ে গেছে যে কামনা ও সংকল্প সম্পূর্ণরূপে শান্ত হয়ে গেছে, সেই সময় তিনি যা' জানতে চাইবেন তার প্রত্যক্ষ অনুভূতি হয়ে যাবে, সেই অনুভূতিকেই জ্ঞান বলে। ত্রয়োদশ অধ্যায়ে জ্ঞানকে পরিভাষিত করলেন, 'অধ্যাত্মজ্ঞান নিত্যত্বং তত্ত্বজ্ঞানার্থ দর্শনম্।'-আত্মজ্ঞানে একরস স্থিতি এবং তত্ত্বের অর্থস্বরূপ পরমাত্মার প্রত্যক্ষ দর্শনকে জ্ঞান বলে। ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞ-এর বিভেদে বিদিত হবার পরেই উদয় হয় সেই জ্ঞান। জ্ঞানের তাৎপর্য শাস্ত্রার্থ নয়। সকল শাস্ত্র মুখস্থ করাই জ্ঞান নয়। অভ্যাসের সেই অবস্থাকে জ্ঞান বলে, যেখানে সেই তত্ত্বকে জানা সম্ভব হয়। পরমাত্মার সাক্ষাৎকারের সঙ্গে যে অনুভূতি হয়, তাকে জ্ঞান বলা হয়, এর বিপরীত সবই অজ্ঞান।

এইরূপ সবকিছু বলার পরেও বর্তমান অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, অর্জুন ! সেই জ্ঞানের মধ্যেও যে জ্ঞান শ্রেষ্ঠ, তা' আমি পুনরায় তোমাকে বলব। যোগেশ্বর তারই পুনরাবৃত্তি করবেন; কারণ 'শাস্ত্র সুচিপ্রিত পুনি পুনি দেখিয়া।' যে শাস্ত্রসম্বন্ধে উত্তমরূপে চিন্তন করা হয়েছে, সেই শাস্ত্রও বার বার দেখা উচিত। কেবল এতটাই নয়, যেমন যেমন আপনি সাধন-পথে এগিয়ে যাবেন, ইষ্টের যত কাছে যাবেন, তেমন তেমন ব্রহ্মের কাছ থেকে নতুন নতুন অনুভূতি পাবেন। এই সকল অনুভব সদ্গুরু মহাপূরুষই প্রদান করেন। সেইজন্য শ্রীকৃষ্ণ বলছেন, আমি পুনরায় বলব।

স্মৃতিপট এমন যার উপর সংস্কারের অক্ষন সর্বদা হতে থাকে। যখন পথিকের ইষ্টকে জানার জ্ঞান অস্পষ্ট সেই স্মৃতিপট হতে শুরু করে তখন প্রকৃতি অক্ষিত হতে থাকে, যা' বিনাশের কারণ। সেইজন্য সাধনা সম্পূর্ণ হওয়া পর্যন্ত সাধককে ইষ্ট-সম্পন্নী অনুভবের আবৃত্তি করা উচিত। আজ স্মৃতি স্পষ্ট হলেও; যখন পরের অবস্থাগুলিতে সাধক পৌঁছবেন, তখন এই অবস্থার পরিবর্তন হবে। সেইজন্য 'পূজ্য মহারাজজী

বলতেন যে ব্ৰহ্মাবিদ্যার চিন্তন প্রতিদিন কৰবে, একমালা প্রতিদিন ঘোৱাবে। মালা চিন্তনদ্বাৰা ঘোৱানো হয়, বাহ্য জগতেৰ মালা নয়।

এই নিয়ম সাধকেৰ জন্য; কিন্তু যিনি বাস্তুবিক সদ্গুর, তিনি সতত সেই পথিকেৰ মার্গদৰ্শন কৰেন। অস্তৱে জাগ্রত হয়ে এবং বাইরে নিজেৰ ত্ৰিয়া-কলাপ-এৰ দ্বাৰা তাঁকে প্ৰত্যেক অভিনব পৱিষ্ঠিতি সম্বন্ধে অবগত কৰিয়ে দেন। যোগেশ্বৰ শ্রীকৃষ্ণও মহাপুৰুষ ছিলেন। অজুন শিষ্যেৰ স্থানে ছিলেন। তিনি শ্রীকৃষ্ণেৰ কাছে প্ৰার্থনা কৰেছিলেন যে, ভগবন্ত! আমাকে রক্ষা কৰুন, সেইজন্য যোগেশ্বৰ শ্রীকৃষ্ণ বললেন যে, জ্ঞানসকলেৰ মধ্যে অতি উত্তম জ্ঞান আমি পুনৱায় তোমাকে বলব।

### শ্রীভগবানুবাচ

পৰং ভূয়ঃ প্ৰবক্ষ্যামি জ্ঞানাং জ্ঞানমুত্তমম্।

যজ্জ্ঞাত্বা মুনয়ঃ সৰ্বে পৰাং সিদ্ধিমিতো গতাঃ॥১॥

অজুন! সকল জ্ঞানেৰ মধ্যে অতি উত্তম জ্ঞান, পৰম জ্ঞান আমি পুনৱায় তোমাকে বলব (যা' পূৰ্বে বলেছেন), যাৰ সম্বন্ধে জ্ঞানার পৰ মুনিগণ এই সংসাৰ থেকে মুক্ত হয়ে পৱমসিদ্ধিলাভ কৰেন (যাৰ পৰ কিছু পাওয়া বাকী থাকে না।)।

ইদং জ্ঞানমুপাশ্রিত্য মম সাধৰ্ম্যমাগতাঃ।

সর্গেহপি নোপজায়ন্তে প্ৰলয়ে ন ব্যথন্তি চ॥২॥

এই জ্ঞান 'উপাশ্রিত'-এই জ্ঞান আশ্রয় কৰে, ত্ৰিয়াৰ আচৰণ কৰে, সাম্নিধ্যে এসে আমাৰ স্বৰূপ প্ৰাপ্ত পুৱৰুষগণ সৃষ্টিকালে পুনৱায় জন্মগ্ৰহণ কৰেন না এবং প্ৰলয়কালে অৰ্থাৎ শৰীৰান্তেৰ সময় ব্যাকুল হন না; কাৰণ মহাপুৱৰুষেৰ শৰীৰাস্ত তখনই হয়ে যায়, যখন তিনি স্বৰূপলাভ কৰেন। তাৰ পৱে তাঁৰ শৰীৰ নিবাসস্থানৱৰ্গে থাকে। পুনৰ্জন্মেৰ স্থান কোথায়, যেখানে মানুষ জন্মগ্ৰহণ কৰে? এই প্ৰসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ বলছেন-

মম যৌনিৰ্মহদ্ব্ৰন্দ তস্মিন্গৰ্ভং দধাম্যহম্।

সন্তুবঃ সৰ্বভূতানাং ততো ভবতি ভাৱত।।৩।।

হে অজুন! আমাৰ 'মহদ্ব্ৰন্দ' অৰ্থাৎ অষ্টধা মূল প্ৰকৃতি সৰ্বভূতেৰ উৎপত্তিৰ কাৰণৱৰ্গ যোনি এবং তাতে আমি চেতনৱৰ্গ বীজ স্থাপন কৰি। সেই জড়-চেতন-এৰ সংযোগে সৰ্বভূতেৰ সৃষ্টি হয়।

সর্বযোনিষু কৌন্তেয় মূর্তয়ঃ সন্তবন্তি যাঃ।

তাসাং ব্রহ্ম মহদ্যোনিরহং বীজপ্রদঃ পিতা॥১৪॥

কৌন্তেয় ! সমস্ত যোনিতে যে সকল দেহ উৎপন্ন, তাদের সকলের ‘যোনিঃ’-  
গভর্ত্বারিণী মাতা অষ্টধা মূল প্রকৃতি এবং আমিই বীজস্থাপনকর্তা পিতা। অন্য কেউ  
মাতাও নয়, পিতাও নয়। যতক্ষণ জড়-চেতন-এর সংযোগ হবে, জন্ম হতেই থাকবে,  
নিমিত্ত কেউ না কেউ হবেই। চেতন আত্মা জড় প্রকৃতিতে কেন আবদ্ধ হয় ? এই  
প্রসঙ্গে বলছেন -

সত্ত্বং রজস্তম ইতি গুণাঃ প্রকৃতিসন্ত্বাঃ।

নিবধ্নতি মহাবাহো দেহে দেহিনমব্যয়ম্॥৫॥

মহাবাহু অর্জুন ! প্রকৃতিজাত সত্ত্ব, রজঃ ও তমঃ এই গুণত্বয় অবিনাশী  
জীবাত্মাকে শরীরে আবদ্ধ করে। কিরণপে ?-

তত্ত্ব সত্ত্বং নির্মলভ্রাণ্প্রকাশকমনাময়ম্।

সুখসঙ্গেন বধ্নাতি জ্ঞানসঙ্গেন চানঘ॥৬॥

নিষ্পাপ অর্জুন ! এই গুণত্বয়ের মধ্যে উদ্ভাসিত নির্বিকার সত্ত্বগুণ ‘নির্মলভ্রাণ’-  
নির্মল সেইজন্য সুখ এবং জ্ঞানের আসন্তি দ্বারা আত্মাকে শরীরে আবদ্ধ করে।  
সত্ত্বগুণও বন্ধনই। পার্থক্য এতটাই সুখ কেবল পরমাত্মাকে এবং জ্ঞান সাক্ষাৎকারকে  
বলা হয়। সত্ত্বগুণী ততক্ষণ আবদ্ধ, যতক্ষণ পরমাত্মার সাক্ষাৎকার না হয়।

রজো রাগাত্মকং বিদ্ধি ত্রষ্ণাসঙ্গমুক্তব্যম্।

তমিবধ্নাতি কৌন্তেয় কর্মসঙ্গেন দেহিনম্॥৭॥

হে অর্জুন ! রজোগুণ রাগাত্মক। একে তুমি ‘কর্মসঙ্গেন’- কামনা ও আসন্তি  
থেকে উৎপন্ন জানবে। রজোগুণ জীবাত্মাকে কর্ম ও তার ফলের আসন্তি দ্বারা আবদ্ধ  
করে। এই গুণ কর্মে প্রবৃত্তি প্রদান করে।

তমস্তজ্জ্ঞানজং বিদ্ধি মোহনং সর্বদেহিনাম্ঃ।

প্রমাদালস্যনিদ্রাভিস্তনিবধ্নাতি ভারত।॥৮॥

অর্জুন ! তমোগুণ সকল দেহধারীগণকে মোহুঞ্চ করে, একে তুমি অজ্ঞান  
থেকে উৎপন্ন জানবে। এই গুণ আত্মাকে প্রমাদ অর্থাৎ ব্যর্থ চেষ্টা, আলস্য (যে,

কালকে করা হবে) এবং নিদ্রাদ্বারা বন্ধ করে। নিদ্রার অর্থ এই নয় যে, তমোগুণী বেশী ঘুমায়। দেহ শয়ন করে, এইরূপ নয়। 'যা নিশা সর্বভূতানাং তস্যাং জাগর্তি সংযমী।' এই জগৎ রাত্রিরূপ। তমোগুণী ব্যক্তি এই জগৎরূপ রাত্রিতে দিবা-রাত্রি ব্যস্ত থাকে, প্রকাশ স্বরূপের দিক থেকে আচেতন থাকে। তমোগুণী নিদ্রা একেই বলে। যিনি এর মধ্যে আবদ্ধ, তিনিই নিদ্রিত। এখন গুণত্বের বন্ধনের সামুহিক স্বরূপ বলছেন-

সত্ত্বং সুখে সংজ্ঞয়তি রজঃ কর্মণি ভারত।

জ্ঞানমাবৃত্য তু তমঃ প্রমাদে সংজ্ঞযতুত্য। ॥৯॥

অর্জুন! সত্ত্বগুণ সুখে, শাশ্বত পরমসুখের ধারাতে প্রবৃত্ত করে, রংজোগুণ কর্মে প্রবৃত্ত করে এবং তমোগুণ জ্ঞানকে আবৃত করে প্রমাদে অর্থাৎ অন্তঃকরণের ব্যর্থ চেষ্টাতে প্রবৃত্ত করে। গুণ যখন একস্থানে, একটা হস্তয়েই থাকে তখন কিন্তু প্রথক প্রথক বিভক্ত হয়? এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

রজস্তমশ্চাভিভূয় সত্ত্বং ভবতি ভারত।

রজঃ সত্ত্বং তমাশ্চেব তমঃ সত্ত্বং রজস্তথ। ॥১০॥

হে অর্জুন! সত্ত্বগুণ রজঃ ও তমোগুণকে অভিভূত করে প্রবল হয়, সেইরূপ রংজোগুণ সত্ত্ব ও তমোগুণকে অভিভূত করে প্রবল হয়। এইরূপ তমোগুণ সত্ত্ব ও রংজোগুণকে অভিভূত করে প্রবল হয়। কিন্তু জানা যাবে যে, কখন, কোন্ গুণটি অধিক সক্রিয়?—

সর্বদ্বারেশ্বু দেহেহস্মিন্প্রকাশ উপজায়তে।

জ্ঞানং যদা তদা বিদ্যাদিবৃদ্ধং সত্ত্বমিতুত্য। ॥১১॥

যে কালে এই দেহে, অন্তঃকরণে এবং সকলেন্দ্রিয়ে ঈশ্বরীয় প্রকাশ ও বৌধশক্তি উৎপন্ন হয়, সেই সময় এইরূপ জানতে হবে যে, সত্ত্বগুণ বর্ধিত হয়েছে। এবং-

লোভঃ প্রবৃত্তিরাভ্নঃ কর্মণামশমঃ স্পৃহ।

রজস্যেতানি জায়ত্তে বিবৃদ্ধে ভরতর্যভ। ॥১২॥

হে অর্জুন! রংজোগুণ বর্ধিত হলে লোভ, কর্মে প্রবৃত্ত হবার প্রচেষ্টা, কর্ম আরম্ভ, অশাস্তি অর্থাৎ মনের চঞ্চলতা, বিষয়ভোগের স্পৃহা এই সকল উৎপন্ন হয়। তমোগুণের বৃদ্ধিতে কি হয়?—

অপ্রকাশোহপ্রবৃত্তিশ্চ প্রমাদো মোহ এব চ।  
তমস্যেতানি জায়ন্তে বিবৃদ্ধে কুরঞ্জন্দন।।১৩।।

অর্জুন! তমোগুণ বৃদ্ধি পেলে ‘অপ্রকাশঃ’- (প্রকাশ পরমাত্মার দ্যোতক) ঈশ্঵রীয় প্রকাশের দিকে না এগোনোর স্বভাব, ‘কার্যম্ কর্ম’-যা’ করনীয় প্রক্রিয়া তাতে প্রবৃত্তির অভাব, অস্তঃকরণে ব্যর্থ চেষ্টা সকলের প্রবাহ এবং সংসারে বিমুক্ত করে যে প্রবৃত্তিগুলি-এই সমস্ত উৎপন্ন হয়। এই সমস্ত গুণের সম্বন্ধে জানা থাকলে কি লাভ ?-

যদা সত্ত্বে প্রবৃদ্ধে তু প্রলয়ং যাতি দেহভৃৎ।  
তদৌত্তমবিদাং লোকানমলান্প্রতিপদ্যতে।।১৪।।

সত্ত্বগুণের বৃদ্ধিকালে এই জীবাত্মা দেহত্যাগ করলে উত্তম কর্মকারীদের পাপমুক্ত দিব্য লোকাদিকে লাভ করে। এবং-

রজসি প্রলয়ং গত্বা কর্মসঙ্গিষ্য জায়তে।  
তথা প্রলীনস্তমসি মৃঢ়যোনিষ্য জায়তে।।১৫।।

রজোগুণের বৃদ্ধিকালে যাঁর মৃত্যু হয়, তাঁর কর্মে আসক্ত মনুষ্যলোকে জন্ম হয় এবং তমোগুণের বৃদ্ধিকালে মৃত্যু হলে মৃঢ়যোনিতে জন্ম হয়, যার মধ্যে কীট-পতঙ্গদিপর্যন্ত যোনির বিস্তার আছে। অতএব গুণগ্রহের মধ্যে মানুষকে সাত্ত্বিক গুণধর্মেযুক্ত হওয়া উচিত। প্রকৃতির এই সুরক্ষিত ভাণ্ডার আপনার দ্বারা অর্জিত গুণসকলকে মৃত্যুর পরে আপনাকে সুরক্ষিত ফিরিয়ে দেয়। এখন এর পরিণাম দেখুন-

কর্মণঃ সুকৃতস্যাত্মঃ সাত্ত্বিকং নির্মলং ফলম্।

রজসন্ত ফলং দুঃখমজ্ঞানং তমসঃ ফলম্।।১৬।।

সাত্ত্বিক কর্মের ফল সাত্ত্বিক, নির্মল, সুখ, জ্ঞান এবং বৈরাগ্যাদি বলা হয়েছে। রাজসিক কর্মের ফল দুঃখ এবং তামসিক কর্মের ফল অজ্ঞান। এবং-

সত্ত্বাংসংজ্ঞায়তে জ্ঞানং রজসো লোভ এব চ।  
প্রমাদমোহৌ তমসো ভবতোহজ্ঞানমেব চ।।১৭।।

সত্ত্বগুণ থেকে জ্ঞান জন্মে (ঈশ্বরীয় অনুভূতিকে জ্ঞান বলা হয়), ঈশ্বরীয় অনুভূতির সংগ্রহ হয়। রজোগুণ থেকে নিঃসন্দেহে লোভ উৎপন্ন হয় এবং তমোগুণ থেকে প্রমাদ, মোহ, আলস্য (অজ্ঞান) উৎপন্ন হয়। এই সকল উৎপন্ন হয়ে কোন্‌ গতি প্রদান করে?—

**উত্থবং গচ্ছন্তি সত্ত্বস্থা মধ্যে তিষ্ঠন্তি রাজসাঃ।**

**জঘন্যগুণবৃত্তিস্থা অধো গচ্ছন্তি তামসাঃ॥১৮॥**

সত্ত্বগুণে স্থিত পুরুষগণ ‘উত্থবমূলম्’—সেই মূল পরমাত্মার দিকে এগিয়ে যান, নির্মল লোকাদিতে গমন করেন। রজোগুণে স্থিত রাজসিক ব্যক্তিগণ মধ্যম শ্রেণীর মানুষ হয়, যাদের ‘সাত্ত্বিকম্’—বিবেক, বৈরাগ্য থাকে না এবং অধম কীট-পতঙ্গ যোনিগুলিতেও জন্ম হয় না বরং পুনর্জন্ম প্রাপ্ত হয় এবং নিন্দিত তমোগুণে প্রবৃত্ত তামসিক ব্যক্তিগণ ‘অধোগতিঃ’ অর্থাৎ পশ্চ-পক্ষী, কীট-পতঙ্গাদি অধম যোনিতে জন্মগ্রহণ করে। এইরূপে ত্রিগুণেই কোন না কোনরূপে যোনির কারণ। যাঁরা এই গুণত্রয় অতিক্রম করেন, তাঁরা জন্ম-বন্ধন থেকে মুক্ত হন এবং আমার স্বরূপ লাভ করেন। এই প্রসঙ্গে বলছেন—

**নান্যং গুণেভ্যঃ কর্তারং যদা দ্রষ্টানুপশ্যতি।**

**গুণেভ্যশ্চ পরং বেত্তি মন্ত্রাবং সোহৃথিগচ্ছতি॥১৯॥**

যে কালে দ্রষ্টা আত্মা ত্রিগুণ ব্যতীত অন্য কাউকে কর্তা বলে দেখেন না এবং ত্রিগুণের অতীত পরমতত্ত্ব ‘বেত্তি’- বিদিত হন, সেই সময় সেই পুরুষ আমার স্বরূপলাভ করেন। এটা বৌদ্ধিক মান্যতা নয় যে গুণ গুণেতেই আবর্তিত হয়। সাধনা করতে করতে সাধক এমন এক অবস্থাতে এসে পৌঁছান, যখন সেই পরম-এর অনুভূতি লাভ হয়, তখন ত্রিগুণ ব্যতীত অন্য কাউকে কর্তা বলে দেখতে পান না। সেই সময় পুরুষ ত্রিগুণাতীত হন। এটা কঞ্জিত মান্যতা নয়। এই প্রসঙ্গেই আরও বলছেন—

**গুণান্তেন্তান্তীত্য ত্রীন্দেহী দেহসমুক্তবান্ঃ।**

**জন্মমৃত্যুজরাদুঃখেবিমুক্তেহমৃতমশুতে॥২০॥**

পুরুষ স্তুল দেহোৎপত্তির কারণরূপ এই গুণত্রয় অতিক্রম করে, জন্ম-মৃত্যু-বৃদ্ধাবস্থা এবং সকল প্রকার দুঃখ থেকে মুক্ত হয়ে অমৃত তত্ত্ব লাভ করেন। এই প্রসঙ্গে অর্জুন জিজ্ঞাসা করলেন—

## অর্জুন উবাচ

কৈলিসেন্দ্রীন্গুণানেতানতীতো ভবতি প্রভো ।  
কিমাচারঃ কথং চৈতাংস্ত্রীন্গুণানতিবর্ততে ॥২১॥

প্রভু ! এই ত্রিশূলকে যিনি অতিক্রম করেন, তাঁর লক্ষণ কি ? তাঁর আচরণ কিরূপ এবং কি উপায়ে পুরূষ গুণাতীত হন ?

## শ্রীভগবানুবাচ

প্রকাশঃ চ প্রবৃত্তিং চ মোহমেব চ পাণ্ডব ।  
ন দ্বেষ্টি সম্প্রবৃত্তানি ন নিবৃত্তানি কাঙ্গতি ॥২২॥

অর্জুনের উপর্যুক্ত তিনটি প্রশ্নের উত্তর দিয়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন—  
অর্জুন ! যিনি পুরূষ সন্তুগুণের কার্যরূপ দৈশ্বরীয় প্রকাশ, রঞ্জোগুণের কার্যরূপ প্রবৃত্তি এবং তমোগুণের কার্যরূপ মোহে প্রবৃত্তি হলে দ্বেষ করেন না এবং নিবৃত্ত হলে সেই সকলের আকাঙ্ক্ষাও করেন না এবং—

উদাসীনবদাসীনো গুণের্যো ন বিচাল্যতে ।  
গুণ বর্তন্ত ইত্যেব যোহবতিষ্ঠতি নেপতে ॥২৩॥

এইরূপ উদাসীনের সদৃশ স্থিত যিনি, তিনি গুণসমূহদ্বারা বিচলিত হন না,  
গুণসকল গুণে প্রবৃত্ত-এইরূপ জেনে সেই অবস্থা থেকে সরে যান না, তখন তিনিই গুণাতীত ।

সমদুঃখসুখঃ স্বস্তঃ সমলোক্ষাকার্থনঃ ।  
তুল্যপ্রিয়াপ্রিয়ো ধীরস্ত্রল্যনিন্দাত্মসংস্তুতিঃ ॥২৪॥

যিনি নিরস্তর স্বয়ং-এ অর্থাৎ আত্মভাবে স্থিত, সুখ ও দুঃখে সম, মৃৎ, পিণ্ড,  
প্রস্তর ও সুবর্ণে যাঁর সমভাব, ধৈর্যবান्, যিনি প্রিয় ও অপ্রিয় তুল্যজ্ঞান, নিন্দা ও  
প্রশংসায় যাঁর সমবুদ্ধি এবং—

মানাপমানয়োস্ত্রল্যস্ত্রল্যো মিত্রারিপক্ষয়োঃ ।  
সর্বারস্ত্রপরিত্যাগী গুণাতীতঃ স উচ্যতে ॥২৫॥

যিনি মান ও অপমানে সম, মিত্র ও শক্রপক্ষেও সম, যিনি সকল আরাণ্ডের ত্যাগী, সেই পুরূষকে গুণাতীত বলা হয় ।

শোক সংখ্যা ২২ থেকে ২৫ পর্যন্ত গুণাতীত পুরুষের লক্ষণ ও আচরণ সম্বন্ধে বলা হয়েছে যে, তিনি বিচলিত হন না, গুণসমূহ বিচলিত করতে পারে না, স্থিরভাবে অবস্থান করেন। এখন প্রস্তুত গুণাতীত হবার বিধি—

মাং চ যোহব্যভিচারেণ ভক্তিযোগেন সেবতে।

স গুণান্সমতীত্যেতান্বক্ষভূয়ায় কল্পতে ॥২৬॥

যে পুরুষ অব্যভিচারিণী ভক্তিদ্বারা অর্থাৎ ইষ্টের অতিরিক্ত অন্য সাংসারিক স্মরণগুলি থেকে সম্পূর্ণরূপে মুক্ত হয়ে, যোগদ্বারা অর্থাৎ সেই নির্ধারিত কর্মদ্বারা নিরন্তর আমার ভজনা করেন, তিনি উত্তমরূপে ত্রিশূলকে অতিক্রম করে পরব্রহ্মের সঙ্গে একীভূত হবার যোগ্য হন, যাকে কল্প বলা হয়। ব্রহ্মের সঙ্গে একীভূত হওয়াই বাস্তবিক কল্প। অনন্যভাবে নিয়ত কর্মের আচরণ না করে কেউ গুণাতীত হয় না। অবশ্যে যোগেশ্বর নির্ণয় করলেন—

ব্রহ্মাণো হি প্রতিষ্ঠাহমযৃতস্যাব্যয়স্য চ।

শাশ্঵তস্য চ ধর্মস্য সুখস্যেকান্তিকস্য চ ॥২৭॥

হে অর্জুন ! সেই অবিনাশী ব্রহ্মের (যার সঙ্গে তিনি কল্প করেন, যাঁর মধ্যে তিনি গুণাতীত একীভাবে স্থিত হন।), অমৃতের, শাশ্বত ধর্মের এবং সেই অর্থাণ্ড একরস আনন্দের আমিহ আশ্রয় অর্থাৎ পরমাত্মস্থিত সদ্গুরুষ্ট এদের সকলের আশ্রয়। কৃষ্ণ যোগেশ্বর ছিলেন। এখন যদি আপনি অব্যক্ত, অবিনাশী, ব্রহ্ম, শাশ্বত ধর্ম, অর্থাণ্ড, একরস আনন্দ পেতে চান, তাহলে কোন তত্ত্বস্থিত, অব্যক্তস্থিত মহাপুরুষের আশ্রয়ে যান। তাঁর দ্বারাই উপরোক্ত স্থিতিলাভ করা সন্তুষ্ট।

নিষ্কর্ষ —

বর্তমান অধ্যায়ের আরঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন যে, অর্জুন ! জ্ঞান সমূহের মধ্যে অতি উত্তম পরমজ্ঞান সম্বন্ধে আমি পুনরায় তোমাকে বলব, যা' জেনে মুনিগণ উপাসনাদ্বারা আমার স্বরূপলাভ করেন, তারপর সৃষ্টির আদিতে তাঁরা পুনরায় জন্ম গ্রহণ করেন না; কিন্তু দেহত্যাগ নিশ্চয় হয়। সেই সময় তাঁরা ব্যথিত হন না। তাঁরা সেই দিনই দেহত্যাগ করেন, যেদিন স্বরূপলাভ করেন। প্রাপ্তি জীবিত অবস্থাতেই হয়; কিন্তু দেহান্তের সময়ও তাঁরা ব্যথিত হন না।

প্রকৃতিজাত সন্তু, রজঃ ও তমঃ ত্রিগুণই এই জীবাত্মাকে দেহে আবদ্ধ করে। দুটি গুণকে অভিভূত করে তৃতীয় গুণের বৃদ্ধি সন্তু। গুণ পরিবর্তনশীল। প্রকৃতি অনাদি, এর বিনাশ হয় না; বরং ত্রিগুণের প্রভাব এড়ানো যেতে পারে। গুণ মনের উপর প্রভাব বিস্তার করে। সন্তুগুণের বৃদ্ধিকালে ঈশ্বরীয় প্রকাশ ও বোধশক্তি জাগে। রজগুণ রাগাত্মক। সেই সময় কর্মের প্রতি লোভ, আসক্তি এই সমস্ত উৎপন্ন হয় এবং অস্তঃকরণে তমোগুণ কার্যরূপ নিলে আলস্য-প্রমাদ ঘিরে ফেলে। সন্তুগুণের বৃদ্ধিকালে মৃত্যু হলে পুরুষ শ্রেষ্ঠ নির্মললোকাদিতে জন্মগ্রহণ করে। রজগুণের বৃদ্ধিকালে মৃত্যু হলে মানুষ মানব-যৌনিতে উৎপন্ন হয় এবং তমোগুণের বৃদ্ধিকালে মানুষ দেহত্যাগ করে (পশ্চ, কীট, পতঙ্গ ইত্যাদি) অধম যৌনিতে উৎপন্ন হয়। সেইজন্য মানুষকে ক্রমশঃ উন্নত সাত্ত্বিক গুণের দিকে এগোনো উচিত। বস্তুতঃ এই ত্রিগুণই কোন না কোন যৌনির কারণ। এই গুণই আত্মাকে দেহে আবদ্ধ করে সেইজন্য গুণাত্মীত হওয়া উচিত।

পুরুষ যে গুণত্ব থেকে মুক্ত হন, তার স্বরূপ বলবার পর যোগেশ্বর বললেন যে, অষ্টধা মূল প্রকৃতি গর্ভধারিণী মাতা এবং আমিই বীজরূপ পিতা। অন্য কেউ মাতা অথবা পিতা নয়। যতক্ষণ এই ক্রম চলবে, ততক্ষণ চরাচর জগতে নিমিত্তরূপে কেউ না কেউ মাতা-পিতা হতেই থাকবে; কিন্তু বস্তুতঃ প্রকৃতিই মাতা ও আমিই পিতা।

এই প্রসঙ্গে অর্জুন তিনটি প্রশ্ন করেছেন যে, গুণাত্মীত পুরুষের লক্ষণ কি? আচরণ কিরূপ? কোন উপায়ে মানুষ এই ত্রিগুণের অতীত হন? এইরূপ যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ গুণাত্মীত পুরুষের লক্ষণ এবং আচরণ বললেন এবং শেষে গুণাত্মীত হবার উপায় বললেন যে, যে পুরুষ অব্যভিচারিণী ভক্তি ও যোগদ্বারা নিরস্ত্র আমার ভজনা করেন, তিনি ত্রিগুণাত্মীত হন। অন্য কারণও চিন্তন না করে নিরস্ত্র ইষ্টের চিন্তন করা অব্যভিচারিণী ভক্তি। যিনি সংসারের সংযোগ-বিয়োগ থেকে সর্বথা মুক্ত তারই নাম যোগ, তাকে কার্যরূপে অনুষ্ঠিত করার নাম কর্ম। যজ্ঞ যারদ্বারা সম্পন্ন হয়, সেই ক্রিয়া কর্ম। অব্যভিচারিণী ভক্তিদ্বারা সেই নিয়ত কর্মের আচরণদ্বারাই পুরুষ ত্রিগুণাত্মীত হন এবং অতীত হয়ে পুরুষ ব্রহ্মে একীভূত এবং পূর্ণকল্প প্রাপ্ত করার যোগ্য হন। গুণ যে মনের উপর প্রভাব-বিস্তার করে, তা বিলয় হওয়ার সঙ্গে-সঙ্গেই ব্রহ্মে একীভূত হওয়া সন্তু। একেই বাস্তবিক কল্প বলে। অতএব ভজন না করে কেউ গুণাত্মীত হতে পারেন না।

অবশেষে যোগেশ্বর নির্ণয় করলেন যে, সেই গুণাতীত পুরুষ যে ব্ৰহ্মেৰ সঙ্গে একীভাবে স্থিত হন, সেই ব্ৰহ্মেৱ, অমৃততত্ত্বেৱ, শাশ্঵ত ধৰ্মেৱ এবং অখণ্ড একৱস আনন্দেৱ আমি আশ্রয় অৰ্থাৎ প্ৰধান কৰ্ত্তা। এখন শ্ৰীকৃষ্ণ বৰ্তমানে নেই, এখন সেই আশ্রয় চলে গেছে। বড় সংশয়েৱ বিষয়, সেই আশ্রয় এখন কোথায় পাওয়া যাবে? কিন্তু না, শ্ৰীকৃষ্ণ নিজেৱ পৱিত্ৰতাৰ দিয়েছেন, তিনি যোগী ছিলেন, স্বৰূপস্থ মহাপুৱৰ্য ছিলেন। ‘শিষ্যস্তেহহং শাথি মাং ত্বাং প্ৰপন্নম।’ অৰ্জুন বলেছিলেন—আমি আপনার শিষ্য, আপনার শৱণাগত, আমাকে রক্ষা কৰুন। শ্ৰীকৃষ্ণ কয়েকবারই নিজেৱ পৱিত্ৰতাৰ দিয়েছেন। স্থিতপ্ৰজ্ঞ মহাপুৱৰ্যেৱ লক্ষণ বলেছেন এবং তাদেৱ সঙ্গে নিজেৱ তুলনা কৰেছেন। অতএব স্পষ্ট হল যে, শ্ৰীকৃষ্ণ মহাআত্মা, যোগী ছিলেন। এখন আপনি যদি অখণ্ড একৱস আনন্দ, শাশ্বত ধৰ্ম অথবা অমৃততত্ত্ব লাভেৰ ইচ্ছুক, তাহলে এই সকল প্ৰাপ্তিৰ শ্রোত একমাত্ৰ সদ্গুৱ। কেবল শাস্ত্ৰাধ্যয়ণদ্বাৰা এসকল লাভ কৰা অসম্ভব। যখন সেই মহাপুৱৰ্য আত্মাৰ সঙ্গে অভিন্ন হয়ে রথী হয়ে যান, তখন ধীৱে ধীৱে অনুৱাগীকে সঞ্চালিত কৰতে কৰতে তার স্বৰূপপৰ্যন্ত, যাতে তিনি স্বয়ং প্ৰতিষ্ঠিত, পৌঁছিয়ে দেন। মহাপুৱৰ্যই একমাত্ৰ মাধ্যম। এইৱেপ যোগেশ্বৱ শ্ৰীকৃষ্ণ নিজেকে সকলেৱ আশ্রয় বলে এই চতুর্দশ অধ্যায় সমাপ্ত কৰলেন। যাতে গুণসমূহেৱ বৰ্ণনা বিস্তাৱপূৰ্বক কৰা হয়েছে, অতএব—

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসুপনিষৎস্যু ব্ৰহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে  
শ্ৰীকৃষ্ণার্জুন সংবাদে ‘গুণত্রয়বিভাগযোগো’ নাম চতুর্দশোহধ্যায়ঃ ॥১৪॥

এই প্ৰকাৱ শ্ৰীমদ্ভগবদ্গীতারামপী উপনিষদ্ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র বিষয়ক শ্ৰীকৃষ্ণ ও অৰ্জুনেৱ সংবাদে ‘গুণত্রয় বিভাগ যোগ’ নামক চতুর্দশ অধ্যায় সম্পূৰ্ণ হল।

ইতি শ্ৰীমৎপৰমহৎস পৱনানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে  
শ্ৰীমদ্ভগবদ্গীতায়াঃ ‘যথার্থগীতা’ ভাষ্যে ‘গুণত্রয়বিভাগযোগো’ নাম  
চতুর্দশোহধ্যায়ঃ ॥১৪॥

এই প্ৰকাৱ শ্ৰীমৎপৰমহৎস পৱনানন্দজীৱ শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত  
‘শ্ৰীমদ্ভগবদ্গীতা’ৰ ভাষ্য ‘যথার্থ গীতা’তে ‘গুণত্রয় বিভাগ যোগ’ নামক চতুর্দশ  
অধ্যায় সমাপ্ত হল।

॥ হৱিঃ ওঁ তৎসৎ ॥

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মনে নমঃ ।।

।। অথ পঞ্চদশোহধ্যায়ঃ ।।

ମହାପୁରୁଷଗଣ ବିଭିନ୍ନ ଦୃଷ୍ଟାନ୍ତ ଦ୍ୱାରା ସଂସାରକେ ବୋଲାବାର ଚେଷ୍ଟା କରେଛେ । କେଉଁ  
ଭବାତ୍ମୀ ବଲେଛେ, କେଉଁ ସଂସାର-ସାଗର ବଲେଛେ । ଅବଶ୍ତା-ଭେଦେ ଏକେଇ ଭବନଦୀ ଓ  
ଭବକୁପାତ୍ର ବଳା ହେଯେଛେ ଏବଂ କଥନତ୍ତ୍ଵ ଏର ତୁଳନା ଗୋ-ପଦ-ଏର ସଙ୍ଗେ କରା ହେଯେଛେ  
ଅର୍ଥାତ୍ ହିନ୍ଦୁରୁଷମୁହେର ଆୟତନ ସଂସାରର ତଣ୍ଟୁକୁଇ ଏବଂ ଶୈଖେ ଏମନ ଅବଶ୍ତା ଆସେ  
ଯେ (ନାମ ଲେତ ଭବ ମିଶ୍ର ସୁଖାହୀଁ ।) ନାମ ଲିଲେଇ ଭବମିଶ୍ର ଶୁକିଯେ ଯାଯା । ଏରପା ସମୁଦ୍ର  
ସଂସାରେ ଆଛେ କି ? ଯୋଗେଶ୍ଵର ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣର ସମୁଦ୍ର ଓ ବୃକ୍ଷର ନାମ ଦିଯେଛେନ ।  
ଦ୍ୱାଦଶ ଅଧ୍ୟାୟେ ତିନି ବଲେଛେ—ଯାଁରା ଆମାର ଅନନ୍ୟଭକ୍ତ, ତାଁଦେର ଶୀଘ୍ରଇ ସଂସାର-ସମୁଦ୍ର  
ଥେକେ ଉଦ୍ଧାର କରି । ଏଥାନେ ପ୍ରତ୍ଯତି ଅଧ୍ୟାୟେ ଯୋଗେଶ୍ଵର ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ବଲଛେ ଯେ, ଏହି  
ସଂସାର ବୃକ୍ଷସ୍ଵରପ, ଏର ଛେଦନ କରତେ କରତେ ଯୋଗୀଗଣ ସେଇ ପରମପଦେର ଖୋଜି କରେନ ।

ଦେଖୁନ-

# ଶ୍ରୀଭଗବାନୁବାଚ

উত্তরমূলমধ্যশাখামশ্বথং প্রাণুরব্যয়ম্।

ଛନ୍ଦାଂସି ଯମ୍ୟ ପଗାନି ଯନ୍ତ୍ରଂ ବେଦ ସ ବେଦବିନ୍ ॥୧ ॥

অর্জন ! ‘উତ୍ତରମୂଳମ’-ଉଦ୍ଧରେ ପରମାତ୍ମାଇ-ଏର ମୂଳ, ‘ଅଧିଷ୍ଠାଖମ’-ନିମ୍ନଦିକେ ପ୍ରକୃତିଇ ଏର ଶାଖାସମୁହ, ଏଇରମ ସଂସାରରମପ ଅଶ୍ଵଥ ବୃକ୍ଷକେ ଅବିନାଶୀ ବଲା ହୟ । (ବୃକ୍ଷ ଅ-ଶ୍ଵଃ ଅର୍ଥାତ୍ କାଳପର୍ଯ୍ୟନ୍ତରେ ଯେ ଥାକବେଇ, ଏଟା ବଲା ଯାଇ ନା, ଯେ କୋଣ ସମୟ ଛେଦନ ହତେ ପାରେ; କିନ୍ତୁ ଅବିନାଶୀ ବଲା ହୟ) ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣର ଅନୁସାରେ ଅବିନାଶୀ ଦୁଟି-ଏକ ସଂସାରରମ ବୃକ୍ଷ ଅବିନାଶୀ ଏବଂ ଦ୍ଵିତୀୟ ତାର ଥେକେଓ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ପରମ ଅବିନାଶୀ । ଏଇ ଅବିନାଶୀ ସଂସାରରମ ବୃକ୍ଷେର ପାତା ବୈଦକେ ବଲା ହେଁବେ । ଯିନି ଏହି ସଂସାରରମ ବୃକ୍ଷକେ ଜାନେନ, ତିନିଇ ବୈଦଜ୍ଞ ।

যিনি এই সংসাররূপ বৃক্ষকে জানেন, তিনিই বেদজ্ঞাতা, গ্রহ পাঠকরা জানেন না। গ্রহ পাঠ করলে সেই পথে এগিয়ে যাবার প্রেরণালাভ হয় মাত্র। পত্রসমুহের

স্থানে বেদের কি প্রয়োজন ? বস্তুতঃ পূর্ণ পথভাস্ত হয়ে ঘূরতে ঘূরতে যখন অস্তিম  
জন্ম গ্রহণ করে, সেখান থেকেই বেদের সেই সকল ছন্দ (যা' কল্যাণের সৃজন করে)  
প্রেরণা প্রদান করে, তার পর থেকেই বেদের উপযোগ আরম্ভ হয় এবং সংসার শেষ  
হয়ে যায়। তিনি স্বরূপের দিকে এগিয়ে যান। এবং—

### অধশ্চেচ্ছবৎ প্রসৃতাস্তস্য শাখা

গুণপ্রবন্ধা বিষয়প্রবালাঃ ।

### অধশ্চ মূলান্যনুসন্ততানি

কর্মানুবন্ধীনি মনুষ্যলোকে ॥২॥

এই সংসাররূপ বৃক্ষ-এর শাখাসমূহ গুণত্রয়দ্বারা বর্ধিত ও বিষয়-ভোগরূপ  
পঞ্চবিশিষ্ট এবং অধোদেশ ও উর্ধ্বদেশে বিস্তৃত। নিম্নে কৌট-পতঙ্গপর্যন্ত এবং উর্ধ্বে  
দেবভাব থেকে আরম্ভ করে ব্রহ্মাপর্যন্ত সর্বত্র বিস্তৃত এবং কেবল মনুষ্য-যোনিতে  
কর্মানুসারে আবদ্ধ করে, অন্য সমস্ত যোনি ভোগ উপভোগ করে। মনুষ্য-যোনিই  
কর্মানুসারে বন্ধন তৈরী করে।

ন রূপমস্যেহ তথোপলভ্যতে

নাস্তো ন চাদীর্ণ চ সম্প্রতিষ্ঠা ।

অশ্বথমেনং সুবিরাচমূল-

মসঙ্গশঙ্গেণ দৃচেন ছিঞ্চা ॥৩॥

কিন্তু এই সংসার-বৃক্ষ-এর রূপ যেমন বলা হয়েছে, তেমন দেখা যায় না;  
কারণ এর আদি নেই ও অন্তও নেই এবং এর স্থিতিও উন্নত নয় (কারণ এই বৃক্ষ  
পরিবর্তশীল)। এই দৃচমূল সংসার-বৃক্ষকে দৃচ 'অসঙ্গশঙ্গেণ'- অসঙ্গ অর্থাৎ বৈরাগ্যরূপ  
শস্ত্র দ্বারা ছেদন করতে হবে। (সংসাররূপ বৃক্ষকে ছেদন করতে হবে। এমন নয় যে  
অশ্বথের মূলে পরামাত্মা বাস করেন অথবা অশ্বথপাতা বেদ আর শুরু করে দিলেন  
বৃক্ষের পূজা।)

এই সংসার-বৃক্ষ-এর মূল স্বয়ং পরমাত্মাই বীজরূপে প্রসারিত, তাহলে কি  
তাও ছেদন হবে ? দৃচ বৈরাগ্য দ্বারা এই প্রকৃতির সম্বন্ধ-বিচ্ছেদ হয়, একেই ছেদন  
বলা হয়। ছেদন করে কি করা হবে ?—

ততঃ পদং তৎপরিমার্গিতব্যং  
যস্মিন্গতা ন নিবর্ত্তি ভূয়ঃ।

তমের চাদ্যং পুরুষং প্রপদ্যে  
যতঃ প্রবৃত্তিঃ প্রস্তুতা পুরাণী॥৪॥

দৃঢ় বৈরাগ্যরূপ শন্ত্রদ্বারা সংসার-বৃক্ষকে ছেদন করে সেই পরমপদ পরমেশ্বরের উত্তমরূপে অব্বেষণ করতে হয়, যাঁকে প্রাপ্ত হলে সংসারে আর পুনরাবৃত্তি হয় না অর্থাৎ পূর্ণ নিবৃত্তিলাভ হয়। কিন্তু তাঁর অব্বেষণ কিরণপে সম্ভব? যোগেশ্বর বলছেন, এরজন্য সমর্পণ আবশ্যক। যে পরমেশ্বর হতে পুরাতন সংসার-বৃক্ষের প্রবৃত্তি বিস্তৃত, সেই আদিপুরুষ পরমাত্মার শরণাগত আমি (তাঁর শরণাগত না হলে বৃক্ষ লুপ্ত হবে না)। এখন শরণাগত, বৈরাগ্যে স্থিত পুরুষ কিরণপে বুঝবেন যে বৃক্ষ-ছেদন হয়েছে? তার পরিচয় কি? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

নির্মানমোহা জিতসঙ্গদোষা  
অধ্যাত্মানিত্যা বিনিবৃত্তকামাঃ।

দন্তেবিমুক্তাঃ সুখদুঃখসংজ্ঞে—  
গচ্ছত্যমুচ্যাঃ পদমব্যয়ং তৎ॥৫॥

উপর্যুক্ত প্রকার সমর্পণদ্বারা যাঁদের মোহ ও মান নষ্ট হয়েছে, যাঁরা আসক্তিরূপ সঙ্গদোষজয়ী, ‘অধ্যাত্মানিত্যা’—পরমাত্মার স্বরূপে যাঁদের নিরন্তর স্থিতি, যাঁদের কামনা নিবৃত্ত হয়েছে এবং সুখ-দুঃখরূপ দন্ত থেকে বিমুক্ত জ্ঞানীগণ সেই অবিনাশী পরমপদ প্রাপ্ত হন। যতক্ষণ এই অবস্থালাভ না হয়, ততক্ষণ সংসার-বৃক্ষ ছেদন হয় না। বৈরাগ্যের প্রয়োজন এতদূরপর্যন্তই। সেই পরমপদের স্বরূপ কি? যা লাভ করা হয়?—

ন তত্ত্বসংযতে সুর্যো ন শশাঙ্কো ন পাবকঃ।  
যদগত্বা ন নিবর্ত্তন্তে তদ্বাম পরমং মম।॥৬॥

সেই পরমপদকে সূর্য, চন্দ্র ও অগ্নি প্রকাশ করতে পারে না। যাঁকে লাভ করলে সংসারে আর পুনর্জন্ম হয় না, সেটাই আমার পরমধাম অর্থাৎ তাঁদের পুনর্জন্ম হয় না। এই পদলাভ করার অধিকার সকলের সমান। এই প্রসঙ্গে বলছেন—

মনেবাংশো জীবলোকে জীবভূতঃ সনাতনঃ ।

মনঃষষ্ঠানীন্দ্রিয়াণি প্রকৃতিস্থানি কর্ষিতি ॥৭॥

‘জীবলোকে’ অর্থাৎ এই দেহে (দেহকেই লোক বলে) এই জীবাত্মা আমারই সনাতন অংশ এবং সেই ত্রিশুণময়ী মায়াতে স্থিত মন ও পঞ্চেন্দ্রিয়কে আকর্ষণ করে। কিরণপে ?—

শ্রীরং যদবাপ্নোতি যচ্চাপ্যৎক্রামতীশ্঵রঃ ।

গৃহীত্বেতানি সংযাতি বাযুর্গন্ধানিবাশয়াৎ ॥৮॥

বাযু যেমন গন্ধস্থান থেকে গন্ধ আহরণ করে, তেমনি দেহের স্বামী জীবাত্মা যে পূর্বদেহ ত্যাগ করে, সেই দেহ থেকে মন ও জ্ঞানেন্দ্রিয় সমূহের কার্য-কলাপ গ্রহণ করে (আকর্ষণ করে, সঙ্গে নিয়ে) আবার যে নতুন দেহ লাভ করে, তাতে প্রবেশ করে। (যখন নতুন দেহ পরের মুহূর্তেই লাভ হয় তখন আটার পিণ্ড তৈরী করে কাকে আর্পণ করেন? গ্রহণ কে করে? সেইজন্য শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনকে বলেছিলেন যে, এই অজ্ঞান তোমার কোথেকে উৎপন্ন হল যে এই পিণ্ডোদক ক্রিয়া লুপ্ত হবে।) সেখানে করে কি? মনসহিত ছয়টি ইন্দ্রিয় কে কে?

শ্রোত্রং চক্ষুঃ স্পর্শনং চ রসনং দ্বাণমেব চ ।

অধিষ্ঠায় মনশ্চাযং বিষয়ানুপসেবতে ॥৯॥

সেই দেহস্থিত জীবাত্মা কর্ণ, চক্ষু, ত্বক, জিহ্বা, নাসিকা ও মনকে আশ্রয় করে অর্থাৎ এদের সাহায্যেই বিষয়সমূহ উপভোগ করেন। এইরূপ দেখা যায় না, সকলে তাঁর দর্শন করতে সমর্থ হয় না, এই প্রসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—

উৎক্রামস্তঃ স্থিতৎ বাপি ভূজ্ঞানং বা গুণান্বিতম্ ।

বিমৃতা নানুপশ্যস্তি পশ্যস্তি জ্ঞানচক্ষুব্যঃ ॥১০॥

যিনি দেহস্থরে গমন করেন, যিনি দেহে অবস্থানপূর্বক বিষয়ভোগ করেন অথবা যিনি ত্রিশুণের সঙ্গে সংযুক্ত হন, সেই জীবাত্মাকে মৃচ, অজ্ঞানী ব্যক্তিগণ জানতে পারে না। কেবল জ্ঞানদুপ চক্ষুদ্বারা জ্ঞানিগণই তাঁকে জানতে পারেন, দর্শন করেন। এখন সেই দৃষ্টি কিরণপে লাভ হবে? এখন দেখুন—

**যতন্ত্রো যোগিনশ্চেনং পশ্যন্ত্যাভ্যন্যবস্থিতম্।  
যতন্ত্রোহপ্যকৃতাভ্যানো নৈনং পশ্যন্ত্যচেতসঃ॥১১॥**

যোগীগণ স্বীয় হৃদয়ে চিন্তকে সর্বদিক থেকে রুদ্ধ করে এই আভ্যাকে যত্নপূর্বক প্রত্যক্ষ দর্শন করেন; কিন্তু অকৃতার্থ আভ্যাকে যাদের অর্থাৎ মলিন অন্তঃকরণ যাদের, সেই অজ্ঞানীগণ যত্নশীল হলেও এই আভ্যাকে জানতে পারে না (কারণ তাদের অন্তঃকরণ বাহ্য প্রবৃত্তিসমূহে বিক্ষিপ্ত এখন)। চিন্তকে সর্বদিক থেকে রুদ্ধ করে অন্তরাভ্যাতে যত্নশীল ভাবুকগণই তাঁকে লাভ করার যোগ্য। অতএব অন্তঃকরণ থেকে নিরস্তর সুমিরণ আবশ্যিক। এখন সেই মহাপুরুষগণের স্বরূপে যে সমস্ত বিভূতিলাভ হয় (যা' পূর্বেও বলেছেন), সেই সকলের উপর আলোকপাত করলেন—

**যদাদিত্যগতং তেজো জগন্ত্রাসয়তেহথিলম্।  
যচ্ছ্রদ্ধমসি যচ্চাপ্নৌ তত্ত্বেজো বিদ্ধি মামকম্॥১২॥**

যে জ্যোতিঃ সূর্যে স্থিত হয়ে সমগ্র জগৎকে প্রকাশিত করে, যে তেজ চন্দ্রে ও অগ্নিতে আছে, সেই জ্যোতিঃ তুমি আমার জানবে। এখন সেই প্রসঙ্গে বলেছেন—

**গামাবিশ্য চ ভূতানি ধারয়ামহ্যমোজসা।  
পুষ্টামি চৌষধীঃ সর্বাঃ সোমো ভূত্বা রসাত্মকঃ॥১৩॥**

আমিই পৃথিবীতে প্রবেশ করে স্বীয় শক্তিদ্বারা ভূতসকলকে ধারণ করি এবং চন্দ্রে রসস্বরূপ হয়ে সকল বনস্পতিদের পুষ্ট করি।

**অহং বৈশ্বানরো ভূত্বা প্রাণিনাং দেহমাত্রিতঃ।  
প্রাণাপানসমাযুক্তঃ পচাম্যনং চতুর্বিধম্॥১৪॥**

আমিই প্রাণিগণের দেহে বৈশ্বানর অগ্নিরূপে স্থিত হয়ে প্রাণ ও অপান বায়ুর সঙ্গে সংযুক্ত চতুর্বিধ অগ্নকে পরিপাক করি।

চতুর্থ অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ স্বয়ং ইন্দ্রিয়াগ্নি, সংযমাগ্নি, যোগাগ্নি, প্রাণ-অপানাগ্নি, ব্রহ্মাগ্নি প্রভৃতি তেরো-চৌদ্দটি অগ্নির উল্লেখ করেছেন, এদের সকলের পরিণাম জ্ঞানরূপেই পরিভাষিত হয়েছে। জ্ঞানকেই অগ্নি বলা হয়। শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন, এইরূপ অগ্নিস্বরূপ হয়ে প্রাণ ও অপানের সঙ্গে সংযুক্ত চার প্রকার বিধিদ্বারা

(জপ সর্বদা নিঃশ্঵াস-প্রশ্বাসে হয়, জপের চার বিধি—বৈখরী, মধ্যমা, পশ্যন্তি ও পরা  
এই চার বিধি দ্বারা) প্রস্তুত অন্নকে আমিই পরিপাক করি।

শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে ব্রহ্মই একমাত্র অন্ন, যারদ্বারা আত্মা পূর্ণ তৃপ্ত হয় আর  
কখনও অত্তপ্ত হয় না। দেহের পোষক প্রচলিত অন্নকে যোগস্থর আহারের নাম  
দিয়েছেন (যুক্তাহার .....।) বাস্তবিক অন্ন পরমাত্মা। বৈখরী, মধ্যমা, পশ্যন্তী ও পরা  
এই চারটি বিধি পেরিয়ে সেই অন্ন পরিপক্ষ হয়। একেই অনেক মহাপুরুষ নাম,  
রূপ, লীলা ও ধার্ম বলেছেন। সর্বপ্রথম নাম-জপ করা হয়, ক্রমশঃ হৃদয়ে ইষ্টের  
স্বরূপ প্রকট হতে থাকে, তার পরে তাঁর লীলার বোধ জাগে যে, সেই ঈশ্বর কিভাবে  
কণায়-কণায় ব্যাপ্ত? কিভাবে তিনি সর্বত্র কার্য করেন? এইরূপ হৃদয়ে-দেশে  
ক্রিয়াকলাপের দর্শনই তাঁর লীলা (বাহ্য রামলীলা-রাসলীলা নয়) এবং সেই ঈশ্বরীয়  
লীলার প্রত্যক্ষ অনুভূতি করতে করতে যখন মূললীলাধারীর স্পর্শলাভ হয়, তখন  
ধার্মের অবস্থালাভ হয়। তাঁকে জানার পর সাধক তাঁতে প্রতিষ্ঠিত হন। তাঁতে প্রতিষ্ঠিত  
হওয়া ও পরাবাণীর পরিপক্ষাবস্থাতে পরিৱৰ্তনের স্পর্শ করে তাঁতে স্থিত হওয়া, দু-ই  
একসঙ্গে হয়।

এইরূপ প্রাণ ও অপান অর্থাৎ নিঃশ্বাস ও প্রশ্বাসের সঙ্গে সংযুক্ত হয়ে চার  
বিধি দ্বারা অর্থাৎ বৈখরী, মধ্যমা, পশ্যন্তী ও ক্রমশঃ পরা সম্পূর্ণ হয় যখন, তখন  
সেই ‘অন্ন’ (ব্রহ্ম) পরিপক্ষ হয়ে যায়, লাভও হয়, পরিপাক ও হয় এবং পাত্র পরিপক্ষই  
হয়।

### সর্বস্য চাহং হাদি সন্নিবিষ্টো

মত্তঃ স্মৃতিজ্ঞানমপোহনঃ চ।

### বেদৈশ সর্বেরহমেব বেদ্যো

বেদান্তকুদ্বেদবিদেব চাহম॥১৫॥

আমিই সকল প্রাণীর হৃদয়ে অস্ত্যমীরুপে স্থিত আছি। আমার দ্বারাই স্বরূপের  
স্মৃতি (সুরতি, যে তত্ত্ব পরমাত্মা বিশ্বৃত, তাঁর স্মরণ হয়ে আসা) উৎপন্ন হয়, (এই  
লক্ষণ প্রাপ্তিকালের) স্মৃতির সঙ্গে জ্ঞান (সাক্ষাৎকার) ও ‘অপোহনম্’ অর্থাৎ সকলবাধা  
শাস্ত আমার দ্বারাই হয়। সকল বেদ মধ্যে যা’ জানার যোগ্য তা আমি। বেদান্তের  
কর্তা অর্থাৎ ‘বেদস্য অন্তঃ সঃ বেদান্ত’ (পৃথক্ ছিলেন তবেই তো অনুভব হল, যখন

জানার সঙ্গে সঙ্গে সেই স্বরূপে প্রতিষ্ঠিত হয়েছেন তখন আর কে কাকে জানতে চাইবেন?) বেদান্তের কর্তা আমি এবং ‘বেদবিৎ’ও অর্থাৎ বেদের জ্ঞাতাও আমিই। অধ্যায়ের আরম্ভে তিনি বলেছিলেন যে, এই সংসার বৃক্ষের ন্যায়। উর্ধ্বে পরমাত্মা মূল এবং নিম্নে প্রকৃতিপর্যন্ত বিস্তৃত তার শাখাসমূহ। যিনি এই মূল থেকে প্রকৃতির বিভাজন করে একে জানেন, মূলসহ জানেন, তিনিই বেদবিৎ। এখানে যোগেশ্বর বলছেন যে, আমি বেদবিৎ। শ্রীকৃষ্ণ নিজের তুলনা বেদজ্ঞ মহাপুরুষগণের সঙ্গে করলেন। শ্রীকৃষ্ণ তত্ত্বজ্ঞ মহাপুরুষ, যোগীগণের মধ্যে পরমযোগী ছিলেন। এই প্রশ্ন এখানেই সম্পূর্ণ হল। এখন বলছেন যে, এই সংসারে পুরুষের স্বরূপ দুই প্রকারে—

দ্বাবিমো পুরুষো লোকে ক্ষরশ্চাক্ষর এবং।

ক্ষরঃ সবাণি ভূতানি কৃটস্ত্রাহক্ষর উচ্যতে ॥১৬॥

অর্জুন! এই সংসারে পুরুষ দুই প্রকারের ‘ক্ষর’-ক্ষয়শীল, পরিবর্তনশীল এবং দ্বিতীয় ‘অক্ষর’- অক্ষয়া, অপরিবর্তনশীল। তন্মধ্যে প্রথম সকল ভূতপ্রাণীগণের শরীর বিনাশশীল, আজ আছে কাল থাকবে না এবং দ্বিতীয় কৃটস্ত্র পুরুষকেই অবিনাশী বলা হয়। সাধনের দ্বারা যাঁর মন ও ইন্দ্রিয়সমূহ নিরুদ্ধ অর্থাৎ যাঁর ইন্দ্রিয়সমূহ কুটস্ত্র, তাঁকে অক্ষর বলা হয়। এখন আপনি স্ত্রী অথবা পুরুষ যা হোন না কেন, যদি দেহ ও দেহের উৎপত্তির কারণ সংস্কারের ক্রম বিদ্যমান, তাহলে আপনি ক্ষর পুরুষ এবং যদি মন ও ইন্দ্রিয়সমূহ কুটস্ত্র হয়ে যায়, তাহলে তিনিই অক্ষর পুরুষ। কিন্তু এটাও পুরুষের অবস্থা-বিশেষই। এই দুইয়ের থেকেও শ্রেষ্ঠ এক ‘অন্য’ পুরুষও রয়েছেন—

উত্তমঃ পুরুষস্ত্রন্যঃ পরমাত্মেত্যদাহতঃ।

যো লোকত্রয়মাবিশ্য বিভূত্যব্যয় ঈশ্বরঃ ॥১৭॥

এই উভয় থেকে অতি উত্তম পুরুষ তো অন্যই, যিনি ত্রিলোকে অবস্থিত হয়ে সকলের ধারণ-পোষণ করেন এবং তাঁকে অবিনাশী, পরমাত্মা, ঈশ্বর বলা হয়েছে। পরমাত্মা, অব্যক্ত, অবিনাশী, পুরুষোত্তম এই সমস্ত শব্দগুলি তাঁর পরিচায়ক, বস্তুতঃ তিনি ‘অন্য’ অর্থাৎ অনিবর্চনীয়। ক্ষর-অক্ষর থেকে অতীত মহাপুরুষের চূড়ান্ত অবস্থা এটা, যাঁকে পরমাত্মা বলে ইঙ্গিত করা হয়েছে; কিন্তু তিনি ‘অন্য’ অর্থাৎ অনিবর্চনীয়। সেই স্থিতিতে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ নিজেরও পরিচয় দিলেন। যথা—

যস্মাংক্ষরমতীতোহমক্ষরাদপি চোত্তমঃ।

অতোহস্মি লোকে বেদে চ প্রথিতঃ পুরুষোত্তমঃ ॥১৮॥

আমি উপর্যুক্ত বিনাশশীল, পরিবর্তনশীল ক্ষেত্র থেকে সর্বথা অতীত এবং অক্ষর-অবিনাশী কুটস্থ পুরুষ থেওে উত্তম, সেইজন্য লোক ও বেদে আমি পুরুষোত্তম নামে প্রসিদ্ধ।

যো মামেবমসম্ভূতো জানাতি পুরুষোত্তমঃ।

স সর্ববিজ্ঞতি মাং সর্বভাবেন ভারত ॥১৯॥

হে ভারত ! উপর্যুক্ত এইপ্রকার যে জ্ঞানী পুরুষ আমাকে, পুরুষোত্তমকে সাক্ষাৎ জানেন, তিনি সর্বজ্ঞ পুরুষ, তিনি সর্বপ্রকারে পরমাত্মারাদপি আমাকেই ভজনা করেন। তিনি আমার থেকে পৃথক্ নন।

ইতি গুহ্যতমং শাস্ত্রমিদমুক্তং ময়ানঘ ।

এতদ্বুদ্ধা বুদ্ধিমানস্যাংকৃত্যক্ষণ ভারত ॥২০॥

হে নিষ্পাপ অর্জুন ! এইরপি অতিগোপনীয় শাস্ত্র আমার দ্বারা বলা হল। এই তত্ত্ব অবগত হয়ে মানুষ পূর্ণজ্ঞাতা ও কৃতার্থ হন। অতএব যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের এই বাণী স্বয়ং-ই পূর্ণ শাস্ত্র।

শ্রীকৃষ্ণের এই রহস্য অত্যন্ত গুপ্ত ছিল। তিনি কেবল অনুরাগীদেরই বলেছেন। এই বিষয় কেবল অধিকারীর জন্য, সকলের জন্য নয়। কিন্তু যখন এই রহস্য (শাস্ত্র) সম্পর্কেই লেখা হয়, শাস্ত্র সকলের জন্য সুলভ হয়, তখন মনে হয় যে শ্রীকৃষ্ণ সকলকেই বলেছেন; কিন্তু বস্তুতঃ এই রহস্য (শাস্ত্র) শুধু অধিকারীর জন্যই। শ্রীকৃষ্ণের সেই অলৌকিক স্বরূপ সকলের দর্শন করার জন্য ছিলও না। কেউ তাঁকে রাজা বলে জানতেন, কেউ দৃত এবং কেউ তাঁকে যদুবংশীয় বলেই মনে করতেন; কিন্তু অধিকারী অর্জুনের কাছে কিছু গোপন করেননি। অর্জুন অনুভব করলেন যে তিনি পরমসত্য পুরুষোত্তম। শ্রীকৃষ্ণ গোপন করলে অর্জুনের কল্যাণ সন্তুষ্ট ছিল না।

এই বিশেষত্ব ভগবৎপ্রাপ্ত প্রত্যেক মহাপুরুষের মধ্যে পাওয়া যায়। রামকৃষ্ণ পরমহংসদেব একবার খুব আনন্দিত হয়েছিলেন। তখন ভক্তগণ জিজ্ঞাসা

করেছিলেন—“আজ আপনি যে খুব আনন্দিত।” তিনি বলেছিলেন—“আজ আমি ‘সেই’ পরমহংস হয়ে গেছি।” তাঁর সমকালীন কোন শ্রেষ্ঠ মহাপুরুষ পরমহংস ছিলেন, তিনি তাঁর দিকেই ইঙ্গিত করেছিলেন। কিছুক্ষণ পর তিনি অনুগামী সাধকদের, যাঁরা কায়মনোবাক্যে বৈরাগ্য লাভের আশায় তাঁর অনুগামী, তাঁদের বলেছিলেন—“দেখ, তোমরা আর সন্দেহ করো না। আমিই সেই রাম যিনি ত্রেতাযুগে আবির্ভূত হয়েছিলেন, আমিই সেই কৃষ্ণ যিনি দ্বাপরযুগে আবির্ভূত হয়েছিলেন। আমি তাঁদেরই পবিত্র আত্মা, সেই স্বরূপ। যদি ভগবৎপ্রাপ্তির ইচ্ছা কর তাহলে আমার স্বরূপ দেখ।

এইরূপ ‘পূজ্য মহারাজজী’ও সকলকে বলতেন—“হো, আমি ভগবানের দৃত। যিনি প্রকৃত সন্ত, তিনি ভগবানের দৃত হন। আমাদের দ্বারাই তাঁর সন্ধান পাওয়া যায়।” যীশুখৃষ্ট বলেছিলেন—“আমি ভগবানের পুত্র, আমার কাছে এসো- তাহলে ঈশ্বরের পুত্র বলে অভিহিত হবে।” অতএব সকলেই পুত্র হতে পারেন। সাম্মিধ্যে আসার তাৎপর্য তাঁরা সাধনা করে যে ব্রহ্মে স্থিত হয়েছেন, সাধনা-ক্রমে চলে তা’ সম্পূর্ণ করতে হবে। মহম্মদ সাহেবও বলেছিলেন—“আমি আল্লার রসূল, সংবাদবাহক।” ‘পূজ্য মহারাজজী’ সকলে এটুকু বলতেন—কারো বিচার খণ্ডন করেননি তিনি। বৈরাগ্যযুক্ত অনুগামীদের বলতেন—“কেবল আমার স্বরূপ দেখ। যদি তুমি সেই পরমতত্ত্ব সম্বন্ধে জানতে চাও তাহলে আমাকে দেখ, সন্দেহ করো না।” যাঁরা সন্দেহ করতেন তাঁদের অনুশাসনের মধ্যে রেখে, অস্তরে অনুভব-সংগ্রহ করে, বাহ্য সমস্ত বিচার থেকে সরিয়ে, যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে (অধ্যায় ২/৪০-৪৩) অনন্ত পূজা-পদ্ধতি যার অন্তর্গত, নিজের স্বরূপে নিযুক্ত করেছিলেন। তিনি অদ্যাবধি মহাপুরুষরূপে অবস্থিত। এইরূপ শ্রীকৃষ্ণের স্থিতি গোপনীয় ছিল; কিন্তু নিজের অনন্য ভক্ত পূর্ণ অধিকারী অনুরাগী অর্জুনের প্রতি তিনি তা প্রকাশ করেছিলেন। প্রত্যেক ভক্তের জন্য সন্তুষ্ট, মহাপুরুষ লক্ষ্য-লক্ষ্য পরিচালিত করেন।

**নিষ্কর্ষ –**

বর্তমান অধ্যায়ের শুরুতে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন, একটা অশ্বথ বৃক্ষের ন্যায় এই সংসার। অশ্বথ একটা উদাহরণ মাত্র। উর্ধ্বে এর মূল পরমাত্মা এবং নিম্নে প্রকৃতিপর্যন্ত বিস্তৃত এর শাখা- প্রশাখা। যিনি এই বৃক্ষকে সম্পূর্ণরূপে জানেন, তিনি বেদজ্ঞ। এই সংসার-বৃক্ষের শাখাসমূহ উর্ধ্বদেশে এবং অধোদেশে সর্বত্র বিস্তৃত

এবং ‘মূলানি’-এর মূলের জাল উঁধে এবং নিম্নে সর্বত্র ব্যাপ্ত; কারণ সেই ‘মূল’ ইশ্বর ও তিনিই বীজরনপে প্রত্যেক জীবের হৃদয়ে বাস করেন।

দৃষ্টান্ত স্বরূপ একটি পৌরাণিক কাহিনী প্রস্তুত করা হয়েছে। একবার পদ্মফুলের উপর বসে ব্ৰহ্মা বিচার করছিলেন যে, আমার উৎপত্তি স্থান কোথায়? কোথায় আমার জন্ম হয়েছিল? তিনি সেই পদ্মফুলের নালে প্রবেশ করে অনবরত এগিয়ে যেতে লাগলেন; কিন্তু নিজের উদ্গম দেখতে পেলেন না। তখন তিনি হতাশ হয়ে পদ্মাসনে বসে পড়লেন। চিন্ত নিরুদ্ধ করার প্রচেষ্টা করতে লাগলেন এবং ধ্যান দ্বারা তিনি নিজের মূল উৎস কোথায় তা খুঁজে পেলেন, পরমতত্ত্বের সাক্ষাত্কার করে তাঁর স্তব করলেন। পরমস্বরনপের দ্বারা অবগত হলেন যে, আমি সর্বত্র বিরাজমান, কিন্তু আমার প্রাণিস্থান হৃদয়। হৃদয়-দেশ-এ যিনি ধ্যান করেন, তিনি আমাকে লাভ করেন।

ব্ৰহ্মা প্রতীক স্বরূপ। যোগসাধন-এর পরিপক্ষ অবস্থাতে এই স্থিতি জাগ্রত হয়। ইশ্বর লাভে ব্ৰহ্মাবিদ্যার সঙ্গে সংযুক্ত বুদ্ধিকেই ব্ৰহ্মা বলা হয়। পদ্মফুল জলে অবস্থিত হয়েও নির্মল ও নির্লিপ্ত থাকে। বুদ্ধি যতক্ষণ এদিক-সেদিক সন্ধান করে, ততক্ষণ লাভ করতে পারে না; কিন্তু যখন সেই বুদ্ধিই নির্মলতার আসনে স্থির হয়ে মন ও ইন্দ্রিয়সমূহকে সংযম করে হৃদয়-দেশে নিরুদ্ধ করে এবং সেই নিরুদ্ধ মন ও ইন্দ্রিয়সমূহও যখন বিলীন হয়ে যায়, তখন স্মীয় হৃদয়ে পরমাত্মাকে লাভ করে।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে সংসার বৃক্ষস্বরূপ, যার মূল এবং শাখাসমূহ সর্বত্র বিস্তৃত। ‘কর্মানুবন্ধীনি মনুষ্যলোকে’— কর্মানুসারে কেবল মনুষ্য যোনিতে বন্ধন তৈরী করে, আবন্ধ করে। অন্য যোনিতে যাঁদের জন্ম হয়, তারা কর্মের অনুসারে ভোগ উপভোগ করে। অতএব দৃঢ় বৈরাগ্য রূপ শন্তদারা এই সংসার-বৃক্ষকে তুমি ছেদন কর এবং সেই পরমপদের অনুসন্ধান কর, যে মহার্ষিগণ তাঁকে লাভ করেছেন, তাঁদের পুনর্জন্ম হয় না।

কিৰণে জানা যাবে যে, সংসার-বৃক্ষ ছেদন হয়েছে? যোগেশ্বর বলছেন যে, যিনি মান ও মোহমুক্ত, যিনি সঙ্গাদোষ জয় করেছেন, যাঁর কামনা নিবৃত্ত হয়েছে এবং যিনি দ্঵ন্দ্ব থেকে মুক্ত, তিনি সেই পরমতত্ত্বলাভ করেন। সেই পরমপদকে সূর্য, চন্দ্ৰ বা অগ্নি কেউ প্ৰকাশিত করতে পারে না, সেই পদ স্বয়ং প্ৰকাশস্বরূপ। যাঁকে

লাভ করলে সংসারে আর ফিরে আসতে হয় না, সেটাই আমার পরমধাম, এই ধার্ম লাভ করার অধিকার সকলের, কারণ এই জীবাত্মা আমারই শুন্দি অংশ।

জীবাত্মা দেহত্যাগের সময় মন ও পাঁচটি জ্ঞানেন্দ্রিয়ের কার্যকলাপ সঙ্গে নিয়ে যায় অর্থাৎ নতুন দেহে প্রবেশ করে। সংক্ষর সান্ত্বিক হলে সান্ত্বিক স্তরে গিয়ে পৌঁছয়, রাজসিক হলে মধ্যম স্থানে এবং তামসিক হলে জগন্য যোনিতে জন্ম হয়। জীবাত্মা ইন্দ্রিয়সমূহের অধিষ্ঠাতা মনের সাহায্যে সকল বিষয়কে উপভোগ করে। একে দেখতে পাওয়া যায় না, জ্ঞান সেই দৃষ্টি যার মাধ্যমে একে দেখা সম্ভব। কোন বিষয় মুখস্থ করে নেওয়াটাই জ্ঞান নয়। যোগীগণ চিন্ত হন্দয়ে সংযম করে প্রযত্নপূর্বক তাঁকে দর্শন করেন, অতএব জ্ঞান হল সাধনগম্য। শাস্ত্রাধ্যয়ন দ্বারা তাঁর প্রতি অনুরূপ উৎপন্ন হয়। সংশয়যুক্ত, অকৃতাত্মা ব্যক্তিগণ যত্নশীল হলেও এঁকে দেখতে পায় না।

এখানে প্রাপ্তিস্থানের বর্ণনা করা হয়েছে। অতএব সেই অবস্থাতে বিভূতিসমূহের প্রবাহ স্বাভাবিক। সে সকলের উপর আলোকপাত করে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, সূর্য ও চন্দ্রে যে প্রকাশ আছে, সেই প্রকাশ আমার জানবে, অগ্নিতে যে তেজ আছে, সেই তেজও আমার। আমিই প্রচণ্ড অগ্নিরূপে চারবিধি দ্বারা পরিপক্ষ অগ্নকে পরিপাক করি। শ্রীকৃষ্ণের বাণীতে অগ্ন একমাত্র বন্ধা- ‘অগ্নং ব্রহ্মেতি ব্যজ্ঞানাত’ (তৈত্তিরীয় উপনিষদ, ২/১) যাকে লাভ করে এই আত্মা পূর্ণ তৃপ্ত হয়। বৈখরী থেকে পরাপর্যন্ত পূর্ণ পরিপক্ষ হয়ে অগ্ন পরিপাক হয়ে যায়, সেই পাত্রও বিলীন হয়। এই অগ্ন আমিই পরিপাক করি অর্থাৎ সদ্গুরুং রঘী না হলে, এই উপলব্ধি সম্ভব নয়।

এই বিষয়ের উপর জোর দিয়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ পুনরায় বললেন, সকল প্রাণীর অন্তর্দেশে অবস্থিত হয়ে আমিই সৃতি প্রদান করি। বিস্মৃত স্বরূপের সৃতি প্রদান করি। সৃতির সঙ্গে যে জ্ঞানলাভ হয় তা’ আমি। এই জ্ঞানলাভের পথে যে বাধা উপস্থিত হয়, সেই বাধা আমিই দূর করি। আমিই জ্ঞাতব্য এবং বিদিত হলে জ্ঞানের অন্তর্কর্ত্তা ও আমি। কে কাকে জানবার জন্য প্রযত্নশীল হবে? আমি সেই বেদবিঃ। অধ্যায়ের প্রারম্ভে বলেছিলেন, যিনি সংসার-বৃক্ষকে সম্পূর্ণরূপে জানেন, তিনিই বেদবিঃ। যিনি এই সংসার-বৃক্ষকে ছেদন করেন, তিনিই একে জানতে পারেন। এখানে বলছেন আমিই বেদবিঃ। সেই বেদবিঃগণের মধ্যে নিজের গণনাও করলেন অতএব শ্রীকৃষ্ণও এখানে বেদবিঃ পুরুষোত্তম তাঁকে লাভ করার অধিকার মানুষ মাত্রেই।

পরিশেষে বললেন যে, দুই প্রকারের পুরুষ এই পৃথিবীতে আছেন। সকল ভূতপ্রাণীর দেহ ক্ষর। মন যখন কৃটস্থ হয়, তখন এই পুরুষকে অক্ষর বলা হয়; অক্ষর হলেও এখনও দ্বন্দ্বাত্মক এবং এর থেকেও অতীত যাঁকে পরমাত্মা, পরমেশ্বর, অব্যক্ত ও অবিনাশী বলা হয়, তিনি বস্তুতঃ অন্য। এই অবস্থা ক্ষর-অক্ষর-এর উর্ধ্বে; একেই পরমস্থিতি বলা হয়। এরসঙ্গে তুলনা করে বললেন, আমিও ক্ষর-অক্ষর-এর উর্ধ্বে, আমি সেই, তাই লোকে আমাকে পুরুষোত্তম বলে। এইরূপ যাঁরা উত্তমপুরুষকে জানেন, সেই জ্ঞানী ভক্তগণ সদা আমার ভজনা করেন। তাদের জ্ঞানে পার্থক্য নেই। অর্জুন! এই অত্যন্ত গোপনীয় রহস্য সম্পন্নে আমি তোমাকে বললাম। ভগবৎপ্রাপ্ত মহাপুরুষগণ সকলের সম্মুখে এসমস্ত কথা বলেন না; কিন্তু অধিকারী ভক্তের কাছে কিছু গোপন করেন না। গোপন করলে ভক্তের কল্যাণ কি করে হবে?

বর্তমান অধ্যায়ে আত্মার তিনটি স্থিতির বর্ণনা ক্ষর-অক্ষর এবং অতি উত্তম পুরুষের রূপে স্পষ্ট করা হয়েছে, যেমন এর আগে কোন অধ্যায়ে বলা হয়নি, অতএব—

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিয়ৎসু ব্ৰহ্মবিদ্যায়ঃ যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণার্জুন সংবাদে ‘পুরুষোত্তমযোগো’ নাম পঞ্চদশোহথ্যায়ঃ ॥১৫॥

এই প্রকার শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারূপী উপনিষদ্ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ ও অর্জুনের সংবাদে ‘পুরুষোত্তম যোগ’ নামক পঞ্চদশ অধ্যায় পূর্ণ হল।

ইতি শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে  
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ ‘যথার্থগীতা’ ভাষ্যে ‘পুরুষোত্তমযোগো’ নাম  
পঞ্চদশোহথ্যায়ঃ ॥১৫॥

এই প্রকার শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দজীর শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত  
‘শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা’র ভাষ্য ‘যথার্থ গীতা’তে ‘পুরুষোত্তম যোগ’ নামক পঞ্চদশ অধ্যায়  
সমাপ্ত হল।

॥ হরিঃ ওঁ তৎসৎ ॥

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মনে নমঃ ।।

## ।। অথ যোড়শোহধ্যাযঃ ।।

যোগেশ্বর ভগবান শ্রীকৃষ্ণের প্রশ্ন প্রস্তুত করার নিজস্ব বিশিষ্ট শৈলী। প্রথমে তিনি প্রকরণের বিশেষত্বের উল্লেখ করেন, যার ফলে জিজ্ঞাসুগণ সে বিষয়ে জানার জন্য আকৃষ্ট হন, তার পর তিনি সেই প্রকরণ স্পষ্ট করেন। উদাহরণার্থ কর্মকে নিন। তিনি দ্বিতীয় অধ্যায়েই প্রেরণা দিয়েছেন— অর্জুন ! কর্ম কর। তৃতীয় অধ্যায়ে ইঙ্গিত করেছেন, নির্ধারিত কর্ম কর। নির্ধারিত কর্ম কি ? তখন বলেছেন যজ্ঞের প্রক্রিয়াই কর্ম। তারপর যজ্ঞের স্বরূপ কি তা না বলে যজ্ঞের উৎপত্তি হল কোথেকে ও যজ্ঞ থেকে আমরা কি ফললাভ করি ? আগে তা বললেন। চতুর্থ অধ্যায়ে তেরো-চৌদ্দটি বিধির মাধ্যমে যজ্ঞের স্বরূপ স্পষ্ট করেছেন, যজ্ঞকেই কর্ম বলেছেন। এখানে কর্ম কি তা স্পষ্ট হয়েছে, যার শুন্দ অর্থ—যোগ-চিন্তন, আরাধনা, যা' মন ও ইন্দ্রিয়সমূহের ক্রিয়াদ্বারা সম্পূর্ণ হয়।

এইরূপ তিনি নবম অধ্যায়ে দৈবী ও আসুরী প্রবৃত্তির উল্লেখ করেছেন। এদের বিশেষত্ব বলেছেন যে, অর্জুন ! যাদের স্বভাব আসুরী, তারা আমাকে তুচ্ছ ব্যক্তি বলে অবজ্ঞা করে। মনুষ্যদেহ আশ্রয়পূর্বক ব্যবহার করি কারণ মনুষ্য দেহেই আমি এই স্থিতিলাভ করেছি; কিন্তু আসুরী স্বভাব যাদের, সেই মূলগণ আমাকে ভজনা করে না, দৈবী সম্পদ্যুক্ত ভক্তগণ অনন্য চিন্তে আমাকে ভজনা করেন। এখনও পর্যন্ত এই দুটি প্রবৃত্তির স্বরূপ, এদের গঠন সম্বন্ধে বলা হয়নি। এখন বর্তমান অধ্যায়ে যোগেশ্বর এদের স্বরূপ স্পষ্ট করবেন, উভয়ের মধ্যে আগে দৈবী সম্পদের লক্ষণ সম্বন্ধে বলছেন—

শ্রীভগবানুবাচ

অভযঃ সত্ত্বসংশুদ্ধিজ্ঞানযোগব্যবস্থিতিঃ ।

দানং দমশ্চ যজ্ঞশ্চ স্বাধ্যায়স্তপ আর্জবম্ ॥১॥

ভয়শূন্য, অন্তঃকরণের শুদ্ধতা, তত্ত্বজ্ঞানের জন্য ধ্যানে আচলস্থিতি অথবা নিরস্তর একাগ্রতা, সৰ্বস্বের সমর্পণ, উত্তমরূপে ইন্দ্ৰিয়সমূহের দমন, যজ্ঞের আচরণ (যেৱেপ স্বয়ং শ্রীকৃষ্ণ চতুর্থ অধ্যায়ে বলেছেন—সংযমাপ্তিতে আহতি, ইন্দ্ৰিয়াপ্তিতে আহতি, প্রাণ-অপান-এ আহতি এবং শেষে জ্ঞানাপ্তিতে আহতি অর্থাৎ আৱাধনার প্রক্ৰিয়া, যা কেবল মন ও ইন্দ্ৰিয়সমূহের অন্তৰ্ক্ৰিয়াদ্বাৰা সম্পূৰ্ণ হয়। তিল, ঘব, বেদী ইত্যাদি সামগ্ৰী দ্বাৰা যে যজ্ঞসম্পূৰ্ণ হয়, সেই যজ্ঞের এই গীতোক্ত যজ্ঞের সঙ্গে কোন সম্পর্ক নেই। শ্রীকৃষ্ণ এইৱেপ কোন কৰ্মকাণ্ডকে যজ্ঞ বলে স্বীকার কৰেননি।), স্বাধ্যায় অর্থাৎ যে অধ্যয়ন স্ব-স্বৰূপের দিকে এগিয়ে যেতে সাহায্য কৰে, তপস্যা অর্থাৎ মন ও ইন্দ্ৰিয়সমূহকে ইষ্টের অনুৱাপ তৈৱী কৰা এবং ‘আৰ্জবন্ম’- দেহ, ইন্দ্ৰিয়সমূহ ও অন্তঃকরণের সৱলতা—

অহিংসা সত্যমক্রোধস্ত্যাগঃ শান্তিৱপেশুনম্।

দয়া ভূতেৰলোলুপ্তং মাৰ্দবং হীৱচাপলম্॥১২॥

অহিংসা অর্থাৎ আত্মার উদ্বার (আত্মাকে অধোগতিতে নিয়ে যাওয়াই হিংসা। শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—যদি আমি সাবধান হয়ে কৰ্ম না কৰি, তাহলে এই সকল প্ৰজাৰ হননকৰ্ত্তা এবং বৰ্ণসঞ্চৰের কৰ্ত্তা হব। আত্মার শুদ্ধবৰ্ণ হল পৱনাত্মা। আত্মা যখন প্ৰকৃতিৰ মধ্যে দিগ্ভ্রান্ত হয়, তখনই বৰ্ণসঞ্চৰ উৎপন্ন হয়, আত্মার হিংসা একেই বলা হয় এবং আত্মার উদ্বার কৰাকে অহিংসা বলা হয়।), সত্য (সত্যেৰ তাৎপৰ্য যথাৰ্থ ও প্ৰিয় বাক্য নয়। আপনি যদি বলেন এই বন্ধুটি আমাৰ, তাহলে কি আপনি সত্য বলছেন? এৱ থেকে বড় মিথ্যা আৱ কি হবে? দেহটাই যখন আপনাৰ নয়, নশ্বৰ, তখন এই দেহ আবৃত কৰাৰ বন্ধু আপনাৰ কি কৰে হতে পাৱে? বস্তুতঃ যোগেশ্বৰ স্বয়ং সত্যেৰ স্বৰূপ বলেছেন যে, অৰ্জুন! সত্য বস্তুৰ তিনকালে অভাৱ নেই। এই আত্মাই সত্য, পৱনসত্য—এই সত্যেৰ দিকে লক্ষ্য রাখা।), ক্ৰেত্বান্তা, সৰ্বস্বেৰ সমৰ্পণ, শুভাশুভ কৰ্মফলেৰ ত্যাগ, চিন্তাপঞ্চল্যেৰ অভাৱ, লক্ষ্যেৰ বিপৰীত নিন্দিত কাজ না কৰা, সৰ্বভূতে দয়া, ইন্দ্ৰিয়সমূহ বিষয়েৰ সঙ্গে সংযুক্ত হলেও বিষয়াসক্তেৰ অভাৱ, কোমলতা, লক্ষ্য থেকে বিমুখ হতে লজ্জা, ব্যৰ্থ চেষ্টার অভাৱ এবং—

তেজঃ ক্ষমা ধৃতিঃ শৌচমদোহো নাতিমানিতা।

ভবন্তি সম্পদং দৈৰীমভিজাতস্য ভাৱত।।১৩।।

তেজ (যা একমাত্র ঈশ্বরে আছে, তাঁর তেজে যিনি কার্য করেন। মহাআবুদ্দের দৃষ্টি-নিক্ষেপমাত্র অঙ্গুলিমালের বিচারে পরিবর্তন হয়েছিল। সেই তেজের জন্য এইরূপ সন্তুষ্ট হয়েছিল, যার দ্বারা কল্যাণ হয়, এই তেজ বুদ্ধের মধ্যে ছিল), ক্ষমা, ধৈর্য, শুদ্ধি, অবৈরভাব, পূজনীয় হবার ভাব যাঁর মধ্যে নেই- হে অর্জুন! দৈবী সম্পদ্ধ প্রাপ্ত পুরুষের মধ্যে এই লক্ষণ দেখা যায়। এইভাবে ছাবিশটি লক্ষণ বললেন, যা সাধনাতে পরিপক্ষ পুরুষের মধ্যেই থাকা সন্তুষ্ট এবং আংশিকরণপে আপনার মধ্যেও আছে এবং আসুরী প্রবৃত্তি যাদের মধ্যে বিশেষ রূপে সক্রিয়, এইরূপ মানুষের মধ্যেও এইসব গুণ আছে; কিন্তু প্রসুপ্ত অবস্থাতে, তবেই তো ঘোর পাপীও কল্যাণের অধিকারী। এখন আসুরী সম্পদের প্রমুখ লক্ষণ বলছেন—

দণ্ডো দর্পোহভিমানশ্চ ক্রোধঃ পারুষ্যমেব চ।

অজ্ঞানঃ চাভিজ্ঞাতস্য পার্থ সম্পদমাসুরীম্॥৪॥

হে পার্থ! দণ্ড, দর্প, অভিমান, ক্রোধ, কঠোরবাক্য ও অজ্ঞান—এগুলি আসুরী সম্পদ্ধ প্রাপ্ত পুরুষের লক্ষণ। এই দুই সম্পদের কাজ কি?—

দৈবী সম্পদ্ধিমোক্ষায় নিবন্ধায়াসুরী মতা।

মা শুচঃ সম্পদঃ দৈবীমভিজাতোহসি পাণ্ডব।।৫।।

এই দুই সম্পদের মধ্যে দৈবী সম্পদ্ধ ‘বিমোক্ষায়’—মুক্তির কারণ এবং আসুরী সম্পদ্ধ বন্ধনের কারণ বলা হয়েছে। হে অর্জুন! শোক করো না; কারণ তুমি দৈবী সম্পদ্ধ প্রাপ্ত পুরুষ মুক্তিলাভ করবে অথর্ত আমাকে লাভ করবে। সেই সম্পদ্ধ দুটি কোথায় থাকে?—

দ্বৌ ভূতসঙ্গৌ লোকেহস্ত্বন্দেব আসুর এব চ।

দৈবো বিস্তরশঃ প্রোক্ত আসুরঃ পার্থ মে শৃণু।।৬।।

হে অর্জুন! এই লোকে ভূতগণের স্বভাব দুই প্রকারের হয়— দেরতুল্য ও অসুরতুল্য। যখন দৈবী সম্পদ্ধ হৃদয়ে কাজ করে তখন এই মানুষই দেবতা এবং যখন আসুরী সম্পদের বাহ্যে ঘটে, তখন এই মানুষই অসুর। সৃষ্টিতে কেবল এই দুটি জাতিরই মানুষ বিদ্যমান। তা তাঁর জন্ম আরবদেশ অথবা অস্ট্রেলিয়া যেখানেই

হয়ে থাকুক; তিনি এই দুটির মধ্যেই কোন একটি সম্পদ্যুক্ত হবেন। এখন পর্যন্ত দেব-স্বভাব সম্বন্ধেই বিস্তারিত ভাবে বলা হয়েছে। এবার অসুর-স্বভাব সম্বন্ধে আমার কাছে শোন।

প্ৰত্তিং চ নিৰ্বত্তিং চ জনা ন বিদুৱাসুৱাঃ।

ন শৌচং নাপি চাচারো ন সত্যং তেষুবিদ্যতে॥৭॥

হে অর্জুন ! অসুর-স্বভাব বিশিষ্ট ব্যক্তিগণ ‘কার্যম् কর্মে’ প্ৰবৃত্ত এবং অকৰ্তব্য কাজ থেকে নিবৃত্ত হতে জানে না সেইজন্য তাদের মধ্যে শুন্দি থাকে না, আচরণ এবং সত্য থাকে না। ঐ ব্যক্তিগণের বিচারধারা কিৱলপ হয় ?—

অসত্যমপ্রতিষ্ঠং তে জগদাহৃনীশ্঵রম্।

অপরম্পরসম্ভৃতং কিমন্যৎকামাহৈতুকম্॥৮॥

আসুরী প্ৰকৃতিৰ ব্যক্তিগণ বলে, এই জগৎ আশ্রয়ৱহিত, মিথ্যা ও ঈশ্বৰ ব্যতীৱেকে স্তু-পুৱনৰে সংযোগেই উৎপন্ন হয়েছে। সেইজন্য ভোগ-উপভোগ কৰা। ভিন্ন আৱ কি আছে ?

এতাং দৃষ্টিমৰষ্টভ্য নষ্টাত্মানোহল্লবুদ্ধয়ঃ।

প্ৰভবস্ত্যগ্রকৰ্মণঃ ক্ষয়ায় জগতোহহিতাঃ॥৯॥

এই মিথ্যা দৃষ্টিকোণ আশ্রয় কৰে যাদেৱ স্বভাব নষ্ট হয়েছে, সেই অল্লবুদ্ধি, অনিষ্টকাৱী ও কুৰকৰ্ম্ম ব্যক্তিগণ জগতেৱ বিনাশেৱ জন্য জন্মগ্ৰহণ কৰে।

কামমাণ্ডিত্য দুষ্পূৰং দষ্টমানমদাণ্ডিতাঃ।

মোহাদ্গৃহীত্বাসদ্গ্রাহান্প্ৰবৰ্তন্তেহশুচ্ৰিতাঃ॥১০॥

দষ্ট, মান ও মদযুক্ত হয়ে, যে কামনা কখনও পূৰ্ণ হবে না তাৱ আশ্রয় নিয়ে, অজ্ঞানবশতঃ মিথ্যা সিদ্ধান্ত গ্ৰহণপূৰ্বক সেই অশুভ এবং অশুন্দৰত ব্যক্তিগণ সংসারে প্ৰবৃত্ত হয়। তাৱা ব্ৰতও কৰে; কিন্তু অশুন্দৰ।

চিন্তামপরিমেয়াং চ প্রলয়ান্তামুপাণ্ডিতাঃ।

কামোপভোগপৱৰমা এতাবদিতি নিশ্চিতাঃ॥১১॥

তারা মৃত্যুকালপর্যন্ত অনন্ত চিন্তার আশ্রয় গ্রহণ করে, বিষয়ভোগের জন্য তৎপর ‘আনন্দ এইটুকু’—এইরূপ চিন্তা করে। তারা এই রীতি অনুসরণ করে যে, যতটা হতে পারে ভোগ সংগ্রহ কর, এছাড়া কিছু নেই।

আশাগাশশ্টৈবেদ্বাঃ কামক্রোধপরায়ণাঃ।

ঈহস্তে কামভোগার্থমন্যায়েনার্থসঞ্চয়ান্॥১২॥

শত শত আশারূপ ফাঁস-এ আবদ্ধ (একটা ফাঁসেই মানুষের মৃত্যু হয়, এখানে শত শত ফাঁসদ্বারা) কাম ও ত্রেণ্ডের অধীন হয়ে তারা বিষয়ভোগের জন্য অন্যায়পূর্বক ধনাদি বহু পদাৰ্থ সংগ্রহের চেষ্টা করে। ধনের জন্য তারা দিবা-রাত্রি অসামাজিক কাজে প্রবৃত্ত থাকে আরও বলছেন—

ইদমন্য ময়া লঞ্চমিমং প্রাপ্নেয়ে মনোরথম्।

ইদমস্তীদমপি মে ভবিষ্যতি পুনর্ধনম্॥১৩॥

তারা চিন্তা করে যে আজ আমার এই লাভ হয়েছে, এই মনোরথ ভবিষ্যতে পূর্ণ হবে, আমার এত ধন আছে, এত ধন ভবিষ্যতে লাভ হবে।

অসৌ ময়া হতঃ শক্রহনিয়ে চাপরানপি।

ঈশ্বরোহহমহং ভোগী সিদ্ধোহহং বলবানসুখী॥১৪॥

এই শক্র আমি নাশ করেছি এবং অন্য শক্র সকলও নাশ করব। আমি ঈশ্বর ও ঐশ্বর্যভোগী। আমিই পুরুষার্থসম্পন্ন, বলবান ও সুখী।

আচ্যেহভিজনবানস্মি কোহন্যেহষ্টি সদশো ময়া।

যক্ষে দাস্যামি মোদিষ্য ইত্যজ্ঞানবিমোহিতাঃ॥১৫॥

আমি ধনী ও বিশাল পরিবারভূক্ত। আমার সমান আর কে আছে? আমি যজ্ঞ করব, দান করব, আনন্দ করব—এইরূপে অসুর স্বভাব ব্যক্তিগণ অঙ্গানমুঝ হয়। তাহলে যজ্ঞ, দান কি অঙ্গান? এই প্রসঙ্গে শ্লোক ১৭তে বলা হয়েছে। এর পরেও তারা স্থির হয় না, বরং বহু প্রাপ্তির মধ্যে থাকে। এই প্রসঙ্গে বলছেন—

অনেকচিত্তবিভাস্তা মোহজালসমাবৃতাঃ।

প্রসঙ্গাঃ কামভোগেয় পতন্তি নরকেহশুচৌ॥১৬॥

বহসংকল্পে বিক্ষিপ্ত চিন্ত, মোহজালে জড়িত ও বিষয়-ভোগে আসক্ত হয়ে  
সেই অসুর-স্বভাব ব্যক্তিগণ অপবিত্র নরকে পতিত হয়। পরে শ্রীকৃষ্ণ স্বয়ং বলবেন  
যে, নরক কাকে বলে?—

আত্মসন্তাবিতাঃ স্তন্মা ধনমানমদাহিতাঃ।

যজন্তে নামযজ্ঞেন্তে দণ্ডনাবিধিপূর্বকম্॥১৭॥

তারা আত্মশাধাবিশিষ্ট, ধন ও মানের মদযুক্ত হয়ে দণ্ডের সঙ্গে শাস্ত্রবিধি  
লঞ্জনপূর্বক নামমাত্র যজ্ঞের অনুষ্ঠান করে। যে যজ্ঞ শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন, সেই যজ্ঞই  
কি করে?

না, সেই বিধিত্যাগ করে, করে। কারণ বিধিসমক্ষে স্বয়ং যোগেশ্বর বলেছেন।

(অধ্যায় ৪/২৪-৩৩ এবং অধ্যায় ৬/১০-১৭)

অহঙ্কারং বলং দর্পং কামং ক্রোধং চ সংশ্রিতাঃ।

মামাত্মপরদেহেযু প্রদ্বিষ্টোহভ্যসূয়কাঃ॥১৮॥

তারা অন্যের নিন্দা করে এবং অহঙ্কার, বল, দর্প, কামনা ও ক্রোধ আশ্রয়পূর্বক  
স্বীয় দেহে ও অপর দেহে অবস্থিত আমাকে (অস্ত্রযামী পরমাত্মাকে) দ্বেষ করে।  
শাস্ত্রবিধিদ্বারা পরমাত্মাকে স্মরণ করা এক প্রকারের যজ্ঞ। শাস্ত্রবিধি ত্যাগ করে যারা  
নামমাত্র যজ্ঞের অনুষ্ঠান করে, যজ্ঞের নাম করে কোন না কোন অনুষ্ঠান করতেই  
থাকে, তারা স্বীয় দেহে ও অপর দেহে অবস্থিত আমাকে (পরমাত্মাকে) দ্বেষ করে।  
মানুষ দ্বেষ করেই আর রেহাইও পায়। এরাও কি নিস্তার পাবে? এই প্রসঙ্গে  
বলছেন—না,

তানহং দ্বিততঃ কুরান্সংসারেযু নরাধমান्।

ক্ষিপাম্যজন্মমশুভানাসুরীষ্঵ে যোনিষু॥১৯॥

আমাকে দ্বেষ করে যারা, সেই পাপীচারী, তুরকর্ম নরাধমগণকে আমি  
সংসারে আসুরী যোনিতে পুনঃপুনঃ নিক্ষেপ করি। যারা শাস্ত্রবিধি ত্যাগ করে যজ্ঞ  
করে, তারা পাপযোনি, তারাই মনুষ্য মধ্যে অধম, এদেরই তুরকর্ম বলা হয়েছে।  
অন্য কেউ অধম নয়। পূর্বে বলেছেন, এইরূপ অধমগণকে আমি নরকে নিক্ষেপ  
করি, তাকেই এখানে বললেন যে তাদের কে অজস্র আসুরী যোনিতে নিক্ষেপ করি।

একেই নরক বলা হয়। সাধারণ জেনের যাতনাই ভয়ঙ্কর হয়, এখানে বারংবার আসুরী যোনিতে নিষ্কিপ্তের ক্রম কত পীড়াদায়ক হবে। অতএব দৈবী সম্পদ্ভার্জন করার জন্য প্রযত্নশীল হওয়া উচিত।

আসুরীং যোনিমাপন্না মৃতা জন্মনি জন্মনি।

মামপ্রাপ্ত্যেব কৌন্তেয় ততো যান্ত্যধমাং গতিম্॥২০॥

কৌন্তেয়! মৃতগণ জন্মে জন্মে আসুরী যোনি প্রাপ্ত হয় এবং আমাকে লাভ করা দূরে থাক, পূর্বজন্মপেক্ষা আরও নীচযোনি লাভ করে, যাকে নরক বলা হয়। এখন দেখুন, নরকের উৎপত্তির কারণ—

ত্রিবিধং নরকস্যেদং দ্বারং নাশনমাত্মনঃ।

কামঃ ক্রোধস্তথা লোভস্তস্মাদেতত্ত্বযং ত্যজেৎ॥২১॥

কাম, ক্রোধ এবং লোভ—এই তিনটি নরকের দ্বারস্বরূপ। এরা আত্মার অধোগতিদায়ক। অতএব এই তিনটি ত্যাগ করা উচিত। সমস্ত আসুরী সম্পদ এই তিনটির অস্তর্ভুক্ত। এদের ত্যাগ করলে কি লাভ হয়?—

এতেবিমুক্তঃ কৌন্তেয় তমোদ্বারেন্তিভিন্নরঃ।

আচরত্যাত্মনঃ শ্রেয়স্তো যাতি পরাং গতিম্॥২২॥

কৌন্তেয়! এই তিনটি নরকদ্বার থেকে মুক্ত হলে মানুষ স্বীয় কল্যাণসাধনে সমর্থ হয় এবং সেই অনুষ্ঠানবশতঃ সে পরমগতি অর্থাৎ আমাকে লাভ করে। এই তিনটি বিকার ত্যাগ করার পরেই মানুষ নিয়ত কর্মের অনুষ্ঠান করে, যার পরিণাম পরমশ্রেয়ঃ।

যঃ শাস্ত্রবিধিমুংস্জ্য বর্ততে কামকারতঃ।

ন স সিদ্ধিমবাপ্নোতি ন সুখং ন পরাং গতিম্॥২৩॥

যিনি উপর্যুক্ত শাস্ত্রবিধি উল্লজ্ঞানপূর্বক (অন্য কোন শাস্ত্র নয়, ইতি গুহ্যতমং শাস্ত্রম्—(১৫/২০) গীতা স্বযং পূর্ণ শাস্ত্র, যা স্বযং শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন, সেই বিধি ত্যাগ করে) স্বেচ্ছাচারী হয়ে বিহিতের আচরণ করেন না অথচ নিষিদ্ধের আচরণ করেন, তিনি সিদ্ধিলাভের যোগ্য হন না, তিনি পরমগতি এবং সুখলাভ করতে পারেন না।

তস্মাচ্ছান্ত্রং প্রমাণং তে কার্যকার্যব্যবস্থিতো ।

জ্ঞানা শাস্ত্রবিধানোভ্যং কর্ম কর্তুমিহাহসি ॥২৪॥

অতএব অর্জন ! কর্তব্য ও অকর্তব্য নির্ধারণে যে—কি করা উচিত, কি করা উচিত নয়, শাস্ত্রই এ বিষয়ে তোমার জ্ঞাপক । অতএব শাস্ত্রবিধির স্বরূপ জেনে তোমার নিয়ত কর্ম করা উচিত ।

তৃতীয় অধ্যায়েও যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ ‘নিয়তং কুরু কর্ম ত্বং’— নিয়ত কর্মের উপর জোর দিয়েছেন ও বলেছেন যে, যজ্ঞের প্রক্রিয়াই সেই নিয়ত কর্ম এবং সেই যজ্ঞ আরাধনার বিধি-বিশেষ বর্ণনাকেই বলা হয়েছে, যা’ মন নিরন্তর করে শাশ্঵ত ব্রহ্মে স্থিতিলাভ করিয়ে দেয় । এখানে তিনি বলেছেন যে, কাম, ক্রোধ এবং লাভ এরাই নরকের তিনটি মুখ্য দ্বার । এই তিনটি ত্যাগ করার পরেই সেই কর্মের (নিয়ত কর্মের) আরম্ভ হয়, যা আমি বারংবার বলেছি, যে আচরণ পরমকল্যাণ ও পরমশ্রেয় প্রদান করে । সাংসারিক কাজে যে যত ব্যস্ত, কাম, ক্রোধ এবং লোভ তার মধ্যে সেই পরিমাণেই পাওয়া যায় । কাম, ক্রোধ ও লোভ ত্যাগ করার পরেই কর্মে প্রবেশ পাওয়া যায়, কর্মের আচরণ সম্ভব হয় । যারা সেই বিধি ত্যাগ করে স্বেচ্ছাচারী হয়ে আচরণ করে, তারা সুখ, সিদ্ধি অথবা পরমগতি কিছুই লাভ করতে পারে না । কর্তব্য ও অকর্তব্যের নির্ধারণের শাস্ত্রই একমাত্র প্রমাণ । অতএব শাস্ত্রবিধির অনুসারে তোমার কর্ম করা উচিত এবং সেই শাস্ত্র হল ‘গীতা’ ।

নিষ্কর্ষ –

বর্তমান অধ্যায়ের শুরুতে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ দৈবী সম্পদের বিস্তৃতভাবে বর্ণনা করেছেন । প্রস্তুত অধ্যায়ে ধ্যানে স্থিতি, সর্বস্বের সমর্পণ, অস্তঃকরণের শুদ্ধি, ইন্দ্রিয়গুলির দমন, মনের শমন, যে অধ্যয়ন স্বরূপের স্মরণ করিয়ে দেয় সেই অধ্যয়ন, যজ্ঞকর্মে যত্নশীল, মন ও ইন্দ্রিয়সমূহকে সংযুক্ত করা, ক্রোধহীনতা, চিত্তে শাস্ত্রভাব ইত্যাদি ছাবিশাটি সদ্গুণ সম্বন্ধে বললেন, যে সদ্গুণগুলি যোগসাধনাতে প্রযৃত্ত ইষ্টের নিকটবর্তী যে কোন সাধকের মধ্যেই থাকা সম্ভব । আংশিকরণে সকলের মধ্যেই আছে ।

তদন্তর তিনি আসুরী সম্পদের অস্তর্গত যে চার-ছয়টি প্রমুখ বিকার আছে, সে সকলের নাম নিয়েছেন; যেমন—অভিমান, দস্ত, কঠোরতা, অজ্ঞান ইত্যাদি ও

শেষে বললেন যে, অর্জুন ! দৈবী সম্পদ ‘বিমোক্ষায়’ – পূর্ণ নিবৃত্তিতে সাহায্য করে, পরমপদের প্রাপ্তির জন্য এর প্রয়োজন হয় এবং আসুরী সম্পদ বন্ধনে আবদ্ধ করে ও অধোগতিতেনিয়ে যায়। অর্জুন ! তুমি শোক করো না; কারণ তুমি দৈবী সম্পদ সম্পন্ন।

এই দুটি সম্পদের উৎপত্তি হয় কোথায় ? তিনি বলেছেন, এই জগতে মানুসের স্বভাব দুই প্রকারের—দেবতুল্য ও অসুরতুল্য। যখন দৈবী সম্পদের বাহ্য ঘটে, তখন মানুষ দেবতুল্য হয় এবং যখন আসুর সম্পদের বাহ্য ঘটে, তখন মানুষই অসুরতুল্য হয়। এই সৃষ্টিতে মানুষের কেবল দুটি জাতি; তাতে কোথাও জন্মগ্রহণ করুক না কেন, তাতে কিছু আসে যায় না।

এর পর তিনি আসুর স্বভাব বিশিষ্ট মানুষের লক্ষণ সম্বন্ধে বিস্তৃতভাবে বললেন। আসুর স্বভাব ব্যক্তিগণ কর্তব্য কর্মে প্রবৃত্ত এবং অকর্তব্য কার্য থেকে নিবৃত্ত হতে জানে না। কর্মে প্রবৃত্ত হয়নি সেইজন্য তাদের শৌচ নেই, আচরণ নেই এবং সত্যও নেই। তারা বলে এই জগৎ আশ্রয় হাতিত, ঈশ্বর ব্যতিরেকে স্তু-পুরুষের সংযোগেই উৎপন্ন হয়েছে। অতএব ভোগ হল জীবনের পরম পুরুষার্থ। এর থেকে শ্রেষ্ঠ আর কিছু নেই। এই ধরণের চিন্তনধারা কৃষকালেও ছিল। সর্বদা ছিল। কেবল চার্বাক বলেছেন, এমন কথা নয়। যতক্ষণ মানুষের মনে দৈবী-আসুরী প্রভুত্বের ওঠা-নামা চলবে, ততক্ষণ থাকবে। শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন, সেই মন্দবুদ্ধি কুরকর্মা ব্যক্তিগণ সকলের অহিত (কল্যাণনাশ) করার জন্য জগতে উৎপন্ন হয়। তারা বলে থাকে— এই শক্রকে আমি নাশ করেছি, পরে অমুক শক্রের নাশ করব ইত্যাদি। এইরূপ অর্জুন ! কাম, ক্রেত্ব আশ্রয় করে সেই ব্যক্তিগণ শক্রনাশ করে না বরং স্বীয় দেহে ও অপর দেহে অবস্থিত আমাকে (পরমাত্মাকে) দেষ করে। তবে কি অর্জুন প্রতিজ্ঞা করে জয়দ্রথাদিকে বধ করেছিলেন ? যদি বধ করেছিলেন, তাহলে আসুর স্বভাব বিশিষ্ট তিনি, পরমাত্মাকে দেষ করেন; কিন্তু শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনকে স্পষ্ট বলেছিলেন যে তুমি দৈবী সম্পদ সম্পন্ন, শোক করো না। এখানেও একথা স্পষ্ট হল যে, সকলের হাদয়ে ঈশ্বরের নিবাস। স্মরণ রাখা উচিত যে, একজন তোমাকে সবসময় দেখছেন। অতএব সদা শাস্ত্রনির্দিষ্ট ক্রিয়ার আচরণ করা উচিত অন্যথা দণ্ড প্রস্তুত।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ পুনরায় বললেন যে, আসুর শ্বভাব বিশিষ্ট কুর ব্যক্তিগণকে আমি পুনঃপুনঃ নরকে নিক্ষেপ করি। নরকের স্বরূপ কি ? বললেন, বারংবার

নীচ-অধম যোনিতে নিষ্কিপ্ত হওয়া একে অন্যের পর্যায়। এই হল নরকের স্বরূপ। কাম, ক্রোধ এবং লোভ এই তিনটি নরকের দ্বারস্বরূপ। সমস্ত আসুর সম্পদ এই তিনটির অস্তর্ভুত। এই তিনটি ত্যাগের পরেই সেই কর্ম আরম্ভ হয়, যা' আমি বার বার বলেছি। অতএব কাম, ক্রোধ ও লোভ ত্যাগ করার পরেই কর্ম শুরু হয়।

সাংসারিক কার্যে, মর্যাদা অনুসারে সামাজিক ব্যবস্থা নির্বাহে যিনি যত ব্যস্ত, কাম-ক্রোধ ও লোভ তাঁদের মধ্যে সেই পরিমাণেই পাওয়া যায়। ব্যস্ততাঃ এই তিনটি ত্যাগ করার পরেই কর্মে প্রবেশ লাভ হয়, যা' পরম-এ স্থিতি প্রদান করে। সেইজন্য কি করা উচিত, কি করা উচিত নয় এই কর্তব্য, অকর্তব্যের নির্ধারণে শাস্ত্রই প্রমাণ। কোন শাস্ত্র ? এই গীতাশাস্ত্র; 'কিমন্ত্যে শাস্ত্রবিস্তরেঃ' সেইজন্য এই শাস্ত্রদ্বারা নির্ধারিত কর্ম-বিশেষ (যজ্ঞার্থ কর্ম) তুমি কর।

বর্তমান অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ দৈবী ও আসুর দুটি সম্পদেরই বিস্তৃতভাবে বর্ণনা করেছেন। তাদের স্থান মানব-হৃদয় বললেন। তাদের ফল সম্পন্নে বললেন। অতএব-

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্ৰহ্মবিদ্যায়াঃ যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণার্জুন সংবাদে 'দৈবাসুরসম্পদবিভাগযোগো' নাম ঘোড়শোহথ্যায়ঃ।

এই প্রকার শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারপী উপনিষদ্ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ ও অর্জুনের সংবাদে 'দৈবাসুর সম্পদ বিভাগ যোগ' নামক ঘোড়শ অধ্যায় পূর্ণ হল।

ইতি শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে  
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়াঃ 'যথার্থগীতা' ভাষ্যে 'দৈবাসুরসম্পদবিভাগযোগো' নাম  
ঘোড়শোহথ্যায়ঃ।।১৬।।

এই প্রকার শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দজীর শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত  
'শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা'র ভাষ্য 'যথার্থ গীতা'তে 'দৈবাসুর সম্পদ বিভাগ যোগ' নামক  
যষ্টদশ অধ্যায় সমাপ্ত হল।

।। হরিঃ ওঁ তৎসৎ।।

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মনে নমঃ ।।

## ।। অথ সপ্তদশোহধ্যায়ঃ ।।

বোড়শ অধ্যায়ের শেষে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ স্পষ্ট বলেছিলেন যে, কাম, ক্রেত্ব  
ও লোভ ত্যাগ করলেই কর্ম শুরু হয়, যা আমি বারংবার বলেছি। নিয়ত কর্মের  
আচরণ না করলে সুখ, সিদ্ধি বা পরমগতি কিছুই লাভ হয় না। সেইজন্য এখন  
তোমার জন্য কর্তব্য ও অকর্তব্যের নির্ধারণের যে, কি করা উচিত, কি নয়?— এই  
সম্বন্ধে শাস্ত্রই প্রমাণ। অন্য কোন শাস্ত্র নয় বরং “ইতি গুহ্যতরং শাস্ত্রমিদং”  
(১৫/২০), শাস্ত্র স্বয়ং গীতা। অন্য শাস্ত্রও আছে; কিন্তু এখানে এই শাস্ত্রেরই অধ্যয়ন  
করুন, অন্য শাস্ত্র খুঁজবার দরকার নেই। অন্য কোথাও এই ক্রমবদ্ধতা পাওয়া যাবে  
না, সেইজন্য ভাস্ত হতে পারেন।

ঘএই প্রসঙ্গে অর্জুন জিজ্ঞাসা করলেন যে, ভগবন्! যে ব্যক্তিগণ শাস্ত্রবিধি  
পরিত্যাগ করে পূর্ণ শ্রদ্ধার সঙ্গে যুক্ত হয়ে ‘যজন্তে’—যজন অর্থাৎ যজ্ঞ করেন, তাঁদের  
কিরূপ গতি হয়? তাঁদের সেই নিষ্ঠা সাত্ত্বিকী, রাজসিক অথবা তামসিক? কারণ  
অর্জুন আগে শুনেছিলেন যে, সাত্ত্বিকী, রাজসিক অথবা তামসিক হোক, যতক্ষণ  
গুণ বিদ্যমান, ততক্ষণ কোন না কোন যোনিতে জন্ম গ্রহণ করতেই হয়। সেইজন্য  
প্রস্তুত অধ্যায়ের শুরুতেই তিনি জিজ্ঞাসা করলেন—

### অর্জুন উবাচ

যে শাস্ত্রবিধিমুংস্য যজন্তে শ্রদ্ধযাপ্তিভাঃ।

তেষাং নিষ্ঠা তু কা কৃষ্ণ সত্ত্বমাহো রজস্তমঃ ॥১॥

হে কৃষ্ণ! যাঁরা শাস্ত্রবিধি পরিত্যাগ করে শ্রদ্ধাপূর্বক পূজা করেন, তাঁদের  
গতি কি হয়? তাঁদের সেই শ্রদ্ধা সাত্ত্বিকী, রাজসিক অথবা তামসিক? দেবতা, যক্ষ,  
ভূত সকলেই যজনের অর্থাৎ যজ্ঞের অন্তর্ভুত।

### শ্রীভগবানুবাচ

ত্রিবিধা ভবতি শ্রদ্ধা দেহিনাঃ সা স্বভাবজা।

সাত্ত্বিকী রাজসী চৈব তামসী চেতি তাঃ শৃণু ॥২॥

দ্বিতীয় অধ্যায়ে যোগেশ্বর বলেছিলেন যে, অর্জুন ! এই যোগসাধনাতে নির্ধারিত ক্রিয়া একটাই । অবিবেকীগণের বুদ্ধি অনন্তশাখাযুক্ত হয় সেইজন্য তারা অনন্ত ক্রিয়ার বিস্তার করে নেয় । বহিঃ শোভাময় বাণীতে তা ব্যক্তও করে । যাদের চিন্ত সেই সকল বাক্যে বিমুক্ত, অর্জুন ! তাদের বুদ্ধিনাশ হয় না । কিছু লাভ করতে পারে না । তারই পুনরাবৃত্তি এখানেও হয়েছে যে, “শান্ত্বিষ্ঠিমুৎস্জ্য”—যারা শান্ত্বিষ্ঠি ত্যাগ করে ভজনা করে, তাদের শ্রদ্ধা তিনি প্রকারের ।

এই প্রসঙ্গে শ্রীকৃষ্ণ বলছেন, মানুষের স্বভাবজাত শ্রদ্ধাও তিনি প্রকার সাত্ত্বিকী, রাজসিক ও তামসিক, এই বিষয়ে তুমি আমার কাছে শোন । মানুষের হাদয়ে এই শ্রদ্ধা নিরাপত্তি বিদ্যমান—

সত্ত্বানুরূপা সর্বস্য শ্রদ্ধা ভবতি ভারত ।

শ্রদ্ধাময়োহয়ং পুরুষো যো যচ্ছুদ্ধঃ স এব সঃ ॥৩॥

হে ভারত ! সকল মানুষের শ্রদ্ধা তাদের চিন্তবৃত্তির অনুরূপ হয় । মানুষ শ্রদ্ধালু, সেইজন্য যিনি যেরূপ শ্রদ্ধাযুক্ত, তিনি সেইরূপই হন । প্রায়ই লোকে জিজ্ঞাসা করেন—আমি কে ? কেউ বলে, আমি আমা । কিন্তু না, এখানে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন, যেরূপ শ্রদ্ধা, যেরূপ বৃত্তি, মানুষ সেইরূপই হয় ।

গীতা হল যোগদর্শন । মহর্ষি পতঞ্জলিও যোগী ছিলেন । তাঁর ‘যোগদর্শন’ গ্রন্থটি এক যোগ-বিষয়ক গ্রন্থ । যোগ কি ? তিনি এ সম্বন্ধে বলেছেন, ‘যোগশিত্তব্যত্বাত্ত্বি-নিরোধঃ’(১/২)—চিন্তবৃত্তিসমূহকে সর্বপ্রকারে নিরুন্ধ করাকেই যোগ বলে । কেউ পরিশ্রম করে রোধ করে নিলে, তাতে লাভ কি ? ‘তদ দ্রষ্টুঃ স্বরূপেহবস্থানম্’(১/৩)—সেই সময় এই দ্রষ্টা জীবাত্মা নিজের শাশ্঵ত স্বরূপে স্থিত হন । স্থিত হওয়ার পূর্বে তিনি কি মলিন ছিলেন ? পতঞ্জলি বলেছেন— ‘বৃত্তিসারংপ্যমিতরত্বঃ’(১/৪) । অন্য সময় যেরূপ বৃত্তির রূপ হয়, সেইরূপই সেই দ্রষ্টা হন । এখানে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন— মানুষ শ্রদ্ধাবান्, শ্রদ্ধায় ওত-প্রোত । এক কথায় শ্রদ্ধা জ্ঞাপন মানুষের প্রকৃতিজাত যিনি যেরূপ শ্রদ্ধাযুক্ত, তিনি সেইরূপই হন । যেরূপ বৃত্তি, মানুষ সেইরূপই হয় । এখন শ্রদ্ধার তিনটি ভেদ বলছেন—

যজন্তে সাত্ত্বিকা দেবান্যক্ষরক্ষাংসি রাজসাঃ ।

প্রেতান্ভূতগণাংশ্চান্যে যজন্তে তামসা জনাঃ ॥৪॥

তাঁদের মধ্যে সান্ত্বিক ব্যক্তিগণ দেবতাগণের পূজা করেন, রাজসিক ব্যক্তিগণ যক্ষ ও রাক্ষসগণের পূজা করেন এবং তামসিক ব্যক্তিগণ ভূত ও প্রেতাদির পূজা করেন। তাঁরা পূজাদিতে যথেষ্ট পরিশ্রমও করেন।

অশান্ত্বিহিতং ঘোরং তপ্যন্তে যে তপো জনাঃ।

দন্তহঙ্কারসংযুক্তাঃ কামরাগবলাঞ্চিতাঃ ॥৫॥

সেই ব্যক্তিগণ শান্ত্বিকদ্বা ঘোর কল্পিত (কল্পিত ত্রিয়ার রচনা করে) তপস্যার অনুষ্ঠান করে, দন্ত ও অহঙ্কারযুক্ত, কামনা-আসন্তি-বলাঞ্চিত হয়ে—

কর্ণযন্তঃ শরীরস্থং ভূতগ্রামমচেতসঃ।

মাং চৈবান্তশ্রীরস্থং তাঞ্চিদ্যসুরনিশ্চয়ান ॥৬॥

তারা দেহরন্পে স্থিত ভূতসমুদায়কে এবং অস্তঃকরণস্থিত আমাকে (অস্ত্যামীকে) কৃশ করে অর্থাৎ দুর্বল করে। আঘা প্রকৃতিতে আকৃষ্ট হয়ে বিকার সমুহদ্বারা দুর্বল ও যজ্ঞ-সাধনা দ্বারা সবল হয়। সেই অবিবেকীগণ (অজ্ঞানীগণ) কে আসুরিক বুদ্ধিবিশিষ্ট বলে জানবে অর্থাৎ তারা সকলেই অসুর। প্রশ়াটি এখানেই সম্পূর্ণ হল।

শান্ত্বিধি ত্যাগ করে সান্ত্বিক ব্যক্তিগণ দেবতাগণের পূজা, রাজসিক ব্যক্তিগণ যক্ষ ও রাক্ষসগণের পূজা করেন এবং তামসিক ব্যক্তিগণ ভূত-প্রেতাদির পূজা করেন। কেবল পূজাই করেন না, ঘোর তপস্যার অনুষ্ঠান করেন; কিন্তু অর্জুন! দেহরন্পে স্থিত ভূতগণকে ও অস্ত্যামীরন্পে অবস্থিত আমাকে (পরমাত্মাকে) দুর্বল করেন, আমার থেকে দূরে সরে যান, ভজনা করেন না। তাদের তুমি অসুর বলে জানবে অর্থাৎ দেবতাগণের পূজকগণও অসুর হয়। এর থেকে বেশী আর কেউ কি বলবে? অতএব এরা সকলেই যাঁর অংশমাত্র, সেই মূল এক পরমাত্মার ভজন করুন। এই প্রসঙ্গের উপর পরম যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বারবার জোর দিয়েছেন।

আহারস্ত্বপি সর্বস্য ত্রিবিধো ভবতি প্রিযঃ।

যজ্ঞস্তপস্তথা দানং তেষাং ভেদমিমং শৃণ ॥৭॥

অর্জুন! যেরূপ শ্রান্তি তিনি প্রকার হয়, সেইরূপ পূর্বোক্ত তিনি প্রকার লোকের আহারও সভ্রাদি গুণভেদে তিনি প্রকার প্রিয় হয় এবং সেইরূপ যজ্ঞ, দান ও তপস্যা তিনি প্রকার হয়। এদের প্রভেদ তুমি শ্রবণ কর। প্রথমে প্রস্তুত আহার—

আয়ুসত্ত্ববলারোগ্যসুখপ্রীতিবিবর্ধনাঃ।

রস্যাঃ স্নিঞ্চা স্ত্রী হাদ্যা আহারাঃ সাত্ত্বিকপ্রিয়াঃ। ১৮ ॥

যে সকল আহার আয়ু, বুদ্ধি, বল, আরোগ্য, সুখ ও প্রীতিবুদ্ধি করে এবং সরস, স্নিঞ্চ, পুষ্টিকর এবং মনোরম সেইগুলি সাত্ত্বিক ব্যক্তিগণের প্রিয় হয়।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে মনোরম, বল, আরোগ্য, বুদ্ধি এবং আয়ুবদ্ধক আহার সাত্ত্বিক। সাত্ত্বিক আহার সাত্ত্বিক ব্যক্তিগণের প্রিয় হয়। এর থেকে স্পষ্ট হয় যে কোন খাদ্য পদার্থই সাত্ত্বিক, রাজসিক অথবা তামসিক নয়। গ্রহণ কিভাবে করা হয় সেই অনুসারে সাত্ত্বিক, রাজসিক অথবা তামসিক হয়। দুধ সাত্ত্বিক নয়, পেঁয়াজ রাজসিক নয় এবং রসুনও তামসিক নয়।

যতদ্বৰ বল, বুদ্ধি, আরোগ্য এবং মনোরম খাদ্যের প্রক্ষ, তা গোটা বিশ্বে মানুষের নিজ নিজ প্রকৃতি, বাতাবরণ ও পরিস্থিতির অনুকূল বিভিন্ন খাদ্য সামগ্ৰী প্রিয় হয়। যেমন-বাঙ্গালী ও মাদ্রাজের লোকেদের ভাত প্রিয় এবং পাঞ্জাবীরা রংটি পছন্দ করে। একদিকে আরববাসীরা দুশ্বা, চীনারা ব্যাং, মেরু-অঞ্চলে মাংস ছাড়া জীবন চলে না। রংশ ও মঙ্গোলিয়ার আদিবাসী খাদ্যে ঘোড়ার প্রয়োগ করে, ইউরোপবাসী গরু ও শুকর দু-ই খায়, তবুও বিদ্যা, বুদ্ধি-বিকাশ এবং উন্নতিতে আমেরিকা ও ইউরোপবাসী প্রথম শ্রেণীর বলে গন্য হচ্ছে।

গীতাশাস্ত্রের অনুসারে সরস, স্নিঞ্চ ও পুষ্টিকর ভোজ্য পদার্থ সাত্ত্বিক। দীর্ঘ আয়ু, অনুকূল, বল-বুদ্ধিবদ্ধক, আরোগ্যবদ্ধক পদার্থ সাত্ত্বিক। যে ভোজ্য পদার্থে চিত্ত তৃপ্ত হয় সেই খাদ্যকে সাত্ত্বিক বলা হয়। অতএব কোন খাদ্য পদার্থ কম-বেশী করার প্রয়োজন নেই। পরিস্থিতি, পরিবেশ এবং দেশকালের অনুসারে যে খাদ্য বস্তু প্রিয় এবং জীবনীশক্তি প্রদান করে, সেই খাদ্যবস্তুই সাত্ত্বিক। কোন খাদ্য পদার্থ সাত্ত্বিক, রাজসিক অথবা তামসিক নয়, গ্রহণ কিভাবে করা হয় সেই অনুসারে সাত্ত্বিক, রাজসিক অথবা তামসিক হয়।

এই অনুকূলনের জন্য যাঁরা ঘর-পরিবার ত্যাগ করে কেবল ঈশ্বরের আরাধনাতে লিপ্ত, সম্যাস আশ্রমে আছেন, তাঁদের জন্য মাংস-মদিরা ত্যাজ্য; কারণ অনুভবে দেখা গেছে যে, এই সকল পদার্থ আধ্যাত্মিক মার্গের বিপরীত মনোভাব উৎপন্ন করতে সাহায্য করে, অতএব এই সমস্ত ব্যবহার করলে সাধন-পথ থেকে অষ্ট হ্বার সন্তাননা বেশী থাকে। যাঁরা নির্জনে বাস করেন বৈরাগ্যযুক্ত, তাঁদের জন্য

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ ষষ্ঠি অধ্যায়ে এক খাদ্য তালিকা প্রস্তুত করেছেন যে, ‘যুত্তাহার বিহারস্য’ এটি মনে রেখে আচরণ করা উচিত। খাদ্য গ্রহণ ততটাই করা উচিত, যতটা (যা) আরাধনাতে সহায়ক।

কটুম্ললবণাত্যুষতৌক্ষুরক্ষবিদাহিনঃ ।

আহারা রাজসস্যেষ্টা দুখশোকাময়প্রদাঃ ॥৯ ॥

তিক্ত, অল্প, অতি লবণাত্ত, অতি উষঃ, তাক্ষু, শুক্ষ, প্রদাহকর এবং দুঃখ, চিন্তা ও রোগ সৃষ্টি করে যে সকল আহার রাজসিকগণের প্রিয় হয়।

যাত্যামৎ গতরসং পৃতি পযুষিতং চ যৎ ।

উচ্ছিষ্টমপি চামেধ্যং ভোজনং তামসশ্রিয়ম্ ॥১০ ॥

যে আহার ঘটা পূর্বে পাক করা হয়েছে, ‘গতরসং’—রসহীন, দুর্গৰ্ভময়, বাসি, উচ্ছিষ্ট (ঁঁটো) এবং অপবিত্র, সেই আহার তামসিক ব্যক্তিগণের প্রিয় হয়। প্রশ্নাটি এখানেই সম্পূর্ণ হল। এখন প্রস্তুত ‘যজ্ঞ’—

অফলাকাঙ্ক্ষভির্যজ্ঞে বিধিদৃষ্টো য ইজ্যতে ।

যষ্টব্যমেবেতি মনঃ সমাধায় স সাত্ত্বিকঃ ॥১১ ॥

যে যজ্ঞ ‘বিধিদৃষ্ট’—শাস্ত্রবিধি দ্বারা নির্ধারিত করা হয়েছে। (যেমন তৃতীয় অধ্যায়ে যজ্ঞের নাম মাত্র নির্যেছেন, চতুর্থ অধ্যায়ে যজ্ঞের স্বরূপ বলেছেন যে, বহুযোগী প্রাণকে অপানে, অপানকে প্রাণে আহতি দেন। প্রাণ-অপানের গতি নিরংকু করে প্রাণের গতি স্থির করেন, সংযমান্তিতে আহতি দেন। এইভাবে যজ্ঞের চৌদ্দটি সোপান সম্বন্ধে বলেছেন, যেগুলি ব্রহ্মকে লাভ করার একটাই ক্রিয়ার উচ্চ-নীচ অবস্থা-বিশেষ। সংক্ষেপে যজ্ঞ চিন্তন বিশেষের প্রক্রিয়ার বর্ণনা, যার পরিণাম সনাতন ব্রহ্মে স্থিতিলাভ হয়। এই শাস্ত্রে যার বিধান দেওয়া হয়েছে।) সেই শাস্ত্র-বিধানের উপর পুনরায় জোর দিলেন যে, অর্জুন! শাস্ত্রবিধি দ্বারা নির্ধারিত, যার আচরণ কর্তব্য এবং যা মনকে নিরংকু করে, যার আচরণ ফলাকাঙ্ক্ষাশূণ্য পুরুষগণ করেন, সেই যজ্ঞ সাত্ত্বিক।

অভিসন্ধায় তু ফলং দস্তার্থমপি চৈব যৎ ।

ইজ্যতে ভরতশ্রেষ্ঠ তৎ যজ্ঞং বিদ্বি রাজসম্ ॥১২ ॥

হে অর্জুন ! যে যজ্ঞ কেবল দণ্ডপ্রকাশের জন্যই অথবা ফলকামনা করে অনুষ্ঠিত হয়, তাকে রাজসিক যজ্ঞ বলে জানবে। রাজসকর্তা যজ্ঞের বিধি সম্বন্ধে অবগত; কিন্তু দণ্ডপ্রকাশ অথবা ফলকামনা করে অনুষ্ঠিত হয় যে, অমুক বস্তুলাভ হবে এবং লোকে বলবে যে যজ্ঞ করে, প্রশংসা করবে, এইরূপ যজ্ঞকর্তা রাজসিক হয়। এখন তামসিক যজ্ঞের স্বরূপ বলেছেন—

বিধিহীনমস্তোনং মন্ত্রহীনমদক্ষিণম्।

শ্রদ্ধাবিরহিতং যজ্ঞং তামসং পরিচক্ষতে ॥১৩॥

যে যজ্ঞ শাস্ত্রবিধিবর্জিত, যা অন্নের (পরমাত্মা) সৃষ্টি করতে আসমর্থ, মনের অন্তরালে নিরংদ্বন্দ্ব করার ক্ষমতাশূণ্য, দক্ষিণাবিহীন অর্থাৎ সর্বস্বের সমর্পণরহিত এবং শ্রদ্ধারহিত, এইরূপ যজ্ঞকে তামসিক যজ্ঞ বলা হয়। এইরূপ ব্যক্তিগণ বাস্তবিক যজ্ঞ সম্বন্ধে অনভিজ্ঞ। এখন প্রস্তুত তপস্যা—

দেবদ্বিজগুরুপ্রাঙ্গণজনং শৌচমার্জবম্।

ব্রহ্মচর্যমহিংসা চ শারীরং তপ উচ্যতে ॥১৪॥

পরমদেব পরমাত্মা, দৈতভাব জয়কর্তা দ্বিজ, সদ্গুরু এবং জ্ঞানীগণের পুজা, পবিত্রতা, সরলতা, ব্রহ্মচর্য এবং অহিংসা—এইগুলিকে কায়িক তপস্যা বলে। দেহ সর্বদা বাসনাভিমুখে ধাবিত, একে অন্তঃকরণের উপর্যুক্ত বৃত্তির অনুরূপ গড়ে তোলাই কায়িক তপস্যা।

অনুদ্বেগকরং বাক্যং সত্যং প্রিয়হিতং চ যৎ।

স্বাধ্যায়াভ্যসনং চৈব বাঞ্ছযং তপ উচ্যতে ॥১৫॥

অনুদ্বেগকর, প্রিয়, হিতকর এবং সত্যবাচন ও পরমাত্মায় স্থিতি প্রদান করে যে শাস্ত্রগুলি, সেই শাস্ত্রের চিত্তনের, নামজপকে বাচিক তপস্যা বলে। বাণী বিষয়োন্মুখ বিচারগুলিকেও ব্যক্ত করে থাকে। একে সেদিক থেকে সংযম করে পরমসত্য পরমাত্মার চিত্তনে নিযুক্ত করাকে বাচিক তপস্যা বলে। এখন মানসিক তপস্যা দেখুন—

মনঃপ্রসাদঃ সৌম্যত্বং মৌনমাত্মবিনিগ্রহঃ।

ভাবসংশুদ্ধিরিত্যেতত্পো মানসমুচ্যতে ॥১৬॥

মনের প্রসন্নতা, সৌম্যভাব, মৌন অর্থাৎ ইষ্টের অতিরিক্ত অন্য বিষয়ের স্মরণও যেন না আসে, মনের নিরোধ, অন্তর্করণের পবিত্রতা—এই সকলকে মানসিক তপস্যা বলা হয়। উপর্যুক্ত তিনটি (কায়িক, বাচিক ও মানসিক) যে তপস্যা করেন, তাকে সান্ত্বিক তপস্যা বলা হয়।

শ্রদ্ধয়া পরয়া তপ্তং তপস্তত্ত্বিত্বিধং নরৈঃ।

অফলাকাঙ্গিভিযুক্তেঃ সান্ত্বিকং পরিচক্ষতে।।১৭।।

ফলাকাঙ্গাবিহীন অর্থাৎ নিঙ্কাম কর্মে প্রবৃত্ত ব্যক্তিগণ পরমশ্রদ্ধাসহকারে পূর্বোক্ত কায়িক, বাচিক ও মানসিক যে তপস্যা করেন, তাকে সান্ত্বিক তপস্যা বলে। এখন প্রস্তুত রাজসিক তপস্যা—

সৎকারমানপূজার্থং তপো দস্তেন চৈব যৎ।

ক্রিয়তে তদিতি প্রোক্তং রাজসং চলমঞ্চব্রম।।১৮।।

সৎকার, সম্মান ও পূজা পাবার আশায় অথবা দস্তপূর্বক যে তপস্যা করা হয়, সেই অনিশ্চিত এবং ক্ষণিক ফলবিশিষ্ট তপস্যাকে রাজসিক তপস্যা বলে।

মৃচ্ছাহেগান্ত্বনো যৎপীড়য়া ক্রিয়তে তপঃ।

পরস্যোৎসাদনার্থং বা তত্ত্বামসমুদ্বাহতম্।।১৯।।

যে তপস্যা মুখ্যতাপূর্বক আগ্রহ দ্বারা, মন, বাণী ও দেহকে কষ্ট দিয়ে অথবা অপরের অনিষ্টের জন্য করা হয়, তাকে তামসিক তপস্যা বলে।

এইরূপ সান্ত্বিক তপস্যাতে দেহ, মন ও বাণীকে ইষ্টের অনুরূপ তৈরী করা হয়। রাজসিক তপস্যাতে ক্রিয়া সেই একই; কিন্তু দস্তমান সম্মানের ইচ্ছা নিয়ে তপস্যা করেন। প্রায়ই মহাআগামণ গৃহত্যাগ করার পরেও এই বিকারের শিকার হন এবং তামসিক তপস্যা অবিধিপূর্বক সম্পাদন হয়, পরপীড়নের জন্য করা হয়। এখন প্রস্তুত দান—

দাতব্যমিতি যদ্বানং দীয়তেহনুপকারিণে।

দেশে কালে চ পাত্রে চ তদ্বানং সান্ত্বিকং স্মৃতম্।।২০।।

‘দান করা কর্তব্য’—এইভাবে প্রত্যুপকারের আশা না করে স্থান, কাল ও উপর্যুক্ত পাত্রে যে দান করা হয়, তাকে সান্ত্বিক দান বলে।

যত্ত্ব প্রত্যপকারার্থং ফলমুদিষ্য বা পুনঃ।

দীয়তে চ পরিক্লিষ্টং তদ্বানং রাজসং স্মৃতম् ॥২১॥

যে দান অনিছাসত্ত্বে (অনিছা সত্ত্বেও যে দান করা হয়) এবং প্রত্যপকারের আশায় ‘এই করলে এই ফললাভ হবে’ অথবা ফললাভের উদ্দেশ্যে করা হয়, তাকে রাজসিক দান বলে।

অদেশকালে যদ্বানমপাত্রেভ্যশ্চ দীয়তে।

অসৎকৃতমবজ্ঞাতং ততামসমুদ্বাহতম্ ॥২২॥

অশুচিস্থানে, অশুভসময়ে ও অযোগ্য পাত্রে অবজ্ঞাপূর্বক ও সৎকারণহিত যে দান করা হয়, তাকে তামসিক দান বলে। ‘পূজ্য মহারাজজী’ বলতেন—‘হো, কুপাত্রে দান করলে দাতা নষ্ট হয়ে যায়।’ সেইরূপ শ্রীকৃষ্ণও বলছেন যে, দান করাই কর্তব্য। পুণ্যস্থানে, শুভসময়ে ও উপযুক্ত পাত্রে প্রত্যপকারের আশা না করে যে দান করা হয়, তাকে সান্ত্বিক দান বলে। অনিছাসত্ত্বে, ফললাভের উদ্দেশ্যে যে দান করা হয়, তাকে রাজসিক দান বলে এবং সৎকারণহিত, তিরস্কারপূর্বক প্রতিকূল স্থানে, সময়ে, কুপাত্রে যে দান করা হয়, তাকে তামসিক বলে, পরস্ত সেটাও দান। যিনি দেহ-গেহ ইত্যাদির আসঙ্গি ত্যাগ করে একমাত্র ইষ্টের উপর নির্ভরশীল, তাঁর জন্য দানের বিধান এর থেকে আরও উন্নত এবং তা হল সর্বস্বের সমর্পণ, সম্পূর্ণভাবে বাসনামুক্ত হয়ে মন সমর্পণ, যেরূপ শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন—‘মায়ের মন আধৎস্ম।’ অতএব দান করা নিতান্ত আবশ্যিক। এখন প্রস্তুত ওঁ, তৎ ও সৎ-এর স্বরূপ—

ওঁ তৎসদিতি নির্দেশো ব্রহ্মণস্ত্রিবিধঃ স্মৃতঃ।

ব্রাহ্মণাস্তেন বেদাশ্চ যজ্ঞাশ্চ বিহিতাঃ পুরা ॥২৩॥

অর্জুন ! ওঁ, তৎ ও সৎ—এই বাক্য দ্বারা ব্রহ্মের ত্রিবিধ নাম ‘ব্রহ্মণঃ নির্দেশঃ স্মৃতঃ’—ব্রহ্মের নির্দেশ করে, স্মরণ করিয়ে দেয়, সক্ষেত্র প্রদান করে এবং যা হল ব্রহ্মের পরিচায়ক। তার থেকেই ‘পুরা’—পূর্বকালে (আরভ্রে) ব্রাহ্মণ, বেদ এবং যজ্ঞ ইত্যাদির উৎপত্তি হয়েছে অর্থাৎ ব্রাহ্মণ, যজ্ঞ এবং বেদ ওঁ থেকেই উৎপন্ন হয়েছে। এগুলি যোগজাত। ওঁ-এর সতত চিত্তন দ্বারাই এদের উৎপত্তি হয়, আর কোন পথ নেই।

তস্মাদোমিত্যদাহাত্য যজ্ঞানতপঃক্রিয়াৎ।

প্রবর্তনে বিধানোক্তাঃ সততং ব্রহ্মবাদিনাম্॥২৪॥

এইজন্য ওঁ এই ব্রহ্মবাচক প্রথম শব্দ উচ্চারণ করে পুরুষগণ শাস্ত্র-বিধান অনুযায়ী যজ্ঞ, দান, তপস্যাদি কর্মানুষ্ঠান করেন, যারফলে সেই ব্রহ্মের স্মরণ হয়ে আসে। এখন ‘তৎ’ শব্দের প্রয়োগ বলছেন—

তদিত্যনভিসন্ধায় ফলং যজ্ঞতপঃক্রিয়াৎ।

দানক্রিয়াশ্চ বিবিধাঃ ক্রিযন্তে মোক্ষকাঙ্গিভিঃ॥২৫॥

‘তৎ’ অর্থাৎ সেই (পরমাত্মা-ই) সর্বত্র ব্যাপ্ত, এইভাবে তৎ ব্রহ্মবাচক দ্বিতীয় শব্দ উচ্চারণপূর্বক মুমুক্ষু ব্যক্তিগণ ফলাকাঙ্ক্ষা না করে শাস্ত্রদ্বারা নির্দিষ্ট নানা প্রকার যজ্ঞ তপদানাদি কর্মের অনুষ্ঠান করেন। তৎ শব্দটি পরমাত্মার প্রতি সমর্পণসূচক। অর্থাৎ ওঁ জপ করুন, যজ্ঞ, দান ও তপাদি কর্ম তাঁর উপর নির্ভর হয়ে করে যান। এখন সৎ-এর প্রয়োগ সম্বন্ধে বলছেন—

সন্তাবে সাধুভাবে চ সদিত্যেতৎপ্রযুজ্যতে।

প্রশংস্তে কর্মণি তথা সচ্ছবৎ পার্থ যুজ্যতে॥২৬॥

এবং সৎ; যোগেশ্বর বলছেন যে সৎ কি? গীতাশাস্ত্রে শুরুতেই অর্জুন বলেছিলেন যে কুলধর্মৈষি শাশ্঵ত, সত্য, তখন শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন—অর্জুন! এই আজ্ঞান তোমার কোথেকে উৎপন্ন হল? সৎ বস্তুর তিনিকালে অভাব নেই, তার বিনাশ সম্ভব নয় এবং অসৎ বস্তুর তিনিকালে অস্তিত্ব নেই, তাকে নিরস্ত করা যায় না। বস্তুতঃ সেটি কোন বস্তু, যার তিনিকালে অভাব নেই? সেই অসৎ বস্তুই বা কি, যার অস্তিত্ব নেই? উভয়েরে বললেন—এই আত্মাই সত্য এবং ভূতাদির দেহ নাশবান्। আত্মা সনাতন, অব্যক্ত, শাশ্বত এবং অমৃতস্বরূপ। এই হল পরমসত্য।

এখানে বলছেন, ‘সৎ’ এইরূপ পরমাত্মার এই নাম ‘সদ্ভাবে’—সত্যভাবে ও সাধুভাবে প্রয়োগ করা হয় এবং হে পার্থ! যখন নিয়ত কর্ম সাঙ্গেপাঙ্গ, উত্তমরূপে অনুষ্ঠিত হয়, তখন সৎ শব্দ প্রযুক্ত হয়। সৎ-এর অর্থ এই নয় যে, এই সমস্ত বস্তু আমার। যখন দেহটাই আমার নয়, তখন এর ব্যবহার্য বস্তুগুলি কি করে আমার হতে পারে? একে সৎ বলা যেতে পারে না। সৎ-এর প্রয়োগ কেবল একদিশাতে

করা হয়—সন্তাবে। আঞ্চাই পরমসত্য। সেখানে সত্যের প্রতি ভাব, তাঁকে জানার জন্য সাধুভাব এবং তাঁর প্রাপ্তির কর্ম প্রশংস্ত ভাবে হতে থাকে, সেখানেই সৎ শব্দের প্রয়োগ করা হয়। এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর আরও বলছেন—

যজ্ঞে তপসি দানে চ স্থিতিঃ সদিতি চোচ্যতে।

কর্ম চৈব তদর্থীয়ং সদিত্যেবাভিত্বীয়তে॥২৭॥

যজ্ঞ, তপস্যা ও দানে যে স্থিতিলাভ হয়, তাও সংরূপে নির্দিষ্ট হয়। ‘তদর্থীয়ং’—ভগবৎপ্রাপ্তির নিমিত্ত যে কর্ম অনুষ্ঠিত হয়, তাও সৎ নামে অভিহিত হয়। অর্থাৎ সেই পরমাত্মার প্রাপ্তির জন্য যে কর্ম অনুষ্ঠিত হয়, সেই কর্মই সৎ। যজ্ঞ, দান ও তপস্যা এই কর্মেরই পূরক। শেষে নির্ণয় করে বলছেন, এই সকলের জন্য শ্রদ্ধা প্রয়োজন।

অশ্রদ্ধয়া হৃতং দত্তং তপস্তপ্তং কৃতং চ যৎ।

অসদিত্যচ্যতে পার্থ ন চ তৎপ্রেত্য নো ইহ॥২৮॥

হে পার্থ! শ্রদ্ধাশূণ্য হয়ে যে যজ্ঞ, যে দান, যে তপস্যা অনুষ্ঠিত হয় এবং যা কিছু করা হয়, তা অসৎ। এই সকল যজ্ঞাদি ইহলোক এবং পরলোকে নিষ্ফল হয়। অতএব সমর্পণের সঙ্গে শ্রদ্ধা নিতান্ত আবশ্যিক।

**নিষ্কর্ষ –**

অধ্যায়ের শুরুতেই অর্জুন প্রশ্ন করেছিলেন, ভগবন্ত! যারা শাস্ত্র-বিধি ত্যাগ করে এবং শ্রদ্ধাযুক্ত হয়ে যজ্ঞ করে (লোকে ভূত-ভবানী অন্যান্যের পূজা করতেই থাকে) তাদের শ্রদ্ধা কিরূপ? সান্ত্বিক, রাজসিক অথবা তামসিক? এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন— অর্জুন! এই পুরুষ শ্রদ্ধাবান্ত, শ্রদ্ধার প্রতিমূর্তি। তার শ্রদ্ধা অবশ্যই কোথাও স্থির আছে। শ্রদ্ধা যেরূপ পুরুষ সেইরূপ হয়, বৃত্তির অনুরূপ পুরুষ হয়। তাদের সেই শ্রদ্ধা সান্ত্বিক, রাজসিক ও তামসিক এই তিনিপক্ষার হয়। সান্ত্বিক পুরুষগণ দেবতাগণের পূজা করেন, রাজসিক ব্যক্তিগণ যক্ষ (যিনি যশ, শৌর্য প্রদান করবেন), রাক্ষসগণের (যিনি সুরক্ষা প্রদান করবেন) পূজা করেন এবং তামসিক ব্যক্তিগণ ভূত, প্রেতাদির পূজা করেন। শাস্ত্র বিরচন্দে এইরূপ পূজা দ্বারা, এই তিনি প্রকার শ্রদ্ধালুগণ দেহস্ত ইন্দ্রিয়সমূহকে এবং হৃদয়-দেশে অবস্থিত

আমাকে (অস্ত্রযামীকে) কৃশ করে, তাদের অসুর বলে জানবে অর্থাৎ ভূত, প্রেত, যক্ষ, রাক্ষস এবং দেবতাগণের পূজকগণ অসুর।

শ্রীকৃষ্ণ এখানে দেবতা- প্রসঙ্গ ত্রিতীয়বার তুলেছেন। প্রথমে সপ্তম অধ্যায়ে তিনি বলেছিলেন যে- অর্জুন! কামনা দ্বারা যাদের জ্ঞান অপহাত, সেই মুচ্ছগণ অন্য দেবতাগণের পূজা করে। দ্বিতীয়বার নবম অধ্যায়ে সেই প্রশ্ন সম্পর্কেই পুনরায় বললেন- যারা অন্য দেবগণের পূজা করে, তারা আমাকেই পূজা করে; কিন্তু তাদের সেই পূজা অবিধিপূর্বক অর্থাৎ শাস্ত্রবিরুদ্ধ, অতএব তা নষ্ট হয়। এখানে সপ্তদশ অধ্যায়ে বলেছেন, তারা আসুরিক বুদ্ধিবিশিষ্ট। শ্রীকৃষ্ণ একমাত্র পরমাত্মার পূজার বিধান দিয়েছেন।

এর পর যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ চারটি প্রশ্ন তুলেছেন— আহার, যজ্ঞ, তপস্যা ও দান। আহার তিন প্রকারের হয়। সাত্ত্বিক পুরুষের আরোগ্য প্রদানকারী, মনোহর, স্নিগ্ধ আহার প্রিয় হয়। রাজসিক পুরুষের তিক্ত, অল্প, অতিলবণাত্ত, উষ্ণ, মুখরোচক, মশলাযুক্ত রোগবর্দ্ধক আহার প্রিয় হয়। উচ্ছিষ্ট, বাসি ও অপবিত্র আহার তামসিক ব্যক্তিগণের প্রিয় হয়।

শাস্ত্রবিধি দ্বারা নির্দিষ্ট যজ্ঞ (যা আরাধনার অস্তঃক্রিয়া) যা মনকে নিরুদ্ধ করে, ফলকাঙ্গাবিহীন সেই যজ্ঞ সাত্ত্বিক। ফলকামনা করে দন্ত প্রকাশের জন্য যে যজ্ঞ অনুষ্ঠিত হয়, তাকে রাজসিক যজ্ঞ বলা হয়। শাস্ত্রবিধি বর্জিত, মন্ত্র, দান ও শ্রদ্ধারহিত যজ্ঞকে তামসিক যজ্ঞ বলা হয়।

পরমদেব পরমাত্মাতে স্থিতি প্রদান করতে যিনি সক্ষম, সেই প্রাজ্ঞ সদ্গুরুর সেবা- অর্চনা এবং অস্তঃকরণ থেকে অহিংসা, ব্রহ্মচর্য এবং পবিত্রতার অনুরূপ দেহ গড়ে তোলাই শারীরিক তপস্যা। সত্য, প্রিয় ও হিতকর বাক্যকে বাচিক তপস্যা বলে এবং মনকে কর্মে প্রবৃত্ত রাখা, ইষ্ট ব্যতীত বিষয়সমূহের চিন্তনে মনকে শাস্ত্র রাখা— এই সকলকে মানসিক তপস্যা বলে। মন, বাচী ও দেহ তিনটি এক করে তপস্যাতে নিযুক্ত করাই সাত্ত্বিক তপস্যা। রাজসিক তপস্যাতে কামনা করে সেই কর্মই অনুষ্ঠিত হয়, শাস্ত্রবিধিরহিত স্বেচ্ছাচারযুক্ত আচরণকে তামসিক তপস্যা বলা হয়।

কর্তব্য মনে করে, দেশ, কাল ও পাত্রের বিচার করে শ্রদ্ধাপূর্বক যে দান করা হয় তা সাত্ত্বিক দান। ফলাভের উদ্দেশ্যে, অনিচ্ছাসত্ত্বেও যে দান করা হয় তা রাজসিক দান এবং তিরস্কার করে কুপাত্রে যে দান করা হয়, তা তামসিক দান।

ওঁ, তৎ, সৎ-এর স্বরূপ বলবার পর যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন, এই নাম পরমাত্মার স্মৃতি প্রদান করে। শাস্ত্রবিধি দ্বারা নির্ধারিত তপস্যা, দান ও যজ্ঞ শুরু করার সময় ওঁ-এর প্রয়োগ হয়, ও সাধনা যখন সম্পূর্ণ হয়, তখনই শান্ত হয়। তৎ-এর অর্থ পরমাত্মা, তাঁর প্রতি সমর্পণের ভাব থাকলেই সেই কর্ম অনুষ্ঠিত হয় যখন নিরস্তর কর্ম হতে থাকে, তখন সৎ-এর প্রয়োগ করা হয়। ভজনই সৎ। সত্যের প্রতি ভাব ও সাধুভাব-এর মধ্যেই সৎ-এর প্রয়োগ করা হয়। পরমাত্মার প্রাপ্তির জন্য কর্ম, যজ্ঞ, দান ও তপস্যার পরিণামেও সৎ-এর প্রয়োগ করা হয় এবং যে কর্ম পরমাত্মাতে স্থিতি প্রদান করে সেই কর্ম নিশ্চয়ই সৎ; কিন্তু এতে শ্রদ্ধা নিতান্ত আবশ্যিক। শ্রদ্ধাশূণ্য হয়ে যে দান, যে কর্ম, যে তপস্যা অনুষ্ঠিত হয়, তা ইহলোকে এবং পরলোকেও নিষ্ফল হয়। অতএব শ্রদ্ধা অপরিহার্য।

সম্পূর্ণ অধ্যায়ে শ্রদ্ধার উপর আলোকপাত করা হয়েছে এবং শেষে ওঁ, তৎ এবং সৎ-এর বিশদ ব্যাখ্যা প্রস্তুত করা হয়েছে, যার উল্লেখ প্রথমবার করা হয়েছে। অতএব—

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিয়ৎসু ব্ৰহ্মাবিদ্যায়াঃ যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে ‘ওঁ তৎসৎ শ্রদ্ধাত্রয়বিভাগযোগে’ নাম সপ্তদশোহথ্যায়ঃ ॥১৭॥

এই প্রকার শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারপী উপনিষদ্ এবং ব্ৰহ্মাবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ ও অর্জুনের সংবাদে ‘ওঁ তৎসৎ শ্রদ্ধাত্রয় বিভাগ যোগ’ নামক সপ্তদশ অধ্যায় পূর্ণ হল।

ইতি শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দস্য শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃতে শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ ‘যথার্থগীতা’ ভাষ্যে ‘ওঁ তৎসৎ শ্রদ্ধাত্রয়বিভাগযোগে’ নাম সপ্তদশোহথ্যায়ঃ ॥১৭॥

এই প্রকার শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দজীর শিষ্য স্বামী অড়গড়ানন্দকৃত ‘শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা’র ভাষ্য ‘যথার্থ গীতা’তে ‘ওঁ তৎসৎ শ্রদ্ধাত্রয় বিভাগ যোগ’ নামক সপ্তদশ অধ্যায় সমাপ্ত হল।

॥ হরিঃ ওঁ তৎসৎ ॥

।। ওঁ শ্রী পরমাত্মনে নমঃ ।।

## ।। অথষ্টদশোহধ্যায়ঃ ।।

এটাই গীতাশাস্ত্রের শেষ অধ্যায়। এই অধ্যায়ের পূর্বার্দ্ধে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ দ্বারা অনেক প্রশ্নের সমাধান এবং উত্তরার্দ্ধে গীতাশাস্ত্রের উপসংহার, যাতে এই শাস্ত্রাধ্যয়ন থেকে কি লাভ হয়? সেই সম্বন্ধে বলা হয়েছে। সপ্তদশ অধ্যায়ে আহার, তপস্যা, যজ্ঞ, দান এবং শ্রদ্ধাকে বিভাগ করে তাদের স্বরূপ বর্ণনা করা হয়েছে, সেই সন্দর্ভে ত্যাগের স্বরূপ হল সেই আলোচ্য বিষয়বস্তু। মানুষ কি কারণে কর্ম করে? কে কর্ম করান—ভগবান অথবা প্রকৃতি? এই প্রশ্নাগুলি পূর্বেই উল্লিখিত হয়েছে, যেগুলির উপর বর্তমান অধ্যায়ে পুনরায় আলোকপাত করা হয়েছে। এইরূপ পূর্বে বর্ণ্যবস্থার চর্চাও করা হয়েছে। প্রস্তুত অধ্যায়ে বর্ণ্যবস্থার স্বরূপ সম্বন্ধেই বিশদ বিবরণ দেওয়া হয়েছে। বর্তমান অধ্যায়ে এর স্বরূপ-এর বিশ্লেষণ করা হয়েছে। শেষে গীতা থেকে কি কি বিভূতিলাভ হয়?—তার উপর আলোকপাত করা হয়েছে।

সপ্তদশ অধ্যায়ে বহু প্রকরণের বিভাজন শুনে শেষে সন্ধ্যাস ও ত্যাগের তত্ত্ব জানবার জন্য প্রস্তুত অধ্যায়ে অর্জুন শ্রীভগবানকে প্রশ্ন করলেন—

### অর্জুন উবাচ

সন্ধ্যাসম্য মহাবাহো তত্ত্বমিছামি বেদিতুম্।

ত্যাগস্য চ হৃষীকেশ পৃথক্কেশনিযুদন ।।১।।

অর্জুন বললেন— হে মহাবাহো!, হে হৃদয়ের সর্বস্ব!, হে কেশনিযুদন! আমি সন্ধ্যাস ও ত্যাগের যথার্থ স্বরূপ পৃথক পৃথক ভাবে জানতে চাই। পূর্ণ ত্যাগই সন্ধ্যাস, যখন সঙ্কল্প ও সংস্কার উভয়েরই বিলুপ্তি ঘটে। এর পূর্বে সাধনার পূর্তির জন্য উত্তরোন্তর আসন্তির ত্যাগ করাই ত্যাগ। এখানে প্রশ্ন দুটি— সন্ধ্যাস তত্ত্বকে এবং ত্যাগ তত্ত্বকে জানতে চাই। এই প্রসঙ্গে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন—

### শ্রীভগবানুবাচ

কাম্যানাং কর্মণাং ন্যাসং সন্ধ্যাসং কবয়ো বিদৃঃ।

সর্বকর্মফলত্যাগং প্রাহ্লস্ত্যাগং বিচক্ষণাঃ॥১॥

অর্জুন ! কাম্য কর্মের পরিত্যাগকেই পশ্চিতগণের কেউ কেউ সন্ধ্যাস বলেন এবং কিছু বিচারকুশল পুরুষগণ সম্পূর্ণ কর্মফলের ত্যাগকে ত্যাগ বলেন।

ত্যাজ্যং দোষবদ্বিত্যেকে কর্ম প্রাহ্লমনীষিণঃ।

যজ্ঞাদানতপাঃকর্ম ন ত্যাজ্যমিতি চাপরে॥১৩॥

কিছু বিদ্বানগণ এইরূপ বলেন যে, সকল কর্ম দোষবুক্ত অতএব ত্যাগ করা উচিত। অন্যান্য বিদ্বানগণ বলেন যে, যজ্ঞ, দান ও তপস্যা কারণে ত্যাগ করা উচিত নয়। এইরূপ বহু মত প্রস্তুত করার পর যোগেশ্বর নিজের নিশ্চিত মতটি দিলেন—

নিশ্চয়ং শৃণু মে তত্ত্ব ত্যাগে ভরতসন্তম।

ত্যাগো হি পুরুষব্যাঘ্র ত্রিবিধঃ সম্প্রকৃতিতঃ॥১৪॥

হে অর্জুন ! সেই ত্যাগবিষয়ে আমার নিশ্চয় শোন। হে পুরুষশ্রেষ্ঠ ! সেই ত্যাগ তিনি প্রকারের বলা হয়েছে।

যজ্ঞাদানতপাঃকর্ম ন ত্যাজ্যং কার্যমেব তৎ।

যজ্ঞে দানং তপশ্চেব পাবনানি মনীষিণাম॥১৫॥

যজ্ঞ, দান ও তপস্যারূপ কর্ম ত্যাজ্য যোগ্য নয়। যজ্ঞ, দান ও তপস্যা করা উচিত, কারণ এই তিনটি মানুষকে পবিত্র করে।

শ্রীকৃষ্ণ এখানে চারটি প্রচলিত মতের উল্লেখ করলেন। প্রথম—কাম্যকর্মের ত্যাগ, দ্বিতীয়—সম্পূর্ণ কর্মফলের ত্যাগ, তৃতীয়—দোষবুক্ত হওয়ার জন্য সকল কর্মের ত্যাগ ও চতুর্থ—যজ্ঞ, দান ও তপস্যা ত্যাগ করা উচিত নয়। চারটির মধ্যে একটি মতে নিজের অভিমত দিলেন যে, অর্জুন ! আমারও এই সুনিশ্চিত মত যে, যজ্ঞ, দান ও তপস্যা ত্যাগ করা উচিত নয়। এর থেকে প্রমাণিত হল যে, কৃষ্ণকালেও কয়েকটিই মত প্রচলিত ছিল, যেগুলির মধ্যে যথার্থটিও ছিল। সেই সময়েও নানা মত ছিল, আজও আছে। যখন কোন মহাপুরুষের আবির্ভাব হয়, তখন মত-

মতান্ত্রের মধ্যে থেকে কল্যাণকর মতটিকে জনসাধারণের মধ্যে প্রস্তুত করেন। প্রত্যেক মহাপুরুষ করেন, শ্রীকৃষ্ণও তাই করেছেন। তিনি কোন নতুন পথ দেখাননি, বরং প্রচলিত মতগুলির মধ্য থেকে সত্যকে সমর্থন করে তা স্পষ্ট করেছেন।

এতান্যপি তু কর্মণি সঙ্গং ত্যক্ত্বা ফলানি চ।

কর্তব্যানীতি মে পার্থ নিশ্চিতং মতমুত্তমম্ ॥৬॥

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ জোর দিয়ে বললেন—পার্থ! যজ্ঞ, দান ও তপস্যারূপ কর্ম আসন্তি ও ফলকামনা ত্যাগ করে অবশ্য কর্তব্য। এই আমার নিশ্চিত ও উত্তম মত। এখন অর্জুনের জিজ্ঞাসা অনুসারে তিনি ত্যাগের বিশ্লেষণ করলেন—

নিয়তস্য তু সন্ধ্যাসঃ কর্মণো নোপপদ্যতে।

মোহাত্ম্য পরিত্যাগস্তামসঃ পরিকীর্তিঃ ॥৭॥

হে অর্জুন! নিয়ত কর্ম (শ্রীকৃষ্ণের মতে নিয়ত কর্ম একটাই, যজ্ঞের প্রক্রিয়া। এই ‘নিয়ত’ শব্দটি যোগেশ্বর আট-দশবার উচ্চারণ করেছেন। এর উপর বার বার জোর দিয়েছেন, যাতে সাধক ভাস্ত হয়ে অন্য কোন কাজকে কর্ম মনে করে করতে শুরু না করে দেন), এই শাস্ত্রবিধিদ্বারা নির্ধারিত কর্মের ত্যাগ করা উচিত নয়। মোহগ্রস্ত হয়ে তার ত্যাগ করাকে তামসিক ত্যাগ বলা হয়েছে। সাংসারিক বিষয়বস্তুর আসন্তিতে জড়িয়ে কার্যম কর্ম (কার্যম কর্ম, নিয়ত কর্ম একে অন্যের পূরক)-এর ত্যাগ তামসিক ত্যাগ। এইরূপ পুরুষ ‘অথঃ গচ্ছতি’ কৌট-পতঙ্গপর্যন্ত অধম যোনিতে জন্ম নেয়; কারণ সে ভজনের প্রবৃত্তি ত্যাগ করেছে। এখন রাজসিক ত্যাগের বিষয়ে বলছেন—

দৃঢ়খ্যমিত্যেব যৎকর্ম কায়ক্রেশভয়ান্ত্যজেৎ।

স কৃত্বা রাজসং ত্যাগং নৈব ত্যাগফলং লভেৎ ॥৮॥

কর্ম দৃঢ়খ্যকর মনে করে যিনি দৈহিক ক্লেশের ভয়ে কর্মত্যাগ করেন, তিনি এই রাজসিক ত্যাগ করেও ত্যাগের ফললাভ করতে পারেন না। যিনি ভজন সম্পূর্ণ করতে পারেন না ও ‘কায়ক্রেশভয়াৎ’— দৈহিক ক্লেশের ভয়ে কর্মত্যাগ করেন, সেই ব্যক্তির ত্যাগ রাজসিক, তিনি ত্যাগের ফল পরমশান্তিলাভ করতে পারেন না।

কার্যমিত্যেব যৎকর্ম নিয়তং ক্রিয়তেহজুন।

সঙ্গং ত্যঙ্গা ফলং চৈব স ত্যাগঃ সান্ত্বিকো মতঃ ॥৯॥

হে অর্জুন ! ‘করা কর্তব্য’- এইরূপ বিবেচনা করে যে ‘নিয়তম्’-শাস্ত্রবিধিদ্বারা নির্ধারিত কর্ম, সঙ্গদোষ ও ফলকামনা ত্যাগ করে করা হয়, সেই ত্যাগকে সান্ত্বিক ত্যাগ বলে । অতএব নিয়ত কর্ম করুন এবং তা ভিন্ন সমস্তই ত্যাগ করুন । এই নিয়ত কর্ম কি সর্বদা করতে হবে অথবা কখনও এই কর্মও সম্পূর্ণ হবে ? এই প্রসঙ্গে বলছেন, (এখন ত্যাগের শেষ রূপ দেখুন) –

ন দ্঵েষ্ট্যকুশলং কর্ম কুশলে নানুযজ্ঞতে ।

ত্যাগী সত্ত্বসমাবিষ্টো মেধাবী ছিন্নসংশয়ঃ ॥১০॥

হে অর্জুন ! যিনি ‘অকুশলং কর্ম’ আর্থিং অকল্যাণকর কর্মে (শাস্ত্র নিয়ত কর্মই কল্যাণকর)। এর বিপরীত যা কিছু করা হয়, তা এই লোকের বন্ধন সেইজন্য অকল্যাণকর, এইরূপ কর্মে) দ্বেষ করেন না ও কল্যাণকর কর্মে আসক্ত হন না, যা কর্তব্য কর্ম ছিল তাও অসম্পূর্ণ নেই– এইরূপ সত্ত্বসংযুক্ত পুরুষ সংশয়মুক্ত, জ্ঞানী ও ত্যাগী হন । কারণ তিনি সর্বকর্মের ত্যাগ করেছেন, কিন্তু ভগবৎ প্রাপ্তির সঙ্গে পূর্ণ ত্যাগকেই সম্ম্যাস বলে । এর থেকেও সরল পথ আছে কি ? তিনি বলেছেন—না । দেখুন –

ন হি দেহভৃতা শক্যং ত্যঙ্গুৎ কর্মাণ্যশেষতঃ ।

যন্ত্র কর্মফলত্যাগী স ত্যাগীত্যভিধীয়তে ॥১১॥

দেহধারী পুরুষগণ (কেবল দেহটাই নয়, যেটা আপনার চোখে পড়ে)। শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে প্রকৃতিজাত সত্ত্ব-রজঃ-তম এই তিনটি গুণই জীবাত্মাকে দেহে আবদ্ধ করে । যতক্ষণ গুণ সক্রিয়, ততক্ষণ দেহ ধারণ করতে হয় । দেহধারণের কারণ গুণগ্রায় যতক্ষণ সক্রিয়, ততক্ষণ কোন না কোন রূপে দেহের অস্তিত্ব বর্তমান থাকে ।) নিঃশেষরূপে সকলকর্ম ত্যাগ করতে পারেন না, সেইজন্য যিনি কর্মফলের কামনাত্যাগ করেছেন, তিনিই ত্যাগী—এইরূপ বলা হয় । অতএব যতক্ষণ দেহ ধারণের কারণ বর্তমান, ততক্ষণ তিনি কর্মের অনুষ্ঠান করুন এবং ফলের কামনা ত্যাগ করুন । কিন্তু সকামী ব্যক্তিগণও কর্মের ফললাভ করে থাকেন ।

অনিষ্টমিষ্টং মিশ্রং চ ত্রিবিধং কর্মণঃ ফলম্।

ত্ববত্যত্যাগিনাং প্রেত্য ন তু সন্ন্যাসিনাং কৃচিৎ। ।।১২।।

ভাল, মন্দ ও মিশ্রিত—এই তিনি প্রকার ফল সকামী ব্যক্তিগণ মৃত্যুর পরেও লাভ করে, জন্ম-জন্মান্তরপর্যন্ত ভোগ করে; কিন্তু ‘সন্ন্যাসিনাম’— সর্বস্বের ন্যাস (শেষ) করেছেন যে পূর্ণত্যাগী পুরুষগণ, তাঁরা কোন কর্মফল ভোগ করেন না। একেই বলে শুন্দ সন্ন্যাস। সন্ন্যাস হল চরমোৎকর্ষের অবস্থা। ভাল, মন্দ কর্মগুলির ফল এবং পূর্ণ ন্যাসকালে সেগুলির সমাপ্তির প্রশ্ন এখানেই সম্পূর্ণ হল। কি কারণে মানুষ শুভ অথবা অশুভ কর্ম করে? এই প্রসঙ্গে দেখুন—

পঁঞ্চেতানি মহাবাহো কারণানি নিবোধ মে।

সাঞ্চে কৃতান্তে প্রোক্তানি সিদ্ধয়ে সর্বকর্মণাম। ।।১৩।।

হে মহাবাহো! সাংখ্য-সিদ্ধান্তে সর্বকর্ম সম্পাদনের পাঁচটি কারণ নিরাপিত হয়েছে। এইগুলি আমার কাছে অবগত হও।

অধিষ্ঠানং তথা কর্তা করণং চ পৃথিবীধম্।

বিবিধাশ্চ পৃথক্কচেষ্টা দৈবং চৈবাত্র পঞ্চমম। ।।১৪।।

এই বিষয়ে কর্তা (এই মন), পৃথক পৃথক করণ (যাদের সাহায্যে কর্ম করা হয়—বিবেক, বৈরাগ্য, শম, দম, ত্যাগ, অনবরত চিন্তনের প্রবৃত্তিগুলি শুভকর্ম সম্পাদনের করণ হয় এবং কাম, ক্রোধ, রাগ, দ্বেষ, লিঙ্গা ইত্যাদি অশুভ কর্ম সম্পাদনের করণ হয়।), বিভিন্ন প্রকারের চেষ্টা (অনন্ত ইচ্ছা), আধার (অর্থাৎ সাধন, যে ইচ্ছার সঙ্গে সাধন জোটে, সেই ইচ্ছা পূর্ণ হতে শুরু করে) এবং পঞ্চম হেতু দৈব অথবা সংস্কার। এর-ই পুষ্টি করে-

শরীরবাঞ্ছনোভিযৎকর্ম প্রারভতে নরঃ।

ন্যায়ং বা বিপরীতং বা পঁঞ্চেতে তস্য হেতবঃ। ।।১৫।।

শরীর, মন এবং বাক্য দ্বারা মানুষ শাস্ত্রের অনুসারে অথবা বিপরীত যে কর্ম করে, সেই সমস্ত কর্মের কারণ এই পাঁচটি। পরান্ত এইরূপ হওয়া সত্ত্বেও—

তত্ত্বেবং সতি কর্তারমাত্মানং কেবলং তু যঃ।

পশ্যত্যকৃতবুদ্ধিভাব স পশ্যতি দুর্মতিঃ ॥১৬॥

যিনি অশুদ্ধ বুদ্ধি হেতু সেই বিষয়ে কৈবল্য স্বরূপ আত্মাকে কর্তা বলে মনে করেন, সেই ভাস্তবুদ্ধি ব্যক্তি যথার্থদর্শী নন অর্থাৎ ভগবান করেন না।

এই প্রশ্নের উপর যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ পুনরায় জোর দিলেন। পঞ্চম অধ্যায়ে তিনি বলেছিলেন, প্রভু স্বয়ং করেন না, করান না এবং ক্রিয়ার সংযোগও করিয়ে দেন না। তবে লোকে বলে কেন? তাদের বুদ্ধি মোহাছন্ন, সেজন্য তারা যা ইচ্ছা তা ই বলতে পারেন। এখানেও বলছেন—সমস্ত কর্মের কারণ পাঁচটি। এর পরেও যাঁরা কৈবল্য স্বরূপ পরমাত্মাকে কর্তা বলে মনে করেন, সেই মৃচ্ছণ যথার্থদর্শী নন অর্থাৎ ভগবান করেন না, পরস্ত ভগবান অর্জুনকে সাহায্য করবার জন্য এগিয়ে গিয়েছিলেন, ‘নিমিত্তমাত্রং ভব’ যে, হর্তা-কর্তা তো আমি, তুমি নিমিত্ত মাত্র হও। তাহলে তিনি বলতে চাইছেন কি?

বস্তুতঃ ভগবান ও প্রকৃতির মাঝে একটা আকর্ষণ রেখা আছে। যতক্ষণ সাধক প্রকৃতির সীমার মধ্যে থাকেন, ভগবান তাঁর জন্য কিছু করেন না। অতি কাছে থেকে ঈশ্বর কেবল দ্রষ্টা-রাপেই থাকেন। অনন্যভাবে ইষ্টের আশ্রিত হলে তিনি সাধকের হাদয়-দেশ-এ সংগ্রাম হয়ে যান। তখনই সাধক প্রকৃতির আকর্ষণ সীমা পার করে ঈশ্বরীয় ক্ষেত্রে চলে যান। এইরূপ অনুরাগীকে সাহায্য করবার জন্য ঈশ্বর সর্বদা প্রস্তুত থাকেন। কেবল এইরূপ অনুরাগীর জন্যই ভগবান করেন। অতএব চিন্তন করছন। প্রশ্নটি সম্পূর্ণ হল। আরও দেখুন—

যস্য নাহঙ্ক্তো ভাবো বুদ্ধিযস্য ন লিপ্যতে।

হত্তাপি স ইমাঁল্লোকান্ন হস্তি ন নিবধ্যতে ॥১৭॥

‘আমি কর্তা’—এই ভাব যাঁর নেই এবং যাঁর বুদ্ধি লিপ্ত হয় না, তিনি সমস্ত লোকের সংহার করলেও সংহর্তা হন না বা আবদ্ধ হন না। লোক-সম্বন্ধী সংস্কারের বিলয়কেই লোক-সংহার বলা হয়। কিরূপে সেই নিয়ত কর্মের প্রেরণা লাভ হয়? এই প্রসঙ্গে দেখুন—

জ্ঞানং জ্ঞেয়ং পরিজ্ঞাতা ত্রিবিধা কর্মচোদনা ।

করণং কর্ম কর্তেতি ত্রিবিধঃ কর্মসম্ভবঃ ॥১৮॥

অর্জুন ! পরিজ্ঞাতা অর্থাত্ পূর্ণজ্ঞাতা মহাপুরুষগণ দ্বারা, ‘জ্ঞানং’- তাঁকে অবগত হবার বিধিদ্বারা এবং ‘জ্ঞেয়ম्’-জ্ঞানবার যোগ্য বস্তু (শ্রীকৃষ্ণ পূর্বে বলেছেন আমিই জ্ঞেয়, জ্ঞানবার যোগ্য) দ্বারা কর্ম করার প্রেরণালাভ হয় । পূর্ণজ্ঞাতা মহাপুরুষের কাছে সেই জ্ঞান-সম্বন্ধে জ্ঞানার বিধিলাভ হলে, জ্ঞেয়-লক্ষ্যের উপর দৃষ্টি থাকলে তবেই কর্মের প্রেরণা পাওয়া যায় এবং কর্তা (মনের নিষ্ঠা), করণ (বিবেক, বৈরাগ্য, শাম, দম ইত্যাদি) এবং কর্মের স্বরূপ অবগত হলে কর্ম সম্ভব হয় । পূর্বে বলা হয়েছিল যে, প্রাপ্তির পরে কর্ম করবার দরকার হয় না ও কর্মত্যাগ করলে কোন লোকসানও হয় না; তা সত্ত্বেও লোকসংগ্রহ অর্থাত্ অনুগামীদের হাদয়ে কল্যাণকর সাধনের সংগ্রহের জন্য তিনি কর্মে প্রবৃত্ত থাকেন । কর্তা, করণ এবং কর্মদ্বারা এগুলি সংগ্রহ হয় । জ্ঞান, কর্ম ও কর্তা তিনি প্রকারের হয়—

জ্ঞানং কর্ম চ কর্তা চ ত্রিধৈব গুণভেদতঃ ।

প্রোচ্যতে গুণসংঘ্যানে যথাবচ্ছৃঙ্খলান্যপি ॥১৯॥

সাংখ্যশাস্ত্রে জ্ঞান, কর্ম ও কর্তা গুণভেদে তিনি প্রকার বলা হয়েছে, সেই সকল তুমি যথাযথরূপে শ্রবণ কর । প্রথমে প্রস্তুত জ্ঞানের ভোদ—

সর্বভূতেষু যেনৈকং ভাবমব্যয়মীক্ষতে ।

অবিভক্তং বিভক্তেষু তজ্জ্ঞানং বিদ্বি সাত্ত্বিকম্ ॥২০॥

অর্জুন ! যে জ্ঞানদ্বারা মানুষ পৃথক পৃথক সকলভূতে এক অবিনাশী পরমাত্মাবকে অবিভক্ত সমভাবে স্থিত দেখেন, সেই জ্ঞানকে সাত্ত্বিক জ্ঞান বলে । জ্ঞান হল প্রত্যক্ষ অনুভূতি, এই অনুভূতির সঙ্গে-সঙ্গেই ত্রিগুণ শাস্ত হয়ে যায় । এটাই জ্ঞানের পরিপক্ষ অবস্থা । এখন রাজসিক জ্ঞান দেখুন—

পৃথক্ক্রেণ তু যজ্ঞানং নানাভাবান্পৃথিবীধান্ম ।

বেতি সর্বেষু ভূতেষু তজ্জ্ঞানং বিদ্বি রাজসম ॥২১॥

যে জ্ঞানদ্বারা সর্বভূতে ভিন্নভিন্ন বহুভাবকে পৃথকভাবে জানা যায় যে, ইনি ভাল, ইনি মন্দ—সেই জ্ঞানকে তুমি রাজসিক বলে জানবে। এইরূপ স্থিতিতে যিনি আছেন, তাঁর জ্ঞান রাজসিক স্তরের। এখন দেখুন তামসিক জ্ঞান—

যত্তু কৃৎস্ববদেকশিক্ষার্যে সক্তমহৈতুকম্।

অতত্ত্বার্থবদ্ধাং চ তত্ত্বামসমুদাহৃতম্॥২২॥

যে জ্ঞানদ্বারা কোন একটি দেহে সম্পূর্ণ আত্মা আছেন—এইরূপ অভিনিবেশ হয়, সেই অযৌক্তিক অর্থাত্ত যার পিছনে কোন ক্রিয়া নেই, তত্ত্বের অর্থস্বরূপ পরমাত্মা থেকে পৃথক করে এবং তুচ্ছ, সেইজন্য সেই জ্ঞানকে তামসিক জ্ঞান বলে। এখন প্রস্তুত কর্মের তিনটি ভেদ—

নিয়তং সঙ্গরহিতমরাগদ্বেষতঃ কৃতম্।

অফলপ্রেম্ভুনা কর্ম যত্তৎসাত্ত্বিকমুচ্যতে॥২৩॥

যে কর্ম ‘নিয়তম্’—শাস্ত্রবিধি দ্বারা নির্ধারিত, সঙ্গদোষ ও ফলাভিলাষরহিত পুরুষদ্বারা রাগ ও দ্বেষবর্জনপূর্বক করা হয়, তাকে সাত্ত্বিক কর্ম বলে। নিয়ত কর্ম (আরাধনা) চিন্তনকে বলা হয়, যে চিন্তন পরম-এ স্থিতি প্রদান করে।)

যত্তু কামেন্দ্রুনা কর্ম সাহক্ষারেণ বা পুনঃ।

ক্রিয়তে বহুলায়াসং তদ্রাজসমুদাহৃতম্॥২৪॥

ফলকামনাযুক্ত ও অহংকারযুক্ত হয়ে বহু কষ্টসাধ্য যে কর্মের অনুষ্ঠান করা হয় সেই সকল কর্মকে রাজসিক কর্ম বলা হয়। এই রাজস পুরুষও সেই নিয়ত কর্ম করেন; কিন্তু পার্থক্য এই যে, ফলকামনা করে ও অহক্ষারযুক্ত সেইজন্য তার দ্বারা যে কর্ম অনুষ্ঠিত হয় তাকে রাজসিক কর্ম বলে। এখন দেখুন—

অনুবন্ধং ক্ষয়ং হিংসামনবেক্ষ্য চ পৌরুষম্।

মোহাদারভ্যতে কর্ম যত্ত্বামসমুচ্যতে॥২৫॥

যে কর্ম শেষে নষ্ট হয়ে যায়, হিংসা-সামথ্র্যের বিচার না করে কেবল মোহবশ আরংভ করা হয়, তা তামসিক কর্ম বলে উক্ত হয়। স্পষ্ট হল যে, এই কর্ম শাস্ত্রের

নিয়ত কর্ম নয়। শাস্ত্রের জায়গাতে আন্ত ধারণাকে আশ্রয় করা হয়েছে। এখন দেখুন  
কর্তার লক্ষণ—

মুক্তসঙ্গেহনহংবাদী ধৃত্যৎসাহসমন্বিতঃ।  
সিদ্ধসিদ্ধ্যান্বিকারঃ কর্তা সান্ত্বিক উচ্যতে॥২৬॥

যিনি সঙ্গদোষমুক্ত, অহংবাদী নন, ধৃতিশীল ও উদ্যমযুক্ত, ক্রিয়মাণ কর্মের  
সিদ্ধিতে হয়হীন এবং অসিদ্ধিতে বিষাদশূণ্য, বিকারণগুলি থেকে মুক্ত হয়ে কর্মে  
(অহর্নিশ) প্রবৃত্ত, সেই কর্তাকে সান্ত্বিক বলা হয়। এগুলি উত্তম সাধকের লক্ষণ। কর্ম  
সেই একটাই—নিয়ত কর্ম।

রাগী কর্মফলপ্রেক্ষুরুদ্ধো হিংসাত্মকোহশুচিঃ।  
হর্ষশোকান্বিতঃ কর্তা রাজসঃ পরিকীর্তিতঃ॥২৭॥

আসক্তিযুক্ত, কর্মফলাকাঙ্ক্ষী, লোলুপ, পরপীড়ক, অপবিত্র এবং হর্ষ-শোকে  
যিনি লিষ্ট, সেই কর্তাকে রাজসিক কর্তা বলা হয়।

অযুক্তঃ প্রাকৃতঃ স্তন্মঃ শর্ঠোহনেন্দ্রিয়তিকোহলসঃ।  
বিষাদী দীর্ঘসূত্রী চ কর্তা তামস উচ্যতে॥২৮॥

চঞ্চল চিন্ত, অসংস্কৃত বুদ্ধি, অনশ্ব, বথক, পরবৃত্তিচ্ছেদনকারী, কর্তব্যে  
প্রবৃত্তিহীন, সদা অবসন্ন স্বভাব ও দীর্ঘসূত্রী সেই কর্তাকে তামসিক কর্তা বলা হয়।  
যারা দীর্ঘসূত্রী তারা কর্মকে ‘কাল করা যাবে’ বলে অসম্পূর্ণ রাখে, যদিও তার আন্তরে  
কর্ম করার ইচ্ছা থাকে। এইরূপ কর্তার লক্ষণ সম্পূর্ণ হল। এখন যোগেশ্বর এক  
নতুন প্রশ্ন সম্মতে বলছেন বুদ্ধি, ধারণা ও সুখের লক্ষণ—

বুদ্ধের্ভেদং ধৃতশ্চৈব গুণতত্ত্ববিধং শৃণু।  
প্রোচ্যমানমশেষেণ পৃথক্ক্রেণ ধনঞ্জয়।॥২৯॥

ধনঞ্জয়! গুণানুসারে বুদ্ধি ও ধৃতির তিনপ্রকার ভেদ পৃথক পৃথক ভাবে বলছি,  
শ্রবণ কর।

প্রবৃত্তিঃ চ নিবৃত্তিঃ চ কার্যাকার্যে ভয়াভয়ে।  
বন্ধং মোক্ষং চ যা বেতি বুদ্ধিঃ সা পার্থ সান্ত্বিকী।॥৩০॥

পার্থ! প্রবৃত্তি ও নিবৃত্তি, কর্তব্য ও অকর্তব্য, ভয় ও অভয় এবং বন্ধন ও মোক্ষ—এই সকল বিষয় যে বুদ্ধির দ্বারা জানা যায়, তা সান্ত্বিক বুদ্ধি। অর্থাৎ পরমাত্মা-পথ, গমনাগমন পথ উভয়েরই উত্তমপ্রকার জ্ঞানকে সান্ত্বিকী বুদ্ধি বলে।  
যথা—

যয়া ধৰ্মধৰ্মং চ কার্যং চাকার্যমেব চ।

অযথাবৎপ্রজানাতি বুদ্ধিঃ সা পার্থ রাজসী ॥৩১॥

পার্থ! যে বুদ্ধিদ্বারা ধর্ম ও অধর্ম এবং কর্ত্য ও অকর্তব্য যথাযথরূপে জানতে পারা যায় না, তা রাজসিক বুদ্ধি। এখন তামসিক বুদ্ধির স্বরূপ দেখুন—

অধর্মং ধৰ্মমিতি যা মন্যতে তমসাবৃত্তা।

সর্বার্থাত্ত্বিপরীতাংশ্চ বুদ্ধিঃ সা পার্থ তামসী ॥৩২॥

পার্থ! যে বুদ্ধি তমোগুণে আচ্ছম হয়ে অধর্মকে ধর্ম মনে করে এবং সকল বিষয় বিপরীতভাবে বোঝে, তা তামসিক বুদ্ধি।

এখানে শ্লোকসংখ্যা ত্রিশ থেকে বত্রিশপর্যন্ত বুদ্ধির তিনটি ভেদ বলা হয়েছে।  
প্রথমে বুদ্ধি কোন কাজ থেকে নিবৃত্ত হবে এবং কোন কাজে প্রবৃত্ত হবে, কর্তব্য কি ও অকর্তব্য কি— যে বুদ্ধি উত্তমরূপে এইগুলি সম্বন্ধে অবগত, সেই বুদ্ধিই সান্ত্বিকী।  
যে বুদ্ধি কর্তব্য-অকর্তব্যকে অস্পষ্টভাবে জানে, যথার্থ জানে না, সেই বুদ্ধি রাজসিক এবং অধর্মকে ধর্ম, নশ্বরকে শাশ্঵ত এবং হিতে অহিত-এইরূপ বিপরীত বুদ্ধি তামসিক বুদ্ধি। এইভাবে বুদ্ধির ভেদ সম্পূর্ণ হল। এখন প্রস্তুত অন্য প্রশ্ন ‘ধৃতি’—ধারণার তিন ভেদ—

ধৃত্যা যয়া ধারয়তে মনঃপ্রাণেন্দ্রিয়ক্রিয়াঃ।

যোগেনাব্যভিচারিণ্যা ধৃতিঃ সা পার্থ সান্ত্বিকী ॥৩৩॥

‘যোগেন’—যৌগিক প্রক্রিয়া দ্বারা ‘অব্যভিচারণী’—যোগ-চিন্তন ব্যতীত অন্য কোন চিন্তন ব্যভিচার, চিন্ত বিচলিত হওয়া ব্যভিচার, অতএব এইরূপ অব্যভিচারণী ধৃতিদ্বারা মন, প্রাণ ও ইন্দ্রিয়ের ক্রিয়াসমূহ শান্তমার্গে বিধৃত হয়, এই প্রকার ধৃতিই সান্ত্বিকী। অর্থাৎ মন, প্রাণ ও ইন্দ্রিয়সমূহকে ইষ্টেন্মুখ করা সান্ত্বিকী ধারণা। এবং—

যয়া তু ধৰ্মকামার্থান্ধত্যা ধাৰয়তেহজুন।

প্ৰসঙ্গেন ফলাকাঙ্ক্ষী ধৃতিঃ সা পার্থ রাজসী ॥৩৪॥

হে পার্থ! ফলাকাঙ্ক্ষাযুক্ত ব্যক্তি অত্যন্ত আসক্ত হয়ে যে ধৃতিদ্বারা কেবল ধৰ্ম, অৰ্থ ও কাম ধাৰণ কৰে থাকে (মোক্ষ নয়) তা রাজসিক ধৃতি। এই ধৃতিতেও লক্ষ্য সেই একই, এতে কেবল কামনা কৰা হয়। যা কিছু কাৰ্য কৰে, তাৰ পৱিত্ৰত্বে ফল পেতে চায়। এখন তামসিক ধৃতিৰ লক্ষণ দেখুন—

যয়া স্বপ্নং ভয়ং শোকং বিষাদং মদমেব চ।

ন বিমুঞ্গতি দুর্মেধা ধৃতিঃ সা পার্থ তামসী ॥৩৫॥

হে পার্থ! দুষ্টবুদ্ধি ব্যক্তি যে ধৃতিদ্বারা নিদ্রা, ভয়, চিন্তা, দৃঢ় ও অভিমান পৱিত্যাগ কৰে না, তাদেৱ ধাৰণ কৰে থাকে, তা তামসিক ধৃতি। এই প্ৰশ়াটি সম্পূৰ্ণ হল। পৱেৱ প্ৰশ়াটি সুখ—

সুখং হিন্দনীং ত্ৰিবিধং শণু মে ভৱতৰ্ভ।

অভ্যাসাদ্বমতে যত্র দুঃখান্তং চ নিগচ্ছতি ॥৩৬॥

অজুন! এখন আমাৰ কাছে ত্ৰিবিধি সুখেৰ বিষয় শ্ৰবণ কৰ। তাদেৱ মধ্যে যে সুখে সাধক অভ্যাসবশতঃ রমণ কৰে অৰ্থাৎ চিন্ত সংযম কৰে ইষ্টে রমণ কৰে এবং যা দুঃখ থেকে মুক্ত কৰে। এবং—

যত্নদগ্রে বিষমিৰ পৱিণামেহমৃতোপমম্।

তৎসুখং সাত্ত্বিকং প্ৰোক্তমাত্মবুদ্ধিপ্ৰসাদজম্ ॥৩৭॥

উপর্যুক্ত সুখ সাধনেৰ আৱন্তকালে যদিও বিষতুল্য। (প্ৰহ্লাদকে শুলে চড়ানো হয়েছিল, মীৱাকে বিষ দেওয়া হয়েছিল। কৰীৱ বলেছেন—‘সুখিয়া সব সংসাৱ হ্যায়, খায়ে অওৱ সোয়ে। দুখিয়া দাস কৰীৱ হ্যায়, জাগে অউৱ রোয়ে।’ অতএব আৱন্তে বিষতুল্য।) কিন্তু পৱিণামে অমৃততুল্য, অমৃততত্ত্ব প্ৰদান কৰে। অতএব আত্ম-বিষয়ক বুদ্ধিৰ নিৰ্মলতা থেকে উৎপন্ন সুখকে সাত্ত্বিক সুখ বলা হয়। এবং—

বিষয়েন্দ্ৰিয়সংযোগাদ্যত্বদগ্রেহমৃতোপমম্।

পৱিণামে বিষমিৰ তৎসুখং রাজসং স্মৃতম্ ॥৩৮॥

বিষয় ও ইন্দ্রিয়ের সংযোগ থেকে যে সুখ উৎপন্ন হয়, তা ভোগকালে যদিও অমৃততুল্য কিন্তু পরিশেষে বিষতুল্য; কারণ এই সুখ জন্ম-মৃত্যুর কারণ, সেই সুখকে রাজসিক সুখ বলা হয়। এবং—

যদপ্রে চানুবন্ধে চ সুখং মোহনমাত্মনঃ ।

নিৰালস্যপ্রমাদোথং তত্ত্বামসমুদ্বাহতম্ ॥৩৯॥

যে সুখ ভোগকালে ও পরিণামে আঘাতে মোহগ্রস্ত করে, নিৰ্দা ‘যা নিশা সর্বভূতানাং’- জগৎৱন্দপ নিশাতে অচেতন্য করে রাখে, আলস্য ও ব্যর্থ চেষ্টা থেকে উৎপন্ন সেই সুখকে তামসিক সুখ বলা হয়। এখন যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ ত্রিগুণ সম্বন্ধে বলছেন, সকলের সঙ্গেই যেগুলির সম্পর্ক আছে—

ন তদন্তি পৃথিব্যাং বা দিবি দেবেষু বা পুনঃ ।

সত্ত্বং প্রকৃতিজৈর্মুক্তং যদেভিঃ স্যাত্ত্বিভির্গুণেঃ ॥৪০॥

অর্জুন ! পৃথিবীতে, স্বর্গে বা দেবতাদের মধ্যে এমন কোন প্রাণী নেই, যে এই প্রকৃতিজাত ত্রিগুণ থেকে মুক্ত। অর্থাৎ ব্রহ্মা থেকে শুরু করে কীট-পতঙ্গপর্যন্ত সম্পূর্ণ জগৎ ক্ষণভঙ্গুর, জন্ম-মৃত্যুশীল, ত্রিগুণের অন্তর্ভুত অর্থাৎ দেবতাও ত্রিগুণের বিকারকেই বলে; দেবতাও নশ্বর।

এখানে বাহ্য দেবতাগণের যোগেশ্বর চতুর্থবার উল্লেখ করলেন। প্রথমে সপ্তম অধ্যায়ে তারপর নবম, সপ্তদশ এবং এখানে অষ্টাদশ অধ্যায়ে। এরগুলির অর্থ এই থেকে স্পষ্ট হচ্ছে যে দেবগণও ত্রিগুণের অন্তর্ভুত। যাঁরা এদের পূজা করেন, তাঁরা নশ্বরকে পূজা করেন।

ভাগবতের দ্বিতীয় ক্ষক্ষে মহর্ষি শুক এবং পরীক্ষিত প্রসিদ্ধ আখ্যান আছে। এখানে তাঁরা পরীক্ষিতকে উপদেশ দিয়ে বলেছেন, স্ত্রী-পুরুষের মধ্যে পরম্পর প্রেমের সম্পর্কের জন্য শক্তি-পার্বতীর, আরোগ্য লাভের জন্য অশ্বিনীকুমার দ্বয়ের, জয়লাভের জন্য ইন্দ্রের এবং ধনলাভের জন্য কুবেরের পূজা করুন। এইরূপ বিবিধ কামনার উল্লেখ করে অবশেষে নির্ণয় করলেন যে, সমস্ত কামনা পূরণের জন্য এবং মোক্ষ লাভের জন্য একমাত্র নারায়ণের পূজা করা উচিত। তুলসী মূলহিঁ সৌঁচিয়ে,

ফুলই ফুলই আমাই।' অতএব সর্বব্যাপক প্রভুর স্মরণ করছন, যাঁকে লাভ করবার জন্য সদ্গুরুর শরণ, নিষ্পটভাবে প্রশ্ন ও সেবা একমাত্র উপায়।

আসুরী ও দৈবী সম্পদ অন্তঃকরণের দুটি প্রবৃত্তিকে বলে। দৈবী সম্পদ পরমদেব পরমাত্মার দিগন্দর্শন করিয়ে দেয়, সেইজন্য একে দৈবী বলা হয়; কিন্তু এই প্রবৃত্তিও ত্রিগুণেরই অন্তর্ভুত। গুণাতীত হলে দৈবী সম্পদও শান্ত হয়ে যায়। গুণাতীত, আঘাতৃপ্ত যোগীর জন্য কোন কর্তব্য বাকী থাকে না।

এখন প্রস্তুত বর্ণ-ব্যবস্থা। বর্ণ জন্ম-প্রধান অথবা কর্মদ্বারা অন্তঃকরণে যা যোগ্যতা অর্জন হয় তার নাম? এই প্রসঙ্গে দেখুন—

ত্রাঙ্গণক্ষত্রিয়বিশাং শুদ্রাগাং চ পরস্তপ।

কর্মণি প্রবিভক্তানি স্বভাবপ্রভবৈগুণৈঃ॥৪১॥

হে পরস্তপ! ত্রাঙ্গণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ও শুদ্রের কর্মসমূহ স্বভাবজাত ত্রিগুণানুসারেই পৃথক পৃথক রূপে বিভক্ত হয়েছে। স্বভাব সান্ত্বিক হলে, আপনার মধ্যে নির্মলতা, ধ্যান-সমাধির ক্ষমতা থাকবে। তামসিক গুণ কাজ করলে আলস্য, নিদ্রা, প্রমাদ স্বভাবে দেখা যাবে। সেই স্তর অনুসারেই আপনার দ্বারা কর্মও হবে। যে গুণ কার্যরত, সেটাই আপনার বর্ণ, স্বরূপ। এইরূপ অর্দ্ধসান্ত্বিক এবং অর্দ্ধরাজসিক গুণ ক্ষত্রিয় বর্গের মধ্যে দেখা যায় এবং অর্দ্ধেকের কর্ম তামসিক ও বিশেষ রাজসিক গুণ দ্বিতীয় বর্গের বৈশ্য মধ্যে দেখা যায়।

এই প্রশ্ন সম্বন্ধে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ চতুর্থবার উল্লেখ করেছেন। দ্বিতীয় অধ্যায়ে এই চারটি বর্গের মধ্যে থেকে এ বর্গ ক্ষত্রিয়ের নাম উল্লেখ করেছেন যে, ক্ষত্রিয়ের জন্য যুদ্ধ থেকে শ্রেয়স্কর আর কোন পথ নেই। তৃতীয় অধ্যায়ে তিনি বলেছেন যে, যারা দুর্বল গুণযুক্ত, তারা স্বভাব থেকে উৎগম্য যোগ্যতা অনুসারে ধর্মে প্রবৃত্ত হবে, স্বধর্মে মৃত্যুও পরমকল্যাণকর। অন্যের অনুকরণ ভয়াবহ। চতুর্থ অধ্যায়ে বলেছেন— চার বর্গের রচনা আমি করেছি। তাহলে কি মানুষের চারটি জাতিতে বিভাগ করেছেন? বলেছেন—না, 'গুণকর্ম বিভাগশঃ'-গুণের যোগ্যতা অনুসারে কর্মকে চারটি স্তরে বিভাগ করেছেন। এখানে গুণ মানদণ্ড, এর দ্বারা কর্ম করার ক্ষমতাকে চার ভাগে বিভক্ত করা হয়েছে। শ্রীকৃষ্ণের বাণীতে একমাত্র অব্যক্ত পুরুষকে লাভ করবার

ক্রিয়া-বিশেষকে কর্ম বলে। ঈশ্বরপ্রাপ্তির আচরণ আরাধনা, যা শুরু হয় একমাত্র ইষ্টে শ্রদ্ধা থেকে। চিন্তনের বিধি-বিশেষ থেকে যা পূর্বে বলেছেন। এই যজ্ঞার্থ কর্মকে চার ভাগে বিভাগ করেছেন। এখন কিরণে বোঝা যাবে যে আপনার মধ্যে কোন গুণ কার্যরত ও আপনি কোন শ্রেণীর? এই প্রসঙ্গে এখানে বলেছেন—

শর্মো দমস্তপঃ শৌচঃ ক্ষাণ্তিরার্জবমেব চ।

জ্ঞানং বিজ্ঞানমাণ্ডিকং ব্ৰহ্মকর্ম স্বভাবজম।।৪২।।

মনের শমন ও ইন্দ্রিয়সমূহের দমন, পূর্ণ পবিত্রতা; কায়িক, বাচিক ও মানসিক তপস্যা, ক্ষমা, সরলতা, আন্তিক বুদ্ধি অর্থাৎ একমাত্র ইষ্টে আস্থা, জ্ঞান অর্থাৎ পরমাত্মা-জ্ঞানের সংগ্রহ, বিজ্ঞান অর্থাৎ পরমাত্মার কাছ থেকে প্রাপ্ত নির্দেশের জাগৃতি এবং সেই অনুসারে চলবার ক্ষমতা—এই সকল ব্রাহ্মণের স্বভাবজাত কর্ম। যখন স্বভাবে এই যোগ্যতাগুলি দেখা দেয়, নিরন্তর কর্ম হয় ও পরে কর্ম করা স্বভাব হয়ে দাঁড়ায়, তখন ব্রাহ্মণ শ্রেণীর যোগ্যতা অর্জন হয়েছে বলা যেতে পারে। এবং—

শৌর্যং তেজো ধৃতিৰ্দৰ্ক্ষ্যং যুদ্ধে চাপ্যপলায়নম্।

দানমীমুৰভাবশ্চ ক্ষত্রিং কর্ম স্বভাবজম।।৪৩।।

পরাক্রম, ঈশ্বরীয় তেজলাভ, ধৈর্য, চিন্তনে দক্ষতা অর্থাৎ ‘কর্মসু কৌশলম’—কর্মকুশলতা, প্রকৃতির সংঘর্ষ থেকে পশ্চাংপদ না হওয়ার স্বভাব, দান অর্থাৎ সর্বস্ব সমর্পণ, সকলভাবের উপর ‘আমিহ কত’—এইভাব অর্থাৎ ঈশ্বরভাব—এইগুলি ক্ষত্রিয়ের ‘স্বভাবজম’—স্বভাবজাত কর্ম। যাঁদের মধ্যে এই যোগ্যতাগুলি পাওয়া যায়, তাঁরা ক্ষত্রিয় শ্রেণীর কর্তা। এখন প্রস্তুত বৈশ্য ও শুদ্ধের স্বরূপ—

কৃষিগোরক্ষ্যবাণিজ্যং বৈশ্যকর্ম স্বভাবজম।

পরিচর্যাঞ্চকং কর্ম শুদ্ধস্যাপি স্বভাবজম।।৪৪।।

কৃষি, গোরক্ষা ও বাণিজ্য বৈশ্যের স্বভাবজাত কর্ম। গোপালনাই কেন? তবে কি মহিস রক্ষা করবে না? ছাগল পুসবে না? এর তাৎপর্য হল ইন্দ্রিয়সমূহের রক্ষা। সুদূর বৈদিক বাঙ্গায়ে ‘গো’ শব্দ অন্তঃকরণ ও ইন্দ্রিয়সমূহের জন্য প্রচলিত ছিল। গোরক্ষার অর্থ ইন্দ্রিয়সমূহের রক্ষা। বিবেক-বৈরাগ্য-শম-দমদ্বারা ইন্দ্রিয়গুলি সুরক্ষিত

হয়, কাম-ক্রোধ, লোভ-মোহদ্বারা ইন্দ্রিয়সমূহ বিক্ষিপ্ত হয়, দুর্বল হয়। আত্মিক সম্পত্তি স্থির সম্পত্তি। এটাই নিজধন, যা একবার অর্জন করতে সক্ষম হলে সর্বদা সঙ্গে থাকে। প্রকৃতির দ্বন্দ্বের মধ্যে থেকে এই সম্পত্তিগুলি সংগ্রহ করাই বাণিজ্য ('বিদ্যা ধনং সর্বধন প্রথানম'-এই বিদ্যা অর্জন করাই বাণিজ্য।) কৃষি কাকে বলে? দেহটাই ক্ষেত্র। এর অন্তরালে যে বীজ বপন করা হয়, তা ভাল-মন্দ সংস্কারণে সংগ্রহ হয়। অর্জুন! এই নিষ্কাম কর্মে বীজ অর্থাৎ আরম্ভের নাশ হয় না। (তার মধ্যে থেকে কর্মের এই তৃতীয় শ্রেণীতে কর্ম অর্থাৎ ইষ্ট-চিন্তনই নিয়ত কর্ম) পরমতত্ত্ব চিন্তনের যে বীজ এই ক্ষেত্রে পড়ে আছে, তাকে সুরক্ষিত করে যাওয়া ও এতে যে বিজাতীয় বিকারণগুলির আক্রমণ হয়, সেগুলির নিরাকরণ করে যাওয়াই কৃষি।

কৃষি নিরাবহি চতুর কিসান।

জিমি বুধ তজহি মোহ মদ মানা।। (মানস, ৪/১৪/৮)

যাঁরা চতুর কৃষক, তাঁরা ভাল ফসললাভের জন্য আগাছাগুলি উন্মুলন করেন, ফলে ফসল ভাল তৈরী হয়, সেইরূপ বিবেকসম্পন্ন পুরুষগণই মোহ, মদ এবং মান পরিত্যাগ করেন।

এই প্রকার সকল ইন্দ্রিয়ের সুরক্ষা এবং প্রকৃতির দ্বন্দ্বগুলির মধ্যে থেকে আত্মিক সম্পত্তি সংগ্রহ করা এবং এই ক্ষেত্রে পরমতত্ত্বের চিন্তনের বর্দ্ধন এইগুলি বৈশ্য শ্রেণীর কর্ম।

**শ্রীকৃষ্ণে অনুসারে 'ঘজ্ঞিষ্ঠাশিনঃ'-** যজ্ঞ সম্পূর্ণ হলে আমরা যজ্ঞ থেকে পরাম্পর ব্রহ্মকে লাভ করি। সেই ব্রহ্মের আস্থাদন করে সস্তপুরুষগণ সকল পাপ থেকে মুক্ত হয়ে যান। চিন্তন-ক্রিয়া দ্বারা তারই শনৈঃ শনৈঃ বীজারোপণ হয়। এর সুরক্ষা করে যাওয়াই কৃষিকার্য। বৈদিক শাস্ত্র অনুসারে অন্ন পরমাত্মা। সেই পরমাত্মাই একমাত্র অশন, অন্ন। চিন্তন-ক্রিয়া সম্পূর্ণ হলে এই আত্মা পূর্ণ তৃপ্ত হয় আর কখনও অতৃপ্ত হয় না, আর আসা-যাওয়া করতে হয় না। এই অন্নের বীজকে অঙ্কুরিত করা এবং তার সুরক্ষা করে চলাকে কৃষিকার্য বলা হয়েছে।

নিজের থেকে উন্নত অবস্থাযুক্ত ব্যক্তিগণের, দীর্ঘরপ্তাপ্ত গুরুজনের সেবা করা শুদ্ধের স্বভাবজাত কর্ম। শুদ্ধের অর্থ হীন নয় বরং অল্লজ্ঞ। নিম্ন শ্রেণীর সাধকই শুদ্ধ। প্রবেশিকা শ্রেণীর সেই সাধক পরিচর্যা থেকেই সাধনা আরম্ভ করবে। ধীরে

ধীরে সেবাদ্বারা তার হাদয়ে সেই সংস্কারগুলির সৃজন হবে এবং ক্রমশঃ সে বৈশ্য,  
ক্ষত্রিয় ও ব্রাহ্মণ শ্রেণীতে পৌঁছে অবশেষে বর্ণগুলি পার করে ব্রহ্মে লীন হয় যাবে।  
স্বভাব পরিবর্তী হয় এবং স্বভাব পরিবর্তন হলে বর্ণ-পরিবর্তন হয়। বস্তুতঃ এই  
বর্ণের অবস্থা চারটি অতি উত্তম, উত্তম, মধ্যম ও নিকৃষ্ট, কর্মপথের পথিকদের উঁচু-চীচু  
চারটি স্তর। কর্ম একটাই, নিয়ত কর্ম। শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, পরমসিদ্ধিলাভ করার  
এটাই একমাত্র পথ, সেইজন্য স্বভাবে যেনোপ যোগ্যতা আছে, সেটাই সম্ভল করে  
সেই স্থান থেকে এগিয়ে যাবার চেষ্টা করুন। এখন দেখুন—

স্বে স্বে কর্মণ্যভিরতঃ সংসিদ্ধিং লভতে নরঃ।

স্বকর্মনিরতঃ সিদ্ধিং যথা বিন্দতি তচ্ছণু ॥৪৫॥

মানুষ নিজ নিজ স্বভাবের যোগ্যতা অনুসারে কর্মে রত হয়ে ‘সংসিদ্ধি’-  
ভগবৎপ্রাপ্তিরূপ পরমসিদ্ধিলাভ করে। পূর্বেও বলেছেন—এই কর্ম সম্পূর্ণ করে তুমি  
পরমসিদ্ধিলাভ করবে। কোন্ কর্ম করে? অঙ্গুন! তুমি শাস্ত্রবিধি দ্বারা নির্ধারিত কর্ম,  
যজ্ঞার্থ কর্ম কর। এখন স্বকর্ম করার ক্ষমতা অনুসারে কর্মে প্রবৃত্ত মানুষ কিরণে  
পরমসিদ্ধিলাভ করেন, সেই বিধি তুমি আমার কাছে শ্রবণ কর। লক্ষ্য করুন—

যতঃ প্রবৃত্তির্ভূতানাং যেন সবমিদং ততম्।

স্বকর্মণা তমভ্যর্জ্য সিদ্ধিং বিন্দতি মানবঃ ॥৪৬॥

যে পরমেশ্বর থেকে ভূতগণের উৎপত্তি, যিনি এই সমগ্র বিশ্বে ব্যাপ্ত আছেন,  
সেই পরমেশ্বরকে ‘স্বকর্মণা’—মানুষ স্বভাবজাত কর্মদ্বারা আর্চনা করে পরমসিদ্ধি  
লাভ করে। অতএব পরমাত্মার চিন্তন ও পরমাত্মারই সবসঙ্গী আর্চনা ও ক্রমশঃ  
চিন্তনপথে চলা আবশ্যক। যেমন কোন নিম্নশ্রেণীর ছাত্র যদি উচ্চ শ্রেণীতে পড়তে  
যায়, তাহলে সে তার নিজের শ্রেণীর যোগ্যতাও হারিয়ে ফেলবে, উচ্চ শ্রেণীর  
যোগ্যতা তো লাভ হবেই না। অতএব এই কর্মপথে ক্রমে ক্রমে এগিয়ে যেতে  
হবে। যেমন ১৮/৬ দ্রষ্টব্য। এর উপরই জোর দিয়ে পুনরায় বলছেন যে, যদি আপনি  
অল্পজ্ঞ, তবু সেই স্তর থেকেই শুরু করুন। সেই বিধি হল—পরমাত্মার প্রতি সমর্পণ।

শ্রেয়ান্স্বধর্মো বিগুণঃ পরধর্মাত্মস্বনুষ্ঠিতাত্।

স্বভাবনিয়তং কর্ম কুর্বন্নাপ্নোতি কিল্বিষম ॥৪৭॥

স্বীয় ধর্ম অঙ্গহীনভাবে অনুষ্ঠিত হলেও সম্যগ্রভাবে অনুষ্ঠিত পরধর্ম অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ। ‘স্বত্বাব নিয়তৎ’-স্বত্বাবদ্বারা নির্ধারিত কর্ম করে মানুষকে পাপ অর্থাৎ আসা-যাওয়া করতে হয় না। প্রায়ই সাধকগণ উদ্বিগ্ন হন, চিন্তা করেন—আমি কি সেবা করতেই থাকব, তিনি তো ধ্যানস্থ, গুণের জন্য তাঁকে সম্মান করা হয়, এই চিন্তা করে তাঁরাও অনুকরণ করতে শুরু করেন। শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে অনুকরণ অথবা ঈর্ষা করলে কিছু লাভ হবে না। স্বত্বাবের ক্ষমতা অনুসারে কর্ম করেই সাধক পরমসিদ্ধি লাভ করেন, ত্যাগ করে নয়।

সহজং কর্ম কৌন্তেয় সদোষমপি ন ত্যজেৎ।

সর্বারণ্তা হি দোষেণ ধূমেনাশ্চিরিবাবৃতাঃ ॥৪৮॥

কৌন্তেয়! দোষযুক্ত (অল্পজ্ঞ অবস্থাযুক্ত হলে দোষের বাহল্য হওয়া স্বাভাবিক, এইদূপ দোষযুক্তও) ‘সহজং কর্ম’—স্বত্বাবজ্ঞাত সহজ কর্ম ত্যাগ করা উচিত নয় কারণ ধূমদ্বারা আচ্ছাদিত আঘির ন্যায় সকল কর্মই দোষযুক্ত। ব্রাহ্মণ শ্রেণীর হলেও, কর্ম তো করতেই হচ্ছে। যতক্ষণ স্থিতিলাভ হয়, ততক্ষণ দোষ বিদ্যমান, প্রকৃতির আবরণ বিদ্যমান। যেখানে ব্রাহ্মণ শ্রেণীর কর্মও ব্রহ্মে প্রবেশের সঙ্গে বিলয় হয়, তখনই দোষযুক্ত হওয়া যায়। প্রাণিযুক্ত পুরুষের লক্ষণ কি, যখন কর্ম করার প্রয়োজন থাকে না ?-

অসঙ্গবুদ্ধিঃ সর্বত্র জিতাত্মা বিগতস্পৃহঃ।

নৈক্ষম্যসিদ্ধিং পরমাং সন্ধ্যাসেনাধিগচ্ছতি ॥৪৯॥

সকল বিষয়ে অনাসঙ্গ, স্পৃহাশৃণ্য, সংযতচিন্ত পুরুষ ‘সন্ধ্যাসিনাম’—সর্বস্ব ন্যাসের দ্বারা পরম নৈক্ষম্যে সিদ্ধিলাভ করেন। এখানে সন্ধ্যাস ও পরম নৈক্ষম্য সিদ্ধি একই পর্যায়ভূক্ত। সাংখ্য যোগীও সেই অবস্থালাভ করেন, যে অবস্থা নিষ্কাম কর্মযোগী লাভ করেন। উভয় মাগীই সমান উপলব্ধি করেন। এখন পরম নৈক্ষম্য সিদ্ধিপ্রাপ্ত পুরুষ যে তাবে ব্রহ্মলাভ করেন, সংক্ষেপে তার বর্ণনা করেছেন—

সিদ্ধিং প্রাপ্তো যথা ব্রহ্ম তথাপোতি নিবোধ মে।

সমাসেনৈব কৌন্তেয় নিষ্ঠা জ্ঞানস্য যা পরা ॥৫০॥

কৌন্তেয় ! এইরূপ সিদ্ধিপাপ্ত পুরুষ জ্ঞাননিষ্ঠা ক্রমে ব্রহ্মজ্ঞানের পরমনিষ্ঠা বা পরিসমাপ্তিরূপ ব্রহ্মপ্রাপ্তি হয়। জ্ঞাননিষ্ঠার উক্ত প্রাপ্তিক্রম সংক্ষেপে আমার কাছে অবণ কর। পরের শ্লোকে সেই বিধি সম্বন্ধে বলছেন, লক্ষ্য করুন—

বুদ্ধ্যা বিশুদ্ধ্যা যুক্তো ধৃত্যাত্মানং নিয়ম্য চ ।

শব্দাদীন্ধিষয়াংস্ত্যক্ত্বা রাগদ্বেষৌ বৃদ্ধস্য চ ॥৫১॥

বিবিক্তসেবী লঘ্বাসী যতবাক্তায়মানসঃ ।

ধ্যানযোগপরো নিত্যং বৈরাগ্যং সমুপাণ্তিঃ ॥৫২॥

অর্জুন ! বিশেষরূপে শুদ্ধবুদ্ধিযুক্ত হয়ে নির্জন ও পবিত্র স্থানে অবস্থান, পরিমিত আহার করেন, বাক্য, শরীর ও মন সংযত করে, দৃঢ় বৈরাগ্য অবলম্বন করে, নিরস্তর ধ্যাননিষ্ঠ ও যোগপরায়ণ হয়ে, অস্তঃকরণবশীভূত করে, শব্দাদি বিষয় পরিত্যাগপূর্বক, আসক্তি ও দ্বেষ বর্জন করে এবং—

অহক্ষারং বলং দর্পং কামং ক্রোধং পরিগ্রহম্ ।

বিমুচ্য নির্মমঃ শান্তো ব্রহ্মভূয়ায় কল্পতে ॥৫৩॥

অহক্ষার, বল, দর্প, কাম, ক্রোধ, বাহ বস্ত্র ও আন্তরিক চিন্তন পরিত্যাগ করে, মমতাবর্জিত এবং চিন্তবিক্ষেপশূণ্য পুরুষ পরব্রহ্ম লাভে সমর্থ হন। আরও দেখুন—

ব্রহ্মভূতঃ প্রসন্নাত্মা ন শোচতি ন কাঙ্ক্ষতি ।

সমঃ সর্বেষু ভূতেষু মন্ত্রিঃ লভতে পরাম ॥৫৪॥

এইরূপ ব্রহ্মে একীভূত হয়ে সেই প্রসন্নচিত্ত পুরুষ কোন বিষয়ে শোক করেন না এবং কিছুই আকাঙ্ক্ষাও করেন না। সর্বভূতে সমভাব সেই পুরুষ ভক্তির পরাকার্ষায় স্থিত হন। ভক্তি এখানে পরিগামস্বরূপ ব্রহ্মস্থিতি প্রদান করে। এখন—

ভক্ত্যা মামভিজানতি যাবান্যশ্চাস্মি তত্ত্বতঃ ।

ততো মাং তত্ত্বতো জ্ঞাত্বা বিশতে তদন্তরম् ॥৫৫॥

সেই পরাভক্তিদ্বারা তিনি আমাকে তত্ত্বতঃ জানেন। সেই তত্ত্ব কি ? আমি 'যে'ও যেরূপ প্রভাবযুক্ত, অজর-অমর-শাশ্঵ত যে অলৌকিক গুণধর্মযুক্ত, আমার

এই তত্ত্ব অবগত হয়ে তিনি আমাতে প্রবেশ করেন। প্রাপ্তিকালে ভগবানের দর্শন করেন ও প্রাপ্তির ঠিক পরেই তিনি আত্মস্বরূপকে সেই ঈশ্বরীয় গুণধর্মের সঙ্গে সংযুক্ত দেখেন যে, আত্মাই অজর, অমর, শাশ্বত, অব্যক্ত ও সনাতন।

দ্বিতীয় অধ্যায়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন—আত্মাই সত্য, সনাতন, অব্যক্ত ও অমৃতস্বরূপ; কিন্তু এই সমস্ত বিভূতিযুক্ত আত্মাকে কেবল তত্ত্ব দর্শীগণই দেখেছেন। এখন প্রশ্ন স্বাভাবিক যে, বস্তুতঃ সেই তত্ত্বদর্শিতা কি? বহু লোক পাঁচ তত্ত্ব, পাঁচশ তত্ত্বের বৌদ্ধিক গণনা শুরু করেন; কিন্তু এই বিষয়ের উপর শ্রীকৃষ্ণ প্রস্তুত অধ্যায়ে নির্ণয় করে বললেন যে, সেই পরমতত্ত্ব পরমাত্মা, যিনি তাঁকে জানেন, তিনিই তত্ত্বদর্শী। এখন যদি আপনি সেই তত্ত্বলাভের ইচ্ছুক, পরমাত্ম-তত্ত্ব লাভের ইচ্ছুক তাহলে ভজন-চিন্তন আবশ্যিক।

এখানে শ্লোক উনপঞ্চাশ থেকে পঞ্চাশপর্যন্ত যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ স্পষ্ট করলেন যে সন্ন্যাস মার্গেও কর্ম করতে হয়। তিনি বললেন, ‘সন্ন্যাসেন’—সন্ন্যাসদ্বারা (অর্থাৎ জ্ঞানযোগের দ্বারা) কর্ম করতে করতে ইচ্ছাশূণ্য, আসক্তিশূণ্য এবং সংযত চিন্ত পূরণ্য যেভাবে নেক্ষম্যের পরমসিদ্ধিলাভ করেন, তা সংক্ষেপে বলব। অহঙ্কার, বল, দর্প, কাম-ক্রেণ্ড, মদ-মোহ ইত্যাদি যে বিকারগুলি প্রকৃতিতে নিক্ষেপ করে, সেগুলি যখন শাস্ত হয় এবং বিবেক, বৈরাগ্য, শম-দম, নির্জনে বাস, ধ্যান ইত্যাদি ব্রহ্মে প্রবেশ করতে সাহায্য করে যে যোগ্যতাগুলি, সে সমস্ত যখন পরিপক্ষ হয়, তখন ব্রহ্মকে জানার যোগ্যতা লাভ হয়। সেই যোগ্যতার নাম পরাভক্তি, এই যোগ্যতার দ্বারাই তত্ত্বকে জানা যায়। তত্ত্ব কি? আমাকে জানা। ভগবান যে যে বিভূতিযুক্ত, যিনি ভগবানকে তাঁর বিভূতিসহ জানেন, তিনি আমাতে স্থিত হন। ব্রহ্মতত্ত্ব, ঈশ্বর, পরমাত্মা ও আত্মা একে অন্যের পর্যায়। একটিকে জানতে পারলে বাকি সব জানা যায়। এই হল পরমসিদ্ধি, পরমগতি ও পরমধার।

অতএব গীতাশাস্ত্রে দৃঢ় নির্ণয় এই যে, সন্ন্যাস ও নিষ্কাম কর্মযোগ দুটি পরিস্থিতিতেই পরম নেক্ষম্য সিদ্ধিলাভ করার জন্য নিয়ত কর্ম (চিন্তন) অনিবার্য।

এ পর্যন্ত যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ সন্ন্যাসীর জন্য ভজন-চিন্তন করবার উপর জোর দিয়েছেন, এখন সমর্পণ বলে সেই বার্তাকে নিষ্কাম কর্মযোগীর জন্যও বলছেন—

সর্বকর্মাণ্যপি সদা কুর্বাণো মন্দ্যপাত্রয়ৎ।  
মৎপ্রসাদাদবাপ্নোতি শাশ্বতৎ পদমব্যয়ম্॥৫৬॥

আমার উপর সম্পূর্ণরূপে আশ্রিত পুরুষ সর্বদা সমস্ত কর্ম করেও, লেশমাত্রও ত্রুটি না রেখে কর্ম করে আমার অনুগ্রহে শাশ্বত, অবিনাশী পরমপদ প্রাপ্ত হন। কর্ম সেই এক নিয়ত কর্ম, যজ্ঞের প্রক্রিয়া। পূর্ণরূপে যোগেশ্বর সদ্গুরুর আশ্রিত সাধক তাঁর অনুগ্রহে শাশ্বত পরমপদ শীঘ্র লাভ করেন। অতএব তাঁকে লাভ করার জন্য সমর্পণ আবশ্যিক।

চেতসা সর্বকর্মাণি ময়ি সন্ত্যস্য মৎপরঃ।

বুদ্ধিযোগমুপাত্রিত্য মচিত্তৎ সততৎ ভব॥৫৭॥

অতএব অর্জুন ! সমস্ত কর্ম (যতটা তোমার দ্বারা সম্ভব) আমাতে সমর্পণপূর্বক, নিজের ভরসায় নয় বরং আমাতে সমর্পণপূর্বক মৎপরায়ণ হবে অর্থাৎ বুদ্ধিযোগ অবলম্বনপূর্বক সর্বদা আমাতে চিন্ত সমাহিত কর। যোগ একটাই, যা সর্বপ্রকারের দুঃখের বিনাশ করে এবং পরমতত্ত্ব পরমাত্মাতে প্রবেশ প্রদান করে। এর ক্রিয়া একটাই—যজ্ঞের প্রক্রিয়া, যা মন ও সকল ইন্দ্রিয়ের সংযম, নিঃশ্঵াস-প্রশ্বাস এবং ধ্যান ইত্যাদির উপর নির্ভর করে। যার পরিণামও এক-‘যান্তি ব্রহ্ম সনাতনম্’। এই প্রসঙ্গেই আরও বলেছেন—

মচিত্তৎ সর্বদুগ্ধাণি মৎপ্রসাদান্তরিষ্যসি।

অথ চেতুমহক্ষারাম শ্রোষ্যসি বিনক্ষ্যসি॥৫৮॥

আমাতে চিন্ত অর্পণ করলে আমার অনুগ্রহে তুমি মন ও সকল ইন্দ্রিয়ের দুর্গঙ্গলিকে অতিক্রম করবে। ‘ইন্দ্রিহ দ্বার বারোখা নানা। তহঁ তহঁ সুর বৈষ্টে করি থানা।। আবত দেখহি বিষয় বয়ারী। তে হষ্ঠি দেহি কপাট উষারী।।’ এইগুলিই দুর্জয় দুর্গ। আমার অনুগ্রহে তুমি এই বাধা সকল অতিক্রম করবে কিন্তু যদি তুমি অভিমানবশতঃ আমার কথা না শোন, তাহলে তোমার বিনাশ হবে, পরমার্থের অযোগ্য হবে। পুনরায় এই প্রসঙ্গের উপর জোর দিলেন—

যদহক্ষারমাত্রিত্য ন যোৎস্য ইতি মন্যসে।

মিথ্যেষ ব্যবসায়স্তে প্রকৃতিস্ত্বাং নিযোক্ষ্যতি।॥৫৯॥

অহঙ্কারকে আশ্রয় করে ‘যুদ্ধ করব না’ এইরূপ যা চিন্তন করছ, তোমার এই নিশ্চয় ভ্রমমূলক। কারণ, তোমার ক্ষত্র স্বভাবই তোমাকে যুদ্ধে নিযুক্ত করবে।

স্বভাবজেন কৌন্তেয় নিবন্ধঃ স্মেন কর্মণা।

কর্তৃং নেচ্ছসি যন্মোহাত্করিয়স্যবশোহপি তৎ। । ৬০ ।।

কৌন্তেয়! অজ্ঞানবশতঃ তুমি যে কর্ম করতে চাইছ না, স্বভাবজাত স্বীয় ক্ষত্রিয়োচিত কর্মে আবদ্ধ হয়ে অনিচ্ছাসত্ত্বেও তা করবে। প্রকৃতির সংঘর্ষ থেকে পশ্চাত্পদ না হওয়ার তোমার ক্ষত্রিয়শ্রেণীর স্বভাব তোমাকে বলপূর্বক কর্মে নিযুক্ত করবে। প্রশ্নাটি সম্পূর্ণ হল। এখন প্রশ্না, সেই ঈশ্বর কোথায় বাস করেন? এই প্রসঙ্গে বলছেন—

ঈশ্বরঃ সর্বভূতানাং হৃদদেশেহর্জুন তিষ্ঠতি।

আময়ন্সর্বভূতানি যদ্বারানানি মায়য়া। । ৬১ ।।

অর্জন! ঈশ্বর সর্বজীবের হৃদয়ে অধিষ্ঠিত। এত কাছে থাকা সত্ত্বেও লোকে জানতে পারে না, কেন? মায়ারূপ যন্ত্রে আরাত্ সকলেই ভাস্ত হয়ে ভ্রমণ করছে, সেইজন্য জানতে পারে না। এই যন্ত্র বাধাস্বরূপ, যা বার বার নশ্বর কলেবরে ভ্রমণ করাতে থাকে। তাহলে কার শরণে যাওয়া উচিত?—

তমেব শরণং গচ্ছ সর্বভাবেন ভারত।

তৎপ্রসাদাত্পরাং শান্তিং স্থানং প্রাঙ্গ্যসি শাশ্বতম। । ৬২ ।।

সেইজন্য হে ভারত! সর্বতোভাবে সেই ঈশ্বরের (যিনি হৃদয়ে অধিষ্ঠিত) শরণাগত হও। তাঁর অনুগ্রহে তুমি পরমশান্তি, শাশ্বত পরমধাম প্রাপ্ত হবে। অতএব যদি ধ্যান করতে চান, তাহলে হৃদয়-দেশ-এ করুন। এই সম্বন্ধে জানার পর মন্দির, মসজিদ, চার্চ অথবা অন্যত্র সন্ধান করা সময় নষ্ট করা ছাড় আর কিছু নয়। তবে জানা না থাকলে, এটা স্বাভাবিক। ঈশ্বরের নিবাস-স্থান হৃদয়। ভাগবতের চতুর্থশ্লোকী গীতার সারাংশও এই যে, যদিও আমি সর্বত্র ব্যাপ্ত; কিন্তু হৃদয়-দেশ ধ্যান করলেই আমাকে লাভ করা যেতে পারে।

ইতি তে জ্ঞানমাখ্যাতং গুহ্যাদগুহ্যতরং ময়া।

বিমৃশ্যেতদশেষেণ যথেচ্ছসি তথা কুরু। । ৬৩ ।।

এই প্রকার আমি তোমার কাছে গুহ্য থেকেও গুহ্যতর জ্ঞান বললাম। তুমি এটি সম্পূর্ণরূপে বিচার করে; যা ইচ্ছে হয় তা-ই অনুষ্ঠান কর। সত্য অনুসন্ধানের স্থান ও প্রাপ্তি স্থানও এটাই। কিন্তু হৃদয়স্থিত ঈশ্বরকে দেখা যায় না, এর উপায় বলছেন—

সর্বগুহ্যতমং ভূয়ঃ শৃণু মে পরমং বচঃ।

ইষ্টোহসি মে দৃচমিতি ততো বক্ষ্যামি তে হিতম। । ৬৪ ॥

অর্জুন! সর্বাপেক্ষা গুহ্য আমার রহস্যযুক্ত বাক্য তুমি পুনরায় শ্রবণ কর (পূর্বে বলেছেন, কিন্তু পুনরায় শ্রবণ কর। সাধকের জন্য ইষ্ট সদা প্রস্তুত থাকেন) কারণ তুমি আমার অত্যন্ত প্রিয়, এইজন্য তোমার হিতকর বাক্য আমি পুনরায় বলছি। তা কি?—

মন্মানা ভব মন্ত্রক্তো মদ্যাজী মাঃ নমস্কৃত।

মামেবেষ্যসি সত্যং তে প্রতিজানে প্রিয়োহসি মে। । ৬৫ ॥

অর্জুন! তুমি আমাতে চিন্ত স্থির কর, আমার অনন্য ভক্ত হও, আমার প্রতি শ্রদ্ধাশীল হও (সমর্পণে অঙ্গপাত যেন হয়) এবং আমাকে নমস্কার কর। এইরূপে তুমি আমাকে প্রাপ্ত হবে, কারণ তুমি আমার অত্যন্ত প্রিয়। পূর্বে বলেছেন—ঈশ্বর হৃদয়ে অধিষ্ঠিত, তাঁর শরণাগত হও। এখানে বলেছেন—আমার শরণে এস। এই গুহ্যতর রহস্যযুক্ত বাক্য শোন, আমার শরণে এস। বাস্তবে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ কি বলতে চাইছেন? এই যে সাধকের জন্য সদগুরুর শরণ নিতান্ত আবশ্যক। শ্রীকৃষ্ণ পূর্ণযোগেশ্বর ছিলেন। এখন সমর্পনের বিধি সম্বন্ধে বলেছেন—

সর্বধর্মান্পরিত্যজ্য মামেকং শরণং ব্ৰজ।

অহং ত্বা সর্বপাপেভ্যো মোক্ষযিয্যামি মা শুচঃ। । ৬৬ ॥

সকল ধর্মের অনুষ্ঠান পরিত্যাগপূর্বক (অর্থাৎ আমি ব্রাহ্মণ শ্রেণীর কর্তা অথবা শুদ্ধ শ্রেণীর, ক্ষত্রিয় অথবা বৈশ্য শ্রেণীর—এই বিচার পরিত্যাগ করে) কেবল একমাত্র আমার শরণাগত হও। আমি সকল পাপ থেকে তোমাকে মুক্ত করব। শোক করো না।

ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় ইত্যাদি বর্ণগুলির বিচার না করে (এই যে, আমি এই কর্মপথে কোন শ্রেণীর) যিনি একমাত্র পরমেশ্বরের শরণাগত হন, ইষ্টের অতিরিক্ত অন্য কারও কাছ থেকে কৃপা পেতে চান না, তাঁর ক্রমশঃ বর্ণ-পরিবর্তন, উত্থান ও সমস্ত পাপ থেকে নির্বান্তির (মোক্ষ) দায়িত্ব ইষ্ট সদ্গুরূ স্বয়ং নিজের হাতে তুলে নেন।

প্রত্যেক মহাপুরুষ এই কথাই বলেছেন। শাস্ত্র যখন লিপিবদ্ধ করা হয়, তখন মনে হয় যে সেটা সকলের জন্য; কিন্তু সেটা শুধু শ্রদ্ধাবানদের জন্যই। অর্জুন অধিকারী ছিলেন, তা-ই তাঁকে জোর দিয়ে বললেন। এখন যোগেশ্বর স্বয়ং নির্ণয় করে বলছেন যে, এর অধিকারী কে?—

ইদং তে নাতপস্কায় নাভক্তায় কদাচন।

ন চাশুঞ্জ্যবে বাচ্যং ন চ মাং যোহভ্যসুয়তি। । ৬৭ ॥

অর্জুন! এইরূপ হিতের জন্য তোমাকে উপদিষ্ট এই গীতাশাস্ত্র তপস্যাহীন ব্যক্তি বলবে না, ভক্তিরহিত ব্যক্তিকে কখনও বলবে না, যে শ্রবণেচ্ছু নয় তাকে বলবে না ও আমাকে নিন্দা করে যারা—এই দোষ আমাতে, এই দোষ আমাতে এই প্রকার মিথ্যা সমালোচনা করে যারা, তাদেরও বলবে না। মহাপুরুষ তো ছিলেন, যার সমক্ষে স্মৃতিকর্তাদের সাথে সাথে কতিপয় নিন্দুকও হয়ত ছিল। নিন্দুকদের বলবে না। কিন্তু প্রশংসন স্বাভাবিক যে, কাকে বলা উচিত? এই প্রসঙ্গে দেখুন—

য ইমং পরমং গুহ্যং মন্তক্তেত্বিধাস্যতি।

ভক্তিং ময়ি পরাং কৃত্বা মামেবৈষ্যত্যসংশয়ঃ। । ৬৮ ॥

যিনি আমার পরাভক্তিলাভ করে এই পরমগুহ্য গীতাশাস্ত্রের উপদেশ আমার ভক্তের কাছে পাঠ ও ব্যাখ্যা করবেন, তিনি নিঃসন্দেহে আমাকে লাভ করবেন। কারণ যিনি উপদেশ উত্তমরূপে শ্রবণ করে হৃদয়ঙ্গম করে নেবেন, তিনি সেই পথে চলবেন ও উদ্বার হয়ে যাবেন। এখন সেই উপদেশকর্তার সম্বন্ধে বলছেন—

ন চ তত্ত্বান্বয়েষ্যু কশ্চিল্লে প্রিয়কৃত্মঃ।

ভবিতা ন চ মে তত্ত্বাদন্যঃ প্রিয়তরো ভুবি। । ৬৯ ॥

মনুষ্যগণের মধ্যে উপদেশকর্তার অপেক্ষা আমার অধিক প্রিয় এ জগতে আর কেউ নেই এবং আর কেউ হবেও না। কার থেকে? যিনি আমার ভক্তগণের

মধ্যে আমার উপদেশ পাঠ ও ব্যাখ্যা করবেন, সেই পথে তাদের চালাবেন; কারণ  
কল্যাণের স্রোত এই একটাই, রাজমার্গ। এখন দেখুন অধ্যয়ন-

অধ্যেষ্যতে চ য ইমং ধর্ম্যং সংবাদমাবয়োঃ।

জ্ঞানযজ্ঞেন তেনাহমিষ্ঠঃ স্যামিতি মে মতিঃ ॥৭০॥

যে ব্যক্তি আমাদের উভয়ের ধর্মময় সংবাদরূপ গ্রহ্ণ ‘অধ্যেষ্যতে’—মনন  
করবেন, তাঁর সেই জ্ঞানযজ্ঞের দ্বারা আমি পূজিত হব অর্থাৎ এইরূপ যজ্ঞ যার  
পরিণাম হল জ্ঞান, যার স্বরূপ পূর্বে বলা হয়েছে, যার তাৎপর্য—সাক্ষাৎ করে তাঁকে  
অবগত হওয়া, এই আমার অভিমত।

শ্রদ্ধাবাননসূয়শ্চ শৃণুযাদপি যো নরঃ।

সোহপি মুক্তঃ শুভাঁশ্লোকান্প্রাপ্নুয়াৎপুণ্যকর্মণাম্ ॥৭১॥

যিনি শ্রদ্ধালু ও অসূয়াশূণ্য হয়ে অর্থবোধ না হলেও এই গীতা শ্রবণ করেন,  
তিনিও পাপমুক্ত হয়ে উত্তমকর্মকারিগণের প্রাপ্য শ্রেষ্ঠ লোকলাভ করেন। অর্থাৎ  
কর্মে সক্ষম না হলে কেবল শ্রবণ করুন, তবুও উত্তম লোকলাভ হবে; কারণ এতে  
উপদেশ গ্রহণ হয়। এখনে সাতসংগি থেকে একান্তরপর্যন্ত পাঁচটি শ্লোকে ভগবান  
শ্রীকৃষ্ণ গীতার উপদেশ অনাধিকারীদের বলতে বারণ করেছেন; কিন্তু যিনি শ্রদ্ধাবান,  
তাঁকে অবশ্য বলা উচিত। যিনি শ্রবণ করবেন, তিনি আমাকে লাভ করবেন; কারণ  
অতি গোপনীয় কথা শুনে মানুষ সেই অনুসারে আচরণ করতে শুরু করে। যিনি  
ভক্তগণের মাঝে বলবেন, তাঁর সেই জ্ঞানযজ্ঞের দ্বারা আমি পূজিত হব। যজ্ঞের  
পরিণাম জ্ঞান। যিনি গীতাশাস্ত্রের অনুসারে কর্ম করতে অসমর্থ; কিন্তু শ্রদ্ধাপূর্বক  
শ্রবণ করেন, তিনি পুণ্যলোকলাভ করেন। এইপ্রকার ভগবান শ্রীকৃষ্ণ এর পাঠ-শ্রবণ  
এবং অধ্যয়নে কি ফললাভ হয়, তা বললেন। প্রশ্নটি সম্পূর্ণ হল। অবশ্যে তিনি  
অর্জুনকে জিজ্ঞাসা করলেন যে, কিছু বুঝাতে পারলে কি?

কচিদ্দেতচ্ছুতঃ পার্থ ত্বয়েকাগ্রেণ চেতসা ॥

কচিদজ্ঞানসম্মোহঃ প্রনষ্টস্তে ধনঞ্জয় ॥৭২॥

হে পার্থ! তুমি কি একাগ্রিতে এই গীতাশাস্ত্র শুনেছ? তোমার অজ্ঞানজনিত  
মোহের বিনাশ হল কি? এই প্রসঙ্গে অর্জুন বলছেন—

## অর্জুন উবাচ

**নষ্টো মোহঃ স্মৃতির্লক্ষা ত্বৎপ্রসাদান্ময়াচ্যুত।**

**স্থিতোহস্মি গতসন্দেহঃ করিয়ে বচনং তব॥৭৩॥**

আচ্যুত ! আপনার কৃপাতে আমার মোহ নষ্ট হয়েছে এবং স্মৃতিলাভ হয়েছে। (মনু যে রহস্যময় জ্ঞানের সূত্রপাত স্মৃতি-পরম্পরায় করেছিলেন, অর্জুন সেই জ্ঞানলাভ করেছিলেন।) আমি নিঃসংশয় হয়ে অবস্থিত, এখন আপনার আজ্ঞাপালন করব। যদিও সৈন্য নিরীক্ষণের সময় উভয় সেনাতেই স্বজনদের দেখে অর্জুন ব্যাকুল হয়েছিলেন। তিনি নিবেদন করেছিলেন যে, গোবিন্দ ! স্বজনদের বধ করে কিরণপে আমরা সুখী হব ? এইরূপ যুদ্ধে শাশ্বত কুলধর্ম নষ্ট হবে, পিণ্ডোদক ক্রিয়া লুপ্ত পাবে, বর্ণসঙ্কর উৎপন্ন হবে। আমরা বুদ্ধিমান् হয়েও পাপ করতে উদ্যত হয়েছি। এগুলি এড়িয়ে চলার উপায় আমরা খুঁজব না কেন ? শন্ত্রধারী কৌরবগণ শন্ত্ররহিত আমাকে রাণে মেরেই ফেলুক না কেন, সেই মৃত্যুও শ্রেয়স্কর। গোবিন্দ ! আমি যুদ্ধ করব না, বলে তিনি রথের পশ্চাত্ভাগে বসে পড়লেন।

এইপ্রকার গীতাশাস্ত্রে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণকে অর্জুন প্রশ্নের পরিপন্থ করেছিলেন। যেমন অধ্যায় ২/৭—সেই সাধন আমাকে বলুন, যা আমার পক্ষে পরমশ্রেয়স্কর। ২/৫৪—স্থিতপ্রজ্ঞ মহাপুরুষের লক্ষণ কি ? ৩/১—যদি আপনার মতে জ্ঞানযোগ শ্রেষ্ঠ, তবে আমাকে এই ভয়ঙ্কর কর্মে কেন নিযুক্ত করছেন ? ৩/৩৬—মানুষ কার দ্বারা চালিত হয়ে অনিচ্ছাসন্ত্বেও পাপাচরণে প্রবৃত্ত হয় ? ৪/৪—আপনার জন্ম অনেক পরে হয়েছে এবং সূর্যের জন্ম বহু পূর্বে হয়েছিল। আপনি সৃষ্টির প্রারম্ভে সূর্যকে এই যোগ বলেছিলেন, তা কিরণপে বুবৰ ? ৫/১—কখনও আপনি সর্বকর্মের ত্যাগ আবার কখনও নিষ্কাম কর্মের অনুষ্ঠান করতে বলছেন। এই দুটির মধ্যে যেটি প্রকৃতপক্ষে পরমশ্রেয় প্রদান করে, তা আমাকে নিশ্চয় করে বলুন। ৬/৩৫—মন যে চঞ্চল, তাহলে শিথিল যত্নশীল শ্রদ্ধাবান্ পুরুষ আপনাকে প্রাপ্ত না হলে কোন মার্গে গমন করেন ? ৮/১-২—গোবিন্দ ! যাঁর আপনি বর্ণনা করলেন, সেইরক্ষা কি ? অধ্যাত্ম কি ? অধিদৈব, অধিভূত কাকে বলে ? এই দেহে অধিযজ্ঞ কে ? সেই কর্ম কি ? মৃত্যুকালে ব্যক্তিগণ কিরণপে আপনাকে জানতে পারেন ? সাতটি প্রশ্ন করলেন। অধ্যায় ১০/১৭—তে অর্জুন জিজ্ঞাসা করলেন যে, কিরণপে সতত আপনার চিন্তন

করলে আমি আপনাকে জানতে পারব ? এবং কোন কোন বস্তুতে আপনাকে আমি ধ্যান করব ? ১১/৪—অর্জুন নিবেদন করলেন যে, যদি আমি যোগ্য হই, তাহলে যে যে বিভূতির আপনি বর্ণনা করলেন, সেগুলি আমি প্রত্যক্ষ করতে ইচ্ছা করি। ১২/১—অনন্য শ্রদ্ধার সঙ্গে নিযুক্ত যে সকল ভক্তজন উত্তমরূপে আপনার উপাসনা করেন এবং যাঁরা অব্যক্ত অক্ষরের উপাসনা করেন, উভয়ের মধ্যে কারা শ্রেষ্ঠ যোগবেত্তা ? ১৪/২১—গুণাতীতের লক্ষণ কি এবং কি উপায়ে গুণাতীত হওয়া যায় ? ১৭/১—যাঁরা শাস্ত্রবিধি পরিত্যাগ করে শ্রদ্ধাপূর্বক পূজা করেন, তাঁদের গতি কি হয় ? এবং ১৮/১—হে মহাবাহো ! আমি ত্যাগ ও সন্ন্যাসের যথার্থস্বরূপ পৃথক পৃথক ভাবে জানতে ইচ্ছা করি।

এইভাবে অর্জুন প্রশ্ন-পরিপ্রশ্ন করে গেলেন। যে প্রশ্ন তিনি করতে পারেননি, সে সকল গোপনীয় রহস্যের সমাধান ভগবান স্বয়ং করেছেন। এগুলির সমাধান হওয়ার সঙ্গে সঙ্গে তিনি প্রশ্ন থেকে বিরত হয়ে বললেন, গোবিন্দ ! এখন আমি আপনার আজ্ঞাপালন করব। বস্তুতঃ এই সমস্ত প্রশ্নই মানুষ মাত্রের জন্য। এই সমস্ত প্রশ্নের সমাধান না হলে কোন সাধকই শ্রেয়-পথ-এ এগিয়ে যেতে পারেন না। অতএব সদ্গুরুর আদেশপালন করার জন্য, শ্রেয়-পথ-এ এগিয়ে যাবার জন্য, গীতাশাস্ত্রের সম্পূর্ণটাই শুনে যাওয়া অত্যবশ্যক। অর্জুনের সমাধান হয়ে গেল। তার সঙ্গে শ্রীকৃষ্ণের শ্রীমুখ নিঃস্ত বাণীর উপসংহার হল। এই প্রসঙ্গে সঁজয় বললেন—

[একাদশ অধ্যায়ে বিরাট রূপের দর্শন দিয়ে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন যে, অর্জুন ! কেবল অনন্য ভক্তিদ্বারাই এইরূপ আমাকে প্রত্যক্ষ করতে (যেরূপ তুমি দর্শন করেছ), তত্ত্বতঃ জানতে ও প্রবেশ করতে সুলভ (১১/৫৪)। এইরূপ দর্শন করে সাক্ষাৎ আমার স্বরূপ প্রাপ্ত হন ও এখানে অর্জুনকে জিজ্ঞাসা করলেন—তোমার মোহনষ্ট হয়েছে কি ? অর্জুন বললেন যে, তাঁর মোহনাশ হয়েছে। স্মৃতিলাভ হয়েছে। এখন আপনার উপদেশপালন করব। দর্শন করে অর্জুনের মুক্ত হয়ে যাওয়ার কথা ছিল। বস্তুতঃ তাঁর যে স্মৃতিলাভ করার ছিল, তা তিনি লাভ করেছিলেন; কিন্তু শাস্ত্র উত্তরপূর্বদের জন্য হয়। তার উপযোগিতা আপনাদের সকলের জন্যই।]

### সংজ্ঞয় উবাচ

**ইত্যহং বাসুদেবস্য পার্থস্য চ মহাত্মনঃ ।**

**সংবাদমিমমঞ্চীষমান্তৃতং রোমহর্ষণম্ ॥৭৪॥**

আমি এইরপ বাসুদেব ও মহাত্মা অর্জুনের (অর্জুন মহাত্মা, যোগী, সাধক, কোন ধনুর্ধর নন, যিনি বধ করবার জন্য প্রস্তুত । অতএব মহাত্মা অর্জুনের) এই বিলক্ষণ ও রোমাঞ্চকর কথোপকথন শ্রবণ করলাম । কিরণ্পে তিনি শ্রবণে সমর্থ হয়েছিলেন ? আরও বলছেন—

**ব্যাসপ্রসাদাচ্ছুতবানেতদগুহ্যমহং পরম্ ।**

**যোগং যোগেশ্বরাত্মক্ষণংসাক্ষাৎকথয়তঃ স্বয়ম্ ॥৭৫॥**

শ্রীব্যাসদেবের কৃপাপ্রসাদে লক্ষ দিব্যচক্ষু দ্বারা আমি এই পরমগুহ্য যোগ স্বয়ং যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের মুখ থেকে সাক্ষাৎ শ্রবণ করেছি । সংজ্ঞয় শ্রীকৃষ্ণকে যোগেশ্বর বলে মনে করেন । যিনি স্বয়ং যোগী ও অন্যকেও যোগ প্রদান করতে সমর্থ, তিনিই যোগেশ্বর ।

**রাজন্সংস্মৃত্য সংস্মৃত্য সংবাদমিমান্তৃতম্ ।**

**কেশবার্জুনয়োঃ পুণ্যং হ্যয্যামি চ মুহূর্মুহঃ ॥৭৬॥**

হে রাজন ! কেশব ও অর্জুনের এই পরমকল্যাণকরণ অন্তুত কথোপকথন পুনঃ স্মরণ করে আমি মুহূর্মুহ আনন্দিত হচ্ছি । অতএব এই কথোপকথন সর্বদা স্মরণ করা উচিত ও স্মরণ করে প্রসন্ন থাকা উচিত । এখন তাঁর স্বরূপ স্মরণ করে সংজ্ঞয় বললেন—

**তচ্চ সংস্মৃত্য সংস্মৃত্য রূপমত্যন্তুতং হরেঃ ।**

**বিশ্বয়ো মে মহান् রাজন্হ্যয্যামি চ পুনঃ পুনঃ ॥৭৭॥**

হে রাজন ! হরির (যিনি শুভাশুভ হরণ করে তিনিই শুধু বিরাজিত, সেই হরির) সেই অত্যন্তুত রূপ বার বার স্মরণ করে আমার মহাবিস্ময় হচ্ছে এবং আমি পুনঃপুনঃ হাস্ত হচ্ছি । ইষ্টের স্বরূপ বার বার স্মরণ করা উচিত । অবশ্যে সংজ্ঞয় নির্ণয় করে বললেন—

যত্র যোগেশ্বরঃ কৃষে যত্র পার্থো ধনুর্ধরঃ।

তত্র শীর্বিজয়ো ভুতির্ধৰ্বা নীতিমত্তির্ম ॥৭৮॥

রাজন ! যে পক্ষে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ ও ধনুধরী অর্জুন (ধ্যানই ধনুক, ইন্দ্রিয়সমূহের দৃঢ়তাই গাণ্ডীব অর্থাৎ স্থিরভাবে যিনি ধ্যান করেন, তিনিই মহাআঘা অর্জুন) সেই পক্ষে ‘শ্রীঃ’-ঐশ্বর্য, বিজয়- যার পশ্চাতে পরাজয় নেই, ঈশ্বরীয় বিভূতি ও চলে সংসারে আচলনীতি বিরাজ করে, এই আমার অভিমত ।

বর্তমানে অর্জুন নেই । তবে কি এই নীতি, বিজয়-বিভূতি অর্জুন পর্যন্তই সীমিত ছিল । তৎসামান্যিক ছিল । তাহলে কি দ্বাপরযুগেই শেষ হয়ে গেছে ? না । যোগেশ্বর বলেছেন যে, আমি সকলের হাদয়ে অধিষ্ঠিত । আপনার হাদয়েও তিনি আছেন । অনুরাগই অর্জুন । আপনার অস্তঃকরণের ইষ্টেন্মুখ নিষ্ঠার নাম অনুরাগ । যদি আপনার হাদয় অনুরাগের পূর্ণ, তাহলে সর্বদা বাস্তবিক বিজয় ও অচল স্থিতি প্রদানকারী নীতি সর্বদাই থাকবে, এমন নয় যে কখনও তা ছিল, এখন নেই । যতক্ষণ প্রাণী থাকবে, ততক্ষণ পরমাত্মা তাদের হাদয়ে নিবাস করবেন । ব্যাকুল আঘা তাঁকে লাভ করতে চাইবে, তাদের মধ্যে যারই হাদয় তাঁকে লাভ করার জন্য অনুরাগে ভরে উঠবে, তিনিই অর্জুনের শ্রেণীভুক্ত হবেন; কারণ অনুরাগই অর্জুন । অতএব মানুষ মাত্রই প্রত্যাশী হতে পারেন ।

### নিষ্কর্ষ –

গীতাশাস্ত্রের এটাই অস্তিম অধ্যায় । শুরুতেই অর্জুন জিজ্ঞাসা করেছিলেন যে, প্রভু ! আমি ত্যাগ ও সন্ন্যাসের ভেদ এবং স্বরূপ জানতে চাই । যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ এরজন্য চারটি প্রচলিত মতের উল্লেখ করলেন । এর মধ্যেই সঠিক মতটিও ছিল । যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে যজ্ঞ, দান ও তপস্যা কোন কালে ত্যাগ করা উচিত নয় । এগুলি মনীষীগণকেও পরিত্র করে । এই তিনটিতে প্রবৃত্ত থেকে, এদের বিরোধী বিকারগুলিকে ত্যাগ করাই যথার্থ ত্যাগ । একেই সান্ত্বিক ত্যাগ বলে । ফলকামনা করে যে ত্যাগ করা হয়, তা রাজসিক ত্যাগ এবং মৌহগ্রস্ত হয়ে নিয়ত কর্মেরই ত্যাগকে তামসিক ত্যাগ বলে । এবং সন্ন্যাস ত্যাগেরই চরমোৎকৃষ্ট অবস্থাকে বলে । নিয়ত কর্ম ও ধ্যানজনিত সুখ, সান্ত্বিক সুখ । বিষয় ও ইন্দ্রিয়সমূহের ভোগ রাজসিক ও তৃষ্ণিদায়ক অন্নের উৎপত্তি থেকে রহিত দুঃখপূর্ণ সুখ তামসিক ।

মানুষ মাত্র দ্বারা শাস্ত্রের অনুকূল অথবা প্রতিকূল যে কাজ সম্পাদন হয়, তা সম্পাদনের কারণ পাঁচটি-কর্তা (মন), পৃথক পৃথক করণ (যাদের দ্বারা কর্ম সম্পন্ন হয়)। বিবেক, বৈরাগ্য, শম, দম, করণরূপে থাকলে শুভ কর্মসম্পাদন হয়। কাম, ক্রোধ, রাগ-দেব ইত্যাদি করণ হলে শুভ কাজ হয় না), নানা ইচ্ছা (ইচ্ছা অনন্ত, সব ইচ্ছা পূর্ণ হওয়া সম্ভব নয়। কেবল সেই ইচ্ছা পূর্ণ হয়, যার সঙ্গে আধার পাওয়া যায়।) চতুর্থ কারণ আধার (সাধন) ও পঞ্চম হেতু-দৈব (প্রারূপ অথবা সংস্কার)। এই পাঁচটি কারণেই প্রত্যেকটি কাজ হয়ে থাকে, তা সত্ত্বেও যাঁরা কৈবল্যস্বরূপ পরমাত্মাকে কর্তা বলে মনে করেন, সেই মুচুব্যক্তি যথার্থ জানে না। অর্থাৎ ভগবান করেন না; কিন্তু পূর্বে বলেছেন যে, অর্জুন! তুমি নিমিত্ত মাত্র হও, কর্তা-হর্তা তো আমি। অন্ততঃ সেই মহাপুরূষ কি বলতে চাইছেন?

বস্তুতঃ প্রকৃতি ও পুরুষের মাঝে এক আকর্ষণ সীমা আছে। যতক্ষণ মানুষ প্রকৃতিতে লিপ্ত, ততক্ষণ মায়া কাজ করার প্রেরণা প্রদান করে, যখন সাধক এর উর্ধ্বে উঠে ইষ্টের কাছে আত্মা সমর্পণ করেন ও ইষ্ট হাদয়-দেশ-এ রয়ী হন, তখন ভগবান করেন। অর্জুন সেই স্তরের ছিলেন, সংজ্ঞাও ছিলেন, সকলেই এই স্তরে পৌঁছাতে পারেন। অতএব এই স্তর থেকেই ভগবান প্রেরণা প্রদান করেন। পূর্ণজ্ঞাতা মহাপুরূষ, জানবার বিধি ও জ্ঞেয় পরমাত্মা-এই তিনটির সংযোগেই কর্মের প্রেরণালাভ হয়। সেইজন্য কোন মহাপুরুষের (সদ্গুরুর) সামিধ্যে গিয়ে এই গুঢ়বিষয় সম্বন্ধে জানবার জন্য প্রয়ত্নশীল হওয়া উচিত।

বর্ণ-ব্যবস্থার সম্বন্ধে চতুর্থবার উল্লেখ করে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বললেন, ইন্দ্রিয়ের দমন, মনের শমন, একাগ্রতা, কায়মনোবাক্যে তপস্যা, ঈশ্বরীয় জ্ঞানের সংগ্রহ, ঈশ্বরীয় নির্দেশ অনুযায়ী চলবার ক্ষমতা ইত্যাদি ব্রহ্মে প্রবেশ প্রদান করে যে যোগ্যতাগুলি, সেগুলি ব্রাহ্মণ শ্রেণীর কর্ম। শৌর্য, পশ্চাত্পদ না হওয়ার স্বভাব, সকলভাবের উপর প্রভৃতি, কর্মে প্রবৃত্ত হবার দক্ষতা ক্ষত্রিয় শ্রেণীর কর্ম। ইন্দ্রিয়সমূহের সংরক্ষণ, আঘাত সম্পত্তির বৃদ্ধি ইত্যাদি বৈশ্য শ্রেণীর কর্ম এবং পরিচর্যা শুন্দ্র শ্রেণীর কর্ম। শুন্দ্রের অর্থ অল্পজ্ঞ। অল্পজ্ঞ সাধক নিয়ত কর্ম চিন্তনে দুঃস্টা বসে দশ মিনিটও একাগ্রচিত্ত হতে পারে না। দেহটাকে বসিয়ে রাখে কিন্তু যে মনকে স্থির হওয়া উচিত, সে তো কুতর্কের জাল বুনতে থাকে। এরপ সাধকের কল্যাণ কিরণে হবে?

তার নিজের থেকে উন্নত ব্যক্তির সেবা করা উচিত অথবা সদ্গুরূর সেবা করা উচিত। ধীরে ধীরে তার মধ্যে সংস্কারের সৃজন হবে, সাধনপথে দ্রুত এগিয়ে যাবে। অতএব এই অঙ্গজ্ঞের কর্ম, সেবা থেকেই শুরু হবে। কর্ম একটাই-নিয়ত কর্ম, চিন্তন। যাঁরা এই কর্ম করেন, তাঁরা চারটি স্তরের অন্তর্ভুক্ত। অতি উত্তম, উত্তম, মধ্যম ও নিকৃষ্ট এরাই হলেন ক্রমশঃ ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ও শুদ্ধ। মানুষকে নয় বরং গুণের মাধ্যমে কর্মকে চারভাগে ভাগ করা হয়েছে। এই হল গীতোক্ত বর্ণ।

তত্ত্ব স্পষ্ট করে তিনি বললেন, অর্জুন! সেই পরমসিদ্ধির বিধি বলব, যা জ্ঞানের পরানিষ্ঠা। বিবেক, বৈরাগ্য, শম, দম, ধারাবাহিক চিন্তন ও ধ্যান প্রবৃত্তি, ব্রহ্মে প্রবেশ প্রদানকারী সমস্ত যোগ্যতা যখন পরিপক্ষ হয়; কাম, ক্রোধ, মোহ, রাগ-দ্রেষাদি প্রকৃতিতে ভ্রমণ করাতে থাকে যে প্রবৃত্তিগুলি, সেগুলি যখন সম্পূর্ণরূপে শান্ত হয়, তখন ব্যক্তি ব্রহ্মকে জানার যোগ্য হয়। সেই যোগ্যতাকে পরাভক্তি বলে। পরাভক্তির দ্বারা তত্ত্বকে জানা যায়। তত্ত্ব কি? বললেন—আমি যে এবং যে যে বিভূতিযুক্ত, তা যিনি জানেন অর্থাৎ পরমাত্মা যে অব্যক্ত, শাশ্঵ত, অপরিবর্তনশীল যে যে অলৌকিক গুণধর্মযুক্ত, তা যিনি জানেন, তিনি আমাতে স্থিত হন। অতএব তত্ত্ব—পরমতত্ত্বকে বলে, পাঁচ তত্ত্ব, পাঁচিশতত্ত্বকে বলে না। প্রাপ্তির পর আত্মা সেই স্বরূপে স্থিত হয় এবং সেই সেই গুণধর্মে যুক্ত হয়।

ঈশ্বরের নিবাসস্থান সম্পর্কে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলছেন, অর্জুন! সেই ঈশ্বর সকল ভূতপ্রাণীর হাদয়ে অধিষ্ঠিত; কিন্তু মায়ারূপ যন্ত্রে আরও হয়ে লোক আন্ত হয়ে ঘূরছে, সেইজন্য জানতে পারে না। অতএব অর্জুন! তুমি হাদয়ে স্থিত সেই ঈশ্বরের শরণাগত হও। এর থেকেও গোপনীয় রহস্য আরও আছে যে, সর্বধর্মের চিন্তাত্যাগ করে তুমি আমার শরণাগত হও। তুমি আমাকে প্রাপ্ত হবে। এই রহস্য অনাধিকারীকে বলা উচিত নয়। যে ভক্ত নয় তাকেও বলা উচিত নয়; কিন্তু ভক্তকে অবশ্য বলা উচিত। তার কাছে গোপন করা উচিত নয়, না হলে তার কল্যাণ কিভাবে সম্ভব? অবশেষে শ্রীকৃষ্ণ জিজ্ঞাসা করলেন যে, অর্জুন! আমি যা বললাম, তা তুমি উত্তমরূপে শুনেছ-বুঝোছ, তোমার মোহ নষ্ট হয়েছে কি? অর্জুন বললেন—ভগবন্ত! আমার মোহ নষ্ট হয়েছে। আমি স্মৃতিলাভ করেছি। আপনি যা বলছেন তা-ই সত্য, এখন আমি তা-ই করব।

সঞ্জয়, যিনি উত্তমরূপে উভয়ের কথোপকথন শুনেছিলেন নির্ণয় করে বললেন যে, শ্রীকৃষ্ণ হলেন মহাযোগেশ্বর ও অর্জুন হলেন মহাত্মা। তাঁদের কথোপকথন বার বার স্মরণ করে তিনি আনন্দিত হচ্ছেন। অতএব কথোপকথন স্মরণ করা উচিত। হরির রূপ স্মরণ করেও তিনি বার বার আনন্দিত হচ্ছেন। অতএব বার বার স্বরূপের স্মরণ করা উচিত। ধ্যান করা উচিত। যে পক্ষে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ ও যে পক্ষে মহাত্মা অর্জুন। সেই পক্ষেই শ্রীঃ, বিজয়-বিভূতি ও ধ্রুবনীতি। সৃষ্টির নীতি আজ যেমন, কাল তেমন থাকবে না। ধ্রুব একমাত্র পরমাত্মা। তাতে প্রবেশ প্রদান করে যে ধ্রুবনীতি, তা-ও সেই এক। যদি শ্রীকৃষ্ণ ও অর্জুনকে দ্বাপরযুগের ব্যক্তি বলে চিন্তা করা হয়, তবে তো আজ না কৃষ্ণ আছেন, না আছেন অর্জুন! বিজয়-বিভূতি কি তাহলে লাভ করা সম্ভব নয়? তাহলে গীতাশাস্ত্রের উপযোগিতা কি আমাদের কাছে? কিন্তু না, শ্রীকৃষ্ণ যোগী ছিলেন। অনুরাগপূরিত হৃদয় যে মহাত্মার, তিনিই অর্জুন। তাঁরা সর্বদা আছেন এবং থাকবেন। শ্রীকৃষ্ণ নিজের পরিচয় দিয়ে বললেন, তিনি অব্যক্ত, কিন্তু যেভাব আশ্রয় করেছি, সেই ঈশ্বর সকলের হৃদয়ে বাস করেন। তিনি সদা ছিলেন ও সদাই থাকবেন। সকলকে তাঁর শরণাগত হতে হবে। যিনি শরণাগত, তিনি মহাত্মা, অনুরাগী এবং অনুরাগকেই অর্জুন বলা হয়। কল্যাণের জন্য কোন স্থিতপ্রজ্ঞ মহাপুরুষের শরণাগত হওয়া নিতান্ত আবশ্যক; কারণ তিনিই একমাত্র প্রেরক।

বর্তমান অধ্যায়ে সন্ধ্যাসের স্বরূপ স্পষ্ট করা হয়েছে, সর্বস্বের ন্যাসকেই সন্ধ্যাস বলে। কেবল কৌপীন ধারণ সন্ধ্যাস নয়; বরং এর সঙ্গে নির্জনে বাস ও নির্ধারিত কর্মে সামর্থ্য অনুসারে অথবা সমর্পণ করে নিরন্তর প্রয়ত্ন করা অপরিহার্য। প্রাপ্তির পর সর্বকর্মের ত্যাগকেই সন্ধ্যাস বলে, সন্ধ্যাস ও মোক্ষ একই পর্যায়। এটাই সন্ধ্যাসের পরাকার্তা। অতএব—

ওঁ তৎসদিতি শ্রীমদ্ভগবদ্গীতাসূপনিষৎসু ব্ৰহ্মবিদ্যায়াং যোগশাস্ত্রে  
শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে ‘সন্ধ্যাসযোগে’ নাম অষ্টাদশোহথ্যায়ঃ। ১৮।।

এই প্রকার শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারপী উপনিষদ্ এবং ব্ৰহ্মবিদ্যা তথা যোগশাস্ত্র বিষয়ক শ্রীকৃষ্ণ ও অর্জুনের সংবাদে ‘সন্ধ্যাসযোগ’ নামক অষ্টাদশ অধ্যায় পূর্ণ হল।

ইতি শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দস্য শিষ্য স্বামীঅড় গড়ানন্দকৃতে  
শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ ‘যথার্থগীতা’ ভাষ্যে ‘সন্ধ্যাসযোগে’ নাম  
অষ্টাদশোহধ্যায়ঃ ॥১৮॥

এই প্রকার শ্রীমৎপরমহংস পরমানন্দজীর শিষ্য স্বামীঅড় গড়ানন্দকৃত  
‘শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা’র ভাষ্য ‘যথার্থ গীতা’তে ‘সন্ধ্যাসযোগ’ নামক অষ্টাদশ অধ্যায়  
সমাপ্ত হল।

॥ হরিঃ ওঁ তৎসৎ ॥

## উপসংহার

প্রায়ই জনসাধারণ টীকার মধ্যে নতুন তত্ত্ব খোঁজেন; কিন্তু সত্য সবসময় সত্য হয়, নৃতন বা পুরানো হয় না। নতুন সংবাদ খবরের কাগজে ছাপা হয়। সত্য অপরিবর্তনশীল তাহলে তা নতুন করে আর কেউ কি বলবে? যদি বলে, তবে বুঝতে হবে সে সত্যের সন্ধান পায়নি। প্রত্যেক মহাপুরুষ সেই পথে চলে লক্ষ্য পৌঁছানোর পর সেই একমাত্র সত্যই বলবেন। তাঁরা সমাজে বিভেদের সৃষ্টি করেন না, যদি কেউ করেন, তাহলে বুঝতে হবে তিনি সত্যে পৌঁছাননি। শ্রীকৃষ্ণও সেই সত্য সম্বন্ধেই বলেছেন, যা পূর্বে মনীষীগণ দর্শন করেছিলেন, লাভ করেছিলেন ও ভবিষ্যতেও যদি কোন মহাপুরুষের আবির্ভাব হয়, তবে তিনিও সেই একই কথা বলবেন।

মহাপুরুষ ও তাঁর কার্যপ্রণালী—মহাপুরুষ সর্বদা সমাজে প্রচলিত সত্যের নামে যে কুরীতি-কুপথ থাকে, তা খণ্ডন করে কল্যাণের পথটি প্রশস্ত করেন। সেই কল্যাণের পথ পূর্ব থেকেই প্রচলিত থাকে, কিন্তু তার সঙ্গে সঙ্গে আরও মত ও পথ প্রচলিত হয়, যা সত্য বলে মনে হয়। এই সকল মত ও পথের মধ্যে যথার্থ মত কোনটি, তা নির্ণয় করা কঠিন হয়। মহাপুরুষ সত্যে স্থিত সেইজন্য সত্যটি চিনে, আন্ত জনসাধারণকে সত্যের দিকে এগিয়ে যাবার প্রেরণা প্রদান করেন। রাম, কৃষ্ণ, বুদ্ধ, মহাবীর, যীশুখৃষ্ট, হজরত মহম্মদ, কবীর, গুরু নানক প্রভৃতি প্রত্যেক মহাপুরুষ এই প্রয়াস করেছেন। মহাপুরুষের তিরোধানের পর অনুগামীগণ তাঁর নির্দেশিত পথে না চলে তাঁর জন্মস্থান, মৃত্যুস্থান ও যেখানে যেখানে তিনি বিচরণ করেছেন, সেই স্থানগুলির পূজা করা শুরু করেন। ক্রমশঃ তাঁর মূর্তি গড়ে পূজা করা শুরু করেন। যদিও আরভে ভক্তেরা তাঁদের স্মৃতি রক্ষার্থে এইরূপ করেন; কিন্তু কালান্তরে সমাজ আন্ত হয়ে পড়ে ও শেষে অম গোঁড়ামীর রূপ নিয়ে নেয়।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণও তৎকালীন সমাজে সত্যের নামে প্রচলিত রীতি-নীতির খণ্ডন করে সমাজকে কল্যাণের প্রশস্ত পথ দেখিয়েছিলেন। দ্বিতীয় অধ্যায়ের ১৬শ শ্লোকে তিনি বলেছেন, অর্জুন! আসৎ বস্ত্রের অস্তিত্ব নেই ও সত্যের তিনিকালে অভাব নেই। আমি ভগবান সেইজন্য বলছিনা, বরং এর ভেদে তত্ত্বশীংগণ অনুভব করেছেন;

ও সেই সত্য সম্বন্ধেই আমি বলছি। অর্যোদশ অধ্যায়ে তিনি ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞের বর্ণনা সেইভাবেই করেছেন, যা ‘ঝৰিভিৰহুথাগীতম্’- ঝৰিগণ দ্বারাও প্রায়ই গায়ন করা হয়েছে। অষ্টাদশ অধ্যায়ে ত্যাগ ও সন্ধ্যাস তত্ত্ব বুঝিয়ে তিনি তৎকালীন প্রচলিত চারটি মতের মধ্যে থেকে একটি চয়ন করে সেটিতেই নিজের সমর্থন দিলেন।

**সন্ধ্যাস-**কৃষ্ণকালে অগ্নিত্যাগী ও ঈশ্বর চিন্তনের ত্যাগীগণ নিজেদের যোগী, সন্ধ্যাসী বলে একটা কর্মত্যাগী সম্পদারের সৃষ্টি করেছিল। এর খণ্ডন করে শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন, “জ্ঞানমার্গ ও ভক্তিমার্গ, উভয়মার্গের মধ্যে একটির অনুসারেও কর্মত্যাগ করার বিধান নেই।” উভয়মার্গেই কর্ম করতেই হবে। কর্ম করতে করতে একসময় সাধানা এত সূক্ষ্ম হয়ে যায় যে সন্ধানের অভাব হয়ে যায়, এই স্থিতিকেই পূর্ণ সন্ধ্যাস বলে এর আগে কাউকে সন্ধ্যাসী নাম দেওয়া যেতে পারে না। কেবল ক্রিয়াত্যাগ করলে ও অগ্নিস্পর্শ না করলে কেউ সন্ধ্যাসী হয় না বা যোগী হয় না। (এই বিষয়ে দ্বিতীয়, তৃতীয়, পঞ্চম, ষষ্ঠ ও বিশেষ করে অষ্টাদশ অধ্যায়ে বিস্তারিত ভাবে বলা হয়েছে।)

**কর্ম-**এইরূপ ভাস্তি কর্মের প্রতিও ছিল। দ্বিতীয় অধ্যায়ে ২/৩৯শ শ্লোকে যোগেশ্বর বলেছেন যে, অর্জুন! এহে বুদ্ধির কথা তোমার জন্য জ্ঞানযোগের বিষয়ে হয়েছে, এখন একেই তুমি নিষ্কাম কর্মযোগের বিষয়ে শোন। এর সঙ্গে যুক্ত হয়ে তুমি কর্ম-বন্ধনের নাশ উত্তমরূপে করতে পারবে। এই কর্মের অঙ্গ আচরণও জন্ম-মৃত্যুর মহাভীতি থেকে উদ্বার করে। এই নিষ্কাম কর্মযোগে নিশ্চয়াত্মক ক্রিয়া একটাই, বুদ্ধি ও দিক্ষণ একটাই; কিন্তু অবিবেকীগণের বুদ্ধি অনস্তশাখাযুক্ত হয়, সেইজন্য তারা কর্মের নামে অনন্ত ক্রিয়ার বিস্তার করে নেয়। অর্জুন! তুমি নিয়ত কর্ম কর। অর্থাৎ ক্রিয়া তো অনেক আছে কিন্তু সে সমস্ত কর্ম নয়। কর্ম হল একটা নির্ধারিত দিক। কর্ম জন্ম-জন্মান্তরের দেহযাত্রা সমাপ্ত করে। যদি এরপরে আর একটা মাত্রও জন্ম নিতে হয়, তাহলে যাত্রা সম্পূর্ণ হয়েছে কোথায়?

**যজ্ঞ-**এই নিয়ত কর্মটি কি? শ্রীকৃষ্ণ স্পষ্ট করেছেন যে, ‘যজ্ঞার্থকর্মণোহন্যত্র লোকাহয়ং কর্মবন্ধনঃ।’-অর্জুন! যজ্ঞের প্রক্রিয়াই কর্ম। এই কর্ম ভিন্ন জগতে যা কিছু অনুষ্ঠান করা হয়, তা ইহলোকেরই বন্ধন, সেগুলি কর্ম নয়। কর্ম তো এই সংসার-বন্ধন থেকে মোক্ষ প্রদান করে। এখন প্রশ্ন যজ্ঞ কি, যার অনুষ্ঠান করলে কর্ম সম্পাদন হবে? চতুর্থ অধ্যায়ে শ্রীকৃষ্ণ যজ্ঞের তেরো-চৌদ্দটি পদ্মতির সম্বন্ধে

বলেছেন যা হল পরমাত্মায় প্রবেশের বিধি-বিশেষ-এর বর্ণনা, এ সমস্তই নিঃশ্঵াস-প্রশ্বাস, ধ্যান, চিন্তন এবং ইন্দ্রিয়-সংযম ইত্যাদি দ্বারা সম্পাদিত হয়। শ্রীকৃষ্ণ এও স্পষ্ট করলেন যে, ভৌতিক (সাংসারিক) দ্রব্যগুলির সঙ্গ এই যজ্ঞের কোন সম্বন্ধ নেই। ভৌতিক দ্রব্যগুলির দ্বারা অনুষ্ঠিত যজ্ঞ জ্ঞানযজ্ঞ অপেক্ষা অত্যন্ত। আপনি কোটি টাকার হোম করুন না কেন। সম্পূর্ণ যজ্ঞ মন এবং ইন্দ্রিয়সমূহের অন্তঃক্রিয়া দ্বারা সম্পাদিত হয়ে। যজ্ঞ সম্পূর্ণ হবার পর যজ্ঞ থেকে যে অমৃত-তত্ত্ব লাভ হয়, সেই তত্ত্ব সম্বন্ধে জ্ঞানকেই জ্ঞান বলে। যে যোগী সেই জ্ঞানামৃত পান করনে, তিনি সনাতন ব্রহ্মে প্রবেশ পান। যিনি সনাতন ব্রহ্মে প্রবেশ করেছেন, সেই পুরুষের কর্ম করার আর কোন প্রয়োজন থাকে না, সেইজন্য যাবন্মাত্র কর্ম সেই সাক্ষাত্কারসম্মতি জ্ঞানে সমাহিত হয়ে যায়। তিনি কর্মবন্ধন থেকে মুক্ত হন। এইরূপ নিধারিত যজ্ঞকে কার্যরূপ দেওয়া কর্ম। কর্মের শুরু অর্থ হল—আরাধনা।

এই নিয়ত কর্ম, যজ্ঞার্থ কর্ম অথবা তদর্থ কর্মের অতিরিক্ত গীতাশাস্ত্রে অন্য কোন কর্ম নেই। এর উপর শ্রীকৃষ্ণ বিভিন্ন স্থানে জোর দিয়েছেন। ষষ্ঠ অধ্যায়ে এটিকেই তিনি ‘কার্যম্ কর্ম’ বলেছেন। যোড়শ অধ্যায়ে বলেছেন যে কাম, ক্রেত্ব ও লোভ ত্যাগ করলেই সেই কর্ম আরম্ভ হয়, যা পরমশ্রেয় প্রদান করে। সাংসারিক কর্মগুলিতে যে যত ব্যস্ত, তার মধ্যে কাম, ক্রেত্ব ও লোভ সেই পরিমাণেই থাকে, সম্মুদ্ধ দেখা গেছে। এই নিয়ত কর্মকে তিনি শাস্ত্রবিধানোক্ত কর্মের নাম দিয়েছেন। গীতা স্বরং পূর্ণ শাস্ত্র। সর্বোপরি শাস্ত্র বৈদ, বেদের সার উপনিষদ् এবং সেগুলির সারাংশ যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের এই বাণী গীতাশাস্ত্র। সপ্তদশ ও অষ্টাদশ অধ্যায়েও শাস্ত্রবিধিদ্বারা নিধারিত কর্ম, নিয়ত, কর্ম, কর্তব্য কর্ম ও পুণ্যকর্মদ্বারা ইঙ্গিত করে তিনি বারংবার জোর দিয়ে বলেছেন যে, নিয়ত কর্মই পরমকল্যাণকর।

যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের এত জোর দেওয়া সত্ত্বেও আপনারা সেই নিয়ত কর্ম না করে, শ্রীকৃষ্ণের কথা অনুসারে না চলে কপোলকল্পিত অনুমান করেন যে, যা কিছু কার্য করা হয় এই সংসারে, সেগুলিই কর্ম। কিছু ত্যাগ করার প্রয়োজন নেই কেবল কর্মফলের কামনা ত্যাগ কর, তবেই হবে নিষ্কাম কর্মযোগ। কর্তব্য ভেবে করে গেলেই কর্তব্যযোগ হবে। সমস্ত ক্রিয়া নারায়ণকে সমর্পণ করে করলেই সমর্পণ যোগ হবে। এইরূপ যজ্ঞের নামে আমরা ভূত্যজ্ঞ, পিতৃযজ্ঞ, পঞ্চযজ্ঞ, বিষ্ণুর নিমিত্তে যজ্ঞ কল্পনা করি এবং সেই ক্রিয়াতে স্বাহা বলে উঠে পড়ি। যদি যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ

স্পষ্ট করে না বলতেন, তাহলে আমরা যা খুশি করতাম ক্ষতি ছিল না; কিন্তু যখন বলেছেন, ও যতটা বলেছেন, ততটাই মেনে চলুন। কিন্তু আমরা সেই অনুসারে চলতে পারি না। বৎশ-পরম্পরায় বহু রীতি-নীতি, পূজা-পদ্ধতি আমরা মেনে চলে আসছি যেগুলি আমাদের মনে গভীরভাবে রেখাপাত করেছে। সাংসারিক বস্তু আমরা ত্যাগ করতে চাইলে হয়ত করতেও পারি; কিন্তু এই পূর্বসংক্ষার আমরা মন্তিষ্ঠ থেকে মুছে ফেলতে পারি না। শ্রীকৃষ্ণের বাণীও আমরা সেই অনুসারেই গ্রহণ করি। গীতা অত্যন্ত সহজ বোধগম্য, সরল সংস্কৃতে লিখিত শাস্ত্র, যদি আপনি শুধু এতে নিহিত যথার্থকেই গ্রহণ করেন, তবুও আর কথনও মনে সংশয় জাগবে না। এই প্রয়াসই প্রস্তুত পুস্তকে করা হয়েছে।

যুদ্ধ-যদি যজ্ঞ ও কর্ম এই দুটি প্রশঁসিত যথার্থ বোধগম্য হয়, তাহলে যুদ্ধ, বর্ণ-ব্যবস্থা, বর্ণ সংকর, জ্ঞানযোগ, কর্মযোগ অথবা সংক্ষেপে সম্পূর্ণ গীতাশাস্ত্রই আপনাদের সহজবোধ্য হবে। অর্জুন যুদ্ধে ইচ্ছুক ছিলেন না, তিনি ধনুর্বণ ত্যাগ করে রথের পশ্চাত্তাগে গিয়ে বসেছিলেন; কিন্তু যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ একমাত্র কর্মের শিক্ষা দিয়ে কেবল কর্ম করার পথই দেখালেন না বরং অর্জুনকে সেই কর্মপথে চালিতও করেছিলেন। যুদ্ধ হয়েছিল, এবিষয়ে কোন সন্দেহ নেই। গীতাশাস্ত্রে ১৫-২০ টা শ্লোক এমন আছে যেগুলিতে বার বার বলা হয়েছে যে, অর্জুন! তুমি যুদ্ধ কর। কিন্তু একটা শ্লোকও এমন নেই, যা বাহ্য যুদ্ধের সমর্থন করে। (দ্রষ্টব্য-অধ্যায় ২, ৩, ১১, ১৫ এবং ১৮) কারণ যে কর্মের উপর জোর দেওয়া হয়েছে—তা ছিল নিয়ত কর্ম, যা নির্জনে বাস, চিন্তকে সংযত করে ধ্যান করলেই হয়। যদি কর্মের স্বরূপ এটাই, নির্জনে চিত্ত ধ্যানে নিযুক্ত থাকবে, তাহলে যুদ্ধ কিরণে হবে? গীতোক্ত কল্যাণ যদি কেবল যোদ্ধাদের জন্যই, তাহলে গীতা থেকে আপনার লাভ কি হবে? আপনার সমক্ষে অর্জুনের মত কোন যুদ্ধের পরিস্থিতিও তো নেই। বস্তুতঃ তখনও যে পরিস্থিতি ছিল আজও তেমনি আছে। যখন চিন্তকে সবদীক থেকে একাগ্র করে আপনি হৃদয়-দেশ-এ ধ্যান করা শুরু করবেন, তখন কাম, ক্রোধ, রাগ, দ্বেষাদি বিকার আপনার চিন্তকে স্থির হতে দেবে না। সেই বিকারগুলির সঙ্গে সংঘর্ষ, তাদের নিশ্চিহ্ন করাই যুদ্ধ। বিশ্বে কোথাও না কোথাও যুদ্ধ লেগেই আছে; কিন্তু তা থেকে কল্যাণ নয় বরং বিনাশই হয়। এর পরিণাম শান্তি বলুন অথবা পরিস্থিতি। অন্য কোন উপায়ে শান্তিলাভ হয় না। শান্তি তখনই লাভ হয়, যখন এই আত্মা নিজের

শাশ্বত স্থিতিলাভ করে। এটাই একমাত্র শাস্তি যার পশ্চাতে অশাস্তি নেই। কিন্তু এই শাস্তি সাধনগম্য, এর জন্য নিয়ত কর্মের বিধান নিশ্চিত করা হয়েছে।

**বর্ণ**—এই কর্মকে চারটি বর্ণে বিভক্ত করা হয়েছে। প্রত্যেক সাধক চিন্তন-ক্রিয়াতে প্রবৃত্ত হন; কিন্তু তাদের মধ্যে কেউ নিঃশ্বাস-প্রশ্বাসে-এর গতি রূদ্ধ করতে সমর্থ হন; তো কেউ বা দুই ঘন্টা চিন্তনে বসেও দশ মিনিটের জন্য একাগ্রচিন্ত হতে পারেন না। এইরূপ স্থিতিযুক্ত অল্লজ্ঞ সাধক শুন্দু শ্রেণীযুক্ত। এই শ্রেণীর সাধকগণ নিজের স্বাভাবিক ক্ষমতা পরিচর্যা থেকেই কর্ম আরম্ভ করবেন। ক্রমোন্তি দ্বারা এই শুন্দু শ্রেণীর সাধকই বৈশ্য, ক্ষত্রিয় ও বিপ্লবীর যোগ্যতালাভ করবেন। কিন্তু ব্রাহ্মণ শ্রেণীও দোষযুক্ত; কারণ এই শ্রেণীতে সাধক ও ব্রহ্ম ভিন্নভিন্নই থাকেন। ব্রহ্মে স্থিতিলাভ হলে সাধক তার পর ব্রাহ্মণও থাকেন না।

বর্ণের অর্থ আকৃতি। এই দেহটা আপনার আকৃতি নয়। যেমন আপনার বৃত্তি, আপনার আকৃতিও সেইরূপ। শ্রীকৃষ্ণ বলছেন—অর্জুন! পুরুষ শুন্দাবান् হয়, তার শুন্দা কোথাও না কোথাও অবশ্যই স্থির থাকে। যেরূপ শুন্দা সেই পুরুষের সেইরূপ সে নিজেও হয়। যেমন বৃত্তি, তেমনি হয় পুরুষ। বর্ণ কর্মের ক্ষমতার আন্তরিক মানদণ্ড; কিন্তু লোকে নিয়ত কর্মত্যাগ করে বাহ্য সমাজে জন্মের আধারের উপর জাতিকে বর্ণ বলে তাদের জীবিকা নির্ধারিত করে দিয়েছে, যা শুধু একটা সামাজিক ব্যবস্থা ছিল। তারা কর্মের যথার্থরূপকে বিকৃত করে, যাতে তাদের সারাহীন সামাজিক মর্যাদা ও জীবিকার উপর কোন প্রভাব না পড়ে। কালান্তরে বর্ণের নির্ধারণ কেবল জন্ম থেকে হতে আরম্ভ করেছে; কিন্তু এরূপ নয়। শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন—চার বর্ণের সৃষ্টি আমি করেছি। ভারতবর্ষের বাইরে কি এই সৃষ্টি নেই? অন্যত্র কোথাও এইরূপ জাতি-ব্যবস্থা নেই। ভারতবর্ষে এই ব্যবস্থার অঙ্গরূপ সহস্র জাতি-উপজাতি বিদ্যমান। তবে কি শ্রীকৃষ্ণ মানুষের বিভাগ চার শ্রেণীতে করেছেন? না, ‘গুণকর্ম বিভাগশঃ’—গুণের আধারে কর্মের বিভাগ করেছেন। ‘ক্রমাণি প্রবিভক্তানি’—কর্মকে ভাগ করা হয়েছে। কর্ম কি তা বুঝতে পারলে বর্ণও স্পষ্ট হবে এবং বর্ণ বুঝলে বর্ণসংকরের যথার্থরূপ তাপনি অবগত হবেন।

**বর্ণসংক্র**—এই কর্মপথ থেকে বিচ্যুত হওয়াই বর্ণসংক্র। আঢ়ার শুন্দবর্ণ পরমাত্মা। যে কর্ম পরমাত্মাতে স্থিতি প্রদান করে সেই কর্ম থেকে বিচলিত হয়ে প্রকৃতিতে জড়িয়ে যাওয়াই বর্ণসংক্র। শ্রীকৃষ্ণ স্পষ্ট করলেন যে, এই কর্মের অনুষ্ঠান

না করে কেউই সেই স্বরূপলাভ করতে পারে না এবং প্রাপ্তিযুক্ত মহাপুরুষকে কর্ম করলে না কোন লাভ হয় এবং ত্যাগ করলে না কোন লোকসান হয়। তাসত্ত্বেও লোক-সংগ্রহের জন্য তাঁরা কর্ম করেন। সেই মহাপুরুষদের মত আমারও প্রাপ্তিযোগ্য কোন বস্তু অপ্রাপ্ত নেই; কিন্তু তবুও আমি অনুগামীদের হিতার্থে কর্মে প্রবৃত্ত থাকি। যদি কর্মে প্রবৃত্ত না থাকি তবে সকলেই বর্ণসক্র হয়ে যাবে। স্ত্রীগণ কল্পুষিত হলে বর্ণসক্র উৎপন্ন হয় একথা শোনা যায়; কিন্তু এখানে শ্রীকৃষ্ণ বলছেন যে, স্বরূপস্থ মহাপুরুষ কর্ম না করলে অনুগামীগণ বর্ণসক্র হবে। সেই মহাপুরুষকে কর্ম না করতে দেখে তারাও কর্মত্যাগ করে প্রকৃতিতে ভাস্ত হয়ে ঘুরতে থাকবে, বর্ণসক্র হয়ে যাবে; কারণ এই কর্ম করেই পরম নেন্দ্রম্যের স্থিতি, নিজের শুদ্ধবর্ণ পরমাত্মাকে লাভ করা যেতে পারে।

**জ্ঞানযোগ ও কর্মযোগ—কর্ম একটাই, নিয়ত কর্ম, আরাধনা;** কিন্তু এই কর্ম সম্পাদনের দৃষ্টিকোণ দুটি। নিজের সামর্থ্য অনুসারে, লাভ-লোকসানের নির্ণয় করে এই কর্মে প্রবৃত্ত হওয়া ‘জ্ঞানযোগ’। এই মার্গের সাধক জানেন যে, “আজ আমার এই স্থিতি, এর পর এই ভূমিকায় পৌঁছাব। তার পর স্বরূপলাভ করব।” এইরপ ভাব নিয়ে কর্মে প্রবৃত্ত হন। নিজ স্থিতি অবগত হয়ে চলেন, সেইজন্য এদের জ্ঞানমার্গী বলা হয়। সমর্পণের সঙ্গে সেই একই কর্মে প্রবৃত্ত হওয়া, লাভ-লোকসানের দায়িত্ব ইষ্টের হাতে তুলে চলা নিষ্কাম কর্মযোগ, ভক্তিমার্গ। উভয়মার্গেরই প্রেরক সদ্গুরু। একই মহাপুরুষের নিকট শিক্ষা নিয়ে একজন স্বাবলম্বী হয়ে সেই কর্মে প্রবৃত্ত হন এবং অন্যজন তাঁর নিকট শিক্ষা নিয়ে, তাঁর উপর নির্ভর করে প্রবৃত্ত হন। পার্থক্য কেবল এইটুকুই। সেইজন্য যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন—অর্জুন! সাংখ্যযোগদ্বারা যে পরমসত্য লাভ হয়, সেই পরমসত্য নিষ্কাম কর্মযোগদ্বারাও লাভ হয়। যিনি দুটিকেই এক দেখেন, তিনিই যথার্থ দেখেন। দুটি ক্রিয়ার বক্তা তত্ত্বদর্শী একজনই, ক্রিয়াও একটা-আরাধনা। উভয়মার্গীই কামনাগুলিকে ত্যাগ করেন এবং পরিগামণ একটাই। কেবল কর্ম-এর করার দৃষ্টিকোণ দুটি।

**একমাত্র পরমাত্মা—নিয়ত কর্ম হচ্ছে, মন ও ইদ্রিয়সমূহের একটা নির্ধারিত অন্তর্ক্রিয়া।** যখন এটাই কর্মের স্বরূপ, তখন মন্দির, মসজিদ; চার্চ নির্মাণ করে দেবী-দেবতার মূর্তি অথবা প্রতীক পূজা কর্তৃতা সঙ্গত? ভারতবর্ষে হিন্দু সমাজ (বস্তুতঃ এরা সনাতনধর্মী)। তাদের পূর্বপুরুষগণ পরমসত্যের দিগন্দর্শন করে দেশে-বিদেশ-এ

তা প্রচার করেছেন। সেই পথের পথিক, বিশ্বে যেখানেই থাক, সে সনাতনধর্মী। এত গৌরবশালী হিন্দুসমাজ) কামনাদ্বারা অভিভূত হয়ে বিবিধ ভাস্তিতে পড়েছে। শ্রীকৃষ্ণ বলছেন, অর্জুন! দেবস্থানে দেবতা বলে কোন শক্তির অস্তিত্ব নেই। যেখানেই মানুষের শ্রদ্ধা স্থির হয়, তার আড়ালে দাঁড়িয়ে আমিই ফলপ্রদান করি, তার শ্রদ্ধা পুষ্ট করি; কারণ সর্বত্র আমি। কিন্তু তার সেই পূজা অবিধিপূর্বক অনুষ্ঠিত হয়, সেই জন্য ফল নষ্ট হয়ে যায়। কামনাদ্বারা যাদের জ্ঞান অপহৃত, সেই মৃত্যগণই অন্যান্য দেবতাগণের পূজা করে। সাত্ত্বিক ব্যক্তিগণ দেবতাগণের পূজা করে, রাজসিক ব্যক্তিগণ যক্ষ-রাক্ষসগণের এবং তামসিক ব্যক্তিগণ ভূত-প্রেত-এর পূজা করে। কঠিন তপস্যা করে; কিন্তু অর্জুন! তারা দেহস্থিত ভূতসমুদায় এবং অস্তঃকরণে স্থিত পরমাত্মারূপ আমাকে কৃশ করে, পূজা করে না। তাদের তুমি নিশ্চয় আসুরিক স্বভাবযুক্ত জানবে। এর থেকে বেশী শ্রীকৃষ্ণ কি বলতেন? তিনি স্পষ্ট বলেছেন—অর্জুন! ঈশ্বর সকল প্রাণীর হাদয়ে বাস করেন, কেবল তাঁর শরণে যাও। পূজাস্থলী হাদয়, বহির্জগৎ নয়। তা সত্ত্বেও লোকে প্রস্তর-জল, মন্দির-মসজিদ, দেবী-দেবতার পূজা নিয়ে ব্যস্ত থাকে। তাদের সঙ্গে সঙ্গে শ্রীকৃষ্ণের মূর্তিরও পূজা করে। শ্রীকৃষ্ণের আদেশানুসারে চলার জন্য জোর দিতেন এবং যারা সারাজীবন মূর্তি-পূজার খণ্ডন করেছেন সেই বুদ্ধের অনুযায়ীগণও যথাক্রমে বুদ্ধদেবের মূর্তি তৈরী করে পূজা করা আরম্ভ করেছেন। যদিও বুদ্ধদেব তাঁর নিকট শিষ্য আনন্দকে বলেছিলেন-আনন্দ! তথাগতের শরীর-পূজায় সময় নষ্ট করো না।

মন্দির, মসজিদ, চার্চ, তীর্থ, মূর্তি এবং স্মারকসমূহদ্বারা পূর্ববর্তী মহাপুরুষ-গণের স্মৃতিরক্ষা হয়ে থাকে, যাতে তাঁদের উপলক্ষ্মির কথা স্মরণ হতে থাকে। মহাত্মা স্ত্রী-পুরুষ উভয়ই হয়েছেন। জনককন্যা ‘সীতা’ পূর্বজন্মে এক ব্রাহ্মণ কন্যা ছিলেন। পিতাদ্বারা প্রেরিত হয়ে পরমব্রহ্ম লাভের জন্য তিনি তপস্যা করেছিলেন; কিন্তু সেই জন্মে সফল হতে পারেন নি। পরের জন্মে তিনি রামকে পেয়েছিলেন এবং চিন্ময়, অবিনাশী, আদিশক্তিরূপে প্রতিষ্ঠিত হয়েছিলেন। ঠিক সেই প্রকার রাজকুলে উৎপন্ন মীরার মধ্যে পরমাত্মার প্রতি ভক্তির প্রস্ফুটন হয়েছিল। সবকিছু ত্যাগ করে তিনি ঈশ্বর-চিন্তনে নিযুক্ত হয়েছিলেন। পথের সব বাধা-বিপত্তি অতিক্রম করে তিনি সফল হয়েছিলেন। এঁদের স্মৃতি রক্ষার জন্য মন্দির নির্মাণ করা হয়েছে, স্মারক তৈরী হয়েছে, যাতে সমাজ এঁদের স্মরণ করে এঁদের উচ্চাদর্শের দ্বারা অনুপ্রাণিত

হতে পারে। মীরা, সীতা অথবা এই পথের যত শোধকর্তা মহাপুরুষ আমাদের আদর্শ। আমাদের সর্বদা এঁদের পদচিহ্নের অনুসরণ করা উচিত; কিন্তু এর চাইতে বড় ভুল কি হবে, যদি আমরা কেবল তাঁদের চরণে ফুল অর্পণ করে, চন্দন লাগিয়ে নিজেদের কর্তব্যের ইতি বলে মনে করি।

প্রায়ই এরূপ হয় যে, যিনি যাঁর আদর্শ হন, তাঁর মূর্তি, ছবি, খড়ম, তাঁর স্থান অথবা সম্বন্ধ কোন বস্তু-দর্শনে, শ্রবণে মনে শৃঙ্খা উৎপন্ন হয়। এটা স্বাভাবিক। আমরাও আমাদের গুরুদেবের ছবির অপমান করতে পারি না; কারণ তিনি আমাদের আদর্শ। তাঁরই প্রেরণা ও কথনানুসারে আমাদের চলতে হবে। তাঁর যে স্বরূপ, ক্রমশঃ চলে সেই স্বরূপের প্রাপ্তি আমাদেরও অভিষ্ঠ এবং এটাই হল তাঁর যথার্থ পূজা। এতদুর পর্যন্ত তো ঠিক আছে যে, বস্তুতঃ যিনি আদর্শ, তাঁকে অনাদর করা উচিত নয়; কিন্তু শুধু পত্র-পুস্প অর্পণ করাটাই ভক্তি মনে করে সেটাকেই কল্যাণের সাধন বলে মেনে নেওয়া, আমাদের লক্ষ্য থেকে বহুদূরে সরিয়ে দেবে।

নিজের আদর্শের উপদেশ হস্তয়ঙ্গম করার জন্য এবং সেই অনুসারে চলার প্রেরণা গ্রহণ করার জন্যই এই স্মারকগুলির উপযোগিতা আছে; তা সেই স্থানকে আশ্রম, মন্দির, মসজিদ, চার্চ, মঠ, বিহার, গুরুদ্বারা যা-ই বলুন না কেন। শর্ত এই যে, সেই কেন্দ্রগুলির সম্পর্ক ধর্মের সঙ্গে থাকবে। যাঁর প্রতিকৃতি আছে, তিনি কি করেছেন? কিরূপে তপস্যা করেছেন? কিরূপে লাভ করেছেন? কেবল এতটা জানার জন্যই তো আমরা সেখানে যাই এবং যাওয়াও উচিত; কিন্তু যদি এই স্থানগুলিতে মহাপুরুষের পদচিহ্ন অনুসরণের বিষয়ে বলা না হয়, করে শেখানো না হয়, কল্যাণের ব্যবস্থা না থাকে তাহলে সেইসব স্থানের কোন উপযোগিতা নেই। সেখানে কুরীতি ছাড়া আর কিছু পাওয়া যাবে না। সেখানে গেলে ক্ষতিই হবে। ব্যক্তিগত ভাবে ঘরে-ঘরে, অলিতে-গলিতে গিয়ে উপদেশ দেওয়া থেকে সামুহিক উপদেশ কেন্দ্রূপে এই ধার্মিক সংস্থাগুলির স্থাপনা করা হয়েছিল; কিন্তু কালান্তরে এই প্রেরণাস্থলী সমুহই মূর্তি-পূজা ও গোঁড়ামীর কেন্দ্র হয়ে দাঁড়িয়েছে, ও এখান থেকেই যত ভ্রম উৎপন্ন হয়ে চলেছে।

গ্রন্থ—সেইজন্য শাস্ত্রানুশীলন আবশ্যক, যাতে আপনি সেই নির্দিষ্ট ক্রিয়া বুঝতে পারেন, সেই নির্দিষ্ট ক্রিয়াকে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ নিয়ত কর্ম বলেছেন এবং যখন বুঝতে পারবেন সেই নিয়ত কর্ম কি, তখন কর্মে প্রবৃত্ত হবেন। যখনই বিস্মৃত হবেন,

তখনই আবার অধ্যয়ন করে নিন। এমন করবেন না যে গ্রন্থটিকে প্রণাম করে অক্ষত, চন্দনাদি দ্রব্য দিয়ে পূজা করে তুলে রেখে দেবেন। গ্রন্থ পথ-নির্দেশক, যা সাধনা সম্পূর্ণ হওয়া পর্যন্ত সঙ্গে থাকে। এই গ্রন্থের সাহায্যেই এগিয়ে যান নিজের গন্তব্যের দিকে। যখন হৃদয়ে ইষ্টকে ধারণ করতে সক্ষম হবেন, তখন সেই ইষ্টক গ্রন্থের স্থান গ্রহণ করবেন। অতএব স্মৃতিরক্ষা করা লোকসানের কিছু নয়; কিন্তু এই স্মৃতিচিহ্নগুলির শুধু পূজা করেই সন্তুষ্ট হয়ে যাওয়াতে কোন লাভ হয় না।

**ধর্ম**—(অধ্যায় ২/১৬-২৯) যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে, অসৎ বস্ত্র অস্তিত্ব নেই এবং সত্ত্বের কোনকালে অভাব নেই। পরমাত্মাই সত্য, শাশ্঵ত, অজর, অমর, এমন অপরিবর্তনশীল এবং সনাতন; কিন্তু সেই পরমাত্মা অচিন্ত্য এবং অগোচর, চিন্তের তরঙ্গের অতীত। চিন্ত নিরোধ কিরণে সন্তুষ্ট? চিন্ত নিরঞ্জন করে পরমাত্মাকে লাভ করার বিধি-বিশেষের নাম কর্ম। এই কর্মকে করে যাওয়াই ধর্ম ও দায়িত্ব।

গীতা (অধ্যায় ২/৪০)তে বলেছেন যে, অর্জুন! এই কর্মযোগে আরম্ভে নাশ নেই। এই কর্মনূপ ধর্মের অল্প সাধনও জন্ম-মৃত্যুর মহাভয় থেকে উদ্বার করে অর্থাৎ এই কর্মকে করে যাওয়াই ধর্ম।

এই নিয়ত কর্ম (সাধন-পথ) কে সাধকের স্বভাবজাত ক্ষমতানুসারে চার শ্রেণীতে ভাগ করা হয়েছে। কর্ম অবগত হয়ে মানুষ যখন থেকে কর্মের অনুষ্ঠান করে, তখন সেই আরম্ভিক অবস্থাতে সে শুন্দ। ক্রমশঃঃ যখন বিধি আয়তে আসে, তখন সেই বৈশ্য শ্রেণীভুক্ত। প্রকৃতির সংঘর্ষকে সহ্য করার ক্ষমতা এবং শৌর্যযুক্ত হলে সেই ব্যক্তিই ক্ষত্রিয় এবং ব্রহ্মের তদ্বপ হওয়ার ক্ষমতা, জ্ঞান (বাস্তবিক জ্ঞান), বিজ্ঞান (সৈক্ষ্ণ্যীয় বাণী শোনা) সেই অস্তিত্বের উপর নির্ভর থাকার ক্ষমতা-এবংপ যোগ্যতা লাভ হলে সেই ব্যক্তিই ব্রাহ্মণ। সেইজন্য যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ (গীতা, অধ্যায় ১৮/৪৬-৪৭) বলেছেন যে, স্বভাবে যে ক্ষমতা আছে, সেই অনুসারে কর্মে প্রবৃত্ত হওয়া স্বধর্ম। গুরুত্ব কর হলেও স্বভাবে উপলব্ধ স্বধর্ম শ্রেয়স্কর ও ক্ষমতালাভ না করে অন্যের উন্নত কর্মের অনুকরণ ক্ষতিকর। স্বধর্মে মৃত্যুও শ্রেয়স্কর; কারণ বস্ত্র পরিবর্তন করলে পরিবর্তন কর্তার তো পরিবর্তন হয় না। তার সাধনার ক্রম আবার সেখান থেকেই আরম্ভ হবে, যেখানে ছেদ পড়েছিল। ক্রমে ক্রমে চলে তিনি পরমসিদ্ধি অবিনাশী পদলাভ করেন।

এরই উপর জোর দিয়ে বলছেন যে, যে পরমাত্মা থেকে সকল প্রাণীর উৎপত্তি হয়েছে, যিনি সর্বব্যাপ্ত, স্বভাবে যে ক্ষমতা বিদ্যমান সেই ক্ষমতানুসারে তাঁকে উত্তমরূপে পূজা করে মানুষ পরমসিদ্ধি লাভ করে। অর্থাৎ নিশ্চিত বিধিদ্বারা এক পরমাত্মার চিন্তনই ধর্ম।

ধর্মে প্রবেশ কাদের? ধর্মের আচরণ করার অধিকার কাদের?- এ বিষয়ে যোগেশ্বর স্পষ্ট বলেছেন যে, “অর্জুন! অত্যন্ত দুরাচারীও যদি অনন্যভাবে আমাকে ভজনা করে (অনন্য অর্থাৎ অন্য নয়), আমা ভিন্ন অন্য কারণে ভজনা করে না, কেবল আমাকে ভজনা করে, ‘ক্ষিপ্রং ভবতি ধর্মাত্মা’—সে শীঘ্রই ধর্মাত্মা হয়ে যায়, তার আত্মা ধর্মের সঙ্গে যুক্ত হয়ে যায়।” অতএব শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে—ধর্মাত্মা সেই, যে এক পরমাত্মাতে অনন্য নিষ্ঠার সঙ্গে নিযুক্ত। ধর্মাত্মা সেই, যে একমাত্র পরমাত্মার প্রাপ্তির জন্য নিয়ত কর্মের আচরণ করে। ধর্মাত্মা সেই, যে স্বভাবজাত ক্ষমতানুসারে পরমাত্মার খোঁজে রত।

অবশ্যে বলছেন যে—“সর্বধর্মান্পরিত্যজ্য মামেকং শরণং ব্রজ!”—অর্জুন! সকল ধর্মের অনুষ্ঠান পরিত্যাগ করে একমাত্র আমার শরণাগত হও। অতএব একমাত্র পরমাত্মার প্রতি সমর্পিত ব্যক্তিই ধার্মিক। একমাত্র পরমাত্মাতে শ্রদ্ধা স্থির করাটাই ধর্ম। সেই এক পরমাত্মার প্রাপ্তির নিশ্চিত ক্রিয়ার অনুষ্ঠান করা ধর্ম। এইরূপ স্থিতিপ্রাপ্ত মহাপুরুষ, আত্মাত্মপুরুষগণের সিদ্ধান্তই সৃষ্টিতে একমাত্র ধর্ম। তাঁদের শরণাগত হওয়া উচিত তাঁরা কিরণে সেই পরমাত্মাকে লাভ করেছেন? কোন পথে গমন করেছেন? সেই মার্গ একটাই, সেই মার্গে চলা ধর্ম।

ধর্ম আচরণের বিষয়। সেই আচরণ কেবল একটাই—“ব্যবসায়াত্মিকা বুদ্ধিরেকেহ কুরুনন্দন।” (২/৪১) এই কর্মযোগে নিশ্চয়াত্মিকা ক্রিয়া একটাই—ইন্দ্রিয়সমূহের চেষ্টা এবং মনের কার্যকে সংযম করে আত্মাতে (পরাংপর ব্রহ্মে) প্রবাহিত করা (৪/২৭)।

ধর্ম-পরিবর্তন—সনাতন ধর্মের আদিদেশ ভারতবর্ষে একসময় কুপথা-কুরীতি এতবেশী প্রচলিত ছিল যে, মুসলমানদের আক্রমণের সময় তাদের ধর্ম আক্রমণকারীদের হাতের এক গ্রাস ভাত খাওয়াতে, দুণেক জল পান করাতেই নষ্ট হয়ে যেতে লাগল। ধর্মভ্রষ্ট ঘোষিত হাজার হাজার হিন্দু আত্মহত্যা করে নিয়েছিল।

ধর্মের জন্য তারা আত্মবলিদান করতে প্রস্তুত ছিল, কিন্তু ধর্ম বুঝে করলে তবে তো। ধর্ম লজ্জাবতী লতার মত হয়ে গিয়েছিল। লজ্জাবতী লতার পাতা ছুঁলেই তার পাতা সঙ্কুচিত হয়ে যায়, হাত সরালেই আবার বিকশিত হয়; কিন্তু তাদের সনাতন ধর্ম তো এমন লোপ পেল যে তার আর বিকাশ হলই না। যে সনাতন আত্মাকে ভৌতিক বস্ত্রগুলি স্পর্শও করতে পারে না, তা কি কখনও ছোঁয়া-খাওয়াতে নষ্ট হয়? আপনার মৃত্যু তো তরবারির আঘাতে হবে আর ধর্মের ছোঁয়াতেই মৃত্যু হবে? সতি কি ধর্ম নষ্ট হয়েছিল? কখনও না, ধর্মের নামে যে কুরীতি প্রচলিত ছিল, তা নষ্ট হয়েছিল। ফিরোজ তুগলকের শাসনকালে বয়ানার কাজী মুগীসুন্দীন ব্যবস্থা দিয়েছিল যে, হিন্দুদের মুখ খুলে ঢলা উচিত, কারণ যদি কোন মুসলমান থুতু ফেলতে চায়, তাহলে সেই হিন্দু ধর্মাঞ্চা হয়ে যাবে কারণ তার কোন ধর্ম নেই। কি খারাপ বলেছিল সে? মুখে থুতু ফেললে তো একজনই মুসলমান হবে, কুরোতে থুতু ফেললে তো হাজার হাজার লোক মুসলমান হয়ে যাবে। বস্তুতঃ সেই কাজী আততায়ী ছিল অথবা সেই সময়ের হিন্দু সমাজ?

সেই যুগে যারা এইভাবে ধর্ম-পরিবর্তন করে নিয়েছিল, তারা কি সত্যি কোন ধর্ম দীক্ষিত হয়েছিল? হিন্দু থেকে মুসলমান হওয়া অথবা এক প্রকারের আচার-ব্যবহার থেকে অন্য প্রকারের সমাজ ব্যবস্থায় ঢলে যাওয়াটা ধর্ম নয়। এই প্রকার পরিকল্পিত ভাবে ষড়যন্ত্র করে যারা তাদের ধর্মস্তরণ করেছিল, তারা কি ধর্মাঞ্চা ছিল? তারা তো আরও বেশী কুরীতির শিকার ছিল। হিন্দুরা আরও বেশী কুপথায় জড়িয়ে পড়েছিল। অবিকসিত ও পথভ্রষ্ট গোষ্ঠীগুলিকে সভ্য করার জন্য মহম্মদ বিবাহ, তালাক, উইলের কাগজ দেনা-পাওনা, সুদ, সাক্ষী, প্রতিজ্ঞা, প্রায়শ্চিত্ত, অন্নসংস্থান, খাওয়া-দাওয়া, আচার-ব্যবহার ইত্যাদি বিষয়ে এক সামাজিক ব্যবস্থা দিয়েছিলেন এবং মূর্তিপূজা, ব্যভিচার, চুরি, মদ, জুয়া, মা-ঠাকুরমার সঙ্গে বিবাহে করতে নিয়েধ করে ছিলেন। সমলৈঙ্গিক এবং রঞ্জস্বলা স্ত্রীর সঙ্গে মৈথুন নিয়েধ করে, রোজার দিনগুলিতেও এই নিয়ম শিথিল করেছিলেন। স্বর্গে বহু সমবয়স্ক, অপূর্ব সুন্দরী ও কিশোর বালকদের প্রলোভন দিয়েছিলেন। এটা ধর্ম ছিল না, এক প্রকারের সামাজিক ব্যবস্থা ছিল। এইরূপ কিছু কিছু বলে তিনি বাসনায় নিমজ্জিত সমাজকে সেদিক থেকে বিমুখ করে নিজের দিকে উন্মুখ করার চেষ্টা করেছিলেন। স্ত্রীজাতিকে নিয়ে কোন চিন্তাই করেননি যে, তারা স্বর্গে গিয়ে কতগুলো পুরুষলাভ

করবে? এদোষ তাঁর নয়, দোষ সেই দেশকাল ও পরিস্থিতির, যখন স্তু জাতির ইচ্ছা-আকাঙ্ক্ষার প্রতি ধ্যান দেওয়া হত না।

মহম্মদ সাহেব যেটাকে ধর্ম বলেছেন, সেদিকে কারও ধ্যানই নেই। তিনি বলেছিলেন যে, যে পুরুষের একটা শ্঵াসও সেই খোদার নাম ছাড়া ব্যর্থ যায়, তাকে খোদা সেইভাবেই প্রশংসন করে, যেভাবে কোন পাপীকে তার পাপের বিষয়ে প্রশংসন করা হয়। যার শাস্তি হল সর্বদার জন্য (দোজখ) নরকে বাস। কয়জন সত্যিকার মুসলমান, কোটি-কোটি ব্যক্তির মধ্যে দু'একজনই এমন রয়েছেন, যাঁরা শ্বাস-এ নিরস্তর খোদার নাম জপ করে চলেছেন। বাকী সকলের শ্বাস ব্যর্থই যায়। পাপীদের জন্য যে শাস্তির বিধান এদের ক্ষেত্রেও সেটাই, তা'হল নরক (দোজখ)। মহম্মদ বলেছিলেন যে ব্যক্তি কাউকে কষ্ট দেয় না, পশুদের আঘাত করে না সে আকাশ থেকে খোদার যে আওয়াজ আসে, তা শুনতে পায়। এটা প্রত্যেক স্থানের জন্য প্রযোজ্য ছিল; কিন্তু অনুগামীগণ এটাকে অন্যভাবে বলতে শুরু করে দিয়েছিল যে, মকাতে একটা মসজিদ আছে, সেখানে সবুজ ঘাস তোলা উচিত নয়, সেই মসজিদে কোন পশুকে হত্যা করা উচিত নয়, সেস্থানে কাউকে আঘাত করা উচিত নয় এবং যে অবস্থাতে আগে ছিল, আবার সেই অবস্থাতেই গিয়ে পৌঁছেছিল। মহম্মদ খোদার আওয়াজ শোনার আগে কি কোন মসজিদ নির্মাণ করেছিলেন? কখনও কোন মসজিদে কি কোরানের বাক্যও শুনেছে কেউ। এই মসজিদ তো সেই মহাপুরুষের স্মৃতিচিহ্ন মাত্র। মহম্মদ সাহেবের আশয় তবরেজ বুরোছিলেন, মনসুর বুরোছিলেন, ইকবাল বুরোছিলেন; কিন্তু তাঁরা সাম্প্রদায়িক ব্যক্তিদের শিকার হয়েছিলেন, তাঁদের যাতনা দেওয়া হয়েছিল। সুকরাতকে বিষ দেওয়া হয়েছিল; কারণ তিনি লোকেদের নাস্তিক করে দিচ্ছিলেন, যীশুর উপরও এইরূপ দোষারোপ করা হয়েছিল, তাঁকে শূলে চড়ানো হয়েছিল; কারণ তিনি বিশ্রাম সরবাথের দিনেও কাজ করতেন, অঙ্গদের চক্ষুদান করতেন। এই ভারতেও হয়। যখনই কোন প্রত্যক্ষদর্শী মহাপুরুষ সত্যের দিকে ইঙ্গিত করেন, তখনই এই মন্দির, মসজিদ, মঠ, সম্প্রদায় ও তীর্থস্থানের ভরসায় যাদের জীবিকা চলে, তারা হায় হায় করতে শুরু করে, অধর্ম অধর্ম বলে চিৎকার আরম্ভ করে দেয়। কারও-কারও এগুলি থেকে লক্ষ লক্ষ, কোটি কোটি টাকার আয় হয়, আবার কারও ডাল-রুটির ব্যবস্থা কোন রকমে হয়ে যায়। বাস্তবিকতার প্রচারে তাদের জীবিকা সংকটে পড়তে পারে ভেবে তারা সত্যটিকে প্রকাশ হতে দেয় না।

আর দেবেও না। এছাড়া তাদের বিরোধিতার আর কোন কারণ নেই। সুদূরকালে এইসব স্মৃতি কেন রক্ষা করা হয়েছিল, সেসব কারণ তাদের জানা নেই।

**গৃহস্থের অধিকার—প্রায়ই** লোকে জিজ্ঞাসা করে যে যদি কর্মের স্বরূপ এটাই, যাতে নির্জনে বাস, ইলিয়সংযম, নিরস্তর চিন্তন ও ধ্যান আবশ্যিক, তবে তো গীতাশাস্ত্র গৃহস্থদের জন্য নয়, অনুপযোগী। তবে তো গীতাশাস্ত্র কেবল সাধুদের জন্যই। কিন্তু তা নয়। গীতাশাস্ত্র মূলতঃ তাদের জন্য, যারা এই পথের পথিক ও অংশতঃ তাদের জন্যও, যে এই পথের পথিক হতে ইচ্ছুক। গীতাশাস্ত্রের আশয় মানুষমাত্রের জন্য সমান। সদ্গৃহস্থের জন্য তো এর উপরোগিতা বিশেষ; কারণ কর্ম গৃহস্থাশ্রম থেকেই আরম্ভ হয়।

শ্রীকৃষ্ণ বলেছিলেন, অর্জুন ! এই নিষ্কাম কর্মযোগে আরম্ভের নাশ নেই। এর অল্পসাধনও জন্ম-মৃত্যুর মহাভয় থেকে উদ্ধার করে। আপনিই বলুন, অল্প সাধন কে করবে, গৃহস্থ অথবা বৈরাগী ? গৃহস্থই এরজন্য অল্পসময় দেবে, এটা তার জন্যই। চতুর্থ অধ্যায়ের ৩৬শ শ্লোকে তিনি বলেছেন—অর্জুন ! যদি তুমি সকল পাপী থেকে অধিক পাপিষ্ঠ হও, তবুও জ্ঞানরূপ নৌকাদ্বারা নিঃসন্দেহে উত্তীর্ণ হবে। অধিক পাপী কে ? যে অনবরত নিযুক্ত সে অথবা যে এখন নিযুক্ত হবে সে ? অতএব সদ্গৃহস্থ আশ্রম থেকেই কর্ম আরম্ভ হয়। সষ্ঠ অধ্যায়ের শ্লোক সংখ্যা ৩৭ থেকে ৪৫ এর মধ্যে অর্জুন জিজ্ঞাসা করলেন—ভগবন ! শিথিল প্রয়ত্নশীল শ্রদ্ধাবান् পুরুষ পরমগতি লাভ না করে কোন গতি প্রাপ্ত হন ? শ্রীকৃষ্ণ বললেন—অর্জুন ! যোগ থেকে বিচলিত শিথিল প্রয়ত্নশীল পুরুষের কখনও বিনাশ হয় না। সেই যোগভূষ্ট পুরুষ শ্রীমানদের [‘শুচীনাম’-শুদ্ধ (সত্য) আচরণযুক্ত যে সেই শ্রীমান্] ঘরে জন্মগ্রহণ করে যোগীরুলে প্রবেশ পান, সাধনার দিকে আকর্ষিত হয়ে বহুজন্ম ধরে চলে সেই স্থানে পৌঁছে যান, যাকে পরমগতি, পরমধার বলা হয়। শিথিল প্রয়ত্নশীল কে ? যোগভূষ্ট হয়ে তিনি কোথায় জন্মগ্রহণ করেন ? গৃহস্থই তো হন। সেখান থেকেই তিনি সাধনোন্মুখ হন। নবম অধ্যায়ের ৩০শ শ্লোকে তিনি বলেছেন যে, অত্যন্ত দুরাচারীও যদি অনন্যভাবে আমাকে ভজনা করে, তবে তিনি সাধুই; কারণ তিনি নিশ্চয় করে সঠিক পথে প্রবৃত্ত হয়েছেন। অতি দুরাচারী কে ? যিনি ভজনে প্রবৃত্ত তিনি অথবা সেই ব্যক্তি যে প্রবৃত্তি হয়নি। নবম অধ্যায়ের ৩২শ শ্লোকে বলেছেন—স্ত্রী, বৈশ্য, শুদ্ধ এবং পাপযোনিযুক্তই হোক না কেন, আমাকে আশ্রয় করে সাধন করলে

পরমগতিলাভ করে। শ্রীকৃষ্ণ এরূপ বলেননি যে, তাকে হিন্দু, খৃষ্টান অথবা মুসলমান হতে হবে। তিনি বলেছেন, অতি দুরাচারী পাতকী হোক না কেন, আমার শরণাগত হলে পরমগতিলাভ করে। অতএব গীতাশাস্ত্র মানুষ মাত্রের জন্য। সদ্গৃহস্থ আশ্রম থেকেই এই কর্ম আরম্ভ হয়, ক্রমশঃ সেই সদ্গৃহস্থই যোগী হন, পূর্ণত্যাগী হন ও তত্ত্বের দিগন্দর্শন করে তাতেই প্রবেশ পান, যাঁর সম্বন্ধে শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন—‘জ্ঞানী আমারই স্বরূপ’।

নারী—গীতা অনুসারে মানবশরীর হ'ল বস্ত্রের সমান। ঠিক যেভাবে আমরা মলিন বস্ত্র পরিত্যাগ করে নতুন কাপড় পরিধান করি, সেইভাবেই সকল প্রাণীর শ্বাসী জীবাত্মাও পুরনো শরীর (বস্ত্র) বর্জন করে নতুন দেহে (বস্ত্রে) প্রবেশ করে। আপনার কায়িক আকার পুরুষের হোক বা নারীর-তা শুধু জীবাত্মার পরিধেয় মাত্র।

জগতে পুরুষের শ্রেণী দুটি—ক্ষর ও অক্ষর। সকল প্রাণীর দেহ ক্ষর পুরুষ অথবা পরিবর্তনশীল পুরুষ। মন ও ইলিয়সমূহ যখন কুটস্থ হয়, তখন পুরুষ অক্ষর হন। সেই অক্ষর পুরুষের কখনও বিনাশ হয় না। এটা ভজনার অবস্থা-বিশেষ।

বিভিন্ন সময়ে সমাজে নারীজাতিকে সম্মান বা অসম্মানের চোখে দেখা হয়েছে। কিন্তু গীতার অপৌরুষেয় বাণীতে একথা উল্লিখিত—যেকোন জীবাত্মা তা সে শুন্দ (অল্লজ্জ) হোক, বৈশ্য (বিধিপ্রাপ্ত) হোক, স্ত্রী-পুরুষ যে কেউ আমার শরণাপন্ন হয়ে পরমগতি লাভ করে। তাই আধ্যাত্মিক পথে নারীজাতিরও পুরুষের পাশে সমান স্থান রয়েছে।

ভৌতিক সমৃদ্ধি—গীতাশাস্ত্র পরমকল্যাণকর, তার সঙ্গে মানুষের জন্য আবশ্যিক ভৌতিক বস্তুগুলির বিধানও করে। নবম অধ্যায়ের ২০ থেকে ২২শ শ্লোকপর্যন্ত যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, বহুলোক নির্ধারিত বিধি দ্বারা আমাকে পূজা করে পরিবর্তে স্বর্গ কামনা করে, আমি তাদের বিশাল স্বর্গলোক প্রদান করি। যা চাইবে, আমি তা-ই দেব; কিন্তু উপভোগের পর ফুরিয়ে যাবে, কারণ স্঵র্গের ভোগও নশ্বর। তাদের আবার জন্ম নিতে হবে। হ্যাঁ যেহেতু তারা আমার সঙ্গে যুক্ত, সেইজন্য তারা নষ্ট হবে না; কারণ আমি কল্যাণস্বরূপ। আমি তাদের ভোগবস্তু প্রদান করি ও ধীরে ধীরে সে সমস্ত থেকে নিবৃত্ত করে আবার তাদের কল্যাণের পথে পরিচালিত করি।

ক্ষেত্র—যে পরমাত্মার শ্রীমুখের বাণী এই গীতা, তিনি স্বয়ং পরিচয় দিয়েছেন যে, ‘ইদং শরীরং কৌন্তে ক্ষেত্রমিত্যভীয়তে।’— অর্জুন ! এই দেহটাই ক্ষেত্র (খেত) এতে ভাল-মন্দ কর্মের যে বীজ বপন করা হয়, তা সংস্কাররূপে সঞ্চিত হয় ও কালান্তরে সুখ-দুঃখরূপ ভোগের রূপে তা লাভ হয়। আসুরী সম্পদ অধম যোনিতে জন্মের কারণ, কিন্তু দৈবী সম্পদ পরমদেব পরমাত্মাকে লাভ করতে সাহায্য করে। সদ্গুরুর সামিধ্য থেকেই এদের মধ্যে নির্ণায়ক যুদ্ধের আরম্ভ হয়, ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞ-এর যুদ্ধ এটাই ।

টীকাকারগণ বলেন- এক কুরুক্ষেত্র বহির্জগতে স্থিত ও অন্যটি মনের অন্তরালে, গীতাশাস্ত্রের একটা অর্থ বাহ্য, অন্যটা আন্তরিক; কিন্তু এরূপ নয়। বক্তা বলেন এক কথা; কিন্তু শ্রোতাগণ নিজ নিজ বুদ্ধি অনুসারে বিষয়বস্তু ভিন্নভিন্ন ভাবে গ্রহণ করে। সেইজন্য বহু অর্থ প্রতীত হয়। সাধন-পথে ক্রমশঃ চলে যে পুরুষই শ্রীকৃষ্ণের স্তরে পৌঁছবেন, তাঁর সম্মুখেও সেই দৃশ্যই হবে যা শ্রীকৃষ্ণের সম্মুখে ছিল। সেই মহাপুরুষই তাঁর মনোগত ভাবগুলি, গীতা শাস্ত্রের সংকেতগুলি বুঝতে পারবেন ও বোঝাতে পারবেন ।

গীতাশাস্ত্রের একটা শ্লোকও বাহ্য জগতের চিত্রণ করে না। খাওয়া, পরা ও থাকা সম্বন্ধে আপনি অবগত। জীবনযাত্রার রীতি, মান্যতা, লোকরীতি-নীতিতে দেশকাল ও পরিস্থিতির অনুকূল পরিবর্তন প্রকৃতির অধীন। এ সম্বন্ধে শ্রীকৃষ্ণ কি ব্যবস্থা দেবেন ? কোথাও মেয়েদের বাহ্যল্য, সেখানে বহুবিবাহ হয়, আবার কোথাও তাদের সংখ্যা কম। সেখানে কয়েকজন ভাই একটিমাত্র মেয়েকে বিবাহ করে, এখানে শ্রীকৃষ্ণ কি ব্যবস্থা দেবেন ? দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধের পর জাপানে জনসংখ্যার ন্যূনতা সমস্যা হয়ে দাঁড়িয়েছিল, তখন সেখানে তিরিশটি সন্তানের জননীকে ‘মাদারল্যাণ্ড’ (দেশমাতা) উপাধি দ্বারা সম্মানিত করা হয়েছিল। বৈদিককালীন ভারতে দশটি সন্তান উৎপন্ন করার বিধান ছিল, এখন “এক অথবা দো বচে, হোতে হ্যায় ঘরমেঁ আচ্ছে”, সরকারী প্রচার অভিযান চলেছে। যদি তারা বেঁচে না-ও থাকল, তাতে চিন্তার কিছু নেই, সমস্যার সমাধানই হয়। শ্রীকৃষ্ণ এতে কি ব্যবস্থা দেবেন ?

শ্রেয়—কাম, ক্রোধ, লোভ, মোহাদি বিকারের সম্বন্ধে শিক্ষা দেবার জন্য কোথাও বিদ্যালয় খোলা হয়নি, কিন্তু তা সম্ভুও এই বিকারসমূহের বিষয়ে বয়োবৃন্দদের থেকে ছোটরাই অনেক সময় বেশী প্রবীণ দেখা গোছে। এ বিষয়ে

ভগবান শ্রীকৃষ্ণ কি শিক্ষা দেবেন? এসব তো প্রকৃতিদ্বারা স্বচালিত। একসময় বেদ প্রভৃতির শিক্ষা দেওয়া হত, ধনুর্বিদ্যা-গদাযুদ্ধ শেখানো হত, বর্তমানে এগুলি কে শিখতে চায়? আজকের যুগে পিস্তল চালাচ্ছে। স্বচালিত যন্ত্রের যুগ এটা। কখনও রথ-সংগ্রামে শেখার প্রয়োজন ছিল, ঘোড়ার বিষ্ঠা পরিষ্কার করতে হত—আজকের যুগে মোটরের তেল পরিষ্কার করা হয়। এ বিষয়ে শ্রীকৃষ্ণ কি বলবেন? পূর্বকালে স্বাহা বললে বর্ষা হত, আজকের যুগে বৈজ্ঞানিক উপায়-উপকরণের সাহায্যে মনের মত ফসল উৎপাদন করা হয়। যোগেশ্বর বলছেন যে, প্রকৃতিজাত ত্রিগুণের বশীভূত হয়ে মানুষ পরিস্থিতি অনুসারে সামঞ্জস্য স্থাপিত করে চলেছে। এই গুণগুলি স্বত-ই তাদের গড়ে নিতে সক্ষম। ভৌতিকশাস্ত্র, সমাজশাস্ত্র, শিক্ষাশাস্ত্র, অর্থশাস্ত্র, তর্কশাস্ত্র প্রভৃতি মানুষ রচনা করতেই থাকে। একটা বস্তুই এমন, যা মানুষ জানে না, চেনে না, আছে তার কাছেই; কিন্তু সে সমস্তে সে বিস্মৃত। গীতাশাস্ত্র অবণ করে অর্জুনের স্মৃতিলাভ হয়েছিল। সেই স্মৃতি হল পরমাত্মার স্মৃতি, যা হৃদয়-দেশে থাকলেও বহুদূরে আছে। মানুষ তা-ই পেতে চায়; কিন্তু পথ খুঁজে পায়না। কেবল কল্যাণের পথ সমস্তে মানুষ অনভিজ্ঞ। মোহ-এর আবরণ এত ঘন যে, সে বিষয়ে চিন্তা করার সময়ই জোটে না। সেই মহাপুরুষ আপনার জন্য সময় দিয়েছেন, সেই কর্ম স্পষ্ট করেছেন, যার অনুষ্ঠান করার নির্দেশ গীতাশাস্ত্রে দেওয়া হয়েছে। গীতা মুখ্যতঃ এটাই প্রদান করে। ভৌতিক বস্তুও লাভ হয়; কিন্তু শ্রেষ্ঠ-এর তুলনায় প্রেয় নগণ্য।

যোগপ্রদাতা—যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে, কল্যাণপথের পরিচয়, এর সাধন ও প্রাপ্তি সদ্গুরু দ্বারাই সন্তুষ্ট। তীর্থপ্রমণ, এদিক-সেদিক আস্ত হয়ে ঘূরলে অথবা কায়-ক্লেশ দ্বারাও সেই কল্যাণপথের জ্ঞান ততক্ষণ হয় না, যতক্ষণ কোন সন্তুষ্টার নির্দেশিত না হয়। চতুর্থ অধ্যায়ের ৩৪শ শ্লোকে শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে অর্জুন! তুমি তত্ত্বদৰ্শী মহাপুরুষের শরণাগত হয়ে উত্তমরূপে দণ্ডবৎ-প্রণাম করে, নিষ্পত্তিভাবে সেবা করে, প্রশ্ন করে সেই জ্ঞান লাভ কর। প্রাপ্তির একমাত্র উপায় হল, কোন মহাপুরুষের সান্নিধ্য এবং তাঁর সেবা। তাঁর অনুসারে চলে যোগের সংসিদ্ধিকালে সেই তত্ত্বলাভ হবে। অষ্টাদশ অধ্যায়ের ১৮শ শ্লোকে তিনি বলেছেন যে, পরিজ্ঞাতা অর্থাৎ তত্ত্বদৰ্শী মহাপুরুষ, জ্ঞান অর্থাৎ জ্ঞানার বিধি ও জ্ঞেয় পরমাত্মা তিনটিই কর্মের প্রেরক। অতএব শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে মহাপুরুষই কর্মের মাধ্যম, কেবল পুস্তক নয়। পুস্তকে বিধি মাত্র থাকে। ঔসুধের বিবরণ লিখিত কাগজে পড়লেই যেমন রোগ

আরোগ্য হয় না, বরং নিয়ম মেনে চলতে হয়।

নরক-ঘোড়শ অধ্যায়ে ১৬শ শ্লোকে আসুরী সম্পদের বর্ণনা করে যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, বহু চিত্তবিভাস্ত, মোহজালে আবৃত আসুরী স্বভাবযুক্ত মানুষ অপবিত্র নরকে পতিত হয়। প্রশ্ন স্বাভাবিক যে, নরক কিরণ্প ও কাকে বলে? এই ক্রমেই স্পষ্ট করেন যে, যারা আমাকে দ্রেষ করে, সেই নরাধমদিগকে আমি বারংবার আসুরী যোনিতে নিক্ষিপ্ত করি, অজস্র আসুরী যোনিতে নিক্ষেপ করি। এটাই নরক। নরকের দ্বার কি? বলছেন—কাম, ক্রোধ ও লোভ এই তিনটি নরকের দ্বার স্বরূপ। এদের সাহায্যেই আসুরী সম্পদের গঠন হয়। অতএব বারংবার কীট-পতঙ্গ, পশু ইত্যাদি যোনিতে জন্মগ্রহণ করাই নরক।

পিণ্ডান—প্রথম অধ্যায়ে বিষাদগ্রস্ত অর্জুন আশক্তিত হয়েছিলেন যে, যুদ্ধজনিত নরসংহারে পিতৃপুরূষগণ পিণ্ডান ও তর্পণ থেকে বঞ্চিত হবেন, নরকে পতিত হবেন। ভগবান শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, অর্জুন! এই অজ্ঞান তোমার কোথেকে উৎপন্ন হল? পিণ্ডোদক ত্রিয়াকে যোগেশ্বর অজ্ঞান বলেছেন ও আরও বলেছেন যে, যেরূপ জীর্ণ-শীর্ণ বস্ত্রত্যাগ করে মানুষ নতুন বস্ত্র ধারণ করে ঠিক সেইরূপ এই আত্মা জীর্ণ দেহ ত্যাগ করে তৎকাল দেহরূপ নতুন বস্ত্র ধারণ করে। এখানে দেহটা বস্ত্রমাত্র এবং যখন আত্মা কেবল বস্ত্র পরিবর্তন করলেন তখন তাঁর মৃত্যু হল কোথায়? নশ্বর দেহটাই শুধু পরিবর্তন করেছেন, তাঁর ব্যবস্থা পূর্ববৎ থাকল, তবে এই ভোজন (পিণ্ডান), আসন, শয়া, বাহন, আবাস অথবা জল ইত্যাদি দ্বারা কাকে তৃপ্ত করা হয়? এই কারণেই এগুলিকে যোগেশ্বর অজ্ঞান বলেছেন। পঞ্চদশ অধ্যায়ের ৭ম শ্লোকে এর উপর জোর দিয়ে বলেছেন যে, এই আত্মা আমার সনাতন অংশ, স্বরূপ এবং মন ও পথেগন্ত্রিয়ের কার্যকলাপজন্য সংস্কার আকর্ষণ করে অন্যদেহ ধারণ করে ও মনসহিত ষষ্ঠ ইন্দ্রিয়দ্বারা নতুন দেহে বিষয়-ভোগসমূহ উপভোগ করে। আত্মা যখন অন্যদেহ ধারণ করে তখন সেখানেও ভোগ-সামগ্ৰী থাকেই, তাহলে পিণ্ডান কেন করা হয়? এদিকে দেহত্যাগ, অন্যদিকে নতুন দেহ ধারণ, আত্মা দেহত্যাগের সঙ্গে সঙ্গে নতুন দেহে প্রবেশ করে, মাঝে বিরামের কোন স্থান নেই, তাহলে হাজার হাজার পিতৃগণের অনাদিকাল ধরে পতিত থাকার কল্পনা ও তাদের জীবিকা বৎশ-পরম্পরার হাতে নির্ধারিত করে এবং খাঁচার পাথীর মত তাদের ক্রন্দন, পতন অজ্ঞানেরই পরিচয় মাত্র। তা-ই যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ একে অজ্ঞান বলেছেন।

পাপ ও পুণ্য—এই বিষয়ে সমাজে বহুসন্তি প্রচলিত; কিন্তু যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে রজোগুণজাত এই কাম ও ক্রোধ, ভোগ-উপভোগ করে কখনও তৃপ্ত হয় না, দুঃখদায়ক। অর্থাৎ কাম হল পাপের একমাত্র কারণ। পাপের উদ্গম কাম অর্থাৎ কামনাসমূহ। এই কামনাগুলি থাকে কোথায়? শ্রীকৃষ্ণ বললেন যে, ইন্দ্রিয়সমূহ, মন ও বুদ্ধিকে কামনার বাস-স্থান বলা হয়। যখন বিকার দেহে থাকে না মনে থাকে, তখন দেহটাকে ধূয়ে কি হবে?

শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে নামজপদ্মারা, ধ্যানদ্মারা, সমকালীন কোন তত্ত্বদর্শী মহাপুরুষের সেবাদ্মারা, তাঁর প্রতি সমর্পণের ভাবদ্মারা মন শুद্ধ হয়, তার জন্য তিনি ৪/৩৪-এ প্রোৎসাহিত করেছেন যে, ‘তদ্বিদ্ধি প্রণিপাতেন’ সেবা ও প্রশ্ন করে সেই জ্ঞানলাভ কর, যার দ্বারা সকল পাপনাশ হয়।

অধ্যায় ৩/১৩-তে তিনি বলেছেন যে, সন্তগণ যজ্ঞাবশেষ ভোজন করেন, তাঁরা সকল পাপ থেকে মুক্ত হন এবং যারা দেহের জন্য অন্মাক করে, সেই পাপাচারীগণ পাপান্ন ভোজন করে। এখানে যজ্ঞ চিন্তনের একটি নিশ্চিত ক্রিয়া, যার দ্বারা মনের মধ্যে নিহিত চরাচর জগতের সংস্কার ভস্ত্ব হয়ে যায়। শুধু ব্রহ্মাই থাকেন। অতএব দেহের উৎপত্তির কারণ হল পাপ এবং যা সেই অমৃত তত্ত্ব প্রদান করে, যারপর আর দেহধারণ করতে হয় না, তা-ই পুণ্য।

অধ্যায় ৭/২৯-এ তিনি বলেছেন যে, যাঁরা জরামৃত্যু এবং দোষ থেকে মুক্তিলাভের জন্য আমার শরণাগত হয়ে সাধনা করেন, যে পুণ্যকর্মা পুরুষগণের পাপনাশ হয়েছে, তাঁরা সম্পূর্ণ ব্রহ্ম, সম্পূর্ণ কর্ম, সম্পূর্ণ অধ্যাত্ম এবং উন্নতমনপে আমাকে জানেন ও জেনে আমাতেই স্থিত থাকেন। অতএব পুণ্যকর্ম তা-ই যা জরা-মৃত্যু ও দোষ থেকে মুক্ত করে শাশ্বতের অনুভূতি ও তাতেই সর্বদার জন্য স্থিতি প্রদান করে। যে কর্ম জন্ম-মৃত্যু, জরা-মরণ, দুঃখ-দোষের পরিধির মধ্যেই ঘোরাতে থাকে সেই কর্মকে পাপকর্ম বলে।

অধ্যায় ১০/৩-এ বললেন—যিনি আমাকে জন্ম-মৃত্যুরহিত, আদি-অন্তরহিত ও সর্বলোকের মহেশ্বরকে সাক্ষাত্কার করে অবগত হন, মরণধর্মা মনুষ্য মধ্যে সেই পুরুষই জ্ঞানবান्, এইরূপ জেনে তিনি সর্বপাপ থেকে মুক্ত হন। অতএব সাক্ষাত্কারের পরেই সর্বপাপ থেকে নিবৃত্তি হয়।

সারাংশতঃ বার বার জন্ম-মৃত্যুর কারণই পাপ, ও তার থেকে উদ্ধার করে শাশ্বত পরমাত্মার দিকে এগিয়ে দেয়, পরমশান্তি প্রাপ্তি করায়, তা-ই পুণ্যকর্ম। সত্য বলা, কেবল স্ব উপার্জিত অন্তর্গত, স্তীজাতির প্রতি মাতৃভাব, সত্যতা ইত্যাদিও এই পুণ্যকর্মের সহায়ক অঙ্গ; কিন্তু সর্বোৎকৃষ্ট পুণ্য হল পরমাত্মার প্রাপ্তি। যা একমাত্র পরমাত্মার প্রতি শ্রদ্ধাকে ভঙ্গ করে, তা-ই পাপ।

সকল সন্তই এক—গীতা, অধ্যায় ৪/১-এ ভগবান শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন যে, কল্লের আদিতে এই অবিনাশী যোগ আমি সূর্যকে বলেছিলাম; পরন্তু শ্রীকৃষ্ণপূর্বকালীন অথবা অন্য কোনও শাস্ত্রে কৃষ্ণের নামোল্লেখ নেই।

বাস্তবে শ্রীকৃষ্ণ পূর্ণ যোগেশ্বর ছিলেন। তিনি অব্যক্ত ও অবিনাশীভাবের স্থিতিযুক্ত মহাপুরুষ। যখনই পরমাত্মা-প্রাপ্তির ক্রিয়া অর্থাৎ যোগের সূত্রপাত করা হয়েছে, তখন তা স্থিতিযুক্ত মহাপুরুষই করেছেন, তা তিনি রাম হোন অথবা খায়ি জরথুস্ত্র। পরবর্তীকালে এই উপদেশেই যীশুখ্রিষ্ট, মহম্মদ, গুরুনানক ইত্যাদি যার দ্বারাই বলা হয়েছে, তা শ্রীকৃষ্ণই বলেছেন।

অতএব সকল মহাপুরুষই এক। সকলেই এক বিন্দুর স্পর্শ করে একটাই স্বরূপ লাভ করেন। এই পদ একটি একক। বহুপুরুষ এই পথে গমন করবেন কিন্তু যখন লাভ করবেন, তখন সকলেই এক পদলাভ করবেন। এরূপ অবস্থাযুক্ত সন্তের দেহ বাস-স্থান মাত্র, তিনি শুন্দ আত্মস্বরূপ। এরূপ স্থিতিযুক্ত মহাপুরুষ যখনই কিছু বলেছেন, তখন তা সেই এক যোগেশ্বরই বলেছেন।

সন্তপুরুষ কোন না কোন স্থানে জন্মগ্রহণ তো করেনই। পূর্ব অথবা পশ্চিমে, শ্যাম অথবা শ্বেত পরিবারে, পূর্ব প্রচলিত কোন ধর্মবিলম্বীদের মাঝে অথবা অবোধ যায়াবর পরিবারে, গরীব অথবা ধনীর গৃহে জন্ম নিয়েও সন্তপুরুষ পরিবারের পরম্পরার সঙ্গে যুক্ত হয় না। তিনি নিজের লক্ষ্য পরমাত্মাকে অবলম্বন করে স্বরূপের দিকে এগিয়ে যান ও শেষে তা-ই হন। তাঁদের উপদেশ জাতি-ভেদ, বর্গ-ভেদ ও ধনী-গরীবের মধ্যে কোন পার্থক্য থাকে না। এমনকি তাঁদের দৃষ্টিতে স্ত্রী-পুরুষের ভেদও থাকে না। (দেখুন গীতা-১৫/১৬-“দ্বিবিমৌ পুরুষৌ লোকে।”)

মহাপুরুষগণের দেহত্যাগের পর তাঁদের অনুগামীগণ স্থীয় স্থীয় সম্প্রদায়ের সৃষ্টি করে সক্রিতি হয়ে যায়। কোন মহাপুরুষের অনুগামীগণ ইন্দী হয়, কারও

খৃষ্টান, মুসলমান, সনাতনী ইত্যাদি হয়ে যায়; কিন্তু এই বিভেদের সঙ্গে সন্তের কোন সম্পর্ক থাকে না। সন্ত কোন সম্প্রদায় অথবা জাতি নন। সন্ত, সন্তই হন। তাঁদের কোন সামাজিক সংগঠনের সঙ্গে যুক্ত করা উচিত নয়।

অতএব সম্পূর্ণ সংসারের সন্তদের, তা যে কোন সম্প্রদায়েই তাঁর জন্ম হোক না কেন, কোন সম্প্রদায়ের লোকেরা তাঁর বেশীই পূজা করুন না কেন, কোন সাম্প্রদায়িক প্রভাবে এসে এরূপ সন্তদের আলোচনা করা উচিত নয়; কারণ তাঁরা নিরপেক্ষ। সংসারে যে কোন স্থানে উৎপন্ন হোন, সন্ত নিন্দার যোগ্য নন। যদি কেউ এরূপ করে, তাহলে সে অন্তরে স্থিত অস্ত্যামী পরমাত্মাকে দুর্বল করে, স্বীয় পরমাত্মা থেকে দূরে সরে যায়, স্বয়ং নিজের ক্ষতি করে। সংসারে জাত কোন ব্যক্তি যদি সত্যই আপনার হিতৈষী, তাহলে সন্তই সেই ব্যক্তি-বিশেষ হবেন। অতএব তাঁদের প্রতি সহাদয় হওয়া সম্পূর্ণ সংসারের লোকেদের মূলকর্তব্য। এর থেকে বঞ্চিত হওয়া মানে নিজেকে ফাঁকি দেওয়া।

বেদ-গীতাশাস্ত্রে বেদের উদাহরণ অনেকবার দেওয়া হয়েছে; কিন্তু এই সকল পথ-প্রদর্শক চিহ্ন (Mile Stone) মাত্র। গন্তব্যে উপনীত ব্যক্তির জন্য এই পথ-প্রদর্শক চিহ্ন এর উপযোগিতা শেষ হয়ে যায়। অধ্যায় ২/৪৫-এ শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন—অর্জুন! বেদ ত্রিগুণ পর্যন্তই আলোকপাত করতে পারে, তুমি বেদের কার্যক্ষেত্রের উদ্ধৰ্ব ওঠ। অধ্যায় ২/৪৬-এ বলেছেন—পরিপূর্ণ স্বচ্ছ জলাশয় প্রাপ্ত হলে মানুসের ছোট জলাশয়ের যতটা প্রয়োজন থাকে; তদ্বপ্ত উভয় প্রকার ব্রহ্মজ্ঞাতা মহাপুরুষ অর্থাৎ ব্রাহ্মণের বেদের ততটাই প্রয়োজন থাকে। কিন্তু অন্যান্য ব্যক্তিদের জন্য এর উপযোগিতা থাকেই। অধ্যায় ৮/২৮-এ বলেছেন—অর্জুন! আমাকে তত্ত্বসহিত উত্তম প্রকারে অবগত হওয়ার পরে যোগী বেদ, যজ্ঞ, তপস্যা, দান ইত্যাদির পুণ্যফল অতিক্রম করে সনাতন পদলাভ করেন। অর্থাৎ যতক্ষণ বেদ জীবিত, যজ্ঞ অসম্পূর্ণ, ততক্ষণ সনাতন পদলাভ করা সন্তব নয়। অধ্যায় ১৫/১-এ বলেছেন— উদ্ধৰ্ব পরমাত্মা যার মূল, নিম্নে কীট-পতঙ্গপর্যন্ত প্রকৃতি যার শাখা-প্রশাখা, এই সংসার সেইরূপ অশ্঵থরূপ অবিনাশী বৃক্ষ। যিনি এই বৃক্ষকে মূলসহিত জানেন, তিনিই বেদের জ্ঞাতা। একে অবগত হওয়ার একমাত্র স্তোত মহাপুরুষ, তাঁর দ্বারা নির্দিষ্ট ভজন। পুস্তক অথবা পাঠশালাও তাঁর দিকেই প্রেরণ করে।

ওঁ—শ্রীকৃষ্ণের নির্দেশ মত ওঁ জপ করার বিধান পাওয়া যায়। অধ্যায় ৭/৮-এ বলেছেন—ওঁকার আমি। ৮/১৩-এ বলেছেন—ওঁ জপ ও আমার চিন্তন কর। অধ্যায় ৯/১৭-এ বলেছেন—জানার যোগ্য পবিত্র ওঁকার আমি। অধ্যায় ১০/৩৩-এ বলেছেন—আমি অক্ষরসমূহতে অকার। ১০/২৫-এ বলেছেন—শব্দসমূহের মধ্যে আমি একাক্ষর। অধ্যায় ১৭/২৩-এ বলেছেন—ওঁ, তৎ ও সৎ ব্রহ্মের পরিচায়ক। ১৭/২৪-এ বলেছেন—যজ্ঞ, দান ও তপস্যাদি কর্ম ওঁ থেকে আরম্ভ হয়। অতএব শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে ওঁ জপ করা নিতান্ত আবশ্যিক, এর বিধি স্থিতিপ্রাপ্ত মহাপুরুষের কাছ থেকে অবগত হোন।

গীতোক্ত জ্ঞানই বিশুদ্ধ মনুস্মৃতি—গীতা আদিমানব মহারাজ মনুরও পূর্বে উদ্ভাসিত হয়েছিল-‘ইমং বিবস্ততে যোগং প্রোক্তবানহমব্যয়ম্।’ (৪/১) অর্জুন! আমি এই অবিনাশী যোগ-সম্বন্ধে কল্পারস্তে সূর্যকে বলেছিলাম এবং সূর্য মনুকে বলেছিলেন। মনু তা স্মৃতিতে ধারণ করেছিলেন, কারণ শ্রবণ করার পর বিষয়-বস্তু স্মৃতিতেই সুরক্ষিত করে রাখা সন্তুষ্ট ছিল। এই জ্ঞান সম্বন্ধেই মনু রাজা ইক্ষ্বাকুকে বলেছিলেন। ইক্ষ্বাকুর কাছ থেকে পরবর্তীকালে রাজবিদ্যাগ জানতে পারেন এবং এই মহদ্বপূর্ণ কালে এই অবিনাশী যোগ এই পৃথিবীতে বিলুপ্ত হয়ে গিয়েছিল। আদিকালে বক্তাৰ কাছে শ্রবণ করে তা স্মৃতিতে ধারণ করে রাখার পরম্পরার ছিল। লিপিবদ্ধ করে রাখার কথা কল্পনার বাইরে ছিল। মনু মহারাজ এই জ্ঞান স্মৃতিতে ধারণ করেছিলেন এবং স্মৃতি-পরম্পরার প্রবর্তন করেছিলেন। অতএব এই গীতোক্ত জ্ঞানই বিশুদ্ধ মনুস্মৃতি।

এই জ্ঞান-সম্বন্ধে ভগবান মনুরও পূর্বে সূর্যকে বলেছিলেন, তবে কেন এই স্মৃতিকে ‘সূর্যস্মৃতি’ বলা হয় না? বস্তুতঃ সূর্য জ্যোতির্ময় পরমাত্মার সেই অংশ, যার থেকে মানুষ সৃষ্টি আরম্ভ হয়েছে। ভগবান শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন, “আমিই পরমচেতন বীজরূপ পিতা এবং প্রকৃতি গর্ভধারিণী মাতা।” বীজরূপ পিতা সূর্য। পরমাত্মার সেই প্রশংসিত সূর্য, যে শক্তি মানুষ সৃষ্টি করেছে। এই শক্তি ব্যক্তি-বিশেষ নয়। পরমাত্মার জ্যোতির্ময় তেজ থেকে মানুষের উৎপত্তি হয়েছে। সেই তেজের মাধ্যমেই গীতোক্ত জ্ঞানও প্রসারিত করেছেন অর্থাৎ সূর্যকে বলেছেন। সূর্যপুত্র মনুকে তা বলেছেন, সেইজন্য এটি ‘মনুস্মৃতি’। এখানে সূর্যের তাৎপর্য ব্যক্তি-বিশেষ নয়, বীজকে সূর্য বলা হয়েছে।

ভগবান শ্রীকৃষ্ণ বলেছেন—অর্জুন ! সেই পুরাতন যোগসম্বন্ধে আমি তোমাকে বলব। তুমি আমার প্রিয়ভক্ত, অনন্য সখা। অর্জুন মেধাবী এবং যোগ্য ছিলেন। যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ তিনি একটার পর একটা প্রশ্ন করে গিয়েছিলেন। যেমন—আপনার জন্ম অনেক পরে হয়েছে এবং সূর্যের জন্ম বহুপূর্বে হয়েছিল। যোগসম্বন্ধে আপনিই সুর্যকে বলেছিলেন, তা কিরাপে বুবাব ? এইরূপ কুড়ি-পঁচিশটি প্রশ্ন তিনি করেছিলেন। গীতার সমাপনপর্যন্ত তাঁর সমস্ত প্রশ্নের সমাধান হয়ে গিয়েছিল। যে প্রশ্ন অর্জুন করতে পারেননি সে সকল প্রশ্নের সমাধান ভগবান স্বয়ং করেছেন। অতপর ভগবান বললেন—অর্জুন ! তুমি কি একাগ্রচিত্তে আমার উপদেশ শ্রবণ করেছ ? তোমার অজ্ঞানজনিত মোহের বিনাশ হল কি ? এই প্রসঙ্গে অর্জুন বলেছেন—

নষ্টো মোহঃ স্মৃতির্লঁকা ব্রহ্মপ্রসাদান্ময়াচ্যুত ।

স্থিতোহস্মি গতসন্দেহঃ করিয়ে বচনৎ তব ॥১৮/৭৩॥

যতগবন্ত ! আমার মোহনাশ হয়েছে এবং স্মৃতিলাভ হয়েছে। কেবল শ্রবণ করিনি বরং স্মৃতিতে ধারণ করেছি। আমি আপনার আজ্ঞাপালন করব, যুদ্ধে প্রবৃত্ত হব। তিনি ধনুর্ধারণ করেছিলেন, যুদ্ধ হয়েছিল, বিজয়ী হয়ে, বিশুদ্ধ ধর্মসামাজ্য স্থাপনা করেছিলেন এবং একমাত্র ধর্মশাস্ত্ররপে আদি ধর্মশাস্ত্র গীতা পুনরায় প্রতিষ্ঠিত হয়েছিল।

গীতা আদি ধর্মশাস্ত্র। এটাই মনুস্মৃতি, যা অর্জুন নিজের স্মৃতিতে ধারণ করেছিলেন। মনুর দুটি কৃতির উল্লেখ রয়েছে, প্রথমতঃ পিতার নিকট হতে প্রাপ্ত গীতা, দ্বিতীয়তঃ বেদ মনুর সমক্ষে আবির্ভূত হয়েছিল। তৃতীয় কোন কৃতি মনুর কালে ছিল না। সেইকালে লিপিবদ্ধ করে রাখার প্রচলন ছিল না, কাগজ, কলমের প্রচলন ছিল না, সেইজন্য জ্ঞান ক্ষত অর্থাৎ শ্রবণ করে স্মৃতিতে সুরক্ষিত করে রাখার পরম্পরা ছিল। সৃষ্টির প্রথম মানুষ মনু মহারাজ যাঁর থেকে অন্যান্য মানুষের সৃষ্টি হয়েছে তিনি বেদকে ক্ষতি এবং গীতা শাস্ত্রকে স্মৃতির সম্মান দিয়েছেন।

বেদ মনুর সমক্ষে আবির্ভূত হয়েছিল। বেদ শ্রবণযোগ্য, শ্রবণ করুন। যদি পরবর্তীকালে ভুলেও যান কোন ক্ষতি নেই; কিন্তু গীতা স্মৃতিগ্রহণ, সর্বদা স্মরণ রাখবেন। এই গ্রন্থ শাশ্বত জীবন, শাস্তি, সমৃদ্ধি এবং ঐশ্বর্যসম্পন্ন জীবন প্রদানকারী ঈশ্বরীয় গায়ন।

ভগবান বলেছেন—অর্জুন ! যদি তুমি অহংকারবশতঃ আমার উপদেশ শ্রবণ না কর তবে বিনষ্ট হয়ে যাবে অর্থাৎ গীতার উপদেশ যে অবহেলা করে, তার নাশ হয়। পঞ্চদশ অধ্যায়ের অস্তিম শ্লোক (১৫/২০)-এ ভগবান বলেছেন, ‘ইতি গুহ্যতমং শাস্ত্রমিদমুক্তং ময়ানন্দঃ’।—এইরূপ অতিগোপনীয় শাস্ত্র আমার দ্বারা বলা হল। এই তত্ত্ব অবগত হয়ে তুমি পূর্ণজ্ঞান এবং পরমশ্রেয় লাভ করবে। যষ্ঠদশ অধ্যায়ের অস্তিম দুটি শ্লোকে বলেছেন—‘যঃ শাস্ত্রবিধিমুৎসংজ্য বর্ততে কামকারতঃ।’ এই শাস্ত্রবিধি উল্লঞ্ছনপূর্বক যিনি স্বেচ্ছাচারী হয়ে বিহিতের আচরণ করেন না অথচ নিষিদ্ধের আচরণ করেন, তিনি সিদ্ধিলাভের যোগ্য নন। সুখ, সমৃদ্ধি কিছু লাভ করতে পারেন না।

‘ত্স্মাচ্ছাস্ত্রং প্রমাণং তে কার্যকার্যব্যবস্থিতো।’ অতএব অর্জুন ! কর্তব্য ও অকর্তব্য নির্ধারণে যে-কি করা উচিত-কি করা উচিত নয়, শাস্ত্রই এ বিষয়ে তোমার জ্ঞাপক। অতএব শাস্ত্রবিধির স্বরূপ জেনে তোমার নিয়ত কর্ম করা উচিত। তুমি তাহলে আমাকে লাভ করবে এবং শাশ্বত জীবন, শাস্তি এবং সমৃদ্ধিলাভ করবে।

গীতাশাস্ত্রই মনুস্মৃতি এবং ভগবান শ্রীকৃষ্ণের অনুসারে গীতাই ধর্মশাস্ত্র। অন্য কোন গ্রন্থকে শাস্ত্র অথবা স্মৃতি বলা যেতে পারে না। সমাজে প্রচলিত বহু স্মৃতিগ্রন্থ গীতা বিস্মৃত হওয়ারই দুষ্পরিণাম। প্রচলিত অন্যান্য স্মৃতি কিছু রাজার সংরক্ষণে লিপিবদ্ধ করা হয়েছে, যা সমাজে উঁচু-নীচু, জাতিভেদ সৃষ্টির সঙ্গে সঙ্গে এটা বজায় রাখার উপায়-বিশেষ। মনুর নামে প্রচারিত এবং কথিত মনুস্মৃতিতে মনুকালীন সমাজ-ব্যবস্থার চিত্রণ নেই। মূল মনুস্মৃতি গীতা একমাত্র পরমাত্মাকে সত্য বলে, তাঁতে বিলীন করিয়ে দেয়; কিন্তু বর্তমানে প্রচলিত প্রায় ১৬৪ টি স্মৃতিতে পরমাত্মাকে লাভ করার উপায়ের উপর আলোকপাত করা হয়নি এমনকি পরমাত্মার নাম উল্লেখ পর্যন্ত করা হয়নি। স্বর্গপ্রাপ্তির প্রলোভন দেখায়। ‘ন অস্তি’-যেগুলির অস্তিত্ব নেই সে সমস্ত লাভেরই জন্য প্রোঃসাহিত করে। স্মৃতিগুলিতে মোক্ষ-এর উল্লেখপর্যন্ত নেই।

মহাপুরুষ-মহাপুরুষ বাহ্য ও আন্তরিক, ব্যবহারিক ও আধ্যাত্মিক, লোক-রীতি ও যথার্থ বেদ-রীতি দুটিই জানেন। এই কারণেই সমস্ত সমাজকে মহাপুরুষগণ আচার-ব্যবহার ও রীতি-নীতির বিধান দিয়েছেন এবং একটা মর্যাদাপূর্ণ ব্যবস্থা দিয়েছেন। বশিষ্ঠ, বিশ্বামিত্র, স্বয়ং যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ, মহাবীর স্বামী, মহাত্মা বুদ্ধ, মুসা, যীশু, মহম্মদ, রামদাস, দয়ানন্দ, গুরু গোবিন্দ সিংহ ও এইরূপ সহস্র

মহাপুরূষ-এইরূপ করেছেন; কিন্তু এই সকল ব্যবস্থা সাময়িক। পীড়িত সমাজকে ভেট্টিক বস্তু প্রদান করলে, তারা স্থায়ীরূপে লাভান্বিত হতে পারে না। এই ভেট্টিক উপলব্ধি ক্ষণস্থায়ী, শাশ্বত নয়। সেইজন্য সে সকলের সমাধানও তৎসাময়িক হয়। তা চিরস্তন ব্যবস্থারূপে গ্রহণ করা যেতে পারে না।

**ব্যবস্থাকার**—সমাজে প্রচলিত কুরীতিগুলি মহাপুরূষগণ দ্বারা করেন। এগুলির সমাধান না করলে জ্ঞান-বৈরাগ্যজ্ঞাত পরম-এর সাধনা সম্বন্ধে কে শুনবে? মানুষ যে পরিবেশে রয়েছে, সেখান থেকে তার মনকে সরিয়ে যথার্থ কি, তা অবগত হওয়ার অবস্থাতে নিয়ে আসার জন্য বিভিন্ন উপায়ে আকর্ষণ করার চেষ্টা করা হয়। এই অভিপ্রায়ে মহাপুরূষগণ যে শব্দগুলি ব্যবহার করেন, কোন বিধান দেন, তা ধর্ম নয়। এই বিধান একশ, দুঃশ বছর পর্যন্ত চলে, চার ছঁশ বছরের জন্য উদাহরণ হয়ে যায় এবং হাজার দু'হাজার বছরের মধ্যে নতুন পরিস্থিতিতে সেই সামাজিক ব্যবস্থার পরিবর্তন ঘটে। গুরু গোবিন্দ সিং-প্রদত্ত ব্যবস্থানুসারে শস্ত্র ধারণ অনিবার্য, কিন্তু এখন শস্ত্রের স্থানে তরবারি বেমানান। যীশু গাধার পিঠে বসতেন (মন্ত্রী ২১) গাধার সম্বন্ধে তিনি যে ব্যবস্থা দিয়েছিলেন, বর্তমানে এর উপযোগিতা কি? তিনি বলেছিলেন কারও গাধা চুরি কোরো না। বর্তমানে ক'জন গাধা পোসে। এই প্রকার যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ তৎকালীন সমাজকে সর্বপ্রকারে ব্যবস্থিত করেছিলেন, এর উল্লেখ মহাভারত, ভাগবত ইত্যাদি গ্রন্থে করা হয়েছে, এই সঙ্গে গ্রন্থগুলিতে তিনি যথার্থের ও যত্র-তত্ত্ব চিত্রণ করেছেন। পরমকল্যাণকর সাধনা ও সামাজিক ব্যবস্থাগুলির নির্দেশ গুলিয়ে ফেললে লোকে তত্ত্ব নির্ণয়ক ক্রম স্পষ্টভাবে বুঝতে পারে না। সামাজিক ব্যবস্থাগুলিকে সমাজ প্রয়োজনের অতিরিক্তই মেনে চলে; কারণ তা জাগতিক। “মহাপুরূষ বলেছেন”—এইরূপ বলে এই ব্যবস্থাগুলি যাতে ত্যাগ করতে না হয়, তারজন্য মহাপুরূষগণের দোহাই দেয়। মহাপুরূষ প্রদত্ত বাস্তবিক ক্রিয়া নিজেদের সুবিধে মত পরিবর্তন করে, সেই ক্রিয়া আন্তিমুক্ত করে দেয়। বেদ, রামায়ণ, মহাভারত, বাহিবলে, কোরান প্রত্যেকটিতে শুধু আস্ত, যুক্তিহীন, ধারণা রয়ে গেছে। বহিমুখী সমাজ এই গ্রন্থগুলির যথার্থ উদ্দেশ্য গ্রহণ করতে পারে না। এই কারণেই ভগবান শ্রীকৃষ্ণ শাশ্বত ধাম, অনন্তজীবন, শাশ্বত শাস্তি প্রদায়নী গীতাশাস্ত্রকে জাগতিক ব্যবস্থা থেকে পৃথক করেছেন। ভারতের বৃহৎ ইতিহাস এবং মহত্ত্বপূর্ণ সংস্কৃতি শাস্ত্র হল মহাভারত। তিনি এই বৃহৎ ইতিহাসের মাঝেই গীতাশাস্ত্রের গায়ন করেছেন। যাতে

উত্তরপুরুষেরা এই ধর্মশাস্ত্রকে ধার্মিক ধরাতলে যথাবৎ বুঝাতে পারে। কালান্তরে মহৰ্ষি পতঞ্জলি এবং আরও বহু মহাপুরুষ পরমশ্রেয় লাভের যথার্থ বিধিকে সামাজিক ব্যবস্থা থেকে পৃথক করে প্রস্তুত করেছেন।

গীতা মানুষ মাত্রের জন্য- ভগবান এই ধর্মশাস্ত্রের উপদেশ ‘প্রবৃত্তে শন্ত্রসম্পাতে’ (গীতা, ১/২০) শন্ত-সংগ্রামের সময়ই করেছিলেন, কারণ তিনি জানতেন জীব-জগতে কখনও শান্তি এবং সুখ লাভ হয় না। কেউ যদি অর্বুদ লোকের হত্যা করে জয়লাভ করেও তবুও তার মনোবাঞ্ছা পূর্ণ হবে না এবং শেষে দুঃখপদই হবে, সেইজন্য তিনি গীতা শাস্ত্রের মাধ্যমে এইরূপ শাশ্বত যুদ্ধের পরিচয় দিয়েছেন; এতে একবার জয়লাভ করলে শাশ্বত বিজয়, অনন্ত জীবন এবং অক্ষয়ধার্ম লাভ হয়, যা মানুষমাত্রের জন্য সর্বদা সুলভ; যা ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞ এর যুদ্ধ, প্রকৃতি এবং পুরুষের সংঘর্ষ, অন্তরে অঙ্গুত্ব এর নাশ এবং শুভ পরমাত্মস্বরূপের প্রাপ্তির সাধন।

উত্তম অধিকারীর প্রতিই শ্রীকৃষ্ণ একে ব্যক্ত করেছেন। তিনি বার বার বলেছেন যে, তোমার মত অতিশয় প্রিয় ভক্তের হিত কামনায় বলব। এ বিষয় অতি গোপনীয়। শেষে তিনি বললেন, যে ভক্ত নয়, তাকে ভক্তে রূপান্তরিত করে তবে তাকে বোলো। মানুষ মাত্রের জন্য যথার্থ কল্যাণের একমাত্র উপায়, যার ক্রমবন্ধ বর্ণনা হল শ্রীকৃষ্ণেন্দ্র গীতাশাস্ত্র।

প্রস্তুত টীকা-যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণ দ্বারা প্রসারিত শ্রীমদ্ভগবদ্গীতার অর্থ যথাবৎ ব্যাখ্যা করার জন্য প্রস্তুত টীকার নাম ‘যথার্থ গীতা’। এই ভগবানের অন্তঃপ্রেরণা উপর আধারিত। গীতা স্বয়ং পূর্ণ সাধনগ্রস্থ। সম্পূর্ণ গীতাতে সন্দেহের অবকাশই নেই। বোধগম্য না হওয়ার জন্য সন্দেহ জাগতে পারে। অতএব কোথাউ বোধগম্য না হলে কোন তত্ত্বদর্শী মহাপুরুষের সান্নিধ্যে বোঝার প্রয়াস করুন।

তদ্বিদ্বি প্রণিপাতেন পরিপ্রক্ষের সেবয়া।

উপদেক্ষ্যস্তি তে জ্ঞানং জ্ঞানিনস্তত্ত্বদর্শিনঃ॥

ওঁ শান্তিঃ! শান্তিঃ!! শান্তিঃ!!!

## নিবেদন

‘যথার্থ গীতা’ যোগেশ্বর শ্রীকৃষ্ণের পরম পবিত্র বাণী শ্রীমদ্ভগবদ্গীতারই অর্থ। এতে আপনার হৃদয়স্থিত পরমাত্মার প্রাপ্তির বিধানের প্রাপ্তির পশ্চাতের চিত্রণ করা হয়েছে। অবহেলা করে এর উপযোগ বর্জিত, অন্যথা আমরা লক্ষ্য থেকে বঞ্চিত হব। এর শুদ্ধাপূর্বক অধ্যয়ন দ্বারা মানুষ নিজের কল্যাণের সাধনে পরিপূর্ণ হয় ও যৎসামান্যও গ্রহণ করতে পারলে পরমশ্রেয় লাভ করবে; কারণ এই ঈশ্বর-পথে আরন্তের কখনও নাশ হয় না।

—স্বামী অড়গড়ানন্দ

## ক্যাসেট প্রসারণে অধ্যায়গুলির পূর্বের ভূমিকা

১. একমাত্র পরমাত্মাতে শন্দো এবং সমর্পণের সংবাদবাহক গীতাশাস্ত্র, সকলকে পরিত্ব করার জন্য উন্মুক্তভাবে আহ্বান করেছে। বিশ্বের যে কোন স্থানের নিবাসী, ধনী, গরীব, কুলীন, আদিবাসী, পুণ্যাত্মা, পাপী, স্ত্রী, পুরুষ, সদাচারী অথবা দুরাচারী-যে কোন ব্যক্তিই এর অনুসারে প্রবৃত্ত হওয়ার অধিকারী। বিশেষ করে পাপীদেরই উদ্বারের সুগম পথ সম্বন্ধে গীতাশাস্ত্র বলেছে। পুণ্যাত্মাগণ তো ভজন করেনই। এখন প্রস্তুত সেই গীতাশাস্ত্রে আদিতীয় ব্যাখ্যা 'ঘথার্থ' গীতা'র ক্যাসেট প্রসারণ।
২. শাস্ত্র রচনার উদ্দেশ্য দুটি-প্রথমটি হল সামাজিক ব্যবস্থা এবং সংস্কৃতি দৃঢ় ভাবে ধরে রাখা যাতে পূর্বপুরুষদের দ্বারা আচরিত কর্মের অনুসরণ করা যেতে পারে, দ্বিতীয় হল যাতে শাশ্বত শাস্তি লাভ করতে পারেন। রামচরিত মানস, বাহিবল, কোরান ইত্যাদিতে দুচিকেরই সমাবেশ করা হয়েছে; কিন্তু ভৌতিক দৃষ্টি-মুখ্য হওয়ার জন্য মানুষ সমাজের উপযোগী ব্যবস্থাকেই ধরে রাখতে পারে। আধ্যাত্মিক স্তোত্রগুলিকেও সামাজিক ব্যবস্থাকেই ধরে রাখতে পারে। আধ্যাত্মিক স্তোত্রগুলিকে সামাজিক ব্যবস্থারই অনুসারে দেখে। বলে যে, শাস্ত্রে তো এরূপ উল্লেখ করা হয়েছে। সেইজন্য বেদব্যাস এ দুটির জন্য, একটি মাত্র গ্রহ মহাভারত লিপিবদ্ধ করে আধ্যাত্মিক ক্রিয়ার সঙ্কলন গীতারূপে পৃথকভাবে করেছেন। যাতে এই শ্রেষ্ঠ কল্যাণ পথে আস্তির মিশ্রণ না করে ফেলে। এখন এ আধ্যাত্মিক মূল্যবোধগুলির সঙ্গে প্রস্তুত গীতার দিব্যবার্তা।
৩. গীতা শাস্ত্র কোন ব্যক্তি-বিশেষ, জাতি, বর্গ, পথ, দেশকাল অথবা কোন কুরীতিগ্রস্ত সম্প্রদায়ের গ্রহ নয়, বরং এই ধর্মশাস্ত্র সার্বলোকিক এবং সার্বকালিক। এই শাস্ত্র প্রত্যেক দেশ, প্রত্যেক জাতি, যে কোন বয়সের প্রত্যেকটি স্ত্রী-পুরুষের জন্য; সবার জন্য। গীতা সম্পূর্ণ মানব জাতির ধর্মশাস্ত্র এবং খুবই গৌরবের বিষয় যে, গীতা আপনার ধর্মশাস্ত্র।
৪. পূজ্য ভগবান মহাবীর, তথাগত ভগবান বুদ্ধ বিজ্ঞ হওয়া সত্ত্বেও লোকভাষাতে গীতারই সংবাদবাহক। আত্মা সত্য এবং পূর্ণ সংযম দ্বারা আঞ্চলিক লাভ

করা যায়-এ নির্ণয় গীতাশাস্ত্রেরই। বুদ্ধ এ তত্ত্বকেই সর্বজ্ঞ এবং আবিনাশীপদ বলে গীতার নির্ণয়টিকে স্থীকার করেছেন। এটুকুই নয় বিশ্ব বাঙ্ময় ধর্মের নামে সার-সর্বস্ব বলে যা কিছু আছে-যেমন একমাত্র ঈশ্বর, প্রার্থনা, পশ্চাত্তাপ, তপস্যা ইত্যাদি-এ সমস্তই গীতাশাস্ত্রের উপদেশ। সেই উপদেশ স্বামী অড়গড়ানন্দজীর শ্রীমুখ নি:স্ত যথার্থ গীতা ক্যাসেটেরপে মানুষের মুক্তির দিব্যবার্তা রূপে প্রস্তুত করা হয়েছে।

৫. ভারতের লোককথাগুলিতে এরূপ বর্ণনা আছে যে, সুকরাতের শিষ্য পরম্পরায় মনীষী অরস্ত নিজ শিষ্য সিকন্দরকে ভারত থেকে গীতাজ্ঞানী গুরু সঙ্গে নিয়ে আসার নির্দেশ দিয়েছিলেন। বিশ্বের বিভিন্ন ভাসাতে মুসা, যীশুখৃষ্ট এবং বহু সুফী মহাত্মাগণ গীতার একেশ্বরবাদেরই প্রচার করেছেন। ভায়ান্তর হওয়ার জন্য পৃথক বোধ হয়, কিন্তু সমস্তই গীতাশাস্ত্রের সিদ্ধান্ত। অতএব গীতা মানবমাত্রের অতর্ক ধর্মশাস্ত্র। গীতার আশয় ‘যথার্থ গীতা’ রূপে প্রস্তুত করে স্বামী অড়গড়ানন্দজী মহারাজ মানবমাত্রকে একটি অমূল্য নিধি প্রদান করেছেন, যার ক্যাসেট রূপান্তরণ শ্রী জিতেন ভাইর সৌজন্যে সম্ভব হয়েছে। গীতার হাজার হাজার অনুবাদের মধ্যে দেদীপ্যমান এই ব্যাখ্যার আলোকে আপনারা সকলেই পরমশ্রেয়ের সাধক হোন।
৬. সংসারে প্রচলিত সকল ধর্ম গীতার দূরস্থ প্রতিধ্বনি মাত্র। স্বামী শ্রী অড়গড়ানন্দজী মহারাজ দ্বারা এর ব্যাখ্যা ‘যথার্থ গীতা’ শ্রবণ করে জৈন কুলোৎপন্ন শ্রী জিতেন ভাইজী সংকল্প করেছেন যে, এর প্রচার করবেন; কারণ ভগবান মহাবীর, ভগবান গৌতম বুদ্ধ, গুরু নানক, কবীর ইত্যাদির শৰ্দ্দাপূর্ণ তপ-সিদ্ধান্তগুলির উচ্চতম অভিব্যক্তি গীতাশাস্ত্র। গীতাশাস্ত্রের যে সমস্ত ক্যাসেট সুমন আপনাদের সকলের সমক্ষে আত্ম-দর্শনার্থ প্রস্তুত করা হয়েছে।
৭. গীতাশাস্ত্র প্রকাশে আসার পর দু হাজার বছর পর্যন্ত কোন ধার্মিক সম্প্রদায়ের সৃষ্টি হয়নি। সেইজন্য গীতা ধার্মিক সম্প্রদায়মুক্ত। সেই সময় বিশ্ব-মনীষাতে একমাত্র শাস্ত্র ধ্বনিত হচ্ছিল-উপনিষদ্সার গীতা! মোক্ষ এবং সমৃদ্ধির শ্রেত গীতা। শাস্ত্র-পাঠ অপেক্ষা শ্রবণ অধিক লাভদায়ক, কারণ উচ্চারণের শুন্দতা ইত্যাদিতে একাগ্রতাভঙ্গ হয়। সেইজন্য সুবোধ্য ভাষাতে রূপান্তরিত যথার্থ

গীতার এই ক্যাসেটগুলি আপনাদের নিকট প্রস্তুত করা হয়েছে। এর শ্রবণ দ্বারা তরঙ্গ, প্রতিবেশী সকলেরই অস্তরে পরমাত্মাকে লাভ করার শুভ সংক্ষার-এর সঞ্চার হবে, আপনার গৃহকোণও তপোভূমির ন্যায় সুরভিত হয়ে উঠবে।

৮. যে স্থানে প্রভুর নামগুণ কীর্তন করা হয় না, সেই স্থান শুশানতুল্য। মানুষ বর্তমানে এত ব্যস্ত যে, ইচ্ছা থাকলেও ভজনা করার সময় নেই তার কাছে। এইরপ পরিস্থিতিতে গীতাশাস্ত্রের বার্তা কর্ণ-কুহরে প্রবেশ করা মাত্র পরমশ্রেয় এবং সমৃদ্ধির সংক্ষারগুলির বীজারোপণ হয়। ভগবানের বাণীর এই ক্যাসেটগুলির মাধ্যমে সারাটা দিন কাজের মাঝেও পরম প্রভুর স্মরণ হতে থাকবে, এটাই ভজনার অবলম্বন।
৯. আমরা সন্তানদের শিক্ষা-ব্যবস্থা প্রদান করি যে, যাতে তারা শুভ সংক্ষার অর্জন করতে পারে। শুভ সংক্ষারের আশয় সকলেই মনে করেন যে, তারা যাতে আজীবিকা, আবাস-বিকাশ সম্বন্ধিত সমস্যাগুলির নিবারণ করে নেয়। ঈশ্বরের দিক এ কারও মন নেই। কিছু ব্যক্তি প্রাচুর্যের মধ্যে থাকার জন্য, প্রভুকে ডাকার প্রয়োজন বোধ করে না, কিন্তু এ সমস্তই পার্থিব বস্ত। ইচ্ছা না থাকলেও সব বৈভব এখানেই ত্যাগ করে যেতে হয়। এইরপ স্থিতিতে ঈশ্বরের পরিচয়ই একমাত্র সম্বল, যা প্রদান করছে যথার্থ গীতার এই ক্যাসেট প্রসারণ।
১০. সংসারে যত ধার্মিক মত-মতান্তর বর্তমান, সে সমস্তই কোন না কোন মহাপুরুষের অনুগামী শিষ্যদের সংগঠিত সমাজ। মহাপুরুষদের নির্জন ভজনাস্থানই কালান্তরে তীর্থ, আশ্রম, মঠ এবং মন্দিরে পরিবর্তিত হয়। সে সব স্থানে মহাপুরুষদের নামে জীবিকোপার্জন থেকে শুরু কের বিলাসিতার সামগ্রী একত্রিত করা হয়। যদি মহাপুরুষের অবর্তমানে স্থাপিত হয়। মহাপুরুষের আসনে বসলেই কেউ মহাপুরুষ হতে পারে না। সেইজন্য ধর্ম সর্বদা প্রত্যক্ষদর্শী মহাপুরুষের ক্ষেত্র-এর বিষয়। এইরপ নির্বিবাদ মহাপুরুষ যোগেশ্বর ভগবান শ্রীকৃষ্ণের বাণী এই গীতাশাস্ত্র। যার চিরস্তন সত্যগুলির সঙ্গে আপনার পরিচয় করাচ্ছে ‘যথার্থ গীতা’র এই ক্যাসেট প্রসারণ।

## গীতা আপনার ধর্মশাস্ত্র

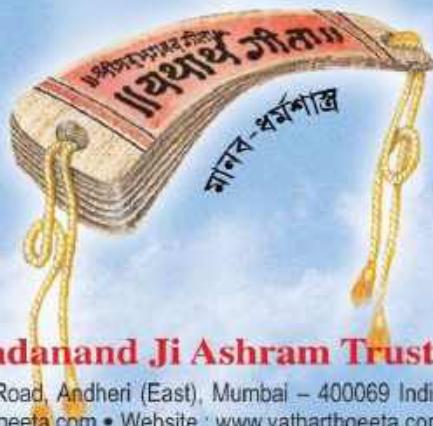
বিশ্বে প্রচলিত সমস্ত ধার্মিক বিচারধারাগুলির আদি উদ্গম স্থান ভারতবর্ষের সম্পূর্ণ অধ্যাত্ম ও আত্মস্থিতি প্রদানকারী, সম্পূর্ণরূপে অনুসন্ধানের সাধনাত্মকমের স্পষ্ট বর্ণনা এই গীতাশাস্ত্রে করা হয়েছে। এই শাস্ত্র অনুসারে ঈশ্বর এক, প্রাপ্তির ক্রিয়া এক, এই পথের পথিকের প্রতি অনুকম্পা এক এবং পরিণামও এক— তা হল প্রভুর দর্শন, ভগবৎ স্বরূপের প্রাপ্তি ও কালের অতীত অনন্ত জীবন। ‘যথার্থ গীতা’ পাঠ করুন।

শাস্ত্র	5200
পরমাত্মাতে প্রবেশ প্রদানকারী ক্রিয়াকৃক অনুশাসনের নিয়মগুলির সঙ্গলেই শাস্ত্র।	5200
এই দৃষ্টিকোণে ভগবান শ্রীকৃষ্ণজ্ঞ গীতা সনাতন,	5200
শাশ্বত ধর্মের শুद্ধ শাস্ত্র; যা চার বেদ,	5200
উপনিষদসমূহ, সমস্ত যোগশাস্ত্র, রামচরিতমানস এবং	5200
বিশ্বের সমস্ত দর্শনশাস্ত্রের একেলাই	5200
প্রতিনিধিত্ব করে। গীতা প্রতিটি মানুষের জন্য	5200
ধর্মের অতর্কশাস্ত্র।	5200
পরমাত্মার নিরাস	5200
সেই সর্বসমর্থ, শাশ্বত পরমাত্মা সকল মানুষের হাদয়ে ছিট। তাঁর আশ্রয়ে যাওয়ার বিধান	5200
সম্পূর্ণভাবে, যার দ্বারা শাশ্বত ধীম, শাশ্বত শাস্তি ও অনন্ত জীবনের	5200
প্রাপ্তি হয়।	5200
সংবাদ	5200

সত্যের ত্রিকালে অভাব নেই এবং  
অসত্যের অস্তিত্ব নেই। পরমাত্মাই  
তিনিকালে সত্য, শাশ্বত ও সনাতন।

- স্বামী অড়গড়ানন্দ

## দীর্ঘ বছর ব্যবধানের পর ‘শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা’র শাশ্বত ব্যাখ্যা



**Shri Paramhans Swami Adgadanand Ji Ashram Trust**

5, New Apollo Estate, Mogra Lane, Opp. Nagardas Road, Andheri (East), Mumbai – 400069 India  
Telephone : (022) 2825300 • Email : [contact@yatharthgeeta.com](mailto:contact@yatharthgeeta.com) • Website : [www.yatharthgeeta.com](http://www.yatharthgeeta.com)